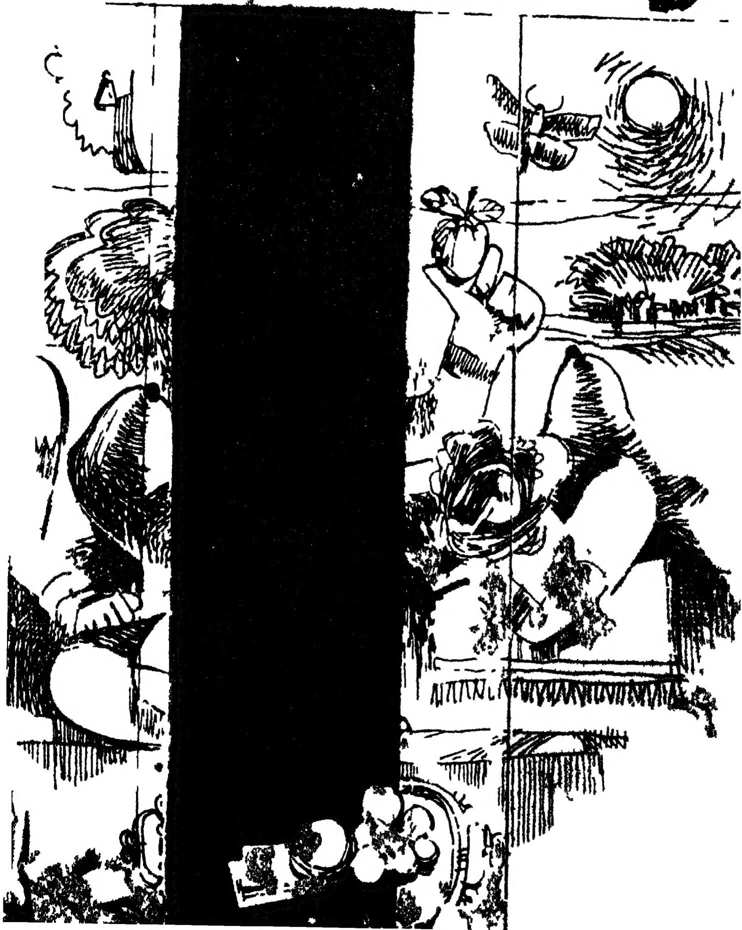
मूल: यामा: दि पिट / एलेक्ज़ेण्डर क्युप्रिन

यामा

जैनेन्द्र कुमार





पूर्वोदय प्रकाशन
7/8 दरियागंज, नई दिल्ली-110002

रूसी वेश्यालय

यामा

(Yama the Pit का हिन्दी अनुवाद)



मूल : अलेक्जेंडर क्युप्रिन

अनुवादक : जैनेन्द्रकुमार

ISBN : 81-7037-035

YAMA Novel by Jainendra Kumar, Transcreation of
Yama The Pit by Alexander Kuprin

विचार-साहित्य

जैनेन्द्र के विचार 30/-

साहित्य और संस्कृति 25/-

परमात्म 15/-

पश्चिम 15/-

भारत 25/-

अध्यात्म 15/-

रोमें रोला

रोमें रोलां का भारत सैट 50/-
(दो खण्डों में)

नीहार रंजन राय

भारतीय कला के आयाम 28/-

एम० हिरियन्ना

कला अनुभव 15/-

विविध

महाभारत--दक्षिण पूर्व
एशिया में 15

हिमांशु जोशी

अन्तत 10/-

भवानी प्रसाद मिश्र

जिन्होंने मुझे रचा 6/-

प्रभाकर माचवे

कहाँ से कहाँ 10/-

बालशौरि रेड्डी

माटी की महक 10

सूर्यकुमार जोशी

सूर्य-ग्रहण 10

मार्तण्ड उपाध्याय

वे दिन वे लोग 10

महात्मा भगवानदीन

जवानो ! 10

जवानो राह यह है ! 10

अपनी पहचान 10

सभी पुस्तकों पर लेमिनेटेड आवरण सफ़ेद कागज स्वच्छ मुद्रण

प्रकाशक



पूर्वोदय प्रकाशन
7/8 दरियागंज नई दिल्ली-110002



यामा

प्रस्तावना

शायद सन् 31 की बात है, राह में बनारस उतरा और प्रेमचन्दजी को पुस्तक में लीन देखकर पूछा कि, यह क्या पढ़ रहे हैं?

बोले, "पावरफुल किताब है, जैनेन्द्र! लेखक हैं कोई क्युप्रिन"

तब तो समय न मिला और मुझे आगे बढ़ जाना पड़ा, लेकिन लौटते हुए फिर बनारस ठहरना हुआ और फिर उन्होंने इस पुस्तक 'यामा' की चर्चा की. वही कहा, 'जैनेन्द्र, पावरफुल किताब है।'

मैंने सुना और मैं आकृष्ट भी हुआ, कारण, शक्ति में श्रद्धा न हो. आकर्षण तो है ही।

चर्चा वह वहीं न रह गयी, प्रेमचन्द उसकी कथा भी दोहराने लगे. बेनिया पार्क के पास वाले लाल मकान की बात है, पूरब की ओर वाला बड़ा कमरा था, चांदनी बिछी दरी पर दूर पास किताब कागज फैले थे. सवेरे का वक्त था, धूप की किरणों में ताप न था, सिर्फ भीनी गरमाहट थी। थोड़ी देर में नाश्ते के लिए ऊपर जाएंगे, अभी दरी पर बैठे प्रेमचन्द बातें कर रहे थे। मैंने जो कहीं जिक्र किया है कि प्रेमचन्द तार-तार आंसू रो उठे, वह यही अवसर था। प्रसंग 'यामा' की कथा का था। पुस्तक में वह प्रसंग जहां जैनी युवक पर रीझती और प्यार की प्रेरणा में उसे ही बिन भोगे, बिन छुए, वापिस भेज देती है, सचमुच जी को हिलाए बिना नहीं रहता। कथा दुहराते प्रेमचन्द उस प्रकरण पर आए तो अपने को थाम न सके। सम्भाला बहुत, पर सब बेकार हुआ। उनके समूचे अन्तरंग को मथता हुआ कोई आवेग

उठा और उनको अवश कर गया। आवाज रुंध आयी। मुंह खुला रह गया आंखें फटी-सी रह गयीं शायद दृष्टि उनमें से हट गयी थी, कि देखते-देखते आंसू भरकर आए और उनका तार बंध गया। कोई डेढ़-दो मिनट यह दृश्य रहा। कमरे में मूक साक्षी एक मैं था और वह मैं भूल नहीं सकता।

खैर, अन्त में बात मुझ पर आयी और प्रेमचन्द बोले, "जैनेन्द्र, तुम तो करोगे नहीं, मैं जानता हूं, पर ऐसी किताबों का अनुवाद होना चाहिए।"

प्रेमचन्द का लिखना मेरी निगाह में नीतिनिष्ठ था, यह 'यामा' खुल-कर वेश्या के बारे में है, मैंने उन्हें स्तब्ध होकर देखा, पूछा, "किताब इतनी अच्छी है ?"

"इतनी नहीं जानता, अच्छी है ! तो तुम तो अनुवाद करोगे नहीं, क्यों ?"

हंसकर कहा, 'हां, क्यों करूंगा।"

"सुना है मैंने कि तुम कहते हो, लिख पाए वह अनुवाद क्यों करे इस-लिए तुमसे साफ नहीं कह रहा हूं, पर करो तो अच्छा है।"

बात आयी गयी हुई और मैं उन्हें आश्वासन न दे सका पर लौटकर दिल्ली आया तो प्रेमचन्द की बात मन में कटकर बैठ गई थी 'यामा' पुस्तक प्राप्त की और पढ़ गया, पुस्तक मुझे महान नहीं मालूम हुई, अब भी किसी ओर से वह महान नहीं लगती, पर ताकत उसमें है, क्योंकि ईमानदारी है और सहृदयता है, पर रुझान भी है जो मुझे बहुत ऊंची चीज नहीं जान पड़ता। जो हो, पुस्तक पढ़ने पर याद आया कि मैं प्रेमचन्द को अनाश्वस्त छोड़ आया था। क्या मैं उनका ऋणी न था। ऋण भीतरी और गहरा था, इससे चुपचाप मैंने पुस्तक को लिया और लिखना आरम्भ कर दिया ?

उधर बनारस में प्रेमचन्द के मित्र थे श्री चन्द्रभाल जौहरी। किताब प्रेमचन्द से ताजा थी ही और मुझसे निराशा मिली थी। उन्होंने चन्द्रभाल जी से कहा और चन्द्रभालजी ने, लगता है, फौरन काम हाथ में ले लिया। मुझे दिनों तक इसका पता न चला और जब पता चला तब तक मेरा अनु-वाद दो तिहाई के करीब हो चुका था। सच यह कि अनुवाद के काम में मुझे बड़ी उलझन होती थी, और होती है। इससे पता चलते ही मैंने चैन की सांस ली और अनुवाद अपना वहीं-का-वहीं छोड़ दिया।

उम सन् '31 मे अब यह' 56 आ गया है। चौथाई सदी मे ऊपर काल बीत गया। पन्ने पीले हो गए और कुछ इधर-उधर भी हो गए हों तो क्या अचरज ! पर दिलीप कुमार ने कहा, 'इसे पूरा कर दो, हम छापेंगे।'

मैंने कहा, 'गाडी वालों का कटरा तो बाजार मे है और कई सस्करण हो गए है।'

पर उनकी स्वय छापने की इच्छा बनी रही और मेरे लिए उसे पूरा करने का आदेश भी बना रहा। छोटों की आज्ञा अनुल्लघनीय होती है, क्योंकि हम व्यतीत के है तो भविष्य उनका है। इस तरह यह अनुवाद सामने आ रहा है और मैं क्षमाप्रार्थी हू।

अनुवाद का काम जोखम का है। आजादी लो तो सोच होता है कि तुम्हें इसका अधिकार क्या है। न लो, तो मालूम होता है कि तुम मूल लेखक के साथ लिहाज बरत रहे हो, आत्मीयता नही। मक्खी की जगह मक्खी न मारना गलत लगता है और जबरदस्ती उस मक्खी को मारकर ही रहना भी उचित नही लगता। इसमें अनुवाद एक बवाल है। मैंने तो जैसे-तैसे सिर से बला टाली है। जगह-जगह, करीब हर जगह, मालूम हुआ है कि पाण्डु-लिपि मे मेरे मन का मेल नही है। अनेक विवरण, जो कोई मेरा गला दबा-कर भी लिखाता तो मै न लिखता। अनुवाद मे कलम की राह मैंने उतारे और उपस्थित किए है। अनमने मन मे यह हुआ है इसमें निश्चय ही सुघर न हुआ होगा। पर विगत के ब्योरों के अलावा जहा मानसिकता का मर्म है वहा आशा है, मन विशेष चूक नही की है।

मूल पुस्तक के सम्बन्ध में बहुत विवाद रहा है जैसा कि लेखक के वक्तव्य मे प्रगट है। विवाद अब भी हो सकता है, पर लेखक के साथ मैं भी सहमत हू कि मुह फेरना नैतिकता नही है। उससे सामना करना अधिक नैतिकता है। समस्या है और भीषण है। निदान आपका भिन्न हो सकता है और समाधान भी। उसके साथ आपका वृत्त-व्यवहार भी अलग हो सकता है। पर उपेक्षा काम नही देगी, न निरपेक्षता। मन में साहस लेकर और बुद्धि मे वैज्ञानिक वृत्ति, हमें उस चीज को छूना और छेडना होगा जिसे समाज का कोढ़ कहकर हम अपने से परे रखना चाहते है। नही तो निर्म-लता हाथ न आएगी, सिर्फ कायरता का ही दोष ऊपर चढेगा। वेश्या रही है

जो मा है । क्या यह प्रश्न हमको नहीं छूता, नहीं चौंकाता, कि क्यों वह मा नहीं है और क्यों नारीत्व का विद्रूप बनकर वह कोठे पर मजी मजाई बैठी है ? नहीं, उसे लज्जा नहीं है, जुगुप्सा नहीं है, बल्कि उलटे गर्व और दर्प है। तिरस्कार समाज उसे देता है, पर उससे गहरा तिरस्कार वह···सम.ज पर पीक की तरह थूकने को तैयार है·· यह स्थिति स्वस्थ नहीं है। यह प्रति-कार मांगती है। वह शायद चिन्ह है और व्याधि व्याप्त है। पर जो हो, उसे टालना नहीं बन सकता, उससे निबटना ही होगा।

जहां-तहां स्थानों और व्यक्तियों के नाम सुविधा के लिए बदल दिए गए हैं। वे नाहक कठिनाई पैदा करते और विषय को व्यर्थ दुरूह बनाते। आशा है, इससे मूल का अपलाप नहीं हुआ है बल्कि उसके अभिप्राय के साथ न्याय ही हुआ है।

15 दिसम्बर, 56
दिल्ली

जैनेन्द्र कुमार

लेखक का वक्तव्य

यह पुस्तक दुनिया की अनेक भाषाओं और अनेक देशों में बीसों लाख से ऊपर की संख्या में छप चुकी है। रूसी के अलावा फरासीसी, जर्मन, स्पेनी, इतालवी, जापानी, स्वीडी, फिन्नी, नार्वेजी, गोहिनी और हंगेरी अंग्रेजी कोल्ही लुथियानी और दूसरी भाषाओं में इसके संस्करण निकले हैं।

इस सफलता का कारण यह नहीं हो सकता कि पाठकों में पुस्तक ने किसी प्रकार की हीन उत्सुकता जगाई है। जन-मानस उतने हल्के तल पर नहीं रहा करता। मेरा निश्चित विश्वास है कि 'यामा' ने बहुत लोगों को इस व्यभिचार-संस्था, वेश्या, के बारे में सच्ची सहानुभूति से सोचने को बाध्य किया है।

लेकिन लेखक पुस्तक से पहले भी सदा असन्तुष्ट रहा और अब भी है।

सच ही इतनी समस्याएं हैं जो इन हजारों वर्षों के काल में मानव जाति के सिर पर छाई रही है। उससे जूझकर और झकझोरा जाकर कभी वह धरती पर गिरा है और नीचे पशु के तल तक उतर आया है, वे कड़ी और भारी और विकट कम नहीं है। युद्ध है, व्यभिचार है, फांसी है, और श्रम है जिसका शोषण होता और जो बेगार तक में चूसा जाता है। मुट्ठी भर विलासियों की सेवा में नियुक्त बहुतों की अधपेट गुलामी और चाकरी है। पर इन सब घोरताओं में मुझे नारी-देह और नारी-प्रेमका पण्य-व्यापार सदा घोरतम प्रतीत हुआ है। नारी-देह और नारी-प्रेम ये दो

परमेश्वर के परम वरदान हैं···किन्तु मुझे प्रतीत हुआ है कि मनुष्य जाति का यह प्राचीन रोग, यह कोई ऐसा नहीं है जिसका जल्दी और सही इलाज होने में कठिनाई हो। सोचता हूं कि सिर्फ आदमी को यह भर कहना है कि क्यों भई, तुम्हारे यहां कोई सफेद बालों की वृद्धा नानी दादी है ना कि जिनकी तुम श्रद्धा करते हो? छुटपन में तुमने उनसे लोरियां सुनी हैं और गीत और कहानियां। वे तुम पर आशीर्वाद रूप रही हैं और उनके प्यार की छांव में सारा घर तुम्हारा फल-फूलता रहा है—है ना? तुम्हारे मां है ना जिसकी छाती से लगकर कैसी आतुरता से तुम दूध पिया करते थे और वहीं मुंह दुबकाकर कभी सो भी जाया करते थे! तुम्हारी पत्नी है ना जो तुम्हारे बच्चों की मां है और परिवार की केन्द्र है। बहिन है जो आंगन में खेलती मचलती है और जिसकी वाणी तुम्हें संगीत है?···क्यों, तुम्हारी आंखें लहू क्यों भर लायीं? और जबड़े गुस्से से हिले क्यों जा रहे हैं? सिर्फ इसी ख्याल से ना कि किसी ने तुम्हारी प्यारी छोटी बहिन के साथ रहते तुम्हें कोई रोमानी बात कह दी है, या ऐसा-वैसा कोई इशारा कर दिया है! और बात जो कहीं तुम्हारी प्यारी बेटी की हो—पर नहीं इतना नादान नहीं हूं कि वह संकेत तक मैं करूं··· "

लेकिन तुम्हीं जेब में पैसा लेकर, रुपया, डालर, रूबल, फ्रांक या और सिक्का डालकर स्त्री के पास जाते हो और वहां बाजार रचते हो! चाहते हो, पैसा ले और दिल का छलकता गरमा-गरम प्यार वह तुम्हें दे—प्यार कि जिसमें सृष्टि का सार, सृष्टि का रहस्य है, जिसमें से जीवन बनता और फूलता है, जो स्वयं आदि है, अन्त है···और हां सबका समर्थन है, चाहते हो कि सिक्कों से वही तुम खरीदो···

आपके लिए यह कहने की गुंजाइश नहीं है कि स्त्री राजी है, कि वही नीचे आती है, कि वही स्वयं रिझाने आगे बढ़ती है, कि क्यों वह इतनी नीच और ढीठ बनती है?···जी, बनती है, क्योंकि आप बनाते हैं, आपकी यह रचना ही ऐसी है, पर सच और सही बात यह है कि अगर बचपन में वही प्यार में और संभाल में पलती, किसी के ध्यान के नीचे बढ़ती, तो वह आज प्रसन्न माता ही केवल न होती, बल्कि किसी की प्यारी बहिन भी बन होती और दुलारी बेटी भी।

न यही कहकर आप अपने को बहला सकते है कि आपके सगे नाते-रिश्तेदार एक है और दूसरा आपके लिए बिल्कुल दूसरा है। दूसरे के परिवार मे आपको न वास्ता है न लेना-देना है···लेकिन यह तो जगली का-सा सोचना है···और हम अपने को थोडा तो सभ्य सस्कृत समझते ही है।

और जब आप अपनी पाशव वासना पूरी करके वेश्या के पास से आते है, ऊब और उकताहट मे जी आपका मिचलाया-सा लगता है, तो जान रखिए और याद रखिए कि उस वक्त आप वेश्या से कही अधम और पामर होते है। वर्तमान जीवन की विषमता और विडम्बना का लाभ उठाकर, समझ लीजिए, कि आपने ऐसे भिखारी को लूटा है जो अन्धा है, उसे मारा है जिसके हाथ बधे है और जो बेबस है, छला है तो उसे जो नादान है मासूम है और जो स्वय शिकार है।

हा, जैसा मै समझ सका और मुझसे बन सका मैने वेश्यावृत्ति के खिलाफ लिखा। लेकिन मुझे कोई नुस्खा नही मिला। मै इतना ही जानता हू कि बदनसीब अभागिन नारिया वेश्यावृत्ति मे पडती है तो कारण होता है एक ओर गरीबी और अशिक्षा, दूसरी तरफ लालच और फुसलाहट तीसरी तरफ हर रोजगार की कमी या किसी रोजगार की नाकाबलियत। लेकिन इस सब चीज के बारे मे लिखना, बोलना, विचारना और प्रचारना···सब क्या फिजूल नही है? देखकर डर लगता है कि बडी से बडी सच्चाई को खोलने वाले स्पष्ट से स्पष्ट और उग्र से उग्र शब्दो का स्त्री-पुरुषो पर कितना अकिंचनकर प्रभाव पडता है।

एक बार पीटर्स वर्ग से क्रीमिया जाते हुए ट्रेन मे कुछ युवक इजीनियर लोगो की मडली ने मुझे पहचान लिया और इस वेश्यावृत्ति के बारे मे मुझसे बात करने की अनुमति मागी।

'देखिए।" वे बोले, 'आप इन चकलो की और अड्डो की गध को और घाव को, उघारते तो है, लेकिन उम्र पर आकर आदमी मे ऐसी बेबसी के साथ जो कामवेग और भोग की भूख लगती है उसको रोकने थामने का भी आपके पास उपाय है?"

बन सका वह मैने जवाब दिया···

'मोटा खुरदरा बिस्तरा, सख्त तख्त, ओढने मे कंबल को ज्यादा मुना-

यम न हो और ज्यादा गर्म न हो, खूब हवा आये-जाये ऐसा सोने का ठण्डा कमरा, गाढ़ी नींद, मगर लम्बी नहीं, और तड़के सबेरे का उठना, ठण्डे पानी में या बौछार में नहाना, साधारण भोजन, मसाले का छोंक बघार कुछ नहीं। अच्छी किताब जिसमें वीरता और पराक्रम की गाथा हो। खूब सारा काम और खुली हवा में खेल। लड़के-लड़कियों की सह-शिक्षा, और अन्त में जल्दी विवाह, समझो बीस-बाईस वर्ष में, क्योंकि आखिर कुल शील की लड़की उस अवस्था तक सहज सह सकती है।"

इंजिनियर लोग बोले—

'यह सब हम जानते हैं, ये बस ऊपर के मरहम हैं, जड़ की बात का हल वे नहीं देते। सवाल है कि यौन तृप्ति की जगह आप क्या देंगे ?'

इस पर मेरा मन बिगड़ा। मैंने उन्हें सुना दिया कि टाल्सटाय महान ने एक बार ऐसे वक्त क्या कड़ा जवाब दिया था।

एक मौके पर रूसी बौद्धिकों की एक बड़ी सभा हुई। स्वभावत: वहां खासी चख-चख और ले दे रही। टाल्सटाय झुंझलाकर अपने समय की सरकार को बुरी-भली सुना रहे थे। उस समय एक युवक ने उनसे सवाल किया—

'अच्छा, लियो निकोलोविच, मान लिया आप सही हैं, शासन बिगड़ा है और निकम्मा है। यही आप चाहते हैं तो चलिए हम उसे गिरा देंगे लेकिन कृपया उसकी जगह आप हमें दीजिएगा क्या ?'

टाल्सटाय ने कटकर जवाब दिया।

'थोडी देर को मानिये कि—परमात्मा न करे, आपको कोई बुरी बीमारी हो गई, आप मेरे पास आते हैं और पूछते हैं, यह क्या मुसीबत मुझे लग गई है और मैं क्या करूं। मैं कहता हू, तुम बीमार हो और यह तुम्हें बीमारी है। अब करो यह कि बिना देर किये डाक्टर के पास जाओ और लगकर पूरी तरह इलाज करो। लेकिन तुम तुरन्त उलटकर मुझे पूछते हो, "अच्छा, मैं जाता हू डाक्टर के पास और इलाज में अपने को अच्छा भी कर लूंगा, लेकिन सिफलिस की जगह पर आप मुझ-

को दीजिएगा क्या ? तो भई मैं कबूल करता हूं कि जवाब देना मेरे लिए आसान न होगा..."

यही मेरी हालत है. जहां तक सम्भव हुआ है मैंने वेश्यावृत्तिकी भयानकताका ईमानदारीसे विवरण दिया है. लेकिन मेरी चीज सही रूपमें सामने नहीं आई. रूसी सेन्सरने ऊपरसे बिगाड़कर उसे ऐसा बना दिया कि पहचानना मुश्किल था. उस सेन्सरको आप जानते हैं. कैसा मनमाना है, दीखनेको नाजुक और पाखण्डसे पूर्ण. पर भोली पब्लिक उससे भी चिहुंक कर पड़ी. हजारों गालियोंके खत, जिसमें ज्यादातर गुमनाम थे, मुझे अपने देशमें मिले—और अब भी जब तब मिलते हैं. इल्जाम लगाया गया कि मैंने समाजकी जड़ोंको हिलाया है, युवकोंका चरित्र बिगाड़ा है, कि मेरा लिखना अश्लील है. बहुतोंने मेरी ईमानदारीको और इरादेकी सच्चाईको समझनेसे इंकार कर दिया. शुरूमें सहानुभूति और प्रोत्साहनके पत्र मिले तो प्रौढ़ वयकी अनुभवी समझदार महिलाओंसे और ईमानदार युवकोंसे जो अपनी यौन कामनाओंसे भयभीत थे और युवती कन्याओंसे भी. व्यवसायी वेश्याओंसे मिले अनेक पत्र मेरे पास सुरक्षित हैं. उनमें व्याकरणकी भूलें हो सकती हैं, पर वे बड़े गम्भीर और हृदयस्पर्शी हैं...

विस्मय है इसपर कि देशसे बाहर, पेरिसमें, मुझे मान्यता भी मिली, समर्थन और आश्वासन भी मिला. मेरा यह दर्दभरा उपन्यास फ्रेंच अनुवादमें निकला तो पेरिसके प्रेसने और वहांकी जनताने बड़ी हार्दिकतासे उसे अपनाया आलोचकोंने उस सौजन्य और सूक्ष्मताके साथ, जो कि फ्रांसके लेखकोंकी विशेषता है, उसकी त्रुटियां भी बतलाई. पर यह मत उनमें सर्व सामान्य और सर्वसम्मत था कि रचना, कहीं कुछ ग्राम्यता और कचाईके बावजूद, पूरी तरह नैतिक है. उसमें हार्दिक मानव करुणाका एक स्वर जो व्याप्त है उससे पाठकको और साहित्यको आवश्यकता पूरी होती है.

मैंने तनिक खुलकर सांस ली.

और अब मुझे इस बातकी बहुत खुशी है कि आखिरकार, दूसरी

ही भाषामें सही, मैं यामाको उस अपने मौलिक रूपमें लानेमें सफल हो रहा हूं जिसमें वह शब्द पहनकर उतरी और उपस्थित हुई थी.

सचमुच यह कोई आसान काम नहीं है. सेन्सरसे कटे अंश तो बादमें भी भरे जा सकते हैं, पर मुश्किल दूसरी है. उपन्यास रूसमें अनेक संस्करणोंमें छपा,—लेकिन प्लेट लेकर नहीं छपा यों ही सीधा छपता चला गया और उस कारण छापेकी अशुद्धियां बढ़ती चली गईं. इससे न सिर्फ झुंझलाहट होती बल्कि...कभी तो मूल पाठ ऐसा बिगड़ जाता है कि समझ ही न आ सके ! मैंने उस सबको व्यवस्थित किया है और मुझे अब सन्तोष है कि मेरी कृति अच्छेसे अच्छे अमरीकी अनुवादकके हाथमें है.

एक और भी कारण मेरे लिए प्रसन्नताका है यामाके अमरीकामें छपनेपर. वह यह कि क्या एक समय वहीं "टाम काकाकी कुटिया" नहीं छपी ?

—एलैक्जैण्डर क्युप्रिन

पहला भाग

बहुत दिन हुए, जब रेल नहीं निकली थी, इक्केवाले इकट्ठे-के-इकट्ठे एक दक्खिनी शहरके परले किनारेपर बसे हुए थे. पीढी दर पीढी वे वहीं रहते आए थे. इसीसे उस जगहका नाम पड गया था इक्का टोला (याम्सकाया स्लावड्का) अर्थात इक्केवालोंकी बस्ती कुछ उसे याम्सकाया भी कहते थे, कुछ याम्सकास, और कुछ लोग उसका और अपभ्रंश बनाकर कहते थे 'यामा' अर्थात खड्ड. होते-होते रेल आ गई. भापके इन्जनने इक्कों और इक्केवालोको मिटा ही दिया. वे धीरे-धीरे अपनी समाजका मस्तानापन खो बैठे और इधर-उधर दूसरे धन्धोमे समा रहे. बिरादरी टूट चली, तौर तरीके अपने वह भूल गए, और जिसने जहा ठौर पाया उमी पेशेमे पडकर वे लोग तितर बितर हो गए. पर वर्षोंतक—अबतक भी—यामाकी एक धुधली-सी याद, एक खामोश शोहरत बाकी है. लोग संभ्रमसे कहते हैं—"वही यामा. जहा सदा शराबका दौर रहा करता था, और हर वक्त चहल पहल. वही, जहां रातोमे बहार बहती थी और ऊपर खतरेका खौफ !...और जहां बस—क्या-क्या न था !"

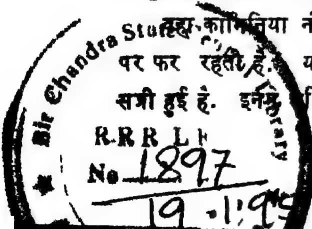
पर जाने किस विध, आप ही आप, कुछ और चीज आ जमी. पहले वहांकी लजीली बधुएं, खिलती कन्याए, और प्रौढा विधवाए, मदिराका और अपने स्वच्छंद प्रेमका व्यवसाय तनिक बचकर, दब-छिपकर, कुछ विशेष यत्न और अधिक सफलताके साथ कर पाती थी. अब उसके अवशेषपर चकले उठ खडे हुए हैं. इस व्यभिचारको सरकारकी सनद प्राप्त है. इसपर सरकारी देख-रेख है, वह बाकायदा है, नियमानुमोदित

है. उन्नीसवी मदीका अन्त आते-आते यामाकी दोनो गलियां—छोटा यामा, बड़ा यामा—आमने-सामने दोनो ओर इसी तरहके अड्डोसे भरी हुई थी निजी मकान कुल पाच छ बचे होगे. उनमे भी दारुखाने थे या और वैसी चीजोकी दुकाने वहा आ खुली थी, जिनकी यामाके व्यभिचारके साज और मामानके तौरपर माग रहा करती

इन लगभग तीन दर्जन घरोम रहनेवालियो की दिनचर्या एक सी थी वही तरीके, वही रीत अन्तर था तो फीमकी रकममे. इस क्षणिक तृप्ति और नारी देहके इस क्षणिक सम्पर्कको यहा एक दरपर आप खरीद सकते थे तो वहा कुछ कीमत ज्यादा लगती थी चुनाचे उन घरोमे रहनेवालियोके यौवन, सौदर्य, चातुर्य और हुनरमे भी उसी हिसाबमे अन्तर था. उनको वेषभूषाम और सजावटम और कमरोकी रौनकम भी उसी कदर फर्क होगा.

सबमे अव्वल जगह है ट्रपिल बडी यामावाली गलीमे बढिए कि पहला अड्डा वही है खासी पुरानी फर्म है इसके नए मालिकोका नाम इस फर्मके नामस अलग है वे नगर पिता है और जिला बोर्डके सदस्य है मकान दुमजला है, हरा और सफद. दरवाजेपर दो काम दार घोडे बने खडे है, द्वारपर नक्काशी हो रही है, सामने चौडे जीनेपर धारीदार बनातका फर्श बिछा है हालम एक उम्दा कारीगरीका नमूना एक भालू खडा है, जिसके अगले फैले पजोम एक लकडीकी रकाबी टिकी है कि आनेवाले अपने विजटिंग कार्ड उसम रक्खे नाच घरमे चिकना फर्श है चारो ओर भारी रेशमी पर्दे पडे है दीवारके किनारे-किनारे कतारम सुनहरी और सफद कुर्सिया है, और आइनेदार मेज खास कमर मे गलीचे, दीवान, मसनद, और साटनके मुलायम गद्दे पड़े है. ख्वाब-गाहोम नीले और गुलाबी शमादान और रेशमी दूध-सी रजाइया, और सफेद झक झागमे तकिए है

यहा कामिनिया नीचेतक आनेवाले गाउनोम मिलती है. किनारो पर फर रहती है. या वे तरह-तरहके मर्दाने और जनाने उपवेशोमे सजी हुई है. इनमे अधिकाश जर्मन है, या आस-पासके प्रान्तोसे आई



है. वे सुन्दरियां पर्याप्त काया है, पीली कांति है, और कोमल स्थूलता यहां एक मुलाकातके बीस रुपए लगते हैं. रात भरके पचास.

दो रुपएवाले तीन ठिकाने हैं. वे जरा हल्के हैं, सामान भी उतरा हुआ. शेष स्थान एक रुपएवाले हैं. वे और घटिया हैं. छोटे यामा वाली गलीमे हिसाब आनोका है. वहां कोठरीकी धरती मीली, गंधीली है, दीवारोपर जाले हैं, खिड़कियोपर पर्दोंके नामपर लाल लत्ता. कोठरियोको अलग करनेके लिए छोटी दुकानोकी तरह दर्मियानमे बस एक टट्टरकी आड है टट्टर छततक पूरे उठे हुए नही हैं. खाटोपर पुआल के ऊपर चिकनी धब्बेदार चादरें पडी हुई हैं, और नकली फलालैनी कम्बल. वे काले छेदा और जुओंमे भरे, सिकुडे, गूदड हुए पड़े हैं. हवा खारी-सी और भारी है मदिरा और मानव देहसे विसर्जित तरह-तरहके मलोंके गन्धकी उमससे भरी औरतें छपी छीटके घाघरोमे लिपटी हैं. अधिकतर रूखी, मद, मुखर, वे स्त्री नामपर जी रही हैं. उनके चेहरेपर नोच-खरोंच और मार-पीटके निशान हैं. उनपर सिगरेटके बक्सके रंग की मददसे रोगन-सा पोत लिया गया है

माल भर, हर शाम, हरेक दरवाजेके आगे लाल लालटेन जलती लटकती रहती है. विशेष कुछ दिन छूट रहती है—यानी व्रत-पर्वके दिन. इन दिनों जरूरी तौरपर धर्मका ध्यान और परमात्माकी उपासना होनी चाहिए. उन दिनोकी तो लाचारी ठहरी, शेष सब दिन रोशनियां जगी रहती हैं, जैसे नुमाइश हो. खिडकियां चमक उठती हैं. संगीत चारों ओर फैल जाता है, और गाड़ीवाले बिना फुरसत पाए अपनी गाड़ीको लेकर आते रहते और जाते रहते हैं इन घरोके प्रवेश द्वार रात-भर आमंत्रण देते हुए खुले खड़े रहते हैं. दूरसे ही द्वारके आगेका प्रशस्त जीना ऊपर जाता हुआ दीखता है. वहां रंग-बिरंगी रोशनी जगमगाती है. सबेरे तक सैकड़ों हजारों ही आदमी इन जीनों परसे उतरते हैं और चढ़ते हैं यहां हर कोई जाता है, अधमरा-सा डाढ़ीसे जमीनको चूमता वृद्ध भी संजीवनी बूटीकी खोजमें आता है और हाईस्कूलमें पढ़नेवाले छोकरे भी आते हैं. नाती-पोतेवाले कुटुम्बियोंके सिर-धनी लोग, समाजके स्तम्भ-रूप

सुनहरी चश्मा लगाए प्रतिष्ठित पुरुष, नव-विवाहित, बड़े-बड़े नामवाले आचार्य, अध्यापक, चोर और खूनी और वकील, सदाचारके धनी और रक्षक सुधारक और लेक्चरार, और स्त्रियोंके समानाधिकारके समर्थक, जोशीले लेखोंके जनक लेखक, आवारागर्द, जासूस, फरार, कैदी, अफसर, विद्यार्थी, क्रान्तिकारी और किराएके दश-भक्त, पस्त और साहसी, रोगी और स्वस्थ्य, जिन्होंने स्त्रीको कभी देखा नहीं और जो उसके सामने इच्छासे और भयसे थरथर कांपते आते हैं वे और वे भी जो इस तरहके मामलो-मसालोंसे खूब छके हुए हैं, भोली आंखों और सुन्दर चेहरोंवाले तरुण, और भयंकर वीभत्स आकृतिवाले बहरे, अन्धे, सड़े वे लोग भी जिनकी देह लटक चली है, खाल गधीली है, और पेट जिनके मटकेसे निकले हैं वे लोग भी आते हैं जिनके सिरपर बाल नहीं होते, जो आत्म विश्वाससे हीन हैं पर पिछलग्गू खुशामदियोंसे घिरे हैं वे जायदादोंपर जीते हैं आजाद उदास वे आते हैं, जैसे किसी न्यौतेमें आए हैं वे बैठते हैं, पीते हैं, प्रसन्न होनेकी चेष्टा और बहाना करते हैं, और वीभत्स अंग भंगीका प्रदर्शन करते हुए नाचते हैं. वे कभी घूर घूरकर खासी देरमें ध्यान पूर्वक, और कभी पाशविक शीघ्रताके साथ, इन दर्जनों में किसी एक कामिनीको चुन लेते हैं वे जानते हैं, इन्कारका डर नहीं - इन्कारका सवाल ही नहीं उतावलीमें पेशगी अपना रुपया टन्नसे फेंक देते हैं, और इस बाजारू बिस्तरपर जो किसी दूसरे मर्दके स्पर्शसे अबतक भी गरमाया हुआ है वही, बिना उद्देश्य, बिना भाव, वह कृत्य कर गुजरते हैं जो विश्वके तमाम रहस्योंमें चरम सुन्दरतम रहस्य है नतन जीवनकी सृष्टिका रहस्य और ये स्त्रियां ! ये भी अनायास, अनुद्यत तत्परताके साथ व्यावसायिक अभ्यासवश, सिसकारी भरती और तरह तरहके शब्द उच्चारण करती, काट-खोटकर, विभिन्न अंग-भंगिमाओं द्वारा मानो अपनी ओरसे और गर्म मसाला मिलाती-सी, मशीन जैसी उन मर्दोंकी कामना पूरी करती हैं क्यों? किसलिए?—आखिर इसीलिए कि एक क्षण बाद, वैसे ही शब्द, सीत्कार, आसनों, क्रियाओं और चेष्टाओंसे वे दूसरे अभ्यागतोंको लें और उन्हें भी चुका डालें. फिर तीसरे, फिर

चौथे—दसवें!—और ये सब शायद बाहर नम्बरवार बरामदेमें इन्तजार मे खड़े रहे हैं कि कब पहला निबटे और कब उनका नम्बर आए !

इस भांति तमाम रात बीतती है. दिन होनेको होता है कि यामा धीरे-धीरे शान्त हो चलता है. प्रभात उजला पड़ा कि मेला भी उजड़ा. तब सब किवाड़ बन्द हो जाते हैं और कामिनियां सोती हैं: शाम होते होते वे फिर जाग जाती हैं—कि रात पास आ रही है, उसके लिए तैयारी करें.

बाजारकी दुकानकी तरह अपने खुले कोठोंमें, समाजसे कटी और बहिष्कृत, परिवारसे त्रस्त और शापित, समाजकी अभियुक्त और उसके शासन दण्ड द्वारा दलित, नगरकी वासनाको अपने भीतर पीकर बहने-वाली मोरी बनी ये नारियां, हमारी गिरिस्तियोंकी प्रतिष्ठाकी स्वयं पाप बनकर रक्षा करनेवाली ये स्त्रियां, ये चार सौ अपढ़ काहिल, सनकी, बांझ, बेहूदा औरतें—अनन्त होकर आते-जाते अपने दिन, महीने और बरसों बरस पार करती हुई इस तरह अपना अविश्वसनीय, उत्कट, घोर और विचित्र जीवन जीती हैं !

२

दोपहरके दो बजे होंगे. दो रुपए दरवाला अन्ना मरकानीका आलय नींदमें डूबा है. वह बड़ा कमरा भी जिसके किनारे-किनारे फ्रेमदार बड़े आइनोंकी मेजें और गद्देदार कुर्सियां रखी और ऊपर रसीली तस्वीरें सजी हैं, शांत सो रहा है. वह जैसे चिंतित है. वह मानो खिन्न है, अंधेरेमें सिमटा पड़ा है. रोजकी तरह कल शाम भी रोशनियां जगी थीं, उद्दाम संगीत गूंजा और घुमड़ा था, तमाखूका नीला धुंआ उमड़ा था, और दो-दोके जोड़ोंमें पुरुष और स्त्रियां टांगें उछाल-उछालकर, कटि घुमा घुमा-कर ताण्डवमें नाचे थे. सारी गली लालटेनोंकी रोशनीसे जगमग थी, द्वार बाहें खोलकर निमन्त्रण देते हुए खुले थे. आदमियोंका बड़ा जमघट था और गाड़ियोंका तांता—और सवेरे तक यही रहा था.

अब गली सूनी है. गर्मीके सूरजकी धूपमें बिल्लोरके मानिंद जगमगा रही है. लेकिन कमरोंके पर्दे सब गिरे हैं. वहां अंधियारी है सीलन है. मानो वह अंधेरा कह रहा है—अभी नहीं !

बाजा एक ओर काली झुकी पीठ उठाए, चुप बैठा है. पीली जीर्ण टूटी, दांत दिखाती हुई-सी खूंटियां चमक रही हैं. हवा बन्द है, उसमें कलकी गन्ध है. उसमें तमाखूकी, इतरोंकी, सीलकी, मलिन स्त्री देहके पसीनेकी, पाऊडरकी, ऐंटिसेप्टिक साबुनकी, इन सबकी बास जैसे हवामें मिली हुई है. उस पीले बूरकी बास है, जिसे कल फर्शपर छिड़का गया था, इसीके साथ घासकी घासकी भीनी-भीनी महक भी मिली हुई है. आज एक पर्वका दिन है. पुरानी रीतिके अनुसार घरकी संरक्षिकाओंने कमरोंको, हालको, फर्शको एक प्रकारकी दूबसे बिछा रखा है. उसी पुरानी रीतिके अनुसार उन्होंने सलीबकी मूर्तियोंके आगे दीपक भी जला दिए हैं. पर लड़कियां अभी सो रही हैं. वे इस दीपक जलनेमें भाग नहीं ले सकतीं, क्योंकि उनके हाथ रातके कामोंसे पवित्र नहीं हैं.

यहांके चौकीदारने सदर फाटकको भी खूब सजाया है. इसी तरहसे और सब ठिकाने भी आजके दिन सजाए गए हैं. उनमें धूप जल रही है, और रौगन चमक रहा है.

तमाम घर चुप है, खाली है, निद्रामग्न है. रसोई घरमेंसे करछी चलानेकी-सी आवाज आ रही है. लुबी, एक लड़की, नंगे पैर, नंगी बांह, असुन्दर, पर देहकी ताजा, स्वस्थ और पुष्ट, अपनी कोठरीके बाहर के दालानमें आ ... ल, दुकानदारीके समय, छः गाहकोंने उसे लिया था. उसने सबको निबटाया, पर रातभर उसमें कोई न टिका. इसलिए अपने चौड़े बिस्तरपर आज वह खुश और शानके साथ जी-भरके अकेली सो पाई है. अतः वह जल्दी उठ बैठी है, महाराजिनको रसोईमें मदद देने आ पहुंची है...कि वह जंजीरसे बंधे कुत्ते पेमूको कुछ खिलाने लग गई. कुत्ता जंजीरको साथ खींचकर उचकता है, लपकता है, पूंछ और पीठको फर-फराकर सीधा खड़ा होता है. उसे उत्साह है, वह मचलता है, हल्के भौंकता है मानो ऊपर चढ़कर उसे खरोचना चाहता है. पर

लड़की बनावटी कठोरतासे कहती है-—"चुप गधे. मैं तुझे अभी बताती हूं - यह गुस्ताखी !"

लेकिन वह मनमें पेमूकी शरारत और प्यारपर बड़ा आल्हाद मान रही है. कुत्तेपर अपना जोर पाकर वह खुश है क्योंकि आज वह जी-भरके मर्दसे छुटी अकेली सोई है और उसे पारसालके आजके पर्वके दिनकी और बातें भी याद आ रही हैं.

रातके सब मेहमान अपनी राह चले गए हैं मगर अब फिर रोज़ी कामकी, व्यवसायकी, मोल-तोलकी घड़ी पास आ रही है पांच जने मालकिनके कमरेमें काफी पी रहे हैं. पहिली तो मालकिन ही है अन्ना मरकानी. उसीके नाम उस घरकी लिखा पढ़ी है. कोई साठपर पहुंची होगी, कद की छोटी और गुट्टी है. तीन गोल भरे बोरे एक दूसरेके ऊपर रखे जाएं और वे तीनों ऊपरकी ओर क्रमश एक दूसरेसे तनिक छोटे होते जाएं तो अन्नाकी शक्ल बन गई समझिए नीचेवाला बोरा लहंगेमें घिरा उसका अधोभाग, दूसरा छातियोंसे भरा उसका धड़, तीसरा बोरा उसका सिर. अचरज है कि उसकी आंखें हल्की, भोली, अबोध बालाकी-सी हैं पर मुंहके ओठ अनुभवी बुड्ढे खुर्राट जैसे हैं, कुछ पीले से भीगे और लटकते हुए. उसका पति इमिया साविश भी पस्त, चुप, मामूली-सा बुड्ढा आदमी है. अपनी बीबीके अंगूठे तले वह रहता है. जब अन्ना मरकानी यहां रक्षिकाका काम करती थी तब यह दरबान था. धीरे धीरे वह अन्नाके समीप आने लगा, भांति-भांतिसे वह अपनेको उपयोगी सिद्ध करने लगा, और देखा गया कि वह चतुर भी है. सो यह दिन भी आया कि वह अब लखटकिया है, कुछ यह कर लेता है, कुछ वह. और कुछ-कुछ सब कुछ

फिर दो रक्षिकाएं हैं, बड़ी और छोटी. बड़ी है एमा उडवानी. लम्बी, कोई छियालीस वर्ष की भरी पूरी औरत है. तिहरी ठोडी, आंखों के चारों ओर काले से वृत्त. चेहरा पहाड़ी नासपातीकी तरह, माथेके नीचे आनेके साथ चौड़ता जा रहा है. रंग कुछ मटियाला है, आंखें छोटी काली. नाक जैसे एक जगह इकट्ठी हो गई है. ओठ एक दूसरेमें बंद.

चेहरेमें सब मिलाकर शान्त शासनका भाव है. यह भेद किसीसे छिपा नहीं है कि साल-दो-सालमें अम्मा इन एमा उडवानीको ही सब कुछ घर-बार और कारबार सौंपकर चली जानेवाली है. इस कारण लड़कियां मालकिन जैसी ही उसे मानती और अदब करती हैं. लड़की अगर भूल करती है तो उसे अपने हाथों यह एमा, बिना दया अथवा अदयाके, ऐसे ठण्डे हिसाबी ढबसे उधेड़ती है कि चेहरेपर तनिक भी भाव नहीं आता, न आवेश न करुणा. लडकियोंमे से कोई एक उसकी मनौती और प्रेम पात्री भी हुआ करती है. उसे वह ईर्षालु प्यारके अधिकारसे तग कर मारती है. यह प्यार उसकी मारसे भी कठिन होता है.

दूसरी है, जकिया. वह हालमें ही इसी घरकी मामूली वेश्यासे उठकर रक्षिका बनी है. लड़कियां अबतक उसे परिचित ढगसे पुकारती हैं. वह दुबली है, चपल, जरा मसखरी, गुलाबी रंगकी. बाल घुमीले चक्करदार काढ़ती है. उसके मन एक्टर लोग भाते हैं, खासकर मजा-किया एक्टर. एमा उडवानीकी परम अनुचरी है.

पांचवें महाशय स्थानीय जिला इन्सपेक्टर वर्कोश हैं. कमग्ती आदमी हैं, सिरपर बाल थोड़े, दाढी लाल पंखेकी तरह फैली, आंखे नीली उनींदी और बारीक, मोहक-सी आवाज. हर कोई जानता है कि पहले वह खुफिया विभागमें थे अपनी शारीरिक क्षमता और दयाहीनताके कारण अपराधियोंके लिए आतंक थे.

मुदे-उघड़े कई व्यापार हैं जो उसके चित्तपर शायद अपना बोझ डाले अभी बैठे हैं. सारा नगर जानता है कि दो साल हुए उन्होने सत्तर वर्षकी एक समृद्धा वृद्धासे विवाह किया और पार साल ही गला घोंटकर उसे खत्म भी कर दिया. पर मामलेको रफा-दफा कर देनेमें वह नाकाम नही हुए. इसी तरह शेप चारोंने भी अपने वक्र जीवनमें दो-एक ऐसी बातें देखीं और की-कराई हैं. लेकिन जैसे शिकारी अपने पुराने शिकारोंके नामोंको याद करके भी चित्तमें किसी प्रकार की दुविधा, पाप, और ग्लानिके भावका अनुभव नहीं करते, उसी तरह ये लोग भी अपने अतीत-की काली कहानियों और लहूकी लाल वारदातोंको अपने व्यवसायके

मार्गमें आई जरा बदमजगी भर समझ लेते हैं. बस ऐसे कि वे बातें आईं, हुईं, और पार गईं."

सब लोग काफी पी रहे हैं. पर इन्सपेक्टर...सच पूछो तो पी नहीं रहे है, मानो जतला रहे हैं कि केवल औरोंके अनुरोधका वह पालन कर रहे हैं.

मालकिनने मानो टटोलते हुए कहा, "क्या करें, फ़ोमिश, यह धन्धा तो अब धेले नफ़ेका नहीं रहा. पर...बस तुम्हारा कहना भर है कि..."

वर्केशने अपना गिलास धीरेसे उठाया, मुहमे घूट लिया, जीभको तालूमे लगाकर मानो उसे नीचे पहुंचाया, फिर धीरे-धीरे अपनी अंगूठी वाली अगुली दाए-बाए मूछोंपर फेरी और हाथोंको मेजपर फैलाकर, आंखोको चमकाकर, वह बोला, "खुद ही सोच देखो. ध्यानमे लो कि मै कितना खतरा उठा रहा हूं. लडकीको फुसलाकर आखिर यहां इस . क्या कहू, खैर हा, . इस तुम्हारी जगह ले आया गया है. पता लग चुका है और उसकी तलाश है, पुलिस चौकन्नी हो गई है. सही, एकसे दूसरी जगह, दूसरीसे तीसरी, और पांचवीसे दसवीं...इसी ढंग वह लड़की कही की कही पहुचती रही है. पर अन्तमे अब सुराग तुम्हारे यहां लगा है. और सोचो तुम्हीं, मेरे जिलेमें, मेरे....मै क्या कर सकता हूं ?"

मालकिनने कहा, "मि० वर्केश, लेकिन वह बालिग है."

टसिया साविशने समर्थन किया, "वह बालिग है. उसने सही लिख दी है कि वह अपनी मर्जीसे... "

एमा उडवानीने स्थिरतासे कहा, "और सच, परमात्मा जानता है, वह यहां ऐसे रहती है, जैसे हमारी अपनी बेटी."

इन्स्पेक्टरने उकताकर जरा जोरसे कहा, "लेकिन मै यह नहीं कहता. मेरी बात समझिए...क्योंकि प्रश्न कर्तव्यका है. सोचिए, यों ही मेरी परेशानी कम नही है."

मालकिन एकदम उठी. स्लीपर पहनकर दरवाजेकी तरफ बढ़ी और अधमुंदी-सी आंखोंसे इन्स्पेक्टरकी ओर बोली, "मि० वर्केश, क्या

आप, माफ कीजिए, जरा मुलाहजा फरमाइएगा कि हम मकानमें क्या-क्या तबदीलियां कर रहे हैं. हम जगहको थोडा बढ़ाना चाहते हैं."

इन्स्पेक्टरने कहा, "ओह, महर्ष..."

दस मिनट बाद दोनों लौटे. दोनों एक दूसरेको नही देख रहे थे. वर्केशका हाथ जेबमे एक नए कोरे सौ रुपयोके नोटको दबाए था. बहकाई हुई लड़कीकी चर्चा अब नही छिडी. इन्सपेक्टरने अपने काफीके प्यालेको पी डालकर, वर्तमानकी गिरी दशाकी शिकायत करना शुरू किया.

"मेरा एक लडका है. स्कूलमे पढ़ता है, नाम है पाल. देखो तो बदमाशको...आकर कहता है, पिताजी, लडके मुझे चिढ़ाते हैं, गाली देते हैं कि तेरे बाप पुलिसमें नौकर हैं, थानापर काम करते हैं, और चकले वालियोंसे रिश्वतें लेते हैं. अब परमात्माके नामपर तुम्ही बताओ, श्रीमती, यह गुस्ताखी नही है ?"

"यहां तक !.. और रिश्वतकी इसमे क्या बात है ! मैं ही..."

".. मैं उससे कहता हूं कि जबान सम्भालकर बात कर छोकरे, और जाकर अपने हेडमास्टरसे कहना कि अबसे ऐसा न हो. नहीं तो मैं तुम सबका हाल अफसरोंको लिख भेजूंगा. और जानती हो क्या ? वह फिर पढ़कर आता है, कहता है, 'मैं अबसे तुम्हारा लडका नहीं हूं, और चाहे किसीको अपना लड़का बना लो.' यह कोई बात है ! उसे इतना खर्च मिल गया है कि अभी पहली तारीख तक चलेगा, सो देखो, वह मुझसे बात तक करना नही चाहता. खैर उसकी खबर लूंगा."

अन्ना मरकानीने मुह लटकाया, उसकी धुधली आखोंमे ओस-सी आ गई, आह भरती बोली, "आह, यह सब मुझे क्या कहते हो ! अपनी बर्डीकी ही मैं कहूं...हम उसे जान बूझकर शहरमे रखते हैं. एक ऊंचे इज्जतदार घर की लड़कीके लिए...यह जगह आप जानते हैं जरा ठीक नही है...और वह लड़की हाई स्कूलसे एक साथ कैसी कैसी बातें मुंहमें लेकर आती है कि मैं लाजसे लाल हो जाती हूं."

पति इशायने कहा, "जी हां, अन्ना तमाम लाल हो रहती है."

इन्स्पेक्टर सहानुभूतिपूर्वक सहमत हुआ. कहा, "हां, तुम्हें तो लाल होनेकी शान ही है....हां, हां, मैं ठीक समझता हूं. पर, या खुदा हम किधर जा रहे हैं.—सब कुछ यह क्या हो रहा है ? देश कहां चला जा रहा है ? मैं पूछता हूं, ये क्रान्तिकारी, यह स्कूल कालेजके लड़के. ये...क्या कहूं इन्हें ? वे क्या पाना चाह रहे हे ? वे, तो वे अपने सिवाय और किसीको दोष भी न दें. दुराचार सब जगह फैल रहा है, सदाचार गिर रहा है, बुजुर्गोंकी इज्जत उठ गई है. मैं कहता हूं, इन्हें गोलीसे उड़ा देना चाहिए."

जकिया उत्साह पूर्वक बीचमें बोली, "हां, कल ही तो एक बात हुई कि एक मेहमान आया, मजबूत-सा आदमी था..."

एमा उडवानी इन्स्पेक्टरकी बात सुन रही थी, और उसकी सब बात से अपनेको सहमत पा रही थी. जकियाको बीचमें काटकर उसने कहा, "बस, खतम करो. जकिया, देखो, जाकर लड़कियोंके नाश्तेका इन्तजाम करो."

मालकिनने कहना जारी रक्खा, "अब तो किसी भी आदमीका भरोसा नही किया जा सकता. कोई नौकर नहीं जो चोर न हो. और इन लडकियोंको बस अपने मर्दोंकी पड़ी रहती है. खैर,वह करें मौज. लेकिन अपने फर्जोंका भी तो उन्हे जरा ख्याल होना चाहिए."

सब चुप थे. तभी किसीने द्वार खटखटाया. एक बारीक स्त्री कण्ठने द्वारके दूसरी ओरसे कहा, "बाईजी, कृपाकर पैसे ले लीजिए, और मुझे कागज दे दीजिए. पीटर चले गए हे."

इन्स्पेक्टर उठा, अपनी पोशाक संभाली..."वक्त हो गया है, मैं जाऊंगा. नमस्ते, अन्ना, धन्यवाद, इसिया साहब !"

लगभग चक्षु-हीन इसिया साविशने मेजपर अपनेको बढ़ाते हुए कहा, "एक प्याला तो और लीजिए...?"

"धन्यवाद, नहीं, गर्दन तक भरा हूं. बड़ी कृपा आपकी..."

"आपकी कृपाके लिए धन्यवाद. न हो, कभी-कभी आते ही रहा कीजिए."

"आपके अतिथि होनेमें मुझे सदा प्रसन्नता ही होगी, आदाबर्ज !"

लेकिन दहलीजमें वह एक मिनट रुका, साभिप्राय शब्दोंमें बोला, "फिर भी, मेरी सलाह है कि इस लड़कीको आप किसी और जगह पहुंचा दें. अभी वक्त है. अलबत्ता मामला आपका है, लेकिन मित्रकी हैसियतसे पहलेसे आगाह कर देना मेरा फर्ज ठहरा."

वह चला गया. उसके पैरोंकी आहट जीने परसे कम हुई और दरवाजा उसके पीछे भिड़ गया, तो एमा उडवानीने घृणा भरे स्वरमें कहा, "दोगला, हरामी कहींका. आते भी अपनी रखना चाहता है, और जाते भी. बदमाश...!"

३

एक-एक कर कमरेसे सब बाहर हो गए हैं. अब अंधेरा है, सूखती हुई दूबमेंसे सोंधी गन्ध आ रही है.

हां, शांति है. शामके छः बजेसे ब्यालूके वक्त तककी ये शान्तिकी सूनी घड़ियां कठिनाईसे पार होती हैं. रोज बीचका यह समय यहांके अलस जीवनमें ऐसा ठाली, बेकाम, भारी, निरा रीता-सा होता है कि ज्यों-त्यों ही कट कर देता है. स्त्रियोंकी अन्य संस्थाओंमें, या मठोंमें अथवा और महिला शिक्षालयोंमें, लम्बी छुट्टीके वक्त समय सिरपर ऐसा ही भारी होकर टंग-सा जाता है कि काटे नहीं कटता. लगभग वैसा ही भारी इस घरमें यह समय हो जाता है. जहां आराम और फुरसतकी अतिशयता है वहां समय ऐसे ही, अलसाया-सा झूमता हुआ, कन-कन बीतता है. लड़कियां बस पेटीकोट और अंगिया-सी जाकट पहिने, खुली बांह, खुले सिर, नंगे पैर, बेकाम यहांसे वहां फिरती रहती हैं. कभी बे-नहायी, बेकढ़ी, यूं ही बाजेको ढकने मूंदने लगती हैं. कभी उन्हें बजा उठती हैं...या ताश ही खेलने लगती है, या झगड़ा छेड़कर गालीका ही लेन-देन करनें लग जाती हैं. इसी तरह अलस झुंझलाहटके साथ वे

संध्याकी प्रतीक्षामें दिनकी शेष घड़ियां काटती हैं.

लुवी नाश्तेके बाद बची जूठनको पेमू कुत्तेके पास ले गई. कुत्तेने खाना निबटाया, और अब उससे मित्रता करने लगा. लुवी लौट आई. साथ नूरीको पकडा, कुछ मीठी टिकली और खरबूजेकी गिरी खरीदी, और छज्जेपर खड़ी कुट-कुट उन्हें खाने लगी. बीजोंके छिलके कभी उसकी ठोडियों और कभी उभरी छातीपर टिके जम्फरकी तहपर रह रह जाते. वे दोनों बेबात बात करतीं, कुट-कुट मुंह चलाती हुई गलीमें आते-जाते लोगोंको देखतीं और समीक्षा करती जातीं. वह लालटेनवाला जो लालटेन उतार उतारकर उनमें मट्टीका तेल भर रहा है, या वह पुलिसका सिपाही जो बगलमें रजिस्टर दबाए धरतीको धमकाता चला जा रहा है, या वह बाबू, या वह लाला जो जनरल स्टोरकी ओर लपकता चला जा रहा है...इन्हींको लेकर वे अपनी बातचीत बुनती चली गईं.

नूरी नन्ही-सी लड़की है. चमकती हुई आंखें, सफेद लच्छेसे बाल. कनपटीपर छोटी नीली नसें दीखती हैं. उसका मासूम बालपन देखकर छोटे मेमनेकी याद आती है. प्रसन्न, चपल, उत्सुक, हर बातमें अपनी नाक डालकर मानो उसे सूंघ लेना चाहती है. सबसे सब बातमें सहमत है, हर बातकी सबसे पहले सेंध पा लेती है. वह इतना बोलती है, और इतना शीघ्र कि मुंहमेंसे थूककी नन्ही छीटें बाहर उडने लगती हैं, और ओठोंपर बुलबुलेसे आ पड़ते और मिटते रहते हैं. बिल्कुल बच्ची सी है.

सामने एक दुकानके ऊपरसे...वह एक लड़केने झांका. और उतर कर एक पासके शराबखानेकी तरफ वह भाग चला.

"पोतुल ! ओ, पोतुल !" नूरी चिल्लाई, "तुम भी लोगे कुछ ? आओ थोड़ेसे बीज तुम भी लो."

लुवीने कहा, "आओ ना, एक प्यार ही सही."

नूरी हंसी. ऐसी जोरकी हंसी कि गला सारा भर गया. बोली, "आओ तो, जरा यहां गरमा ही जाओ."

लेकिन, तभी दरवाजा खुला और दिखलाई दी बाईजी बडी

"शि. !. यह क्या ओछापन है" उसने साधिकार कहा, "कितनी बार मैं तुमसे कह चुकी हू, कि तुम्हे घरसे निकलकर छज्जेपर नही जाना चाहिए. और शि·, ऐसे कपडे पहने ! समझ नही आता, हया क्या हुई. तमीजदार लडकियां जो अपनी इज्जत करती है, कभी यो लोगोंके सामने आती है ? रामको याद करो कि तुम ऐसे वेसे चकलेम नही हो हमारे यहा हो, बाइज्जत जगह."

लडकिया भीतर चली गई. और टाग हिलाती और बीज कूट कुटाती हुई रुसियाई-सी रसोईदारिनको देखती बैठ गई

छोटी मनकाके घरमे एक पार्टी जमा हो गई है मनकाको छोटी मनका कहते है, छोटी गोरी मनका कहते है, या शरारतन दगई मनका भी कहते है बिस्तरके किनारेपर वह और एक और जोहरा बैठी है. जोहरा लम्बी, सुन्दर लडकी है कमान सी भवे सामनेको आती पूरी खुली भूरी-सी आखे, और गोरा मुलायम ठठ रूसी वेश्याका चेहरा. वे ताश खेल रही है छोटी मनकाकी अन्यतम सखी जेनी दोनोंके पीछे बिस्तरपर चित्त लेटी है. महाशय ड्यूमाकी एक फटी सी जिल्द उसके हाथमे है. पढ रही है, और सिगरेट पी रही है तमाम घरमे पढनेकी शौकीन वही है. बेहद पढती है और बनरतीब पढती है किन्तु जाने किस प्रकार इन रोमान्टिक उपन्यासोंके पढनेमे भी वह न भावुक बनी है, न कल्पनाशील. उपन्यासोमे उसे सबसे ज्यादा उलझा हुआ प्लाट पसन्द आता है, जिसकी फिर एक-एक कडी अन्त तक बडी होशियारीसे सुलझाई जाए और जिसमे शानदार ड्यूअलके सीन हो उसमे कोई लार्ड महोदय बडी लापरवाहीसे अपने जूतेके तस्म खोलते हो, जैसे खुद मरने या किसीको मार देनेकी चिता उन्हे छु भी नही गई है फिर वह महाशय, अनमने और लापरवाह, अपने प्रतिद्वन्द्वीकी छातीमे ठीक निशानपर गोली दागते ही तपाकके साथ आगे बढकर खेद प्रकट करे कि "मुझे अत्यन्त शोक है कि श्रीमानकी ऐसी बढिया जाकटमे मैने छेद कर दिया है !" वहा थैलियोंकी अटूट सख्या हो, और कथानायक उनमेसे अकूत रुपए दाएं

बाए यहां वहां बखेरता सा रहे. या नवाबोंके विलास, प्रेम, शत्रुता, प्रतिस्पर्धा और मजाककी कहानियां उसे अच्छी लगती हैं. अर्थात् चटपटी, भावुक, जोशीली, वीरतापूर्ण, आदि बातोंसे भरी रचना उसे पसन्द आती है. ऐसा साहित्य जो पिछली सदियोंमें फ्रांसमें ढेरों उत्पन्न हुआ. पढ़ती उन्हें है, लेकिन अपने दैनिक व्यवहारिक जीवनमें वह समझदारीसे चलती है. गम्भीर है, कुशल, पैनी और कठोर. कभी बेहद तीखी भी हो जाती है. यहां उसे वह जगह प्राप्त है जो स्कूलोंमें सक्षम विद्यार्थीको सहज मिल जाती है. सर्व सुन्दर और अनुभवी विद्यार्थी जैसे पुज सकता है, और निर्दय हो सकता है, वैसे ही यहां जेनी है. ऊंचे कदकी, छरहरी सुन्दर, सतेज आंखें, छोटा-सा बन्द अहम्मन्य मुंह, ऊपरके ओठपर हल्की काली-सी रेख, और गालोंपर जैसे बुखारकी हो लाल-सी चमक.

मुंहसे सिगरेट बिना हटाए और उड़ते हुए धुएकी ओरसे कभी आंख मींच-मीच लेती हुई वह थूकसे उंगली गीली करके किताबके पन्ने उलटती जाती है और पढ़ती जाती है. टांगें घुटने तक खुली हैं. पैर फैले हैं, जो असुन्दर दीख पड़ते हैं. अंगूठे उनके मोटे-मोटे बाहरको निकले हैं.

यहां ही तिमिरा है. हाथमें कुछ सीनेका सामान है, कुछ झुकी हुई, टांगें एक पर एक रखे बैठी है. तिमिरा एक शान्त, सहज स्वभावकी सुन्दर लड़की है. रंग तनिक लालिमामय है. उसका असली नाम ग्लीसरा या जैसा आम लोग कहते हैं, लूकीरिया है. लेकिन वेश्यालयोंका पुराना नियम है कि कठोर नामोंको बदलकर सुन्दरसे मधुर नाम कामिनियोंको दे देते हैं. तिमिरा पहले एक साध्वियोंके मठमें थी. इससे आज तक उसके चेहरेपर एक तरहकी जर्दी और कातरता-सी है. वह अपनेको यहां सबसे अलहदा रखती है. किसीसे बहुत खुली या घुली हुई नहीं रहती, और अपने अतीतमें किसीको साझी नहीं बनाती. जान पड़ता है साध्वी रहनेके अतिरिक्त उसके अतीतमें और भी बहुत कुछ है. उसकी सधी-बंधी बातचीतमें, उसकी गहरी सुनहरी-सी आंखोंके लम्बे पलकोंके नीचेसे निकलकर चुपचुपाती बचकर जाती हुई-सी निगाहमें, उसके चलनमें, उसकी वक्र मुस्कराहटमें, और उसकी लज्जाशील संभ्रान्त जंचनेवाली

मुद्रामे और ध्वनिमे कुछ अधेरा-सा रसीला और भेदीला भी चीन्ह पडता है. एक अवसरपर सम्भ्रमके साथ सुन पड़ा कि तिमिरा बे-धड़क फ्रेंच और जर्मनी भाषामें बोल रही है. तिमिराके भीतर जैसे गुप्त, सचित, संयम शक्ति थी. बाह्य नम्रता और विनीततापर भी सब उसके साथ अदबसे और सम्भालकर बोलते थे. मालकिन क्या और उसकी साथिन क्या, और दोनों बाइयें भी और वह दरवान भी जिसका इस घरमे अजीब दहशत और आतंक था...सबको मानो उसका लिहाज रखना पडता था.

"मेरा आ गया!" जोहराने कहा, और ताशकी गड्डीके नीचे तुर्फका पत्ता उल्टा रक्खा हुआ था, उसे बदल लिया. "मै चालीस बदती हू तुम्हारे पास क्या है ? मेरे पास ईटका इक्का है ओ, मनका तुम्हारा दहला ही है ..मै जीती .. सत्तावन और ग्यारह अडसठ, मेरे कुल अड़-सठ हुए, और तुम्हारे ?"

मनकाने कुछ झीककर ओठ लटकाकर कहा "तीस ! तुम्हारी फतह है, तुम खेल जानती हो अच्छा, बाटो... हा, फिर क्या हुआ तिमिरा ?" अपनी सहेलीकी ओर मुडकर वह बोली, 'कहती जाओ, मै सुन रही हूं."

जोहराने पुराने, काले, चिकने ताशके पत्तोको फेटा, मनकाने उन्हे काटा और उगलियोमे थूक लगाकर जोहराने बाटना शुरू किया.

इधर तिमिरा सीती जाती थी, और अपनी स्थिर आवाजमे कह भी रही थी . "हम कारचोबीका काम करती थी चादर, गौन और पर्दोको फैलाकर बेल, फूल और स्वस्तिक आदि सुनहरी धागोमे उनपर काढती थीं. सर्दीमे एक बक्सके किनारे हम बैठा करती थी. खिडकिया छोटी थीं, वहा रोशनी ज्यादा न थी, और तेलकी और धूपकी गन्ध आती थी. बात करनेकी मनाही थी. हम लुक छिपकर बोलती चालती, क्योंकि गुरुआनीकी कड़ी निगाह रहती थी. कभी कोई थकानमे किसी गीतका चरण गा उठती—प्रभु तेरे माधुर्य गगनमे...हम खुले गलेमे गाती थी. क्योंकि वे दिन शान्त थे, और धीमी महक उठ रही होती थी, और सामने खिड़कीमेसे रुईके गालेसे बर्फके टुकड़े भागते दीखते थे...जैसे, जैसे यह

सब सपना हो !"

जेनीने फटे उपन्यासको बन्द करके पेट पर रख लिया जोहराके सिरके ऊपरसे सिगरेटके बचे सिरेको फेंका और ठट्ठेसे कहा, "हमे सब मालूम है तुम्हारी तबकी बातें. बच्चोको चिकनाया करती थी, और क्या ? जानती हो, तुम्हारे इन धार्मिक स्थानोके चारो ओर टोह लेता हुआ पाप डोलता रहता है"

"मैने कहा, चालीस मेरे छियालीस थ. बस," छोटी मनकाने मग्न होकर और ताली बजाकर कहा, "मै अब तीन कहती हू."

निमिरा जनीके शब्दोपर हसी. ऐसी दुर्बोध मुस्कराहट जिसे हसी कहना कठिन है और जिसम जाने क्या अर्थ नही हो सकता

"अजान लोग साध्वियोंके बारेम बहुतेरा कुछ कहते हैं.. हा और कोई पापाचार हो भी गया हो तो "

"जो पाप नही करता, उसे पश्चातापका मौका ही कहांसे आएगा?" जोहराने बीचम सोचकर कहा. और ताश बाटनेके लिए उगलिया फिर जीभसे छुआई.

"और क्या, दिन भर कैदी रहो, और सोती रहो. थकानसे आखो के आगे तारे नाचने लगते. और सवेरे खड़े होकर जो प्रार्थना करनी होती तो कमर टाग सब ऐंठ आती, और शामको फिर प्रार्थना और गुरुआनीकी गुहार्ंकी दहलीपर माथा टेककर कहना होता, 'हे माता, हे जगद्धात्री, हे गुरुआनी' भीतरसे फोकी आवाजमे उत्तर मिलता -धर्म वृद्धि हो बस, यही होता"

जनीने कुछ देर उस ध्यानसे देखा, जरा सिर हिलाया, और गम्भीर होकर कहा, "तुम निराली हो, निमिरा तुम यहा हो, और मुझे इसका अचरज है सच, मे समझ सकती हू कि अल्हड सानाकी तरह ये और दूसरी यहा प्रेमका खिलवाड कैसे कर सकती है...इसमे कि मूरख हैं. कुछ देखा जाना नही है. लेकिन लगता है, तुमने सब आच देखी है सब रग परखे है फिर तुम क्या इस तरहके व्यापारमे अपनेको डाले पडी हो ! बताओ, यह कमीज तुम किस लिए काढ़ रही हो ?"

तिमिराने बिना शीघ्रता किये कपड़ेको घुटनेपर फैलाया, सुईको उसमें अटकाया, सीवनको अंगुश्तरीसे दबाकर इकसार किया और झुकी आंखोंको बिना उठाए, सिरको जरा एक ओर झुका हुआ रहने देकर उसने कहा, "कुछ तो करते रहना होगा न ! यों ही बैठे तो आदमी थक जाए और ताश मैं खेलती नहीं, मुझे भाता नहीं."

जेनी अपना सिर हिलाती रही. बोली, "नहीं, तुम विचित्र लड़की हो. सच, तुम अजीब हो. अपने गाहकोंमें तुम हम सबसे ज्यादा वसूल करती हो. एवजमें अधिक देती नहीं हो, मैं जानती हूं. पर तुम पैसा बचाना तो दूर, खर्च कहां करती हो—कि यह सात रुपयेकी पीतलकी शीशी ही खरीद डाली ! किसे उसकी जरूरत है ? और अब ये पन्द्रह डालकर यह रेशमी टुकडा खरीद लाई ? सब सेंकाके लिए ही न, क्यों?"

"हां, शोनिस्काके ही लिए."

"जैसे तुम्हें बड़ा रतन मिल गया?.. निकम्मा चोर कहींका, वह सेंका. गोया सरकार ही हों ऐसे घोड़ेपर चढकर आप यहां तशरीफ लाते हैं. पर यह बात क्या है? क्या अभी तक तुम उसके हाथों ठुकी नहीं हो? ... मरे उचक्के, ये तो सदा ऐसा ही करते हैं. हमेशा वह तुम्हींको चुनता है, तो वह तोड़ेगा भी तुम्हींको. क्या इसका तुम्हे डर नहीं है ?"

तिमिराने दांतोंसे धागेको तोड़ा, और आहिस्ता पड़कर कहा, "जितना चाहती हूं उससे अधिक मैं कुछ उसे नहीं दूंगी."

"और इसीका तो मुझे अचरज है. तुम्हारी-सी बुद्धि, तुम्हारी सी सुन्दरता—मैं तो किसीको इसके बलपर ऐसा फांसती कि मुझसे ब्याह करनेपर ही वह छूटता. फिर घोड़े भी मेरे होते, और जेवर जवाहर... "

"अपनी अपनी पसन्दकी बात है जेनी. देखो, तुम ही कैसी मन-मोहनी लगती हो. और तुम्हारा स्वभाव भी कैसा स्वतन्त्र और प्रबल है. पर फिर भी तुम यहां इस गड्ढेमें आ फंसी हो."

जेनी बहक पड़ी और अपनी कड़वाहट बिना छिपाए बोली, "हां, क्यों नहीं. अपनी ही न कहो, छटे चुने मेहमान सब तुम्हारे ही नसीब

पड़ते हैं. और जी चाहे वैसा तुम उनको उल्लू बनाती हो. मेरे पास या तो बुड्ढे आएंगे या कलके लौंडे मेरी किस्मत है भी खोटी. उन बुड्ढोंके मुंहसे बू आती है. इन लौंडोंके मुंहके पासकी राल भी नहीं सूखती. सबसे ज्यादा मैं इन लौंडोंपर झींकती हूं. पिल्ला-सा डरता, झिझकता, कांपता वह आता है. ठहर वह नहीं पाता, और काम निबटा कि आंख उठानेकी हिम्मत उसे नहीं सूझती. लाजसे वह अपनेमें सिमटा जाता है, जी होता है कि उसकी थूथड़ीपर एक दूं. रुपया देनेसे पहले उसे वह जेबमें मुट्ठीमें दाबे रहता है सिक्का गरम-गरम भीगा-सा उसकी मुट्ठी मेंसे निकलता है. दूध पीता मेमना ही जो न हो. उसकी अम्मां दो चार आने मिठाईके लिए उसे देती होगी. उसीमेंसे बचाकर आप रण्डी के लिए जोड़ते हैं. आएंगे जनाब रण्डीके पास....ओठ पै बाल आए नहीं, टेंटमें पैसे गिन्नीके !... कुछ ही रोज हुए एक लड़का मेरे पास आया. जाते वक्त जानबूझकर झिकानेके लिए मैंने उसे कहा, 'देखो, मेरे प्यारे बहादुर, यह मीठी टिकिया है, घर जाओ तो इसे चूसते जाना, खूब मीठी है.' पहले तो वह बिगड़ा, पर फिर टिकिया ले ली. मैं ऊपर चढकर छज्जेपर पहुची कि देखूं वह क्या करता है. वह बाहर निकला, एक बार झिझककर चारों ओर देखा, फिर झटसे चुपचाप टिकिया मुंहमें डाल ली...सूअर !"

"पर बुड्ढोंसे तो पनाह ही है." छोटी मनकाने मीठेसे कहा, और शरारतन जोहराको देखा, "तुम्हारी क्या राय है जहरबी ?"

जोहराने अभी खेल खतम किया था और वह अब अंगड़ाई लेनेवाली थी कि उसकी अंगड़ाई रुक गई. नहीं जान सकी कि वह इसपर बिगड़े या हंसे ? उसका एक बंधा मुलाकाती है, एक बुड्ढा पुराना सरकारी मुलाजिम. खासा बड़ा उसका कुनबा है. वह जोहराका बंधा गाहक है और ऊट पटांग आसनोंका प्रेमी है. सब उसके आनेपर जोहराको छेड़ा करती हैं.

जोहराने आखिर अंगड़ाई ली और जम्हाई लेते हुये-से मुंहसे बोली, "तुम सब मोरीमें पड़ो, और वह कमबख्त बुड्ढा भी जाए जहन्नुममें !"

"लेकिन, इससे भी बुरे" जेनीने कहना जारी रखा 'उस खूसटसे और मेरे उस लौडस भी बुरे--सबसे वाहियात हमारे प्रेमी हैं इसमें क्या बहलनेकी बात है कि आते हैं वह साहब चढ़े हुए धत और नाना चेष्टाएँ करते हैं खिलवाड करते हैं और जताना चाहते हैं कि उनमें कुछ है पर क्या है ? क्या कहने उन जवामर्दके ? मैंने सब मा [illegible] कामी, कुचले हुए गन्दे सारी देह पे मारपीटके निशान ! वाह क्या कहने जवामर्दके ल दकर शानता बा [illegible] उनके हुक्म यह है कि हमारी तिमिरा बीबी उनके लिये कमीज काढ़कर तयार कर रही है [illegible] वह साहब [illegible] गालियाँ बकेंगे और झगडनेको उतावले हुए रहेंगे ऊह, नहीं !' और वह एकदम [illegible] चिल्लाई मैं जिसे खूब प्यार करती हूँ खूब ही [illegible] अमर प्यार ! वह मेरी मनका है मेरी छोटी मनका मेरी नन्ही गोरी गुड़िया मनिया !

कहते कहते अप्रत्याशित रूपसे जनाने मनकाको [illegible] आलिंगनमें जोरसे बाँध लिया और [illegible] उसके बाल आँख ओठोंको जोरसे आवेशके साथ चूमने लग गई मनका [illegible] अपनेको छुड़ा सकी उसके चमकीले [illegible] लाल हो गया वस्त्र अस्त-व्यस्त [illegible] आँखोंको नीचे किए वह बोली [illegible] क्या कर रही हो ! मुझे जाने दो।

छोटी मनका घरभरमें सबसे [illegible] और सारी नन्ही है [illegible] है, भोली है किसीको बात [illegible] नहीं कर सकती। सब [illegible] स्नेहका बर्ताव करते हैं जरा बातपर लजा जाती है और [illegible] पर बड़ी मोहनी लगती है [illegible] पी ले, और इसकी वह शौकीन है [illegible] ! फिर नहीं पहचान सकते कि यह वही मनका है [illegible] झगडालू हो आती है कि बाइयों और दरबानके बूते भी नहीं सम्भल पाती पुलिसकी जरूरत हो जाती है तब यह उसके लिए कुछ भी बात नहीं कि वह किसी गाहकके मुँहपर चपत जड दे, या शराबका गिलास उसपे उडेल फेंके लैम्प उलट दे, या माल-

किनको गाली बकने लग जाए. जेनी उसके प्रति एक मांके जैसे अद्‌भुत वात्स्यल्य और गौरवभावके साथ व्यवहार करती है.

इतनेमे छज्जेपरसे तेज चालसे आती हुई रक्षिका बाई जकियाकी आवाज सुनाई दी

"लडकियो, खानेके लिए चलो." और इतनेमे मनकाके कमरेका द्वार खोलकर वह अधमरी-सी झाकी और जल्दी-जल्दी बोली, "खानेके लिये, खानेके लिये चलो, बीबियो !"

वे रसोईमे गई उन्ही कपडोमे बिन नहाई, कोई नगे पैर, किसीके पैरोमे स्लीपर, वे खानेके कमरेमे जा बैठी ! खाना परोसा गया खाना बुरा नही था पर भूख किसीको हो तब न ! जिन्दगी आरामकी बितानी पडती है नीद अनियमित मिलती है, और यो भी दिनमे मगा-मगाकर चाट पकौडी ·· ·· रहती हैं ·· भूख ·· कैसे ? हा, नीना अकेली चारके बराबर खाती है ·· नाटे कद·ी, दबी नाककी, एक सीधी ··ार लडकी है उसे दो महीने हुये एक ··गीवाला बहकाकर लाया और यहा बच गया उसकी भूख अभी खासी है, स्वस्थ है, तरह-तरहके तरीकोंसे भरी नही है

जेनीने अपने ··रबेकी तश्तरीको यो ही जरा छू-छूकर चखा और बोली, 'हा, नीना मगा भी शारबा न ले ला...ले भी लो हा, हा, क्या बात है ? शरमाओ मत आखिर बदनको तन्दुरुस्त रखना है कि नही ? लेकिन आप लोग एक बात जानती है ? ' अपनी साथनियोकी ओर वह मुडी, "हमारी नीनाके पेटमे गिडोआ पड गया है. जब गिडोआ हो जाता है तो आदमी दोके बराबर खाता है—एक अपने लिए, एक खुराक उसके लिए."

नीनाने चिढकर सानुनासिक स्वरमे कहा, "मेरे पेटमे गिडोआ नहीं है तुम्हारे पेटमे गिडोआ है जभी तुम पीली हो."

और वह बेहिचक खाती रही. खानेके बाद अजगरकी तरह वह निदासी हो आई. जोरसे ऐंडी, पानी पिया, जम्हाई ली, और ऐसे कि

कोई देखे नहीं, चुपकेसे आदतवश हाथसे मुंहके आगे उसने क्रास बना लिया.

लेकिन तभी जकियाकी आवाज बरामदों, कमरोंमेंसे सुन पड़ी—

"बीबियो, कपड़े पहनो. तैयार होओ, बैठनेका वक्त नहीं है. काम के लिए तैयार..."

कुछ मिनटोंके बाद उस आलयके कमरोंमें सस्ते ओडीकोलोन, साबुन और पाउडर आदिकी महक जग उठी. लड़कियां तैयार हो रही हैं. शाम आ रही है !

४

ग्रीष्मकी संध्या आई. पीछे-पीछे रात. रातमें देर तक अरुणिमा-की आभा रही. घरके दरबान साइमनने रोशनियां जगा दी. साइमन गठीं देहका पुष्ट, बन्द, कठोर आदमी है. कन्धे चौड़े और मजबूत, बाल काले, मुंहपर चेचकके दाग. भवें झूलती, मूंछे घनी. काली, मन्द, उदण्ड आंखें. दिनमें छुट्टी रहती है, और वह सोता है. और रातभर बे-चूक जागता और उद्यत रहता है कि मेहमानोंके कोटोंकी सँभाल रखे और भीतर कुछ गड़बड़ हो तो डंडा लेकर झट पहुच जाए.

आया बाजेवाला. लम्बे कदका, सलीकेका युवा व्यक्ति है. भूरी भौहें, भूरे पलक, आंखोंमें मोतिया बिन्दु. जब मेहमान नहीं होते यह और इसिया मिलकर गाते-बजाते रहते हैं, मेहमानोंके कहनेपर जब यह बजाते हैं तब हल्की गतपर केवल कुछ आने इन्हें मिलते हैं, वैसे रुपया इसमें आधा भाग मालकिनका होता है, शेष आधेको दोनों आपसमें बांट लेते हैं. लड़कियां इस बाजेवालेका लिहाज करती हैं. अपने मुलाकातियोंसे इसका जिक्र किया करती हैं.

अब, इस समय, घरमें रहनेवाली सब जनीं, सुघर और सुसज्जित, गाहक मेहमानोंके स्वागतके लिए उद्यत हैं. एक प्रकारकी प्रतीक्षा-सी

मीठी आतुरतामें घुली-सी जा रही हूं. यह सही है कि इनमें पुरुषोंके प्रति एक उपेक्षा और वितृष्णाका भाव है. तो भी, ज्यों-ज्यों शाम होती है, उनके जीवनमें मानो आशाकी लौ कांपती-सी उठने लगती है और आत्मा में जैसे कुछ छिड़ पड़ता है. नहीं मालूम आज किसके वे पाले पड़ेंगी. जाने आज क्या कुछ विलक्षण, उपहास्य, आकर्षक, भीषण, भयावह, नहीं घट उठेगा. क्या जाने कोई मुलाकाती आए, और उनपर अपना सब कुछ निछावर कर उठे. कोई शिगूफा ही खिल जाए. या जाने कुछ ऐसा हो जाए, जिससे समस्त जीवनकी धारा ही बदल जाए...इन आशाओं, इन सम्भावनाओंमें, कुछ ऐसा आवेश, नशा, उत्तेजना होती है, जैसे अभ्यस्त खिलाड़ीको जुएकी फड़पर बैठनेसे पहले अपने रुपयोंको खन-काते होती है. और यद्यपि वासना, तृष्णा, भोग, लिप्सा इनमें बिल्कुल नहीं है फिर भी वह वस्तु तो विनष्ट नहीं हो सकी है जो स्त्रीका स्त्रीत्व है, यानी रिझानेकी तबियत !

और सच ही अजीब-अजीब आदमी आते हैं, अप्रत्याशित घटनाएं घटती हैं. कभी एकाएक पुलिस आ धमकती और एक भलेसे सम्भ्रांत दीखनेवाले आदमीको गर्दनसे धकियाकर पकड़ ले जाती. कभी आने वालोंकी किसी मदहोश और फसादी टोलीमें और यहांके नौकरोंमें ही मुठभेड़ हो जाती. इस संघर्षमें खिड़कियोंके शीशे फूटते, बाजे टूटते, कुर्सियोंकी टांगें डण्डेकी तरह आपसमें सिर फोड़नेके काम आ निकलती. फर्शपर लहू फैल जाता और फूटे सिर और टूटी बाहोंको लेकर लोग दर-वाजेकी तरफ भागते दीख पड़ते. अस्पतालकी आबादी बढ़ती, पुलिस को काम मिलता. ऐसे समय जेनीकी उन्मत्त खुशीका ठिकाना न होता. जहां भी घमासान मच रहा होता पहुंचकर उन्हें और उकसाती, उभारती, छेड़ती, चिढ़ाती और ताली बजाकर खुश हो मानो उछलने ही लगती थी. बाकी दूसरी ऐसे समय चीखती हुई डरके मारे बिस्तरोंके नीचे जा दुबकती थीं.

कभी ऐसा भी होता कि किसी मजदूर संघ या ऐसे ही किसी सर-कारी विभागका पदाधिकारी या संचालक आ पहुंचता. उसने हजारोंकी

रकमे डकारी हुई होती और भागनेसे पहले आत्मघात करने या जेल जानेसे पहले अपनी बची-खुची शक्ति और रुपएमे मौज उडाने कुछ पिट्-ठूओंको लेकर वह यहा आता उसे बुखारकी-सी प्यास होती तब तमाम घरके दरवाजे और खिडकिया लगातार दो दिन राततक बन्द रहती और वह घोर अथवा अघोर लीला मचती कि बस! चीख, चिल्ला-हट, आसू, निवेदन इन सबका मानो भोग लेकर पुरुषकी बर्बरता नारी देहपर अपनेको सब प्रकार व्यय और चरितार्थ करती. स्वर्गके दृश्य धरतीपर सृष्ट करनेकी स्पर्द्धामे औरत मर्द मदमे मत्त, भाति-भातिमे अपने अग प्रत्यगोको घुमाते हुए, नगे नाचते डोलते. वे सूअरोंकी तरह बिस्तरपर, धरतीपर, यहा-वहा शराब पी-पीकर गिरते फिरते तब देहकी सब प्रकारकी गधमे और मदिराकी उमसमे उस घरका वातावरण मानो छककर भर जाता.

कभी सरकसका नट आ पहुचता कसरती चुस्त पोशाकमे कसा वह ऐसा लगता है जैसे कालीन बिछे हालमे जीनमे कसा बसा कोई घोडा आ गया हो कभी लम्बी-सी चोटी लटकाए चीनी आदमी भी आ धमकते नही तो स्याही-सा काला हबशी ही आ रहता. उसके खुले कालरके कोटके बटनमे फूल लगा हुआ होता और कपडे बेहद झक सफेद होते. लडकियोंको विस्मय होता था कि कपडे काली देहमे लग-कर काले नही हो जाते थे बल्कि उस जमीनपर वे और भी उज्ज्वल लगते थे!

इन वेश्याओंकी अघाई कल्पना ऐसे असाधारण मानवोके दर्शनमे मानो सिककर और फूल आती थी उनकी ससाप्त प्राय विषय लिप्सा भडक जाती और व्यावसायिक उत्कण्ठा धार ले उठती थी. वे सबकी सब मुग्ध बनी ऐसे समय एक दूसरेसे ईर्ष्या-सी करती, और होड बद कर उसे खीचने और रिझानेकी चेष्टाए कर निकलती

एक बार साइमनने एक प्रौढ वय पुरुषको हालमे पहुंचाया. वह अच्छा पैसेवाला इज्जतदार आदमी जान पड़ता था. कोई असाधारण बात उसके विषयमें न थी. दुबला, कठोर चेहरा, ऊंची कनपटी, छोटा

माथा, नुकीली डाढ़ी, घनी भवें. एक आंख दूसरीसे जरा ऊपर और ज्यादा खुली थी. आते ही उसने अनायास हाथ उठा मानो जोड़नेके लिए माथे तक पहुंचाए. पर जब देखा कि वहां कोई मूर्ति नहीं है, तब वह घबराया नहीं, हाथ नीचे कर लिए. तब कामकाजी आदमीकी तरह सीधा बढ़ता हुआ वह सबसे मोटी लड़कीके पास पहुंच गया. स्वाधिकृत और सुनिश्चित स्वरमें उसने कहा, "उठो, चलें." और सिरके इशारेसे एक कमरेके दरवाजेकी ओर संकेत किया.

उस लड़कीका नाम किटी था. वह उधर गई, इधर उसके पीछे साइमनने नूरीको चुपचाप कुछ बताया. नूरीकी आंखमें दहशत-सी समा गई. पर रस भी था. उसने अपनी साथिनोंको बताया कि जो आदमी किटीको ले गया है उसका नाम ही डार्लमिग है. पिछले साल जब जल्लाद एक कम हो गया तो इसीने अपनेको पेश किया था. ग्यारह कैदियोंको उसने हाथों-हाथ दो दिनमें फांसीपर खींचकर खतम किया. अब आपको विश्वास हो या ना हो, तथ्य यह है कि उस समय वहां कोई ऐसी न थी जिसे स्थूल-काया किटीके भाग्यपर ईर्ष्या न हुई हो. सबमें एक तीखी, वेदना भरी विकल, जिज्ञासा-सी उठी और उन्हें मथने लगी. आध घण्टे बाद जब डार्लमिग निश्चेष्ट बन्द मुद्राके साथ लौट चला, तब सब औरतें मुंह बाये, बे बोले, उसे देखती रह गईं. फिर अपनी खिड़कियोंसे जबतक दीखा उसे देखती रहीं. उसके बाद झट किटीके कमरेमें पहुंचीं. किटी अभी कपड़े पहन रही थी. उसपर सवालो की झड़ी लगा दी. वे एक नए भावसे, जैसे अचरजसे, रह रहकर किटी की लाल स्थूल नंगी बाहोंको, अबतक सिमटे पड़े बिस्तरको, और किटी ने उन्हें जो दिखाया उस मैले, पुराने, घिसे, नोटको देखती रह गईं. किटी ज्यादा क्या बताती ? जैसे और मर्द वैसे ही वह था. बस, वह सीधे सादे ढंगसे इतना ही कह सकी. लेकिन जब उसको भी पता लगा कि उसका मुलाकाती कौन था, तो वह एक दम रो पड़ी. वह स्वयं न जान सकी क्यों ?

पतितोंमें पतित, जहांतक मनुष्यकी कल्पना पहुंचे उस कोटितक

अधम, जल्लादके कामके लिए अपनेको स्वयंसेवक रूपमें प्रस्तुत करने-वाले इस आदमीने उसको तनिक भी कठोरतासे, जरा भी चोट देकर नहीं भोगा. ना ही उसकी चेष्टामे किसी प्रकारके स्नेहका आभास था. स्त्री जैसे उसके लिए एक सामान थी. उसके प्रति उसमे किसी तरहका भाव न था. उसकी चेष्टामें किसी प्रकारकी अपेक्षा, इच्छा, ममत्व नहीं था. उसने स्त्रीको ऐसे ले डाला जैसे कोई कुत्तेको, यहांतक कि छतरी, कोट, टोपीको भी न ले. और वैसे भोग लिया जैसे जरूरत पड़नेपर कोई रद्दी घूरेपर पडे गदे लत्तेसे अपना काम ले ले. काम निकला कि उसे फिर वहीं घूरेपर फेंक अलहदा किया. इस विचारकी विभीषिका को किटीका छिछोर मंद मस्तिष्क उसकी यथार्थतामे गहण तो नहीं कर सका, पर उस विभीषिकाकी छायाके स्पर्शमे ही वह इस पकार रो पडी. पर जैसे वह अकारन रो रही है. वह तनिक नही जान सकी कि वह क्यों रो रही है.

और भी घटनाए वहां घटी हैं, जिनमे इन अभागी नारियोंके निष्फल, हीन, दीन, तुच्छ, रुग्ण, कृमिमय, त्रास भरे, फीके और खारे जीवन के तलपर कुछ लहरें-सी उठ आती हैं. बर्बर, निरंकुश, ईर्ष्या जन्य घटनाए भी होती हैं; तब तमंचेकी गोली, और जहरकी पुडियासे एक-दोके प्राण भी खोये जाते हैं. कभी भाग्यवश इसी घूरेपर सच्चे उजले और कोमल प्रेमके अंकुर भी फूटते हैं, और यहीसे अपने प्राणोंका संचय करके लहलहा भी आते हैं कभी यह कुत्सित घर छोड़कर कोई वेश्या अपने प्रेमीके साथ निकल भी जाती है. पर लगभग अनिवार्यतया वह फिर यहीं लौट आती है. दो तीन बार यह भी हुआ कि कोई वेश्या गर्भवती पाई गई. गर्भवती! बडे ही उपहास, व्यग, क्षोभ और निराशा की बात यह यहां समझी जाती ! हाय !

पर जो हो, प्रत्येक संध्याकी प्रतीक्षामें यहां एक विलक्षण आकर्षण की मदिरा रहती थी— कि जाने क्या हो ! नहीं तो इस रसकी घड़ीके बिना इन स्वत्व-विहीन, अलस, निष्फल नारियोंका जीवन सपाट, नीरस, व्यर्थ और दुस्सह ही होता. यही मानो कुछ हरियाली थी.

५

एक दिन यहां, अन्ना वाले आलयमें, फिर विचित्र घटना घटी. आरम्भ उसका साधारण था. पर अन्त हैरतनाक और ऐसा निकला कि किसीकी समझमें न आया. जाड़ोंके दिन, संध्याका समय था. छः बज चुके होंगे. किसीने बाहरसे घण्टी बजाई. साइमनने ऊपरसे झांक कर देखा, द्वारपर एक स्त्री खड़ी है. साइमनने थोड़ा-सा द्वार खोल कर पूछा, "क्या चाहिए ?"

"मालिकनसे मिलना है."

"क्यों ?"

"काम है. मैं भर्ती होना चाहती हूं."

"ठहरो, मैं उन्हें कहता हूं."

उसने दरवाजा बन्द किया और एमा उडवानीके पास पहुंचा.

संरक्षिकाने पहिले तो बहुतसे सवाल किए. कैसी है ? चेहरा कैसा है ? कपड़े कैसे हैं ? कहीं पुलिसकी भेदिया है, ऐसा तो नहीं लगता न? फिर उसने कहा, "अच्छा, उसे यहां ले आओ. और तुम भी दरवाजेकी ओटमें खड़े रहो...कि कहीं काम पड़ जाए. जरूरत हुई तो मैं तुम्हें बुला लूंगी."

महिला आई. संरक्षिकाने झट एक निगाहमें अपनी अभ्यस्त आंखों से उसे ऊपरसे नीचेतक देख लिया. साफ था कि वह कोई पेशेवर नहीं है. काले रेशमके वस्त्र थे. चेहरेपर बनावटका और सज्जाका लेश न था. कदमें बड़ी न थी. पर देह सुन्दर, सुडौल और सुढार थी. चेहरा आकर्षक, चतुर, और पीतवर्ण था. उसमें अरुणिमाकी छाया भी थी. आंखें सतेज, नीली, और दृष्टि हार्दिक, दूरस्थ और अनिश्चित थी.

"यही कोई बीस वर्षकी होगी." एमाने मनमें सोचा. पूछा, "आप की उमर, श्रीमती ?"

"छब्बीस !"

"लेकिन लगती कम है. आपको वस्त्र उतारनेमें आपत्ति तो न होगी ?"

"तमाम ?"

"हां, तमाम .. भीतरकी अंगिया भी !"

"अच्छा."

वह बिल्कुल नग्न हो गई. उसे अपनी नग्नतापर बिल्कुल लज्जा न थी.

"बहुत ठीक." संरक्षिकाने मानो शाबाशी देते हुए कहा, "नहीं तो स्त्रियां मर्दोंके सामने नहीं, ऐसी हालतोंमें स्त्रियोंके सामने नंगी होने में लजाती है."

एमा उडवानीने स्पर्श आदि द्वारा उसकी तमाम देहका निरीक्षण किया. वैसी ही सजीदगीसे जैसी पशुओंका लेने-देन करने वाले मोल बेचके समय ढोरोंको छू दबाकर देखें. संरक्षिका कहती जाती थी, "बदन अच्छा है. छातियां भरी हैं, उनमें उभार है. अभी ताजा हैं. जांघके पट्ठे खासे कठिन हैं. बीमारीका भी कोई निशान नहीं. खैर, यह तो डाक्टरी मुआयनेसे पता चल जाएगा. अच्छा दांत देखें, ठीक है, ठीक है. एक ही बना हुआ है. कुछ डर नहीं...अच्छा अब आप कपड़े पहन लीजिए."

उसने इस भांति अपना निरीक्षण खतम किया. महिलाने पूछा, "क्या मैं पास समझी जाती हूं ?"

संरक्षिका हंसी, "आप तो गजब करती हैं लेकिन एक मुश्किल है, जो स्वतन्त्रता देख चुकी है उसका हमें भरोसा नहीं होता. उन्हें लेते हुए डर होता है."

"पर क्यों, मैं तो किसीके दबावसे नहीं, अपनी मर्जीसे आई हूं"

"सही है. लेकिन, क्या ठीक कब तुम्हारे रिश्तेदारोंके जीमें आ जाए और वह तुम्हें ढूंढते हुए यहां आ पहुंचे. या तुम अपने मित्रोंमे ही किसीसे चिट्ठी पत्री करने लगो. नहीं तो कोई जान पहचान वाला ही तुम्हें देखकर यहां आ धमके."

"नही, आप चिन्ता न करें. मै यहां नई हूं. पीटर्सबर्गसे आई हूं. और इससे पहले मैंने यह शहर कभी देखा भी नही."

अन्यमनस्क रमा उदासीनीने कहा, "हो सकता है. पर एक बात और है. लगता है तुमने भली मांगपट्टी देखी है. तुम्हारे दोस्त होंगे, और बच्चे !"

महिलाने स्थिरतासे उत्तर दिया, "नही, मैं कुल अकेली हूं. मैं स्वतन्त्र हूं. सम्बन्धी नही हैं. बच्चे भी नही हैं, और मित्र भी नहीं हैं. पतिसे भी छुट्टी है. कभीका तलाक दे चुकी हूं. और अधिकमे क्या, मै आपकी सब शर्तें पहलेसे ही मान लेती हूं. आपके कायदेमे चलूंगी, आपकी शर्त मानूंगी. आप देखेंगी, मुझमे उत्साहकी कमी नही है, आपकी सब बात मैं चुपचाप मान लेती हूं. और आप देखेंगी, मै आज्ञाकारी हूं और सबमे शिष्ट भी हूं, और विनीत !"

सरधिकाने कहा, "तुम्हारी बात ठीक है, भली है. उन्हें पूरा कर दिखाओगी तो अच्छा है. पर तुम अभीतक खुली नही हो, और जिस तरह तुम्हें यहां रहना होगा, उसका तुम्हें पता अभी नही है."

"जैसे.. ?"

"जैसे तुम्हारा पास तुमसे ले लिया जाएगा, और पुलिसको भेज दिया जाएगा. अच्छा तुम्हारे पास प्रमाण पत्र तो हैं न ?"

"है. क्या आप चाहती हैं, मै अभी आपको दे दूं ?"

"वह ठीक है बाकायदा है ?"

"बिलकुल . "

"ओह ! यह बाकायदगी भी जरूरी है ..अच्छा इसकी जगह तुम्हें एक पीला टिकट मिलेगा. उसमे तुम्हारा और तुम्हारे बापका नाम, तुम्हारी जाति, सब लिखा रहेगा. और तुम्हारा पेशा, तुम्हारा लकब भी सब रहेगा. यानी वेश्याका टिकट तुम्हारा होगा. तुम्हारा पहला पासपोर्ट पुलिसके पास रहेगा. फिर वह वापिस नही मिलता. वापिस लेनेमे बडा पैसा लगता है, और बहुत कोशिश !"

"मुझे उसकी जरूरतका ख्याल तक नही है."

"ठीक,...हर हफ्ते पुलिसका डाक्टरी मुग्रायना होगा."

"हां, वह मैंने सुना है. यह उचित ही नियम है."

"तुम्हारा कहना ठीक है, यह उचित है और जरूरी है. हां, और तुम जानती हो कि स्त्रीको अपनी देहके यौवन और सुन्दरताकी रक्षाके लिए सदैव क्या-क्या ध्यानमें रखना चाहिए. खास कर उसे जिसका पेशा प्रेम हो ?"

"इस विषयमें मैं क्या कहूं."

"और यह तुम जानती हो. जो तुम्हें छांटे उसीका तुम्हें बनना होगा. चाहे वह कोई हो, कैसा ही हो, तुम्हें कितना भी ना पसन्द हो."

"यह नियम सख्त है. खैर, यह भी सही. मैं आंख बन्द कर लूंगी, मैं मुंह फेर लूंगी. बस यही तो."

"हां, बस, करीब-करीब यही बातें हैं. छोटी-छोटी बातें और होंगी. अच्छा, अब साफ-साफ बताओ...यह ठीक होता है कि पहले खुलकर समझ लिया जाए. तुम्हें किसी नशेकी तो शायद आदत नहीं है ?"

"नहीं, कोई भी नहीं. कभी भूले भी अफीम, कोकीन, मारफीन, वगैरा कुछ नहीं छुआ. मैंने लोगोंको देखा है जो खाते हैं, और मुझे—मेरी तो तबियत और बिगड़ गई ?"

"अच्छा शराब ?"

"हां, बहुत कहा गया तो साथ देनेके लिये पी लेती हूं, अकेले कभी नहीं."

"यह कामकी सिफ्त है. सुनो, मैं तुमसे ऐसे कहती हूं जैसे घरकी बड़ी कहती है. और तुम समझदार हो. तुम पीती नहीं, यह तो अच्छा है. पर अपने मेहमानोंको, खास कर पैसेवालोंको, रिझाकर, उकसाकर, खूब खिला पिला सको तो हमारा फर्म इससे अप्रसन्न न होगा. सब बात बर्तावकी खूबसूरतीका सवाल है. और इसमें तुम्हारा भी नफा है. और नफा भी कम नहीं, फी बोतल पांच फीसदी तुम्हारा है. लेकिन लियाकत, समझ, सलीका होनेकी बात है. आदमीको तो ऐसा चढ़ाया जा सकता है कि वह कहीं न रुके. जब रोका जाए, तभी रुके."

"जहां तक बनेगा करूंगी."

"अच्छा अब मैं निजी कुछ कामकी बातें तुमसे कहूं. लोग तरह तरहके आएंगे. और जाने क्या क्या तुमसे मांगेंगे. ..समझती तो हो न ...क्या कहूं ? आड़े-टेडे, प्राकृतिक और अप्राकृतिक, सब कुछ. यों तो तुम्हारा मुलाकाती निबटनेके बाद तुम्हे क्या कुछ भेंट देकर जाता है, उससे हमारे फर्मको मतलब नहीं. वह तुम्हारी अपनी खूबी और होशियारीकी कमाई है. हमें हमारी बंधी फीस चाहिए. और ऊपर जो पान इलायची वगैरह, उसके लागतके दाम. इसलिये अगर कोई भला आदमी तुमसे उलट विकट—समझीं तो ?—यानी उल्टे सीधे प्रेमकी मांग कर बैठे तो तुम साहसके साथ इन्कार कर सकती हो. हम इस मामलेमें तुम्हे दबाएंगे नही. न दबानेका हमें हक है. हां, एक बात जिसकी तुम्हे पाबन्द रहना होगा यह कि तुम इन्कार किसीको नहीं कर सकती. यह शर्त जरूरी है कि वह तरीकेसे हो, जो—तुम जानती हो—तरीका होता है, गडबड़ नही. तब इन्कार करना अहद तोड़ना होगा. लेकिन एक बात है. यह ऐसे बहमी, मौजी, बेहूदे लोग पैसा जी खोल कर देते हैं बडी-बडी रकमें देते हैं. और सुपारी पानके खर्चमें भी कमी नही करते. तुम सझती तो हो, जो पाओ, सब तुम्हारा...फीस और पान सुपारीकी लागतके दाम बस हमें मिलते जाएं. इसको और सोच देखना."

"मैं सोचूगी और देखूगी. पर तो भी धृष्टता क्षमा कीजियेगा, मेरा मन नहीं मानता कि मैं सबसे ..क्या बिल्कुल सब किसीके, हरेकके साथ—!"

"मै तुम्हारे भावोंको समझती हूं . पर तुम जैसी परी-सी कोई खास मिलती है तो हम नियममें कुछ ढील भी कर देते हैं. तुम बंधी फीस जमा करा दो. और सुपारी पानके पचास भी बस तुम आजाद हो. हम ग्राहकसे कह देंगी कि तुम...कपड़ेमे हो. उसने फिर जिदकी तो हम पुलिसका परवाना दिखा सकते है. उसमें इसकी गुंजाइश है. देखो, हमारी सरकार अदूरदर्शी नहीं है, सब तरहकी व्यवस्था हमने कर रखी

है. पर ऐसा सुभीता उन्हींको मिलता है जो यहांकी सिंगार हों, मानिंद फूल, यहाकी गौरव, और जो अच्छा कमाती हों."

"मैं इस कृपाका पात्र होनेका यत्न करूंगी."

एमा उडवानीने दयापूर्ण प्रभुताके साथ सिर हिलाकर कहा, "यह बहुत अच्छा है. पर कुछ और भी मुझे पूछने दो ..तुम यहां आई कैसे? सस्ता पैसा पानेकी इच्छासे ? या जीनेसे उकता कर ?"

"एंह, श्रीमती, ये कारण सब तुच्छ हैं." महिलाने अविचल स्वरमें उत्तर दिया, "मै एकान्तमें इसका कारण बताऊंगी. वह बिल्कुल सीधा है. मर्दके लिये मेरे भीतर बडी प्यास है. वह बुझती ही नहीं. कारण यही है. और मर्द एक ही एक नहीं, हरदम नया. आप मानो, यह मेरी कोई बीमारी नही है, चाह है. स्त्रियोके बारेमें पुरुषोंका भी यही हाल है. पर जब समाजमें रहते हं, जहां सैकड़ों अदमी हमे जानते हं, वहां काम आसान नहीं होता. साधन सहज हाथ नहीं आते. एक मामला शुरु हो, तो उसे लबी देर पहले सेओ, पकाओ. एक लम्बी इन्तजार. उसके बाद जाकर तब कहीं कुछ पाओ. फिर भी झिझक बनी ही रहे लज्जा-संकोच रहे ही आए. ख्याल रहे, यह गिरावट है. ..सब हुआ और मामला ठीक पड़ा कि कुछ दिनमें उसकी ताजगी जाती रहती है, और बास ठण्डी पड़ने लगती है. ज्यों-ज्यों दिन निकलते हैं मजा बेमजा, भारी और फीका होता होता उड़ जाता है. अन्तमें हो आती है उकताहट, थकान, और कलह. कुढ़न होती है और ईर्ष्या, और फिर धमकियों, तानों और गालियोका लेन देन होने लगता है. .. तोबाह !...फिर आंसू. पर मैं जानती नहीं कि रोया कैसे जाता है. क्यों लोग रोते हैं. जब हुआ मेरे साथ तो मर्द ही रोया, वही मरनेकी धमकी देने लगता था. आखिर दिन आता है कि तागा टूट जाता है, मामला बिखर जाता है. एक चुपचाप भाग निकलता है, दूसरा रह जाता है. अंह, क्या तमाशा है. तो इसलिये मैं तुम्हारे पास आई हूं. यहां झंझट है नहीं, और आदमी भी एक नहीं है. हां, मेरे मनमें बीमारियोंकी तरफसे कुछ-कुछ दहशत है..."

"उमकी दहशत न करो. शहरकी निसबत यहां रोग होनेका बहुत कम मौका है. और फिर मे—कई उपाय बनला दूंगी."

और कामकाजी ढगमे उमने कहा, "सच कहू, मेरा जी तुमसे लग गया है. तुम गजब हो, गजब. तुम हमारे यहाकी सरताज होगी, सरताज. तुम्हारी देह खूब बनी है. सो जाओ, एक दिन और सोचो. शायद मन बदल जाए, नही तो कल चार बजे फिर आ जाना. मं तुम्हे यहाकी मालकिनके पास ले चलूगी. एक ही शर्त है, अपना कोई एक आशिक मत बना बैठना. अच्छा होगा कि किसी खासकी तरफ अपनेमे झुकाव पैदा न होन दो. बस उन सबका सिर फेरे रक्खो, यही कला है"

"आपकी आज्ञा मेरे मनको अच्छी लग रही है. आप स्वयं देख लेगी आप मुझसे सतुष्ट होगी मुझे आशा है."

"आशा है संतोष दोनो ओर होगा."

"लेकिन, मुझे एक शब्द और कहने दीजिए, श्रीमती—"

"– एमा उडवानी."

"हा, माननीया श्रीमती एमा उडवानी, जो बात मैंने आपसे स्वीकार की है, यह हर दम नये मर्दकी चाह, यह बात, आशा है, हम दोनोके बीचमे ही रहेगी."

"ओह, एसे जैसे कब्रमे गडी हो तुम्हारे हमारे दोनों तक ही यह है. -- तो फिर कल मुलाकात होगी, अगर तुम्हारा मत नही बदला तो."

"कैसे बदल सकता है !"

अगले दिन यह महिला यहाके बोर्डिग वासीकी तरह आकर रहने लगी. मालकिन अन्ना मरकानीको भी इसने अपनी सहज नम्रतासे प्रसन्न कर लिया. इसिया माविश ही उसकी ओरसे बे-रुखा रहा.

वह कहता, "यह पढे-लिखे ऊंचे घरानेकी है. इन ऊंचे लोगोंमे कुछ भला नही होता. न हुआ, न होगा. और जो कामकी बात कहो तो यह ज्यादा सहार ही नहीं सकती जरा-सी बात हुई कि थक रहती है, बीमार हो जाती है." लेकिन वह भी धीरे-धीरे अभ्यस्त हो गया और उसका भी बड़बडाना छूट गया.

उस नई लड़कीने अपना नाम मग्दा रक्खा. मग्दालिनीका यह संक्षिप्त रूप था.

पहले तो साथियोंने मग्दाको चिढ़ाना, दबाना चाहा. वे यहां पुरानी थीं. उसकी हंसी करतीं और फबतियां कसती. संस्थाओंमें, शिक्षालयों मे, और जहां कही व्यक्तियोका समुदाय होता है, यहांतक कि जलमे, रेलके डिब्बोंमे, हमेशा और हर जगह नए आनेवालोंको इसी तरह मजाकका और अपमानका शिकार बनाया जाता है. या कहो मानवका चलन ही ऐसा है.

किन्तु मग्दाकी दृष्टिमे, स्वरमे, कुछ अज्ञात, शान्त, ऐसी शक्ति थी जो इस प्रकारकी छेड छाडको अधीन, व्यर्थ, और कुद कर देती थी. उसमें और साथनियोंमे कुछ अनबनाव हो भी गया तो वह बढने नही पाया. झगड़े जैसी कोई चीज उनके बीचमे नही हो सकी. तिसपर बात यह थी कि वह चुपचाप, बिना निम्न जचे, बिना नत हुए, सहज भावसे कोमल सकती थी. सबकी बात वह रख लेती थी. जिसके कारण कोई उसके अति निकट भी नही आ सका, किसीको अपने प्रति अत्यतं घनिष्ट उसने नहीं बनने दिया. बिना किसी सखाके, बिना किसी विश्वास पात्र सहेलीके, वह इस विलक्षण दुनियामे आकर धीरे-धीरे अपनी जगह बनाने लग गई. यह कह देना चाहिए कि दूसरेको सहायता देने, दूसरो के काम आने, दूसरोंका आदर करने और मुसीबतके समय पैसा देने-लेने के लिए वह सदा उद्यत रहती थी. इसलिए सब उसका आदर करती थीं. पर क्रमशः उसके सम्बन्धमे असाधारणतामे दिलचस्पी कम होने लग गई. जैसे वह कभी नई निराली थी ही नही. जैसे कभी उसके सम्बन्धमें जानने पूछनेको कुछ था ही नही. जैसे वे उसे भूल गई थीं, और अब वह उनमें फिरसे आ गई है. हां, तिमिरा कभी-कभी मग्दाके पास आती, खाटपर बैठती, दस पन्द्रह मिनट बात-चीत करती, और असन्तुष्ट चली जाती. कहती, "तुम तो अचेतन पदार्थ जैसी हो मग्दा. वैसी भी नहीं, जैसे पक्षी, पशु, बनस्पति होते है. तुम्हारे भीतर हृदयकी जगह मांस है, बस मांस!"

एमा उडवानी अपनी बातकी सच्ची रही. मग्दाकी वैषयिक तृष्णा की बात किसीपर उसने नहीं खोली. पर, धीरे-धीरे उसपर भी एक भारी चिन्ता-सी सवार हो गई. हां, मग्दाका काम चला. उसे लोग अक्सर चुनते. उसपर लावण्य था और वह अत्यन्त आकर्षक थी. अक्सर आनेवालोंमेंसे अधिक पैसे, बढ़िया रुचि और ऊंचे दर्जेके लोग उसको पसन्द करते थे.

पर, अचरज है, सब उसकी तारीफ करते, उसे चाहते, पर एक बार के बाद कोई दुबारा उसकी ओर न झुकता. एमा अपने भीतर तर्क करती हुई सोचती, यह क्या अजीब बात है. इसी तरहके भेदोंमे पली और इन्हींमें व्यापार करनेवाली यह प्रौढ़ा अपने माथेपर हाथ रखकर सोचती—कि बात समझमें नहीं आती. वह सुन्दर है, चतुर है, बात करना जानती है, उसमें व्यक्तित्व है. वह खासे गहरे पानीमें आदमीको रिझा ले जाती है. फिर भी उसकी सफलता रुक क्यों रहती है? उसने बहुतसे लोगोंसे, जिनसे वह घनिष्ट थी और खुली हुई थी, सवाल किए. उसने जानना चाहा कि मग्दा जो यह सबको ऐसी जल्दी आकर्षित कर लेती है, पर अपनी विजयको कायम नहीं रख सकती, लोग और भी जल्दी उससे थक जाते हैं, इसका भेद क्या हो सकता है.

उसको गोलमोल अस्पष्ट उत्तर मिला, "उस लड़कीमें सब बातें हैं. कमी कुछ नही है. वह सुन्दर है, मधुरभाषिणी है. खुश रहती है, रमणीय लगती है....लेकिन...तुम्हें अब कैसे बताएं. प्रेमके लिए वह उद्यत नहीं होती. मुक्त नहीं होती, न क्रियाशील. आदमीको जलाती नहीं, चोट नहीं करती. वह अगर जरा यह करे कि...पर वह कर नहीं सकती, या वह करना नहीं चाहती."

और जो खेले-खाए पारंगत होते वे संक्षिप्त-सा उत्तर देते, "है खूब. पर मसाला कम है. खानेमें कुछ मिर्च और जरा चटनी भी होनी चाहिए."

एमा उडवानीने अन्तमें स्वयं मग्दासे बात करनेका निश्चय किया. पूछा, "अच्छा, मग्दा, कामका क्या हाल है? पसन्द तो है न. तुम

सन्तुष्ट हो ?"

"हां, खूब. मुहम्मदने अपने स्वर्गकी कल्पना पुरुषके लिए नहीं, स्त्रीके लिए की होती, तो मैं उसी स्वर्गमें रह रही हूं.

"लेकिन, क्या तुम्हारे गाहक तुमसे सन्तुष्ट हैं ?"

मग्दा हंसने लगी. बोली, "पहले यह बात है, कि मैं नहीं जानती बिल्कुल नहीं जानती. और सच कहूं तो जानना भी नही चाहती. मुझे कुछ उनके भावोंसे लेना देना नही है. मैं ईमानदारीके साथ अपना कर्त्तव्य निवाहती हूं...और क्या ?"

संरक्षिका तीखी हो गई. बोली, "यह स्वार्थ है, मग्दा. यह स्वार्थ है कि तुम अपने ही बारेमें सोचती जाती हो. पुरुष अपने सारे जीसे चाहता है कि स्त्री स्वाद ले, सिसकी भरे, हांफे, चीखे, काटे, नोचे-खसोटे, और कुछ रसीली—समझी न—बातचीत भी करती जाए. तुमको थोड़ा बहुत अपनी तरफसे भी कुछ करना ..सिसकी भरना, समझीं कुछ-करना ?...सीखना चाहिए."

मग्दाके मुहपर कुछ छा फैला. वह हंसी न थी, घृणा न थी. जाने किस भावसे वह बोली "धन्यवाद एक बार बराबरके कमरेसे इसी तरहकी सिसकीकी और दूसरी मदमाती चेष्टाओंकी कृत्रिम ध्वनिया मैंने सुनी थीं. मुझे उसपर हंसी आती है, और घृणा भी. मैं वैसा नहीं कर सकती .."

संरक्षिका तुरन्त कुछ उतर आई और साधारण सहज स्वरमें बोली, "खैर, यह तुम्हारा काम है. अगर तुम जनरल नहीं होना चाहती तो सिपाही रहो. लेकिन अब तुम्हारा ख्याल हमपर लाजिमी नही होगा. तुम्हारी रियायत अबसे बन्द हुई. तुम्हारी खुशीकी अब हम फिक्र नही रखेंगी. इस मिनटके बाद जो तुम्हे मांगेगा, उसीके साथ जाना होगा. वह गंदेसे गन्दा, सडा, बूढ़ा चाहे फिर कोई हो."

मग्दाने चमककर कहा, "अगर मैं न चाहूं तो ?"

"तुम्हें चाहना पड़ेगा, मेरी बन्नो." संरक्षिकाने धीमेसे विष-भरे स्वरमें कहा, "चाहो न चाहो, तुम्हें करना पड़ेगा."

"और वह कौन करा लेगा ?"

"साइमन देखा है, वह कराएगा. वह बैलकी तांतोंका चाबुक तुमने उसका अभीतक देखा नही. तुम चाहो तो उसे देख सकती हो. नहीं गरम मत हो, घबराओ नही. यहां तुम-सी, तुमसे भी खूंखार. जाने कितनियोको बसमे किया है."

"मैं शिकायत करूंगी."

"किससे ?"

"पुलिससे—गवर्नरसे."

'गवर्नर दूर है, और पुलिस हमारी खरीदी है. तुम एक चिट्ठी एक पुर्जा बाहर तक नही भेज सकती. जानती हो तुमपर कड़ा पहरा है."

मर्दाने आवेशमें आकर कहा, "मैं निकल भागूंगी."

"मेरी प्यारी बन्नो, निकलनेकी कोई जगह नही है. तुम भाग जाना चाहती हो ? वह भी असम्भव है. मारेंगे हम तुम्हे नही, पर तुम्हारी तबियतकी धारको तोडकर सीधी जरूर बना देंगे. मैं जैसे कहती हूं, अच्छा है, तुम अपनेको काबूमें कर लो अभी समय है. तुम्हारा भी इसी में भला है. और अब चलो कमरेमें."

तीन दिन बाद एक आश्चर्यजनक घटना हो गई. ठीक दोपहर एक दीर्घकाय अर्जुन-सा पुरुष कप्तानकी पोशाकमे अन्ना मरकानीके इस आलयमें उपस्थित हुआ और ड्राइंग रूममे आ पहुंचा. एक कदम पीछे बिल्कुल सतर्क, मानो परेडपर हो, वर्केश था. अभी तक यामाके लोगोंने भयंकर और भैरव वर्केशको ऐसा निम्न, अवनत, दुम हिलाता हुआ नहीं देखा था.

अफसरने शिष्टतासे कहा, "मैं यहांकी मालकिनसे मिलना चाहता हूं."

साइमन नम्र होकर बोला, "वह यहां नहीं हैं. आध घण्टेमें आ जाएंगी."

वर्केश संभ्रमके साथ कप्तानके पास आया. सादर निवेदनके स्वर

में बोला, "हुजूर इजाजत है कि मैं इसका इंतजाम करूं. आप ऐसे हक़ीर लोगोंसे बाततक करना गवारा करे,इसमें हुकूमतकी तौहीन है. हम पुलिसमें हैं, हमारी दूसरी बात है. यह हमारा काम है. जहां गन्द, जुर्म और खौफ हो वहां आपके हाथमें हम हैं. यह हमारे हिस्सेकी बात है. हमारे रोजमर्राके कामसे इनका साबका है."

अफसरने कहा, "आपकी इच्छा."

वकश ऐसेजोरसे चिल्लाकर बोला कि खिड़कीके तख्ते झनझना उठे और फानूसकी लटकी हुई तीलियां बज उठीं. बोला "उस औरतको यहां लाओ, क्या उसका नाम है ?"

एमा उडवानीने कमरेके अधछिपे दरवाजेमेंसे कछुए-सा सिर निकाल कर दहशतसे देखा. और लड़कियां घबराई हुई अपने रातके ही कपडों में एक दूसरे दरवाजेमें एकपर एक इकट्ठी हो गईं और एक दूसरेके कन्धेपरसे झांककर हालमें देखने लगीं.

अपनी बाहोंसे खुली गर्दनको ढकती हुई एमा बोली, "अभी लीजिए अभी थोड़ी देरके लिए क्षमा कीजिए, मैं पूरे कपड़े नहीं पहने हूं. कृपाकर बस एक मिनट ठहरिए."

"एक सेकण्ड भी नहीं." वर्केशने दहाडकर कहा, और उसकी तरफ उंगली उठाकर धमकाते हुए बोला, "हम यहां तेरी खूबसूरती ताकने नहीं आए ह. बुढिया कहीं की."

अफसरने उसे जरा रोका. कहा, "जरा शिष्टतासे."

"हजूर यह जानवर शिष्टता क्या जाने. बिना पिटे कभी यह कुछ सुनते हैं. आप हजूर—"उसने अत्यन्त विनीत बनकर कहा, "आप जरा उस कमरेमें चले."

वह उसी छोटे कमरेमें पहुंचे जहां उस त्योहारके दिन वर्केशको काफी पिलाई गई थी और कुछ और भी बातचीत हुई थी. एमा अब भी कुछ कपड़ों और पिनोंको लेकर भागनेका उपक्रम कर रही थी कि वर्केशने उसे दुरुस्त किया. कहा, "अरी ओ, फटी जूती कहीं की, और क्या सुन्दर बनने जा रही है ? यहां बैठ, यह देखती है, यह क्या है ?"

ग्रौर उसने उसकी नाकके ग्रागे एक पुर्जा किया. उसपर विश्वके महा-महिम शक्तिशाली पुरुषके दस्तखत थे, ग्रर्थात् कमिश्नरीकी पुलिसके कप्तानके. ग्रपने कागजपर लिखे ग्रक्षरकी ग्रोर संकेत करते हुए कहा, "इस स्त्रीको जानती है ?"

"जी हां !"

पहली बात यह कि उसका वह कार्ड लाग्रो, जो यहांपर इस्तैमाल करती हो"

"ग्रच्छा. क्या हजूर चाहते हैं कि उसको फाड़ दिया जाए ? या मैं ग्रापके सामने पेश करूं."

"लाग्रो मुझको दो."

"दूसरी बात, यहां उसका क्या नाम है ?"

"मग्दा, हजूर !"

"तीसरी बात, तुम्हारे यहां सबसे होशियार ग्रौर काबिल लड़की कौनसी है ?"

"जी ..तिमिरा !"

"तिमिरा ? . ग्रच्छा !"

वह दरवाजेसे झांका, ग्रौर चिल्लाया, "तिमिराको यहां ले ग्राग्रो. फौरन. क्या कपड़े नहीं पहने हैं ! जैसी हो, इधर हमारे पास ग्राग्रो !"

तिमिरा जल्दी-जल्दी चलकर वहां पास ग्राई.

"तुम इसी मिनट श्रीमती—मग्दाके पास जाग्रो. उन्हें जाकर कपड़े पहनाग्रो. उनके ग्रपने कपड़े, समझीं ? ग्रौर स्नान वगैरा ग्रच्छी तरह कराना, समझ गई न ? ग्रौर फिर उन्हें यहां ले ग्राग्रो. ग्रौर बाकी सब लड़कियां ग्रपने कमरेमे जाएं. किसीकी ग्रावाज सुनाई न पड़े. समझीं खबरदार ! नही तो मैं तुम्हें ग्रभी सबको थानेमे पहुंचा दूंगा. चलो."

जब मग्दा ग्राई, न जरा डरी थी न घबराई हुई. सदाकी भांति वह शान्त थी. उसके ग्राते ही ग्रफसर तुरन्त खड़ा हो गया. ग्रौर तनिक झुककर ग्रभिवादन किया. फिर उसके हाथका सम्मान पूर्वक चुम्बन किया. इस समय वर्केश बांसकी तरह सतर्क तना खड़ा था. रक्षिकाने

धीमेमे कहना शुरू किया ..."जी, एक बिल था..."

अत्यन्त उत्साह पूर्वक वर्केशने उसे घुड़ककर कहा, "कोई बिल शिल नहीं, चुप !"

लेकिन अफसरने उसे खामोश रहनेकी आज्ञा दी.

रक्षिकाके बिलको पूरा चुकता ही नही किया गया, ऊपरसे भी काफी भेंट मिली. अफसर और महिलाकी प्रतीक्षामें द्वारके बाहर एक बढ़िया बग्घी थी. वर्केशने उन्हें बग्घीमें चढ़नेमें सहायता की.

तिमिरा मग्दाको जानेके लिए तैयार होनेमे मदद दे रही थी. उस समय उनमें यह बातचीत हुई :

"सो मग्दा, तुम वेश्या बिल्कुल नहीं थी ?" तिमिराने पूछा

मग्दा मुस्कराई.

"नहीं, मैं नहीं थी."

"इसके माने तुम कुलीन हो ?'

"नहीं, तिमिरा ! कुलीनताकी शत्रु!"

"तो यहां ऐसे घरमें तुम भला कैसे आई ? या सच जब तुम स्वतन्त्र थीं, तब काफी आदमी तुम्हें नहीं मिलते थे ?"

मग्दा फिर मुस्कराई. उसमें किसी प्रच्छन्न विषादकी छाया थी.

"आह ! तिमिरा !...तिमिर, तुम्हें भरोसा नहीं होगा. अगर मैं कहूं कि मैं एक निष्कलंक स्त्री हूं. ठीक इस क्षणतक भी निष्कलंक हूं."

तिमिरा पूरी तरह खिलखिला पडी

"हां, हां, दिनमें छह-छह, सात-सात आदमियोंको तुमने अपनी देह सौंपी—और तुम निष्पाप हो. निष्पाप क्यों जी, सन्त हो."

मग्दाका चेहरा गम्भीर हो गया. तिमिराकी ओर वह झुकी जो तब अपनी एड़ियोंपर बैठी थी. उससे पूछा, "तिमिरा, तुम होशियार हो. मुझे एक बात पूछने दो, तिमिरा. समझो, तुम युवती कन्या हो. कुमारी अछूती, अक्षत—कि एक कमीना पिशाच तुमपर बलात्कार करता है. बताओ तिमिरा, उसपर तुम पापिष्ठा हो गई या निष्पाप रहीं ?"

"कह क्या रही हो ? तब, तब, मं .क्वारी कहां रही ? तब में अक्षत तो नहीं रही."

"अच्छा तिमिरा, परमात्माके सामने, या किसी भद्र देवता रूप पति-के सामने जो परिस्थति समझता है, जो दयालु है...और स्वयं अपने सामने...स्वयं अपने सामने तुम पापिनी हो ? या निर्दोष हो ?"

"क्या ? अवश्य निर्दोष हूं"

"यही मेरे बारेमे मान लो तिमिरा ! तुम कठिनाईसे समझोगी..."

तिमिरा कुछ क्षण चुप रही.

"लेकिन, यह अफसर....यह तुम्हारे पति हे ? प्रेमी हे ?...भाई हे ?"

"कोई नहीं है, कामरेड हे. हम दोनों एक पथके सहयात्री पथिक हे ?"

"ओह, मग्दा ! मे अपने चित्तमे अनुभव करती हूं कि तुम तनिक भी मिथ्या नही कह रही हो. लेकिन मे समझ नहीं सकती. जैसे तुम भोली-भाली एक नारी हो ! मे तभीमे अनुभव करती हूं कि तुम एक कुलीन महिला हो. लेकिन कैसे...किसतरह अपनी मर्जीसे तुम इस पक गर्तमें फंसने आ गई, गिरने आ गई ? मेरी ही बात लो. मे अपने को तुमसे खोल दूगी. कभी मैंने शिक्षा पाई थी, चाहे वह ऊपरी ही थी. अब भी मे दो भाषाएं जानती हू. जो यहां बोलती हूं वह मेरी भाषा नही है, बनाकर बोलती हूं. तुमसे वह भाषा मे जानबूझ कर बोलती हूं. लेकिन मे गृह हीना हूं, भ्रान्त, लक्ष्य-हीन, उड़ते पक्षीकी तरह, स्वतन्त्र, निर्बाध. नही जानती मेरी आत्मा किधर उड़ रही है. और वह किस डालपर बसेरा लेगी. पर तुम, तुम, तुमने यह क्यों किया ?"

मग्दाका चेहरा अकस्मात् मानो पथरा गया, रक्त उसका सूख गया. उसने विरस होकर कहा, "हां, मैंने कभी तुम्हारे कृत्रिम आवरणको भांप लिया था. साफ है, यह तुमने यहां वालियोंमें निभनेके लिए ही अपनाया था. अच्छा, अगर तुम्हें ऐसी जिज्ञासा है तो मैं साफ कह दूं.

मैं एक लेखिका हूं. मैं इन विलासके केन्द्रों और लीलाके कुंजोंके जीवनका सच्चा चित्र दुनियांको देना चाहती हूं. और मेरा उपन्यास सत्य हो, प्रामाणिक हो, इसके लिए मैंने सोचा, मुझे स्वयं उसमेंसे पार होना होगा. हां सबमें, सब कुछमेंसे, तिमिरा."

तिमिरा, जो कि अबतक अपना काम समाप्त कर चुकी थी, बोली, "ठीक. मैं तुम्हारे अभिप्रायकी सत्यतामें श्रद्धा रखती हूं. लेकिन तुम जो कहती हो, लेखिका हो—सो गप है. मैं देखती हूं. उद्देश्य गहरा है, अभिप्राय महान है, इससे भी बहुत महान है. लेकिन मैं सौगन्ध खाती हूं, अपनी इस बातचीतका मैं किसीसे नाम न लूंगी."

मग्दाने स्थिर होकर कहा, "जो तुम्हारी इच्छा, धन्यवाद !" फिर सहसा मानो पश्चातापके आवेशमें उसने तिमिराको दृढ़ातिदृढ़ आलिंगन-में कस लिया, चुम्बन किया, और धीमेसे उसके कानमें कहा, 'मैं तुम्हें पत्र लिखूंगी."

इन घटनाओंको कोई आठ महीने हो गए. क्रान्तिमें उभार आने लगा. हड़तालें हुईं, आन्दोलन स्थानीय बनकर उठने लगे. गेपनके दिन आए. संक्षेपमें क्रान्तिका सन्देश, निश्शब्द नीरव, हवामें फैलता सब ओर छा गया. राजनीतिक बेचैनीमें से उठकर घटनाएं घटी, स्फोट हुए, और गिरफ्तारियां देशमें आम हो गई.

सो एक दिन आधीरात अन्ना मरकानीके शान्त स्थानमें भी कुछ सिपाही आ धमके. पुलिस अफसर भी साथ थे. मकानको घेर लिया गया. जो मेहमान थे सबको पहरेके अन्दर एक और कमरेमें भेज दिया गया. जो सोते थे उन्हें भी इस कामके लिए जगाकर पहरेमें बन्द किया गया. मकानकी तलाशी हुई. कोना कोना छाना गया. बमोंकी और लाल पर्चोंकी तलाश थी. पर मिला कुछ नहीं. फिर आलयकी लड़कियां एक एक कर कमरेमें लाई गईं और अफसरने उनसे कठोर होकर, दयालु होकर, सब विधिसे मग्दाके बारेमें पूछा ताछा. वह क्या-क्या करती थी, क्या-क्या उसने कहा. किनसे मिलीं, किनको उसने चिट्ठी लिखी, क्या किसीको कुछ यादगार, या कुछ किताबें दे गई ? आदि.

लड़कियां इन सवालोंका कुछ न बना सकीं. वे घबराईं, लाल हुईं, पसीने छूटे, आंखोंको कुचाकर रोईं, और अफसरके पैरों गिरकर, दुहाई देने लगीं, "दैयारे ! हमारे सिरपर गाज गिरे, जो हमने कुछ किया हो, किसीको मारा हो, या जो किसीकी चोरीकी हो !"...उन्हें सबको रुख-सत कर दिया गया.

तिमिरा बहुत कुछ कह सकती थी. अपनी अन्तिम बातचीतकी बात तो कह सकती थी. दूसरी वेश्याएं, जिनमें अपनेको विशिष्ट और बढ़ा-चढ़ाकर दिखानेकी इच्छा बलवती होती है, और जो भावावेगको अति-शयताका प्रदर्शन करनेकी आदी होती हैं, अवश्य बहुत कुछ बना जोड़कर कहतीं. पर तिमिराने सनकके साथ कहा :

"महाशय, मैं उसके बारेमें आपको इससे ज्यादा कुछ नहीं कह सकती कि वह नीच, दुष्ट, हरजाथन थी. दुनियाके सब मर्द उसके लिए काफी नहीं थे. सो बेहया, वह यहां आकर मरी !"

सिपाही और अफसर लौट गए और फिर नहीं आए. लेकिन उसके बहुत दिनों बाद भी अन्नाके यहां रहनेवाली लड़कियोंको मुहल्लेके लोग सोशलिस्ट कहकर पुकारते थे. और लड़कियां सच इसपर बहुत नाराज भी हो लिया करती थीं लेकिन एक दिन घोर विभीषिकाके भावके साथ तिमिराने एक बात सुनी. सुनी क्या, कानों पड़ी सो सुन गई. वर्केश उसी छोटे कमरेमें मालकिन, उसके खाविन्द, और रक्षिकाके सामने शराबका प्याला हाथमें लिए कह रहा था :

"अपनी मग्दाकी याद है ? मानना होगा, बड़ी ऊंची उड़ती चिड़िया थी. गजबकी औरत निकली. उसके दसियों नाम थे. एक तो, एमा उडवानी, वही था जो उस टिकट पर लिखा था और उसने तुम्हें दिया. और तुम्हीं उसे अपने हाथों थानेमें ले गईं, और बदलेमें पीला टिकट ले आईं ! उसके मुताबिक अलका लवीश उसका नाम था. ताल्लुकेदार घरानेकी और संगीतशिक्षिका, यह भी उसपर लिखा था. लेकिन तुम जानती हो, वह तुम्हारे घरमें क्यों आई ? गजब है, सोचकर सिर चकराता है. वह तुम्हारे यहां आकर, समझो, इस पेशेकी बारह खड़ीका

अभ्यास कर रही थी. नहीं, नहीं, घबराओ नहीं...घबराओ मत, जो आगे हुआ वह सुनो, वह सुनो. तुम बौखला रहोगी. इस पेशे और बाजारका यहां इतना अभ्यास लेकर कि वह अपनेको रंडी बताकर किसी की भी आंखमें धूल झोंक सके— उसने क्या किया ? वह दक्खन सबस्टापोल चली गई. शुरूमें वह मल्लाहोंके एक गुटमें मिल गई. फिर दूसरे, फिर तीसरे, फिर चौथेमें पहुंच गई. उसके बाद तो यही काम उसने ओडेसा और सिकोलौरमें किया. अब देखो, एक बात कहीं तुम्हें साफ नजर आती है ? वे सब बन्दरगाह थे. सब जगह उस पीले टिकटकी आड़में उसने सरकारके प्रति विद्रोहकी आग भडकाई. वह लोगोंको उकसाती थी, कहती थी, 'इन सब राजकुलोंका सत्यानाश कर दो. इन पैसेवालोको भी मिटा डालो. खासकर जमीदारोको, बुराईकी जड़ यही है.' उसके जरिए इन सब शहरोंमें लाखो बलवाई परचे, अपीलें और सन्देश बटे और फैले. बहुत कोशिश हुई, पर वह पकड़ी नहीं जा सकी. सब जगह उसके दोस्त मदद पर थे. और तो और, वह कप्तान भी जो यहां आकर ऐसे मजेमें उसे साफ ले गया, हम सब बेवकूफ बन कर हाथोंमें जिसका बेग लिए खड़े देखते रह गए, वह नवल नामका कालिजका निकला हुआ लड़का था. बस सब कपड़े अफसरके पहन रक्खे थे. कम्बख्तने गजब भी क्या किया ? खास गवर्नरके यहासे और पुलिस कप्तानके पास पहुंचकर उसके सामने पुर्जा पेश किया. वह सरकारी कागज था, सील मुहर दुरुस्त थी, सच्चे सही दस्तखत ! देखो कम्बख्तकी हिम्मत ! खैर, कुछ बात नही.. अब हजरतको पकड़कर साइबेरियाको खाने खोदनेको भेज दिया गया है. सालेको अच्छी सजा मिली. बदमाश !"

"और मग्दा ?" एमा उडवानीने पूछा.

"मग्दाकी भी गति हो गई. उसने गवर्नरपर बम फेका, और साली वह भी फांसी झूल गई !"

६

सध्याकी भीनी अंधियारीकी ओर मुंह किए खिड़कियां खुली हैं. हवाकी धीमी-धीमी लहरोंसे पर्दे तरंगित हो उठते हैं. सामनेके बगीचे की ओससे भीगी घासमेंसे महक उठ रही है. वृक्ष अपनी फुनगियोंको हौले-हौले हिला रहे हैं.

लुवी नीचे मखमलकी अंगिया और नूरी गुलाबी खिलता ब्लाउज पहने अपने लहराते बालोंको पीठपर छितराए खिड़कीके जंगलेमें एक दूसरेमें लिपटी हुई पड़ी हैं वे मिलकर कुछ गुनगुनमें एक अस्पताली गीत गा रही हैं जो इधर कामिनियोंमें खूब प्रचलित है. नूरी अपनी बारीक आवाजमें अलाप लेती है, लुवी उसीको दोहराती है. वे गाती हैं :

> सोमवार अब फिर आया है.
> चाहिए कि वे मुझे अब बाहर ले चलें.
> पर यह डाक्टर जाने नहीं देता.
> उस मुसरेकी——

सब घरोंमें खिड़कियां प्रकाशसे चमक उठी हैं. दरवाजोंपर कन्दीलें लटकी हैं. दोनों लड़कियोंको सोफिया वाले चकलेका भीतरी भाग साफ दीखता है. वह बिल्कुल सामने ही है. पीला, चिकना, चमकता फर्श है, दरवाजेपर फिरोजी रंगके पर्दे जिनमें झालरें टकी हैं. एक ओर बड़ा काला पियानो है और एक बड़ा आइना. आन-बानकी पोशाकोंमें सजी स्त्रियां आती-जाती दीखती हैं और दर्पणमें पड़ते हुए उनके प्रति-बिम्ब. बराबरके चकलेका दरवाजा, नीले ग्लोबसे ढकी तेज बिजलीकी रोशनीसे जगमग हो रहा है.

संध्या गर्म है और शान्त. कहीं दूर, रेलकी सड़कके पार, मकानोंकी छतों और वृक्षोंसे आगे,और आगे और और दूर, जहां आस्मान धरतीका चुम्बन पाकर लाजसे लाल हो रहा है, वहीं गुलाबी परियां श्यामारुण

वस्त्रोंमें जैसे सोना उछाल उछालकर खेल रही हैं. प्रकाशमें कोमल ऊष्मा और श्यामारुण धवलता है. इस हल्के, धीमे, मृदुल प्रकाशमें बहती हुई तरलित वायु जैसे किसी मीठे रहस्यका सन्देश दे रही है. मानो कह रही है—रात आ रही है, रात बसन्तकी यह संध्या, कुछ खिन्न कुछ प्रफुल्ल, अलस भावसे मानो नगरके ऊपरसे जाती जाती कुछ ठहर गई है. नगरके कोलाहलकी अस्पष्ट ध्वनि दूरागत संगीतकी भांति आ रही है. लौटती गायोंकी गोधूलि वेलाकी पुकार उनके साथ अभिन्न होकर मिल गई है. कभी पास ही किसीके चलनेकी आहट आती है. कभी जान पड़ता है किसी सुन्दरीके वस्त्रोंके साथ हवा झगड़ रही है, और सुन्दरीके वस्त्र फरफरा रहे हैं. सडकपरसे जाती हुई घोड़ा गाडि-योंके पहियोंकी घड़घड़ाहट कानोंमें पड़ती है. सब मिलकर लगता है जैसे कोई लोरियां गा-गा कर, थपक-थपककर सबको सुलाना चाहता है. और दूर रेलकी पटरीसे भागते हुए एञ्जिनकी चीख सुन पडती है और वह अपनी हरी लाल रोशनियोंसे अंधियारीको चीरता हुआ सिसकी-सी भरता चला जाता है. मानो सन्देश देता है·

धाई अम्मा आएगी,
खीर मलाई लाएगी.
खीर मलाई लाएगी,
सबको बाट खिलाएगी.

"पोतुल!" नूरीने नीचे सडकपर फुदकते-से जाते हुए एक आदमीको देखकर एकदम पुकारा, "ओह, पोतुल !"

उसने लापरवाहीसे कहा, "क्या है, क्या बात है ?"

"अरे, एक दोस्त तुम्हारा मुझे मिला था. तुम्हें उसने नमस्ते कहा है. मुझे आज ही मिला था."

"दोस्त कौन ?"

"अरे, बड़ा सुन्दर था. छोटा-सा, बढ़िया-सा जवान...क्योंजी तुम मुझसे पूछते क्यों नहीं, कहां मिला था !"

"अच्छा, बताओ कहां मिला था ?" जरा रुककर पोतुलने पूछा.

"बताऊं कहां मिला था ! वह अलमारी जो है, उसके ऊपरके खाने मे हमारी तकिया रखी रहती है. वही वह मिला था."

"हिश्, क्या मजाक है !"

नूरी इसपर मार चरम खिलखिल हंसती हुई उछलती फिरी. टांगें फेंकती, हाथ नचाती, मुह बनाती, और दुहरी हो होकर हंसती और बेबस हो आती. फिर हंसना बन्द करके गम्भीर-सा चेहरा बनाकर एकदम धीरेसे कहती, 'नूरी, अरी तू जानती भी है, च्यौरस साल एक औरतको गला काटकर जिसने मार किया था, वह कौन था ?...यही पोतुल था. सच, राम कसम !"

"क्यों री सच ? और वह मर गई ?"

'नहीं वह मरी नही." और मानो यह कहते हुए नूरीको खेद हुआ, "वह बच गई. न सही, दो महीने तक अस्पतालमे तो पड़ी रही. डाक्टरोंने कहा, घाव एक दो सूत और गहरा जाता, तो.. खात्मा ही था. चलो खैर !"

'तो उसने यह सब किया क्यों ?"

"मै क्या जानूं . उस औरतने रुपया छिपाकर रखा होगा. या वफादार नहीं रही होगी यह आखिर उसका प्रेमी था उसका..."

"तो, उसे कुछ सजा भी हुई ?"

'नहीं बिल्कुल नही गवाह ही नही मिला बात यह थी कि एक शोरोगुल मचा हुआ था. मेकरी लोग लड झगड रहे थे वहा पता क्या चलता तभी मौका देख उसने अपना काम तमाम किया. और, मालूम है, औरतने पुलिसको क्या कहा ? कहा कि उसे किसीपर शक नहीं है. पर पीछे पोतुल खुद इस बातकी डींग मारता फिरने लगा कि-ओह, इस बार तो दुनका चलो रह गई, अबके देखो कैसे एक हाथमे सब झगड़ा साफ किए देता हूं. अभी उसने मेरे हाथ देखे कहां है. वह भी वह देखेगी, कि क्या करू."

लुबीके मारे बदनमे कंपकंपी छूट आई. उसके स्वरमें दहशत समा गई. पर धीरेसे बोली, "यह आशिक लोग भी एक आफत होते है. गजब-

के हैवतनाक !"

"ओह तौबा ! तुम जानती हो, एक साल तक साइमनके साथ मै भी इसी प्रेमके चक्करमे रही. ऐसा आफतका परकाला है कि क्या कहू बदनपर कोई जगह जो बचाई हो, ऐसा मारता था. नीले-काले मारके चित्ते सदा मेरी देहपर रहते और मै उसी तरह डोलती रहती. और यह मार किसी खास बातपर थोडे ही भुगतनी पडती थी. सब यो ही बे बात, बे मतलब. सवेरे आता, मुझे कमरेमे ले जाकर भीतरसे ताला बद कर लेता और करता सताना शुरू. बाहे मरोडता, छातियां चूटता, गला नोंचता और मुझे बुरी तरह घोटता. नही तो चूमने ही लगता. और फिर एकाएक ऐसे जोरसे काटता कि मेरे ओठोंसे खून निकल आता... मै रोने लगती. बस जैसे उसे इसी बहानेका इंतजार रहता. तब वह शिकारी जानवरकी तरह मुझपर टूट पडता. उसकी देह तमाम थर-थराने लगती. मेरे पाससे धेला-धेला छीन लेता. पास इतना भी न छोडता कि बीडी तो ले लूं. यह साइमन एक कन्जूस है. जो मिला, लिया, और जमा बैंकमे बस, जो आया, हमेशा बैंकमे जमा करता रहा है. कहता है जब हजार रुपए पूरे हो जाएगे तो किसी तीरथमे जाकर भगवद भजनमे दिन काटूंगा. और मै सच कहती हूं, तुम उसकी कोठरी-मे जाकर देखो, दिन-रात चौबीसो घण्टे मूर्तिके आगे दीया जलाए रखता है ईश्वरके बारेमे बडा कट्टर है .लेकिन, मेरा ख्याल है, इसका कारण है, कि उसके चित्तपर पापका भारी बोझ है. वह खूनी है"

"कहती क्या हो !"

"ओह लुबी ! उसकी न कहो, आओ गाए. हा, वह आगे क्या है?" और नूरी ऊंची बारीक आवाजमे गाने लगी

अरी मै अत्तारके जाऊगी,
वहासे जहर लाऊगी.
और जहर पीके जो सोऊंगी,
ऐसी कि, फिर बस...

जनी इधर-उधर कमरेमे चक्कर लगा रही थी. उसके हाथ पीठके

पीछे थे चलती कुछ भूमती-सी थी और आइनोमे अपना अक्स देखती जाती थी वह एक चुस्त, ऊंची पोशाक पहिने थी जिसके कारण उसकी देहका उभार स्पष्टतर होकर दीखता था

मनका और पाशा ताश खेल रही थी मनका ताशकी बेहद शौकीन है. सबेरेसे अगले सबेरे तक लगातार उसे ताश खिला लो दोनो आमने सामने, बराबरसे सुभीतेके लिए खाली कुर्सी छोड़कर, बैठी ताश खेल रही है जीतके पत्ते गादेमे डालती जाती है मनका एक ऊदे रंगकी पोशाक पहिने है जो उसे खूब सजती है और उसकी युवा देहकी प्रदर्शिनीके प्रभावको जैसे और चमका देती है

उसकी साथिन पाशा अद्भुत अभागिन लड़की है. उसे अबतक यहा होनेके बजाए कही उन्माद रोगियोके अस्पतालमे होना था उसे एक स्नायविक रोग है जिसके दौरेमे वह हरेक मर्दपर गर्मी भूखी, अतृप्त, उन्मत्त, भावसे टूटकर गिरती है जिसका ठिकाना नही चाहे वह कोई हो, नरकीट हो क्या न हो इस दुर्गुणके लिए साथिन सब उसका मजाक करती है मानो कि पुरुषके प्रति उनमे एक जो सम्रहीन विद्रूपका भाव है, वह पाशा उसके प्रति उलहना अपराध करती है मानो इसी बातकी चिढ और कुढन मनका उसके ऊपर ताने और फबतिया ढालकर निकालती है खासकर तृगी तो पाशाकी उन सिसकियोकी सीत्कारकी, अन्यतम कामोन्मत्त अवस्थाके समय उसके मुहसे निकलनेवाले उन बेहद अश्लील उद्गारोकी जो पास लगे दूसरे तीसरे कमरेतक भी खब सुन पडते है, बड़े मजे ले लेकर हू-ब-हू नकल निकाला करती है पर पाशा पुरुषका आलिंगन पाकर ऐसी मस्त हो उठती है कि उसे कुछ सुध-बुध नही रहती कहते है, वह यहा लाचारीमे पडकर, छलमे बहकाए जानेके कारण या किन्ही विवश परिस्थितियोमे फस जानेकी वजहसे भर्ती नही हुई पर अपनी इस घोर, दुर्जय, भयावह, दुर्दम वृत्तिको चरितार्थ करने अपनी खुशीसे यहा आई है यहाकी माल-किन और रक्षिका उसकी इस अघोरी प्रवृत्तिमे और बढावा ही देती है, क्योकि पाशाकी सदा ही मांग बनी रहती है. जितना दूसरी चार-

पांच मिलकर कमाती, वह अकेली उनसे कई गुना कमा कर दे देती है. वह इतना कमाती है कि कभी किन्ही खास दिनोमे तो बहुतोको मिल तक भी नही पाती. जो बधे ग्राहक है वे यह सुनना क्यो गवारा करे कि उनकी चीज इस वक्त खाली नही है, किसी दूसरेके काममे है! पाशाके ऐसे बधे ग्राहकोकी गिनती कम नही है. उनमे बहुतसे पाशासे सचमुच उत्कट प्रेम भी करने लगे है. उस प्रेममे पशुता तो है ही फिर भी वह प्रेम है. उनमेसे दोने तो उसे यहासे निकालकर अपने घरमे रखने तकका प्रस्ताव किया है. एक उनमे क्लर्क है जिसकी साधारण आय होगी. दूसरा एक उच्च कुलीन कहीका एजेण्ट है. पाशामे उस कृत्यको छोडकर और किसी विषयके सम्बन्धमे उत्साह नही है. शेष सब ओरसे वह उदासीन है. वह स्वय तो जा चाहे उसीके साथ चली जा सकती थी लेकिन यहा वाले उसके द्वारा सधनेवाले अपने स्वार्थके सम्बन्धमे सतर्क है. उसके सुन्दरतम प्यारे चेहरेपर सदा एक उन्मादका भाव छाया रहता है. आखे अधमुदी-सी रहती है, मुहपर मदभरी, कोमल, उल्लासमय, लजीली सुग्ध, वासनामय मुस्कान. और जिनपर वह जीभ फेरती रहती है तर, ताजा आमन्त्रण देते हुए और एक निपट अजान, अबोध, नागिका-सा उसका अट्टहास!! उन सबमे एक खुमारी भरी रहती है. किन्तु यही लडकी जीवनकी और सब बातोमे, दैनिक व्यापारमे सीधी, भली, भोली लज्जा शील और नितान्त वासना-हीन है. उसे अपनी निरकुश लिप्सापर स्वय लज्जा है. पर असीम सामाजिक परिस्थितिकी क्रूरता और अतृप्त काम तृष्णाके चरम क्रूर शिकारका नमूना—यह लडकी है. अपनी साथिनोके प्रति वह नम्र है, उनको खूब प्यार करती है. उनसे चिपटती है, चूमती है, उनके साथ-साथ एक बिस्तरपर सोया करती है. पर प्रतीत होता है, जैसे उन लड़कियोमे से कोई भी उसके प्रति अपनी घृणाको दबा नही पाती.

पाशाने बडे जोसे हल्केसे मनियाका हाथ छूकर कहा, "मनिया, ओ मेरी मनिया बीबी, मेरी रानी बीबी, मेरा भी भाग्य बताओ."

"चलो, चलो." मोटी मनियाने चिढ़े बालककी तरह ओठ निकाल-

कर कहा "ताश खेलो."

"मनिया रानी, तुम जीजी कैसी हो?...तुम बड़ी अच्छी हो. देखो, बना दो"

मनिया हार गई. ताशकी गड्डी उसने अपनी गोदमें रख ली. पत्ता खींचा. पहले हुकमका बादशाह निकला फिर ईटका बादशाह.

पाशा खुशीसे तालो बजा उठी, "ओह, यह मेरा लक्ष्मण है. उसका आज आनेका वादा भी है जरूर, जरूर मेरा लक्ष्मण ही है.'

'तुम्हारा आशिक नम्बर एक, वह जार्जियन ?"

'हां हां, जार्जियन लक्ष्मण ! कैसा अच्छा है वह. मैं उसे अपने पाससे अब कभी न जाने दूंगी जानती हो, पिछली बार उसने मुझसे क्या कहा था उसने कहा, अगर तुम यहीं इसी घरमें रहीं, तो मैं तुम्हें भी जानसे मार दूंगा और खुद भी मर जाऊंगा. और मुझे ऐसे देखा, ऐसे देखा...जैसे बिजली !"

जेनी चलते-चलते पास खड़ी हो गई थी उसने यह सुना. पूछा, यह किसने कहा था ?"

"क्या, मेरे जार्जियनने, लाखो ! 'तू भी मरेगी, मैं भी मरूंगा ! यही उसने कहा था."

"बेवकूफ कहीकी ! जार्जियन-वार्जियन वह खाक नहीं है. सुनती है कि नहीं, वह आर्मीनियन है और आवारा है हां, तू सिर फिरी पगली जरूर है"

"आह, नहीं वह आर्मिनियन नहीं, जार्जियन है. और क्यों..."

"मैं तुझे बताती हूं, वह आर्मीयन है. मैं और भी तुझे कुछ बता सकती हूं, मूरख !"

"तुम मुझे कोसती क्यों हो जी जेनी ! मैंने तुमसे कुछ नहीं कहा. क्यों, कुछ कहा ?"

"मनमें हो तो कहके ही देख ले. तू ही पहल करके देख, गधी ! पर, कोई हो, तेरे लिए सब एक जैसे नहीं हैं, क्यों री ? या तू उसके प्रेममें पड़ी है !....क्यों ?"

"तो हा, मै उसके प्रेममे पड़ी हू"

"और बेवकूफ भी है तू ही...और वह दूसरा, जो टोपीमें बैज लगाकर आता है, वह लगडा—उसके भी प्रेममें है ?"

"सो क्या हुआ, हा मै उसे भी पसन्द करती हूं. वह इज्जतदार आदमी है !"

"और नाकू जिल्दसाजको? और उस ठेकेदारको? और उस लुहारके बच्चेको ? और उस तीन टागके नटको ? गदहेको ? उल्लूको ? ...अरी, कमीनी कुतिया !" जेनीने एकदम चिल्लाकर कहा, "तुझे देखते ही मुझे नफरत होती है ! गलेमे रस्सी बाधकर तू अपनी जान क्यो नही खो देती, जू की बच्ची .."

पाशाने चुपचाप आसू भरी आखोपर अपने पलक डाल लिए. मनियाने उसका पक्ष लिया, "ठीक तो है जेनी, क्यो ऐसे उसे दुतकारती हो ? क्यो उस बिचारीपर टूटी पड रही हो ?"

जेनीने बीच हीमे काटकर तीखेपनसे कहा, "आह ! तुम सबको मजा आता है. तुममें आत्म-सम्मान नही रह गया है कोई राह चलता यहां आता है और पैसे फेककर गामके पिण्डकी तरह तुम्हे खरीद लेता है बधी दरसे, जैसे सवारीकी घोडी हो, घण्टे एक-आधके लिए तुम्हारा किराया तय करता और अदा करता है, और तुम मजेसे घुल-घुलकर उसकी गोदमें बताशा बन जाती हो, "ओह मेरे प्यारे! मेरे राजा!" कहने लगती हो कहती हो, "ओह, कैसा मस्त अलौकिक प्रेम !" अख थू" कहकर घृणाके साथ जोरसे जेनीने फर्शपर थूका और मुह मोडकर कमरेके इस कोनेसे उस कोनेतक शीशोमे अपना मुह देखती लम्बे-लम्बे डगोसे तेजीसे घूमने लगी.

उधर गायन मास्टर इसहाक दाऊद अभी वाइलिन बजानेकी कोशिश करते हुए इसिया साविशसे उलझे थे

"वैसे नही, वैसे नहीं, इसिया साविश ! वाइलिनको जरा एक तरफ धर दो· सुनो, राग इस तरह है."

एक उंगलीसे उसने पियानोपर गत छेड़ी और गला खोलकर अपनी

फटी-सी आवाजमे गा उठा ·

"आ-आ-आ-आ आ-सा-सा सा. हा, ठीक ! अब फिर वैसे ही कहो."

कुत्ता जो कान देकर रिहर्सल सुन रहा था और दुबली-सी मुह पर खूब पाउडर पोते पियानोपर कोहनी रखे, झुकी हुई, मदमाते चेहरे-से वीरा भी समझनेकी चेष्टा कर रही थी बालोके लच्छे बनाकर माथेके दोनो ओर भवोके पासतक ले आए गए थे, और अपने ऊचे जूते बिर्जिस, और आधी बाहोकी कमीज पहने वीरा रेसकी घुड़सवार सी मालूम पडती थी भौहोंके नीचेसे चमकती उसकी नीली आख अपने नीचे छोटी नुकीली नाकको देखती हुई फर्शकी तरफ जमी थी. आखिरकार दोनों गायन मास्टरोंका झगड़ा निबटा, उनमे समझौता हुआ, और बरका बड़ी अदासे चलती हुई जोहराके पास पहुची अदाके साथ बाहे फैलाकर मर्दाना ढगसे उसने जोहराको सलाम किया और वे दोनो खूब खुश, साथ साथ कमरेमें इधर-उधर उछलती फिरने लगी.

चहकती नूरी सब बात पहले खबर रखती है वह एकदम खिडकी से कूदकर उत्साहके साथ पुकार मचाती जल्दी-जल्दी बोली, "अरी एक बढिया गाडी . ट्रेपिल आई है...सच.. और बिजलीके लम्प हैं ..झूठ बोलू तो मुझपर आसमान फट जाय ऐसे तेज लैम्प हैं कि दैया री !"

जनीको छोडकर सब लडकिया खिडकीसे झाक-झाककर देखने लगी. सचमुच ही ट्रेपिलके दरवाजेके पास एक कोचवान बहुत बढिया गाडी लिए खडा था. विक्टोरिया नई थी, रग चमचमा रहा था, और दोनो ओर दो बिजलीकी रोशनिया लगी थी उसके बडे और एकदम सफेद घोडों की जोडी कान उठाए सिर हिला-हिलाकर अपनी टापोसे धरती खुरच रही थी. ऊपरके बक्सपर मजबूत दढियल कोचवान पत्थरकी मूरतकी तरह घुटनोपर बांहें रखे सीधा तना बैठा था

नूरी चिल्लाई, "ए मियां कोचवान, जरा हमे भी बग्घीमे बिठा ले!" खिडकीसे और भी आगे झुककर वह चिल्लाई, "मै छोटी सी लडकी हूं, मुझे चढ़ा ले. तुझे मेरे प्यारकी कसम, एक बार मुझे सैर करा दे."

लेकिन रोबदार कोचवान तनिक हंस दिया और उंगलियोंमें थमी लगामको जरा इशारा दिया. घोडोंको क्या इसीका इन्तजार था कि पैर उठाकर वह दुलकी चालसे चल पड़े. गाड़ी देवताके रथकी तरह चुपचाप घूमती हुई अदृश्य हो गई. कोचवानकी पीठ भी अदृश्य हो गई.

"शि: ! क्या बत्तमीजी है !" एमा उडवानी अपने कमरेमेंसे क्रुद्ध स्वरमें बोली, "कहीं भली लड़कियोंको इस तरह अपनी खिडकियोंसे उचक-उचककर तमाम गली ताकते देखा है ? उह, क्या बेहूदापन है ! और मैं जानती हूं, सब नूरीकी करतूत है. जब देखो नूरी, उसीकी शरारत !"

काली पोशाकमें नवाबाना उसका अन्दाज था. पीला, स्थूल चेहरा आंखोंके नीचे लटकती मांसल थैलियां और तिहरी ठोडी. सब जनी स्कूली लड़कियोंकी तरह बाअदब कुर्सियोंपर झटपट बैठ गई. बस, अकेली जेनी खड़ी अपने आइनेमें देखती रही दो और ऐसी गाडियां सोफियाके स्थान पर आ खडी हुई. यामामें जीवन आ रहा था. आखिर एक और विक्टोरिया घडघड़ाहट करती हुई आती सुन पडी. उसकी घड़घड़ाहट यहां अन्ना मरकानीके द्वारपर आकर एकदम रुक गई.

देखा गया, दरबान साइमन बड़े हालमें किसीको गाड़ीमें उतार रहा है. जेनीने दरवाजा खोलकर उधर देखा, और फौरन मुडकर फिर उसी भांति चलने लगी उसका सिर हिला, गुनगुनाकर मन ही मन वह बोली, "जानती नहीं, कौन है ! कोई नया ही आदमी मालूम होता है. यहां तो पहले नहीं देखा होगा कोई पांच-दसका बाप, दो-चारका दादा. मुटापे, सुनहरी चश्मे, और कपड़ोंसे तो ऐसे लगते हैं कि कोई बुजुर्गवार ही हैं."

एमा उडवानीने ऐसे कहा, जैसे कमानको हुक्म दे रही हो, "लड़कियां हालमें चलो लड़कियों !"

एकपर एक मुसकाती इठलाती वे हालमें आ गई. तिमिराकी बांहें गर्दन खुली हैं. नकली मोतियोंकी माला पहने स्थूल किटी, मान्सल, चौकोर चेहरे और नन्हे माथेको लेकर रंगीन परोंकी पोशाकमें लाल फूल-सी खिल रही है. सबसे नई आई हुई नीना! खुशनुमा मखमली

गाशाधरे है उसके बाद फिर मनका, अर्थात बडी मनका फिर यहूदिन सोनका सोनका की बेहद उठी नाक और आखे आबदार बडी-बडी, और चितवन ऐसी मीठी, सविषाद, तरल अग्निमय, कि जैसी दुनियामे यहूदिनोमे ही मिलती है

७

एक प्रौढ वयके पुरुषने प्रवेश किया सरकारी दान विभागके कर्मचारीके कपडे पहने अनिश्चित कदमोसे दोनो हाथोकी हथेलियोको आपस मे मलते, मानो धोते हुएसे, वह महोदय जरा झुकी चालमे आए लडकिया सब सतर चुप खडा रही, जैसे मानो उन्हे इस व्यक्तिके आनेका पता भी न हुआ इसलिए वह सज्जन हालम सीधे चलते हुए आए और आकर लुबीकी कुर्सीकी बराबरकी कुर्सीपर बैठ गए लुबीने उच्च कुलीन कन्याकी भाति अदबसे, मानो अनजाने, अपने कपडोको तनिक समेट लिया

आगन्तुकने कहा, "आप मजेमे तो है, खुश है ?"

लुबी भी तुरन्त बोली, 'आप तो खुश है ?" फिर कहा, "शुक्रिया है आपका, ठीक हू.. मुझे एक सिगरेट दीजिए "

"माफ करे, मै पीता नही "

"अच्छा, पीते नही ! मर्द है, और सिगरेट नही पीते ? तो एक गिलास लेमन ही दिलवाइए मुझे लेमन बहुत अच्छा लगता है."

उसने चुपचाप यह सुन लिया और अनसुना कर दिया.

"उह, कैसे कन्जूस बाबू हो अच्छा, तुम कहा काम करते हो ? सरकारमे मुलाजिम हो ? कही क्लर्क हो ?"

"नही, मै एक अध्यापक हू, जर्मन भाषा सिखाता हू "

"लेकिन बाबू, मैने तुम्हे कही देखा है. तुम्हारा चेहरा पहचाना मालूम होता है. मैने पहले तुम्हें कहा देखा है !"

"हो सकता है...में नहीं जानता. सड़कपर कहीं देखा होगा."

"सड़कपर ही देखा होगा. या कहीं और देखा होगा ..कम-से-कम एक गिलास शन्तरेका शर्बत तो पिला ही दो. मैं एक गिलास शंतरा नहीं माग सकती ?"

वह इधर-उधर देखता हुआ फिर चुप हो गया. उसका चेहरा चमकने लगा. माथेपर दिपनी लालो-सी आ गई. आकांक्षा मुंहपर आ झलकी. वह मन ही मन इन औरतोंका जैसे तखमीना लगा रहा था. उनमेंसे वह अपने लिए एक छांट लेना चाहता था. पर उसे हिचक हो रही थी और वह चुप था. इसके अतिरिक्त लुवीकी ऊट-पटांग बात से उसे खिझलाहट हो रही थी. मोटी किटी उसके मन चढ़ रही थी. भरी, मुलायम, पकड़में भर आए, ऐसी उसकी देह थी. पर सोचा, मोटी औरतें रतिमें चपल नहीं होतीं, यह भी न होगी. और चेहरा भी सुन्दर नहीं है. वीरा भी उसके जीको भाती थी. सलोनी, नमकीन उसकी सूरत थी और कसी, भरी जांघे. और छोटी मनिया भी क्या बुरी है. उसने सोचा, ताजा स्कूली लड़की-सी दीखती है. फिर देखा, जेनी गजब है, कैसी सोहनी लग रही है. उसके बदनमें जोबन है. क्षण-इक वह जेनीके पक्षमें निश्चय करनेको उद्यत हो गया. पर अपनी कुर्सीमें उठा-सा, और फिर वहीं बैठ गया. उसे साहस नहीं होता था. और जेनी सचमुच इस आदमीकी ओर जरा भी प्रवृत्त न दीखती थी. वह यों उद्यत प्रतीत होती थी. लापरवाह, मौजीली, और दुर्लभ...उस आदमीने समझ लिया कि इस घरमें इस लड़कीके नखरे सबसे बढ़-चढ़ कर हैं. और जान पड़ता है यह लोगोंसे अपने ऊपर खर्च भी सबसे अधिक कराती है. किन्तु दान-विभागका यह कर्मचारी समझदार आदमी था. उसका बड़ा फैला कुनबा था और क्षीण रुग्ण स्त्री. इसीके बलात्कार और विषयाधिक्यके अत्याचारसे वह बेचारी तरह-तरहके स्त्री-रोगों से आक्रान्त और दुर्बल थी. एक कन्या विद्यालय और अन्य महिला संस्थाओंमें पढ़ाते रहनेके कारण इस आदमीके भीतर सदा एक प्रकारका प्रच्छन्न वैषयिक लिप्साका बुखार-सा रहता था. पर, अमंन था, और

कायर. इससे सदा अपनी इच्छाओंको कसकर रोके रखता था इच्छाए इस भांति संचित होती रहती. जहा तहासे खुरच-खुरचाकर अपने बजटमें से बचा खुचाकर यह आदमी कुछ पैसा जमा कर पाता, और सालमें दो तीन बार छुट्टी निकालकर चकलेमे आ पहुचता था किसी औरतपर खर्च करनेके इरादेमे ही वह यह पैसा जोडता था और तमाम समय इसी की बात सोचता रहता था वह उसे मजा ले-लेकर, हाथमें से एक-एक कौडी छोडकर खर्च करना चाहता था वह उस मजेको कमसे कम खर्चीला और अधिकसे अधिक दीर्घ-कालिक और चटपटा बनाना चाहता था साथ ही बीमारीकी छूतका डर भी उसे भीतर कम नही काटता था अपने पैसेकी वह जितनी हो सके कीमत वसूल करना चाहता था. उसके भावुक चित्तकी साध थी कि उसे कही अछूती कुमारी मिल जाय जो कविता-सी प्यारी हो, लजीली, हास्यमयी, कटीली और प्रगल्भ ! और वह सपने लेता था कि जैसे उसके प्रेमालिंगनमे स्त्री एकदम आल्हाद म मद मस्त हो गई है, हाफ रही है और आनन्दकी अतिशयताकी मूर्च्छना म घली बिखरी-सी जा रही है

लेकिन सब आदमी यह चाहते है गन्दे, घिनौने, अंगहीन, अपाहिज, नपुंसक सभी इस उन्मत लास्यके स्वप्न देखते है और अनुभव द्वारा इन कामिनियोने भी सीख रखा है कि उल्लग लीलाए, मत्त चेष्टाए और सीत्कार आदि करके मर्दोको कैसे वैसा ही विलासका स्वाद और आभास दिया जा सकता है

लुबीने बडबडाकर कहा, "कमसे कम बाजेवालोको एक झुमका नाच ही बजानेको कह दो, चलो जरा नाच हो जाए"

यह बात उस आदमीको पसन्द पडी, गानेके बहाने जब लोग आपस-में सट-भिडकर नाच रहे होंगे तब काम आसान हो जायगा. इस नीरव स्थिर वातावरणमें नही तो उसे सहज हिम्मत नही होती. नाचके बीच-में उसे आप ही आप जोश आ जायगा और किसी एकको छाटकर आगे बढ़नेमें उसे कठिनाई नही होगी. पूछा, "पैसे कितने लगेंगे ?"

"घुंघरूवाले नाचमें एक अठन्नी, सादेमें इसका भी आधा....तो

ठीक रहा ?"

"अच्छा, सही. तुम्हारी मर्जी सही. मैं पैसेकी परवाह नहीं करता." अपनेको उदार अनुभव करते हुए उसने कहा, "किससे कहना होगा ?"

"क्यों, वहां जो दो साजवाले बैठे हैं, उनसे कह दो."

"क्यों नहीं. बड़ी खुशीके साथ..."

उसने चांदीकी चवन्नी बाजेपर रखकर कहा, "हां, उस्तादजी तो कुछ सादा नाच शुरू होने दीजिए."

इसिया साविशने पैसा जेबमें रखकर कहा, "क्या फरमाइश है!... क्या हो ? वाल्ट्ज, पोलका या मुजरका !"

"हां, हां, कुछ भी सही..."

नाचकी शौकीन वीरा अपनी जगहसे चिल्लाई, "वाल्ट्ज वाल्ट्ज !"

"नहीं, पोलका...वाल्ट्ज... नहीं, मुजरका...वाल्ट्ज ?" औरोंने भी चिल्लाकर कहा.

लुबीने बीचमें रोककर कहा, "एक पोलका होने दो. इसिया साविश, कृपया जरा पोलका होने दीजिए...यह मेरे बाबू हैं, और मेरे लिए करा रहे हैं." और उस आदमीके गलेमें बाहें डालकर कहा, "क्यों बाबू... ठीक है न ?"

किन्तु उसने कछुएकी तरह गर्दन समेटकर अपनेको छुड़ा लिया. लुबीने बुरा नहीं माना. वह नूरीके साथ नाचने लग गई. तीन और युगल घूम घूमकर नाच रहे थे. नाचमें सब लड़कियां अपनी कमर सीधी रखती हैं, और चेहरा स्थिर, जैसे उन्हें इस नाचमें किसी तरहका कोई गहरा रस नहीं है. मानो वे भी सब भद्र सोसाइटी महिलाओंकी तरह रस विमोद भावसे नाच रही हैं. इस शोर शराबेके बीचमें चुप-चाप उठकर अध्यापक महोदय छोटी मनकाके पास पहुंचे, और अपनी बांहें पेश करके कहा, "चलो."

वह उसे अपने कमरेमें ले गई. कमरा वैसे ही सस्ते ढंगपर सजा था जैसे ऐसे चकलोंके और कमरे. एक पलंग, एक मेज, उसपर मेज-

पोश. मेजपर एक आइना, एक गुलदस्ता, कुछ खाली तश्तरी, एक पाउडर बक्स, दो एक फोटो, कुछ मुलाकाती कार्ड, ये चीजे और रखी थीं. पलंगके ऊपर दीवारसे चिपटी एक बडी सी तस्वीर टंगी थी जिसमे एक सुल्तान मुंहमे गुड़गुड़ी लगाए, अपने हरममें हूरोंसे घिरे आराम कर रहे थे. कुछ और सस्ते लोगोंकी फोटो भी थीं. छतसे जंजीरसे गुलाबी शेडसे ढका लेम्प लटका हुआ था. एक छोटी मेज और थी और तीन कुर्सिया. पीछे स्टूलपर एक सुराही और गिलास रखा था.

छोटी मनकाने अपनी जाकटके बटन खोलते-खोलते अपनी सदाकी नीतिके अनुसार कहा, "मेरे प्यारे, एक गिलास लेमन मंगवाओ."

अध्यापकने कठिन मुद्रामे कहा, "पीछेसे, अभी नहीं. और सब बात तुम्हारे ऊपर है. यहां लेमन मिलता किस कामका होगा. यही खारी हल्का मिलता होगा."

लड़कीने उत्सुकतासे प्रत्युत्तर दिया, "और यहां शराब है, बहुत अच्छी. सब चीज अच्छी मिलती है. फी बोतल दो रुपया. पर तुम अगर इतने ही कन्जस हो, तो लो मुझे बीयर ही मंगा दो...क्यों ठीक है ?"

"अच्छा... बीयर सही."

"और मेरे लिए लेमनेड और शन्तरेका गिलास भी. ठीक है न ?"

"हां, लेमनकी बोतल सही, पर शन्तरा नहीं. पीछे हो तो हो सकता है. पीछे मैं तुम्हें शेम्पेन भी मंगा दे सकता हूं. पर, सब बात तुमपर है. अगर तुमने खूब जीसे...समझीं न...याने हमे खुश किया...."

"तो बाबू, मे चार बोतल बीयर और दो बोतल लेमनका आर्डर दे दूं. क्यों ? और एक चाकलेटका पेकेट भी अपने लिए. ठीक है न ? क्यों ?"

"दो बोतल बीयर, एक बोतल लेमन, और कुछ नहीं. मुझे पसन्द नहीं है कि मुझसे सौदा किया जाय."

"और मे अपनी एक सहेलीको भी बुला लूं ?"

"नहीं, रहने दो."

मनकाने दरवाजेमेंसे झांका और पुकारकर कहा, "अजी, बाई जी, दो बोतल बीयर, और एक बोतल लेमन मेरे लिए."

एक ट्रेमें रखकर साइमन यह सब सामान लाया और अपने अभ्यस्त हाथोंसे बोतलोंको खोलने लगा. पीछे-पीछे रक्षिका जकिया आई अभिवादन करती हुई बोली, "बहुत ठीक है. अपने घरकी तरह बिल्कुल बे-तकल्लुफ रहिए. आप ही की चीज है. और मैं आप लोगोंकी, जी हां, सोहाग घडी के लिए बधाई देती हूं."

मनकाने निवेदन किया, "बाबू, इन हमारी बाईजीको शामिल होने-के लिए नही कहेंगे ?.. रक्षिकाजी, आइए मदद कीजिए."

"अच्छा, जनाब, आपके स्वास्थ्यके नामपर लीजिए मैं भी एक घूंट लेती हू.—पर कुछ कुछ आपका चेहरा मुझे पहचाना मालूम होता है."

जर्मनने भी अपनी शराब पी. वह चुस्कीमे स्वाद लेता हुआ पीता था और मूछोंको जीभ फेर-फेरकर चाटता था. वह सोचता था, कब यह औरत यहांसे टले. पर उसने अपना गिलास नीचे रखकर धन्यवाद दिया और बोली, "क्या हजूर दाम अभी अदा कर दीजिएगा और इस शराबकी कीमत...और देर कितनी रहिएगा ? –वह भी अदा कर दीजिए. पहले दे देनेमें आपको भी सहूलत है, हमें भी आराम है."

पैसेकी बात इस अध्यापकको भली नही लगी. इससे उसकी इच्छा-ओंका रंगीन भावुक आवरण उड-सा जाता था और वह अपनी नग्नतामे आ सामने होती थी. वह नाराज हुआ

"यह क्या दहकानीपन है. मै यहासे भागा नही जा रहा हूं और तुम्हे आदमी आदमीमे फर्क करना आना चाहिए. तुम देखती हो, एक इज्जतदार आदमी तुम्हारे यहां आया है—यों ही, भागा-गिरा कोई राहगीर नहीं है...यह क्या बदतहजीबी है."

रक्षिका जरा धीमी हुई, बोली, "जनाब, नाराज न हूजिए. आप इस बीबीको तो मुलाकातपर जो देंगे देंगे ही. मै नही समझती आप इस लड़कीके साथ कुछ उल्टा सीधा कीजिएगा. ओह, यह हमारी सब

लड़कियोंमेंसे उम्दा चीज है. लेकिन मैं आपको बीयर और लेमनेडकी कीमत देनेकी तकलीफ दूंगी. मुझे भी मालकिनको हिसाब देना है. दो बोतलके एक रुपया, लेमनकी चवन्नी, चवन्नी एक रुपया."

'या परमात्मा, एक बोतलके आठ आने !" जर्मन गुस्सा होने लगा "क्यों, रुपयकी पांच बोतलें कहींसे मैं दिला सकता हूं."

"तो जहां सस्ता काम हो, आप वहां जा सकते हैं." जकिया भी बिगड़ी. "लेकिन अगर आप भली इज्जतदार जगह आए हैं, तो यहां का बंधा दाम यही आधा रुपया है. हम ज्यादा नहीं लेते... हां, यह ठीक है. तो क्या चार आने आपको लौटाऊ ?"

जर्मन अध्यापकने जोर देकर कहा, "जी हां, चार आने ! जरूर ! और मैं अब आपसे चाहूंगा कि यहां कोई न आए."

"जी नहीं, आप कहते क्या हैं ?" जकिया दरवाजेके पास जानेकी शीघ्रता करती हुई बोली, "आपकी जगह है, जी भर रहिए...अच्छा, आप खुश रहें."

मनकाने उसके पीछे दरवाजेकी चटखनी लगा दी. और अपनी नंगी बाहोंमे जर्मनको आलिंगन करती हुई गोदमें बैठ गई.

"तुम यहां बहुत दिनोंसे हो ?" अपना प्याला मुसकते हुए जर्मनने पूछा.

उसके मनमें अस्पष्ट अनुभव हुआ कि जो अवास्तव प्रेमका व्यापार अब होने जा रहा है, उसके लिए भी हृदयोंके अधिक सान्निध्यकी, कुछ गहरे परिचयकी, और अधिक घनिष्टताकी आवश्यकता है. इस कारण अपनी अधीरताको दाबकर वह बातें करने लगा. सभी मनुष्य जब अकेले कामिनीके पास होते हैं तब इसी तरहकी बातें छेड़कर आरम्भ करते हैं. और नारी भी लाचार होती है कि अनायास, निरानन्द, बिना खेद बिना उत्साह, और बिना छलके भावके, आप ही आप अपने अभ्यस्त नपे तुले जवाब देती चली जाए.

बोली, "बहुत दिन हुए. तीसरा महीना है."

"तुम्हारी उमर कितनी है ?"

मनकाने अपनी उमरके पांच बरसोंको उड़ाकर कहा, "सोलह !"

"ओह, इतनी कम—उम्र हो ?" जर्मन अचरज करने लगा. नीचे झुककर बूटके तस्मे खोलने उसने आरम्भ किए. "तो यहां तुम कैसे आईं ?"

"एक अफसर था. अपने घरके पास ही.. उसने. उसने मुझे खराब किया. और मेरी मां ऐसे मामलोंमें बड़ी सख्त थी. उनको पता लगता तो अपने हाथों मेरी जान ले लेती. सो मैं घरसे भाग आई, और यहां आ गई. "

"और तुम उस अफसरको प्रेम करती थी ? यानी वह—सबसे पहले पहल...समझी ?"

"प्रेम न करती तो उसके पास कैसे जाती ? उसने मुझे विवाहका वचन दिया था. लुच्चा कहींका ! और जब वह मेरा सब कुछ ले चुका तो छोड़कर चल दिया."

"अच्छा. तो पहली बार तुम शरमाई थीं ?"

"हां क्यों नहीं ! शरम तो आती ही है ..अच्छा बाबू, कैसे चाहते हो ? रोशनीमें, या अन्धेरेमें, या लालटेन जरा कम कर दूं. ठीक है?"

"अच्छा, तुम यहांसे उकताती नहीं हो ? तुम्हारा नाम क्या है ?"

"मनिया. हां, जरूर उकताती हूं. जिन्दगी ही यह क्या है ?"

जर्मनने जोरसे उसके ओठोंको चूसा. और पूछा, "और तुम मर्दों को प्रेम करती हो ? कोई है, जिनसे तुम खुश होती हो ? जिनसे तुम्हें सुख होता है ?"

"क्यों नहीं होंगे." मनका हंस पड़ी. "तुम्हारे जैसे मुझे खास पसन्द हैं, जो अच्छे, भरे डौलडौलके होते हैं.

"तुम उन्हें प्रेम करती हो ? अच्छा, क्यों करती हो ?"

"क्यों ? यों ही करती हूं. तुम भी मुझे बड़े अच्छे लगते हो."

जर्मन कुछ सैकण्ड सोचता रहा. उठाकर अपने प्यालेपर से सुसकी भी भर लेता था. तब उसने वह कहा जो हर कोई ऐसे समय कहता है. उसकी देहको अपने अधिकारमें नीचे पानेके क्षणोंमें, इन अत्यन्त पके

हुए क्षणोंमें, हरेक ऐसा ही कहता है. "जानती हो मनका, तुम्हें मैं बहुत चाहता हूं, बहुत ही. मै तुम्हें ले जाऊंगा, घरमें रानी बनाकर रखूंगा"

लड़कीने उसकी अंगूठीवाली उंगलीको हाथमें लेकर अंगूठीको फेरते हुए कहा, "तुम ब्याहे हो ?"

"हां, पर स्त्रीके साथ रहता नही हूं. वह बीमार है, और वह काम नहीं दे सकती."

बेचारी मनियाने अनायास कहा, "उसे पता हो कि तुम यहां आते हो, तो क्यों जी, वह कितनी रोए ?"

"उंह, छोड़ो ! मनिया, मनिया, तुम जानती हो मे हमेशा ऐसी लड़कीकी खोजमें मरता हूं जो तुम-सी सुन्दर हो, तुम-सी लजीली. मैं खाता-पीता आदमी हूं. मैं तुम्हारे लिए जगह ले लूंगा, तुम्हारा सब इन्तजाम कर दूंगा. और ऊपर जेब खर्चके लिए छियालीस रुपए महीना दूंगा. तुम चलोगी ?"

"चलूंगी क्यों नहीं, चलूंगी."

उन्मत्त हो, वह उसे चुम्बन करने लगा. किंतु उसके कायर हृदयमें एक गुप्त आशंका भी पीड़ा दे उठी. उसने कांपती पराई-सी आवाजमें पूछा "मनिया, तुम नीरोग तो हो न ?"

"क्यों ? हां, मैं निरोग हूं. हर शनिवारको यहां डाक्टर मुआयना करने आता है."

पांच मिनट बाद वह उससे हटकर अलग चली गई. उसके बाद उनमें चलकर साथ रहनेकी या परस्पर प्रेमकी बातचीत नहीं हुई. जर्मन मनकाके ठंडी बनी रहनेपर असन्तुष्ट था. उसने रक्षिकाको बुलवाया. मनियाने ड्राईंग रूममें पहुंचकर आइनेमे देखकर अपने बाल संवारते हुए कहा, "रक्षिका जी, बाबू तुम्हें बुलाते हैं."

जकिया चली गई. लौटी तो उसने पाशाको बुलाया. अलहदा ले आकर पाशाके कानमें कुछ कहा. फिर जब लौटी, तब पाशा उसके साथ न थी. उसने हंसकर पूछा, "क्या बात है, मनका, तुम अपने बाबूको खुश

नहीं कर सकीं ? वह तुम्हारी शिकायत करता था. कहता था, वह भी कोई औरत है. जैसे लकडीकी औरत हो, जैसे बरफकी सिल ! मैंने उसके पास पाशाको भेजा है."

मनकाने मुंह बनाया और थूककर कहा, 'क्या मनहूस आदमी है. बात ही करता जाता है. पूछता है, मै चूमता हूं तो तुम्हे कैसा लगता है ? अच्छा लगता है ?...कुत्ता कहींका ! कहता है, मे तुम्हे ले जाऊगा और घरमे रखूंगा,"

जकियाने साधारण भावसे कहा, "सब ऐसा ही कहते है."

किन्तु जेनी जो सवेरेसे ही बिगड रही थी, एकदम भभक उठी लाल होकर दोनो तरफसे अपने कटि प्रदेशको हाथोसे जोरसे पकडकर उसने चिल्लाकर कहा, "ओह, लफगा ! कमीना ! चोर कहीका मै उस बुड्ढे, मनहूस जानवरको जिदा पाऊतो कान पकड कर आइनेके पास ले जाकर खडा करू और कहू, देख अपनी थूथडी, कैसी खूबसूरत है ! खूबसूरत नही है ? तो तब और खूबसूरत लगेगी जब मुहमे लार बहेगी, आखे फट रही होगी, गला घुट रहा होगा, और स्त्रीके सामने तू लबलबा रहा होगा. और तू चाहता है तेरे मने हुए चादीके टुकडेके सामने हम बताशे सी घुल जाए, तेरे लिए पके पानकी चरमर करके टूटे, तेरा प्रेम पानेके लिए हमारी आखे खुमारसे माथेपर चढने लगे ! मै कहती हूं कि उसकी थूथडीमे मै ऐसे जमाऊ, ऐसे जमाऊ कि खून आने लगे."

"ओ, जेनी ! शि, बन्द करो !" एमा उडवानीने उसकी बातमे लज्जित, भीत, होकर उसे रोकते हुए कहा.

जेनीने कटकर कहा, "मै नही बन्द करती !"

लेकिन वह आप ही आप चुप हो गई और अपने फैले नथने और सुन्दर काली आंखोमे प्रज्वलित अग्नि लेकर क्रुद्ध तेज कदम पटकती हुई वहांसे चली गई.

८

शनै शनै ड्राइगरूम भर गया यामाके पुरान परिचित मिया गबदू भी आ पहुचे. दुबले, लम्ब, मुकड़े, बुड्ढे आदमी है, नाक लाल. शिकारीका लिबास पहने थे, और ऊचे बूट जबसे एक छडी मी भाक रही थी. दिनके दिन, और रातके रात, यह आदमी किमी सराय या दारु खानेम काट देता था. वहा चुटकुले छेडता, कहानिया कहता, और हाव-भाव जताकर लोगोका मन रिझाता. वह सदा दारुके नशेमे बे-हाल-सा रहता यहा नौकरोस, मालिकोसे, लडकियोम सबसे उसका रब्त-जब्त था मालकिनस लगाकर नौकरानी तक यहा सब उमे उपेक्षा, दया और तिरस्कारके भावस देखती पर उसके लिए किसीके मनमे मैल न था कभी-कभी उसमे उनका कुछ काम भी सध जाता प्रमियोकी चिट्ठिया प्रेमिकाओके पास पहुचानेमे वह अच्छ काम आता था बाजा-रसे भट कोई चीज मगानी हो तो वह था अपनी कतरनी-मी जुबानके और आत्म-मम्मानके अभावके कारण किसी न किसी प्रकार वह अपरि-चितोके जमावम भी अवसर जा पहुचता और उन लोगोसे अपने ऊपर कुछ खच तक करा लेता था इम तरह मिले पैसेको वह इधर-उधर कही न ले जाता, मब इन लडकियो पर ही खर्च करता था कभी बचाके कुछ पैसेकी अपने लिए बीडी ले ली तो ले ली इस तरह सब उसके आदी हो गय थ, और थोडी बहुत अपनी तबियत उसस बहला ही लिया करते थ

मिया गबदू आए, बड तपाकस साइमनसे हाथ मिलाया, और ड्राइग-रूमके दरवाजेपर आकर रुक गए टापी सिरके एक ओर रखी थी, और आप लम्ब-लम्बे अजीब जचते थे नूरीने देखते ही कहा, "लो, मिया गबदू आ गय कहिए मियाजी बस कह डालिए"

गबदूने फौरन विचित्र आकृतिया बनानी शुरू की, और सेनानी ढग से सलाम करके कहा, "ई जनाबसे आपको वाकिफ होना चाहिए. वह

ऐसी बाइज्जत जगहोंके पुराने मेहमान और दोस्त हैं. नाम? नाम है, जनाब इकबाल बहादुर, नवाब बे-मुल्क, रईसे आजम बे-परगना—अजी मियां तानसेन, और उस्ताद भण्डेखां." गायकोंकी ओर मुड़कर उसने कहा, "जरा हमें सूइयों वाली और वह सावनकी बहारवाली चीज सुन वाइएगा. और, मोहतरिमा बी जकिया साहिबाको सलाम. ओहो, तो इन दिनों बोसोंकी मुमानियत है. अच्छी बात है, नोट कर रक्खूंगा. और ओह, किशमिशी मेरी छनन मनन गुड़िया . !"

और इस तरह किसीको छेड़ता, किसीसे मजाक करता, वह लड़कियोंमें घूमता हुआ आखिरकार मोटी किटीके बराबर आ बैठा. किटीने अपनी एक टांग उसकी टांगपर रख ली, घुटनोंपर कोहनियां टिकाईं, और हथलीपर मुंह रक्खे, मियां गबदूको देखने लगी, जो अपने लिए एक चुरट बनानेमें लगे थे.

"क्या बात है, मियां गबदू, तुम इससे कभी थकते ही नहीं. हमेशा ऐसे ही घुमा घुमाकर चुरट बनाते रहते हो."

गबदू मियां ने फौरन भौं और सिरकी गंजी चमड़ीको मिकोड़ा और नज्ममें कहना शुरू किया :

मेरी सिगरेट प्यारी,
मेरे अकेले की साथन,
क्यों न मैं तुझे प्यार करूं
यों ही नहीं,
किस्मतके हुक्मसे,
सब तुझे मुंह लगाते हैं.

किटीने निश्चिंततासे कहा, "पर, गबदू, तुम तो जल्दी ही बोल जाओगे."

"तो उसमें ऐसी क्या बात है, बीबी."

बरकाने कहा, "गबदू, कोई और मजेदार नजम सुनाओ."

आज्ञानुसार तुरन्त अपना हुलिया अजीब बदलकर उसने गाना शुरू किया :

इस उजले आसमानमें तारे बहुत हैं,
उन्हें गिननेका कोई रास्ता नहीं,
पर हवा धीमेसे. कानमें कहती है, है.
लेकिन सच कोई रास्ता नही.
फूल फूल रहे हैं, तो ऐ मुर्गों,
तुम भी क्यों नहीं गाते ?

"इससे भी एक प्यारी चीज और पेश करता हूं. मुलाहजा हो" ...और सकम्प ध्वनिसे उसने गाना शुरू किया :

वह अफसर चला आ रहा है,
पीछे पीछे जा रही है
लडकी,
चाहती है,
कहीं, जरा वह ठहर जाए,
वह उसे रिझाये,
और उसकी दुलहिन बन जाय,
पर लो अफसर जो सुनता भी हो.
उसने तो घोड़े को एड़ लगाई,
मूछें मरोड लीं,
और घोड़े पर फुदकता,
वह भाग ही चला.

इस तरहकी गधापचीसीमें वह रातो-रात इन कमरोंमें काट देता है. एक विलक्षण मानसिक साहचर्य, सहधर्मित्व और जातीय अनुकूलता सी इनमें पैदा हो गई है. लड़कियां जैसे इस आदमीको अपनेमें का ही एक समझती हैं. इसका कभी-कभी छोटा-मोटा काम चला देती हैं, कभी अपने पैसेसे इसे दारु-वारु भी खरीद दिया करती हैं.

गबदूके कुछ देर बाद, नाइयोंकी एक टोली आई. उन्हें आज काम से छुट्टी थी. आते ही वे हल्ला मचाने और तरह-तरहकी खुशियां मनाने लगे. लेकिन यहां चकलेमें आकर भी वह अपनी दुकानकी, छोटे

मोटे हिसाब-किताबकी और अपने मालिकोंकी बीबियोंकी बातें करनेमे न चूके. ये लोग काफी हदतक बिगड चुके थे. झूठ ये बोलते थे, और भावी जीवनके लिए विलक्षण सूझे इन्हें सूझा करती थीं. विचित्र मसूबें यह बांधा करते. मसलन सोचते कि कहीं किसी सेटके यहां टिप्पस लग जाय. फिर सेठानीको गुपचुप फंसाया और बस मौज ही मौज. वे अपने पसीनेकी कमाईके पैसेको अधिकसे अधिक लाभ पूर्वक खर्च करना चाहते थे. इसलिए उन्होंने यामाके चकलेसे एकाएक जान पहचान करनेका निश्चय किया. हां, ट्रेपिल वालेमे जानेका साहस उनमें न हुआ. वह जगह ऊंची थी. पर यहां अन्ना मरकानीके यहां आकर इन्हे किसी तरह हिचकिचाहट नही हुई. आते ही नाच गानके साजके लिए फर्मायशकी और नाचमे जी खोलकर हिस्सा लिया. पर इसमे आगे बढ़कर लड़कियोंके बारेमे मोल-तोल उन्होंने नही किया. कहा :

"और जगह भी देख-दाख लें. फिर हम अभी लौटकर आ रहे हैं."

और भी सरकारी मुलाजिम यहा बहुतेरे आते गए. चमकते बूट पहने, और जेबमे से झांकता हुआ रंगीन रूमाल लिए बहुतसे स्कूल कालेजके नए लडके आए, और कई इज्जतदार अफसर व दूसरे लोग भी आए. ये यहांकी मालकिन और मेहमानोंके सामने पड़कर अपनी इज्जत जानेके ख्यालसे बडे झिझकतेसे और दहशत मन्द रहतेथे. धीरे-धीरे ड्राइगरूममें ऐसा कोलाहल मचा और वातावरण मदमत्त हो उठा कि जितने भी थे सबके मनकी हिचक हवा हो गई और वे गरमाने लगे.

एक सोनाका प्रेमी आया करता था. वह बराबर नियमसे आता. आकर अपनी प्रेमिकाके पास बैठ जाता और घण्टों रसभरी, अधमुदी-सी आंखोंसे उसे देखता रहता था. कभी वह आह भरता, कभी निढार हो रहता. अक्सर उन दोनोंमें कलह भी हो जाती. वह कहता—

"तू क्यों यहां चकलेमें रहती है ? क्यों इन परबके दिनोमे सोधका भोजन नहीं करती ? क्यों अपने धरम और अपने कुटुम्बसे बिछुड़ कर यहां आ गई है ?"

ऐसे समय अधिकतर संरक्षिका जकिया इस शोर शराबेमें उसके

पास पहुंचकर ओठ समेटकर कहती —

"क्यो बाबू, यहा क्यो बैठे हो ? बैठे पीट सेक रहे हो ? जाओ, उस लेकर जरा वक्त ही काट आओ"

ये दोनों यहूदी थे. साथ ही दोनो एक जिलेके रहनेवाले जान पडते थे. परमात्माने इन दोनोंको मानो इसीलिए बनाया था. वे एक दूसरेको उत्कट, हार्दिक, गहरा प्रेम करनेके लिए मानो लाचार थे. लेकिन नौकरी, धन हीनता, मनका सकोच, भय आदि बहुत-सी चीजोने बीचमे आकर इन दोनोको पृथक भी कर दिया. पर प्रेम प्रम है विपदाओं, कठिनाइयो और विविध लाञ्छनाओको पार करके जैसे तैसे इस आदमी न्यादरने अपनी प्रेमिकाको ढूढ ही निकाला और वह आकर यही एक स्थानीय दवाखानेम छोटा-मोटा क्लर्क बन गया वह सच्चा, कट्टर, लगभग धर्मान्ध यहूदी था. वह जानता था कि सोनाको स्वय उसकी माने बुरदा फरोशोके हाथ बेचा है फिर उसके इस हाथमे उस हाथ बार-बार बेचे और खरीदे जानेकी भी बहुत-सी दर्द और हैरतनाक बाते उसे मालूम थी. उसकी सच्ची यहूदियाना पवित्र पाप-भीरु आत्मा इन विचारोकी यादमे काप जाती थी. पर प्रेम महान् है. वह प्रेम सब कुछ जीत लेता और हर सन्ध्या यह आदमी अन्ना मरकानीके ड्राइग रूममे आ उपस्थित होता. वह अपने थोडसे वेतनम से पेट काटकर एक-आध भी रुपया बचा पाता कि सोनाके कमरेमे आ पहुचता. पर मिलकर सुख न सोनाको मिलता था, न उसको पर एक दूसरेकी देहोको पास पाते तो उनसे रुका किसी भाति न जाता. पर दैहिक विषय सभोगकी क्षणिक तृप्तिके बाद वे दोनो रोते, एक दूसरेको कोसते और खूब कलह करते इन मुलाकातोके बाद जब सोना ड्राइग रूमम लौटती, उसकी आखे फूली होती और पलक लाल. किन्तु बेचारे न्यादरके पास पैसा कभी कभी ही हो पाता था. इससे अधिकतर शामको अपनी प्रेमिकाके पास आकर घण्टोके घण्टे वह खाली उसे देखता बैठा रहता था.—मानो चुपचाप जलते जीसे इसीकी प्रतीक्षामे बैठा रहता हो कि कब कोई मुलाकाती आए और सौदा पटाकर उसकी सोनाको साथ ले जाए ! और इस तरह

जब वह किसीसे निबट-निबटाकर फिर उसके पास आकर बैठती तब सबके अनजानमे वह उसे खूब खरी खोटी सुनाता. सोनाकी ओर बिना सीधा मुंह फेरे धीमे-धीमे सब कहनी-अनकहनी वह ऐसे कहता था कि लोगों का ध्यान उधर न हो. और इस बातचीतके समय सोनाकी बड़ी-बड़ी प्यारी सुन्दर आंखोंमें मानो चितामें जलती हुई एक सतीके जैसा अत्यन्त विनीत तरल भाव आ रहता था.

एक चश्मेकी दुकानमें काम करनेवाले जरमनोंकी बडी-सी टोली आई. एक खाद्य पदार्थके स्टोरके कई क्लर्क भी आए और यामाके सुपरिचित दो और गाहक. इन दोनोंके सिरकी खाल चिकनी थी और कनपटियोंके दोनों ओर छोटे-छोट चिकने मुलायम बाल थे. यहांके सब लोग एकको नन्ने कहते दूसरेको मिर्जा. उनका भी वहां उसी तरह स्वागत अभिनन्दन हुआ. चश्मेकी दुकानवाले कालू और स्टोरवाले बदलू का भी प्रफुल्लतापूर्वक चुम्बन और चिल्लाहटके साथ स्वागत हुआ इस स्वागतसे मन ही मन उन्होने अपनेको गौरवशाली अनुभव किया. चपल नूरी झटपट पता लगाकर कि कौन-कौन आए हैं, अपनी आदतके अनुसार चहकती फिरी.

"तुम्हारा बाबू आया है, जेनी." अथवा, "अरी ओ मनका, देख, इधर तेरा कौन खड़ा है !"

मिर्जाने अपनेको गायक प्रसिद्ध किये हुए था. वह गायक क्या था, गायककी जूठन भी न था. एक परचूनिएकी दुकानपर बैठता था. यही मिर्जा आया, और प्रसिद्ध कविकी कवितापर अत्याचार करता हुआ एकदम गाने लगा.

"—मेरी प्रिया, आ, आ, आ जा, आ जा."

वह जब आता, इसी कर्ण-कटु आवाजसे यही गीत लादता हुआ आता था.

फिर लगातार नाच गाना होने लगा, तिमिराका प्रेमी सेनका भी आ पहुंचा. लेकिन सदाकी भांति न वह शान थी, न वह अदा. न खूब खाने खिलानेकी तैयारी उसने प्रदर्शित की, न कुछ और ही किया...

जाने क्यो वह उदास था. दाहने पैरसे कुछ लड़खडाकर ठिठककर चलता था और चाहता था कि लोगोंका अधिक ध्यान उसकी ओर न हो शायद आजकल उसके कामधामके दिन भले न थे. चलते-चलते सिरसे तनिक सकेत उसने किया, तिमिरा झट ड्राइग रूमेसे बाहर आ गई, और वे दोनो उसके कमरेमे गायब हो गए. मजीतलाल भी आया. वह एक्टर-की तरह साफ, सुथरा, लम्बा, डाढी मूछ सफा, अपने चिकने-चेहरे और चढी हुई आन-बानके कारण हल्का और ओछा जचता था, जैसे मुसा-हिब.

स्टोरके क्लर्क युवकोचित स्फूर्तिके साथ, और पुस्तकमेंसे सीखी हुई, नियमानुकूलताके साथ, नाच रहे थे. यह देखकर लडकियोने भी उसीके अनुकूल किया नाचमे बहुत कम हिलने-जुलने और सिरको सीधा बस जरा एक ओरको झुका रखकर, एक प्रकारके अलस, व्यथित, थकित भावसे छोटे-छोटे कदम रखकर नाचनेको शिष्ट और कुलीनताका चिन्ह समझा जाता है. बीच-बीचमे अभ्यस्त और लापरवाह ढगमे कभी-कभी नाचते-नाचते रूमालसे जरा हवा कर लेना भी जरूरी होता था...सो यह सब मानो इसी तरह बहकाकर अपने मनको समझा लेना चाहते थे कि वे भी ऊचे, कुलीन सोसायटीके लोग है, और जरा यूं ही मन बह-लाव और शिष्टताके नाते यहा कुछ नाच ले रहे है. पर फिर भी वह ऐसी लगनसे नाच रहे थे कि उनके चेहरेसे पसीनेकी धारे छूट आई थी.

चकलोसे भरी इस यामाकी गलियोमे अबतक चार छ टण्टे-बखेडे घट भी चुके थे. कोई आदमी लहू लुहान सडकमेसे भागता जाता दीखता चादकी पीली रोशनीमे लहूसे सना वह काला भूत-सा जान पडता था. उसे अपनी चोटकी चिता न होती, वह गर्माया होता और बडबडाता हुआ अपनी टोपी वापिस लेने पहुचता जो झमेलेमे कही गिर गई होती उसी तरह छोटे यामामें कही जहाजके मल्लाहोमे ही छिड बनी, तो कहीं मजदूर ही झगड पडे. और इधर थके हारे बाजेवाले ऊंघते हुए आदतके भरोसे उंगलियां चला चलाकर उन्मादीसे कुछ बजाते रहते थे.

रात ढलते तक बस यह हाल रहता था.

तभी सहसा सात कालिजके लड़के आए, साथ एक नए प्राफेसर थे और एक पत्रकार.

६

एक सम्वाददाताको छोड कर वे सब सवेरेसे बसतोत्सव मना रहे थे. कुछ परिचित बालिकाएं भी उनके साथ थी. वे साथ-साथ दिन भर नहाया किये. तैरे, किश्तीमें सैर की, नदी-तटपर झाडियोके झुण्डोके बीचमे खीर पका कर खाई, अपने हाथों बनी हल्की शराब पी, और गीत गाए. इस तरह कही सांझ होते बस्तीको लौटे. उनकी नावके दोनों पार्श्वोंमें नदीका काला पानी लहराता हुआ आ-आकर लग रहा था. तारोंकी और बिजलीकी प्रकाश पंक्तियोंकी छाया उस पानीमे पडकर आपसमे हिलमिल कर नाच रही थी. जब वे नावसे तटपर उतरे डाडो-के स्पर्शसे उनकी हथेलियां गर्म थीं, बाहो और टांगोके पट्ठोंमे हल्का-मीठा-सा दर्द था और तमाम देहमे एक शान्त, स्वस्थ, अलस थकान-सी फैली थी.

तब वे अपनी तरुण सहयोगिनियोको अपने-अपने घर पहुंचाने गए. मकानोके सामनेके बगीचोके द्वारोसे उन्होने हार्दिकतामे खूब जोरोसे हाथ मिलाकर परस्पर अभिवादन पूर्वक बिदा ली.

तमाम दिन चहल-पहल और मौजमे बीता. उस आनन्दमें थोड़ा बहुत ग्राम्य अगाम्भीर्य रहा हो, और कुछ चाञ्चल्य भी, किन्तु उसमें युवकोचित संयम था. कोई अपनेको भूला नही था. और जैसा कि अक्सर हुआ करता है, पारस्परिक बढ़ा-बढ़ी, असन्तोष, या भीतरी मन मुटावकी छाया तक भी उनके इस आजके मनोरञ्जनपर नही पड़ी. सूरजकी खिलती धूपमे, मिट्टीमे, नदी तटकी ताजा वायुमे, और पानी और घासकी सोंधी महकमें खेलते, नहाते, तैरते, और नाव खेते देहमे एक स्फूर्ति और शक्तिका संचार हो आता है. उसकी सहज मस्तीने और

अपने परिचित घरोंकी इन सुन्दर, पवित्र, सस्मित, और कुशल कन्याओं-की उपस्थितिन नि·सन्देह उनमे एक आनन्दप्रद मन.स्थिति उत्पन्न करनेमें और उनकी आजकी इस हार्दिक प्रसन्नतामे बडा सहयोग दिया. लेकिन, मानो उनकी चेतनाके अनजानमे ही उनमे रसोन्मुखता जाग पडी. जब बस्तीके घरसे बाहर हम जात है, चिन्ता शून्य, हल्के और उन्मुक्त, सूरजकी प्यारी धूपमे चलते है, मिट्टीसे खेलते है, पानीमे नहाते है और घासपर लोटते है, तब मानो इन सबके स्पर्शसे हमारे जीके भं.तर दबी हुई निर्बाध, स्वतन्त्र, सनातन, और सुन्दर दैवी-पशुता-सी जागती है. उस वस्तुको मनुष्य साधारणत आईन कानूनकी सहायतासे भुलाए रखता है. इस प्रकारका उन्मुक्त अवकाश पाकर निर्मल, निर्दोष चित्तसे अपने-आपेके साथ क्री" " किए बिना आदमीसे नही रहा जाता. तो जब बनती हुई चायके चारो ओर अध-लिटी, अध-ढकी, कन्या मूर्तिया दिखाई देती थी, जब वे नदीके लहराते जलमे भयके व्याजसे चिल्ला-चिल्ला उठती थी, धूपमे गरमाई उनकी देह परके वस्त्रोमसे जब महक-सी फूटती थी, उन्हे नावमे बैठानेकी महायतामे जब हठात उनकी गातका स्पर्श हो जाता था, जब शुद्ध सखा भावसे परस्परका स्पर्श और आलिगन उनमें होना था, तब आप ही आप उनके तरुण गातम शुद्ध, स्वस्थ, सपुलक रसोन्मुखताका भाव लहराता-सा व्याप उठता था

सो रातको जब विद्यार्थियोके उपहार गृहका दरवाजा बन्द होनेका समय आया, और हल्की मदिरासे स्फूर्तिमान और भोजनसे छके हुए ये अपने छतके नीचेके बन्द कमरेसे निकल कर बाहर सडकपर आए, जहा ठण्डी अधियारी रात बेचैन सी फैली थी, आसमानके तारे और धरतीपर की रोशनियाँ जाने क्या निमन्त्रण देती जान पडती थी, जहा हवाम सोये फूलोका सौरभ व्याप्त था, जिससे मनमे तरगे और देहमे कपकपी-सी उठती थी—उस समय उनमेसे हरेकका सिर गरमा रहा था, चित्तमे भीनी भीनी प्यास-सी थी, और जाने कैसी भीनी-भीनी आकाक्षाए भीतर तैरती हुई मालूम होती थी. आरामके बाद नसोमे और धमनियोंमे दौड़ते हुए लाल लहूको अनुभव करना, देहमें तारुण्यको

फूटते और बहते हुए अनुभव करना कैसा अच्छा लगता है. शरीरका प्रत्येक अवयव जब, लगता है, उत्सुक, उद्यत, हृदयकी हर चाहको कार्यमें परिणत करनेके लिये आज्ञाकांक्षी है, तब हमे कैसा प्यारा लगता है. जी होता है कि बिना शब्द, बिना बिचार, बिना चेतना, आदमी अविकृतावस्थामे निर्विकल्प जैसे बस भागता ही चला जाए. ओससे भीगी घासपर किसी कामिनीके हल्के पद चिन्होका अनुगमन करता हुआ खोया चला जाए. अथवा अपने पूरे कण्ठको खोलकर, चिल्ला कर पुकारे, 'ओ तू कहां है ? मेरी बाहे खुली हं, तू आ !'

अब उनके लिए बिखरकर अलग-अलग होना कठिन था. तमाम दिन जो साथ-साथ बीता, सो सब रिल-मिलकर अब मानो एक लच्छेसे एक और एक प्राण हो गए. जैसे आपसमे गुथा मिथा और उलझा हुआ जानवरोका एक-एक गुच्छा हो जाता है, वैसे ही मानो ये इतने जने मिल कर एक इकाई बन गए थे. प्रतीत होता था, इनमेंसे एक गया कि सतुलन भंग हुआ और राग टूटा. सब मानो एक सुरपर आ कसे थे, और एक इक्विलिब्रियम सम्पन्न हो गया था. वह टूटा कि फिर जुडेगा नही. और इसलिए वे कभी गुच्छेमे साथ-साथ किसी पटरीपर ही चलते रहते, कभी यों ही कुछ देर बैठकर गप्प उडाते, या सडकके बीच चलकर मार्गमें अवरोधक बनते. किंचित दम्भपूर्वक वे आपसमे चर्चा करते थे कि बाकी रात कहा चलकर बिताई जावे. जान पड़ा कि... बाग दूर बहुत है, और वहा अन्दर जानेके लिए टिकटके पैसे भी देने पड़ते है. और उस रातकी अनुरजन शालामे सामानकी कीमते भी बेहद ज्यादा होंगी, और थियेटरोके भी प्रोग्राम कभीके खत्म हो चुके होगे. ' विनय पालिवालने कहा, "चलो जी, मेरे यहां चलो बीयरकी एक दर्जन बोतलें हं, कुछ और शराब भी हो जाएगी". लेकिन लोगोंको यह बात पसन्द न आई. कहां आधी रातको किसी कुनबेवालेके घरमे जाते फिरें, कि दबे-दबे पांव जीना चढना हो और घुस-फुस बातें करनी हों कि कोई सुन न ले और जाग न जाए.

"मै बताऊं भाइयो, चलो किन्हीं...उनके यहां चलें." "यह सही

चीज रहेगी." मानो निर्णायक भावसे लखनपालने कहा. वह कालेजका पुराना विद्यार्थी था. कुछ लम्बे कदका, और झुका हुआ. चेहरा कुछ रंजीदा. विश्वासोमे वह नास्तिकवादी था, और कर्मत. विलियर्ड, घुड-दौड और ताशमे जी डालकर खेलनेवाला जुआरी. वह उदारतापूर्वक मानो भाग्यसे बद-बदकर बडे दाव लगाकर जुआ खेलता था. पिछले दिन ही उसने एक क्लबमे एक हजार रुपए जीते थे. वे रुपए उसकी जेबमे ऐसे जल रहे थे कि जेबमे छेद कर देगे और बह निकलेगे.

"और नही तो क्या. ठीक तो है. किसीने उमका समर्थन किया, "चलो, वही चले"

"फायदा क्या है. तमाम रातका किस्सा है." तीसरा ऊपरी उक्ता-हट और बनी बुद्धिमानीमे बोला.

चौथेने मानो जग्दाई लेकर कहा, "भाइयो, घर चलो. आ-आ : चलो जी चलो आज भरकी काफी सैर हो गई."

लखनपालने कटाक्षके साथ कहा, "सोते-सोते तो तुम कोई भाड फोडोगे नही — अच्छा प्रोफेसर, क्या आप चल रहे है ?"

किन्तु यह उपआचार्य यारश्कर जल्दी माननेवाला आदमी न था. प्रतीत हुआ, वह सचमुच खीज उठा है पर जैसे कदाचित् उमे स्वय पता न था कि उसके चित्तकी किसी अधियारी दरारमे उसीके भीतर जाने क्या छिपा हुआ है.

"छोडो मुझे लाखन." उसने कहा, "भाइयो, यह पातक है, अपराध है गधापन है— यह जो आप करने जा रहे है. हम अभी कैसा रमणीय, प्रसन्न, सरस, और मग्न जीवन बिताकर चुके है लेकिन नही, तुम्हें फिर भी मदहोश होकर कीचमे लोटनेकी तबियत होनी है. नही, मै नही जाऊगा."

लखनपालने शात कटाक्षसे कहा, "फिर भी, यदि मै भूल नहीं करता और बहुत दूरकी नही दो-एक मौसम पहलेकी बात याद करता हूं, तो देखता हू, श्रीमान भावी आचार्यके साथ कुछ और लोग भी, एक जगह डटे हुए शराब ढाल रहे है, गिलास बजा रहे है नाच-नाच रहे हैं.

मौज कर रहे हैं और वे बाकी कुछ नहीं छोड़ रहे हैं—सच है ?"

लखनपालने सच कहा था. छात्रावस्थामें, और अतिरिक्त प्रोफेसर की अवस्थामें भी, यारश्करने अनर्गल, स्वच्छन्द, मौजी, जीवन ही बिताया था. होटलोंमें, शराबखानोंमें, चकलोंमे, सब कहीं वह परिचित था. उसकी स्थूल साधारण कदकी गोलाकार आकृति, उसके फूले गुलाबी देवोपम गालोंकी स्वस्थ आभा, तर, प्रसन्न आंखें, मुखर स्वभाव, वाचाल तबियत और तेज हंसी—अबतक इनके लिए उसकी इन जगहोंमे याद की जाती है.

उसके साथियोंको पता नही चलता था कि कहांसे अपने पाठ्य-विषयोंकी पुस्तकोंको पढ़नेका समय यह निकाल लेता था. लेकिन अपने काममें वह सदा ठीक रहता और परीक्षाओंमें सदा प्रतिष्ठाके साथ पास होता रहता था. प्रोफेसरोंकी आरम्भसे उसपर आंख थी. अब यारश्कर धीरे-धीरे अपने पुराने साथियों और बोतलके यारोंको तजने लगा. अब अनिवार्य रूपमे उसका मिलना-बोलना प्रोफेसरोंसे होता था, और वह उन्होंके बीचमे अपने सामाजिक साहचर्यका क्षेत्र बनाकर उसे बढ़ा रहा था. अगले वर्षके लिए कालिजकी आरम्भिक श्रेणियोंमे रोमनपर, व्याख्यान देनेका काम उसे मिला था. और ऐसे मौके कम न होते थे जब वह बातचीतमें अन्य नवीन प्रोफेसरोंकी तरह न कहता हो— हम प्रोफेसर लोग, विद्यार्थियोसे जान पहचानकी स्वतन्त्रता, उनके साथका आवश्यक सम्पर्क, सभाओं, प्रदर्शनों, आन्दोलनों, और बहसोंमें सहयोग— ये सब बातें अब उसकी उन्नतिमें अधिक सहायक न थीं. इसमें अब उसे कुछ टोटा ही दीख पड़ता था, और वह इनसे बचता था. किन्तु नए तरुणोंमें प्रिय और परिचित बने रहनेका मूल्य भी उसे ज्ञात था, और इसलिए अपने पुराने साथियोंसे एकदम सम्बन्ध तोड़नेका निर्णय भी उसने नहीं बना लिया. लखनपालके शब्दोंने तो भी उसे भड़काया, बोला "ओह, छुटपनमें हमने क्या-क्या किया सो कहनेसे बनता क्या है. चीजें हम चुराते थे, कपड़े हम खराब करते थे, कभी चीटें मक्खीको पकड़कर, उनके पर और टांग भी तोड़ने लगते थे." यारश्कर गरमाकर तेजीसे बोलने

लगा, "ठीक, तब करते थे. लेकिन, इन सबके अन्त होनेका दिन भी आता है. मर्यादा भी कुछ वस्तु है निःसन्देह सज्जनों, आपको कुछ सिखाने, कुछ परामर्श देनेका अधिकार मेरा नही किन्तु हम अपनेसे समझदारीकी आशा करे. आदमीको अपने साथ ईमानदार रहना होगा. सब सहमत हैं कि वेश्यावृत्ति मनुष्यताका सबसे मैला दाग है. इसमें भी सहमत हैं कि इस पातकमे अपराधी स्त्री नही है, दोषी हम पुरुष हैं जब माग होती है तो दुकान भी खुलती है अब, मब जानबूझकर अपनी सुबुद्धिके खिलाफ शराबके नशेमे चढकर यदि मैं वेश्यालयोमे जा पहुचता हू तो मै तिहरा अपराध करता हू पहला अपराध उस बेचारी भोली स्त्रीके प्रति जिसे मैने अपने चादीके रुपएके जोरपर अत्यन्त निद्य जघन्य गुलामी तक झुकनेको लाचार किया. दूसरा मनुष्यताके समक्ष, कि मैने अपनी क्रूर वासनाके लिए घण्टे-दो-घण्टेको नारी देहको किराए पर प्राप्त किया औ. .ेमाल किया, और इस प्रकार अपने कृत्यसे वेश्यावृत्तिकी आवश्यकताका समर्थन किया अतम यह घोर अपराध है अपने निजके प्रति, अपने अन्त करण और चित्तके प्रति. और तर्कके समक्ष भी "

'शि !" लखनपालने अपने मुहके भीतर देरमे रुकी हुई वितृष्णाको मानो इस सम्बोधनमे निकाल दने हुए बारीक आवाजमे एक ओर सिर लटकाकर कहा, "हमारे फिलास्फर साहब, वहा अपनी रफ्तारपर छूट पड हे कुछ बात भी हुई ' नावको सीधी पकड लो, या घुमाकर पकडो, एक ही वात है"

"बेशक मजाक उडा देना आसान है" यारश्करने कहा, "लेकिन मेरी रायमे रूसके अभागी जीवनमे विचारकी इस शिथिलता और चरित्रकी अस्थिरतामे अधिक शोचनीय बात और नही है आप कहेगे, चकलेमे एक गया न गया, इसम तो कुछ बन-बिगड जाएगा नही मेरे एक बार जानेसे, न जानेसे, देशकी अवस्थामे क्या कोई फर्क पड जाएगा ? इसी तरह पांच साल बाद हम कहने लगेगे कि घूस अलबत्ता बुरी चीज है, लेकिन भाई बच्चे है, कुनबा है ..और फिर तो दस साल बाद हम पक्के पूरे पुण्या-

स्मा समाजोपजीवी रशियन लिबरल ही बन जाएंगे. व्यक्तिगत स्वतन्त्रता की बातें करेंगे, अफसर नामके उन निकम्मे लफगोंके आगे सलाम झुकाएंगे जिन्हें हम नफरत करते हैं, और अपने कमरोंमें जाकर पलगोंपर आरामकी नीद सोएंगे, कहेंगे, देखो भाई, भेड़ियोमें रहना तो भेड़िया बन कर रहना. एक नेताने एक बार ठीक ही कहा था, 'हमारे विद्यार्थी सरकारी दफ्तरोंके भावी हेड क्लर्क हैं.'

"भावी क्लर्क नही तो भावी प्रोफेसर!" लखनपालने कहा

"लेकिन गजबकी बात तो यह है." यारश्करने सुना अनसुना बनाकर इस चोटको बचाते हुए कहा "गजबकी बात तो यह है, हम सब लोग अभी-अभी नदीके रम्य तटपर कैसे विमल विहार और विनोदमें मग्न थे...और साथ हमारे कौन थी ?...किशोर कन्याएं जो कुलीन थी, सुन्दर, स्वस्थ और सुरभित. तब हम अपने आपको कैसे हृष्ठ, शिष्ट, उदाराशय, मंगलमय और प्रमुदित पा रहे थे. पर अभी हाल उनसे विदा लेकर आए हैं, कि रंडियोंकी बाते करने लगे हैं ! हम सब लोग एक क्षणके लिए कल्पना तो करें कि हम अपनी-अपनी बहनोंके साथ अभी थे, हंस-बोलकर खुश हो रहे थे . कि वहांसे आते हैं, और सीधे कहां चल पड़ते हैं - यामा ! ओह, क्या यह कल्पना सुघर है, सुन्दर है, सहज है ? ओह !"

"किन्तु समाजकी अतृप्त काम-तृष्णाके निकल कर बह जानेके लिए कुछ मोरियां भी चाहिए कि गन्दगी न फैले." विद्वत्ता पूर्वक सुवेश वर्नवालने कहा. वह लम्बे कद का जवान और कुछ झक्की था. तर्जके कपड़े थे, नाकपर बिना फ्रेमका काले पतले फीतेसे गलेमें लटकता हुआ चश्मा, और एक अन्दाजियाना टोपी. खासा रईस जादा लगता था. "अपनी नौकरानी या किसी पड़ौसिनसे स्नेह व्यापारका सिलसिला जोड़ना कठिन भी होता है, शिष्ट भी नही माना जाता. तब बताओ और क्या करुं अगर स्त्रीके बिना मेरा काम चलता न हो, और मुझे उसकी जरूरत हो ?"

"हां जी, बड़ी जरूरत हो" यारश्करने कुछ खिजला कर हल्का-सा

प्रतिरोध करते हुए कहा, "क्यों कि आखिरकार हमको यह मान लेनेका साहस होना चाहिए कि हम रशियन बुद्धि जीवी तर्कप्रिय लोग कालिज-से निकलते-निकलते कमर झुका बैठते है, चेहरोंपर हमारे झुरियां पड जाती है. हमारी आकाक्षाओमे जोर रहता नही, न तबियतम उत्साह. विपयकी भूख हमारी भरी-फीकी हो जाती है, बस जरा चाह-सी रहती है, एक लत, जी की खुजली-सी, नेक देरका जी बहलाव. चखते है कि हम छक रहते है एक आदमीने मुझे अपनी आखो देखी वारदात सुनाई. एक काकेशियन पहाडी था. दगशप्रदेशका था या असेशियन बहरहाल खूब डील डौलका था, और नगटा वह किस्लोवोडस्क आया. किस्लो-वोडस्क बढिया फैशनबिल स्वास्थ्यकर सैरगाह है. ग्रीष्मके शामकी एक सुन्दर, सुहावनी हरी सध्या थी इगशकी सगीतकी ध्वनि सुनाई दी. वह उसी ओर चल पड़ा चलते चलते एक खिडकीके पास जा पहुचा, भीतर नाच हो रहा था। नाच वाल्ट्ज था एक स्त्री इतने सूक्ष्म, इतने कम कपड पहने थी कि कह दीजिए कुछ पहने ही न थी.

"जान नाचते नाचते क्या मनक उसे सवार हुई वह चक्कर काटती हुई आती और खिडकीके बिलकुल पाससे घूमती हुई निकल जाती. इसमें जैसे उसे मजा मिल रहा था. वह खिडकीमें इतनी लगी हुई-सी निकलती थी कि उसका अधोभागका सूक्ष्म वस्त्र लहराता हुआ, बाहर खडे सुन्दर पहाडी घुडसवार को छू छू जाता था

'कि अकस्मात एक भयाक्रान्त चीख गूंजी. एक छलागमें वह पहाडी खिडकी कूद कर अन्दर पहुच गया, एक धक्केमे स्त्रीके साथीको दूर फेंक दिया. पलक मारतेमे उसने रंग-बिरंगी कपडेकी उन कतरनोंको फाड फेंका जो स्त्री पहने थी और उसे जमीनपर पटक लिया. लोगोंने अपनी छड़ियोसे और छतरियोसे बहुतेरा उसे मारा, हटाया, पर व्यर्थ. एकने रिवाल्वर भी छोड़ा एक फौजी आदमीने एक जोरका तलवारका हाथ भी उसकी पीठपर दिया. पर इसकी जरा भी परवाह जो उसने की हो. उन सब बडे इज्जतदार लोगोकी आखोके सामने-सामने उसने बेचारी नारीपर बलात्कार सम्पूर्ण किया. पीछेसे जब पुलिस आकर

टूटी तो उसने तृप्त, शान्त भावसे कहा, "अब जेल ले चलो, चाहे सिर उड़ा दो. जो होना है हो. पर, वह साली ऐसी नगी क्यो नाचती फिर रही थी ?

"और बस...मै उस उन्मत्त पशुका पक्ष लेता हूं. प्राकृतिक शक्तियो का क्या अपराध ? पर तुम कहते हो- हमारी जरूरतें ! आह, हम मस्तिष्क-जीवी प्रेम करते है कल्पना द्वारा. हम पुरुष नही है, बस हम पिता बन सकते है, और कुछ नही."

"वाह, वाह !" वर्नवानने कहा, "आपका दिल प्रोफेसर उस पुराने रोमनका सा है कि औरत देखी और काबू की. पर, सिर उस गावके वृद्ध पादरीका-सा जो बात-बातपर रुकता और पछताता है"

लेकिन तभी एक विद्यार्थीने बाधा दी मित्र मन्डलीमे उसे रामसरन कहते थे. पीला, दुबला, नाटे कदका व्यक्ति था, जिसकी नाक बैठी थी. उसका चेहरा साफ त्रिभुजाकार था, और माथा चौडा फैला, जो सिर तक बालोंसे शून्य था पिचके गाल, नकीली ठोढी. वह ऐसा रहता था कि अचरज हो सकता था जब उसके साथी क्रमश राजनीति, प्रम थियेटर या कभी पढाईमे लगे रहते थे तब यह रामसरन तरह तरहके मुकदमे मामलातकी खोज खबरमे लगा रहता था दावे, अर्जी दावे, जायदाद, मनकूला या गैरमनकूला वगैरः वगैर बातोंके दांवपेचोंमे वह उलझा रहता था. अदालतोंके पुराने फैसलोंके मुख्तलिफ पहलुओंको उसने अपने दिमागमें नक्श कर रखा था. सैकडो ही मामले उसे बजिन्स हिफज थे. बिना एक पैसा लिए बिल्कुल अपनी मर्जीसे एक सालतक वह एक वकीलकी मुहर्रिरी करता रहा. इस पिछले साल एक मुकामी अखबारमे अदालती खबर देनेका वह काम करता रहा उसके साथ ही वह शक्करके व्यापारियोंकी सिडीगेटके दफ्तरमे भी ज्वाइट सेक्रेटरीका सहायक बन गया था और जब इस सिडीगेटने अपने एक मेम्बर कर्नल वेस्केकाबिके खिलाफ वह मशहूर मुकदमा चलाया जिसकी अखबारोंमे धूम रही, तब इस रामसरनने शुरूसे ही, अपने दिमागमे जो कयास क़ायम किया था, आखिरकार सिडीगेटने ठीक उसीके मुताबिक अपना फैसला दिया.

उसकी अवस्था अधिक न थी, तो भी प्रमुख कानूनदा लोग उसकी रायकी कदर करते थे. यह सही है, कि ऐसा वह जरा ढगके साथ करते थे जिसने भी रामसरनको निकटसे देखा, उसे सन्देह न रहा कि इसका जीवन जरुर सफल होगा रामसरन भी अपने इस विश्वासको छिपाना न था कहता था, पैंतीसका होते न होते अकेली दीवानी वकालतके बदौलत ही ज्यादा नही तो पन्द्रह-बीस लाख तो कमा ही लूंगा. उसके सहपाठी अपनी सभाओका और अपनी क्लासका बहुधा उसे ही अध्यक्ष चुना करते थ पर वह सदा अस्वीकार कर दता, कह दता, क्षमा कर मुझे समयाभाव है पर जब कभी आपसम झगडके फैसलेकी बात आ जाती तब वह अवश्य भाग लेना उसकी युक्तिया तर्क सम्मत और प्रबल होती पर उनम कुछ एसा भी होता था कि वह मुद्दई मुद्दालय दोनो पक्षोके जी लग जाती और उन्हे मान्य होती थी और मामलेका निबटारा शांतिपूर्वक हो जाता था वह यारश्करकी तरह विद्यार्थियोम सर्व प्रिय होनेके मूल्यको खूब पहचानता था और यदि वह उनको तनिक अहम्मन्यता अथवा उपेक्षाके भावसे देखता था, तो भी अपने किसी सकेतसे, भगीसे, अपने पतले दुर्जय होठोके तनिकसे भी वक्रसे प्रकट न होने देता था

बीच-बिचावके तौरपर रामसरनने कहा, 'अच्छी बात है गणेश यारश्कर, कोई आपको जबरदस्ती तो आपके ऊचे स्थानसे खीचकर इस काममे गिरा नही रहा है तब फिर आप अपनेमे आवेश और विषाद क्यो लाते हैं ? बात सीधी है रशियन तरुण कुछ हे जो सभ्रान्त वर्गके हैं, कुलीन और शिष्ट बस वे चाहते हैं कि बाकी रात अपने थोडा गा-गूकर पेटोमे कुछ गलन शराब उडेलकर, हस बोलकर, जरा प्रसन्नता और मौजमे बिता ले और, अगर सब जगह दुकान बन्द हो गई है, बस एसी ही जगहे बची है तो..."

"तो हम चाहते हैं, आमोद लूटे. और औरतोके यहा जाकर, जो बिक्रीके लिए बैठी है, वेश्याओके यहा ! चकलेमे !" यारश्करने बीचमें उपहास और कटुतासे कहा.

"हां, यह भी सही, तो क्या हुआ ? एकबार एक फिलास्करको अपमानित करनेका विचार लोगोने किया. सो दावतमें उसे वहा बिठाया, जहां निम्न श्रेणीके लोगोकी जगह थी. वह बोला—'वाह, निचलीको अगली जगह बना देनेका यह तो अच्छा उपाय मालूम हुआ!" और आखिर में कहता हूं, तुम्हारे कथनानुसार यदि किराया देकर स्त्रीको अपनानेकी साक्षी तुम्हारा चित्त तुम्हें नही देता, तो कठिनाई क्या है. वहा जाओ, और आ जाओ. कोई आगे बढनेको तो कहना नही. आपकी निर्गलता भी अखण्डित रहेगी."

यारश्करने कुछ नाराज होकर आपत्ति की. कहा, "रामसरन तुम बहुत बढ जाते हो. यह तो वही बात हुई कि कुछ सफेदपोश लोगोने इकट्ठे शामके वक्त जो फासी चढते हुए किसीको देखा तो बोले, 'नहीः हमारा इसमे कोई हाथ वाथ नही है. हम मृत्यु दण्डके खिलाफ है. यह सब सरकारी वकील, जज और जल्लादके काम है"

"खूब कहा, गणेश यारश्कर, और अशतः सत्य भी. पर यहा यह तुलना शायद नही घटती. रोगीसे दूर रहकर हम उसकी व्याधि नहीं हर सकते. उसके लिए व्याधिग्रस्त व्यक्तिके पास जाए बिना चारा नही. हम सब लोग जो राहकी रुकावट बने यहा खडे है, हम सबको अपने रास्तेमे कभी-न-कभी इस भयकर वेश्या-समस्यासे जाकर टकराना पडेगा. व्यभिचार ही नही, कैसा घोर घृणित व्यभिचार ! लखनपाल, बर्नवाल और पालीवाल समालोचक बनेगे, तो मै वकीलकी हैसियतसे; पतकी और तनवर डाक्टर बनकर.—आखिर हम सब इस समस्याके तटपर पहुचेगे ही. हां, वेल्टमेनकी दिशा है—गणित. किन्तु क्यों, वह भी तो आखिर प्रोफेसर या मास्टर बनेगा. उसके हाथमे नतन भाग्य होंगे कि उनका विकास करे, उन्हें मोडे या दिशा दे. यह भी नही तो पिता तो उसको बनना ही है. जिसे हमने हौवा बना रखा है, और जिससे हम डरते हैं, उसे दूर भगाना है तो अच्छा यही है कि हम उसे जाकर भरपूर देखे और पहले भय भगा दे. और गणेश यारश्कर, मै तुमसे भी कहता हूं मरी और अधमरी कई भाषाओंमें तुम वि-चक्षण

हो, तुम धरतीके भीतर गड़े हुए अतीतके अन्वेषक हो और प्रकाशक हो. पुरातन पोम्पियाइ, थिवीस निनेवामें प्रचलित संस्थाबद्ध धर्मगत व्यभिचारकी आजके यहाके रूसके चकलोके व्यभिचारसे तुलना क्या तुम्हारे लिए भी महत्त्वपूर्ण और शिक्षाप्रद न होगी ?"

लखनपालने चिल्लाकर कहा, "शाबाश, राममग्न खूब! भाइयों, अब ज्यादा बात करनेकी जरूरत क्या है, चलो प्रोफेसरको पकड़ें और गाड़ीमें बिठा चलें."

हसते और शोर मचाते हुए विद्यार्थियोने यारश्करको घेर लिया, और बगलोमें बाहे डालकर और कमर पकडकर उसे उठा लिया सबके भीतर स्त्री देहके प्रति आकर्षण विद्यमान था, लालसा उग रही थी. पर लखनपालके अतिरिक्त किसीको बढकर कहनेकी हिम्मत नही हुई. अब दम्भ टूट गया और उलझन दूर हुई. मानो अब बात सीधी साफ सुलझकर सामने आई. सबको अपने पुराने महाध्यापकपर मजाक करनेकी सूझने लगी यारश्कर झिझका, उसने जिद्द की, रोष किया और हसकर निकल छूटनेकी चेष्टा करने लगा. लेकिन इसी समय एक लम्बा, काली मूछो वाला कान्स्टेबिल जो इन्हे बहुत देरसे सक्रोध और तीव्र निगाहसे देख रहा था शोर मचाते हुए इन लडकोके पास आया और बोला, 'लडको मैं कहूंगा कि आप लोग जमा न हो इसकी इजाजत नही है आगे बढ़ो."

वह गुच्छा-का-गुच्छा आगे बढा. यारश्कर धीरे-धीरे पिघल रहा था.

"भाइयों, मैं साथ चलनेको तैयार हूं, अगर आपकी जिद्द हो. मत समझिये, रामसरन की बातोमें मैं विश्वस्त हू नही. पर मैं भेद नही डालना चाहता. अपनेको तोडकर आपसे अलग करूं, इससे मुझे दुःख होगा लेकिन एक शर्त है, हम वहां कुछ पी लेगे, खेल लेगे, हंस लेगे और उसी तरह लेकिन ज्यादा कुछ नही. किसी तरहकी गन्दगी नही. यह सोचकर लज्जा और दुःख होता है कि रशियन बुद्धि और कुलीनताके गौरव-स्वरूप हम युवक राह चलती पहली स्त्री देखकर मुहमें पानी भर लाते है."

लखनपाल ने हाथ उठाकर कहा, "मैं सौगन्ध खाता हूं."

रामसरनने कहा, "मैं अपना जिम्मा लेता हूं."

"और मैं भी...परमात्माके नामपर, भाइयों, हम सब शपथ ले-यारस्करने ठीक कहा है"—और शेर भी बोले.

वे गाड़ियोंमें दो-दो-तीन-तीन बैठ गए. गाड़ी वाले देरसे उनके पीछे-पीछे कतारमें आपसमें कुढ़ने-झगड़ते आ रहे थे. वे सब चल पड़े.

लखनपाल प्रोफेसरके बराबर बैठा. वह प्रोफेसरके बारेमें ठीक-ठाक रखना चाहता था. उसने अपने और औरोंके घुटनोंपर तनवरको बैठा दिया. तनवर बाईस वर्ष का था, पर बालक लगता था. चेहरा गुलाबी, भरा, मनोहर था. रेख उभरी नहीं थी और बालोचित औत्सुक्य, लज्जा और कुछ भोलापन उसके चेहरे पर था. लखनपालने गाड़ी वालोंको पुकार कर कहा, "डालूकाका वाली जगह ले चलो."

सब डालूसिंगके उपहार गृहपर पहुंचे. यह सारी रात खुला रहता था. बड़े कमरेमें गए और शराबकी वेदीके सामने इकट्ठे खड़े हो गए. सब थके हुए थे और किसीको भूख-प्यास न थी. पर हरेकके मनमें इस भावनाकी अँधियारी-सी छाया विद्यमान थी कि वे अब बिल्कुल उस तटके किनारे आ गए हैं, जहांसे बस पग भर आगे—जाने क्या नहीं है, और जाने क्या है ! सब भीतर-ही-भीतर जान रहे थे कि वे एक प्रकारके व्यर्थ, निर्लज्ज, कृत्रिम, उद्धत, तीक्ष्ण विलासमें पड़ने जा रहे हैं उस विलासमें जिसमें सहज हर्ष नहीं है, प्रसन्नता नहीं है, नशा और उन्माद है. और सब पीकर किसी तरह अपनेको मनःस्थितिमें ले जाना चाहते थे कि जब चारों ओर मानो कोहरा-सा आ जाता है और उस कुहरेके तटपर, एकाएक एक इन्द्रधनुष खिंच जाता है. जब वस्तु और विचारोंकी रेखाएं एक दूसरेमें खोने लगती हैं, और जब मस्तिष्कको यह पता नहीं रहता कि हाथ क्या कर रहे हैं, टांगें क्या कर रही हैं, और जिह्वा क्या बक रही है. और शायद इन विद्यार्थियोंको ही नहीं, यहां यामामें आनेवाले हरेकको ही इस भीतरी मानसिक द्वन्द्वकी वेदनाका कम अधिक अनुभव होता था. क्योंकि डालूसिंगका व्यापार इतनी रात

गए होता था कि यहा आने वाला हरेक जानता था कि इसके बाद उसे कहा जाना है. वह यहा अपनी जगहपर जरा देर ठहरता, और पी-पाकरबधी राह आगे बढ जाता था.

जब विद्यार्थी मस्ती, कीमती, भांति-भांतिकी शराबे पी रहे थे, रामसरन ध्यानसे टक लगाए कमरेके एक दूरके कोनकी तरफ देख रहा था. वहा दो आदमी बैठे थे. एक चियड पहने हुए था और उसके सामने परली तरफ मुह किए सामनकी मेजपर कोहनी डाले और एक दूसरेके ऊपर रखी मुट्ठियोपर ठोडी टिकाए सिमटा हुआ-सा छोटे बाल और पुष्ट देहका आदमी सूटमे एक और भद्र व्यक्ति बैठा था. बड्टा आदमी अपने सामने पर बाजेको लेकर फैली किन्तु नर्म आवाजमें गा रहा था

ओ अमराई, मेरी बचपन की याद की प्यारी अमराई

जहा कमी न थी नन-तनिया मिलती थी, और दूध बहा करता था.

'जरा क्षमा करे, वहा मेरे एक सहयोगी मित्र हैं" रामसरनने कहा और सूटवालेसे मिलनके लिए चला गया मिनट भरमे उसको अपने साथ ले आया और अपने साथियोसे उसका परिचय कराने लगा.

"भाइयो, आइए मै आपको अखबारी दुनियाके अपने एक सहयोगी का परिचय दू—कुमार पवनजय, पत्रकारोंमे सबसे प्रतिभाशाली है, और सबसे आलसी"

वे सब अपना-अपना नाम हार्दिक भावसे पुकारकर अपना परिचय देने लगे. लखनपालने कहा, तो आइए कुछ पियें"

यारश्करन उसी मुस्कान मुद्रामे जो उसकी अपनी थी कहा, "मुझे क्षमा कीजिएगा, मै आपसे सर्वथा अपरिचित शायद न हू हा, साक्षात्कार नही हुआ क्या आपने ही प्रोफेसर प्रिटनोस्कीका वह व्याख्यान पत्रमें नही रिपोर्ट किया था जो उन्होने यूनीवर्सिटीमे विपक्षियोके उत्तरमें अपनी थियरीका समर्थन करते हुए दिया था ?"

"जी मैने ही लिखा था !"

"ओह, बड़ी प्रसन्नता हुई." यारश्करने मनोहर ढंगसे कहा, और आने

क्यों पवनंजयका हाथ फिर जोरसे दबाया. "मैने आपका लेख पढ़ा था. क्या खूब यथार्थ, कुशल, सम्पूर्ण वर्णन था ..मुझपर कृपा न कीजिएगा ? आपके स्वास्थ्यके नामपर."

"तो मुझे भी इजाजत दीजिए." पवनजयने कहा, "जखरिश और भी बनाओ...एक, दो, तीन, पाच.. नौ ग्लास बढ़िया कोग्नक .."

"नहीं, नही, यह आप नही कर सकते.. "

"आप महाशय, हमारे अतिथि है." लखनपालने आपत्ति करते हुए कहा.

पत्रकार उदाराशय हसी हसते हुए बोला, "तो मै आपका साथी कैसा रहा? मै सिर्फ पहली सालम दाखिल हुआ था, वह भी पूरे वर्ष नही रह सका, एफ०ए० भी नही पास कर सका. हा ठीक है, जखरिश ! सज्जनो, मेरा निवेदन है कि..."

मतलब यह कि आध घण्टे बाद यारश्कर और लाखन किसी तरह भी इस पत्रकारको बिछुडने देनेको राजी नही हुए और उसे अपने साथ यात्रा भी घसीट ही ले गए पत्रकारने भी कुछ विरोध नही किया उसने सीधे तौरसे कहा, "अगर मै आपके लिए बोझ न हू तो मुझे प्रसन्नता है, यह भी कि आज मेरी जेब भरी है ! 'आदेश' पत्रने मुझे आज लेखो का पुरस्कार दे दिया है. यह करिश्मा ही समझिए एकाएक मुझे अपनी जबम एक टिकट पडा मिल और उसके बल दो लाख मझे मिल जाय तो आप क्या कहे ? 'आदेश' मे रकम मिलना इससे कम बात नही है. क्षमा कर. मै अभी आता हू . "

यह उस वृद्ध पुरुषके पास गया जिसके साथ अभी बैठा हुआ था. उसके हाथोमे चुपचाप कुछ रुपया दिया और शिष्ट अभिवादन पूर्वक उससे बिदा ले आया

"जहा मै जा रहा हू, बाबा, वह जगह तुम्हारे लिए नही है. कल हम फिर इसी आजकी जगह मिलेंगे. नमस्कार !"

सब उपहारगृहसे निकले. सुवेश बर्नवाल जो बे-बातकी बात करनेका आदी था और शक्की तबियतका था हालसे बाहर होते ही लखनपालके

पास गया, और उसे एक ओर ले जाकर कहा—

"लाखन, मुझे तुमपर अचरज है. हम सब यहां अपने आपसके लोग ही थे. पर तुम्हारा जी बिना किसी ऐरे गैरेको साथ मिलाए माने तब ना, क्या जाने कौन आदमी है, कि साथ पकड लाए !"

लखनपालने मिठासमे उत्तर दिया, "नही नहीं, सुवेश यह खूब जिंदा-दिल आदमी है."

१०

अन्ना मरकानीके स्थानके द्वारपर पहुंचे तो यारश्करने बड़बडाकर कहा, "सज्जनो, यह क्या ? यह जगह तो गदहों के लायक भी नहीं है. आखिर यही था तो इतना तो होता कि जरा किसी सलीके की भली जगह जाते यह नहीं कि ऐसी टकियाई जगह आ पहुंचे. सज्जनो मैं कहता हू कि हमे चलना है तो ट्रुपिलवाली जगह चलें. वहां और नहीं, रोशनी तो है."

लखनपालने बा-अदब तपाकके साथ उन नये प्रोफेसरके सामने आ-कर अपने हाथों दरवाजा खोला और जरा सिर झुकाकर अनुरोध पूर्वक कहा, "पधारिए, महोदय ! कृपया भीतर पधारिए."

"मैं कहता हूं, यह ठीक नहीं है. अहं, क्या गन्दगी है.... ट्रुपिलकी औरतें आखिर कुछ तो हैं."

रामसरन जो पीछे-पीछे था जोरसे एक विद्रूप हंसी हंसा. "हां-हां, गणेश यारश्कर, ठीक है हम उसी तर्कपर और क्यों न आगे चलें. वह अधम, भूखा, चोर जो पेटके लिए कहींसे रोटी चुरा लाया है हमें निंद्य है लेकिन बैंकका डायरेक्टर जो दूसरोंके लाखो अपने सिगार, घोड़ों, और घुड़दौड़ोंके शौकपर उड़ा देता है, हम उद्यत है कि उसका पक्ष ले ! और यही चाहिए. क्यों यही न ? क्यो, यही ना ?"

"क्षमा करें. किन्तु इस तुलनाकी यहां संगति मैं नहीं देखता." यारश्करने संयत स्वर में कहा, "तो भी मुझे क्या. मर्जी है, चले चलिए."

लखनपालने प्रोफेसरको आगे बढने देकर कहा, "जरूर, और इसलिए और भी जरूर कि कुछ ऐतिहासिकता है जो इन्ही घरोके भीतर मिलेगी, जिसे यही पोषण मिलता है. भाइयो, युवा विद्यार्थियोकी पीढियोकी पीढिया जिन्होने यहा आकर अपनेको पाया और खोया है, हमे देख रही है और फिर हम लोगोका सब जगहकी तरह यहा भी तो आधे टिकट-का हक होगा. क्यो, नागरिक साइमन महाशय, यही बात है न ?"

साइमनको यह अच्छा नही लगता. यहा टोलीकी टोली आती है तो उसे लगता है कि कही झगडा न उठ खडा हो तिसपर विद्यार्थियो की बातचीत उसे और भी अच्छी नही लगती. उसकी समझमे ही ठीक नही आती ये बस सदा मजाककी बाते करते रहते है. ईश्वर परमात्मा किसीको नही मानते. और तुर्रा यह कि अमनके और शासनके खिलाफ उनमे सदा विद्रोहकी आग भरी रहती है उस दिन ही उसने क्या देखा था. देखा कि कज्जाक सिपाही, आस-पासके कस्साब और छोटे-मोटे दुकानदार सब मिलकर इन विद्यार्थियोको दे मारपर मार रहे है साइ-मनने यह देखा ही था कि वह भी एक चलती गाडीमे लपककर चढ गया, कहा, "चलो चले" और युद्ध स्थलपर पहुचकर, दमादम स्वय भी उन्हे मारने लगा. वह उन लोगोको इज्जतकी निगाहसे देखता था जो वयसमे प्रौढ होते, देहमे कुछ स्थूल, चुप, स्थिर और दुकानकी तरह दीखते थे. वे चुपचाप एक-एक करके आते, यहा-वहा झाकते रहते कि कोई पहचानवाला न मिल जाए, और फिर निबट-निबटाकर झटपट वापिस चले जाते थे चलते वक्त वे इसे खासी बख्शीश दे जाते थे उन लोगोको यह साइमन अनायास कहा करता राय, साहब.

सो यारस्करका बडा ओवरकोट थामनेके बाद लखनपालके जवाबमे उसने धुआकर अर्थ भरे ढगसे कहा, "मै कोई नागरिक महाशय नही हू. मै जमादार हू"

"और मै इसपर आपको धन्यवाद देनेकी अनुमति चाहता हू" लखनपालने साभिवादन झुककर उत्तर दिया,

ड्राइंग रूममें बहुतसे आदमी थे. क्लर्क लोग भरपेट नाचनेके बाद,

तर और सुर्ख, अपनी अपनी कामिनियों लगे रूमालसे अपनी हवा करते हुए बैठे थे. भेडकी ऊनकी-सी उनमे गन्ध आ रही थी. मिशका और उसका वह साथी जिल्दसाज आपने-सामने एक मेजपर बैठे मिलकर कुछ राग छेडनेकी कोशिश कर रहे थे. दोनोंका निर्लोम कपाल था, नीचे उतरकर कनपटीके पास बस थोडे मुलायम बाल उगे थे. आखे मस्त चढी हुई, रंगीन, उद्धत. मेजपर अपनी कोहनियां टिकाकर बैठे, एक दूसरे-की अपेक्षासे अधिकाधिक प्रोत्साहन पाकर, उखडी भारी आवाजमे अलग अलग आलाप लेकर वे ऐसे रीछ रहे थे कि मानो कोई उनके गलेमे रह रहकर मुक्के मार रहा हो

मेरे दिलमें दर्द है-ऐ ऐ दर्द.

एमा उडवानी और जल्पिया अपना पूरा जोर लगाकर उन्हे जना रही थी कि दाऊरमे रह लिया गवदू आरामके साथ एक कुर्सीपर सो रहे थे टांग-पर-टांग रक्खी थी, जुडे दोनो हाथोंमे अपने घुटनोंको पकडे थे, और सिर लटक रहा था.

लडकियोंने तुरन्त इन विद्यार्थियोंमेसे कईको पहचान लिया. और वे स्वागतके लिए आगे बढी

"तिमिरा, तुम्हारा मालिक आ गया है—पालीयाल और मेरा आशिक भी —पतकी." नूरीने चिल्लाकर सूचना दी और पतली देह और बडी नाकवाले गम्भीर नारायण पतकीके गलेमे बाहे डाल लटककर बोली, "हैलो पतकी, इतने दिनोंसे क्यों नही आए ? मैं तो तुम्हारी बाट देखती सूख गई !"

यारश्कर सकोचपूर्वक अपने चारो तरफ देख रहा था. एमा उडवानी जब जरा पास आई, उसने तनिक सानरोध नम्रतासे कहा, "हमे एक देखिये...एक अलहदा कमरा मिल सकेगा ? और कृपाकर कुछ अच्छी शराब भी दीजिए....और काफीको भी कह दीजिए...आप तो जानती ही हैं . "

यारश्कर होटलके दरवानोंमें, नोकरोंमें अपने कपड़ोंके कारण और विश्वस्त कुलीनोचित, गर्वीली चाल-ढालके कारण सदा आदरास्पद होता

था. एमा उडवानी तुरन्त स्वीकृतिमें पुराने सधे मोटे सरकसी घोड़ेकी तरह सिर हिला उठी. बोली.

"जी हां, मिल सकता है, जरूर मिल सकता है. . इधर तशरीफ ले आएं, इस कमरेमें. जरूर आप ही का है—आप ही का. . .क्या, कौन शराब ? वेलेन्टाइन ? हमारे यहा है. वहीं ? जरूर लीजिए, जरूर ! और और लड़कियोंके बारेमें भी क्या हजूरकी कुछ फरमाइश है ?"

यारश्करने अन्यमनस्क भावसे अपना हाथ फैलाया,और कहा, "अगर यह जरूरी हो तो सही."

फिर इस कमरेमें, जिसमें गद्दंदार फरनीचर था और नीला शमादान, एकके बाद एक सब लडकियां आ पहुंची. उन्हें हाथ मिलाकर अभिवादन करनेकी आदत न थी. सो आते ही अपनी बाहें फैला कर अपना नाम लेती हुई इस-उस सबके पास पहुंचने लगीं—मेरा नाम मनिया है, मेरा किटी, मेग लुवी. वे किसीकी टांगो पर बैठ जाती, गर्दन पकडकर किसीका आलिंगन लेतीं, और सदाकी भांति कहतीं, "मेरे छोटे बाबू, कैसे अच्छे हो ? हमें नारंगी मंगा दोगे ?"

"पालीवाल, मुझे कुछ सेव ले दो, है ना ? और कुछ चाकलेट."

जरखरीद चेरीका चेहरा बनाए वीरा प्रोफेसरकी टांगोपर जा बैठी. बोली, "मेरे मोटे बाबू, मेरी एक सहेली है. वह बीमार है. यहां आ नहीं सकती. मैं उसे कुछ सेव और चाकलेट ले जाऊंगी. मुझे तुम ले दो."

"यह सहेलीकी गप-वप मत हांको. और तुम गहमुझपर ऐसे कैसे चढ़ी आ रही हो ? यहां ऐसे, जरा बराबरमें, कुर्सीपर ठीक-ठीक बैठो. हां, ऐसे. और हाथोंको फैलाओ मत, बन्द रक्खो."

"जो मैं यों न बैठूं तो!" वीराने अपनी देहमें अवली डालकर रिझानेके स्वरमें आंखोंको मटकाकर कहा, "अजी, तुम कैसे अच्छे हो."

लेकिन लखनपालने इस व्यवसायगत भिक्षावृत्तिके उत्तरमें ऐमाउडवानी ही की तरह सहास्य किन्तु गम्भीरतासे सिर हिलाया और दोहरा तिहराकर, विदेशी ढंगसे बोला, "हां, अम दे शकता ऐ, दे शकता ऐं, दे शकता ऐ...

वह बोली, "पीतम मेरे, मै बहेरा को बुलाकर कह देतो हूं, कि मेरी सहेलीको सेव और मिठाई दे आए !"

इस तरहकी याचना वृत्ति उनकी दैनिक चर्याका अंग बन गई थी. उन लडकियोमें इस तरहकी बच्चोकी जैसी होड़ और बदाबदी-सी रहती थी कि देखे, कौन अपने मर्दसे ज्यादा पैसा हथियाता है. अचरज यह है कि इससे उन्हे स्वय कुछ लाभ न था. बस इतना था कि सरक्षिका कभी थोडी बहुत शाबाशी दे देती थी. कभी मालिकिन स्वयं एकआध तारोफ का शब्द कह देती. किन्तु उनके निरानन्द, सपाट, व्यर्थ और हठात आमोदी जीवनमे इस भांतिकी हल्की भावुकता-भरी खटमिट्ठी बाते बहुत-सी थी. साइमन कॉफी, प्याले, शराबकी बोतल, फल, मिठाइया आदि लाया, और अपनी अभ्यस्त कुशलताका प्रदर्शन करते हुए दनादन डाटे खोलने, प्याले सजाने और उनमे शराब भरने लगा.

"आप पीते क्यो नहीं?" यारश्करने पत्रकार पवनंजयकी ओर मुड़कर कहा, "मुझे इजाजत दीजिए....यदि मे भूलता नही.. कुमार पवनजय, यही...?"

"जी हा."

"कुमार पवनंजय, मुझे एक प्याला कॉफी आपको भेट करने दीजिए. यह ताजगी लाती है. या फिर, यह लेफीइट ही लीजिए."

"जी, नही. इन्कार करनेके लिए आपको मुझे क्षमा करना होगा. पीनेकी मेरी अपनी बंधी हुई चीज है.. साइमन, लाओ तो..."

"कोग्नक, कोग्नक !" नूरी झट बोली.

"और एक नास्पाती भी." छोटी मनकाने तुरन्त कहा.

"जो आज्ञा, कुमार साहब, अभी लीजिए." आदरपूर्वक बिना शीघ्रताके साइमनने उत्तर दिया और झूमकर, कुछ बडबड़ाते हुए, बोतलकी गर्दनमे फंसी डाट उसने निकाली. लखनपालने साश्चर्य कहा, "यह पहला मौका है कि मैं सुनता हू, यामामें कोग्नक मिलती है. मैंने जब मांगी, मुझे सदा इन्कार मिला."

रामसरनने हंसकर कहा, "कुमार पवनंजय कोई जादूका मन्तर जानते

हैं."

"या शायद इनकी यहां खास इज्जत है." सुवेश बर्नवाल नुकीलेपनसे जोर देकर बोला।

पत्रकारने अन्यमनस्क भावसे बिना सर उठाये बर्नवालकी सफेद जाकटके नीचेके चमकदार बटनको मानो तनिक देखा, और कहा, "इसमें कोई तारीफकी बात नहीं है कि मैं बैलकी तरह पीता हूं, पर नशा नहीं होता. लेकिन मैं किसीसे झगड़ता भी नहीं. न किसीको चोट देकर छेड़ता हूं. स्पष्ट है, मेरे स्वभावकी यह भली बातें यहां प्रगट हैं. सो यह लोग मुझमें भरोसा रखती हैं."

"बहुत खूब मेरे दोस्त !" लखनपालने प्रसन्न होकर कहा. पत्रकारके इन थोड़ेसे शब्दोंमें जो एक विचित्र विमनस्कता, स्थिरता और सहज आत्म-विश्वासका भाव था उसने मानो लखनपालको आकृष्ट किया. लखनपालका चित्त प्रफुल्लित हुआ. बोला. "मुझे भी दोगे यह कोग्नक?"

"सहर्ष." पवनंजयने सरल सहृदयताके साथ कहा और उसने लखनपालको शिशु जैसे निष्कपट, सरल, सुन्दर, स्मितसे देखा. "तुम्हारी ओर मैं भी पहलेसे आकृष्ट हूं. पहले-पहल तुम्हें डालूसिंगकी जगह देखा. तो मैं तुरन्त समझ गया कि तुम भीतरसे वैसे कभी नहीं हो, जैसे ऊपरसे."

"अच्छा जी, छोड़ो. परस्पर प्रशंसा तो हो गई." लखनपालने हंसकर कहा, "लेकिन, यह अचरज है कि हम यहां एक बार भी नहीं मिले. निस्सन्देह, तुम यहां काफी आते-जाते रहे हो."

"काफी नहीं, अक्सर."

"कुमार पवनंजय हमारे सबसे खास मेहमान हैं." नूरीने जोरसे कहा, "कुमार पवनंजय तो हमारे भाई ही जैसे हैं."

"बक्की कहीं की." तिमिराने उसे चुप किया.

लखनपालने कहा, "यह अजीब बात है. मैं भी यहां आया करता हूं. क्या कहूं, तुम्हारे प्रति यहां सद्भाव देखता हूं उसपर ईर्षा करनेको जी

होना है."

"अजी यहाके सरताज ही जो है यह !" सुवेश बर्नवालने ओठोंको मानो चबाकर कहा. किन्तु इतने धीमे कहा कि पवनजय चाहे तो मान सके कि उसने कुछ स्पष्ट नही सुन पाया. इस पत्रकारको देखकर आरम्भमे सुवेशके जी मे एक प्रकारकी अतर्क्य तीव्र खुजलन-सी मच आई कि वह उसकी गिरोहके गुट्टके आदमियो जैसा नही है यह तो कोई बड़ी बात न थी पर सुवेशने जब देखा यही देखा था कि ऐसी मौज सैरके वक्त अगर कोई बाहरी आदमी इन लोगोके साथ लग भी लिया है तो वह इन नवयुवकोकी हठात प्रशंसा और खुशामद-सी ही करता और इनकी रजामे रजामन्दी दिखलाता रहा है. इनकी हसीपर वह हसता और इनके मजाकपर उनके साहस और उनके आत्म गौरव-शील भावपर खुद कुछ छोटा और पस्त पडके प्रसन्नता मानता रहा है. क्योंकि एक प्रकारकी कसक और कुढनके साथ अपने बीते हुए तारुण्य-के दिन रह-रहकर उसे याद हो आए है इस युवकोका अनुयायी, आज्ञा-नुवर्ती सा ही बनकर वह रहता आया है. फौजमे कालिजमे, जहा कही युवक थे सबका अनुभव ऐसा ही था इसलिए सुवेश आदी था कि बाहरी आदमीका अपने लोगोकी अनुगामिता करना देखे. पर यहा उसने यह नही देखा. उसने देखा पवनजय मानो इस नियमसे अपवाद है, तारुण्यके आगे वह न कुछ दबता है, न उसकी प्रशंसा करता है उल्टे उसमे इस तरुणाके प्रति एक प्रकारका शान्त, अस्पष्ट, शिष्ट उपेक्षाका ही भाव दीख पड़ता है.

इसके अतिरिक्त बर्नवालके जी मे छोटी-छोटी सूइयोकी चुभन जैसी गड़ती हुई ईर्षामय खीज और झुंझलाहट इस बातकी भी थी कि यहा दरबानसे लगाकर स्थूलकाया विपण्ण किटी तक सब इस पत्रकारके प्रति विशेष चिन्ता और विशेष समादरका भाव प्रदर्शित करते थे. जिस सलग्न भावसे वे सब उसकी बाते सुनती जिस तरह जय-मग्न, निश्चि-न्तभावसे तिमिरा उसका गिलास भरती, छोटी मनका जिस तल्लीन भावसे उसे नासपाती छीलकर देती—इस सबसे इस पत्रकारके प्रति इन

लड़कियोंके मनके भीतरका आदरभाव हठात व्यक्त हो जाता था. उसने देखा कि जोहराने अपने बराबर बैठे हुए लोगोसे सिगरटका बक्स मांगा. उनके पास था नहीं या क्या कि पत्रकारने उनकी यह असमर्थता देख पाई. उसने झट अपना बक्स फेंक दिया. उसे चतुरतासे लपककर जोहरामें जिस कृतज्ञ हार्दिक प्रसन्नताका प्रकाश खिल आया—उसे देखकर बर्नवालके चित्तको चैन नहीं मिला. कोई लडकी, जैसे औरोसे सब मांग रही थी, वैसे इस पवनंजयसे फल मिठाई आदि कुछ न मागती थी. 'इनका दलाल दीखता है!' जलकर बर्नवालने मन-ही-मन सोचा, किंतु जैसे भीतर-ही-भीतर उसे इसका विश्वास नहीं था. पत्रकार बहुत साधारण कपड़े पहने था. बेहद घरेलू-सा उसका वर्ताव था. फिर एक असन्दिग्ध आत्म-सम्मानका भाव भी उसमें था.

पवनंजयने फिर भी मान लिया कि जैसे उसने इस विद्यार्थीके धृष्ट अपशब्द नहीं सुने. बस पास पडे एक रूमालपर उसकी बंधी मुट्ठीकी उंगलियां तन आई, रूमाल एक तरफ फिक गया, और उसके पलक सुवेश वर्नवालकी दिशामें मानो कुछ झुके.

मेजपरके अपने गिलासको अपने हाथोंसे धीरे-धीरे घुमाते हुए शांत भावसे उसने कहा, "जी हां ! मैं यहा कुनबेके जैसा ही हूं. सोचिए तो. चार महीनेतक लगातार हर रोज मैं अपना खाना यहां इसी घरमें पाता रहा हूं."

"नहीं!—क्या आप सच कहते हैं ?" यारश्कर हंसा और उसे आश्चर्य हुआ.

"जी, हां ! बिल्कुल सच. यहाका खाना यों खराब नही है. तेल तो शायद ज्यादा होता है. लेकिन स्वाद बुरा नही है, और पेट खासा भर जाता है."

"लेकिन आप कैसे..."

"जी, हां ! क्योंकि मैं यहांकी मालिकिन अन्ना मरकामीकी लड़की-को दसवीं क्लासके लिए ट्यूशन पढ़ाया करता था. मैंने यह हिसाब कर लिया था कि मेरे मासिक वेतनमेंसे यह भोजन खर्च काट लिया जाए."

यारश्करने कहा, "खूब ! आपने ऐसा अपनी खुशीसे किया, या क्षमा कीजिए, आप मुझे धृष्ट न समझिएगा, या शायद आप...लाचार हो गए थ"

"जी, नही, बिल्कुल नही छात्रावासमें जितना पैसा लगता, अन्ना मरकानी उससे तिगुना तो लेती होगी कहना चाहिए, कि इस छोटी-सी अलग-थलग दुनियाके प्रति मै जरा अधिक निकट और अधिक घनिष्ट होकर और रहकर उसे देखना चाहता था"

यारश्करने प्रसन्न होकर कहा, "ओह, अब बात समझमे आती है. हमारे नए मित्र, इस सम्बोधनके लिए क्षमा कीजिएगा, जीवनमेंसे सामग्री इकट्ठी कर रहे हैं. और शायद कुछ वर्षोंमे हमारा सौभाग्य होगा कि हम समक्ष पाएगे एक नवीन ग्रन्थ.. "

सुवेश बर्नवाल थोरंगे एक्टरकी भाति बोला, "जी हा—वेश्यालयकी रात—मेरे अनुभव."

पत्रकार यारश्करके उत्तरमे कुछ कहे कि तिमिरा अपने स्थानसे उठी, मेजका चक्कर काटकर आई और झुककर बर्नवालके कानोमे चुपकेसे बोली, 'प्यारे बाबू, कृपया इन सज्जनको छेडो मत परमात्माकी सौगन्ध खाकर कहती हू कि तुम्हारा ही इसमे भला है"

"क्या कहा ?" बर्नवालने तन कर आवेशमें दो उगलियोसे चश्मेको नाकपर जमाते हुए कहा "वह तुम्हारा आशिक है ? तुम्हारा चहेता है ?"

"जो कहो उसीकी सौगन्ध लेकर कहती हू कि कुमार पवनजय हम मेसे किसीके साथ कभी नही ठहरे. लेकिन मै फिर कहती हू, अपने ऊपर कृपा करो और उन्हे तग न करो."

बर्नवालका मुह बनने लगा और घृणा व्यजक भावसे बोला, "हा, हा, क्यो नही देखो ना, तमाम-का-तमाम चकला उसकी तरफदारीपर है अब यह पक्की बात है कि यहाके शोहदे इसके साथी है, और इसकी उनसे गहरी छनती है."

तिमिराने धीमे स्वरमे कहा नहा, नही. यह नही है. पर बात इतनी

है कि कभी कहीं, यह उठ न पड़े, और तुम्हे गर्दनसे पकड़कर मुर्गीके बच्चे की तरह खिड़कीकी राह आस्मानमे न उडा दे कि फिर जाने कहां धरती पर तुम फूटकर गिरो. इससे पहले ऐसी दो-एक आस्मानी उडान हम देख चुकी हैं. परमात्मा न करे, फिर किसीकेसाथ यह बीते. यह अच्छा नही लगता और चोट लगनेका भी डर है."

बर्नवाल तिमिराकी ओर हाथ फेंककर चिल्लाया, "निकल, दूर हो यहासे कम्बख्त !"

"अच्छा, बाबू, मे जा रही हू." तिमिराने विनम्रतामे उत्तर दिया और हल्की चालसे उसके पाससे चली आई.

इस समय पलभर स्तम्भित हो सब बर्नवालकी तरफ देखने लगे.

लखनपालने बर्नवालको धमकाया, "जुबानको लगाम दो, हूश, लगाम." और पत्रकारकी ओर मुडकर निवेदन किया "जी हा आप आगे कहिए. जो कह रहे थे आप बडा दिलचस्प है."

पत्रकारने शात और गम्भीर भावमे कहना आरम्भ किया, "जी नही, मे सामग्री एकत्र नही कर रहा हू. पर यहाका तथ्य, विकराल है, विपुल, भयकर, भैरव, लोमहर्ष हमने बडे-बडे शब्द गढे है. हम उन्हे कहते हैं और गौरवान्वित होते हैं हम कहते है, 'ओह– जीवित नारी-मासका व्यवसाय !' 'दासी प्रथा !' और, 'ओह, मानवताके शारीरिक और नैतिक स्वास्थ्यमे घुनकी भाति लगी महामारीकी तरह सवार यह वेश्यावृत्ति !.' .इसी प्रकारके और भी शब्द पर मे कहता हू, इनमे दम नही है. ऐसे शब्दोके जमघट बहुत हुए सब उनसे ऊबे है...नही वे सब हलके हैं उनमे यथार्थका आतक नही वह विभीषिका नही.. अरे विभीषिका देखनी हो तो यहाकी छोटी-छोटी रोजमर्राकी चीजे देखो, बाते सुनो. कैसे बहीके हिसाबकी तरह, मानो कुछ बात ही न हो, घण्टों—मिनटोंकी दरसे प्रेमके मोल-तोलका सौदा यहा पटाया जाता है. सहस्त्रो वर्षोसे चली आती हुई सभोग-ज्ञानको विज्ञान और संभोग-कलाको कलाका रूप देनेवाली यह प्रणाली-बद्ध सस्था अपनी रग-रगमें अब पक्की ठोस हो गई है. जो पवित्र हैं उन व्यवहारोंमे पवित्रताका भाव नहीं

रहा. जो कलुष है, उनमे कालुष्यकी चेतना नही रही, जिनका प्राकृतिक आवरण लज्जा है वे कृत्य बेहयाईके साथ उघडे हुए. युग-युगका सचित काठिन्य काम-काममे बात-बातमे यहां व्याप गया. गुस्सा, हया, शर्म, बोझमे जम गये, या कुचलकर खो गए. अब रह गया कोरा व्यवसाय. एक सौदा ठीका, परचूनियेकी-सी दुकानदारी. एक पसरहट्टा खुला है—लो, जो ले ..सबसे डरकी बात यह है कि इसमे अब डरकी बात ही कुछ नही समझी जाती. बस यह भी एक धन्दा है, और इस धन्देकी भी अपनी घाते है. हा, शिक्षालयो जैसी सस्कृतिके स्वादके दिखावेका, और फैशनेबिल सोसाइटीम प्रचलित फैशनके अनुकरणके ख्याल और रगका लेप यहा है."

"हा" जाने कहा अनिमेष दृष्टिसे देखते हुए लखनपालन समर्थन किया, 'बिलकुल यही बात है."

पवनजय उसी दुर्गम्य भावसे अपने गिलासमे देखते हुए बोला, "हम अखबारोके अग्रलेखोम दुखिया आत्माओका विलाप सुना करते है और सुधारवादी महिलाए भी आगे आ रही है. वे जोर-शोरसे काम कर रही है मेजको मुक्कोसे पीटकर और चीखकर वे कहती है—'ओह, कानून!' 'यह अधो दशा!' और 'स्त्रियोकी यह अधम स्थिति!' ओह, नारी-मासपर य फलनेवाले जन्तु! ये नदीदी जोके!, य मनुष्यताम लगे हुए कीट जो इस व्यवसायमेसे खूनका पैसा चूसते है!' लेकिन शोर मचानेम न कोई डरेगा न कुछ बनेगा तुम जानते हो कहावत है, 'थोथा चना, बाज घना.' डरावने शत्रुसे भी डरावनी, सैकडो गुना डरावनी कोई छोटी-सी बात होती है जो सिरमे हतौडेकी तरह ऐसी लगती है कि आदमी सन्न रह जाए इस साइमन ही को लो, यह जो यहाका दरवान है. तुम्हे सूझेगा, प्राणी इससे गया हो नही सकता चकलेके टुकडोपर रह रहा है, निरा पशु है, गणिकाओकी जूठनपर जीता है, और फिर उन्हे कूटता है. लेकिन क्या तुम अनुमान कर सकते हो कि हम दोनो किस आधारपर मिले और मित्र बन गए? आत्मा, परमात्माकी बातोपर, सृष्टि और पुनर्जन्मकी समस्याओपर, बाइबिलपर! वह असाधारण धार्मिक

है. मै उसे उकसाया करता, और वह आसूभरी आंखोसे मुझे वह अंतिम समाधिवाला गीत गाकर सुनाया करता .

आओ, भाइयो, हम उससे अब बिदा ले,

और उसे मट्टीकी गोदमे, शातिके साथ सोने दे

"नही? जरा सोचो तो...पर मै कहता हू, आदमी विचित्र है. तिस पर रूसी आदमी. एक रूसी आत्माम ऐसे तीव्र विरोधी भाव एक साथ रह सकते है "

रामसरनने कहा, "हा, उस तरहका आदमी अभी घुटने टेककर, आंख मूंदकर, भगवत प्रार्थना करता होगा, आसू आ टूटेंगे, वह विह्वल हो रहेगा. फिर तभी चुपचाप उठकर जाएगा और गर्दन काटकर एकका खून कर आएगा, आकर हाथ धोकर सामने फिर दीपक जलाने बैठ जाएगा !"

"जी, हा ! जहा पापोन्मुख इस दुर्जय वासना और उत्कट धर्म-प्राणताका एक जगह सयोग होता है, उसमे अधिक निगूढ रहस्यमग, विश्वमे और क्या वस्तु होगी ? अपने मनकी बात मै कहू. मेरी घण्टो साइमनसे बात होती है पर, जब अकेला उससे बात कर रहा होता हू, अकेला उसकी उपस्थितिमे होता हू, तो कभी-कभी घोर भीतिका भाव मुझपर छा जाता है मानो मै एक गहन, अगाध गर्त्तके ठीक मुखपर हू, जिस सहारे खडा हू वह खोखला है, जीर्ण है, और काप रहा है नीचे घना अधेरा मुह फाडे उबल रहा है, और गर्तके तलम मापसे जाने क्या क्या रेग रहे है जो दीखते नही. फिर भी दीख रहे है. पर फिर भी मै जानता हू कि वह साइमन सच्चा धर्मप्राण प्राणी है, और मुझे विश्वास है कि वह जरूर साधु बनेगा. तब उसका-सा आदर्श तपस्वी और उदार साधक दूसरा न होगा. मै नही जानता कि तब उसकी आत्मामे घोर धार्मिक उन्माद और कराल बर्बरताका समन्वय किस विलक्षण भावमे घटित होगा और उसका परिणाम जाने कैसा आतककर, विस्मय पूर्ण और लोमहर्ष नही होगा."

यारश्करने अपनी आखोके इशारेसे लडकियोकी ओर प्रच्छन्न सकेत

करते हुए कहा, "फिर भी देखता हूं, अपनी आलोचनामें वर्णित पात्रोंके प्रति आप दया नहीं दिखाते !"

"अहं, इससे क्या होता है. हमारे सम्बन्धोमे अब कोई गर्मी नहीं है, न अशान्ति."

विनय पालीवालने बातका छोर पकड़ा, पूछा, "क्या मतलब ?"

पत्रकारने मुस्कराकर उत्तर दिया, "यो ही, मतलब क्या, कहनेकी कोई खास बात नही अंह, छोड़िए भी. मि० यारश्कर, अपना गिलास जरा आगे कीजिएगा ?"

किन्तु नूरी है कि मुह बन्द नही रख सकती. आगे बढ़ आकर जल्दी, जल्दी बोली, 'मतलब पूछते हे ? . मतलब यह कि कुमार पवनंजयने एक दिया था उसके मंहपर सब कुछ यह ननकाकी बदौलत था. एक बुड्ढा-सा ननकाके पास आया...ननका उसके मन चढ गई थी ?...रात भर रहा और ननकाको जाने किम किस तरह नही सताता रहा...सो वह रोने लगी, और भाग आई."

पवनजय रूक्ष भावसे बोला, "छोडो छोड़ो नूरी. कुछ बात भी है, जो बक रही हो ?"

तिमिराने जोरसे कहा, "चुप रह री तू, चुप."

पर जब कह चली, तो नूरीको चुप कौन करे.

'ननका कहती थी, नही मैं उसके पास नही रहूंगी. मेरे टुकड़े-टुकड़े कर दो, मैं नही जाऊगी. उसने मुझे सारा थूकमें सान दिया है. सो साहब, बुड्ढा पहुचा दरबानके पास और दरबानने लेकर ननकाको पीटना शुरू किया. तब कुमार पवनंजय मेरे लिए घरको चिट्ठी लिख रहे थे. उन्होने ननकाकी चिल्लाहट जो सुनी..."

पवनजयने कहा, "जोहरा उसका मुंह बन्द कर दो."

नूरी कहती रही, "चिल्लाहट जो सुनी कि एकदम उठे और ऐसा लपककर उसे लिया कि .."

नूरीका वाक प्रवाह सहसा ही रुक गया, जोहराने आकर हथेलीसे उसका मुंह बन्द कर दिया था.

सब हंस पड़े. इस हंसीके शोरमें सुवेश बर्नवाल घृणा व्यन्जक दृष्टि से बडबड़ाकर बोला, "क्या कहने ? यह बिगड़े रईसजादे बहादुर भी हैं !"

उसे खासा नशा चढ़ गया था. वह दीवारका सहारा लेकर अद्भुत हुलिएमें खड़ा था. और सिगरेटको मुंहमें घुमा-घुमाकर चबा रहा था. यारहकरने जिज्ञासा भावसे पूछा, "और वह ननका कौन थी ? क्या वह है यहां ?"

"नही वह यहां नहीं है. नन्हीसी, बैठी नाककी, बेचारी एक लडकी थी, जो हंसती फिरती थी, और झट चहक भी पडती थी." कहते कहते पत्रकार अकस्मात खिलखिलाकर हंस पड़ा, "मुझे क्षमा करें...यों ही कुछ ख्याल आ गया." हंसते-हंसते वह तफसील देता बोला, "अभी अभी उस बुड्ढे आदमीकी पूरी तस्वीर मेरे सामने आ गई थी. बिचारा छज्जे मेंसे डरके मारे जल्दी जल्दी भागा जा रहा है, कपड़े और जूते बगलमें दबे हैं!.. बिल्कुल भद्र, सभ्य, इज्जतदार आदमी लगता था, चेहरा कुलीन मैं उसे जानता हू. यहीं कहीं मुलाजिम है. क्या असम्भव, आप सभी जानते हों. सबसे मजेदार तो वह तब लगता था, जब खतरेमें बाहर एकदम ड्राइंग रूममें पहुच गया. देखिए तो — कुर्सीपर बैठे हैं, पतलून पहनना चाहते हैं, पर पैर वहा पडता नहीं जहां पडना चाहिए, और आप हड-बोंग मचा रहे हैं. "यह बे-इज्जती है ! यह बेहूदापन है, बेहयाई. अब मैं हूं कि एक-एककी खबर लूंगा...कल आकर कहूंगा, निकलो, एक-एक यहांसे निकल जाओ. चौबीस घण्टेके अन्दर कोना-कोना खाली कर दो!" उसकी यह दयनीय दशा, और चुनौती और धमकीसे भरी यह चिल्ला-हट ऐसी अजीब लगती थी कि सिट पिटाया साइमन भी जोरसे हंस पड़ा . अब अगर साइमनकी बात आप पूछें...तो मैं कहूगा कि जीवन पहेली है. उसमें जाने क्या-क्या-नहीं है. ऐसी-ऐसी विलक्षण बातें मिलती हैं, कि स्तब्ध रह जाना पडता है. हम हृदय हीनताके चाहे जो उदाहरण गढ़ें, चाहे जितनी कल्पनाएं दौड़ाएं, पर साइमनको नहीं पा सकते. वह अपनेमें एक ही है. जीवन भी कैसा विविध, विचित्र, और अगाध है. या

इस अन्ना मरकानीको ही लो, जो यहांकी मालकिन है. नर-मांस भोजी कहो, बाघन कह दो, जोंक कहो, जो जी आए उसे कह दो... पर इससे वातसल्य मयी माता दूसरी न होगी. उसकी एक लड़की है बर्डी. हाई स्कूलकी दसवी क्लासमे पढ़ती है. क्या हम जानेंगे कि कितनी कोमल चिन्ता, कितना सलग्न ध्यान वह रखती है इस बातका कि किसी संयोगसे बेटीको इस पेशेकी बातका पता न चल जाए. जो है सब बर्डीके लिए. जो करेगी बर्डीके लिए. उसके सामने वह स्वयं बोलती तक नही. डरती है, कोई कही खराब शब्द उसके मुहसे न निकल जाए. सब देखी-खाई और सब भुगती हुई होनेपर भी इस औरतकी जान अपनी बेटीके सामने नहीं नें हो रहती है बेटीकी निगाहोपर जीती है. उसके सामने झुकी-दबी चलती है. सब कहना उसका करती है. पुरानी छायाकी तरह, वफादार सधे कुत्तेकी तरह, नौकरकी तरह वह अपनी बेटीके सामने रहती है. इस व्यवसायमे उसे कड़ी मेहनत पडनी है, उमर भी पूरी हो चली है. लेकिन नही, अभी नहीं. अभी एक हजारकी और जरूरत है. और फिर और, और! सब बर्डीके लिए. सो बर्डीके पास घोडे है, बर्डीके पास एक इगलिश संरक्षिका है, बर्डी हरसाल विदेशोकी सैर करने जाती है. बर्डीके पास बीसियों हजारके हीरे और अगूठिया है !—किसकी बला जानती है कि यह हीरे किसके है, कहासे आए है ? क्या आप एक साथ इस ममता और निर्ममताकी कल्पना कर सकते है ? आशा और अनुमानकी बात नही, मै खूब पक्की तौरपर जानता हूं, कि यदि बर्डीको खुश करनेकी बात हो, यदि उसकी उंगलीमें तनिक चोट आ जाए और उसे ठीक करने के लिए जरूरत हो, तो यह अन्ना मरकानी बिना आंखका पर हिलाए हमारी बेटियों बहनोंको निस्संकोच बेचकर पापके गढ़ेमे धकेल देगी और हमारे बच्चोंमे सिफलिस फैला देगी. तनिक सोचिए उस परिस्थितिकी विषमताको जहां यह सम्भावना सम्भव है. क्या ? आप कहते हैं, पिशाचिनी ! मैं कहता हूं, वहां भी मूलमें क्या वही प्रशस्त, अतर्क्य, अन्ध स्वार्थमय वात्सल्य नहीं है कि जिसके लिए समाजमें अपनी मातामोंको हम माता कहते हैं—उनकी प्रतिष्ठा करते हैं !"

"ख़ूब मेल मिलाया." दांत भींचकर बर्नवाल बोला.

"क्षमा करें, पर मैं तुलना नहीं करता. मैं भावनाओंके मूल उद्‌गमकी अपेक्षा एक व्यापक तत्वकी बात कर रहा था. मैं पशु श्रेणीके प्राणियोंमेंसे चाहता तो माताके इस आत्मोत्सर्ग शील प्रेमके उदाहरण दे सकता था. मैं देखता हूं, हम जटिल क्लिष्ट विषय ले बैठे हैं. आइए, छोड़िए इसे."

"नहीं, नही." लखनपालने सानुरोध कहा, "कहे चलो. मुझे अनुभव होता है कि तुम्हारे भीतर कुछ है, एक गर्भस्थ विचार, जो सोने-सा ठोस है और भारी और सप्राण."

"और सरल. अभी उस रोज एक प्रोफेसरने मुझसे पूछा कि कोई साहित्यिक उद्देश्य लेकर ही तो यहांके जीवनको मैं देख नहीं रहा हू? मैं यही कह सका. कि मैं देखता तो हूं, पर धारण मुझसे नहीं होता. अभी मैंने उदाहरणके लिए साइमनकी ही बात कही. मैं खुद नहीं जानता कैसे, पर महसूस करता हूं कि उसके भीतर भी जीवनके सत्यसे निकली एक दुर्विजेय, भयावह शक्तिका प्रकाश है. पर उसे बता सकूं, पकड सकूं, दिखा मकूं—सो मेरा बस नहीं. उसके लिए एक उस प्रगाढ़ मौलिक प्रतिभाकी आवश्यकता है जो थोड़ी-सी लकीरोंसे छोटी नन्हीं बातोंके वर्णनसे हल्केसे स्पर्श भरसे इस भयावह सत्यको ऐसा स्तूपाकार मूर्त्तरूपमें खड़ाकर दे. कि पाठक दहलकर सन्न हो जाए, भूल जाए कि वह उस विकरालताके समक्ष मुहं बाए खड़ा है. लोग विकरालता शब्दोंमे ढूंढते हैं, उक्तियोंमें, चिल्लाहटमें. उदाहरणके लिए, समझो मैं अभी कहींका वर्णन पढ़ रहा हूं. कहीं पुलिसकी दौड़ पहुंची है, या जेलमें कैदियोंको संगीनोंकी नोकपर क़ाबू किया गया है, या जनतापर लाठी चार्ज हुआ है. वहां पुलिसके सिपाहियोंका वर्णन है. शासन दण्डके ये सूत्रधार, शान्ति और कानूनके जीवन-रक्षक, ये बहादुर कैसे लहूकी नदीमें, घुटनों तक डूबे, बढ़ते चले जा रहे हैं. आदि-आदि.. ऐसे ही तो लोग लिखते हैं न ? बेशक इससे चोट पहुंचती है. सनसनी होती है, रोष होता है. पर यह सब प्रभाव मस्तिष्क तक पहुंचता है, हृदगमें जैसे एक साथ कोई

नश्तर-सा नही लग जाता. अब, मानो मैं चला जा रहा हूं. सड़कमें भीड़ इकट्ठी है. देखता हू, बीचमे एक पांच वर्षकी लड़की खड़ी है. समझ लो वह कही मा-बापसे बिछड़ गई और भटक गई है. या समझो, उसकी मा ही उसे छोडकर चली गई है. उस लड़कीके सामने एक पुलिसका आदमी पजोपर बैठा उससे पूछ रहा है, मुन्नी, बिट्टी तेरा नाम क्या है ? कहाकी है बिटिया तू ? अब्बाका क्या पता है, और अम्मीका ? इत्यादि. उस बेचारेके पसीना आ उठा है. टोपी सिरके पीछे पड गई है. उसकी भबरी मूछोंवाला चेहरा, खिन्न करुण हो रहा है. और वह बडी मीठी-मीठी प्यारी बोलीमे नन्नीसे बोल रहा है. और लड़की घबरा रही है. रोते-रोते उसका गला पड़ गया है. वह शरमा रही है, डर रही है, बस सुबक रही है. फिर आप समझ सकते है, पुलिसवालेने क्या किया ? वह चारो हाथ पाव धरतीपर टेकपर बकरीका बच्चा बन गया और लडकीसे नन्हेसे मैमनेकी बोली बोलने लगा. बीच बीचमें लोरी गाने लगता. मैने इस सुन्दर दृश्यको देखा, और सोचा, आध घण्टे बाद यही आदमी आख चढाकर, डण्डा तानकर, निर्दयतासे किसी भी ऐसे आदमी-को पीटने लगेगा, जिसे न उसने पहले कभी देखा है, न जिसके अपराधका उसे कुछ पता है उस समय मैं सहसा अवसादसे खिन्न, उदास, पस्त हो गया मस्तिष्क ही नही मानो मेरा सारा चित्त किसी बोझसे दबकर भीतर-ही-भीतर बैठने लगा ऐसी अनर्थ बेबूझ पहेली है यह जीवन. लखनपाल लो थोडी कोगनक लो ?"

लखनपालने अक्समात प्रस्ताव किया, "यदि एक दूसरेको हम 'तू' से पुकारें तो ?"

"हा, हा. पर अब भाई यह और ज्यादा नही...लो, तुम तो पूरे प्यारपर उतर आए.. छोड़ो-छोड़ो ! लो, यह प्याला तुम्हारे स्वास्थके नामका...अच्छा दूसरा उदाहरण लो. मैंने एक फ्रेंच पुस्तक पढ़ी. फांसी की सजा पाए एक आदमीके विचार और भावनाओका उसमे वर्णन था. वर्णन श्रेष्ठ था, प्रबल, संगीतमय, ज्वलंत और प्रोज्वल. पर मैंने पढ़ा और पढ़ता गया...और सच, कोई गहरी छाप मुझपर उसकी नहीं बैठी.

न क्रोध आया, न आवेश. एक शांत, निरानन्द, अलस, थकानका भाव ही मुझे हुआ. किन्तु अभी कुछ दिन हुए कि अखबारमें फ्रांसके एक खूनीकी फांसीका हाल मैंने पढ़ा. कैदी तैयार हो रहा था. कपड़े-वपड़े पहनकर जायगा और फांसी लटक जाएगा. कि वहीं था एक अफसर. कैदी बिना मौजे पहने नंगे पैरोंपर जूता चढ़ाने लगा. अब देखो उस चण्डाल अफसर को ! उसने पूछा, "क्यों, मौजे नहीं ?"

"कैदीने उसे जरा देखा, जैसे सोच रहा हो, फिर पूछा, "वह जरूरी है ?" तुम समझ सकते हो, यह दो शब्द कारतूसकी तो गोलीसे मुझे चीरते हुए चले गए. कानूनके जोरसे दी गई मौतकी सजाकी विभीषिका, उसकी मूर्खता और व्यर्थता एकदम चित्र लिखी-सी मेरे सामने काली काली उठ आई...मौतकी बात है तो एक और किस्सा भी लो. एक मेरे दोस्त मर गए. फौजमें कप्तान थे, आवारा और भार्केके शराबी. लेकिन दिल हीरेका था. मैंने वैसा जवाहर आदमी नहीं देखा. जाने क्यों हम लोग बिजलीका कप्तान उन्हें कहते थे. उनका पड़ौसी था मैं. और यह काम मेरे जिम्मे पड़ा कि कपड़े-वपड़े पहनाकर लाशको ठीक कर दूं. मैंने कपड़े लिए और उसपर बैज लगाने लगा. एक डोरी होती है, उसे इन बिल्लोंके बीचमेंसे 'निकालकर कालरके दो छोटे-छोटे छेदोंमें लेकर बांध देते हैं. यह सब कुछ तो मैंने कर लिया. बस अब हल्का फन्दा देकर उसे हिलगा देना बाकी था, या क्या कि मैं खासी परेशानीमें हो आया. इसी असमन्जसमें, एक बेहद सीदी साधी बात मुझे सूझी. सोचा, मामूली-सी गांठ क्यों न दे दूं ? सीधी भी है, जल्दी भी बन्ध जाएगी. और आखिर फंदा या गांठ, बात तो एक ही है. उसे कोई फिर तो खोलने बैठता है नहीं. बस मनमें इस सूझका उठना था कि एक साथ मौत मेरे सारे जी में, बदनमें बिजली-सी कौंध गई. अब तक कप्तानकी पथराई आंखोंमें देख रहा था, ठण्डी देह छू रहा था, पर मौतकी ऐसी घनिष्ठ अनुभूति मुझे नहीं हुई थी. यह गांठकी बात आई कि उस अवश्यंभावी, अन्तिम, समाप्तिकी अनुभूति छनमें मेरे व्यक्तित्वके रोम-रोममें समा आई, अब सब लुप्त हो जाएगा, न शब्द रहेंगे न काम, न इच्छाएं, न तुम, न कोई, न

कुछ. मै, उदास, झुककर मानो धरतीपर गिरनेको हो गया...इसी तरह की सैकड़ों बातें कह सकता हूं जो छोटी हैं, पर दहला देंगी. इस गत महा युद्धको ही लो. लोगोंने क्या नहीं सहा ? क्या नहीं देखा ?... लेकिन इन घटनाओंका क्या निर्देश है, क्या उद्देश्य ? मैं निर्णयपर पहुंचना चाहता हूं और मेरे मनमें एक बात उठती है. हम ऐसी छोटी छोटी बातोंको राह चलते देखते हैं और अंधे होकर, उपेक्षासे मानो उन्हें कुचलकर, निकलते हुए चले जाते हैं. लेकिन आएगा एक कलाकार कि उन्हें सम्भालकर छुएगा और चुनकर उठा लेगा. वह फिर उन्हे कौशलसे बुनकर जीवनका ऐसा चित्र, ऐसा नमूना पेश करेगा जो मनोज्ञ होगा पर दुर्द्धर्ष! उसे देखकर हम चीख उठेंगे, कहेंगे—'हे राम. यह तो सब हमने भी अपनी आंखोमे देखा था. पर हमें कुछ भी दिखाई नही दिया था. हमारे भीतर यह कुछ भी नही पहुचा था !' किन्तु हमारे रूमी भाषाके कलाकार दुनियामें सबसे सच्चे हार्दिक कलावादी है, फिर भी जाने क्यों अबतक इन वेश्याओं और वेश्यालयोंको देखा—अनदेखा छोडते रहे हैं? ऐसा क्यों हुआ, इसका जवाब मेरे लिए कठिन है. शायद उन्हें कुछ संकोच हो. शायद किसी सोधका या सोधियोंका विचार हो. या डर हो, हमें लोग अश्लील लेखक न कहे. अथवा आशंका कि लेखककी रचनाके अंतर्गत वर्णनोकी अपेक्षासे लोग उसके व्यक्तिगत जीवनका अनुमान न लगाने लगे और फिर उसकी निजी मर्मगत गोप्य बातोंकी कुरेदबीन और छीछालेदर करे. या शायद अवकाश उन्हें कम था. या कहो आत्म विसर्जनका भाव उनमे इतना भरा न था, न इतना आत्म विश्वास, कि एक बार आंख मूदकर इस अंधेरे गर्तमें कूद पड़े और, और तह तक पहुंचकर बिना पक्ष, बिना उपाख्यान, बिना व्यर्थ दया, सीधे-सादे ज्यों-के-त्यों रूपमे यहांके रोजमर्राके थर्रा देनेवाले सत्यको चित्रित करे. जब उस कलाकारका उदय हो तब बने वह पुस्तक जो दुनियाको कंपा दे, जो विपल्व कर दे."

रागसरनने विमनस्कतासे कहा, "लेकिन पुस्तकें तो लिखी जा रही है."

उसी अनमनस्कतासे पवनंजयने भी दुहराया, "हां, लिखी जा रही

हैं, किन्तु या तो वे मिथ्या हैं, या बालकोंको, बच्चोंको, बहला रखनेवाले थियेट्रिकल खिलवाड़. उनमें छल है, अथवा अलंकार. वे ऐसी प्रच्छन्न, गूढ़, रूपक-बहुल होती है कि उनका भाव, भावी सन्ततिके सन्त जन समझें तो भले समझें. पर किसीने उस वास्तव जीवनको नंगे हाथोंसे नहीं छुआ. स्फटिक-सा पवित्र हृदय, और असाधारण प्रतिभा लेकर एकबार एक महान् लेखक* उसके तट तक गया, और मानो उसकी आत्मामे सूक्ष्म-दर्शी दर्पणकी तरह वह सब कुछ प्रतिबिम्बित हो रहा जो बाहरसे दीख सकता था. लेकिन न वह मिथ्या कह सकता था, न लोगोंको उद्विग्न करना वह चाहता था. वह व्यक्ति था जो मानो साइमनको ऐसे देखता जैसे बिचारा एक जन्तु, एक प्राणी, एक अंक. पर वह सोचता, इसके भी एक मां है, इसमें भी कहीं प्रेम है. वह अपनी अन्तर्यामी, सहृदय, सही सच्ची निगाहसे इन गणिकाओंको देखता. ज्यों-का-त्यों खींचकर अपने मस्तिष्कमें धारण करता. पर जो उसने नहीं जाना, वह उसने नहीं लिखा. इस लेखकने अपनी सरल सत्यवादिता और कठोर, मर्मग्राही, ईमानदारीमें कई बार निम्न वर्गके किसानको भी अपनी कलमसे छुआ. लेकिन उसने अनुभव कर पाया कि इन लोगोकी बोली, इनके भीतरकी बातें, इनकी आत्मा एकदम उसके लिए अन्धेरी है, अज्ञेय है.. और वह सौजन्य पूर्वक मानो उस अज्ञेय आत्माकी प्रदक्षिणा करके रह गया. पर जो कुछ उसने देखा उस अमूल्य निधिको वह जगह-जगह भांति-भांतिके अपने पात्रोंके मुंहसे कहला कर इन्द्र धनुषकी भांति खीचकर वह हमारे लिए रख गया. मैंने जानकर यह विषय छेड़ा है. अब लोग जासूसों-के बारेमें लिखते हैं. वकीलो, इन्सपेक्टरों, लेक्चरारों, अटरनियों, पुलिस के अफ़सरों, विषया सक्त, और प्रेमलिप्त और भद्र कमनीय महिलाओं आदि-आदिके बारेमें लिखते हैं, और ईश्वरकी शपथ, कमाल लिखते है. लेकिन आखिरकार ये सब लोग क्या है ?— मनुजताकी गन्द हैं, मैल हैं, जो इसलिए ऊपर आ गये हैं कि हल्के हैं. उनका जीवन जीवन नहीं है, विकृत-संस्कृतिका विभ्रम है. रंगीला, पर अवास्तव कृत्रिम, व्यर्थ.

*शायद लेखकका अभिप्राय है, चेखव.

किन्तु दो वस्तु हैं, जो पत्थरकी चट्टानकी भांति सत्य हैं, अतृतीय, और स्वयं मानवता जितनी सनातन और युग प्रतिष्ठ ! एक गणिका, दूसरा किसान. और इन दोनोंके बारेमें हम कुछ नहीं कहते. उनके कुछ कुतरे, कटे, भ्रष्ट, अतिरंजित वर्णन हमारे साहित्यमें हैं, और बस. पूछता हूं, इस अमानुषी व्यभिचारके रौरवमेंसे खींचकर हमें रूसी साहित्यने क्या दिया है ? *बस एक—सोनेस्का मार्मलडोवा. दलित, दास और अछूतके विषयमें हमें ओछे, झूठे, और मीठे गद्य काव्योंसे अधिक क्या दिया है? हां एक ग्रन्थ है. और कुल एक अकेला ग्रन्थ है जो दुनियाकी महान रचनाओंमें महान है, जिसके सत्यकी शक्तिसे लोगोंके रोंगटे खड़े हो जाते हैं, सांस बंधे रह जाते हैं. आप समझ तो रहे होंगे, मैं किसकी बात कह रहा हूं ?..."

धीमेसे लखनपालने कहा† "वही 'डंक गडा नहीं कि फिर मरे ही निस्तारा है."

"हां !" पत्रकारने कृतज्ञ स्निग्ध भावसे उसे देखा.

"लेकिन सोनेश्का" यारश्करने विश्वस्त स्वरमें कहा, "सोनेश्का तो एक असाधारण मनःस्थितिके टाईपकी द्योतक है. एक प्रकारकी मनोवैज्ञानिक पहेली, शिल्प-चमत्कार."

पवनंजय जो अबतक अन्यमनस्क हलकी सांससे मानो जबरदस्ती बोल रहा था अब गरमा उठा, "बहुतेरी बार मैंने यह बात सुनी है, सैकडो बार. और यह झूठ है. इस अश्लील भ्रष्ट पेशेके नीचे, इन भद्दी वाहियात मा-बहनकी गालियोंके नीचे, घृण्य मनहूस, बेहूदा, बकवासके पीछे भी मैं कहता हूं, कुछ है. वही सोनेश्का मार्मलडोबा अब भी

---

*डास्टविस्कीकी पुस्तक Crime and Punishment (पवित्र पापी.) की नायिका.

†टाल्स्टायकी पुस्तक The Power of Darkness (पाप और प्रकाश) पुस्तकका उपशीर्षक है एक रूसी देहाती कहावत जिसका यह भाव है.

जीवित है. रशियन वेश्याका नसीब कैसा दयनीय है, संकटमय, रक्त-रंजित. कैसी दुर्घट बेहूदी है उसकी वृत्ति. रूसी खुदा, रूसी उदारता और निरपेक्षता, पतनोन्मुखी रूसी निराशा, रूसी संस्कृतिकी हीनता, रूसी आडम्बर, रूसी साहिष्णुता, रूसी बेहयाई, मानो यह सभी कुछ एक दूसरेको चुनौती देता यहां मिलकर इकट्ठा हो गया है. अरे, जिन्हें देखते ही संयम संकोच ताकपर रख साधिकार हाथ पकड़कर तुम सीधे पलंग की तरफ खींच चलते हो, उन्हें एक बार जरा गौरसे देखो तो. वे सब निरी बच्ची हैं, बच्ची. अरे, किसीको उनमें ग्यारह वर्षसे बड़ी न समझो. किस्मतने उन्हें यहां ला पटका है और वे इस व्यभिचारके अखाड़ेमें मानो परियोंकी और खिलौनोंकी अद्भुत दुनियामें रह रही हैं. अनुभवसे अनुभवी वे नहीं होती, विकसित वे नहीं होतीं. बेचारी वे विश्वासी जीव, खिलती खातीं, दिखावेके छोटे-मोटे शौकोंमें मस्त अपने रहती चली आती हैं. इन्हें पता नहीं, अब क्या कर रही हैं, और आध घण्टे बाद जाने क्या करेंगी. निरी बच्ची जो हैं. तितलीके पर जैसा खुशनुमा अबाध यह बचपन मैंने उन गत-यौवना बूढ़ी वेश्याओंमें भी देखा है जिन्होंने ऊपरी जिन्दगीके सब साल इसी कीचड़में गुजारे हैं, रीढ़ जिनकी झुक गई है, गाल पिचक कर मिल गए हैं. फिर भी पीड़ाके प्रति करुणा, पापके प्रति दया, उनके भीतरके ये कोमल भाव बिल्कुल मिट नहीं गए हैं...अभी देखो..."

पवनंजयने जितने बैठे थे सबपर धीरेसे निगाह फेरकर देखा और अकस्मात निराशामें हाथ उठाकर थके स्वरमें कहा, "खैर, ओह ! मैं कितना बोला हूं ! आज तो मैं दसके बराबर बोल लिया.. और ब मत-लब."

यारश्करने कहा, "लेकिन कुमार पवनंजय, सच, यह सब तुम्हीं क्यों न शब्दोंमें भरनेकी कोशिश करो ? तुम्हारा मन पूरी वेदनासे इस समस्यामें पड़ा हुआ है."

पवनंजयने उदास हंसीसे कहा, "मैंने कोशिश भी की थी. पर नतीजा कुछ न हुआ. मैंने लिखना शुरू किया कि 'क्या' 'कैसे', 'क्यों' में उलझ रहा. मेरे विशेषण ओछे पड़ते, शब्द ढीले. वाक्योंमें जीती आग आती नहीं

थी. सब मिलकर भाषा नीरस, सपाट, सूखी घास-सी बन जाती है. टेरेखोफ़का नाम आप जानते होंगे वह कहीं जा रहा था, यहांसे भी गुजरा... हां वही प्रसिद्ध टेरेखोफ...मैं उससे मिला, और मैंने उसे यहांके जीवनकी सब बातें कहीं. हम बहुत देरतक बात करते रहे. वह भी बहुत कुछ मैंने उससे कहा, जो आपसे नहीं कह सकता, आप थक जाएंगे. अन्तमें मैंने कहा, 'यह सब मुझसे ले लो, और कृपा कर कुछ लिखो.' बहुत ध्यानपूर्वक उसने मेरी बातें सुनीं. फिर वह मुझसे बोला, 'पवनंजय नाराज न होना. जीवनमें मैं जिससे मिला हूं उनमें शायद ही कोई ऐसा हो, जिसने अपनी कोई कहानी या अपनी कोई बात मुझपर नहीं लाद देनी चाही और नहीं कहा कि उनकी बातपर मैं कहानी बना दूं, या उपन्यास लिख दूं. या जिन्होंने मुझे नहीं सिखाना चाहा कि यह लिखूं या वह न लिखूं पर जो तुमने अभी-अभी मुझे कहा है एकदम इतना भारी है, अमूल्य, अतोल, अथाह कि मैं क्या बताऊं. पर मैं उसका क्या बना सकता हूं? जो तुम्हारे मनमें उठ रहा है उस महाग्रन्थको लिखनेके लिए दूसरोंसे सुने शब्द काम नहीं देंगे फिर चाहे वे कितने ही यथार्थ हों, चाहे नोटबुक लेकर पेंसिलसे वहीं-के-वहीं क्यों न नोट किए गए हों. नहीं, इसके लिए पुस्तक लिखनेके किसी प्रच्छन्न उद्देश्यके बिना ही, बिना आशा, बिना आकांक्षा, निरीह उस जीवनमें से गुजरना होगा. गुजरना क्या, उस जीवनको अपनाना होगा. भाई, तब वह तुम्हारी महान् पुस्तक बनेगी.

"उनके शब्दोंसे मुझे निरुत्साह हुआ, पर दम भी आया. तबसे मैं अपने चित्तमें निश्चय मानता हूं कि अब नहीं तो पचास साल बाद उस प्रतिभाशाली लेखकका उदय होगा ही जो ठेठ रूसी होगा और जो इस जीवनकी तमाम लांछनाको, सारी कालिमाको, मानो अपने कण्ठमें धारण करके, अपनी कलमसे उस जीवनके वह कलामय चित्र प्रस्तुत करेगा जो सादे होंगे सुन्दर होंगे, तेजाबसे तीखे तथा मृत्युसे भयंकर, और अमिट और अमर होंगे. और हम सब कहेंगे, 'अरे, यह तो हम सबका देखा जाना है. पर उसीमें यह आग! यह विभीषिका!!' इस उदयोन्मुख कला-

कारमे मैं अपनी सम्पूर्ण आत्मासे विश्वास करता हू."

लखनपालने गम्भीर होकर कहा, "भगवान करे ऐसा हो उसीके नामपर, आओ .."

अकस्मात छोटी मनकाने कहा, "लेकिन, सचमुच जो कीडोकी तरह लम्पट, अभागा जीवन हम बिताती है, अगर कोई उसे..."

कि दरवाजे पर खटखट आहट हुई. और गुलाब-सी पोशाकमे छबि-मान जेनी भीतर आई

११

इस स्थानके प्रमुख व्यक्तिके उपयुक्त नि सकोच स्वच्छन्द भावसे उसने सबका अभिवादन किया और आकर कुमार पवनजयकी कुर्सीके पीछे लगकर बैठ गई वह दान विभागवाले उसी जर्मनके यहासे आई थी जिसने पहले छोटी मनकाको छाटा था उसके बाद बदलकर मरक्षिकाकी सिफारिशसे पाशाको लिया पर जेनीका आत्म विश्वस्त, दुर्लभ और लावण्य-युक्त सौन्दर्य उस जर्मनके लालसासिक्त हृदयमे बुरी तरह चुभ गया था. दो-तीन घण्टे अभी-यहा अभी-वहा डोल-फिरकर उसने साहस-का सचय किया इतने नया दम भी आ गया था फिर लौट कर वही अन्ना मरकानीके यहा पहुचा. यहा बैठकर इन्तजार करने लगा कि कब वह चश्मेकी दुकानवाला उसका दोस्त उत्तम कालिया जनीको छोड जेनी खाली हुई कि झट यह आदमी उसे ले गया था

तिमिराकी आखोमे भरे मूक प्रश्नको देखकर जनीने घृणासे खट्टा मुह बनाया. वह सिहर आई और सिर हिलाकर समर्थनमे बोली, "गया कम्बख्त ! थू ?"

पवनजय जेनीको असाधारण ध्यानसे देख रहा था शुरुसे ही और लडकियोसे जेनी उसकी निगाहमे अलग थी उसके स्वाधीन, उद्-दण्ड, प्रगल्भ और तीखे स्वभावके कारण पवनजयके हृदयमे उसके लिए

आदर था. और अब जो मुड़कर देखीं पवनंजयने उसकी ज्वालासे दीप्त आंखे, कपोलोंपर चमकती चमक, तीक्ष्ण लालिमा, मिचे ओठ जो ऐसे जोरसे दबे थे कि लहू आ जाय, तब उसने जाना कि इस लडकीके भीतर कबकी पकती हुई विषम घृणा अब भड़ककर उसे कैसी घोट रही है. उसने सोचा (और पीछे भी, इस क्षणकी याद कभी उसे भूली नहीं) कि ऐसा जाज्वल्य द्युतिमान सौन्दर्य तो उसने जेनीमें भी पहले नहीं देखा. उसने यह भी देखा कि लखनपालको छोड़कर, वहा उपस्थित सब व्यक्ति एकाएक अवश, उत्कण्ठित, साकांक्ष उसे देख उठे. कुछ सीधी खुली निगाहसे देख रहे थे, कुछ चोरी-चोरी, और कुछ मानो अनजानमें. इस स्त्रीका अपरूप सौन्दर्य और यह विचार कि वह जिस क्षण चाहो सुलभ है, उनकी कल्पनामें उत्ताप दे रहा था

"जेनी, क्या ह... मालूम होता है, कुछ बात हुई है !"

अत्यन्त स्हेहपूर्वक जेनी अपनी उगलियोको धीमे-धीमे पवनजयकी बाहपर फेरने लगी.

"कुछ नही पवनजय. यही, अपनी तिरियाओंकी बातें है.. तुम्हारे कुछ कामकी नही है"

पर तुरन्त तिमिराकी ओर मुड कर भावाविष्ट शीघ्रतासे वह बातें करने लगी. उसकी भाषा समझ न पडती थी अपने दोनोके बीच बोलनेके लिए उन्होने यह अद्भुत भाषा गढ रक्खी थी. उसमें हिब्रूके और जाने किस-किस भाषाके, और चोर उचक्कोकी गुप्त भाषाओंके शब्द भी विचित्र अनुपातमें मिल-पला रहे थे तिमिराने बीचमें ही बात काटकर आंखोमे पत्रकारकी ओर सकेत करके कहा, "उसे छल नहीं पाओगी जेनी ! वह सब देखता है, और सदा चौकन्ना है."

और पवनंजयने वास्तवमें समझ भी सब लिया, जेनी क्षुब्ध आक्रोशसे बतला रही थी कि इस एक दिन और रातमें गाहकी बढ जानेसे अभागिन पाशा, दससे भी ज्यादाबार...और हरबार अलग-अलग आदमी. इस बार उसे दौरा हो आया, और वह बेहोश हो गई. उसे अभी-अभी लाए थे. लाकर दवाकी कुछ बूंदें और एक गिलास शराब दी,

होशमें किया, और फिर एमा उडवानीने गाहकोंकी खातिरमें फिर उसे ड्राइंगरुममें भेज दिया. जेनीने उसका पक्ष लेकर विरोध करना चाहा तो उसे गालियां देकर बाहर निकाल दिया गया है. सजाकी भी धमकी मिली है.

यारश्करने आंखें उठाकर असमंजसकी वाणीसे पूछा, "बात क्या है ?"

"कष्ट न कीजिए...कोई ऐसी बात नहीं है." जेनीने उद्विग्न स्वर-में कहा, "यही...अपने घरेलू मामले हैं...कुमार पवनंजय, मैं आपकी थोड़ी शराब ले लूं."

उसने आधा गिलास शराब अपने लिए भरी और गट उसे पी गई.

पवनंजय चुपचाप उठा और दरवाजेकी ओर बढ़ा.

जेनीने उसे रोकते हुए कहा, "कोई बात भी हो, कुमार पवनंजय छोड़ो भी."

"जाने दो, जेनी" पत्रकारने आपत्तिकी, "मैं उत्पात नहीं करूंगा. मेरा मतलब सीधा है. पाशाको मैं यहां ले आनेके लिए जाता हूं. जरूरत हुई तो उसकी फीस भी भर आऊंगा. यहां बिचारी जरा सहारेसे लेट-कर आराम कर लेगी. थोड़ा आराम ही सही.. नूरी,दौड़कर एक तकिया तो ले आओ." पत्रकारकी बलिष्ठ देह स्थिर गतिसे दरवाजेसे ओझल हुई और किवाड़ भिडे कि मुवेश बर्नवाल बोला, "भाइयों. हम यह गलीके किस.हूशको उठाकर साथ ले आए हैं. क्या बात है कि हम ऐसे लफंगोंको अपने साथ मिलने देते हैं ? लखनपाल, यह सब तुम्हारी कर-तूत है. तुम यही किया करते हो."

"लखनपालने नहीं, मैंने उसका परिचय कराया था." रामसरनने कहा, "मैं जानता हूं, वह बाइज्जत आदमी है और नेक दोस्त !"

"हुआ नेक दोस्त! अच्छा दोस्त है कि औरोंके पैसेपर शराब उड़ाता है. तुम्हें दीखता नहीं है कि हर चकलोंसे लगे जो कुछ टुकड़ खोर लफंगे हुआ करते हैं, उसी थैलीका एक यह है. ज्यादा मुमकिन तो है कि यहींका एजेंट-वेजेंट कोई हो जो लोगोंको इस ठिएपर बहकाकर लाता

ग्रौर ग्रपने पैसे सीधे करता हो."

यारश्करने भर्त्सनापूर्वक कहा, "खामोश सुवेश यह ज्यादती है."

लेकिन सुवेश खामोश नही हो सकता था. दुर्भाग्यमे उसके साथ दस्तूर यह था कि जब वह शराब पीता तो उसका ग्रसर न उसकी टांगों पर होता था, न जुबानपर, बस सिर फिर जाता था. तबियत चिड-चिड़ी, गुस्सैल हो जाती थी. ग्रौर भीतरसे जैसे उसमे कुछ खुजली उठती रहती थी कि ग्ररे, 'लड, लड' ! पवनजयपर वह देरसे झल्ला रहा था. यह पवनंजय जो इस शाइस्तगीसे, खुश इखलाकसे पेश ग्राता है ग्रौर यहां इस वकलेमें भी सब उसका लिहाज करते है, इसपर उसे बेहद चिढ़ थी. ग्रौर बर्नवालने बीचमे दो-एक जली-कटी बाते कही भी तो उनको जिस सहज उपेक्षासे उसने ग्रनसुना-सा कर दिया, इसपर वह ग्रौर भी कुढ गया.

"ग्रौर उसका तर्ज देखो जिससे वह हम लोगोसे बात करता है." बर्नवाल झल्लाता रहा. "जैसे नवाब ही हो. मानो हमें सिखा रहा हो, समझा रहा हो, पुचकार रहा हो ! मुफ्तखोर हरामी, गलीकी जूठन कहीका"

जेनी जो इस तमाम समयमें ग्रपनी उद्दीप्त चमकती काली ग्रांखोसे चिंगारी फेंकती एक-टक उसे देख रही थी. यकायक ताली बजाकर बोली, "शाबाश, मेरे विद्यार्थी बाबू ! यही बात है शाबाश ! शाबाश ! शाबाश !... यही तरीका है, खूब लिया है तुमने उसे.. बेशक वह एक हूश है कि ग्रादमी है ? ग्राएगा, तो मैं सब उससे कहूंगी."

"जी हां, जरूर कहिए. खूब कहिए." बर्नवाल मुह बिचकाकर एक्टरकी भाति बोला, "मैं खुद ये सब बाते उससे कहूंगा ?"

"क्या खूब मेरे बहादुर बाबू! मैं तुम्हे प्यार करती हूं, बाबू!—" जेनी मेजपर घूसा मारकर सहर्ष सकटाक्ष बोली, "ग्रजी, उल्लू है उल्लू! ग्राप भी भला किसके पीछे पडते है !"

छोटी मनिया ग्रौर तिमिरा हैरतसे जेनीको देखने लगीं पर उसकी ग्रांखोंमें जो ग्राभाकी जोत लहक रही थी ग्रौर कांपते फैले नथनोंमे से

जो लपट निकल रही थी, उसे उन्होंने देखा तो वह सब समझ गई और मुस्कराने लगीं. छोटी मनिया हंसती हुई निन्दासूचक सिर हिलाने लगी. जेनीकी आत्मा जाने किसकी भूखी रहती थी. उसे जब लगता कि कुछ अघट घटनेवाला है तब उसके चेहरेपर ऐसी ही कड़वी तृप्तिकी चमक आ रहती.

लखनपालने कहा, "सुवेश, कमर बहुत सतर न करो. यहां सब बराबर है."

नूरी तकिया लेकर आई और दिवानपर रख दिया.

बनंवाल उसकी तरफ चिल्लाकर बोला, "यह क्यों आया है ? इसे फौरन ले जाओ. यह समय नहीं है."

"छोड़ो भी मेरे पीतम. इन पचड़ोंमें क्यों पड़ते हो !" जेनीने मधुमयी आवाजमें कहा और तकिएको तिमिराकी पीठके पीछे छिपा दिया. 'ज़रा ठहरो, पीतम प्यारे. लो, मैं तुम्हारे पास बैठ जाती हूं."

वह मेज़का चक्कर काटकर गई, सुवेशको बलात् कुर्सीमें बिठाया, और आप उसकी गोदमें बैठ गई. सुवेशकी गर्दनमें अपनी बांह डालकर उसके ओठोंको अपने मुह तक खींच लाई, और ऐसे जोरसे व्याकुल, देर तक उसका चुम्बन लिया कि सुवेशको साम चढ़ आया. अपनी आंखों से बिल्कुल सटी हुई उसने रमणीकी आंखें देखीं—दीप्त, अस्पष्ट, अनिमेष, अंधियारी, और अथाह. क्षणके सूक्ष्म भाग तक, पलभर, जैसे उसे प्रतीत हुआ कि इन निश्चल, गति-हीन आंखोंमें तीखी, उन्मत्त, घृणा कुटी हुई भरी है. एक भयजान सिहरन उसमें व्याप गई. अनिवार्य और भीषण किसी व्याधिका एक पूर्ण सन्देश-सा उसके मस्तकको एक बार आकर कौंध गया. कठिनाईसे जेनीकी लता-सी लिपटी बाहुओंमें से उसने अपनेको छुड़ाया, और उसे दूर करके लज्जित हांफता, पर हंसता हुआ बोला, "बड़ी तबियतदार हो ! पूरी मिसेलिना हो ! क्या नाम है, जेनी तो ? प्यारी खूबसूरत बला हो तुम !"

पवनंजय पाशाको लेकर लौटा. पाशाकी मूर्ति, दयनीय थी और हैरतनाक. चेहरा पीला, उसपर नीलिमा छा आई थी कि जैसे खून

बंध गया हो. पथराई-सी अधमुंदी आंखे अब भी बेहया बेजान हंसी-सी हंस रही थी. खुले ओठ, फूली-फूली दो भीगी, रंगी, लाल, कतरनसे थे और वह भीना, चकिता, अनिश्चित कदमोसे चलती हुई आई कि जैसे डरती हो कि उसका एक पैर कही दूसरेसे छोटा-बडा तो नही हो रहा है! पालतू पशुकी तरह वह दिवान तक आई, पालतू पशुकी ही तरह चुपचाप तकियेपर सिर डालकर लेट गई और वही बदहवास हंसी हंसती रही. दूरसे प्रगट होता था, वह ठण्डी है.

"सज्जनो—आप क्षमा करे मुझे इन्हे तनिक निरवस्त्र करना होगा." पवनजयने कहा—और झट अपना कोट उतारकर सामने खडी जिस किसीके हाथमे थमा दिया, "तिमिरा कुछ चाकलेट और आसव तो लाकर देना."

सुवेश बर्नवाल फिर अपनी जगह खडा हो गया. टांगे आगे-पीछे थी, कमर कुछ झुकी हुई और सिर सीधा तना. अप्रत्याशित रूपसे उस शान्तिको भंग करते हुए पवनजयको सम्बोधन करके तीक्ष्ण व्यंगसे वह बोला, "अह ..सुनो, तुम्हारा नाम क्या है? तो, यह जरूर तुम्हारी रखैल है . अब?" और अपने बुझती ताकत लेटी हुई पाशाकी दिशामे उसने संकेत किया

"क्या?" भवे समेटकर पवनजयने हठात् संयत स्वरमे कहा, "क्या?"

"नहीं तो तुम उसके आशिक हो बात एक ही है.. क्या नाम उस धंधेका यहा? हा वही, वही, जिसके लिए औरत कमीजे काढती बैठी रहती है और अपने पुत्रकी सारी कमाई जिनके साथ बाटकर खाना चाहती है . क्या नाम?"

पवनजय झुके पलकोंके नीचेसे एकस्थ, गम्भीर मुद्रासे देखता रहा. फिर भारी शान्त आवाजमे प्रत्येक शब्दको धीमे और सावधानतापूर्वक मानो एक-एक अलग-अलग करके बोला, "सुनो, यह पहली बार नही है कि तुम मुझसे झगडा मोल लेना चाहते हो. लेकिन एक तो मै देखता हूं कि तुम जितने ऊपरसे संजीदा बनना चाहते हो, उतनी ही बुरी तरह

नशेमें चढ़े हो. दूसरे तुम्हारे साथियोंकी खातिर मैं तुम्हारा लिहाज कर रहा हूं. तो भी कह दूं कि अगर तुम्हारा इरादा फिर इस तरह कुछ बकने-बकानेका हो, तो चश्मा उतार लेना."

सुवेशने कन्धे उचकाये सानुनासिक स्वरमें बोला, "क्या कहा ! कौन सा चश्मा ?—कैसा चश्मा ?" और अनायास दो उंगली बढ़ाकर, उसने चश्मेको नाकपर सम्भाला.

पत्रकारने अमनस्क उन्मन मुद्रासे कहा, "न हो कहीं मैं पीट-पाट बैठा तो चश्मेके टुकड़े आंखमें जा सकते हैं !"

झगड़ा सहसा बढ़ गया. पर कोई हंसा नहीं. बस छोटी मनका हाथकी ताली बजाती कभी अचम्भेमें आह कर लेती थी. जेनी उत्कट, अधीर, एकसे दूसरेको देख रही थी.

बनंवाल खिझे हुए ढीट बच्चेकी तरह चिल्लाया, "तो समझे, बद-लेमें मैं भी ऐसा दूंगा कि तुम याद रक्खो. पर सोचता हूं, हरेक पर क्या हाथ छोडं" वह यहां कुछ और शब्द कहना चाहता था, पर जाने क्या समझ कर रुक गया. "कोई बराबरका हो तो ? और फिर भाइयों, मैं यहां देरतक ठहरने वाला भी नहीं. मैं कुलीन हूं, ऐसे लोगों के साथ हाथा-पाईमें नहीं पड सकता."

अहंकारमें सिर मतर रख शीघ्रतासे वह दरवाजेकी तरफ बढ़ा.

वहां जाते हुए पवनजयके पाससे गुजरना होता था. पवनजय आंख-आंखमें उसकी गतिविधि देख रहा था एक क्षण बनंवालके मनमें आया कि जाने एकदम बगलसे पवनजयको एक दे, और झट कूदककर दूर हो जाय. तब तक उसके साथी लोग बीचमें आपडेंगे ही और लडाई न होने देंगे. किन्तु पत्रकारकी ओर बिना आंख उठाये भी मानो उसे चेत हो गया मेजपर सिमटे बैठे, बडे माथे, बलिष्ठ, और विशाल शरीरवाले इस प्रतिद्वन्द्वीसे जो, कुर्सीपर सिर झुकाये चुपचाप यों अनजाने भावसे बैठा है, उलझनेमें उसकी अपनी कुशलताकी विशेष सम्भावना नहीं है. जाने पलक मारतेमें कब उठकर यह आदमी और भी जी चाहे जो उसका नहीं बना सकेगा ? उस गम्भीर पत्रकारकी उपस्थितिके प्रति मानो आप-ही-

आप भय, आशंका, सम्मान, और खतरेकी आहट-सी उसमें उग गई और वह जोरकी आवाजसे दर्वाजेके किवाड़ भडकर छज्जेमेसे चलता चला गया.

जाते हुए सुवेशकी पीठपर फंककर जेनीने कहा, "बुरी बला, भली टली. तिमिरा, लाओ मुझे कुछ कोग्नक दो."

पर दुबला-पतला नारायण पतकी अपने स्थानसे उठा और अपने साथीका पक्ष लेना अपने लिये आवश्यक बनाकर बोला "आपकी जो इच्छा सज्जनो अपनी अपनी बात है. लेकिन मेरा कुछ कर्तव्य है और सुवेश गया है तो मैं भी जाता हू. उसकी भूल थी. उसने गलती की, सही. हमे अपने बीचमे उसे कह-सुन सकते थे. लेकिन हमारे साथीका जब अपमान हुआ है, तब मैं यहा नही रह सकता हू. मैं जा रहा हू"

"हे मेरे परमात्मा." लखनपाल खिजा हुआ तेजीमें बोला, "शुरुसे सुवेश बेहूदा, गवागना अहमकाना हरकतें करता रहा है. यह क्या हम सबकी इज्जत रखनेका तरीका है? राजनीतिक सभाओमे, सम्पादकीय दफतरोमें, चकलोमें, हम सब जगह आपसमे साम्प्रदायिक एकता चाहते हैं. खूब! हमे सरकारी अफसर नही बनना है कि अपने साथियोके दोषोका समर्थन करना सीखे."

"तो भी, आप जो कहे, मैं दलकी सम्मान रक्षाके खातिर चला जाना आवश्यक समझता हू, और चला जा रहा हू" नारायण पतकीने अहमन्यभावसे कहा और चला गया.

जेनीने उसकी पीठपर कहा "जाओ तुम्हारे जैसोपर हम मिट्टी भी नही डालेगी."

किन्तु मानवीय चित्तकी वृत्तिया कैसी अँधियारी है, कैसी बे-बूझ, कैसी यातनामय वर्नवाल और पतकी दोनो, गुस्सेमे उन्होने जो कुछ किया,उसमें सच्चे थे, फिर भी सुवेश कृत्यमे सचाई आधी थी, पतकीमे उससे भी आधी. वर्नवाल नशे और गुस्सेमे चढ़ा होनेपर भी, अपने माथेमे पा रहा था कि एक विचार, एक चाह, भीतर धीमी-धीमी चोट देकर, थपकी देकर, मानो अपना सिर उठा रही है. कहीं भीतर-ही-भीतर उसमें संकल्प संगृहीत

हो रहा है कि वह यहांसे उठ चले, बाहर पहुंचे, वहांसे चुपचाप जेनीको बुला भेजे और उसे लेकर एकान्तमें पहुंच जाए. सबके बीचमें यह सहज न होता. नारायण भी मानो इसी विचारके स्वादमें बर्नवालके पीछे-पीछे चला. उसके पास कुछ था भी नही और वह सुवेशसे लेना चाहता था. ड्राइंग रूममें आकर दोनोंने सब बातें ठीक कीं और दस मिनट बाद कमरेके द्वारसे संरक्षिका जकियाका छोटा-सा काइया लाल-लाल चेहरा झांकता दीखा. उसने कहा, "जेनी, तुम्हारे कपड़े धुलकर आए हैं, जाओ उन्हें संभाल लो. और तुम नूरी, तुम्हारे एक्टर बाबू एक मिनटके लिए तुम्हें बुलाते हैं. एक गिलास कुछ पी जाओ. वह हरीता और बडी मनका भी साथ है."

देर तक पवनंजय और बर्नवालका यह आकस्मिक, अनुचित और असमान झगड़ा चर्चाका विषय बना रहा. ऐसे समय पवनंजयके चित्त में सदा ग्लानि, खेद, बेचैनी और पछतावेका भाव हो जाता था. वह कुछ लज्जित हो रहा था. उपस्थित सबलोग उसका पक्ष लेरहे थे, फिर भी उसने उदास, थकित स्वरमें कहा, "सज्जनो, परमात्माके लिए मुझे जाने दो. मैं गया भला. मैं आप लोगोंमें भेद क्यों डालूं. कसूर था हम दोनोंका. मैं चला जाता हूं बिल चुकानेकी फिक्रमें न पड़ियेगा, पाशाको लेने गया था, तभी मैं साइमनको सब चुका आया था

"लखनपाल एकदम खड़ा हुआ. और जोर-जोरसे बालोंको खुजाते हुए बोला, "ओह, नही, मैं अभी जाकर उसे खींच लाता हूं मैं सच कहता हूं, वह लडके दोनो भले है, सुवेश भी, नारायण भी. पर अभी कम उम्र है. जैसे पिल्ले अपनी ही पूंछको देखकर भूंकने लगते हैं, वही बात है. मैं उन्हें ले आता हूं, मैं शर्तिया कहता हूं सुवेश माफी मांग लेगा."

वह चला गया और पांच मिनट बाद वापिस आया. "वे आराम कर रहे है." उसने म्लान भावसे हाथोंको निराश फेंककर कहा, "दोनों के दोनों आराम कर रहे हैं!"

तभी साइमन ट्रेमें दो गिलास सुनहरी झागकी शराब और एक विज़िटिंग कार्ड रखे हुए आया.

बैठे हुए सब लोगोंपर निगाह डाली, पूछा, "क्या मैं पूछ सकता हूं, आप लोगोंमेंसे गणेश प्रधान यारश्कर कौन हैं ?"

यारश्करने कहा, "यह मैं हूं."

"इनायत है. किन्हीं एक्टर साहबने यह भेजा है."

यारश्करने विजटिंग कार्ड लिया और जोरसे पढ़ा :

इ० ल० रेमुन
अभिनेता, मेट्रोपोलिटन
थियेटर

"क्या खूब !" विनय पालीवालने कहा, "इन थियेटरवालोंमें सबके ऐसे ही एक तर्ज पर नाम होते हैं. किशन, बिशुन, अरुन, बरुन,"

पत्रकारने कहा, "तिसपर यह कि बड़े-से-बड़े एक्टर तक जाने क्यों उन्हें बिगाड़कर चबाकर बोलते हैं,"

"जी हां. लेकिन अचरज तो यह है कि मेट्रोपोलिटन थियेटरके इस कलाविद्से परिचित होनेका सौभाग्य मुझे अभी प्राप्त नहीं है. पर हां, कार्डकी पीठपर कुछ और भी लिखा है. अक्षरोंसे तो जान पड़ता है, कि लिखनेवाले महाशय पिये हुए खूब हैं पढ़े-लिखे कम.

"रशियन विज्ञानके प्रकाश स्तम्भरूप विद्वान श्रीगणेश प्रधान यारश्कर महोदयको मैं प्रणाम करता हूं. मैंने उन्हें संयोगसे छज्जेपरसे जाते हुए देखा, सौभाग्य मानूंगा यदि मुझे श्रीमानके साथ एक मेजपर बैठनेकी इजाजत मिले. यदि श्रीमानको स्मरण न हो तो कृपया श्रीमान नेशनल थियेटरके तमाशेमें उस अभिनेताकी याद करें, जिसने जंगली अफरीकन

का अभिनय करके श्रीमानका मनोरंजन किया था."

यारश्करने कहा, "हां ठीक, अब याद आया. एक बार इस नेशनल थियेटरमें किसी सार्वजनिक सभाकी सहायतार्थ तमाशा हुआ था. उसकी व्यवस्थाकी बला मेरे सिर आकर पड़ी. याद आता है, एक लम्बा-सा मूंछ दाढ़ी साफ आदमी था तो. लेकिन...बताओ भाइयों, क्या करूं ?"

लखनपालने प्रसन्न भावसे कहा, "क्यों, उसे यहीं खीच बुलाइए. तमाशा भी रहेगा."

"आप क्या कहते हैं ?" प्रोफेसरने पवनंजयकी ओर मुडकर कहा.

"मेरे लिए सब एक बात है. मै उसे थोड़ा जानता भी हूं. आते ही पहले चिल्लायेगा, "केलनर शम्पेन—फिर अपनी स्त्रीकी यादमें आठ आंसू गिराएगा. कहेगा, वह देवी है, सती है. फिर देशभक्ति पूर्ण एक लेक्चर आप सुनियेगा. उसके बाद फिर बिलके दामोंपर झगडा उठायेगा. पर सब मिलाकर मजेका आदमी है."

"बुलाओ भी." विनयने किटीके कंधेपरसे कहा जो टांग हिलाती हुई उसकी गोदमें बैठी थी.

"और तुम वेल्टमैन ?"

"क्या ?" वेल्टमैन चौककर अपने आपमें आया. अपने साथियोंकी ओर पीठ करके वह दीवानपर लेटी हुई पाशाके बराबरमें बैठा था. बहुत देर उसकी ओर अत्यधिक सहानुभूति और सौहार्दसे देखते रहकर अंतमें उसके ऊपर झुक, कभी उसके कन्धेपर, कभी बालोंपर और कभी गाल और कभी सफेद गर्दनपर धीमे-धीमे अपनी अंगुली फेर रहा था. पाशा अपनी अधमुदी. और कांपती हुई पलकोंके नीचेसे सस्मित, सलज्ज, और निर्लज्ज, सकाम फिरभी निरर्थक भावसे देखती हुई हंस रही थी, "क्या, क्या कहा ? ओ, हां ! एक्टर को बुलाया जाय या नहीं ? मुझे कोई आपत्ति नहीं, जरूर बुलाइये..."

यारश्करने साइमनको कहकर उसे बुला भेजा. एक्टर आया और तुरन्त अपने तमाशे दिखाने लगा. दरवाजेमें वह रुका, हैट उतारकर उसने छातीके पास पकड़ा, जरा झुका, जैसे थियेटरमें कोई एक्टर बैंकके एक बड़े

डायरेक्टर अथवा राजसी पुरुषका अभिनय करता हो. मन-ही-मन शायद वह अपने लिए इस हैसियतकी कल्पना कर भी रहा था.

"सज्जनो, आपकी इस सम्माजनीय निजी गोष्ठीमें क्या मुझे आनेकी इजाजत हो सकती है !" एक ओर झुककर साभिवादन तथा कोमल स्वरमें उसने पूछा.

उसे अन्दर बुला लिया गया और वह अपना परिचय देने लगा. हाथ मिलाते-मिलाते उसकी कोहनी कभी इतनी ऊंची हो जाती कि हाथ छोटे पड जाते थे. अब वह बेंक डाइरेक्टर नहीं मालूम होता था. पर जैसे एक चुस्त, चालाक, फुरतीला, कसरती जवान. लेकिन उसके चेहरेपर झुरियां थीं, भवो और पलकोके बाल उड गये थे. भद्दा, कठिन, कमीना, पियक्कड़ बदमाश और बेरहमों का-सा उसका चेहरा था. उसके साथ दो रमणियां भी आई. पहली हरीता, हरीता अन्ना मरकानीके इस आलयकी सबसे पुरानी पकी-सिकी रमणी थी. उसने सब कुछ देखा था और वह सबकी आदी थी. आवाज उसकी भारी थी और फट चली थी. लेकिन सुन्दरता अभी उसे तज नहीं गई थी. दूसरी थी बडी मनका. हरीताने पिछली रातसे इस एक्टरका साथ नहीं छोड़ा था और वह उसे एक होटलमें ले गया था.

यारश्करके बराबरमें बैठकर उसने और ही नया चरित्र दिखाना शुरू किया. उसने एक पुराने प्रौढ़-वय लिबरल जमीदारका ढंग बनाया, जो कभी कालिजमें भी पढा था और अब यूनिवर्सिटीके लडकोंको पितृतुल्य सरंक्षण और कृपालु भावके बिना नहीं देख सकता था.

"सज्जनों, आप माने कि युवावस्थामें व्यक्ति दुनियाकी झंझटोंसे मुक्त, मौज और चैनसे रहता है." और वह अपने कठोर और विकृत चेहरे पर एक प्रकारका प्रभावोत्पादक अतिरंजित और असंभाव्य भाव लेकर बोला, "उच्चादर्शमे ऐसी श्रद्धा, सत्यकी खोजकी लगन, ऐसी शुद्ध प्रकृति .. हमारे विद्यार्थीवर्गसे उच्चतर, श्रेष्ठतर पवित्रतर और क्या है... ?" एक साथ मेजपर जोरसे मुक्का मारकर वह चिल्लाया, "केलनर शॉम्पेन"

लखनपाल और यारश्कर उसके ऋणी नहीं रहना चाहते थे. सो

खासा एक जमघट, एक महफिल-सी जुड़ गई. जाने कहां से गायक मिर्जा और जिल्दसाज नन्ने भी कमरेमें आ पहुंचे और अपनी हल्की आवाजसे गाने लगे :

पता चल गया है...प्यारी तू आ, जल्दी आ...

मियां गबदू अबतक जग पड़े थे. वह भी आ गये. अद्‌भुत भावसे अपने सिरको एक ओर लटकाकर और अपने मुरझाए हरीकेन लालटेनसे चेहरेमें वही आंखोंको जरा बन्द और तिरछी करके विनीत स्वरमे बोले, "सज्जन विद्यार्थियों...आपको एक बेचारे वृद्ध पुरुषका ख्याल रखना चाहिए. मैं शिक्षासे प्रेम करता हूं और उसका महत्व जानता हूं.. मुझे इजाजत दीजिए कि..."

लखनपाल इन सबको देखकर प्रसन्न था. पर यारश्कर आरम्भमें, जबतक कि शराव उसके सिरतक नहीं पहुंची, तनिक भी भिकोडकर अप्रसन्न और लज्जित भावसे मानो यह सहता रहा. किन्तु कमरा दम-दम गरमा रहा था. शोर चढ़ा, धुआं बढ़ा, वहां उमस-सी हो आई. साइमनने जोरसे बाहरकी खिड़कियां बन्द कर लीं. कामिनियां भी जो या तो अभी मुलाकातसे निबटकर आईं थीं या अभी नाचकर चुकी थी, सब कमरेमें चली आई. वे आई और थिरकती चलती इस-उसके घुटनोंपर बैठने, गीत गाने और शराब पीने लगीं. इससे लिपटीं, उससे चिपटीं, और फिर आई और फिर गई. स्टोरके क्लर्क लोग इस बातपर बिगड़ कि यह रमणियां ड्राइगरूमसे क्यों उस दूसरे कमरे वालोंका ज्यादा लिहाज करती है. इसीपर झगड़ेपर उतारु होकर वे विद्यार्थियोंसे ले-दे करने लगे. किन्तु साइमनने जो साधिकार स्वरमे कुछ शब्द कहे कि इन छीटों को पाकर सब उफान क्षणभरमें दब गया.

कुछ देरबाद नूरी भी आ गई और थोड़ी देरमे नारायण पतकी भी आ गया.

नारायण पतकी अत्यन्त गम्भीर होकर बोला, "मै इतनी देर तक बाहर उसी आपसी घटनापर सोचता हुआ गलीमे घूमता रहा हूं. और मैं इस नतीजेपर पहुंचा हूं कि वास्तवमें सुवेशका पक्ष ठीक न था लेकिन

बेचारेका अपराध इतना नहीं है. क्योंकि वह नशेमें चढ़ रहा था."

फिर जेनी भी आई, लेकिन अकेली. बर्नवाल थकाकर कमरेमें सो गया था.

एक्टरके खेल तमाशोंका ठिकाना न था. उसने ज्यों-का-त्यों नशा चढ़े शराबीका अभिनय करके दिखाया, जो कांचकी खिड़कीपर चढ़ती हुई मक्खीको पकड़ रहा है और मक्खी भर्रा रही है. आरेसे लकड़ी चीरे जानेकी आवाजकी उसने नकल की. एक कोनेमें खड़े होकर मुंह बना-बनाकर टेलीफोनपर बात करती हुई भावुक-प्रकृति एक स्त्रीकी बात-चीतकी ऐसे बहुत ही कमाल कमालकी नकलें उसने करके दिखाई. फोनोग्राफके रिकार्डके गाने गाये. और अन्तमें हू-ब-हू एक पुरविये बन्दर-वाले मदारी लडकेका और बन्दरका तमाशा उसने दिखाया. एक फर्जी जञ्जीरको एक हाथसे थामें, दांत निकाले, बन्दरकी नाई बैठकर, पलक मार-मारकर, बिल्कुल बन्दर बनकर अभी अपने बालोंमें खुजाता, जैसे जूं पकड रहा हो, और अभी नितंब भागको खरोचने लगता. और बीच-बीचमेंसे नाकमेंसे शब्दोंको बिगाड़कर अजीब उदास स्वरमें गाता :

जबान ठकुरवा जंगपर चला गया है.
जवान वहुरिया खेतमें रोती पड़ी है.
एहां, एहां आं, एहां ां......ां...

कि आखिर उसने छोटी मनकाको बाहोंमें लपेटकर अचकनके पल्लों-मे दुबका लिया. फिर हाथ फैलाकर सूरत बनाकर सिर एक ओर लटका कर घुमाने लगा जैसे पुरबिये मदारी छोकरे छोटी-सी बन्दरिया गोदमें पकड़कर किया करते है.

किटीको यह तमाशा मालूम था और पसन्द था. उसने बनकर जोरसे पूछा, "अरे तू कौन है?"

"मै पुरविया, मालक." करुण स्वरसे नाकमें बोलकर एक्टरने कहा, "खायबेको कछु देओ, मालक."

"और तेरी इस बंदरियाका क्या नाम है ?"

"मोहिनिया, मालक जेऊ भूखी ऐ, रोटी देओ मैया."

"और तेरे पास टिकट है ?"

"हां, पूरबी मैया. कछु देओ मालकन, जस होइगो."

एक्टरकी उपस्थिति बिल्कुल व्यर्थ न थी. लोगोंकी तबियत जरा भारी हो चली थी, वह हल्की हो गई. शोर खूब मचने लगा. और मिनट-मिनटमें एक्टर वही जोरसे चिल्लाता—"केलनर शेम्पेन ?"

पर साइमनको उसकी सनकका पता था, इसलिए जैसे यह चीख उसके कान तक भी नहीं पहुंचती थी. फिर तो एक बम-चख मची. कुछ ठीक सुन न पड़ता था और कुछ तरतीब न थी. तनवरमियां गत बजा रहे थे और गबदू उसी गतपर नाचता था. अपने कन्धोंको एक ओर इकट्ठा करके सिकोड़कर, और अपनी बाहों और हाथोंकी अंगुलियोंको फैलाकर लंगड़ाता-सा, आगे-पीछे बढ़ता और फिर एकदम टांग ऊपर को फेंककर चिल्लाता :

नाचे चलो, नाचे चलो, परवाह न करो किसीकी,

नाचे चलो, नाचे चलो...

और अपने लम्बे बढ़े हुए बालोंपर हाथ फेरकर कहता, "ऐसी फिरकीके लिए अब एक बोतल काफी नहीं है."

और वे दोनों दोस्त नशे से भारी हो रही आंखोंकी पलकोंको धीमे से और कठिनाईसे ऊपर उठाकर हींसते :

पता-आ-आ-आ-आ ! चल गया-आ-आ-आ !

एक्टरने फोहश किस्से कहानियां शुरू कीं. एक-एककर उन्हें ऐसे कहता जाता सब जैसे एक गमें बेंही भरी रक्खी हों और गणिकाएं उनपर अट्-टहाससे दुहरी हो-हो जातीं और अपनी कुर्सियोंपर उछल-उछल पड़तीं. वेल्टमैन इधर पाशासे घुस-पुस कररहा था. इस शोर-शराबेमें चुपचाप उठकर वह कमरेके बाहर चला गया. कुछ मिनटों बाद पाशा भी अपनी वही विक्षिप्त-सी भोली हंसी हंसती चली गई.

यही क्यों लखनपालको छोड़कर बाकी और सब विद्यार्थी भी इसी तरह उठ-उठकर चलते बने. कोई बे-जाने खिसक गए, कोई चुपचाप खिसके, कोई बहाना बनाकर गए. गए, सो फिर देर तक नहीं आए. विनय पाली-वालके मनमें एक थकान-सी हो आई, उसने नाचकी तरफ़ देखा. तनवर

मियांका भी सिर चकराने लगा था और उसने तिमिरासे कहा, "कोई ऐसी जगह बताओगी तिमिरा, जहा मैं जरा मुंह धो-धा लूं, सिर चकरा रहा है" पतकीने चुपचाप लखनपालसे तीन रुपये लिये और छज्जे परसे होकर खिसक गया. वहां जाकर उसने जकिया द्वारा छोटी मनकाको बुला भेजा. और तो और, जेनीके सानिध्यसे जो एक प्रकारकी विलक्षण, गर्म, तीक्ष्ण, मिर्चीली-सी उत्तेजना हो रही थी, उसे यह समझदार, लायक, रामसरन भी झेल न सका. जान पड़ा, सबेरे अंधेरे ही उसे भी एक अत्यन्त आवश्यक काम हो आया है. इसलिए जरुरी है कि वह तुरन्त घर चला जाए और जरा सोए. किंतु अपने साथियोंमे विदा लेकर कमरेसे बाहर होते-होते ही उसने पलक मारतेमें अर्थ भरी दृष्टिसे आंखों-आंखोंमें जेनीको इशारा कर दिया. जेनी समझ गई, उसने स्वीकृतिमें धीमे-धीमे अपने पलक गिराए. . . दोनोकी इस गुप्त मन्त्रणाको बिना देखे भी पवनंजयने देख लिया. फिर जेनीने जो पलक उठाए तो पवनंजयने देखा—देखा कि उन उठी हुई आंखोंमें तीव्र द्रोह और विद्वेपकी ज्वाला लपटे ले-लेकर जल रही है. और माना अपनी आंखोंकी चढी बांकी कमानसे यह लड़की जोरसे उस लपटका एक तीर जाते हुए रामसरनकी पीठमें भोंक देना चाहती है. पांच मिनिटके बाद वह उठी, बोली, "क्षमा कीजिएगा, मैं अभी आती हूं." और मानो धरती कुचलती हुई वह चली गई.

पत्रकारने मुस्कराकर पूछा, "अच्छा, अब तुम्हारी बारी है लखनपाल !"

"नहीं, भाई नही !" लखनपालने कहा, "तुम भूलते हो. और यह कोई मेरे लिये प्रण या मिद्धान्तकी बात हो, सो भी नहीं. नहीं, मै तो क्रान्तिवादी हूं, नकारवादी हूं. कहता हूं, जितनी हालत बिगड़े उतना अच्छा !...लेकिन खुशकिस्मती यह है कि मै जुआरी हूं. अपनी तबियतकी सब रंगीनी मै जुएपर खर्च लेता हूं. सो मेरेलिए यह कोई अलौकिक कर्तव्य परायणताकी बात भी नहीं है. आप ही मेरा जी इस ओर नहीं करता. लेकिन हमारे ख्याल मिले खूब ! मै भी तुमसे यही पूछने वाला था."

"मै ?—नही. बहुत थक जाता हूं तब अभी-कभी यहा आकर सो रहता हूं. अपने आया, इसिया साविशसे उसकी कोठरीकी चाबी ली, और तल्पपर तान सो गया. यहाकी लडकियां भी सब जान गई है और मेरी आदी हो गई है. जानती है, मै यो ही हू, जैसे मर्द तक नही हूं."

"तो सच, सच...कभी नही...?"

"कभी नही."

"हां सच तो सच ही है." नूरीने कहा, "कुमार पवनजय तो पूरे सत है."

"नही, कोई पांच वर्ष पहले मै यह भी कर बैठा था" पवनंजयने कहा, "पर सच, जी घिनसे भर-सा गया, मिचली-सी आने लगी. अभी जो एक्टरने तमाशा करके दिखाया था कि बहुत-सी मक्खिया खिडकीके शीशेपर इकट्ठी चिपटी बैठी है—बस कुछ ऐसा ही समझो. इकट्ठी-की-इकट्ठी शीशेपर बैठी है, रह-रहकर अपने पाँव भर्र-भर्र कर रही है, और छोटी-छोटी टांगोसे मानो बौखलाई अपनी पीठ सहलाती जा रही है—तो कैसी मूर्ख लगती है, बेबस, जड ! और फिर होता है कि सदाके लिए अलग-अलग चल देती है ! वैसा ही यहा है. . और यही आकर प्रेमका खिलवाड करना !...छि:...मै वैसा उपन्यासका नायक नहीं हू. सुन्दर मै नही, स्त्रियोसे नजाता हू, न कायदे जानूं न अदब. और ये !...इनका कठ तीखी चीजोकी प्यासमे कटीला रहता है इनको उन्मत्त वासना चाहिए और लहूसे लाल ईर्ष्या आसू, जहर, गाली, मारपीट, अपघात, बलिदान—जो कुछ तीखा है सब उन्हे चाहिए इसका कारण भी दूर नही है, समझना सरल है. स्त्री हृदय सदा प्रेम चाहता है. प्रेम के नाम-पर इन कामिनियोको प्रतिदिन चरपरे, चुटीले आख्यान मिलते हैं, रसीले रोमांस. सो स्वभावत इन्हे कामना होती है कि प्रेमकी बातोंमे इन्हे कुछ धार मिले, कुछ मिर्च, कुछ नमक फिर उन्मत्त प्रेमालापसे भी तृप्ति क्षीण होने लगती है, तब अनुरूप कृत्य भी चाहिए जो वैसे ही उन्मादकर हों, वेदनासिक्त, लालसासने परिणामस्वरूप उचक्के,चोर, आवारा, डाकू, हत्यारे, ये लोग इनके प्रेमी बनते है."

"और सबसे बड़ी बात यह है," पवनंजयने कुछ रुककर कहा, "कि इससे हमारे बीचका सुहृद्‌भाव उजड़ जायगा. देखते हो, किस सुन्दरतासे वह सौहार्द हमारे बीचमें सुनहरे-सुनहरे कोंपल देकर पल्लवित हो आया है.

"मजाक बहुत हुई." अविश्वस्त लखनपाल बोला, "तो फिर दिन-के-दिन और रात-के-रात तुम यहां बिताते ही क्यों हो? तुम लेखक होते, तो बात और थी. तब समझना मुश्किल न होता—तब तो हर कोई समझ सकता कि तुम सामग्री इकट्ठी कर रहे हो. लोगोंको देख रहे हो... जीवनका पर्यवेक्षण कर रहे हो...जैसे वह जर्मन प्रोफेसर तीन साल तक बन्दरोंमें ही रहा था कि उनकी भाषाको, रीति-रस्मको भली-भांति देख समझ सके. लेकिन तुमने स्वयं कहा, लिखने लिखानेका व्यसन तुम्हें नहीं है."

"नहीं नहीं, व्यसनकी बात नही है. इतना ही कि मैं जानता नहीं, कैसे लिखना."

"अच्छी बात. यह भी नोट किया. तो यह सही कि तुम यहां इन पाप-मग्न प्राणियोंके बीचमें, एक उच्चता, एक उत्कृष्ट और सुन्दर जीवनके प्रतिनिधिकी भांति उपदेशक, सुधारक, अवतार बनकर आए हो. तुम्हें मालूम ही है कि इसाई धर्मके आरंभमे पादरी लोग, गिरि कन्दराओंमें या वन-गुल्मोंमें, या पर्वत शिखरोंपर, वर्षों-वर्ष खड़्गासन तपस्या नहीं करते थे तो नगरकी हाटमें चकलोंमें, अथवा अन्य इसी भांतिके अनर्गल आमोद स्थलोंमें जाया करते थे. लेकिन तुम वैसे भी नहीं दीखते."

"नहीं, मैं कभी वैसा नहीं.'

"तब फिर, आखिर किस बलाकी खातिर तुम यहां हिलगे हो? मैं खूब देख सकता हूं कि जो यहा अधिकांश घृण्य है, लांछनीय है, दर्दनाक है, वह तुम्हें कष्टकर है. यही, जैसे अभी यह सुवेशाका किस्सा हो गया. इस साइमनको ही देखो, जिसका पेशा इन दलितोंका दलना है. इस चारों ओरकी सड़ांद, दुर्गन्ध, वासना, पशुता, बर्बरता, और सुराके वातावरणके चिन्तनसे तुम्हारी आत्माको यातना ही प्राप्त होती है. फिर? तब जो तुम कहते हो सो मैं मानता हूं कि तुम व्यभिचार प्रवृत्त भी

नहीं हो. तब तुम्हारे इस आचारका अर्थ क्या है, उद्देश्य क्या है, तात्पर्य क्या है, मेरी बिल्कुल समझमें नहीं आता."

पत्रकारने तुरन्त कुछ जवाब न दिया.

धीमे-धीमे रुक-रुककर, मानो अपने विचारोंको पहले अपनेको ही सुना रहा हो और तोल रहा हो, उसने कहना आरम्भ किया :

"मैं इस जीवनकी ओर आकृष्ट हुआ, इसमें रहने लगा—क्यों?... कैसे व्यक्त करूं?...इसकी नग्न, भयकर सत्ताने मुझे खीचा. समझते हो? मानो यह स्थल है कि जहासे सभ्यताके आवरण, आवेष्टन, एकदम मानो ऊपरसे फाडकर हटा दिए गए हैं. यहा न कुछ मिथ्या है, न बनावट, न दम्भ, न पर्दा, न धार्मिक आरोप. जनमतकी नीति धारणाके साथ अथवा पूर्व पुरुषाओके अनुशासनकी सामाजिक नैतिकताके साथ किसी तरहका समझौता भी यहां नही है. न अन्तस्थ विवेकका विचार अविचार! न रूपक है, न श्लेष, न अवगुठन अलकार—सब नग्न है. यहा क्या है? एक स्त्री, है, एक मादा, जो कहती है, "मैं अपनी नही हू. मेरा नाम नही है. मैं पदार्थ हू. मैं सबकी हू आओ, मुझमे नहाओ, और थूको. नगरकी अनिरिक्त वासनाकी बची खुची कीचडको बहाकर लानेवाली मोरीके लिए चौबच्चा मैं हू आए, जो चाहे—इन्कार मेरे पास नही है, मैं प्रस्तुत हूं. मेरी यही सेवा है, यही कृतकार्यता है. आओ, अपनी क्षणिक विषय-तृप्ति मुझमे पा जाओ बस—हा, पैसा चुका दो साथ-साथ रोग, लज्जा, वितृष्णा, जो हाथ लगे वह भी घातेम लेना" बस यह है. मानवी जीवनका और कोई विभाग नही है, कोई विभाव नही है जहा वास्तविक मौलिक सत्यता, बेलीपा-पोती, बिना मानवी दम्भकी छाया ओढे एसी स्तूपाकार वीभत्स, रौद्र, हड्डीके ढाचेकी तरह स्पष्ट और दुर्दान्त, व्यक्त होकर खडी हो.

"ओह, मैं नही जानता, यह औरत चर्खेके सूतकी तरह झूठका कैसा बे-अत तार नहीं तुन सकती. जाकर पूछो कि पहले-पहल कैसे क्या हुआ था? वह तुम्हे ऐसी पक्की कहानी गढ सुनाएगी कि क्या कोई कहानीकार बना सकेगा!

"तो पूछो क्यों? मैं पूछूंगा कि तुम्हारा काम क्या है जो पूछो. हा वे झूठ बोलती है. पर बच्चे भी झूठ बोलते है. और वे झूठ बोलती है तो निरी बच्चोकी नाई झूठ बोलती है और तुम्ही बताओ, बच्चोंमे बढ कर झूठ बोलनेवाला कोई है ? कैसी प्यारी-प्यारी निर्मल कल्पनाए बच्चे गढते रहते है. लेकिन इस धरतीपर बालकसे सच्चा दूसरा प्राणी भी कोई है ? और यह भी खास बात देखो कि दोनो—बच्चे भी, और वेश्याएं भी—हमसे, हम वयस्क पुरुषोंसे ही झूठ बोलते है दूसरे किसी से वह झूठ नही बोलते. आपसम, हा, गढन्त तो वे गढती ही रहती है, लेकिन हमसे वह झूठ यो बोलती है कि हम उनसे झूठ बुलाते है हम अपने सवाल-जवाबमे और चालाकीसे उनकी आत्मामे पहुचकर मानो उनकी मर्म कथाओपर पैरोसे चलकर सैर करना चाहते है. उनकी आत्माए हमारे लिए नितान्त विदेशी है, सर्वथा अपरिचित. और वे हमें अपने भीतर महामूर्ख, दम्भी, बने हुए समझती है तुम चाहो तो मै अंग-लियोपर गिनकर बता दू कि किन-किन मौकोपर वेश्याए झूठ बोलेंगी और तुम भी देखकर समझ जाओगे कि किस तरह आदमी चाहता है कि वे झूठ बोले."

"अच्छा, बताओ तो "

"पहला वह अपनेको निर्दयतापूर्वक रगमे पोत लेती है, कभी इसमे अपना बिगाड तक कर लेती है क्यो ? क्यो कि फौजका रगरूट आता है जो मुद्दतसे रुका हुआ है, विषयाधिक्यके प्रवाहावरोधसे त्रस्त है और मौसममे कुत्तेकी तरह बेहया हो गया है. या इस या उस दफ्तरका क्लर्क आता है बेचारा दीन है, दुखारी, क्यो कि उसके ऊपरातली नौ बच्चे है और पत्नी फिर गर्भवती है. अब ये लोग आते है और अपनी सचित वासनाकी अतिशयताको खर्च कर दे, इसीलिए नही आते नही, वे रस चाहते है, सौदर्य चाहते है. समझे आप ?—सौदर्य चाहते है, वे सौदर्य रसिक है. लेकिन ये बेचारी गावकी सीधी भोली लडकिया, ये धरतीकी जनताकी कन्याएं—इन विचारिदोकी सौन्दर्यवादकी परिभाषाकी हद क्या है ? वे जानती है—जो मीठा वही अच्छा, जो लाल वही सुन्दर ! इस-

लिए, लीजिए, यह रोगन, पाउडर और लेपका बना जितना चाहिए सौंदर्य लीजिए, प्रस्तुत है !...

"यह एक हुआ. दूसरे उस फौजी उत्तप्त जवानकी चाह सौन्दर्य पाकर बस नही मानती. नही, वह अभागा उसके आगे भी कुछ चाहता है. वह चाहता है कि दूसरी ओरसे भी उसे वैसा ही तृषार्त, आकुल, अकुंठित प्रेम प्राप्त हो. चाहता है कि उसका आलिगन स्त्रीमें एकदम तप्त उद्भ्रांत प्रेमकी आग भडका दे. अच्छा, यह भी तुम्हे चाहिए? तो लो !—और ये कामिनी भी अपनी अंगभंगीसे, ध्वनिसे सी-सी करके और आहे भरके घोर मिथ्याचार पूर्वक प्रतीति दिलाती है कि मानो उनका कृत्य हार्दिक है, उल्लास भरा है. पुरुष वास्तवमे अपने मनके बहुत भीतर इस व्यवसायसिद्ध मिथ्याचरणको खूब समझता है. पर, 'अँह, चलने भी दो,' मानो यह कहकर अपनेको बहका लेता है—'आह मै भी कैसा मर्द हू, रमणिया कैसे मुझपर उफनी टूटती है, मेरे सहवासमे कैसी वे अपना आपा भूल रहती है!' आदमी अत्यत असम्भव परिस्थितियोमे भी अद्भुत तर्कमे अपने आपको अपने ऊपर रिझा लेता है. और यद्यपि वह मन ही मन इस स्वादके खोखलेपनको खूब जानता है, फिर भी जैसे इस मिथ्या-नुमतिके रससे उसकी आत्मा भीज जाती है. इसीसे यह बात है अब मिथ्याचारका मूल कहा है ? उसकी लडी कौन आरम्भ करता है ? स्त्री या पुरुष ?

"और लखनपाल, तीसरी बात यह है. यह तुम्हीं मुझसे कहलवा रहे हो. सबसे अधिक झूठका आसरा वे तब लेती है जब उनसे प्रश्न पूछे जाते है --तुम यहां कैसे आई ? वेश्या कैसे बन गई ? लेकिन मै पूछू, तुम्हे पूछनेका हक ? तुम कौन हो उनके ? तुम बलात् उनके अतरंग भेदोमें घुस बैठनेवाले कौन होते हो ? वह तो तुम्हारे प्रथम प्रेमकी प्यारी स्मृतिके बारेमें कुछ पूछने नही बैठती. वह तो नहीं पूछतीं कि तुम्हारी बहिन कौन है, पत्नी कौन है, और कैसी है ? आह, कहोगे—'हम पैसा जो देते है.' तो पैसेकी बात है ! ठीक !! तब तो एजेंट, दलाल, पुलिस ववाई, कानून, म्यूनिसिपैलिटी, सब तुम्हारे हितोंकी रक्षापर कटिबद्ध

प्रस्तुत हूं. निश्चिन्त रहो, जो कामिनी किराएपर तुम्हारी खिदमतमें है वह तुम्हें प्रसन्न करेगी, विनीत रहेगी, अदबसे पेश आएगी. तुमने पैसा दिया है और इकरारमे तुम्हें यह सब कुछ मिलेगा और तुम्हारा व्यक्तित्व अछूता बना रहेगा. ऐसे कुरेद-कुरेदकर प्रश्न करनेके कारण कनपटीपर दूसरी जगह जोरका थप्पड ही चाहे तुम्हे मिलता, लेकिन वहां तुम्हें आदर प्राप्त होगा. पर तुम पैसेके एवजमे सत्य भी चाहते हो ? नही, वह तुम्हारी मुट्ठीको और सौदेकी चीज नही है पैसा तुम्हे सब खरीद देगा पर सत्य पानेकी आशा मत रखो. तुम पूछोगे और वे तुम्हें गढ़ा-गाढ़या या चौखूट बंधा ऐसा किस्सा कह देगी जिसे तुम—क्योकि तुम भी आखिर बने और चौखूट बधे पाबद सोसायटीके आदमी हो—झट पचा लोगे. कारण, जीवन स्वत: तुम्हारे निकट ऊटपटांग, निष्प्रयोजन और बस काट देनेकी वस्तु है. या वह वैसा अविश्वसनीय पदार्थ है कि जैसा अविश्वसनीय जीवन ही हो सकता है.. सो तुम्हारी सेवामें वही पुरातन और सनातन कथा उपस्थित कर दी जाती है--एक अफसर था, या एक रईस, या एक पडोसी और एक बच्चा भी हुआ . और आदि आदि. लेकिन लखनपाल, जो कह रहा हूं, उसे अपनेपर न समझ लेना. तुमपर वह लागू नही है. तुम? सच, अपने हृदयसे कहता हूं, तुममें महान् और सच्ची आत्माके लक्षण है.. आओ, तुम्हारे स्वास्थ्यके नामपर—"

वे पीने लगे.

"मै क्या बकता ही रहू ?" पवनजयने अनिश्चित् स्वरमे कहा—"उकता तो नही गए ?"

"नही नही, भाई" लखनपालने कहा "मेरी प्रार्थना है, बात तोड़ो मत कहे जाओ."

"वे मिथ्याचरण करती है," पवनंजय बोला "और अपेक्षाकृत अधिक निर्दोष भावसे वे मिथ्याचरण करती है. जो उनके सामने अपने राजनीतिक विचारोंके रंगोंकी छटा दिखाने बैठते है, उनके सामने वे उनकी सी बन जाती है. जो कहो, वही उन्हें कबूल. मैं आज कहूं, वर्तमान धनसत्तावाद घातक है, सम्पत्तिके मालिकोंको मिटा दो; जमीनके मालिकों

को बमम उडा दो; नौकरशाहीका सत्यानाश कर दो—तो तत्पर होकर अक्षर-अक्षरम वे भी साथ होगी. लेकिन कल दूसरा जोरसे कहे, इन सामाजिक समतावादियोको फासी लगा देना जरूरी है; क्रातिकारियोको भून देना चाहिए, इन विद्यार्थी और छोकरोको एक-एक कर नष्ट कर देना चाहिए जो धर्मका खून करके उमके रगसे अपनेको रगीन करना चाहते है—वे सब पूरे हृदयमे उसमे भी सहमत हो जाएगी किन्तु उमकी कल्पना उत्तेजित कर दो, अपने प्रति उममे प्रेम जगा दो तो कमर बाधकर तुम्हारे साथ जहा जाओ वही जानेको वे तय्यार हो जाएगी तमाशमे तो, क्राति के विस्फोटम तो, चोरी और हत्याके काममे, तो भी. लेकिन बच्चे भी तो ऐसे ही झट मान जाते है वे भी क्या एसे ही विश्वासशील नही होते ? और भाई लखनपाल, परमात्माके लिए य भी क्या है!—बच्ची ही नही है ?...

"चौदह वर्षकी फुमला ली गई और मोलह बरसकी होने-होने पीला टिकट और योनि-रोग लेकर पेटेन्ट वेश्या हो गई! अब वह चकलेमे है. तब मे यही उमकी आयुके सब साल बीते है. यहाकी दीवारोमे घिरी और शेष विश्वसे वह बिलकुल कटी, दूर रही है रोजके उमके काममे आनेवाले शब्दोकी गिनतीपर ध्यान दो बस, अपने वही तीस-चालीस शब्द वह जानती है उन्हीसे अपना सारा काम चला लेती है. जैसे बच्चे और जगली प्राणी गिनतीके शब्दोम अपना काम चला लेत है खाना, पीना, सोना, आदमी, बिस्तर, मालकिन, रुपए, गाहक, डाक्टर, अस्पताल कपडे, पुलिस– बस उसके भाषा-विकासकी परिधि यह है ! उमके बुद्धि विकासकी भी सीमा यही है उसकी कल्पनाए, उमके अनुभव, उसकी आकाक्षाए, उमकी उन्नति, इस भाति मौतके दिन तक शैशव तलसे ऊपर नही उठ पाती बिलकुल उसी तरह जैसे कि उस अध्यापिकाकी हालत होती है जो दस वर्षकी होते-होते सस्थामे चली गई और वही रुक रही. अथवा उस कोरी भगतिन साध्वीकी-सी जो बच्ची-सी मठमे पहुची और वही बडी हुई. सक्षेपमे एक उस वृक्षकी दशाकी कल्पना कर लो जिसको धरतीके पातालमे धंसकर और आकाशके शून्यमे विस्तार बनाकर बहुत

जगह घेरकर जा फैलना था, वह ही शीशेके बर्तनमें उगा और वहीं बंद रहकर बढ़ा. उसके अस्तित्वके इसी शिशु-तुल्य विकासावस्थाके कारण, मैं कहता हूं, मिथ्या उनके लिए अनिवार्य है ? पर, यह उनका मिथ्याचार निर्दोष है, निरुद्देश्य, एक लगी बान जैसा . पर कैसी वीभत्स उघडी नगी है वह सचाई जो इस व्यवसायके शरीरके रोम-रोममेंसे पीवकी तरह फूटती हुई दीखती है.. यह घटोंके हिसाबसे या पूरी रातके मोलका सौदा पटाया जाना, रातके ये बंधे दस आदमी; नगर पिता-ओंके बनाए नियमोंकी छपी हुई खूंटीसे लटकी प्रतियां, बोरिकके पानीके प्रयोगकी हिदायत; साप्ताहिक डाक्टरी मुआइना; घृण्य योनिरोग जो यहां वैसे साधारण और निश्शक भावसे सुने, समझे और सहे जाते हैं जैसे जुकाम—इन सबमें कैसी बेहयाई और प्रगल्भताके साथ नहीं प्रगट हो जाता वह सत्य ! इन नारियोंमें पुरुषके प्रति विषम ग्लानि कूटी भरी रहती है—ऐसी विषम कि उनके किसी हावभावसे वह व्यक्त हुए बिना नहीं रहती. इसी चिरपोषित ग्लानिको वे इस वृत्ति द्वारा चरितार्थ और तृप्त करती हैं.. उनका यह समस्त अतर्क्य अनिष्ट जीवन सामने जैसे मेरी हथेलीपर बिछा है. उसकी गदगी, उसका पातक, उसकी बेहूदगी मैं देखता हूं...सब है, लेकिन उसके अपने निजके और समाजके प्रति उस दंभ और पाखडका लेश भी नही है जिसमें और लोग चोटीसे एडी तक डूबे दीखते हैं ! मेरे भाई लखनपाल, एक बार सोचकर देखो, हमारे समाजके विवाहित प्रेम और विवाहित सहवासके सौमेंसे निन्यानवे मामलोंमें कितना असह्य, अतुल भयकर मायाचार और तीखी घृणा नहीं होती ? सोचो, कितना अंध, निर्दय अनाचार तुम्हारे पवित्रम्मन्य मातृत्वमें नही है ? पाशविक नही, वह मानवीय है. कितना तर्कसिद्ध, गणितसिद्ध, नियममान्य और कितना अंतर्वेधी ! पर उसीको हमने कैसे सुरम्य रंगोंसे रंग रखा है. उन सब व्यर्थ और बड़े-बड़े पदों और व्यवसायोंको देखो जिन्हें भद्र मनुष्यने मेरा घर, मेरी स्त्री, मेरी संभोग्य, मेरा बच्चा, मेरी जायदाद आदिकी रखवालीके लिए पैदा कर लिए हैं. ये ओवरसियर कंट्रोलर, इन्सपेक्टर, जज, अरदली, जेल, एडवोकेट, अफसर, सरकार,

शाही नौकर, जनरल, सिपाही और इसी प्रकारके अन्य सैकड़ों उपाधि-धारी—ये सब क्या हैं? सब मनुष्यकी लिप्सा, लालसा, कायरता, मिथ्याभिमान, पामरता, आलस्य, विषय-परायणता—इनके पोषण, इनकी तृप्ति के लिए ये बने हैं. मानवीय दैन्यको ढंकनेके लिए ये खड़े हैं. दैन्य !—यही शब्द है, यही रोग है, यही सत्य है. पर हमारे कोष शानदार शब्दोंसे भरे हैं. मातृभूमि, धर्मकी वेदी, भ्रातृप्रेम, उन्नति, कर्त्तव्य, सम्पत्ति, पावन प्रेम ! ओंह, मे अब ऐसे किसी भी मीठे शब्दमें नहीं फंसता. मैं इन ओछे मिथ्यावादियों, इन कायरों, और इन चूसकर फूलनेवालोंसे अघा गया हूं. इन निर्वीय पुरुषोंसे, स्त्रियोंसे, जो औरोंको छोटा समझकर खुद बड़े बनते है, मै उकता गया हूं...मनुष्य आनंदके लिए बना है.. वह सृष्ट करेगा. सिरजन उसका काम है. अपनी सृष्टिके मध्य वह ईश्वर है. प्रेम उसकी सार्थकता है. निर्बाध, स्वतंत्र, सर्वविजयी, सर्वमयी, व्याप्तप्रेम. वृक्षके लिए प्रेम, आकाशके लिए, मनुष्यके लिए, कुत्तेके लिए, प्राणीमात्र-के लिए प्रेम. शस्यदा इस सुन्दर पृथिवीके लिए प्रेम. हा, विशेष कर इस प्यारी धरतीके प्रति प्रेम. धरती जो माताओंकी माता है, जिसके एक ओरसे प्रभातकी प्रभा प्राप्त होती है, दूसरी ओरसे सध्याकी मीठी अधियारी. सबकुछ जिसकी छातीपर होता है और जो सबके पैरों तले पड़ी है. लेकिन आदमी ऐसा मायाचारी है, ऐसा क्लीव, ऐसा दीन, ऐसा अपाहिज कि..ओह लखनपाल, मुझे थकान होती है..."

लखनपाल जाने कहां देख रहा था. जैसे उसने सब कुछ सुना, फिर भी कुछ नही सुना. एक विचार, मानो एक संकल्प, उसमे गर्भस्थ होकर धीरे-धीरे कठिनाईसे पक रहा था. उसने कहा, 'मे क्रांतिवादी हू, और तुम्हें कुछ-कुछ समझता हूं. लेकिन एक बात मुझे समझ नहीं आती. यदि मानवता ऐसी उपेक्षणीय तुम्हारे लिए हो गई है तो, (लखनपालने अपना हाथ मेजके चारों तरफ घुमाया) यह सब कुछ, यह अति विगर्हणीय वस्तु जो मनुष्य बना सका, क्यों झेल रहे हो ?"

"हां. मैं स्वयं नहीं जानता." पवनंजयने निर्व्याज भावसे कहा, "देखो, मेरे घर नहीं, बार नहीं. मैं फिरता ही रहता हूं. जीवनसे मुझे प्रेम

हो गया है. मैं बस रहना चाहता हूं. और उस रहनेमेंसे अधिक-से-अधिक रस पा लेना चाहता हूं. मैं मिस्त्री रह चुका हूं, कम्पोजीटर रह चुका हूं. खेती भी की है, तम्बाकू बेचा है. एजब सागरपर मल्लाही भी की, मछुआ भी बनकर रहा. दरिया नीपरके किनारे राजगीरी की और मजदूरी भी. तरबूज ढो-ढोकर ले जाने होते थे. सरकस के साथ भी रहा, थियेटरमें अभिनय भी किया और सब याद नहीं क्या क्या किया. कभी कुछ लाचारीमें पडकर किया हो, सो नहीं. जीवनको देखनेकी एक अटूट भूख थी, एक असह्य जिज्ञासा. सच, जी होता है, कुछ दिनके लिए मैं यदि घोडा बन सकता, या वृक्ष, या मछली ! तबीयत होती है, कुछ क्षणके लिए मैं स्त्री बन पाता, और अनुभव करता, प्रसव-वेदना और मातृ-सुख क्या होता है. मुझे जो मिलते हैं, जी होता है, उन्हींके भीतर पैठकर उन्हींकी आंखोसे मैं विश्वको देख सकता. मैं विश्वकी आत्माके साथ एकात्म्य पाना चाहता हू. सो यहा-वहा, नगरमे, गांवमे, बिना चिन्ता, बिना मतलब और बिना बंधन, मैं घूमता रहता हू. बीसियों काम जानता हू, और मेरा भाग्य जहा ले जाए वहां पहुचनेमें मुझे आपत्ति नहीं. क्या बडा, क्या छोटा; क्या सुख, क्या विपत ; क्या भूख, और क्या भोग— जहा हू, वहीं जीवनके तलपर मैं प्रसन्न हू, क्योंकि मैं तैर सकता हूं.... इसी निरंतर चक्रमें मैं इस वेश्यालयके तटपर आकर लगा. मैंने इसे देखा पर, ज्यों-ज्यों देखा एक अज्ञेयभाव, एक भय, आवेश आक्रोश, मेरे भीतर उठता आया. . पर, जानता हू, दिनोंके साथ यह भी मिटेगा, और मैं अपनी भटकनपर वहीं फिर आगे बढूंगा. बसंत आनेतक काम का हाल भी ठीक हो जायगा और मेरा पर्यटन आरंभ. अबके मैं एक मिलमें जाऊंगा. मेरा एक दोस्त है, वह इसकी ठीक-ठाक कर रखेगा... ठहरो-ठहरो, लखनपाल सुनो, एक्टर क्या कह रहा है....तीसरा एक्ट है."

इ० ल० रेगुस अब खेल तमाशे करते-करते थक चला था. कभी कुत्ते-बिल्लीकी लड़ाई दिखाई, कभी किन्हींकी आवाजें सुनाई. पर वह धीरे-धीरे थकानके भावसे झुकता जा रहा था. सहसा, मानो आत्म प्रकाशकी अनुभूति उसके भीतर उदय हुई और उसके उद्योतमें अकस्मात्

उसने कईबार यारश्करके हाथ का चुम्बन लेनेकी चेष्टा की. पलक उसके लाल हो श्राए, श्रोठ हिले-से, जैसे वह रो उठेगा. श्रावाजसे प्रकट होता था कि श्रांसू उठकर गले श्रौर नाकतक श्रा गए हैं.

"मैं तमाशेका श्रभिनय करता हूं" अपनी छातीपर जोरसे मुक्का मारकर उसने कहा, "मैं लोगोंके दिखावेके लिए लकीरदार पजामा पहनकर नाचता फिरता हूं. मैंने अपनी श्रांकाक्षाएं जलाकर बुझा दी हैं. प्रतिभा धरतीमें गाड दी है श्रौर श्रापका गुलाम बन गया हूं. लेकिन पहले" उसने श्रार्त मुद्रासे चीखना शुरु किया, "पहले न्यूसर्कसमें जाकर पूछो. टूपरमें, उस्टेजनमें, ज्वेनीवरडकमें, झीनोपोलमें, वहां जाकर पूछो मैं क्या-क्या न था. कोई था मुझे जैसा बजानेवाला ? वेल्टीजनमें किसने वह मारका मारा था ? मैंने. वह थी जीत, जो जीत होती है...नूतन चड्ढा लाहौर में मेरे साथ-साथ था. श्रमजद श्रौर श्रनवरके साथ मैंने काम किया. लक्ष्मण प्रसादको किसने बनाया ? मैंने. पर श्र-श्रब ?..."

वह झक बांधकर झींकता रहा श्रौर उसने प्रोफेसरका हाथ चूमना चाहा.

"हां, मुझे नफरत करो. मुझपर उंगली उठाश्रो, क्योंकि तुम भले श्रादमी हो श्रौर मैं मुर्ख बना डोलता हूं. मैं शराब पीता हूं...धर्मको मैंने पामाल किया, मंदिरोंकी तौहीन की. मैं मजेसे कहां बैठा हूं ? जहां इज्जत बिकती है श्रौर प्रेम लुटता है ! श्रौर मेरी स्त्री...सती, पतिव्रता, पानी-सी साफ, दूध-सी सफेद, राजहंसिनी-सी पवित्र.. श्रोह, श्रगर उसे मालूम हो जाए! उसकी उंगलियां, श्रोह, कैसी प्यारी-प्यारी उंगलियां सुई-से छिद-छिद जाती होंगी. श्रौर मैं ! श्रोह मेरी सती साबित्री रानी, मैं, लफंगा मैं, तेरे एवजमें यहां क्या ले रहा हूं ? हाय-हाय!" एक्टरने जोरसे अपने बाल पकड़ खीचें, "प्रोफेसर, मुझे अपने श्रालिम हाथका एक बोसा लेने दो. तुम मुझे समझोगे. चलो, मैं तुम्हरा परिचय कराऊंगा.. देखोगे, वह कैसी देवी है.. वह मेरी बाट देखती रहती है. रातों नहीं सोती. मेरे नन्हीं-नन्होंके फूलकी पंखुड़ीसे हाथोंको अपने हाथोंमें लेकर लोरी गा-गाकर कानोंमें कहती है, परमात्मा, तुम्हारे पापाको बचाएं श्रौर बड़ी

उमर दें."

"झूठ बकता है तू. झूठा, कुत्ता." उसे कठिन घृणाकी दृष्टिसे देखकर मतवाली छोटी मनका सहसा चीखकर बोली, "वह कुछ भी अपने बच्चोंमें नहीं कह रही. कमीने वह दूसरे मर्दको साथ लेकर आराममसे सो-रही है."

"चुप रह, कुतिया" एक्टर आपा खोकर जोरसे चिल्लाकर बोला. पाससे बोतल खींचकर पकडी और सिरमें ऊंची उठाकर कहा, "मुझे पकड़ लो, नही तो मैं उसका सिर फोड़ दूगा. अपने इस गंदे मुंहसे कैसे जुर्रत करती है कि तू..."

"गंदा होगा तेरा मुह. मैं रोज इस्तोत पढ़ती हूं." और ढिटाईसे तनकर मनकाने कहा, "बेवकूफ, अपने सिरपर अबसे सींग रखा कर. खुद तो रंडियोंमें उडता फिरता है. और चाहता है औरत उसकी सती रहे! देखो बेवकूफको बकनेके लिए जगह कहां मिली है. हो कोई सवार जो आकर उसपर लगाम खींच दे. और क्योंरे निकम्मे बाप कहींके, बच्चोंको अपनी बातमें क्यों तू मानता है ? यों मुझपर आंख मत तरेड़, और दांत मत पीसे, मैं डर नही जाऊंगी. कुत्ता तू, तू तू !"

यारश्करके बहुत यत्न और बहुत वाक्-शक्ति खर्च करनेपर ज्यों-त्यों छोटी मनका और एक्टर चुप हुए. मनकाने शराब पी नही कि झगड़ा सूझा. एक्टर बिस्सूर बिस्सूर कर रो उठा. वह पस्त होने लगा और हरीता उसे अपने कमरेमें ले गई.

अब सबपर थकान आ छाई थी. विद्यार्थी एक-एक कर शयनकक्षोंमें से लौटने लगे. उनकी तात्कालिक प्रेयसियां भी, मानो कुछ हुआ ही न हो इस भावसे, चलती हुई आई. सच, ये सबलोग ऐसेही लगते थे जैसे खिड़कीके शीशेपर भर्र-भर्र करती हुई नर और मादा मक्खियां. ये जमुहाई लेते, अंगड़ाई लेते और बहुत देरतक थकान, खीज और उबकाहटका भाव उनके चेहरोंसे दूर न होता. वे चेहरे अनिद्रासे पीले और अप्रिय रूपसे चमकदार थे. जब अलग होते समय उन्होंने एक दूसरेसे बिदा मांगी तब उनकी आंखोंमें एक प्रकारका परस्पर विद्वेशका भाव चमक रहा था, जो

एक अनावश्यक और कुत्सित कृत्य करनेवाले दो सहयोगियोंमें हो आता ही है.

लखनपालने पत्रकारसे धीमे स्वरमें पूछा, "अभी उठकर तुम कहां जा रहे हो ?"

"सच में स्वयं ही नहीं जानता. मैं रात इसिया साविशके कमरेमें काटना चाहता था...लेकिन देखो, कैसा सुन्दर प्रभात है, इसे खोना पाप है. मैं सोच रहा हूं, बाहर निकलकर जरा समुद्रमें नहा लूं. स्टीमरपर चढ़कर फिर लिप्सकीके मठपर पहुंचूं. वहां एक काला नाटा फकीर है. मैं उसे जानता हूं. टर्ट्यूलियनके बारेमें कुछ बात करूंगा. पर, क्यों ?"

"मैं कहता हूं जरा ठहरो. जबतक सब चले जाएं तबतक ठहरो. मुझे तुमसे कुछ कहना है."

"यह सही."

यारश्कर सबसे पीछे गया. कहा, "सिरमे दर्द है. जरा थक गया हूं, जाऊंगा." लेकिन वह बाहर गया ही था कि पत्रकारने लखनपालका हाथ पकड़ा और दरवाजेमें के शीशोंसे दिखाया, कहा, "वह देखो" और लखनपालने खिड़कीके पुराने कांचमें से देखा कि प्रोफेसर ट्रिपिल वाले वेश्यालयमें जा पहुंचा है और घंटी बजाकर अपने प्रदेशकी सूचना दे रहा है. मिनट भरमें द्वार खुला और यारश्कर अंदर गायब हो गया.

लखनपालने साश्चर्य पूछा, "और तुम्हें पता कैसे चला ?"

"ऊंह. मैंने उसका चेहरा भांप लिया था. यह भी देखा कि वर्काकी बॉडीपर कभी-कभी हाथ भी फेर लेता है. और लोग कम रुके, यह जरा शर्मीला था."

"पवनंजय, चलो" लखनपालने कहा, "मैं तुम्हें देर तक नहीं रोकूंगा."

१३

कमरेमें अब दो ही लड़कियां रह गई थीं. जेनी. और लुवी. जेनी अपनी रातकी पोशाकमें आई थी और चैतन्य थी. लुवी बातचीतके बीचमें ही

आराम कुर्सीपर गुड़ी-मुड़ी पड़ी सोगई थी. लुवीके ताजा पीतवर्ण मुखपर शिशु-सम सरल और विनीत भाव मुद्रित था. सोते-सोते जैसे वह कोई छोटी-सी हंसी हंसना चाह रही थी. मुस्कराहटका वह स्मित आरंभ उसके ओठोंपर अंकित था. तमाखूके धुएंमें कमरा नीला और गंधीला हो रहा था. शमादानमें मोमबत्तियोंपरसे पिघलकर बहती हुई मोमकी धाराएं जम गई थीं. मेज काफी शराबसे लथपथ और शंतरोंके छिलकोंसे बिछी बुरी लगती थी.

जेनी दिवानपर बैठी थी. टांगोंको उसने अपने हाथोंके घेरेमें डाल रखा था. पवनंजयने देखा, उसकी बडी-बड़ी आंखोंपर पलकें झुकी-सी हैं, मानो वे आंखें दीखना नहीं चाहतीं. पर उनकी गहराईमें कठिन आंच जल रही है. उसकी दृष्टि नाकके अग्रभागसे होकर मानो पातालमें क्या देख रही है.

लखनपालने कहा, "मैं बत्तियां बुझा देता हूं."

प्रभातका अंधियारा प्रकाश ओससे भीगा, निदांसा-सा, पर्दोंमेंसे छन-छनकर कमरेमें भरने लगा. बुझी हुई बत्तियोंमेंसे हल्का धुआं उठ रहा था. तमाखूका धुआं तह-पर-तह घना नीला बना खड़ा था. सूरजकी एक पतली हल्की किरन खिडकीके हृदयाकार अवकाशमेंसे आकर कमरेके छेदको धूलिकण निर्मित उजली और तिर्छी कृपाण द्वारा छेद रही थी. तरल और उष्ण मानो सोनेका पानी दीवारके काग़जपर फैलकर खेल रहा था. लखनपालने बैठते हुए कहा "यह अच्छा है...बात थोड़ी है, लेकिन ... समझ नही आता, शुरु कैसे करूं ?"

उसने जेनीको ऐसे देखा जैसे नहीं भी देखा हो. जेनी अनपेक्षित भाव-से बोली "मैं चली जाऊं ?"

पत्रकारने कहा, "नही, तुम बैठो." लखनपालकी ओर मुड़कर और मानो मुस्कराकर उसने कहा, "वह हरज न करेगी. और बात तो आखिर इन्हींके बारेमें होगी ना ?"

"हां-हां...एक प्रकारसे—."

"तो ठीक है. और चाहिए, तुम जेनीकी बात ध्यानसे सुनो. बार

भी हो, पर उनमें वज़न होता है."

लखनपालने कई बार हथेलियोंको अपने मुंहपर फेरा, आपसमें अटका कर दो बार अंगुलियां चटकाई. स्पष्ट था वह उत्तेजित है. जो कहना चाहता है, वह उससे नहीं बन रहा है. उसे दिक्कत हो रही है, और संकोच, और दुविधा.

सहसा जोरसे, मानो आक्रोषके साथ, उसने कहा, "नहीं. वह बात नहीं है...तुम अभी इन औरतोंके बारेमें कह रहे थे....मैंने सुना. मैंने सब सुना....सही, तुमने नया कुछ नहीं कहा. पर, मुझे लगता है, अपने व्यतिव्यस्त जीवनमें समस्याको मैंने आज पहली बार आंख खोलकर देखा है. मैं पूछता हूं यह वस्तु, यह वेश्या, यह चकला, अंतमें क्या है ? यह बड़े शहरोंके अतृप्त वासनाका ज्वरविकार है, या स्वतःसिद्ध, अनादि एतिहासिक तत्व ? कभी यह मिटेगा, या सारी मनुष्यताके अंतके साथ ही उसका अंत होगा ? मैं इसका जवाब चाहता हूं. कौन मुझे इसका जवाब देगा ?"

पवनंजयने एकांत एकस्थ भावसे उसे देखा. उसकी आंखें हठात् सिमटकर छोटी हो गई. वह जानना चाहता था कि क्या गर्भस्थ तत्व, क्या संकल्प, क्या विचार, लखनपालको इस समय ऐसी आत्म-जनित यंत्रणा दे रहा है. उसने कहा, "कब खतम होगा, कोई नहीं बता सकता. शायद तब जब साम्यवादियों और अनार्किस्टोंके स्वर्गीय आदर्श धरतीपर घटित हों. जब पृथ्वी सबकी हो, और किसीकी न हो. जब प्रेमपर बाधा न हो, मर्यादा न हो, और वह अपनी उच्चाकांक्षाओंके बल जिए, उड़े और फैले, जब मनुष्य जाति एक दीवार बनकर रहे. मेरे तेरेका भेद-भाव मिट जाए. जब स्वर्ग धरतीपर उतर आए और मनुष्य फिर नूतनरूपमें वही दिगम्बर, उज्वल, द्युतिमान् और निष्कलुप हो. शायद तभी यह हो."

"लेकिन अब ?" उत्तप्त, उत्तेजित लखनपालने पूछा, "लेकिन अब ? क्या अभी मैं हाथ-बांधकर भविष्यकी ओर ही देखता खड़ा रहूं ? कह छोड़ूं, यह अनिवार्य है, होनहार है और यह कहकर इस कलंकको झेलता रहूं ? इस सब कुत्साको, कालिमाको, जीने दूं और मैं हाथ धोकर अपनी

चैनकी नींद सोऊं ? क्या मैं यही कहूं, 'तथास्तु ?' और मेरे कृत्य यही कहें, 'तथास्तु ?"

"नहीं, यह पातक अनिवार्य नहीं है. पर अविजेय है." पवनंजयने कहा और साश्चर्य पूछा, "पर तुम्हें इससे क्या ? तुम्हारे लिए क्या इससे अंतर पड़ जाता है. तुम तो अनार्किस्ट हो, क्यों ?"

"मैं खाक अनार्किस्ट हुआ ? हां मै अनार्किस्ट हूं. इसलिए कि जब मै जीवनके विषयमें सोचना शुरू करता हूं तो मेरी बुद्धि तर्कका तार पकड़कर जहां पहुंचाती है, वहां केवल नकार है. लोग एक-दूसरेको मारते है, ठगते है, बकरेकी तरह उनकी खाल उधेड़कर उन्हे खाते हैं. मै सोचता हूं, बडी खुशीकी बात है, होने दो ! हिंसामे से, बलात्कार-मेंसे विद्वेश पनपेगा, निर्बलता बल पकड़ेगी. अबल एक दिन प्रबल होगा. कलियोंसी बालाओंपर होने दो बलात्कार, मानवीय प्रतिभाको कुचली जाने दो शासनके तले, जागी रहे गुलामीका पाप, होवे चोरियां, डकैतियां बटमारियां, हत्याएं, उपद्रव, व्यभिचार !... हों, खूब हों ! जितना पाप हो, उतना अच्छा. अंत उसमे ही निकट आना है. क्यों कि नियम एक है, एक-सा है. जो निर्जीव पदार्थोंके लिए है, असंख्य श्वासों और प्राणोंसे अनुप्राणित मानवताके लिए भी वही है. 'एफर्ट इक्वल्स रजिस्टॅन्स' उद्योग-मे उतना बल होगा जितनी बाधाओंमें शक्ति. दमन भीषण होगा तो प्रतिरोध दुर्द्धर्ष. इसमे जितनी हिसा होती है, शांति उतने निकट आती है. बुराई जितनी अधिक हो, उसमे उतना ही भला है. मनुष्यताके प्राणों मे उत्साह, विद्वेश उगे और बढ़े बढ़ते-बढ़ते पककर एक फोड़ा हो जाय. इतना बड़ा फोड़ा जितना यह गोलाकार वाताकाश, जितना यह ब्रह्मांड. क्योंकि एक दिन आखिर उसे फूटना है. दर्द असह्य है, हो. आतंक है, रहे. पीड़ा है, बढे. उसका मवाद और पीव एक दिन सारी दुनियापर फैलकर उसे डुबो देती है, तो भी बुरा नहीं. मनुष्यता या तो इस आप्ल-पावनमे घुटकर मर जावेगी और किम्वा पाक होगा. नहीं तो इसमेंसे पार होकर एक नूतन, शिव, सत्य और सुन्दर जीवनका प्रादुर्भाव होगा."

लखनपाल ठंडी और काली काफीका प्याला गटगट नीचे उतार गया

और उसी आवेशमें बोलता रहा, "हां, मैं और बहुतसे लोग अपने कमरों-में बैठकर सामने मेजपर रोटी-चाय लेकर इसी तरह मनुष्यताके भविष्य-का निपटारा और समाधान किया करते हैं. एक सप्राण मानवका कागजपर पेंसिलकी नोकसे दशमलवके जाने कौनसे स्थानका मूल्य आंककर हम विश्वके भविष्यकी समस्याका हल गणित-प्रश्नके उत्तर की भांति निकाला करते है. आदमी तब काली बिंदीसे भी कम अस्ति-तत्व हमारे लिए रखता है. पर, एक बच्चेका मैं अनिष्टका शिकार देखता हू और क्रोधसे मेरी आखोंमे लहू आ चढ़ता है. एक किसान एक मजदूरकी जी तोड़ मेहनत और भूखी देहको देखकर मेरा जी बेकल हो जाता है. तब मैं अपने कागजी बीजगणिती हिसाबको याद करके शर्मसे रो पड़ता हूं. मैं कहता हूं, कुछ है, जाने कम्बख्त क्या है जो तर्कातीत है, समझको चुनौती देता है. असगत है, फिर भी है, और हमारे तर्कमे सैकडो गुना बलिष्ट और वास्तव है. वह अमरिमेय है. आज ही ...अभी.. इसी मिनट मेरे मनमें क्यो ऐसा बोध समा रहा है कि जैसे मैंने किसी सोते आदमीको लूट लिया है, मासूम बच्चेको ठग लिया है, किसी निहत्थे-निरीहपर वार किया है ! मेरे रोम-रोममें आज मुझे क्यो यह रोमाचकर अनुभूति जान पडती है कि मैं स्वय इस व्यभिचारके पातकके लिए दोषी हूं. मैं दोषी हूं, क्यों कि मैं चुप रहा हूं, मैंने उपेक्षा की है, मैंने सब कुछ सहा है, पर प्रतिरोध नही किया है मैंने एक प्रकार मौन समर्थन किया है. पवनंजय, मैं क्या करू ?" विद्यार्थीने यातना-पगे स्वरमें चीखकर कहा, "बताओ, मैं क्या करूं ?"

पवनंजय चुप रहा. अपनी अधिकांश मुंदी आंखोंमे उसे देखता रहा. तभी अप्रत्याशित, पैने और व्यगके स्वरमें जेनी बोली, "क्या करो ? क्यों, मैं बताती हूं. जो एक इंग्लिस महिलाने किया. वही तुम करो...एक सुन-हरे बालोंवाली महोदया यहा पधारी थीं. जरूर कोई बडी चढी थीं. लोगोका खासा मेला साथ था वे सब इस या उस तरहके अफसर थे. कमिश्नर साहबके असिस्टेंट मुकामी इंस्पेक्टर बर्केश उनमे पहले यहा हो गए थे. वह हमें खूब समझा गए थे, देखो लडकियों, मुर्गोकी बच्चियों (आदि-

आदि) एक भी गुस्ताखीका लफ्ज़ जो तुमने निकाला या कुछ भी किया तो मैं तुम्हारे इस घरको धरतीमें गाड़ दूंगा और तुम सबको थानेमें पहुंचाकर खूब बेंत लगवाऊंगा और जेलमें डलवा दूंगा.' सो वह श्रीमती पधारी. विदेशी भाषामें घंटों कुछ-कुछ कहती रही, बीचमें बार-बार आस्मानकी तरफ अंगुली उठाती थी. आखिरकार पांच-पांच पैसेवाली बाईबिल हम सबको बांटी और गाड़ीमें सवार हो रवाना हो गई. तुम बहादुर हो बाबू, और तुम्हें भी यह करना चाहिए."

पवनंजय ज़ोरसे हंसा. पर लखनपाल तल्लीन, उदास रहा. उसे देखकर जान पड़ा, वह जेनीकी बातका व्यंग तनिक न समझ सका है. पवनंजयकी हंसी रुक गई. गंभीर होकर उसने कहा, 'तुम कुछ नहीं कर सकते, लखनपाल. पैसा है, तो गरीबी भी है. अमीर संपत्ति बटोर सकता है, तो गरीब मरेगा भी. विवाह है, तो वेश्या भी है. जानते हो वेश्याका समर्थन और पोषण कौन करते हैं और कौन करते रहेंगे ? वही लोग जिन्हें हम तुम भद्र कहते हैं, जो सद्गृहस्थ हैं. बड़े-बड़े कुनबे और परिवारवाले उच्चवर्गी लोग, बेदाग पति और उनकी पतिव्रता पत्नियोंके भाई-बंद. वे सदा कोई-न-कोई उपयुक्त कारण खोज निकालेंगे जिससे इस किरायेके व्यभिचारवादको आईनी समर्थन और पोषण मिले. यह वस्तु मानो बढ़िया रैपरमें लिपटी हुई सहज-स्वीकृत और कायम रहे. क्यों कि वह जानते हैं, अन्यथा उनके विलास-भोगकी बाढ़ उनके अपने घर-भीतर छा फैलेगी. व्यक्तिकी विषय-कामना अपनी निजी, विवाहित और वैध स्त्री-संपत्तिकी ओरसे विमुख अथवा अतृप्त होती है, तब उसे अपनेमें धारण करनेवाली, और इस भांति समाजिक सदाचारको निरापद करनेवाली, संस्थाका नाम उनके निकट 'वेश्या' है. अतः विस्तृत परिवारोंके धनी, ये धनी लोग लुके-छिपे इस प्रकारकी गुप्त प्रेमकी हाटमें स्वयं गोते मार लेनेमें संकोच नहीं करते. सच भी तो है. सदा एक ही-एकसे पाला पड़नेसे चीजका मज़ा फीका जो होजाता है ! वह एक सब कोई है, पत्नी या आश्रिता, या कोई और. मनुष्य वास्तवमें बहुभोगी प्राणी है और जैसे बुरी तरह बहुभोगी. और उसे इसका सदा बहुत आकर्षण रहेगा कि वह ट्रिपिल या

अन्ना मरकानी जैसे कामिनियोंके उद्यानोंमें अपनी प्रेम वासनाओंकी चित्र-विचित्र लीलाएं देखे और चटपटी संतृप्ति पाए. ओह गृहस्थीके जूएमें जुता हुआ प्रौढ़ पति, आधे दर्जन वयस्का कन्याओंका बाप, पूरे परिवार-का मालिक, चकलेके चुटीले आकर्षणसे बच नहीं सकता. उस संस्थाका पोषण वह अवश्य करेगा. वह यहां तक करेगा कि लॉटरी निकालकर अथवा और इसी प्रकारके साधन जुटाकर इस प्रकारकी पतिता स्त्रियोंके लिए सत साध्वी मेग्डलीनके नामपर वनिता-विश्राम और वनिताश्रम आदिकी आयोजना कर देगा पर वेश्याका अस्तित्व वह कायम ही रहने देगा और उसका समर्थन करेगा."

"मेग्डलीन आश्रम !" जेनीने दोहराया। और वह हंसी. उसके भीतरकी संचित घृणा, जिसकी पीडा अबतक उसके भीतर दबी न थी, उसके हास्यमें अद्भुत और उद्धत भावमें व्यक्त हो गई.

"हां, मैं जानता हूं, यह सब जो सुधारके नामपर किया जाता है व्यर्थ है और व्यंग." लखनपालने बीचमें पड़कर कहा, "पर मुझे लोग हंसें, मूर्ख कहें, मैं नहीं चाहता कि मैं बैठा-का-बैठा रहूं. वह दयालु दर्शक मैं नहीं बना रहूंगा जो जलती आगको अपनी जगह बैठा देखता है और बस चिल्लाता रहता है, 'हाय, वह जला, वह जला !—अरे, बचाओ, वे आदमी जले जा रहे हैं !' वह चीखता रहता है और बैठा-बैठा ही हाथ-पैर पीटकर अपनी सहानुभूति और वेदनाका प्रकाश करता रहता है"

पवनंजय कठोर होकर बोला, "तो क्या तुम बच्चेकी पिचकारी लेकर आग बुझाने चल देना चाहते हो ?"

"नहीं !" आवेशतप्त लखनपालने कहा, "कौन जानता है, शायद मैं एक जीवित आत्माकी रक्षा तो भी कर ही सकूं. पवनंजय, यही बात है जिसके बारेमें मैं तुम्हें पूछना चाहता था पवन, बंधु, तुम सहायतासे विमुख नहीं हो सकोगे....पर, मैं कहता हूं मुझपर व्यंग न छोडो, छींटे न दो कि मैं ठंडा हो जाऊं."

पवनंजयने उसे ध्यानपूर्वक देखा. लखनपालकी अबतककी बातका मर्म अब वह समझा. कहा, "तुम यहांसे एक लड़कीको निकालकर उद्धार

करना चाहते हो ? उसकी रक्षा करना चाहते हो ?"

"हां, नहीं....जानता नहीं...चाहता हूं. कोशिश करूंगा." अस्थिर भावसे लखनने उत्तर दिया.

पवनंजयने कहा, "वह वापिस आ जायगी."

जेनीने तीव्रतासे अनुमोदन किया, "जरूर आजायगी."

लखनपाल बढ़कर जेनी तक पहुंचा, उसके हाथोंको पकड़ा और सकम्प स्नेहाविष्ट धीमे स्वरमें बोला, "जेनी, जेनेस्का, शायद तुम्हीं...ओह नहीं, प्रेयसी नहीं, वह नहीं. तुम्हारा व्यक्तित्व रहेगा. और मैं सहयोगी रहूंगा.. ओह जरा-सी तो बात है...आधा साल भी किसका लगना...और फिर...तुम कोई हुनर सीख लोगी और कोई कारबार शुरू कर दोगी... है न ?...और हम साथ मिलकर पढ़ा करेंगे."

जेनीने, खीझकर, जल्दीसे खींचकर अपने हाथ छुडा लिए. "ओह, मोरीमें पड़ो तुम." वह चीखकर बोली, "मैं तुम लोगोंको जानती हूं. तुम सबको जानती हू. तुम चाहते हो, मैं घर बैठी तुम्हारे लिए कपडे सीया करूं, चूल्हेमे लगी बैठी रोटी बनाऊं. तुम जब अपने दोस्तों में बैठे-बैठे गप्पें लगा रहे हो, मैं रातभर जगती पलकोंपर तुम्हारी राह देखा करूं. और जब तुम पढ़कर डाक्टर बन जाओ, वकील बन जाओ, या सरकारी मुलाजिम बन जाओ तो बस मैं लातोंकी रह जाऊं. मेरी पीठपर लात देकर तुम चिल्लाओ,' निकल यहांसे, रांड. मेरी जिन्दगी तैंने बर्बाद कर दी. निकल, मैं एक अच्छी, क्वांरी नई पैसेवालीसे ब्याह करूंगा."

लखनपाल स्तब्ध हो गया. असमंजसमें लडखडाते स्वरमें बोला, "मैं भाईकी तरहसे कहता था...मेरा मतलब....नहीं, वह नहीं....मैं भाई बनकर...."

"तुम्हारे भाई बननेको मैं जानती हूं. रात पहली आई कि...छोड़ो-छोड़ो, डींगकी मत हांको. ऐसी बातें सुनकर मैं ऊब जाती हूं."

"ठहरो लाखन" पत्रकारने गंभीरतासे कहना शुरू किया, "क्यों तुम अपने हाथों अपने कंधोपर सामर्थ्यसे ज्यादा बोझ लादते हो ? मैंने आदर्शवादी देखे हैं. कई देखे हैं, जिन्होंने सिद्धांतका संकल्प बनाकर गांवकी

लड़कियोंसे ब्याह किया. इसी पद्धतिसे वे सोचते थे. कहते थे, उनमे ताजगी होगी, प्राकृतिक शक्तिका स्फुरण, दंभका अभाव, सरल रुचि! ...लेकिन यही स्फूर्ति-मीत, सरल रुचिवाली प्रकृति-कन्या सालभर बाद साधारण हो पड़ती है. देह उसकी फूल जाती है. खाटपर पड़ी-पडी फिर वह बिस्कुट चाबती रहती है, उंगलीमेंसे अगूठी बार-बार निकालती और बार-बार डालती है, और बस इसीमें मगन दीखती है. या रसोईमे बैठकर, शराब पास ले, कोचवानके साथ प्रेमका व्यापार चलाती है .. और सुन लो, तुम्हारे साथ और भी बुरी बीतेगी"

तीनों चुप थे. लखनपाल पीला पड़ गया था और भीगे माथेको रूमालसे रह-रहकर पूछता था.

एकदम साग्रह स्वरमे उसने कहा, "नही, कुछ हो, मे नहीं मानता. मै नही मानना चाहता." और लुवी जो सोई पड़ी थी, उसे पुकारकर कहा, "लुवी !"

लुवी जगी. मुहपर हाथ फेरा. पहले इधर, फिर उधर, अगडाई ली. और शिशु-सम अबोध और बे-माइने हसी हसी, "मै सो थोड़े रही थी. मैने सब कुछ सुन लिया. जरी देरको ऊंघ आ गई थी."

लखनपालने उसका हाथ थाम लिया, पूछा, "लुवी, लुवी तुम मेरे साथ यहांसे चलना नही चाहोगी ? घर, बिल्कुल बिल्कुल हमेशाके लिए ऐसा चलना कि यहां या और कही, फिर कभी लौटनेकी बात न रहे."

लुवी, विमूढ, प्रश्नवाचक दृष्टिसे जेनीको देखने लगी, मानो उससे इस मज़ाककी बातकी तफसील पाना चाहती है उसने कहा, "और फिर तुम क्या बनाओगे. तुम खुद पढ रहे हो. फिर कैसे तुम मुझे ले जानेकी और घर रखनेकी बात कहते हो ?"

"नहीं, लुवी ! तुम्हारे उद्धारकी बात नही कहता. मै बस तुम्हारी सहायता करना चाहता हू. क्योंकि यहा भी तुम्हे आराम नही है. कहो, है ?"

"नहीं, शहद-सी मीठी जगह तो यह है नही. मै ऐसी गर्वीली होती जैसी जेनी या ऐसी स्वादवाली जैसी पाशा...तो...लेकिन, कुछ हो, मुझे तो

यहां कभी आराम होगा नहीं."

"तो चलो, चलो..." लखनपालने उत्कंठित आग्रहसे कहा, "और कोई न कोई दस्तकारी तुम जानती ही होगी, जैसे सीना, पिरोना, काढ़ना, बुनना ?'

"मैं कुछ नहीं जानती." लुवी सलज्ज होकर बोली और वह लाल पडकर हंस पडी और बांहमें उसने अपना मुंह ढंक लिया. "जो गांवमें काम पडता है मैं वही जानती हूं. और कुछ मैं नहीं जानती. कुछ पका-बका सकती हूं मैं एकके घर रही थी, उसकी रोटी बनाती थी..."

लखनपाल उल्लसित हो गया

"वाह, फिर क्या है. यह तो खूब है. मैं सहायता करूंगा और तुम एक ढाबा खोल लोगी. एक सस्ता-सा काम, समझी न ? उसके विज्ञापनका जिम्मा मैं लेता हूं. स्कूलके लड़कोंको मैं जामिन, सब वहीं रोटी खाया करेंगे. मैं कहता हूं, यह तो खूब बात रहेगी."

"मेरी बहुत हंसी मत करो जी." लुवीने जरा बिगड़कर कहा, और प्रश्नवाचक दृष्टिसे जेनीकी ओर देखा

"वह हंसी नहीं कर रहे हैं, लुवी." जेनीने कहा. उसकी आवाज विलक्षण रूपमें कांप रही थी. "वह झूठ नहीं कह रहे, लुवी, तू मान. वह दुखी है, वह गंभीर है."

'मैं अपनी इज्जत बंधक रखकर कहता हूं, मैं मनकी बात कह रहा हूं. मेरा परमात्मा गवाह है." लखनपालने हार्दिक उत्साह और चाव के साथ कहा और अनायास ऊंगलियोंसे क्रॉस-संकेत किया

"हां, सच," जेनीने कहा, "लुवीको तुम ले जाओ. मेरी और बात है. मैं तो जैसे इक्केमें पुरानी घोडी पड़ गई हूं. सबकी मैं आदि हो गई हूं. मुझे न अब घास दिखाकर पलट सकते हो, न कमची दिखाकर. लेकिन लुवी सीधी लडकी है और भली. वह अभी यहांके जीवनमें डूब नहीं गई है. क्यों री, तू बिल्लीकी तरह आंख निकालकर मुझे क्या देख रही है ? पूछूं, तब बोल. बता, तू जाना चाहती है या नहीं जाना चाहती ?"

"अगर वह हंसी नहीं कर रहे, सच्ची कह रहे हैं, तो जाना क्यों नहीं चाहती...और जैनेश्का, तुम मुझे क्या करनेको कहती हो ?"

जेनी बिगड़ गई.

"तू बिल्कुल मिट्टीकी लोंधा है ! तू बता, तुझे क्या अच्छा लगता है ? दोजखमें रहना या ईमानकी जिंदगी बसर करना ? कुतियाकी तरह बंद पड़ी सड़ती रहना या आदमीकी तरह इज्जतसे रहना ? चल, मूरख उसके हाथ चूम...पर देखती हूं, तू खुद होशियार है !..."

सुन्दरी लुबाने सचमुच अपने ओठ लखनपालके हाथकी ओर बढ़ाए. उस समय सब हंस पड़े. उन ओठोंने बस जरा उन हाथोंको छू दिया.

"ओह, वाह ! यह तो खूब पूरा जादूमंतर हो गया !" आल्हाद और उल्लाससे भरा लखनपाल बोला, "जाओ, अभी जाकर मालकिनसे कह दो कि तुम यहासे बिल्कुल चली जाना चाह रही हो. और जो बहुत जरूरी हो सामान साथ ले आओ. अब पहले जैसी बात थोड़े है. अब कोई वेश्यालयसे जब चाहे निकलकर जा सकता है, क्यों ?"

जेनीने उसे रोककर कहा, "नहीं, वैसे यह सब नहीं हो जाएगा. वह चली जा सकती है, यह तो ठीक है. पर अभी जाने कितने झगड़े तुम्हें सुलटने हैं. अभी खासी परेशानी तुम्हें भुगतनी है. सुनो, एक काम करो. दस रुपए तुम अभी दे सकते हो ?"

"जरूर-जरूर. जो कहो—"

"लुबी जाकर रक्षिकासे कहे कि तुम उसे आजके लिए अपने घर ले जा रहे हो. इसकी बंधी फीस है, दस रुपए. फिर बादमें, समझो कल ही, तुम आकर टिकट और सामान ले जाना. कोई बात नहीं, हम सब ठीक ठाक कर रखेंगे. उसके बाद वह टिकट लेकर तुम्हें थानेमें जाना होगा. वहां कहना होगा कि मुसम्मात लुबी मेरे यहां किराए पर आई है, रहती है, और अब मैं उसके पीले टिकटके एवज असली पासपोर्ट चाहता हूं. अच्छा लुबी, खुश रहो. पैसा लो और जाओ. देखो, संरक्षिकाके साथ खूब चौकन्नी होकर बात करना. नहीं तो वह कुतिया तुम्हारी आंखें देखकर कुछ समझ न जाए. और सुन, एक बात मत भूलना." जाती

हुई लुवीकी पीठपर उसने चिल्लाकर कहा, "यह चेहरेका लेप पाउडर तमाम पोंछ लेना. नहीं तो लोग सब उसे देखकर उंगली उठाएंगे."

कोई आध घण्टे बाद लुवी और लखनपाल द्वारपर खड़ी एक गाड़ीमें सवार हो गए. जेनी और पत्रकार पटरीपर खड़े थे.

पवनंजयने अन्यमनस्कतासे कहा. "लखनपाल, तुम भारी मूर्खता कर रहे हो. पर मैं तुम्हारा सम्मान करता हूं. तुम्हारा चित्त शुभ है, वृत्ति तत्पर. इधर सोचा और उधर किया. लखनपाल, तुम बहादुर आदमी हो, वीर और कृतनिश्चय !"

"शुभारम्भपर मेरा भी अभिवादन लो" जेनी हंसी, "देखना, छुट्टी पर मुझे बुलावा भेजना न भूलना"

हंसते हुए लखनपालने गाडीमें से अपनी टोपी हिलाते हुए कहा, "उसकी बाट ही देख ली जाएगा, वह दिन आएगा नहीं."

वह चले गए.

पत्रकारने जेनीको देखा. उसे अचरज हुआ. देखा, उसकी तरल आंखोंमें आंसू डबडबा आए हैं.

वह अपने मनके भीतर मना रही थी, "परमात्मा इन्हें सुखी रक्खे, परमात्मा वह सुदिन लाए !"

पत्रकारने घनिष्ट स्नेह-सकुल वाणीमें पूछा, "जेनी, आज तुम्हें यह क्या हो गया है ? क्या है, मुझे कहो जेनी. क्या तुम्हारा दुःख है ? क्या मैं कुछ नहीं कर सकता हूं ?"

वह मुंह फेरकर छज्जेकी रेलिंग पकडकर झुकी हुई जाने क्या देखती रही फिर भावरुद्ध कण्ठसे बोली, "पवनंजय, आ पडे तो मैं तुम्हें किस पतेपर लिख कर याद करूं बताओगे ?"

"पता ? 'आदेश' पत्रका संपादकीय विभाग लिख देनेसे मैं जहां हूंगा, मुझे पत्र मिल जाएगा ..पर जेनी...'

"मैं.. मैं..." जेनीने आरम्भ किया और कुछ कहना चाहा. किन्तु कह न सकी और एकदम फूटकर सुबक उठी. फिर हाथोंसे अपना मुंह ढंके-ढंके वह बोली, "मैं तुम्हें लिखूंगी."

और मुह परसे हाथोको बिना हटाए उसी भाति ग्रावृत मुख और विकम्पित देहको लेकर वह सीढियोसे जल्दी-जल्दी ऊपर चढ गई और कमरेमे पहुचकर जोरसे अपने पीछेका द्वार बन्द कर लिया.

दूसरा भाग

दस वर्ष बीत गए हैं, पर आज भी यामकासके निवासियोको उस दुर्द्धर्ष वर्षकी याद है, जब एक-पर-एक अभागी, कराल, लहूसे लहान घटनाए हुई आरभ छोटे-मोटे उपद्रवोके सिलसिलेमे हुआ, अत यह कि एक रोज मरकाग्ने सबका खात्मा ही कर डाला ये जो यहा वेश्यावृत्तिके कानून सम्मत माना मन्दिर-पर-मन्दिर बने हुए थे सो सब एक दिन ढह गए और उसपर बसर करनेवाले जीव-जन्तु अस्पतालोमे, कुछ जेलोमे और कुछ बडे बडे नगरोके गली-कूचोमे फैल गए उन वेश्यालयोंकी मालिकनोंमेसे दो-एक अब भी जीती है. वह जर्जर हो गई है, सठिया चली है और बड खिन्न, विपण्ण, और शकित मनसे उस वर्षकी सहार लीलाकी याद करती है

जैसे बोरेमेसे आलू निकल पडे, लगभग उसी भाति जाने कहासे टटे. बखेड, डाके, रोग, हत्या और आत्महत्याए होने लगी. पता न चला, आखिर बात क्या है. आप ही-आप मानो स्पर्द्धामे ये उपद्रव एक-पर-एक बढते चले गए, फैलते चले गए जैसे उनकी फसलका ही यह मौका हो जाडेके दिनोमे लडके बर्फको लोधा बनाकर उसे जितना लुडकाते है उतना ही बडा वह होता जाता है. तब फिर बडी मुश्किलसे धकेलनेपर नीचे गिरता है. मगर सरका कि फिर धडधडाता लुढकता ही चला जाता है ! वैसा ही यहा हुआ. बूढी मालिकनो और रक्षिकाओको अलबत्ता उमका पहलेसे कुछ पता न लगा, पर भीतर-ही-भीतर उस भयकर वर्षमें घटने वाली दुस्सह विपदाओका कुछ विलक्षण पूर्वाभास हो चला था.

वास्तवमें जहा कही जीवन सामुदायिक है पारिवारिक संबन्धोके

कारण, समव्यवसायी होनेके कारण, अथवा जातीय एकता होनेके कारण जहां पारस्परिक सम्बन्धोंकी ग्रंथि मानो सामूहिक व्यक्तित्व खड़ा कर देती है, वहां ही यह देखा जाता है. घटनाएं घटती हैं तो मानो बन्द होना नहीं जानतीं. एक बीती कि उसके सिरपर दूसरी, फिर तीसरी, विपदाएं आती ही चली जाती हैं. घटनाओंके आकस्मिक विस्फोट, उनके व्यापक प्लावन, गतानुगतिकता, उनका तरतम सम्बन्ध, उनकी अविच्छिन्न लड़ीके रूपमें चलनेमें जो एक अज्ञेय नियम व्याप्त रहता है, हम जहां चाहें देख सकते हैं. पुराने लोगोने जैसा कह रक्खा है, कुनबोंमे, बिरादरियोंमें यह नियम अधिकतर देखनेमे आता है. एक मरता है तो देखा गया है कुनबेका कुनबा, न कुछ समयमे कालके गालमें चला गया है. एक गया कि वहीं दूसरा, फिर तीसरा. कई मुहावरे इसी आशयके बन गए हैं. मठोंमें, सरकारी विभागोमें, रेजीमेन्टोंमे, शिक्षालयो और संस्थाओंमें, जहां अनेक शताब्दियोंसे जीवन मंदगामिनी सरिताकी भांति सहज भावसे बहता रहा, दिन आता है कि एक साधारण-सी घटना घटती है, और बस उलट-पलट शुरू हो जाती है, लोग मरने लगते हैं, दिवाले पिटते है, बीमारियां आती हैं, और मालूम होता है जैसे उस समुदायके व्यक्तियोने आपसमें षड्यन्त्र रचकर, यो ही जान देने और जान लेने, पागल हो जाने, चोरी करने या और ऐसे ही काम करनेकी ठान ली है. जगह-पर-जगह खाली होती हैं, और भरी जाती हैं नए; आदमी आते हैं, पुराने गायब हो जाते हैं. और साल दो-एकमें पता चलता है कि सभी नया हो गया है और पुराना कुछ भी नहीं रह गया है. बस, संस्थाकी इमारत नहीं गिरी तो नहीं गिरी, बाकी पूरा कायाकल्प हो गया है. और कौन जानता है कि हमारी सामाजिक संस्थाएं, सार्वजनिक संगठन जिस विराट नियमके आधीन हैं, नगर, साम्राज्य, जातियां, राष्ट्र और क्या मालूम सौर मंडल-ग्रह-नक्षत्र-युक्त विश्व उसी नियमके अधीन नहीं है? वैसा ही कुछ अनिर्दिष्ट दुर्भाग्य याम्सकायाकी बस्तीपर टूट कर पड़ा. बस्ती देखते-देखते लुट गई और उजड गई. उस जनरव संकुल यामाकी जगह आज एक शान्त, उजड़ा, बे-बस-सा खड़ा रह गया है, जहां छोटे

छोटे किसान, कुछ तातार, कुछ गडरिये, आसपासके कस्साब खानोंमें काम करनेवाले कसाई, और कुछ इसी तरहके लोग रहते हैं. यहांके रहनेवालोंकी दरख्वास्तपर उसे गोल्युवाबका नाम दे दिया गया है. गोल्युवाब मुकामी गिरजाघरका मुन्तज़िम था और पन्सारीकी दुकान करता था. इस भाग्यके प्रकोपकी पहली लहर यहां गर्मियोंके दिनोंमें आई. धार्मिक मेलेके दिन थे. इस साल मेलेमें खास रौनक थी. इस अभूतपूर्व समारोहके कई कारण थे. आदमी भी बहुत आए थे और उसमें रुपया भी लाखों इधरका उधर हो गया था. कारण यह था कि पास ही खांडकी फैक्टरी खुली थी और इस साल गेहूं, और खासकर गन्नेकी फसल खूब हुई थी. नहर खोदनेका और बिजलीकी ट्रालो चलानेका काम भी चल रहा था. साथ सौ-पचास मील लम्बी एक सड़क भी बनाई जा रही थी. और सबसे बड़ी बात यह थी कि सारे कस्बेमें, सब बैंकरों, व्यवसाइयों, और जमीदारोंमें मकान बनवानेकी होड़ सवार हो गई थी. गांवके आसपास झरबेरियोंकी तरह ईंटके भट्टे खड़े हो गए थे. एक विशाल कृषि प्रदर्शनीभी तब हुई थी. दो स्टीमर लाइन नई खुल गई थी. एक पहले से थी ही. तीनोंमें सामान और मुसाफिरोंको ले जानेमें खूब बदा-बदी चलने लगी. होड़ इतनी बढ़ी कि मुसाफिरीका तीसरे दर्जेका किराया पांच रु० से उतरकर चार, तीन, दो, और यहां तक कि एक आने आ गया. अन्तमें यह सोचकर कि इस असमान लड़ाईमें काम कहीं बिल्कुल डूब ही न जाए, एक कम्पनीने तो तीसरे दर्जेके मुसाफिरोंको मुफ्त ही ले जाना शुरू कर दिया. फिर तो मुफ्त सवारीके साथ मुफ्त खाना भी दिया जाने लगा. लेकिन इस नगरका खास काम, नदीके मुहानेपर, इन्जीनियरिंगका था. सैकड़ों हजारों मजदूर जाने कहां-कहांसे उसके लिए आ गए और परमात्मा जाने कितना रुपया उसके लिये लग रहा था.

यह भी कह देना चाहिए कि इसी समय शहर रूसके सबसे प्रसिद्ध और धन-सम्पन्न एक मठके महन्तका अर्द्ध शताब्दि उत्सव मनाया जा रहा था. रूसके कोने-कोनेसे, साइबेरियासे, वहांसे जहां बारह महीने समुद्र जमा रहता है, और बिल्कुल काले सागर और कास्पीयन सागरसे वे

तादाद यात्री उक्त महन्तकी भू-गर्भस्थ अस्थि-खण्डके पूजा-महोत्सवके लिए यहां जमा हुए. यह कहना बस हो कि चालीस हजार आदमी मंदिर के बाड़ेमें रहते और भोजन पाते थे. और जिन्हें रातको वहां काफी जगह न मिलती वे लट्ठोंकी तरह मन्दिरके बड़े दालानों और गलियों-सीमें ही बराबर-बराबर पड़ जाते और रात काट देते थे.

इस सालका मौसम ऐसा था जैसे परियोंकी कहानीमें हो. बाहरके इतने लोग आए थे कि शहरकी आबादी चौगुनी हो गई थी. राज, बढ़ई. मिस्त्री, पेन्टर, परदेसी, इन्जीनियर, किसान, दुकानदार, दलाल, पत्तेबाज, सट्टेवाले, मल्लाह, और ठाली उचक्के, सैरबाज़, चोर सबके सब इकट्ठे होगये थे. सराय कोई खाली न थी कैसी हो कमरोंके मुह मांगे दाम मिलते थे. सट्टेका बाज़ार गर्म था. जुएकी दर ऐसी चढ गई थी कि कभी न हुई हो ! लाखों-लाख रुपया इस हाथसे उस हाथ पहुंच रहा था. घण्टोंमें अतुल सम्पत्ति बन जाती और उसी घण्टेमें बहुतेरे फर्म बैठ भी जाते. कलके रईस दिवालिये हो गए और मोहताज सेठ बन गए. रोजका मज़दूर भी इस बहती सोनेकी गंगामें एक-आध डुबकी लगा लेने-का लालच नहीं रोक पाता था. झल्लीवाले, फेरीवाले, राज, मट्टी ढोने-वाले, टोकरी बुननेवाले, ऐसे-ऐसे लोग अब भी याद करते हैं कि उन गर्मीके एक-एक दिनमें क्या-क्या माल कमाया था. गाड़ीमें तरबूज़ ढोकर लानेवाले हर ऐरे-ग़ैरेको चार-पांच रुपयेसे कम मज़दूरी नही मिलती थी. और यह सब बदतमीज़ परदेसी गवार लोग सस्ता पैसा कमाकर शहर-की चकाचोंधके नशेसे मस्त और मत्त होकर रातकी सोंधी गर्मीमें मत-वालेबने. फूलोंकी महकसे भरकर, ये तीन लाख अतृप्त, स्खलित मनुष्य-रूप पशु अपनी सम्पूर्ण संचित तृष्णासे मांगते थे—"औरत ! औरत!"

एक महीनेके अन्दर-अन्दर भांति-भांतिके मनोरंजनके साधन उप स्थित हो गए, थियेटर, सरकस, कारनिवाल, नाच, स्वांग. बहुतेरे दारू-खाने खुल गए. खानेकी दुकानें, रेस्टोरां, काफे उठ खड़ हुए. जहां जगह मिली वहां ही शराबखाना, या काफे दिखाई देते. जहां चौरस्ता होता, वहीं नए-नए साइनबोर्ड, नई-नई दुकानें खुलतीं. साइनबोर्डपर

लिखा रहता, 'शराब!' लेकिन भीतर शराबके साथ-साथ अंगनाएं स्वयं भी प्रस्तुत रहती.ढली उम्रकी, एक-एक दुकानमें दो-दो तीन-तीन अपना काम चलातीं. बहुतेरे माता-पिताओंको अपने पुत्रोंके घृणित रोगोंके कारण उन दिनोंकी आज भी याद बनी है. जो बाहरसे आए, सेविकाएं मांगते थे. सो आसपासके गांवोंसे हजारों लड़कियां वहां आ-आकर जमा हो गई. मांग बेहद थी, जरूरी था कि कीमत भी चढ़ जाती. सो बारसासे रोड्जसे, ओडीसासे, रीगासे, मास्कोसे, सेन्टपीटर्स बर्गसे, यहांतक कि विदेशोंसे, अनगिनत कामनियोंके झुण्डके झुण्ड वहां पहुचने लगे सीधी-साधी, अपढ़, मामूली साचेकी देशी ही सब नही आई थी. पर चढ़े दामोंवाली, बढ़िया फ्रेंच, वीयनाकी, जर्मनीकी, हंगरियाकी भी अभ्यस्त वनिताएं आई थी. पैसेका दौर दौरा था. करोड़ो रुपया तरल होकर जीवनके सब विभागोंमें पहुंच रहा था और उन्हे गला रहा था. जैसे कि मानो सोनेका मीठा भीगा कोडा सारे नगरको तदाह कर पीट रहा था. जैसे कि सोनेके पानीकी बाढ नगरपर चढ आई हो और नगरवासी बह रहे हो; पिट रहे हो और मग्न हो. चोरी और हत्याओंकी सख्या आश्चर्य जनक द्रुत वेगसे बढ गई. पुलिस मोकोंपर बड़ी तादादमें इकट्ठी होती. पर भीडके सामने उसके हौसले खो जाते और पैर उखड जाते. पर यह भी कह देना होगा कि मोटी घूसे खा-खाकर पुलिस अघाए अजगरकी भांति हो गई थी जो डरावना तो है, पर ऊघता रहता है और कुछ कर-धर नही सकता. आदमी हर बातके लिए, या बे-बात, मौतके घाट उतार दिए जाते. ऐसा भी होता कि चलते-चलते कुछ आदमी मिले, एकने पूछा, 'तुम्हारा नाम क्या है?' 'फेडरो' 'ओह, फेडरो, तो लो' और फेडरोका पेट चाकूसे वही चाक कर दिया जाता. ऐसे चाकुओंका अपना अलग नाम ही पड गया था और वहा वे छटे-छटे लोग भी थे जो सरनाम थे और जिनपर मानो इस नगरको गौरव था. दोनों भाई मिट्टू और झण्डू, गूजर, बल्दू, फिद्दा बढ़ई, कप्तान मित्तरू, सेवल, दुर्जन दर्जी, शेरू और इसी तरहके और कई छटे गुण्डे वहां थे.

और दिन रात बड़ी-बड़ी सड़कोंपर बोखलाई जनता सड़कको घेरे

हुए खड़ीं रहती, चलती रहती, चिल्लाती रहती, 'वह आग लग गई ! वह मरा! यह हुआ,' आदि-आदि. यामकासमें तब क्या नहीं हो रहा था, या क्या हो रहा था, कहना असंभव है, अगरचे वेश्यालयोंकी मालकिनोंने अपने-अपने यहांकी कामनियोंकी संख्या दुगनी तिगुनी करली थी, और उनकी कीमतें बेहद बढ़ा दी थी; लेकिन फिर भी वे बिचारी इन मदमत्त विक्षिप्त लोगोंको नहीं भर सकीं जो टीनके टुकड़ोकी तरह चांदी फेंकते आते और चांदी फेंकते जाते. ऐसा बहुधा होता था कि ड्राइंगरूममें भीड़की भीड़ आदमियोंकी इकट्ठी रहती, और एक-एक लड़कीके पीछे सात, आठ, और कभी दस-दस आदमी एक वक्त उम्मीदवारीमे रहते. एक उन्मत अमानुषी, घोर, क्रूर कलिकाल था वह.

और ठीक उसी समयसे यामकासके दुर्भाग्यका आरंभ होता है. इस दुर्भाग्यने उसे ख़त्म करके छोड़ा. और यामकासके साथ-साथ हमारी परिचित, पीत,प्रगलभ पीताक्षी वृद्धा अन्ना मरकानीके उस वह वेश्यालयको भी.

२

दक्खिनसे उत्तरको एक पेसेन्जर ट्रेन प्रसन्नतासे भागती हुई चली जा रही है. पके गेहूंके सुनहरे खेतों और वृक्षोंके कुञ्जोंमेंसे चांदीकी उजली नदियोंकी छातीपर छाए हुए लोहेके पुलोपरसे गड़गड़ाती, धुएंके उगड़ते हुए बादल छोड़ती, वह चली जा रही है. दूसरे दर्जेके एक डिब्बेकी खिड़कियां खुली हैं. गर्मी बहुत है और वहां हब्स है. धुएंसे लोगोंके गले खराब हो रहे हैं. रेल के सफर और गर्मीसे लोग थक रहे हैं. लेकिन एक आदमी है जो न थकना जानता है, न चुप होना. चपल है, पुष्ट देह, आनबानके कपड़े पहने है, बातूनी और मिलनसार. उसके साथ है एक स्त्री. दोनों संग-संग जा रहे हैं. प्रगट है (स्त्रीके कारण और भी स्पष्टतासे प्रगट है) कि दोनों नवविवाहित हैं. पुरुष तनिक कुछ प्रेम सम्बोधन अथवा संकेत करता है तो स्त्रीके चेहरेपर झट लाली दौड़

आती है. और जब वह आंख उठाकर उसकी ओर देखती है, उसकी आंखें तारे-सी चमक जाती हैं और तरल हो आती हैं. उसका चेहरा ऐसा सुन्दर है, जैसा प्रेम-मग्न तरुणी कुमारियोंका ही हो सकता है. कोमल, संपुटित गुलाबी ओठ हैं, जिनके चारों ओर अबोध कौमार्यकी छाया है, और आखें ऐसी-काली कि पुतलियोंका अन्तर वृत पहिचानना कठिन होता है.

तीन अपरिचित व्यक्तियोंकी उपस्थितिसे जैसे उस व्यक्तिको कुछ बाधा नहीं है. वह मिनट-मिनटमें स्त्रीसे बेहूदे संकेत करता और बेहूदे सम्बोधन करता है.

पतिकेसे निस्संकोच और निर्व्याज, और प्रेमीके जैसे साधिकार और लोलुप भावसे वह यह सब कर रहा था. मानो सारी दुनियांको वह कह रहा है—'देखो-देखो, हम कैसे खुश हैं. देखकर तुम भी खुश हो न ?' कभी वह उसकी जांघपर हाथ फेर उठता—स्त्रीकी पीन पुष्ट जंघाका आकार कपड़ेके भीतरसे मनोरम दृष्टिगोचर होता था. अभी उसके गालमें चुटकी भरता, अभी अपनी काली तनी मूछोंकी नोकोंसे उसकी गर्दनपर गुदगुदाता....पर यद्यपि वह उल्लासमें मस्त और प्रफुल्लित दीख पड़ता था, फिर भी उसकी चलती हुई आखें, ओठोंके फैलाव, उसके साफ चेहरेकी लटकती चोकोर ठोढ़ी, जिसके बीचमें तनिक भी वक्र न दिखाई देता था—इनमें कुछ भाव था जो सन्दिग्ध, अनियन्त्रित और अस्थिर था.

इस प्रेमी युग्मके सामने तीन और यात्री बैठे थे. एक संक्षिप्त देह साफ, वृद्ध अवसर-प्राप्त जनरल थे. बाल बाकायदा बढ़े हुए थे, कुछ लच्छे कनपटी तक आ गए थे. दूसरा हट्टा-कट्टा जमींदार था. उसने अपना नया कालर गर्मीके कारण उतार कर रख दिया था फिर भी मिनट-मिनटपर हांफ रहा था और गीले रूमालसे रह-रहकर अपना मुंह पूंछता था. तीसरा एक नववयस्क फौजी अफसर था. उस बातूनने बहुत जल्दी अवसर निकालकर अपने सहयात्रियोंको पता हो जाने दिया था कि उसका नाम सामंत यादोराम हीरासिंग है. उसकी बातोंका अन्त

न था. जैसे बन्द कमरेमें, गर्मियोंके दिनोंमें कांचकी खिड़कीपर बैठी मक्खी भिन्न-भिन्न करती रहे तो आदमीको बुरा लगता है. वैसे ही लोग इसकी बातोंसे ऊबकर तंग आ रहे थे. पर फिर भी वह जानता था, लोगोंका दिल कैसे लगा लेना होता है. उसने जादूके खेल दिखाए ; हंसी की नई-नई कहानियां सुनाईं. जब उसकी स्त्री प्लेटफार्मपर घूमने जाती तो वह ऐसी-ऐसी बातें करता कि जनरल गुप-छिप रसीली हंसी हंसते, जमीदार मानो हिनहिना उठता, जिसमें उसका पेट सुनिदिष्ट रूपमें आगे पीछे, ऊपर नीचे होता दीख पड़ता; और वह नया चिकना अफसर, अपनी विह्वलता और हंसी रोकनेमें असमर्थ होकर, एक ओर मुंह फेर-कर कि लोग देख न लें उत्कण्ठासे लाल हो हो रहता.

स्त्री स्निग्ध, मुग्ध भावसे हीरासिंगकी सेवा कर रही थी. अवसर निकाल निकालकर वह रुमालसे उसका मुह पोछती, पंखेसे हवा झलती, उसके कपड़ोंकी सलवटें ठीक करती. ऐसे समय उसका चेहरा गर्वसे और रससे निखर आता.

"क्या मैं पूछ सकता हूं," वृद्ध, क्षीण जनरलने जरा खांसते हुए पूछा, "क्या मैं पूछ सकता हूं, आप, आप क्या काम करते हैं?"

"आह, काम ?" सामंत यादोरामने अत्यन्त विपद सहृदयताके साथ कहा, "बताइए इन दिनों मुझ-सा बेचारा आदमी क्या करे? यही है कि घूम-घामकर कुछ बेच लेता हूं. और कुछ दलाली कर लेता हूं. इन दिनों तो ज़रा उससे छुट्टी है. जी . हां . हि हि हि ! आप लोग खुद समझते हैं. अभी गौना हुआ है —सरमुती लजानेकी क्या बात है. हमेशा तो यह दिन आते नहीं. लेकिन इसके बाद मेरे लिये तो वही घूमना बदा है और वही कसके काम करना. हम फिर सरमुतीके साथ लौटेंगे. सरसुतीके सम्बन्धियोंसे ज़रा मिले जुलेंगे. और फिर मैं रहूंगा और मेरा काम. पहले सफरमें तो मैं स्त्रीको साथ रखनेकी सोचता हूं. देखिये ना, नया ब्याह है, साथ-साथ थोड़ी सैर भी न हुई तो क्या बात रही. और, मैं और भी दो इगंलिश फर्मोंका एजेण्ट हूं. आइए, ज़रा देखनेकी तक-लीफ गवारा करें तो—"

एक छोटे खुशनुमा कपड़ेके बक्समेंसे उसने जल्दीसे कुछ नमूनेकी गत्तेवाली किताबें निकाली. और कुशल दुकानदारकी भांति एक सिरा पकडकर उन्हें खोलना शुरू किया. एकपर एक करवटें लेती हुई, उन किताबोंकी जिल्द खुलती हुई लटक आई और जाकर रेलके फर्शपर लगीं. 'देखिए, क्या नायाब नमूने हैं. बाहर बहुत कम ऐसे बेचे जाते है. यह देखिए, यह इंगलिश माल है, और यह रशियन. जरा मुकाबला कीजिए. जी हा, छूकर देखिए, आजमाकर देखिए. आप खुद देख सकते हैं, भला किसी भी तरह देशी चीज विलायती तक पहुच सकती है? और इगलिश माल देखिए. इसका नाम उन्नति है, इसका नाम सफाई है, इसका नाम कला है. यह निरी निराधार बात नही है कि सारा यूरोप हमें जंगली कहता है...सो बस जनाब, जरा इधर-उधर रिश्तेदारियोमें जाएगे, कुछ देखे-दाखेंगे, कुछ रईसोंसे भी मिलना है. इसी तरह जरा चले-फिरे, घूमे-घामे, फिर बालगाके रास्ते जादिट्ज़िन और फिर काले सागर होते हुए, अपने वही वापस ओडेसा."

"खासी सैर रहेगी !" नए अफसरने सलज्ज कहा

"हा, साहब, खूब खासी !" सामत यादोराम सोल्लास सम्मत हो बोला, 'लेकिन साहब, फूल बे-कांटे कब होते हैं ? व्यापारीका काम हंसी नही है. दस तरहकी दस बातें आनी चाहिए. उतनी, मैं कहूं मालकी परख नही चाहिए, जितनी आदमीकी परख. एक आदमी आर्डर देना नही चाहता, लेकिन अब तुम हो कि हार न मानो. अपनी बात कहे जाओ. ऐसे कहो और इतना कहो कि आखिर तुम्हारी बातमें उसे अपना नफा दीखने हीं लगे और उससे बिना मुंडे रहा ही न जाए. और मैं हमेशा साफ काम करता हू. धोके-धडीका काम मैं कभी न करूं, चाहे कोई मुझे लाखों दे. कही जाकर पूछिए, किसी स्टोरमें, जहा कपड़ेका काम या रेशमकी लच्छियोंका, या बटनोंका---मैं इन दोनों फरमोंका भी एजेंण्ट हूं---आप पूछिए, सामन्त यादोराम कौन है ? हर कोई जवाब देगा, ओह, सामंत यादोराम. वह आदमी क्या है, खरा सोना है. ईमान-दार हो तो ऐसा हो. ऐसा पक्का और ऐसा खरा जैसे हीरा !"

देखते-देखते हीरासिंगने बड़े-बड़े पैकेट निकाल लिए और खोल-खाल कर, भांति-भांतिकी लच्छियां और तरह-तरहके रंगके बटन दिखाने लगा. "अजी, अब कहीं एक जगह बहुतसे एजेन्ट हो जाते हैं. तब काम जरा बेमजा हो जाता है. दाम तो सब खिच चुकते हैं और मांग पूरी हो जाती है. मुश्किल तो तब है—तब कुछ बस ही नहीं चल सकता. कोई तुम्हारी बात सुनता नहीं, सब दूरसे हाथ हिला देते हैं. लेकिन और और हैं, मैं मैं हूं. मेरा नाम हीरासिंग है. मैं व्यापारीको ऐसा लूं कि मदारी भी क्या अपने बन्दरको लेता होगा. पर बात बिलकुल बदमजा हो जाती है जब एक ही लाइनके दो एजेन्ट एक जगह पड़ जाएं. फिर उनमें कोई ऐसा उल्लू हुआ कि जो न खुद जाने और दूसरेका काम भी बिगाड़ कर रख दे, तब तो कुछ पूछिए मत. ऐसे समय तो सभी तरकीबें खेलनी होती हैं. या तो उसे ऐसा पिलाया कि पीकर बेसुध हो जाए, अंटाचित. नहीं तो कहीं इधर-उधर ठिकाने लगा दिया. सीधा खेल नहीं है साहब. और फिर मेरी एक लाइन और भी है. नकली आंख और नकली दांतकी जरूरत हो तो मुझे कहिए. पर उसमे कुछ बचत ज्यादा नहीं है. मैं उसे छोड़नेकी सोचता हूं. कभी सोचता हूं यह सारा ही झगड़ा छोड़ दूं. मैं जानता हूं, जब जवानी हो, तन्दुरुस्ती हो, तब तुम कहीं भी तितलीकी तरहसे उड़ते रह सकते हो. पर जब ब्याह कर लिया है तो बच्चे भी होंगे, कुनबा बढ़ेगा..."

. उसने स्त्रीके घुटनेपर कई बार थपका. स्त्री लाल पड़ जाती और असाधारण सुन्दर लगने लगती.

"जी हां, कुनबा. क्योंकि हम यहूदी हैं. और परमात्माने हम यहूदियोंको जब और बदकिस्मती दी है तब सबके बदलेमें यह बख्शीश दी है कि कम बच्चे न हों.. तब तुम्हें अपना एक काम भी चाहिएगा. एक जगह जमकर बैठना भी पड़ेगा. तुम्हारा अपना घर हो, अपना फरनीचर, अपनी रसोई,अपने सोनेके कमरे. हैं ना रायसाहब ?"

"हां-आं...जरूर-जरूर." जनरलने कृपा पूर्वक उत्तर दिया.

"जी हां, जी हां. और सो ही सरसुतीके साथ-साथ मैंने कुछ दहेज

भी लिया. यही कुछ थोड़ी-सी रकम. लेकिन साहब, आप लोग जिसकी तरफ निगाह भी न करें, मेरे लिए तो वह भी दौलत है. पर यह भी कह दूं, अपनी कमाईसे भी मैंने कुछ बचाया है. और मेरी फर्मोंमें मेरी क्रेडिट है. परमात्माने चाहा तो रोटी-दालकी फिक्र हमे न होगी. तीज त्योहारको, परमात्माका शुक्र है, कुछ चुपड़ी भी खा सकेंगे."

"चुपड़ी ! वाह, चुपड़ी ही क्यों साहब, उससे भी ज्यादा !" मालगुजार ललचाए स्वरमे बोला.

"और हम भी अपना एक फर्म खोल लेंगे. 'हीरासिंग एण्ड संस' है न मुझे आशा है आप लोग हमें ही अपने आर्डर देंगे. कभी आप नाम देखें 'हीरासिंग एण्ड सन्स' तो फौरन याद कीजिएगा कि आपको गाड़ीमें एक आदमी मिला था जो बेचारा प्रेमसे और खुशीसे ऐसा मतवाला हो रहा था, कि क्या बताऊं'—"

"जरूर, जरूर !" मालगुजारने कहा.

और सामंत यादोराम तुरंत उसकी ओर मुड़कर बोला, "पर मैं दलाली भी करता हू. जायदाद बेचनी हो या जायदाद खरीदनी हो, या रेहन रखनी हो, मुझे याद फर्माइए. मुझसे अच्छा आपको कोई न मिलेगा. और मैं सस्ता भी खासा पड़ूंगा जरूरत हुई तो इस खादिमको याद कीजिएगा" यह कहकर आदाब अर्ज किया और अपने नामके कार्ड निकालकर एक मालगुजारकी तरफ बढाया और एक एक और पड़ोसियों-को भी दिया.

जमीदारने भी जेबमें हाथ डाला और एक कार्ड खींचकर निकाला.

"जनाब इमामहसन बेग" सामंत यादोरामने जोरसे पढ़ा. "बहुत, बहुत खुशी हुई आपकी महरबानी है. जरूरतके वक्त इस गुलामको..."

"क्यों नहीं. भला मुमकिन है..." जमींदारने कुछ सोचते हुए कहा, "क्यों नहीं. खुशक़िस्मतीने ही हमें इस तरह ला मिलाया है. अभी एक मकानकी बिक्रीके सिलसिलेमे जा रहा हूं...तो आप चाहें...कभी तशरीफ़ लाइएगा. में ग्राण्ड होटलमें ठहरता हूं. शायद हमारी आपकी कुछ बात बन जाए."

"ओह, जरूर बन जाएगी. मैं अभीसे कह सकता हू जनाब इमाम-हसन साहब" हीरासिंगने प्रफुल्लताके साथ कहा और अपनी उग-लियोके सिरेसे जरा-जरा उसके घूटनेको थपथपाया "जरूर साहब, आप यकीन रखिए, हीरासिंग जिस कामको ले लेगा उसके लिए आप हमेशा उसे याद कीजिएगा"

आध घण्टे बाद मामत यादोराम और वह नया तरुण अफसर डिब्बे की पटरीपर खड साथ-साथ सिगरेट पी रहे थ.

हीरासिंगने पूछा, "क्या जनाब अक्सर इधर आया करते हैं ?"

"जी नही, पहली बार जा रहा हू. हमारा दस्ता शरनाबोवमे रहता है. मेरी पैदाइश मास्कोकी है"

"ओह हो, तो आप इतनी दूर कैसे चले आ रहे हैं ?"

"बस कुछ बात ही ऐसी हुई. जब मैं निकला तो और कही जगह खाली ही नही थी."

"पर साहब, शरनाबोव भी कोई जगह है. खासा भिट कहिए. आसपास उस जैसी खराब बस्ती और नही."

"हा, पर किया क्या जाए ?"

"तो क्या यह मतलब जनाबका कि आप वहा जरा सैर और लुत्फ के लिए जा रहे हैं ?"

"जी हा दो तीन रोज ठहरनेका ख्याल है. असलमें तो मैं मास्को जा रहा हू दो महीनेकी छुट्टी मिल गई है. सोचा, रास्तेका यह शहर भी देखता चलू सुनते हैं, बडी खुशनुमा जगह है"

"अजी आप कहते क्या हैं ? खुशनुमा कि गजबकी खुशनुमा. जनाब विलायती शहरोकी टक्करकी है वह सडके, बिजलीकी रोशनी, बिज-लीकी ट्राम, थिएटर—एक बार देखिए तो पता चले. कमालकी सैर-गाहे हैं देखे तो आप अपनी राल चाटने लगें. आपकी नई उम्र है और मैं आपको सलाह दूगा कि 'आनन्द-विलास' जरूर देखे. तिबोली भी जरूर जाएं, और पास ही जो टापू है उसकी सैर करना कभी न भूले. वह खास ही जगह है. क्या-क्या नाजनीन..."

अफसर लाल पड़ गया. उसने आखें फेरीं, सकम्प स्वरमें पूछा, "जी, हां! मैंने सुना भी है कि वल्लाह, वहांकी औरते ऐसी खूब सूरत हैं—"

"खूब सूरत ! अजी खूदा न करे, सच पूछिए तो खूबसूरत औरत वहां एक नहीं है—."

"तो फिर ?"

"फिर क्या ? म्यां, खूब सूरती चीज क्या है...पर, गजबकी नमकीन होती है वे. देखिए ना, कहां-कहांका खून उनकी नसलमे मिला है, पोलिश, दखिनी, यहूदी...तुम जवान हो. मुझे तुम्हारी जवानीपर रश्क होता है. तुम अकेले हो, और आज़ाद. मेरे दिन होते तो, दोस्त, मैं भी कुछ अपनेको दिखाता. सबसे बढ़कर तो यह चीज़, कि उन्होंने खूनकी वह रवानी और इश्ककी वह तेज़ी पाई है, कि वाह! गोया, जलती शमा हों .. और भी कुछ पता है ?..." हीरासिंगने भेद भरे स्वरमें धीमेसे पूछा.

"क्या?" कंटकित, भीत अफसरने पूछा. "पूछते हो, 'क्या? मुझे यह उन्होंने बताया है जिन्होंने सब शहर छानमारे है. जनाब क्या पैरिस, क्या लन्दन, जो नई-नई रतिकी रीतें यहांकी कामिनी जानती हैं वह तुम्हें और कहीं न मिलेंगी. यही तो उनकी खास बात है. क्या-क्या नई तरकीबें उन्हें सूझती हे कि किसीका ख्याल भी वहांतक न पहुंचे. तसव्वुर करता हूं तो जी में नशा चढ़ जाता है."

अफसरका दम वहींका वहीं रह गया. दबे स्वरसे बोला, "सच ?"

"सच नहीं तो झूठ! लेकिन—लेकिन तुम खुद समझ सकते हो, इशारा काफी होता है. तुममें नया खून है. पर भाई, कभी हम भी अकेले थे. और, तुम जानो, ज़रा ऐसा वैसा काम किससे नही हो जाता. अब बात और है...अब तो नसोंमें लहू धीमा हो गया है. और कुनबा साथ बन्ध गया है. पर उन दिनोंकी यादगारें तो कुछ अबभी साथ रखते हैं. ठहरो, मै तुम्हें अभी दिखाता हूं. ' पर ज़रा होशियारीसे देखना."

हीरासिंगने झिझककर दाएें-बाऐं देखा और जेबसे एक लम्बा छोटा खूबसूरत खरीता-सा निकाला जिनमें बढ़िया ताश रखे जाते हैं और चुपकेसे अफसरके हाथोंमें थमा दिया.

"यह लो, देखो. पर ज़रा होशियारीसे देखना."

अफ़सर एक-एककर उन कार्डोंको देखने लगा. उनमें अत्यन्त असम्भव और बीभत्स रति-क्रियाओंकी, तरह-तरहके आसनोंकी, इकरंगी और तिरंगी तसबीरें थीं. वे उस समयके चित्र थे जब आदमीका शरीर पशुसे भी पामर और निर्लज्ज हो जाता है. बीच-बीचमें हीरासिंग अफ़सरके कन्धों परसे उन चित्रोंको देखता हुआ कोहनी मार-मारकर कहता, "न कहोगे ! देखा ? और यह असल पैरिस और वियेना वालियां हैं."

अफ़सरने आरंभसे अंततक उस संग्रहकी एक-एक तसवीर देखी. जब उसने उन तसवीरोंका बक्स लौटाया, उसके हाथ कांप रहे थे, माथे और कनपटीपर पसीना आ गया था. आंखोंमें तृष्णाकी ओस थी और संगमरमरसे श्वेत गालोंपर लाली.

"पर एक बात है." हीरासिंगने एकदम सोल्लास कहा, "मेरे लिए तो अब सब एकसा है. मैं तो अब, तुम जानते हो, मेरे तो, कहो, दिन बीत गए. बहार गई और पंख जल गए....जो पहले मैं पूजता था, लौपर पतंगेकी तरह जिसपर जा जाकर मरता था—सब जला चुका. अब बहुत दिनोंसे देखता था कि कोई मिले और मौका हो, तो यह सब उसे दे दूं. इनसे मुझे कोई खास पैसे-वैसेकी चाह नहीं है. कहो, तुम्हें चाहिए ?"

"हां...मैं...नहीं . अच्छा, लाओ."

"जरूर, जरूर..आपसे मुलाकात हुई है और हम लोग दोस्त हो गए हैं. मैं बस फी कार्ड पचास पैसेके हिसाबसे दे दूंगा. क्या ? महंगे हैं ? तो क्या बात है, आप ही कहिए. खुदा आपका भला करे. आप मुसाफिर हैं, और मैं आपको लूटना नहीं चाहता. चलिए, मैं आपको तीसमें दे दूंगा. क्या, यह भी महंगा है ? तो आइए, पच्चीस पैसे ही सही. बस आइए, हाथ मिलाइए, ज्यादा नहीं. झुकनेकी हद है. ओहैं, आप भी अजीब जिद पकड़े हैं. बीस ? अच्छा, बीस ही सही. पीछे आप मुझे धन्यवाद देंगे. और देखिए मैं जब के—पहुंचता हूं, हमेशा हरमिटेज होटलमें उतरता हूं. बिल्कुल सवेरे, या शामको आठके बाद, मैं वहीं मिला करता हूं. मिलनेमें

कोई दिक्कत नहीं है. और देखिए, मैं ऐसी-ऐसियोंको जानता हूं कि जिनमे एक एक नायाव हैं, मानिंद परी. कहो तो मैं तुम्हें ले चलूंगा. जी नहीं, पैसे की बात नहीं है. पैसेकी क्या हस्ती है. नहीं, तुम्हारे सरीखे जवान, खूबसूरत, तन्दुरस्त मर्दोंके लिए तो वह प्यासीं रहती है. तुम पर तो वह योंही लट्टू हो रहेंगी. नहीं, किसी तरह कुछ पैसेकी जरूरत नहीं है. यही क्यों, तुम्हारी खातिर तो वह खुशीसे अपनी तरफसे कुछ शराब या नाशतेका खर्च कर देगी. तो याद रखिएगा हरमिटेज, हीरासिंग. वह न सही, यो भी याद रखिएगा. हो सकता है कि में आपके किसी काम आऊं. और ये कार्ड बस ऐसी चीज है कि कभी तुम इन्हें अलग मत करना. एक एकके तीन तीन रुपए मिल सकते है. पैसेवाले बड़े बूढ़े लोग अक्सर इनकी खोजमें रहते हैं. तीन रुपए क्या, ज्यादा भी मिल जाए तो अचरज नहीं. और सुनो..."हीरासिंगने झुककर एक आंख चलाई और कानमें कहा, "औरते भी इन कार्डोंपर मरतो हैं और तुम जवान हो, और खूबसूरत, जाने अभी कितनियोंसे तुम्हे काम पड़ेगा."

पैसे लिये और एक-एक गिनकर उन्हें संभाला. उसके बाद बड़े तपाकसे हाथ बढ़ाकर अफसरका हाथ हिलाया. उस अफसरकी आंखें ऊपरको नहीं उठती थीं. फिर उसे वहीं पटरीपर छोड़कर वह डिब्बेमें पीछे चला गया, ऐसे कि जैसे कुछ हुआ ही न हो.

वह असाधारण वाचाल आदमी था. चलते-चलते एक छोटी-सी तीन सालकी लडकीके आगे ठहर गया. उसे वह देरसे और दूरसे ताक रहा था और उसकी तरफ तरह-तरहकी सूरते बना रहा था. आकर उसके सामने वह पंजोंके बल बैठ गया, तरह-तरहको बोलियां बोलने लगा और विचित्र बोलीमें पूछा, "मै पूछता हूं, अमाली बच्ची कआं आ लई ऐ. ओ-ओ इत्ती बड़ी बच्ची अकेले आ लई ऐ. अम्मा छात नई ऐ? टिकट अपना आप लिया ? और अकेली आ लई ऐ ? अले कैछी बद-माछ लड़की है. लड़कीकी अम्मा कआं ऐ?"

इसी समय एक सुन्दर, ऊंचे कदकी, आत्मविश्वस्त महिला दूसरे डिब्बे से निकलकर आई और बोली, "बच्चेसे दूर रहो. अनजाने बच्चे

को छेड़ना—यहभी तहजीब है !"

हीरासिंह चौंककर एकदम उठ खड़ा हुआ और लबलबाने लगा, "अजी मैं रुक नहीं सका. कैसी सुन्दर-प्यारी भोली बच्ची है. पूरी खिलौना. मैं, श्रीमती, खुदभी पिता हूं. मेरे भी बच्चे हैं...खुशीके मारे मुझसे रहा न गया."

परन्तु महिलाने लड़कीको हाथसे थामा, और घूमकर अपनी जगह चली गई. हीरासिंह वहीं खड़ा-खडा अपनी क्षमा याचना बकता रहा.

दिनके चौबीस घण्टोंमें वह कई बार तीसरे दर्जेके दो डिब्बोंमें आया गया. उनमें एक गाड़ीके बिल्कुल आगे था,और दूसरा बिल्कुल पीछे एक डिब्बेमें तीन सुन्दर स्त्रियां बैठी थीं, और एक काली दाड़ीवाला रूखा-सा आदमी. हीरासिंह और वह किसी विचित्र भाषामें कुछ विचित्र बातें करते थे और स्त्रियाँ उसकी ओर विचित्र सशंक भावसे देखतीं थीं. जैसे मानो उससे कुछ पूछना चाहती हैं, पर साहस नहीं होता. बस एक बार कोई दोपहर चढ़े उनमेंसे एक पूछ बैठी, "तो यह सच है जो तुमने उस जगहके बारेमें कहा. सब सच है?...तुम जानो मेरे जीमें खटका है"

"आह, आनंदी, तुम्हारा मतलब क्या है ? मैंने कहा है तो सच ही हो सकता है. मैं वही बात कहता हूं जो सोनेसी खरी होती है. सुनो, लेजू—" और डाढ़ीवाले पुरुषकी ओर मुड़कर उसने कहा, "अभी एक स्टेशन आएगा. अगर चाहिए तो लड़कियोंको पूरी-वूरी खरीद देना. यहां पच्चीस मिनट गाडी ठहरती है."

"मैं तो पूरी नहीं लूंगी." हिचकिचाते हुए एक लड़की बोली.

"मेरी प्यारी बेला, जो जी चाहे लेना. मैं खुद स्टेशनपर उतरकर जो कहोगी ला दूंगा. लेजू, तुम्हे भी तंग होनेकी जरूरत नहीं है. मैं खुद ही सब कर दूंगा."

दूसरे डिब्बेमें कोई दर्जन डेढ़-दर्जन औरतें थीं. उनके ऊपर एक मोटी ताजी बड़ी-बड़ी भौंहोंवाली एक औरत थी. उसकी लटकती हुई थैलीनुमा ठोढ़ी और कुरतेके नीचे डुलती उसकी छातियां और पेट रेलके चलते वक्त ऐसे हिलते थे कि क्या कहें. न इस अधेड़ औरतको, न शेष

तरुणियोंको अपने व्यवसायके बारेमें किसी तरहकी दुविधा या सन्देह था. औरतें बेंचोंपर लेट रही थीं, शराब पी रही थीं, बक रही थी, सिगरेट पी रही थीं. डिब्बेमें बैठा हुआ नर वर्ग इन मादाओंसे कभी-कभी छेड़-छाड़ भी कर लेता था. तब ये भी चीख-चिल्लाकर खुले मुंह ईंटका जवाब पत्थरसे देती थीं. जवान लोग उन्हें कभी सिगरेट और दारु पेश कर देते थे.

हीरासिंग यहां कुछ और ही बन जाता था. वह रौब-दाबके साथ पेश आता, लापरवाह हो जाता और कृपापूर्वक बात करता था. दूसरी तरफ उसकी प्रजाजन ये औरते जो बात करतीं अत्यन्त दीन और विनीत स्वर-मे. रोमानियाकी, पोलेंडकी, यहूदी, और रूसकी स्त्रियोके इस विचित्र समूहको उसने एकबार एक निगाह देखा. उसने मालूम कर लिया कि कोई गड़बड़ नहीं है. उसने यहां भी पूरियोंके लिए कहा, फिर उसे वापिस ले लिया. जैसे रेलगाड़ियोमें अपने ढ़ोर ले जानेवाले होते हैं जो बीचमें स्टेशनों पर आकर जरा उनकी चारे पानीकी देखभाल कर लेते हैं, इस जगह यह व्यक्ति ठीक वैसा ही बन जाता था. इस निरीक्षणके बाद वह अपनी जगह लौट आता और अपनी स्त्रीके साथ पहले जैसा ही खिलवाड़ करने लगता और उसके मुहसे वैसी ही अनर्गल किस्से कहानियां झड़ने लगती.

कहीं गाड़ी ज्यादा देर ठहरती. तब वह अपने उस मालकी जरा पड़ताल करने पहुँच जाता. पर अपने पड़ोसियोंसे कहता, "देखिए, मेरे लिए जैसे एक चीज, वैसे दूसरी. स्वादमे मुझे स्वाद नहीं. पर मैं अपने पेटका क्या बनाऊँ. जाने स्टेशन पर क्या-क्या गंद भरा खाना मिलता है. पहले अपने तीन चार रुपए उसपर गंवाओ, फिर बीमार पड़ो, और ऊपरसे फिर सौ रुपए डाक्टरपर खर्च करो. तब फिर ऐसे बनो जैसे थे. लेकिन क्यों, सरसुती ?" पत्नीकी ओर मुड़कर कहता, "स्टेशनपर बाहर चलकर कुछ खाओगी, या कहो डिब्बेमे यहीं तुम्हारे पास कुछ भिजवा दूं ? बोलो, क्या मंगवा भेजूं ?"

पतिकी इस चिन्तापर पत्नी कृतज्ञ आह्लादसे अरुण पड़ जाती. तरल आखोंसे उसे देखती और मने कर देती—"ओ जी नहीं, तुम्हारी कृपा है,

मुझे भूख नहीं है. मैं अघाई हूं."

तब हीरासिंगने रेलमें चलने वाले उपहार-गृहके मैनेजरसे कह कर तरह तरहका खानेका सामान मंगा भेजा. बिना शीघ्रताके पूरी भूखसे उन्हें खाया, पत्नीको अनुरोध पूर्वक भांति-भांतिके व्यंजन चखाए, उसे छेड़ा और फिर बाकी बचे सामानको संभाल कर अलग रख दिया.

दूर इंजनके आगे शहरकी छतें और मीनारें सुनहरी धूपसे रंगी हुई दीखने लगीं. इतनेमें ही एक कण्डक्टर आया और उसने हीरासिंगको कुछ संकेत किया. हीरासिंग झट पीछे-पीछे चलकर पटरीपर आया.

कण्डक्टरने कहा, "अभी—अभी इन्सपेक्टर आनेवाले हैं. सो जरा अपनी स्त्रीके साथ आकर यहां खड़े हो जाइए."

"अच्छा, अच्छा, अच्छा."

"और वह रकम भी दिलवाइए जो ठहरी थी."

"आपका क्या निकलता है ?"

"वही जो ठहरा था. अतिरिक्त खर्चका आधा, दो रुपए पैसे."

"क्या ?" हीरासिंग अकस्मात उबल कर बोला, "क्या ? दो रुपए अस्सी पैसे ? समझा होगा किसी गबदूसे पाला पड़ा है. यह लो एक रुपया और खुदासे खैर मनाओ."

"माफ कीजिए जनाब, यह बेजा है. हमारा आपका यह नहीं ठहरा था ?"

"ठहरा था! ठहरा था...अठन्नी और लो अच्छा और चम्पत होओ. और एक कौड़ी न मिलेगी. क्या? गुस्ताखी! अच्छा, आने दो इन्सपेक्टर को. मैं कहूंगा, यह आदमी बिना टिकट लोगोंको सफर कराता है. यह न समझना उस्ताद कि किसी हल्केसे पाला पड़ा है."

कण्डक्टरकी आंख खुली. वह बेहद गरम हो आया. "बदमाश कहीं का" वह चिल्लाया. "चाहिए कि तुम जैसे आदमीको पकड़कर रेलके नीचे डाल दिया जाए."

लेकिन हीरासिंग मुर्गेकी तरह उसपर टूट पड़ा. "क्या ? रेलके

नीचे ! जानते हो, ऐसी धमकीपर क्या किया जाता है ? यह मारनेकी धमकी ! मैं अभी रेलकी जंजीर खींचता हूं और हल्ला मचाता हूं." और ऐसी तत्परतासे जंजीरकी तरफको हाथ बढ़ाया कि कण्डक्टरने सहमकर उसे रोक लिया और थूककर बोला, "जा, साले मेरे पैसे, उचक्के, चोर."

हीरासिंहने पत्नीको बाहर बुलाया, कहा, "सरसुती, आओ, जरा यहां खड़े हों. यहांसे दृश्य कैसा सुहावना दीखता है. आह, कैसा सुन्दर, जैसे तस्वीर."

सरसुती आज्ञानुगामिनी पीछे-पीछे चली. नये-नये कपड़े, जो शायद पहली बार उसने पहने थे, उन्हें हाथसे ऊपर उठाए थी कि कहीं छू न जाएं. वह सामने दूर सान्ध्य अरुण-प्रभासे गिरजों की चोटियां और शहरकी मीनारें उद्दीप्त दीखती थीं. ऊपर पहाड़ी पर भवन मानो इस स्वर्गकी और जादूकी दुनियांमें तैरते हुए मालूम होते थे. घने वृक्षोंकी पांते पहाडीसे उतरकर नीचे तक चली आरही थीं. एक ओर उतुंग नग्न सीधा स्तम्भ-सा वह पर्वत दुर्ग पदस्थ जलराशिके तटपर खड़ा जाने क्या सोचता था. इस नग्न प्रशस्त प्रस्तर तलपर कहीं-कहीं वृक्षोंकी हरी पांति ऐसीं लगती थीं जैसे सप्राण देहमे रक्तबाहिनी शिराएं. परी देश-सा सुन्दर यह प्राचीन नगर जान पड़ता था आप-ही-आप रेलसे मिलनेके लिए बाह खोले आगे बढ़ा आरहा है.

ट्रेन ठहरी. हीरासिंहने तीन कुलियोंको सामान ले चलनेके लिए कहकर स्त्रीको पीछे पीछे आनेको कहा. पर वह खुद दरवाजे पर अपनी दोनों जमातोंको ठीक बाहर निकल जाने देनेके लिए ठहरा रहा. उन दर्जनसे ऊपर कामिनियोंकी सरदारनी उस अधेड़नकी ओर उसने कहा "याद रखना मेडम बर्मन, होटल अमेरिका, इवेनिव कोस्का.'

और उस काली डाढ़ीवाले आदमीको कहा, "भूलना नहीं, लेजू, लड़कियोंको अच्छी तरह खाना खिलाना. शामको सिनेमा दिखाना. रात को ग्यारह बजे मेरी बाट देखना. तब हम बात करेंगे. लेकिन और कोई मुझे पूछे, तो पता जानते ही हो, हरमीटेज. फौरन फौन कर देना.

किसी वजहसे वहां न हूं तो रीमान काफेमें दौड़ आना. या सामनेकी हिबरू भोजनशालामें. वहीं कुछ खा पी रहा हूंगा. अच्छा ? अब चलो."

३

हीरासिंहकी यह सब बातें-गप्प थीं, और झूठ. कपड़ोंके नमूने, रेशम की लच्छियां, बटन, नकली पोत और चश्मे, और—सब उसके असली पेशेको ढकनेके साधन थे. पेशा था बुर्दाफरोशी. यह सही है कि दस साल हुए कभी वह एक तरहकी देसी दारुका एजेण्ट बनकर घूमा करता था. इस तरह खूब घूमने फिरनेसे उसकी जबान चल पड़ी. कतरनीकी तरह अपनी जुबानसे वह यहां-वहांकी सब बातें जल्दी-जल्दी कतरता रह सकता था. जुबानमें लगाम न थी. इस तरहके सौदागर-खूब बातें बनाना सीख जाते हैं. उस एजेण्टीने ही उसे एक दिन इस पेशेके किनारे लगा दिया. कहीं जारहा था कि एकबार दर्जीकी एक जवान लड़की इसके प्रेम पाशमें फंस गई. वह यों अभी पुलिसके रजिस्टरोंमें दर्ज नहीं हुई थी पर अपनी देहके और प्रेमके दानमें बहुत संयमशील और सिद्धान्तवादी भी न थी. हीरासिंग अभी नई उम्रका कच्चा और रंगीन जवान था. इस छोकरीको वह अपने साथ-साथ ले चला. उसके मनमें बड़ा उछाह था, बहुत रंग. छः महीने होते-होते वह उस लड़कीसे बेहद ऊब गया. वह इस चपल गति, तत्पर और चुस्त आदमीके गलेमें जैसे भारी पत्थर बन रही. तिसपर सन्देह और डाहके कारण उनमें बहुतेरे झगड़े होने लगे, रोना पीटना मचने लगा...बहुत दिनों तक स्त्री पुरुषोंके साथ-साथ रहनेसे जो होता है, वही सब यहां हुआ. धीरे धीरे वह उसे पीटने भी लगा. पहले तो लड़की चोट खाकर बड़ी उफनी. पर दूसरी बारसे चुप हो गई और सध चली. प्रेम ग्रस्त रमणियां अपने प्रेम संबन्धमें मध्यम मार्ग नहीं जाना करतीं. या तो वे झूठी, मायावी, छली अपने काले दिल और अन्धेरे माथेमें सब भांतिके तिरियाचरितोंके विचारोंसे भरी रहतीं हैं. नहीं तो असीम आत्मोत्सर्ग, अगाध श्रद्धासे भरी ऐसी भोली निरीह बन जातीं हैं

कि न उन्हें आत्मवञ्चनाकी शंका होती है, न आत्मसम्मानकी चिन्ता. यह दर्जिन दूसरी काठी की थी और हीरासिंगको इसमें बहुत दिक्कत न हुई कि फुसलाकर उससे गलीमें पेशा कमवाए. जिस पहली शामको उसकी यह आज्ञानुवर्तिनी प्रेमिका पहले पाच रुपए कमाकर लाई और उसे दिए, तबसे हीरासिंगके जी मे उसके प्रति विषम तीक्ष्ण घृणा व्याप गई. उसके बाद जो-जो औरत उसके हाथ पड़ी, और सेकड़ोंही उसके हाथमेंसे निकली थीं, उन सबके प्रति, स्त्री मात्रके प्रति, उसमे यह मान-वोचित दर्प और ग्लानि घर करके बैंठ गई. वह स्त्रीको बुरी तरह छेडता था, मानो सुई चुभा-चुभाकर उनके नैतिक भावको खण्ड-खण्ड होते देखनेमे उसे रस मिलता था. उसे उनके भावोके कोमल अंगको खोज-खोजकर पाने और मानो उन्हे कुचलकर दलित करनेमें विशेष आनन्द आता था. औरत विचारी चुप रहती, आह भरती, रोती, उसके सामने घुटनों बैठकर हथेली चूमती. नारीका यह नीरव, असहाय अवलो-चित दैन्य हीरासिको और भडकाता था. वह उसे दूर खदेड़ देता. वह नहीं जाती तो बाहर गलीमे धक्का देदेता. पर दो-एक घण्टे स्त्री बिचारी सर्दीमे ठिठुरती, मेहमे भीगती, और फिर लौट आती. आखिरकार एक मनचले दोस्तने सलाह दी कि अपनी स्त्रीको जाकर चकलेमें क्यों नहीं बेच देते बस यहीमे उसे अपने जीवनके पेशेका सूत्र मिला.

सच यह है, हीरासिंग के चित्तको भरोसा न था कि इस काममें कोई खास नफा या कामयाबी होगी. पर काम ऐसा बैठा कि क्या कहे

एक चकलेकी मालकिन (यह खारकबकी बात है) उसके प्रस्तावमें बडी खुशीसे साझी हो गई. वह कभीसे सामन्त यादोरामको जानती थी. अच्छा पियानो बजाता था, नाचता गजबका था और अपने खुशदिल मजाकमे जितने होते सबको हंसा डालता था. तिसपर सबसे बडा गुण यह था कि निर्लज्ज दक्षता के साथ वह जिसको चाहता मिलकर लुभा-कर उसीको फंसा लेता था. बस बात यहीं आकर अटकती थी कि आखिर कैसे समझा-बुझाकर उससे पिण्ड छुड़ाया जाए. कुछ हो, वह छोड़ना ही नहीं चाहती थी. आत्मघातकी धमकी देती थी. कहती थी, अपनी आखें

जला लूंगी, पुलिसमें जाकर रिपोर्ट कर दूंगी. और उसे सच ही सामंत याःदोरामकी कुछ करतूतोंका पता था कि जिससे हज़रतको आसानीसे फांसी मिल सकती थी. इसपर हीरासिंगने तरकीब बदली. वह तुरन्त अत्यन्त स्नेहशील प्रेमी बन गया, कोमल चिन्ताशील मित्र, सतर्क अभिभावक. फिर एक दिन उसने ऐसा भाव बनाया कि जाने क्या घोर संकट उसपर नहीं आ पड़ा है. स्त्री पूछती और वह चुप रहता. बहुत देर में एक-आध शब्द कहता, तो मानो वह भी मुंहसे निकल ही गया है इस भावसे. कहता, "ओह, मुझसे बीते जीवनमें एक भारी दुष्कर्म हो गया है."

बस फिर झूठके लच्छेके लच्छे उसके मुंहसे निकलते आते. कहता, पुलिस उसके पीछे है, ओह, जेलसे अब वह नहीं बचेगा. क्या पता सख्त जेल हो, या फांसी. कुछ महीनोंके लिए यहांसे भाग सके, यही उपाय है. असल बात यह थी कि हजारोंके फायदेकी कोई घात उसके मनके गहरेमें थी. दर्जिन बेचारी बहकावेमें आ गई. उसके मनमें वह करुण समवेदनाका वह भाव जाग उठा, जो किस स्त्रीमें नहीं है. मातृत्व किस स्त्रीमें नहीं है ? अब यह समझाना उसे कोई मुश्किल न था कि उसके साथ-साथ चलनेमें बड़ी बाधाएं हैं, बड़ा खतरा है. यहां रहकर इन संकटके दिनोंको काट दे तो क्या ही अच्छा न हो. मैं, जरा विपत टली कि थोड़े दिनोंमें लौट आता ही हूं. इसके बाद तो किसी एकान्त स्थानमें रहनेके बहाने, जहां पुलिस जासूसोंकी पहुंच न हो, उसे चकलोंमें लेजाकर रख देना उसके लिए न-कुछ बराबर बात थी. एक सवेरे हीरासिंगने उसे जरा ठीक होनेको कहा. कपड़े जरा पहन ले, बाल बाह ले, पाउडर वाउडर भी जरा लगाले. बस, तब वह उसे अपनी जान पहचान वालीके यहां लेकर पहुंच गया. बात पक्की पहलेसे थी. और वह सुन्दरी थी और युवती. बस उसी दिन पुलिसमें उसका टिकट बदलकर पीला मिल गया. हीरासिंगने रोते-रोते आलिंगन और स्नेह पूर्वक उससे विदा ली, और मालकिनके कमरेमें पहुंचकर अपने पचास रुपए सम्भाले. मांगे उसने दो सौ थे, पर उसे इन पचासपर बहुत खेद न हुआ, क्योंकि असल बात यह थी कि उसे एक भेद मिल गया था. अब क्या था. अब सफलता

उसके हाथ थी.

यह कहनेकी आवश्यकता नहीं कि लड़की आखिर दम तक चकलेके चंगुलमें रही. हीरासिंग उसे ऐसा भूला कि साल बाद उसे उसकी सूरत भी न याद आती थी. पर क्या पता...शायद याद आती भी हो....अब वह दक्षिणी रूसके सबस बडे नारी-मांसके व्यापारियोंमेसे है. कुस्तुन-तुनियांसे अरजन्टाइन तक उसका लेन-देन है. झुण्ड-की-झुण्ड लड़कियों को उडेसाके चकलोंसे कीवेके चकलोंमें ले जाता है. कीवे वालियोंकी खारकव और खारकव वालियोंको फिर उडेसा. जो माल वासी हो जाता है, गदरा जाता है, उसमें दूसरे और तीसरे दर्जेके मालको यह आदमी यूरोपके और शहरोंमे ठीक ठिकाने लगा देता है. यहांका माल वहां, और वहांका यहां. इस तरह करते रहनेमें सब तरहकी चीज खप जाती है. जिसकी एक जगह मांग नहीं रही, कहीं-न-कहीं दूसरी जगह उसका ठौर ठिकाना लगाकर वह अपना पैसा सीधा कर लेता है. दूर-दूर उसका कारोबार फैला है, और कई बड़े-बड़े नामवाले सामाजिक प्रतिष्ठा प्राप्त महानु-भावोंसे भी उसका व्यवहार खाता है. लेफ्टीनेन्ट गवर्नर, फौजके करनल, बड़े-बड़े एडवोकेट, प्रसिद्ध डाक्टर, रईस, जमींदार, व्यापारी, सभीमें उसकी गाहकी है. धरतीके भीतरकी दुनियां उसकी ऐसी परिचित है, जैसे ज्योतिषीको तारों भरा आसमान. उसकी स्मरण शक्ति विलक्षण है. बिना नोटबुक हजारों नाम, पते, हुलिए, गोत आदि उसे याद हैं. अपने थोक ग्राहकोंकी रुचियोंका पूरा-पूरा पता उसे रहता है. कुछको एकदम तीखी काम-कला-विचक्षणा चाहियें, कुछ अछूती अक्षत बालाओंके मुंह मांगे दाम देनेको तैयार रहते हैं. कुछके लिए कच्ची उमरकी अविकसित अर्धखिली कलियोंकोही तोड़कर ले आनेकी जरूरत है. आखिरी बात बहुत मुश्किल और खतरनाक है. पर यहां दावभी गहरा लगता है. एक सौदेमें दसियों हजार सीधे हैं. संस्था संञ्चालिकाओंकी सब भांतिकी रुचि-कुरुचिको उसे पूरा करना होता है. कभी-कभी तो अप्राकृतिक गर्हणीय वैषयिक तृष्णाओंकी तृप्तिकेलिए उसे मन चाहा माल जुटाना होता है. पर यह कह देना चाहिए कि ऐसे सौदे वह कम हाथमें लेता है.

तभी लेता है जब नफा पूरा हो. दो तीन बार जेलमें भी उसे रहना पड़ा है, पर यह सौदा भी टोटेका नहीं हुआ. उसका साहस, उसकी शक्ति और उसकी सूझ इससे कम नहीं हुई. बल्कि हर जेलके अनुभवसे और पुष्ट, दुर्दान्त, सम्पूर्ण और कठोर ही होती गई. अनुभवके साथ उसके दुस्साहस पूर्ण कार्यकी इस व्यावसायिक दुनियामें चातुर्य्यकी शिक्षा भी उसे जेल प्रवासमे मिलती रही.

इस कालमें उसने पन्द्रह बार नए नए व्याह किए और हर बार खासी रकम दहेजमे पाई. दहेजकी रकम हाथमे आई कि हजरत वहांसे उड़ चलते थे. फिर सूध लगी और किसी चकलेमें या किसी और जगह जाकर अपनी पत्नीको बेच दिया और एक अच्छी रकम खड़ी करली. यह भी होता था कि लड़कीके संबन्धी पुलिसमे पहुंचते और पुलिस खोज खबर करती, पर अगर पुलिस इधर सुरजीतकी तलाशमे होती तो उधर वह महाशय राजेन्द्रपाल बने हुए शहर शहर और गांव-गाव घूम रहे होते थे. याददाश्त उसकी बहुत अच्छी थी, फिर भी उसको अपने सब नामोकी याद नहीं थी. यही नहीं कि उसे याद न रहा हो कि किस साल वह पृथवीनाथ था और किस साल बैकुंठ. वह तक था कि उसे अपना असली नाम भी फर्जी लगने लगा था.

यह वर्णणीय है कि उसे अपने इस पेशेमें न कुछ नियम विरुद्ध मालूम होता था, न घृण्य. उसे लगना जैसे आटा दाल साग भाजीका व्यापार न किया, यह करलिया. अपने निजके ढंगपर वह धार्मिक था. अवकाश मिलता तो हर इतवार सोमवारको वह गिरजे पहुंचता. उत्सब पर्वके दिनों जहां भी होता वहीं उनको मानता और पालन करता. उसकी मां थी, और एक कुबड़ी बहन. वह उन्हें बराबर, कभी कम कभी ज्यादह, खर्च भेजता रहता था. कुर्संमे उड़ेसा और बासासे समारा जहां कहीं पहुंचता, नियमित नहीं तो अक्सर वहांसे वह उनकेलिए अच्छी-अच्छी रकमें भेजता रहता. एक बेंकमें उसने अच्छा द्रव्य संचितकर रखा था और उसे बराबर बढाता रहता था. व्याजको हाथ न लगाता था. पर कृपणता या नदीदापन उसके पास नहीं फटका. हाथका वह सदा खुला था. इस ओर

जैसे इस कामके खतरे, इसके मजे और इसके लिए आवश्यक चातुर्यके कारण वह आकृष्ट हुआ था स्त्रियोके प्रति वह उदासीन था यद्यपि उनकी परख और उनके मल्यकी उसे पूरी पहचान थी उस हलवाईकी-सी दशा उसकी थी जो मिठाई बनाता है, पर खानेकी तबियत जिसमे तनिक नही होती स्त्रीको बहकाना, फुसलाना, जी चाहा जो उससे करा लेना इसम उसे कुछ यत्न नही करना पडता था स्त्री मानो आपही आप उसके पास आ जाती और उसके हाथोमे आज्ञाकारिणी, अनुगामिनी, चुप-चुपानी कठपुतली बनकर रह जाती उनके प्रति उसके व्यवहारमे एक प्रकारकी कठिन, अपरिहार्य, विश्वस्त आत्म-विश्वासकी भावना आगई थी असन्दिग्धरूपमे जैसे उसे मालूम रहता था कि उसके सामने स्त्रियोको एम दवक रहना ही है जैसे अनभवी उस्ताद माईसकी निगाह, आवाज, और इशारेपर नि. : घोडा दबक रहता है

वह बहुत कम शराप पीता था वह भी कोई साथ हुआ तभी खाने-की तरफम उदासीन था पर जैसे हरेकम कोई-न-कोई त्रुटि होती है, उस-म भी थी अपन रूप-रगका वह बहुत खयाल रखता था अपनी सज्जा पर कुछ कम खर्च वह नही करता था तरह-तरहके फैशनके कालर, काट, घडी, चैन, अगूठी इनम उसका मन बहलता था

डिपोमे वह सीधा हरमिटज गया होटलके कुली झटपट आकर उसका सामान उठा ले चले पीछे-पीछे पत्नीकी बाहोमे बाह डाले वह भी चला दानोकी आनबान निराली थी पर हीरासिंगका तो पूछनाही क्या है हाथम मठदार छडी जिसकी मूठ चादीकी एक नग्नस्त्रीकी बनी थी, इगलिश ओवरकोट बिल्कुल अप ट-डट

"आप यहा बिना इजाजत नही ठहर सकते" ऊपरसे एक स्थूलकाय दरबानने कहा

'अह जोख, फिर वही बिना इजाजतके!" हीरासिंहने प्रसन्नतापूर्वक कहा और उसके कन्धोपर थपथपाया, "इजाजतके क्या माने है ? भाई किसकी बिना इजाजतके ? हमेशा तुम यही कह दिया करते हो "बिना इजाजतके ' मै कुल तीन दिन रहूगा. नवाब इफ्तखारसे किराए

विराएकी बातचीत पूरी हुई कि मैं चला जाऊगा. खुदा तुम्हारा भला करे. अपने सब कमरोमे तुम्ही-तुम रहना और जोख, देखो तो, अडसासे क्या खिलोना तुम्हारे लिए लाया हू कि बाग-बागहो जाओगे"

अभ्यस्त हाथोमे झट उसने सोनेकी मुहर निकाली और उसके हाथोमे थमाई और फिर वह देखते-देखते गायब हो गया

ऊपर अपने बडे कमरेम जाकर पहली बात उसने यह की कि शानदार छ जोडी जूते निकालकर दरवाजेके बाहर रख दिए घण्टी बजाई और घण्टी सुनकर जो आदमी आया उससे कहा, "देखो, फौरन यह साफ होने चाहिएँ, ऐसे चमक कि आईना तुम्हारा क्या नाम है चपत ? तो तुम तो मुझे जानते होगे ? अच्छा काम करोगे, तो तुम भी खुश होगे तो सुना ? आईने जैसे चमके"

४

होटल हरमिटजम हीरासिग तीन दिन और रातसे ज्यादह न रहा इस बीचमे कोई तीनसौ आदमीयोमे वह मिला वह क्या आया शहरम एक जान आगई नौकरी दिलानेवाले कम्पनियोके लोग उसके पास नौकरीके लिए, और सस्ते होटलोंकी मालकिन, पुराने घाग एजण्ट और जिनके बाल इस औरतोके पेशम पक गए है ऐसे बहुतेरे लोग उसके पास आए खद मालसे विशष मतलबहो इसलिए नही, पर अपनी व्यावसायिक धाक रखनेके स्वादमें ही वह जितना खीचकर होता सौदा करता बेचता तो बहुत नफा लेकर या खरीदता तो कमसे कम दाम लगाकर सचमुच दस या पन्द्रह रुपये फी अदद कम या ज्यादह लेनेकी उसे बहुत चिन्ता न थी, पर यह विचार कि उसका प्रतिस्पर्धी समव्यवसायी पोखपाल ज्यादा रकम तो नही हथिया लेता है उसको चैतन्य, जागरुक, चौकन्ना रखता.

आनेके बाद अगले दिन वह मेजर फोटोग्राफरके यहा पहुचा. वहा जाकर तरह-तरहकी स्थितियोमें अपने साथ उसकी तस्वीरें खिचाई, उसमे हरएक निगेटिवके उसे तीन रुपये मिले. जिसमेसे एक रुपया उसे

लड़कीको दिया. उसके बाद बशीरनके पास पहुंचा.

वह एक औरत थी जिसकी उमर ढलगई थी और जो अब पेशा छोड़ बैठी थी. रूसके दक्षिणमें ऐसी औरतें मिलती हैं. अब वह इतनी काम-वाली और पैसेवाली हो गई थी कि एक पति नामक जीवको पाल ले और साथ-साथ अपना कारोबार भी चलाती रहे. पति उसका एक सीधा सादा पोल था हीरासिंग और बशीरन पुराने दोस्तोंकी भांति मिले. बातचीतमें मालूम होता था कि इन दोनोंमें न हया है, न डर, न ग्लानि, न हृदय

"बीबी बशीरन,आज मैं तुम्हारे लिए माल लाया हूं माल तीन औरतें हैं, एकसे एक बढ़कर. सब ताजी, लजीली, भरी. एक सुनहरी बालोंकी है, जरा सकोची. दूसरीके बड़े काले लहराते बाल हैं, छोटी-सी है, पर तम जानो बडी चम्न, हर बातके लिए तैयार तीसरी रहस्य मयी है, मुस्काती है पर बोलती नहीं खूबसूरत ऐसी कि क्या कहूं काममें खूब निकलेगी"

बशीरन शकापूर्वक हीरासिंगको देखती हुई बोली, "हीरासिंग, मुझसे क्या डूनकी हॉक रहे हो ! क्या पहले जैसा खेल खेला चाहते हो ?"

"या खुदा ! मैं न हूं कि तुम्हे धोखा दूं और एक खूब पढी लिखी भी मेरे हाथ लगी है वह भी तुम्हारे लिए है. जो चाहो उसका बनाना. उसका ग्राहक मिलनेमें तुम्हे दिक्कत न होगी."

बशीरन वक्रतामें हंसी "फिर कोई नई दुलहन पकड़ लाए हो ?"

हीरासिंग हसा. "पर वह बहुत बडे घरानेकी है."

"तो मतलब हुआ, पुलिस-वलिसके चक्करसे भी निबटना होगा"

"आह, या खुदा, तो मैं तुमसे रकम भी कौन बडी लेता हूं. बस एक हजारमें तीनों दे दूंगा."

"ठीक बात करो जी पांच सौ. मैं झमेलेका सौदा नहीं रखती."

"देखो, बीबी बशीरन, यह पहला मौका नहीं है जो हमारे बीच सौदा पटा है. मैं तुम्हे ठगता नहीं. उसे अभी यहां ले आता हूं. एक बात याद रखना कि तुम मेरी चाची हो समझी ? चाची ! वैसेही बातें करना.

में तीन दिनसे ज्यादा शहरमें नहीं ठहरूंगा."

बशीरन विशाल छाती, पेट और ठोड़ियोंको लेकर आनन्दसे हिली, "छोटी छोटी बातोंपर हम नहीं झगड़ेंगे. तुम मुझे नहीं ठगते तो मैं भी तुम्हें नहीं ठगती. मालकी मांग अब चढी हुई है. मिस्टर हीरासिंग शराब लीजिएगा ?"

"धन्यवाद, कृपा है."

"हम तुम पुराने दोस्त हैं. हीरासिंग, बताओ, तुम सालमें कितना कमा लेते हो ?"

"आह बीबी, क्या बताऊं ! यही कोई बाहर बीस हज़ारके बीचमें कुछ हो जाता है. यहांसे वहां आते जाते रहनेमें देखो न कितना खर्च पड़ता है ?"

"कुछ बचाते भी हो ? '

"अंह, क्या बचाता हूं. यही दो तीन हज़ार सालमें जमा कर लेता हूं."

"मैं समझती थी, दस बीस..."

हीरासिंग सावधान हो गया. समझ गया, उसका भेद लिया जारहा है. पूछा "क्या करोगी तुम जानकर. तुम्हें क्यों इसमें दिलचस्पी है ?"

बशीरनने बिजलीकी घण्टीका बटन दबाया, परिचारिकाको कुछ लानेका हुक्म दिया. पूछा, "आप शमशेरको जानते हैं ?"

हीरासिंग मानो उसपर टूटकर पड़ा, "शमशेरको कौन नहीं जानता. वह है आदमी. वह है जो दूकानदारी जानता है. भई गज़ब करता है !"

उसे ख्याल न रहा कि वह फंसता जारहा है और अपना भेद दे रहा है. आवेगपूर्वक बोलता रहा, "पता है, शमशेरने पारसाल क्या किया ? पोबनो, विलको, त्रिटोमीरसे तीस अदद माल वह अरजन्टाइन ले गया. हरेकके उसने हज़ार-हज़ार रुपए लिए. हज़ार-हज़ार ! जोड़ो तो, कुल तीस हज़ार होगए. और क्या समझती हो, शमशेर इसपर मान गया ? जहाजपर वापसीका खर्च निकालनेके लिए इस रकमसे उसने बहुत-सी बीबी औरतें खरीद लीं. उनको यहां मास्को, पीटर्सबर्ग, कीएव, ओडेसा,

और खारकबमें ठीक ठिकाने लगा दिया. मैडम वह आदमी नहीं, बाज है, बाज. वह है आदमी जो व्यापार जानता है."

बशीरनने कोमलतासे अपना हाथ उसके घुटनेपर रक्खा, इसी क्षण-की उसे बाट थी, "इसीसे मैं कहती हूं, मिस्टर...भूल गई, अब क्या नाम है ?"

'हीरासिंग कहिए."

"तो मिस्टर हीरासिंग, मैं कहती हूं तुम्हारे पास कोई वैसी भी है जो अक्षत हो बिल्कुल कोरी, नवेली. ऐसियोंकी बड़ी मांग है. मैं खुला सौदा करती हूं. पैसेपर नही हाथ मीचूंगी. जो मांगोगे दूंगी. पर फैशन वैसि-योंका है, क्वारी, कच्ची. और सुनो हीरासिंग, जिस हालतमें तुम दोगे तुम्हारा माल वैसी ही हालतमें तुम्हें लौटा दूंगी. जरा मनचलोंकी दिल्लगी है, जो मेरी समझम भी नहीं आती."

हीरासिंगने अपनी आंखे घुमाई, सिर खुजाया, बोला, "देखो, मेरी दुलहन है. करीब-करीब...तुम समझती तो हो ?"

"करीब-करीब क्यो ?"

"मुझे कहते लज्जा आती है. पर वह...अब कैसे बताऊं, वह अबतक दुलहन बनी नहीं है."

बशीरन खिलखिला पड़ी, "हीरासिग, मुझे यह आशा न थी कि तुम ऐसे पक्के धूर्त निकलोगे. तुम्हारी दुलहन ही सही, मुझे एक बात है. पर यह क्या सच है कि तुम...बिल्कुल धमे रहे !"

हीरासिंहने गभीरतासे कहा, "एक हजार."

"ऊंह, क्या ओछी बातें करते हो ! एक हजार सही. पर बताओ, वह काबू में भी आ जायगी?"

"काबूकी भली कही !" हीरासिंहने विश्वस्त भावसे कहा, "वही बात है कि. याद रखना, तुम मेरी चाची हो और अपनी पत्नीको लेकर तुम्हारे यहां आता हूं. सुनो तो, वह मुझसे प्रेम में फंसी है. मुझसे बिल्लीसी हिल गई है. अगर मैं उससे कहूं कि मेरी भलाईके लिए उसे ऐसा करना चाहिए, और यह, और वह, तो वह कुछ नहीं बोलेगी, वैसाही करेगी."

बस बात करनेको और कुछ न रह गया था. बशीरन एक कागज का पुर्जा लाई, उसपर मुश्किलसे अपना नाम, अपनी वल्दियत, वगैरह-वगैरह लिखा. प्रोमिजरी नोट बाकायदा नहीं था, पर इन चोरोंमें, इन ठगोंमें, अपनी बातकी एक आन होती है. ऐसे मामलोंमें इनमेंका एक कभी दूसरेको ठगेगा नहीं. ठगे तो उसे मौत ही मिले· फिर चाहे वह जेलखानेमें हो, चकलेमें हो, कहीं हो.

इसके बाद तुरन्त कहींसे उनके प्यारे प्रीतम भी वहां पधारे. जवान, मंझोले कदके एक पोल थे, मूंछें ऊंची तनी थीं. सबने मिलकर सुरा-पान किया. यहां-वहांकी बात-चीत की. व्यवसायकी गिरी हालतपर जरा-कुछ बोलते बतलाते रहे. इसके बाद हीरासिहने अपने होटलके कमरेमें टेलीफोन किया और पत्नीको बुला लिया. आनेपर उसका अपनी चाची और चाचीके इन चचेरे भाईसे परिचय कराया. कहा, "कई गुप्त राजनैतिक कारणोंसे मुझे शहरसे बाहर जाना पड़ रहा है. मेरी प्रियतमा, मेरी रानी, मुझे क्षमा कर देगी. मैं, देखना, बहुत जल्दी ही आ जाऊंगा." कहकर उसने अपनी प्रियतमा पत्नीका चुम्बन लिया, आंसू गिराए, और बग्घीपर चढ़कर रवाना हो गया.

५

हीरासिहके आते ही (परमात्मा जाने अबतक उसका नाम क्या बन गया था) मतलब, इस आदमीके आते ही याम्सकायाका हुलिया बदलने लगा. परिवर्तन पर परिवर्तन होने लगे. ट्रिपिल वाली जगहसे कामिनियां कुछ अन्नामरकानीके यहां आ गईं. अन्ना मरकानीके यहासे एक रुपये वाले चकलोंमें, वहांसे निकलकर फिर आधे रुपये वालोंमें. यहां प्रमोशन नहीं होता, एक दर्जा नीचे ही उतरना होता है. प्रयेत्क स्थान विनिमयमें पांचसे सौ रुपये तकका नफा हीरासिहको होता था. सच, इस आदमीमें बेहद शक्ति थी, वैसी जैसी इमात्राके जल प्रपातमें. दोपहरीमें अन्नामरकानीके यहां बैठा हुआ, सिगरेटसे धुआं उड़ाता, एकपर दूसरी

रक्खी टांगको हिलाता हुआ वह कह रहा था, "सवाल यह है...अब सोनाकी ऐसी जगह जरूरत क्या रह गई है. अब वह भली जगहके लायक नहीं रह गई. चलो, उसे नीचे बह चलने दो. सौ रुपये तुम्हेंभी बच जायेंगे. पच्चीस मुझे भी मिल जायेंगे. सच-सच बताओ, आजकल उसकी गाहकी है या नहीं ?"

"ओह, मि० शाट्जकी, तुमसे तो कोई बातोंमे नहीं जीत सकता. पर तुम्हीं जानो, मुझे छोडते कितना दुःख होगा ! कैसी अच्छी लड़की है."

हीरासिंग क्षणभर सोचता रहा. कोई अच्छा-सा मुहावरा कहना चाहता था. "क्यो ! गिरेको धक्का दो, और क्या ? और मेडम शेप्स, मुझे पक्का भरोसा है, उसकी गाहकी अब तुम्हारे यहां नहीं है."

इसिया साविश बीमार, जीर्ण, बुड्ढा आदमी था, पर वक्तपर पक्का होना भी जानता था. बोला, "हां बात तो सही है कि उसकी किसी तरह की माग यहा नही रही खुद सोचो, आनश्का, उसके कपड़ेमे पचास रुपए लगेगे. पच्चीस मि० शाद्सकीके हिस्सेमे जाएगे और परमात्माका भला हो, सिरपरसे एक पिण्ड छूटेगा. हमारी संस्थाकी अब भी तो उससे नेकनामी नही होती. टल जाएगी तो भला ही होगा."

इस तरह बेचारी सोना यहासे गिरी. गिरकर आधे रुपएवाली जगह मे पहुंची. यहा समाज का सब तरह का उच्छिष्ट वर्ग रातों-रात इन कामिनियोका मनमाना प्रयोग और उपयोग करता था. यहां के कामके बोझको सम्भालनेके लिए बेहद पुष्ट स्वास्थ्य और पत्थर-सी देह दरकार थी. एक रात सोना ग्लानि और आतकसे कांपने लगी जब उसने देखा कि दो सौ पाउंडवाली पहाड़की पहाड मेनका किसी प्राकृतिक शंका निवारणके लिए भागी-भागी दालानमे गई, वहीं खुड्डीपर बैठी, और बैठते-बैठते अपनी नायिकासे चिल्लाकर बोली, "बाई सुनो, छत्तीसवें मुला कातीका नम्बर है, भूलना नहीं."

सौभाग्यवश सोना भी यहां बहुत तंग न हुई. यहां आकर वह भी साधा रण बन गई थी. कोई उसकी सुन्दर आंखोंको नहीं देखता था, और जब तक कोई और प्रस्तुत रहती कोई गाहक उसे नहीं मांगता था. हां,

केमिस्टकी दुकानके उस पुराने परिचित कर्मचारीने फिर उसका पता लगा लिया था और हर शामको वही उसके पास पहुच जाया करता था. पर कायरता कहो, या धर्मभीरुता, या वास्तविक मैथुनकी कल्पना जन्य ग्लानि,--कभी वह उसे उस घरसे निकालकर नही ले गया. सारी रात वह उसके पास बैठा रहता और सदाकी भाति कोई गाहक आकर उसे ले जाता तो भी चुपचाप उसके लौटनेकी प्रतीक्षा करता रहता वह लौटती तब वही ईर्षा-जन्य कलह मचती, दोनो झगडते, एक दूसरेको ताने देते और रोते अब भी वह उसे वैसा ही प्रेम करता था अपनी दुकानमे काउंटरके पीछे खडा-खडा दवाइयोकी पुडिया सामने रखे उसे ही याद करता और आह भरता था

६

एक फेशनेबल उपहारगृह का द्वार. घुसते ही दोनो ओर गमलोमे बिजलियोकी रोशनियोके गुच्छे जगमगा रहे है. बगीचेमे मानो दीपावली का उत्सव मनाया जा रहा है. आगे एक खुली हुई जगह है. वहा रेत बिछा है, जिसके बायी तरफ स्टेज बना है. वहा थियेटर है और शूटिग गैलरी. सामने फौजी बैण्डके लिए शखाकार स्थान बना है. बीच-बीचमे यत्र-तत्र फूलोके कुञ्ज, आस-पास शराबकी दुकाने, एक ओर भोजनालयोकी कतार, उनपर बिजली के हण्डे जगमगा रहे है प्रकाशके कारण नीचेका वर्गाकार रास्ता चादनी सा सफेद चमकता है. हण्डोके दूधिया काचपर पतगोके झुण्डके झुण्ड मडरा कर पडते है नीचे उनकी छाया बडी होकर अन्धेरेकी बूदो-सी धरतीपर डोलती है और स्त्रिया जो अतृप्तकाम है, जो भूखी है, रग बिरंगे हल्के नफीस कपडे पहने ऐसी घूमती फिरती है जैसे कि अपनेमे निश्चित हो, दुष्प्राप्य, अत्यन्त दुर्लभ. वे दो-दोकी जोडीमे साथ-साथ श्रमित, आकुल, विश्रांत, चाहभरा, यहा-वहाँ डोल रही है.

मेजं सब भर चुकी है. तश्तरियों और कांटे-छुरियोंकी आवाज

उनके ऊपर लहराती हुई बढ रही है. सब एक जैसे, एक पोशाक पहने, चिकने चुपडे, सवारे हुए लंगूरसे लगते हैं. एक गायन पार्टीके डाइरेक्टर अदाके साथ आगे-पीछे झुककर आन-बान दिखा रहे हैं और पब्लिककी तरफ ऐसे देखते हैं जैसे नर वेश्या हो. यह बिजलियोकी भरमार, एक तरफ तेलोकी सुगन्धिकी अतिशयता, यह बजते हुए बाजे, यह गूजती हुई आवाजे यह अदा, यह आन-बान, यह व्यस्तता—यह सब कुछ, किन्तु, एक व्यर्थ, निरानन्द, निष्प्रयोजन, अवसादमय, तृषार्त क्षुद्रप्राणताके ऊपर उत्कट, चीत्कारमय एक असन्तुष्ट जीवनका थोथा चित्र था.

खुले हाल के चारो तरफ खुली गैलरिया. पास ही उनसे लगी हुई छोटी बाल्कनी. पास कई कमरे. इन्ही मे से एक कमरे में चार व्यक्ति बैठे हुये है. दो पुरुष, दो महिलाये. एक है रोविन्सकाया. इनकी कला की तमाम रूस मे प्रख्याति है. अच्छी, बडी, सुन्दर. बडी-बडी हरी-सी इजिपशियन आखे, फूल-सा लाल, कुछ फैला, विलास प्रिय मुख, जिसके ओठ किनारो पर दृढता से बन्द हैं दूसरी बैरोनस टोप्टिन, एक छोटी, कोमल पीत-काया रमणी. यह सदा रोविन्सकाया के साथ दीखती है, तीसरे हैं प्रसिद्ध एडवोकेट रेजोनॉव चौथ चेप्लिस्की. यह महाशय अतिशय धनसपन्न है, युवक है. इधर-उधर का बहुत कुछ इन्होंने किया है कविताए लिखी है और विभिन्न विषयो पर और बहुत कुछ लिखा है.

'देखो-देखो" वह बोली, "कैसा विचित्र हुलिया है ? या कहो कि क्या विचित्र पेशा. वह, वहॉ जो सात रीड का बाजा बज रहा है".

हर कोई उसके हाथ के सकेत की ओर देखने लगा. वहॉ, सच ही अजब दृश्य था. आर्केस्ट्रा के पीछे एक पर्याप्त-काय मूंछ-मण्डित पुरुष बैठे थे. एक भरे-पूरे कुनबे के वह पिता ही चाहे होगे. अजब नही, दादा भी हो. वही वहा अपने इस सात पाइपके बने बाजेमे पूरे जोरसे फूंक मारकर आवाज निकाल रहे थे. जान पड़ता था कि ओठोके बीचमे लेकर उस तमाम बाजेको हिलाना उन्हे कठिन होता है, सो अद्भुत शीघ्रतासे यह अपना सिर ही बाजेपर कभी दाए और कभी बाएं

घुमा रहे हैं.

"क्या खूब कर्तब है" रोविन्सकायाने कहा, "अच्छा चैपलिस्की, तुम भी जरा वैसे सिर हिलाओ तो."

अब चैपलिस्की भीतर-ही-भीतर बुरी तरह इस आर्टिस्ट रमणीके प्रेममें फंसा था. उसने तुरन्त आज्ञानुसार तत्पर होकर वैसे करना शुरू किया. लेकिन आधी मिनटमें रुक गया.

बोला, "अहं, मुझसे नहीं बनता. या तो लम्वी ट्रेनिंग या पैत्रिक योग्यता इसके लिए जरूरी मालूम होती है."

इस बीच वेरोनेसके हाथ एक गुलाबके फूलकी एक-एक पंखुडी नोच-कर मदिरा-पात्रमें फेंक रहे थे. अब एक जम्हाई रोककर जरा खट्टा मुंह बनाकर वह बोलीं, "यहांके लोग भी क्या मनहूस तौरपर अपना वक्त काटते हे. और कुछ क्या इन्हें सूझता नहीं ? देखो न, न हमी, न गाना न नाच. जैसे किसीने सबको खदेड़कर यहां बाड़ेमें जमा कर दिया है कि लो, चलो, खुश हो लो !"

रेजेनॉवने थकित भावसे अपना गिलास उठाया, जरा ओठोंसे लगाया और अपने उसी मीठे और विमनस्क स्वरमें कहा, "आपके पेरिसमें नाइस में क्या लोग अपनी, खुशियां ज्यादा खुशनुमा तौर पर मनाते हे, क्यों ? सच कहें तो आनन्द, उल्लास, यौवन, मनुष्यके जीवनमेंसे एक दम उठ ही गए हें. शायद ही सम्भव है कि वे फिर लौटें. मुझे लगता है आदमीको जरा धीरज, सहनशीलतासे काम लेना होगा. कौन जानता है कि ये जो सब नीचे बैठे हैं—आजकी ये संध्या उन बेचारोंके लिए सच ही छुट्टीकी, छुटकारेकी, जरा आरामकी ही घड़ी नहीं है ?"

चेपिलन्स्की संयत, शान्त रहकर बोला, "स्पीच है, साहब, स्पीच. पक्षसमर्थनमें क्या बढ़िया स्पीच है."

लेकिन रोविन्सकाया मुड़ी. उसकी लम्बी बड़ी डोरीली आंखें कुछ संकुचित हुई. पलकें पास-पास आई. उसके साथ यह आवेगका लक्षण था और उसका आवेश वह वस्तु थी कि जिससे राजसी वंशके लोग भी जो न अनकरनी कर डालें थोड़ा. पर जैसे तुरन्त उसने अपनेको थाम

लिया और कुछ थकानके भावसे बोली, "मैं नहीं जानती कि आप किसकी बात कर रहे हैं. न यह समझती हूं कि हम यहां क्यो आए हैं. क्योंकि दुनियामें अब देखनेको मुझे क्या रह गया है. देखिए—मैंने सेविले, मैड्रिडमें सांडकी लड़ाई देखी. देखकर क्या घृणाके अतिरिक्त कुछ और भाव हो सकता है ? वह दृश्य ही ऐसे क्रूर हैं. घूंसे बाजी देखी है, दंगल देखे हैं. सबमें वही बर्बरता है, वही पशुता. फिर एक बार एकत्र शिकार मे भी जानेका मौका हुआ. एक बड़े सफेद सधे हाथीकी पीठपर झालर दार हौदेमें मैं बैठी.. आप खुद ही जानते हो, ऐसे वक्त क्या होत है. अपने इस लम्बे व्यतिब्यस्त उलझे-सुलझे जीवनमें, जिससे पार होकर आजमें वृद्धा हुई हूं..."

"ओह, वृद्धा ! एलीन विक्टोरिया, तुम कह क्या रही हो ?" चेप्लिन्सकीने हार्दिक आपत्तिपूर्वक किन्तु हल्केसे कहा.

"छोड़ो, चेप्लिन्सकी, मुसाहिबी छोड़ो. मैं खुद जानती हूं कि मैं देहसे शायद अभी जवान, अभी सुन्दर बनी हूं. लेकिन सच, वक्त होते हैं कि जान पड़ता है कि मैं नव्वे वर्ष की हूं ऐसी जीर्ण मेरी आत्मा हो गई है. लेकिन मैं कहे चलूं. मैं कहती हूं कि जीवनमें तीन घटनाएं, तीन दृश्य घटे हैं जो गहरे जाकर मेरी आत्मामें अंकित हो गए हैं. पहला, जब मैं लड़की थी. मैंने देखा एक बिल्ली दबे पांव कबूतरकी तरफ बढ़ रही है. भयसे, कंटकित उत्सुकतासे, बिल्लीकी एक-एक हरकत और पक्षीकी भी वह बंधी और अचल दृष्टि में एकटक देखती रही. अबतक नहीं जानती, मेरा किसके साथ अधिक जी था, किसके साथ अधिक सहानुभूति. बिलावके चातुर्य और कौशलके प्रति अधिक आकृष्ट थी, या पक्षीकी मंत्र-बद्धता और चपलताके प्रति. जीत पक्षीके हाथ रही. बिल्ली झपट मारे कि पक्षी उड़कर दरख्तपर जा बैठा और वहांसे अपनी भाषा मे जाने क्या-क्या गालियां नीचे बिल्लीपर फेंकने लगा. मैं जानती हूं उसकी भाषाका एक शब्द मैं समझ पाऊं तो लाजसे लाल हो जाऊं, ऐसी गालियां वे रही होंगी. और बिल्ली ! मानो उसके साथ भारी बिडम्बना, बीत गई हो ! उसके साथ छल हुआ हो, धोखा हुआ हो. फिर अपनी

पूंछ सतरकर खड़ी वह ऐसे देखने लगी जैसे-'ग्रंह, कोई कुछ बात हुई ही नहीं.' दूसरी बात—एक ओपेरामें एक प्रतिभाशाली प्रसिद्ध संगीतकारके साथ मुझे गानेका मौका मिला.'

"कौन ? किसके ?" वैरोनसने पूछा.

"खैर, अब किसीके साथ सही. और अब क्या सब कुछ एक-जैसी ही बात नहीं है. नामसे क्या बनता है तो हां जैसे में कुल-की-कुल उसकी प्रतिभाके, उसके प्राणोंके बसमें होकर बेबस बस हिलोरें ले रही हूं, झूमि जा रही हूं. जैसे उस क्षण में लीन हो गई, लुट गई, ऐसी विस्मृति उस पल मुझपर छा गई थी. हमारी ध्वनियां किस अद्भुत रूपमें पार्थक्य खोकर एक दूसरेमें रम गई, खो गई थी. ओह! उस क्षणका वर्णन असम्भव है. शायद जीवन में एक और कुल एकबार वह क्षण आता है. अपने पार्ट के अनुसार मुझे उस स्थलपर रोना होता था, और मैं तब अपने जीवन के सबसे सच्चे, खरे, खारे आंसू रोई. और जब पट-क्षेपके बाद वह मुझ तक चलकर आया, अपने बड़े हाथोंकी हथेलियोंसे मेरे सिरके बालोंको उसने थपका और उस विमोहक, विमुग्ध, मुस्कराहटके साथ देखकर उसने कहा, 'मैं तुम्हारा कृतज्ञ हूं, ऋणी हूं. जीवनमें पहली बार में ऐसा गा सका हूं,'···तब मैं—हां, तुम्हारे सामनेकी गर्वस्फीता, दर्पोद्धता प्रगल्भा में पानी-पानी हो वहीं बह सी पड़ी. मैंने उसके हाथोंका चुम्बन लिया, आंसू मेरी आंखोंमें खड़े थे···"

"और तीसरा मौका—?" वैरानेसने पूछा, और उसकी आंखें ईर्ष्याजन्य चमक से चमक उठी.

"ओह, तीसरा !" उदासीके साथ उसने उत्तर दिया. "तीसरा तो ऐसा साधारण है कि क्या कहूं. पिछली गर्मियोंमें मैं नाइस में थी. वहां मैंने सेसील किटिनको देखा. देखा, और पाया भी. कुछ दिन हम साथ रहे. किटिन"—उसकी आवाज धीमी और आर्द्र होगई. और उसने आहिस्ता से शून्यमें क्रासका चिन्ह किया. "जो अब नहीं है. मैं, सच, नहीं जानती कि यह भला है, या क्या, कि वह अब दुनियामें नहीं है. लेकिन, कोई क्यों मरता है ?"

अकस्मात् एक क्षणमे, उसकी बडी-बड़ी आखे आसुओसे भर आई. वे सरल आखे जाने कैसी एक जादूकी ज्योतिमे जगमग कर उठी. जैसे ग्रीष्म की सध्याका वह एकाकी साध्य तारा. उसने अपना चेहरा स्टेजकी ओर घुमाया और कुछ कालतक उसकी लम्बी उगंलिया कुर्सीके हत्थे पर कसी रही. फिर जब अपने मित्रोकी ओर वह मुडी उसकी आंखे सूखी थीं और भेद भरे मीठे हठीले ओठ निस्सकोच मुस्कराहटसे खिल रहे थे.

तब रेजेनावने कोमल पर सार्थक और संयत वाणीमे धीमेसे पूछा, "लेकिन, एलीन विक्टोरिया, तुम्हारी यह अतुल ख्याति, तम्हारे प्रशसकों की अपरिमित सख्या, लोगोका तम्हारे लिए हर्ष निनाद...और अन्तमे उस आल्हादका बोध जो तुम्हारे दर्शक तुममे पाते है, क्या सम्भव है कि इस-से भी तुम्हारी धमनियोमे जैसे रक्तका, जीवनका सचार नही होता ?"

"नहीं रेजेनाव" थकित वाणीमे उसने उत्तर दिया, "मुझसे कम तुम नही जानते कि इस सबकी क्या कीमत है भेंट करनेवाला वह चलता पत्रकार जो अपने मित्रोके लिए तमाशेका पास चाहता है और लगे हाथ इन्टरव्यूके लिए बीस-पचीस रूपया भी, हाईस्कूलके लडके और लडकियां, युवक व युवतिया जो मेरे आटोग्राफ्ड फोटोग्राफ पानेके कृपाप्रार्थी रहते है; वे बुड्ढेजो बडे पेट और बडी प्रतिष्ठाके लोग है और जो हर जगह मेरे साथ दीखनेके इच्छुक रहते है, प्रतिष्ठा सूचक वह अगुलि-निर्देश जो जहां जाती हू वही तीरके नोककी तरह मेरे पीठ पीछे कहता चलता है "वह रही ! वही तो है, वह मशहूर...," अनगिनत गुमनाम पत्र, लोगोकी विनय-अनुनय-अभ्यर्थना . ओह, कहातक कोई गिनाए .. लेकिन क्यो ? तुम भी तो दर्बारकी इन और उन भद्र रमणियोसे घिरे रहते हो."

रेजेनॉवने कहा "हा, तो—"

"बस, वही बात मेरी समझो. हा, इतना और है और यही मेरी स्थितिकी विडम्बना है कि जब जब मुझे मौलिक स्फूर्ति होती है, कोई सच्ची अनुभूति, तभी तब मै अभागिन पाती हू कि मै दर्शकोके सामने कुछ गाती खडी हूं जो झूठ है; कुछ कर रही हू जो कोरा अभिनय है. और

अपने प्रतिद्वन्दीके बाजी ले जानेका भय भी मुझे हरदम सताता रहता है. तिसपर यह शंका कि कहीं आवाज उखड़ न जाये, बिगड़ न जाये, कहीं सर्दी गर्मी न लग जाए. और फिर यहकि गलेकी बराबर ऐतिहात रक्खो, पर्वाह करते रहो और उसे पट्टियों और दवाओंसे सेते रहो. इन चिन्ताओंकी नोंकके नीचे रहना...ओह ! सच, प्रसिद्धि बेहद भारी चीज़ है, बेहद फिजूल और बोझल."

"लेकिन वह कलाकारकी प्रख्याति" वकीलने कहा, "वह प्रतिभाकी ज्योति, वही तो वह असंदिग्ध नैतिक शक्ति है...जिसके सामने राजा की शक्ति हेच है".

"हां-हां, प्रिय, ठीक है; सब ठीक है. लेकिन शोहरत, नामवरी, जब तक इन्हें दूर से देखो, इनके सपने लो, तभी तक अच्छी रहती है. पर इन्हें एक बार पाकर पकडो तो कांटे-ही कांटे हाथ लगते है. तब भी, जब उस ख्याति मे से रत्ती भर की भी कमी होती है तो हमें कैसी मनोवेदना होती है. और मैं एक बात तो कहना भूल ही गई. हम कलाकारों को कठिन मेहनत की सजा जो भुगतनी होती है. सबेरे अभ्यास और तैयारी, दिन मे रिहर्सल, और खाने से वक्त मिला कि चलो, स्टेज के लिये भाग कर पहुँचो. पढ़ने-पढ़ाने या किसी और काम को मन चाहे, और घण्टे दो-एक निकालने की सोचो, तो कौशल से ही छीन कर पा सको. बस तो ... ...हमारी मौज के शग़ल भी इस तरह निरे बेमौज और नीरस हैं।" उसने श्रमित और उपेक्षित भाव से उसी कुर्सी के हत्थे पर पडी उंगलियों को हिलाया.

इस बातचीत मे उत्तेजित होकर चैंपलिस्की. ने सहसा पूछा, "अच्छा तो मुझे बताओ, एलीन विक्टोरिया, अपनी कल्पना को रिझाने और अपनी उपेक्षा को तोड़ने के लिये तुम क्या मांगती हो, क्या चाहती हो?"

उसने अपनी कटीली आंखों से तनिक चैंपलिस्की. को देखा और जैसे तनिक अरुणिमा के साथ उसने कहा—"पहले लोग रहते थे आनन्द से. वह जानते थे, जीवन क्या है. किसी तरह के विधि निषेध उनके साथ न थे. तब, वहां और उस काल में, जान पडता है, मेरा स्थान

था. वहां मैं ठीक रहती तब शायद मैं अपने उपयुक्त. अधिक पूर्ण, अधिक प्रस्फुटित जीवन जीती ओह ! प्राचीन रोम की वह स्वतन्त्रता, वह निर्बंधता !"

रेजेनाव को छोड किमी ने उसे न समझा. रेजेनाव ने बिना उसकी ओर देखे अपने लहजे मे, जैसे एक्टर की भांति, धीमे से कहा, "सीजर ओ सीजर, तेरी स्वर्गीय आत्मा को मेरा शतशत प्रणाम"

"ओ रेजनाव, तुम तुम हो" रोविन्सकायाने कहा, "मैं तुम्हे कैसा प्रेम करती हूं तुम खूब हो! विचार उडता है कि तुम सदा उसे पकड सकते हो, और पंख समेटकर उसे धरती पर ले लेते हो. यद्यपि मैं कहूंगी यह सामर्थ्य मस्तिष्ककी कोई महिम्नताकी द्योतक नही है और सच दो प्राणी साथ मिलते हैं कल वे मित्र थे, साथ हस बोल रहे थे, खा पी रहे थे कि पीछे से चला आता है एक 'आज', जो उनमे से एकको हर ले जाता है, दूसरेको छोड जाता है! समझते हो न? एक, दूसरेके जीवन मेंसे एक बारगी ही बिल्कुल लोप हो जाता है और तब उनके बीचमें न भय रहता है, न मैल, न कोई गांठ, न कोई नाता यह अत्यन्त, वास्तव, उदार, ज्योतिष्क दृश्य है, जिसको मैं बस अपने सामने कल्पना से खींचकर देख सकती हूं'

"तुमम कितनी हृदयहीनता है, राविन्स्काया ?" वैरोनसने विचार पूर्वक कहा

"तो मैं अब इसका क्या उपाय कर सकती हूं हमारे पूर्वज ही जंगली थे, आजाद और बहादुर लूट और छीनपर उनका काम चलता था लेकिन, क्या हम चले ?"

सब बागके बाहर गए चेल्पिन्सकीने हुक्म दिया कि उसकी मोटर आए एलीन विक्टोरिया उसकी बांहोपर झुकी थी सहसा उसने पूछा, "चैंपलिस्की, मुझे बताओ, जिन्हे सभ्रात कहे वैसी औरतोंसे जब छूटते हो तब अकसर तुम कहां जाया करते हो ?"

चैंपलिस्की रुका और झुका पर वह जानता था कि रोन्बिसकाया से झूठ कहे, इतना उसका बस नही है.

"मैं—ऐं...कहते डर होता है, तुम्हारे कान व्यर्थ मैले हों....और कहां जाऊंगा, यही तमाशे मजलिसमें..."

"क्यों, उससे आगे और कोई नहीं ?"

"अब तुम मुझे लज्जित कर रही हो. सच कहता हूं, जबसे तुम्हारे प्रेममें पड़ा हूं...."

"अच्छा, अच्छा, औपन्यासिकता जाने दो."

"ओह मैं कैसे कहूं" चैपविंसकी मरमराया. उसने अनुभव किया कि उसका चेहरा नहीं, उसकी सारी देह लाजसे लाल पडी जा रही है. कहा "यही कभी बाजारमें चला जाता हूं. लेकिन मैं, मैं खुद—"

रोविन्सकायाने चैपलिसकी की कोहनी जैसे विरक्त आसक्तिसे अपनी ओर खींची, पूछा, "चकलेमें ?"

चैपलिस्कीने कुछ उत्तर न दिया.

तब उसने कहा, "तो आप हमें फौरन अपनी इस कारमें वहीं ले चलिए. चलें, यह दुनिया भी देखें, जो मेरे लिए बिल्कुल अनजानी, विदेशी है. पर याद रखिए, मेरी रक्षाका भार आपपर है."

शेष दोनों अनमने मनमें आखिर इनसे सहमत हुए. एलीन विक्टोरिया का विरोध करना उनके लिए सम्भव न था. वह हमेशा वही करती थी जो चाहती थी. और उन्होंने यह भी सुन रखा था कि पांटर्सवर्गमें सोसायटीकी मन चली संभ्रांत महिलाएं, यहा तक कि लड़कियाँ, स्वतंत्र प्रेमकी झोंकमें इससे कहीं उच्छृंखल, भीषण, मजेदार खेल खेल जाती हैं.

७

यामकासके रास्तेमें रोविन्सकायाने चैपलिस्कीसे कहा "देखो, सबसे पहले तो हमें सबसे बढ़िया जगह ले चलो, फिर मध्यम, फिर सबसे नीचे दर्जेवाली जगह."

साग्रह उद्यततासे चैपलिस्की बोला, "मेरी प्रिय आदरणीया एलिन-

विक्टोरिया, तुम्हारे लिए मैं सब कुछ करनेको तैयार हू. यह कोई डींग की बात नही कि मैं तुम्हारे हुक्मपर प्राण निछावर कर सकता हू. तुम्हारे जरा इशारे पर अपनी सारा मान, प्रतिष्ठा और धन बहा दे सकता हूं. लेकिन ऐसी जगह तुम्हे ले जानेका मुझे साहस नही होता. रशियन बदतमीज होती हे, उनकी आदते गन्दी. कभी तो निरी पशु ही हो जाती हे मुझे भय है कही ऐसी-वैसी बात कोई तुम्हारी इज्जतमे न बक दे, या तुम्हारे सामने ही कोई कुछ बेहूदगी न कर बैठे..."

"ओ मेरे राम," तुनककर बीचमे ही रोबिन्सकायाने कहा, "जब मैं लन्दनमे गाया करती थी तब वहुत थे जो मेरी कृपा याचना करते थे और मे तब इन बडे-से-बडे लोगोके साथ इन गन्दी से गन्दी जगहोंको देखने जानेसे नही डरती थी सब वहा लिहाजसे ही मेरे साथ पेश आते थे. उस वक्त मेरे साथ दो इगलिश रईसजादे रहते थे, दोनों लार्ड थे. खेलके शौकीन और दोनो देह और मनमे समर्थ और पुष्ट. और वे कभी गवारा नही कर सकते थे कि किसी महिलाकी उनके समक्ष तनिक भी अवज्ञा हो सके! पर शायद चैंपलिन्स्की, तुम कायर जातिके हो."

चैंपलिस्की चमक उठा "नही, नही, विक्टोरिया वह तो मैंने तुम्हे पहलेसे आगाह किया है क्योकि मै तुम्हे प्रेम करता हू. पर यदि तुम्हारी आज्ञा ही है तो जहा चाहो मैं चलनेको हाजिर हू. इस सन्दिग्ध काम पर ही क्या, कहो तो मौतमे तुम्हारे साथ चला चलू."

अबतक गाडी ट्रूपिलतक आ गई थी. यामकास भरमे यह चकला सबसे बढ़कर था. एडवोकेट रेजेनावने अपनी उसी व्यग भरी मुस्काराहटमे कहा, "तो शुरु हो चिडियाघरोका निरीक्षण.

वे एक कमरेमे ले जाए गए. दीवारोपर गुलाबी कागज चिपका था, और उसपर सुनहरी चित्रकारी हो रही थी. रोबिन्सकायाने तुरन्त कलाकार-सुलभ प्रतीक्ष्ण स्मृति द्वारा पहचान लिया कि ठीक यही कागज उस कमरेमे भी लगा था जिसमे अभी कुछ देर पहले वे बैठे थे.

बालटिक प्रान्तोकी चार जर्मन स्त्रियां आईं. सभी पुष्ट देह, पीन वक्ष थी. पाउडर लगा था. भारी भरकम थीं और जैसे अपनेको आदर

णीय मानती थीं. बातका सिलसिला आरम्भमें तो कुछ न जमा. लड़कियां अचल, स्थिर पत्थरमें खुदी मूर्तिकी न्याईं बैठी रहीं, जैसे कि वे अपने मनमें जानती हैं कि वे प्रतिष्ठित संभ्रान्त कुल-महिलाएं हैं. रेजेनाव ने शराब मंगाई, पर उससे भी स्थितिमें सुधार न हुआ. आखिर रोबिन्सकायाने मदद की. उनमेंसे पुष्टतम, सुन्दरतम, की ओर मुड़कर जो डबल रोटीकी तरह फूली बैठी थी उसने अभ्यर्थनापूर्वक जर्मनमें पूछा, "मुझे बताओ, तुम कहाकी हो ? कहाका जन्म है ? जर्मनीकी हो ?"

"नहीं महोदया मैं, मैं रीगासे हूं."

"तो किस लाचारीसे तुम यहां पहुंची? गरीबी के कारण तो नहीं?"

"जी नहीं. गरीबीसे क्यों होती. देखिए, मेरा खाविन्द एक रेस्टोरेन्टमें काम करता है. खाविन्द ? हां. पर हमारे पास इतना पैसा कहां है कि हम विवाह करें. मैं, जो बचता है, बेंकमें जमा करती जाती हूं. वह भी ऐसा ही करता है. जब हमारे पास दस हजार हो जाएंगे और हमें चाहिए भी कितना ?—तब हम अपनी निजकी दारूकी दूकान खोल लेंगे. और तब परमात्माने चाहा तो बच्चोंकी बात भी हो जाएगी मैं दो चाहती हूं, एक लडका, एक लडकी."

रोबिन्सकायाको अचरज हुआ, "लेकिन सुनो तो. तुम युवती हो, सुन्दरी हो, दो भाषाएं . "

"तीन महोदया" सगर्व टोककर उसने कहा, "मैं लेटिन भी जानती हूं. मैंने प्राइमरी सब क्लास पास की है. हाई स्कूलकी भी तीन क्लासें पढ़ी हैं.

"ओह ! तब, तब देखो—"रोबिन्सकाया मानो भीतर से भरी आ रही थी. "देखो, इतनी शिक्षासे तो तुम्हें कोई ऐसी जगह मिल सकती है जहां सब खर्चके अलावा तुम्हें ऊपरसे तीस रुपए और मिल जायें. यहीं कहीं हाउस कीपर ही हो सकती हो, कहीं स्टोरमें सीनियर क्लर्क या कैशियर या...और अगर तुम्हारा भावी पति...फिटज ? ..."

"जी, हंज..."

"हां, अगर हंज भी उद्योगी और चतुर साबित हों तो तीनचार साल-

के अन्दर तुम्हारे लिए कुछ मुश्किल न होगी कि तुम सिर उठाकर अपने पैरोपर खडी हो जाओ, क्या कहतीहो ?"

"आह, श्रीमतीजी, आप जरा भूलती हैं आप इस बातको ओझल कर जाती हैं कि अच्छीसे अच्छी जगह जाकर भी अपनेपर कुछ न खरचूं और सब कुछ बचाऊं तो भी पन्द्रह बीस रुपएसे ज्यादह मैं नही बचा सकती. और यहा जरा होश्यारीसे मैं सौ रुपए मजमे बचा लेती हू और सीधे जाकर सेविंग्स बैंकमे जमा कर लेती हू और श्रीमता, जरा सोचिए कि किसी घरमे जाकर नौकरी करना कैसी तोहमतकी बात है हमेशा मालिकोंकी तबियत और मर्जीपर नाचते रहो. और मालिक तुम्हे ऐसे समझे जैसे पैरकी जूती और छेडछाडमे भी वह बाज न आए शि, और मालकिन इसपर तुमसे बेबात जला करे और सदा तुम पर दुतकार ही पडती रहा करे."

"नही मैं नही समझती " रोविन्सकायाने मनोनिवेष पूर्वक कहा. वह उस जर्मनकी आखोंकी ओर आखे उठाकर नही देख पारही थी, और नीचे फर्शपर उसकी निगाह जमी थी "मैंने तुम्हारे यहांके तुम्हारे . इन घरोंमे बीतनेवाले तुम्हारे जीवनके बारेमे बहुत सुना है कहते सुना है, यह जीवन भीषण है, बीभत्स कहते सुना है, तुमको बुरेसे बुरे, बुड्ढे, बदसूरत, मनहूस आदमियोंकी खातिरमे मजबूरन पेश होना पडता है यह कि तुमको तोडा जाता है, चूसा जाता है, लूटा जाता है, निर्दय, नृशस..."

"जी नही श्रीमती हममेसे हरएकके पास अपनी अपनी पास बुक है, जिसमे हमारा ठीक ठीक आमद खर्च लिखा रहता है पिछले महीने मैंने पांचसौ रुपएसे भी कुछ ऊपर कमाए दोतिहाई तो जगहके, खानेके, रोशनी, कपडे, ईधन वगैरहके हिसाबमे मालकिनको चले गए. मेरे हिस्से मे कोई डेढसौ बचे ठीक है न ? पचास मैंने ड्रेसोमे और ऊपरी बातोंमे खर्च कर दिए. सौ अलगके अलग मेरे पास बचे इसमे श्रीमती, मैं पूछती हू, लुटनेकी, चुसनेकी क्या बात है ? और अगर मैं किसी आदमीको नहीं पसन्द करती, और सच, बाज बाज तो बड़े घिनौने होते है, तो मैं कह

सकती हूं, मै बीमार हूं और मेरे बजाय कोई दूसरी नई लड़की भेजदी जायगी...".

'लेकिन ···· माफ करना··· ··मैं तुम्हारा नाम···?"

"एलसा"

"एलसा, कहते हैं, तुम से बड़ा सख्त, बेहूदा वर्ताव किया जाता है·····मारा तक जाता है ···· वह करने को लाचार किया जाता है जिससे कि तुम्हारा जी घबराए, घिन हो."

एलसा ने तनक कर कहा "कभी नहीं श्रीमती, हम सब यहाँ ऐसे रहते हैं जैसे एक ही कुनबे की हों, हम सब एक ही तरह की रहने वाली हैं. आपस में रिश्ते भी निकल सकते हैं. परमात्मा करे बहुत से कुनबे ऐसे रहें जैसे हम रहते है. सच, यहां याम्सकायामें बेहूदगियां भी होती हैं, दंगे, बखेड़े, गलतफहमियां. लेकिन यह सब कुछ वहाँ··· ···वहाँ · ···उन रुपए वाली जगहों में होते हैं. वे रुसी औरतें, गंवार भोली, खूब शराब पीतीं हैं और अपना एक-एक प्रेमी बना बैठती हैं. उन्हें अपने भविष्य का ख्याल ही नहीं होता".

रोविन्सकाया के मन को वेदना ने दबा लिया. धीमेसे बोली, "तुम चतुर हो, एलसा. यह सब ठीक है, लेकिन बीमारी लग जाय तो ? कोई छूत ? क्यों, वह तो मौत है ! और तुम पता कैसे रख सकती हो !"

"नहीं, श्रीमती. मैं आदमी को तब तक अपने पलंग पर नहीं लेती जब तक उसकी पूरी तरह पडताल न करलूं ·····पचहत्तर फी-सदी के बारे में मुझे यकीन है कि मैं गलती नहीं करती",

"बेहया, चुडैल" एक दम गर्म होकर और मेज पर मुक्का मार कर रोविन्सकाया चिल्लाई, बोली "लेकिन तब तुम्हारा एलबर्ट······"

जर्मन ने विनीत संशोधन किया, "जी, हंज".

"हां, हंज · तो हंज को, मैं समझती हूं, शायद बहुत खुशी तो न होती होगी कि तुम इस जगह रहती हो और उसके प्रति अपने पत्नित्व को आए रोज इस तरह भांभा करती हो !"

एलसा सच्चे और अबोध विस्मय से उसकी ओर देख उठी. "आप

कह क्या रहीं है, श्रीमती. अब तक मैंने उसके साथ कभी कोई दग़ा नहीं किया कोई छल नही किया. यह तो फाहशा होती है, जो ऐसा करती है. खासकर रशियन, जो अपने लिए प्रेमी बना लिया करती है और उनपर फिर अपना गाढ़ा पैसा बर्बाद करती है मेरा राम जानता है जो मै कभी ऐसा करती हूं, छिः छिः".

रोविन्सकायाका जी खट्टी घिनसे भर गया. जोरसे बोली "ऐसी नृशसता ? इसमे गहरे पतनकी मै कभी कल्पना भी नही कर सकती थी. (चैंपलिस्की मे) इन्हे कुछ दो दिलाओ और चलो, यहा से बाहर चलो".

जब वे सडकपर बाहर पहुंचे, चैंपलिस्कीने उसकी बाँह हाथोमें लेकर प्रार्थनाके स्वरम कहा, "परमात्माके लिए क्या यह एक जगह हमारे लिए बस नही है ? यह एक तजुर्बा तुम्हारे लिए काफी घूंट नही है ?"

"ओह ! कैसा कडवा ! कैसा घिनौना, विषैला !"

"इसी से मै कहता हू, इसको छोड और हम सब लौटें".

"नही, अब तो इस वैतरणीके पार तक हमें जाना होगा. मुझे अब कोई नीचे दर्जेकी सीधी-सादी जगह दिखाओ".

चैंपलिस्की जो विक्टोरियाके ऊपर न्योछावर था, और इसलिए जो अब उससे बेहद खिजला रहा था सिवा इसके क्या कर सकता था कि दस कदम आगे अन्नामरकानीके चकलेमे उसे ले जाए. लेकिन यहां कुछ अप्रत्याशित, कुछ तीखा घट पडनेके लिए मानो उनकी प्रतीक्षामें ही था. पहुचे, तो पहले साइमनने उन्हे अन्दर जानेसे रोका. रेजेनॉवने कुछ सोनेकी मुहरें उसे थमाई तब वह पिघला. ट्रैपिल जैसे ही एक कमरेमे यहाँ भी वे पहुँचाए गए. कमरा उसी साज-बाजका था. बस, माल जरा वहांसे उतरा हुआ घटिया था.

एमा उडवानोकी आज्ञापर लड़कियां सब उस कमरेमे इकट्ठी हो गईं. लेकिन यह वैसे ही हुआ जैसे किसी खिले बागमें चिढ़ा जानवर छोड दिया जाए, या सोडेमें ऐसिड मिला दिया जाए. यानी यह कि

जेनी को भी वहाँ आने दिया गया. यही बड़ी भूल हुई. छिड़ी, क्रुद्ध, उसकी आँखोंमें आगकी लपटें उठ रही थीं. विनीत शान्त तिमिरा भी सलज्ज, आमंत्रण बखेरती हुई, स्खलित मुस्कराहटके साथ सबके पीछे-पीछे आई. अन्त में लगभग सब प्राणी उस कमरेमें जमा हो गए. यहाँ रोबिन्सकायाने नहीं पूछा, कि तुम इस जिन्दगीमें कैसे आ पड़ी ? और यह भी कहना होगा कि इन लड़कियोंने विशद आदर और अभ्यर्थनाके साथ अतिथियों का स्वागत किया. विक्टोरियाने उनसे कुछ अपना गाना सुनानेके लिए कहा और खुशी-खुशी उन्होंने गाया—

सोमवार अब फिर आ गया है,
उन्हें चाहिए कि वे मुझे बाहर ले जाएं,
पर डाक्टर है कि बाहर नहीं जाने देता,
उसकी ऐसी-तैसी·········
और भी :
मैं बेचारी, मैं बेचारी, मैं बेचारी,
दारूखाना बन्द है,
और मेरा सिर मुझे दर्द दे रहा है,
उचक्के की मुहब्बत
मसाला है, मसाला,
लेकिन रण्डी
ऐसी ठन्डी है जैसी बरफ.
हीं, हीं, हीं,

वे साथ-साथ आयें,
कैसी जोड़ी है : कि वाह !
एक है रण्डी, वह गठ कतरा,
हीं, हीं, हीं !

सबेरा अब आ रहा है,
वह चोरी की तदबीर में है;
इधर वह अपने पलंग में पड़ी है,

हंस रही है जैसे क्या न हो,
हीं, ही, ही !
सवेरा आ गया,
वह चल पड़ा अपने काम पर,
लेकिन उसकी माशूका की
उसके साथी अब घात में है,
ही, ही, ही ?

और उसके बाद एक कैदियों का गीत :—

मै बिगडा जवान हूं
बिगडा हू कि अब नही सुधरूंगा.
साल के बाद साल आने है.
और दिन अपने चले जाते हैं.
मेरी मेरी रोओ मत प्यारी,
तुम मेरी हो, मुझे मिलोगी;
लाम का काम निबटा
कि मैं तुझसे व्याह करुंगा.

अकस्मात सबको देखकर विस्मय हुआ कि स्थूलकाया किटी, जो सदा बन्द, गुम, अनमनी रहती थी अब एकदम ठहाका मारकर हंस पड़ी. वह उडेसाकी रहनेवाली थी. बोली—

"मै भी एक गाना गाती हूं. हमारी तरफ आवारा छोकरे और ताड़ीखानोंकी रानियां यह गाया करती है." और अपने भद्दे फटे बेढंगे आलापमें उसने गाना शुरू किया. साथ शरीरकी अजब बेहूदा हरकतें भी करती जाती थी.

आह. मैं डिफोवकफा जाऊंगा
मेज पर बैठूगा,
एक हाथसे हैट उतारकर
फेंक दूंगा—
तब अपनी प्यारी रानीसे पूछूंगा

"प्यारी क्या लोगी ?"
और जबावमें वह कहेगी
"मेरा सर दर्दसे फटा जाता है"
"अरी, मै नही पूछता
तेरा दर्द क्या है ?
अरी मैं पूछता हू
तू पीना क्या चाहती है ?
बीअर वाइन क्या मगाऊ ?
या लाल शराब ? या कुछ भी नही ?"

सब ठीक चल रहा था कि एकदम छोटी मनका आधी बाहोंकी कमीजमे वहा आ धमकी. हाफ रही थी और बदहवास थी एक दूकानदार कलकी सारी रातकी मौज बहारका पेशगी इन्तजाम कर गया था उसीके जीके बहलाने के काममे वह आ रही थी.

लेकिन अभागी वेनेडिक्टाइन शराब ज्योही मनकाके भीतर पहुचती है कि उसके सिर चढ बैठती है तब यह मनका कुछ और मनका बन उठती है. तब उसमे लड़ाई का भूत जाग जाता है. यह छोटी मनका यह छोटी भूरी मनका, तब बेढब मनका हो जाती है. कमरेमे आते ही वह अचानक फर्श पर चित्त पड गई, और, पीठके बल पडी-पडी खूब जोरसे बतहाशा ठट्ठा मारकर हसने लगी. बाकी और भी सब हसने लगे हा ! पर-- हसी देरतक न रही.. मनका एकदम फर्शपर उठ बैठी और चिल्ला उठी "ओहो, यह तो कोई नई जनी हमारे यहा दाखिल हुई दीखती है"

यह असगत एकदम आशातीत बात अब तो घट ही गई. पर बैरोनसने उसपर और भी भारी मूर्खता कर डाली. वह—बोली, "नही, जो पतिता है, दुष्ट हो गई है, वैसी बहनोके लिए एक सस्था खुली है. मैं उसकी सरक्षिका हू इसी हैसियतसे कर्तव्य समझकर मैं तुम लोगोके बारेमे कुछ पूछताछ करने यहा आ गई हूं."

पर इस स्थल पर जेनी एकदम भभक-कर जल उठी. "निकल जा अभी यहांसे, इसी दम, बुढ़िया खूसट, छिनाल कहीं की. तुम्हारे आश्रम,

तुम्हारी संस्था ! मैं जानती हूं उन्हें. जेलसे बदतर चीजें हैं वे. तुम्हारे मंत्री कुत्तेके मुहकी हड्डीकी तरह हमें बरतते हैं. तुम्हारे बाप, तुम्हारे खाविन्द, तुम्हारे भाई, हमारे पास आते हैं और हमसे तरह-तरहकी बीमारियां ले जाते हैं···हां, जान-बूझकर···और वे फिर हमारी बीमारियां तुममें प्रविष्ट करते हैं. तुम्हारी आश्रमोंकी सुपरिन्टेन्डेन्ट संचालिकाएँ ड्राइवरों और दल्लालों, और पुलिसमैनोंके साथ मौज मारती हैं, और हम जरा आपसमें हंसी, खुलकर बोली तो हमें कोठरीमें मूंद दिया जाता है. सुन लो ऐसे हैं तुम्हारे निकेतन और आश्रम. इसलिए अगर तुम यहां ऐसे आई हो जैसे थियेटर देखने जाती हो तो तुम्हारे मुंहपर मैं यह असली सच बात कहती हूं, सुनलो, और अपना मुंह धो आओ."

किन्तु तिमिराने शांतिपूर्वक उसे रोका, "ठहरो जेनी, मैं उन्हें सब कहे लेती हूं··· क्या यह हो सकता है, बैरोनस, कि तुम सचमुच संभ्रान्त कुलशीला समझी जानेवाली महिलाओंसे हमें नीचा समझती हो ! एक आदमी आता है, एक मुलाकातके दो रुपए या पूरी रातके पांच रुपए देता है और हमें पाता है! मैं इसे दुनियामें किसीसे छुपानेकी जरूरतमें नहीं हूं ··लेकिन मुझे बताओ, बैरोनस, कि तुम घर कुनबेवाली एक भी ऐसी विवाहित स्त्रीको बता सकती हो जो भीतर-ही-भीतर अपनेको वासनाके खातिर किसी युवक के, और पैसोंके एवज किसी अधेड़के हाथों अपनेको नहीं सौंप देती. मैं खूब जानती हूं कि तुममेंसे एक-सौमें पचास तो अपने प्रेमी बनाकर उनके यहां जाती हैं, और बाकी पचास जिनकी उमर ज्यादा है अपने पास जवान लडकोंको रख छोडती हैं. मैं यह भी जानती हूं कि तुममें बहुत— आह, काफी बहुत,— अपने बाप भाई, अपने बेटों तकसे मिलती हैं. हां, इतना है कि इन चोरियों, इन बेहयाइयोंको तुम भली भांति तरह-तरहके मखमली लफजी ढकनोंमें बन्द करके रखती हो. यही हममें तुममें फर्क है. हम पतित हों पर झूठ नहीं बोलतीं, बहाना नहीं करतीं. तुम सब पतित होती हो और ऊपरसे झूठ भी बोलती हो. अब खुद सोच देखो, फर्क है तो किसके हकमें फर्क है !"

"शाबाश, तिमिरा ! ठीक कहा ठीक. इनकी ऐसीही खबर लेनी

चाहिए," फर्शपर बैठे ही बैठे मनका चिल्लाई, अस्तव्यम्त सुन्दर केश फहराते हुए, वह इस समय एक तेरह वर्षकी नवीना दीख पडती थी.

"यही, यही," जेनीने भी प्रोत्साहन दिया उसकी आखकी लहक ज्वाला फेंक रही थी

तिमिराने कहा, "क्यों है न, जेनी ? मै उससे भी आगे जाती हू. मै कहती हू, हममेसे हजारोमेसे मुश्किलसे एक गर्भपात करती होगी और तुममेसे हरएक कई-कई बार—क्या यह मच नही है ? और तुममेसे जो यह करती है, निराशामे पडकर नही, दैन्यकी दारुणतामे घिरकर ऐसा नही करती ! नही, वह अपना यौवन, अपना रूप कायम रखना चाहती है, तुम अपना यौवन, अपना सौन्दर्य बिगाडने मे इसलिए डरती हो, क्योकि वही तुम्हारी सम्पत्ति है, वही तुम्हारे जीवनका मूलधन है. या तुम्हे सिर्फ पाशविक, शारीरिक, मौजकी चाह रहती है. मात्र सभोग तुम चाहती हो, आगे बखेडा पालना नही चाहती. और गर्भावस्था और मातृत्व तुम्हारी इस अनर्गल-लिप्सामे बाधक होते है."

रोबिन्सकाया हतश्री हो गई और बेरोनस की ओर मुखातिब कर अग्रेजी मे बोली : "सुनो बैरोनस, लडकी यह अपनी स्थिति के लिहाज पढी लिखी मालूम होती है".

"सोचती हू, मेरी भी निगाह मे उसका चेहरा पडा है. मैने उसे कहीं देखा है ! लेकिन कहा ? सपने मे ? या ख्याल ही ख्याल में ? या बिल्कुल छुटपन मे ?"

तिमिराने लापरवाही के साथ धृष्ट बनकर बीचमे कहा, "स्मृति पर जोर न डालिए, बेरोनस ·· ·· मै आपकी मदद करती हू खरकोव में कोनियाकिनस होटल का कमरा, थियेटर मैनेजर, और किसी कोरस गायन की याद कीजिए तब आप बैरोनस न थी लेकिन आइए अग्रेजी छोड़िए, तब आप और साथिनों की तरह साधारण कोरस गर्ल थी".

"लेकिन कृपा कर बतलाओ तो, श्रीमती मार्गरेट, यहा तुम कैसे आ पहुंची ?"

"ओह, सेज लोग यही पूछा करते हैं. बस, मै यहां आ पहुंची,

और क्या ?" और एक मर्म भेदी व्यंग के लहजे में उसने पूछा "मै समझती हूं, जितना आप हमारा समय ले रही है उतने दाम आप हमे देगी ."

अचानक मलका चिल्लाई, 'नही, नहीं चाहिए दाम. और तुम जाकर सब भाड मे पड़ो," और एकदम अपनी जुर्राबों मे से दो सोने की मुहर निकाल कर उसने मेज पर फेक कर मारी. "यह लो······ तुम्हारे गाडी के किराये को देती हूं. अभी इसी वक्त सीधी चली जाओ. नही तो मै यहाँ के सारे शीशे, सारी बोतले तोड दूंगी, जो समझा हो" .

रोविन्सकाया खडी हुई. उसकी आंखों मे सच्चे आंसू थे. भारी वाणी मे बोली, "हां हम लोग चले जायेंगे, और श्रीमती मार्गरैट की बातो मे हमारा कल्याण ही होगा. अपने समय की पूरी कीमत आप हम से लीजियेगा. चैपलिस्की, देखो ख्याल रखना. फिर भी आप लोगो ने इतना मुझे गाकर सुनाया है, तो क्या मुझे आप इजाजत देगी कि मै भी आप को कुछ सुनाऊं !"

रोविन्सकाया पिआनो पर गई. तनिक उसे परखा, कुछ स्वर निकाले और एक दम यह सुन्दर गीत गाना शुरू किया.

हम फिर अभिमान मे अलग हो गए,
एक शब्द ईर्ष्या या निंदा का नही,
न उच्छ्वास, न आह.
अलग हो गए, जैसे सदा के लिए.
पर जो बस कि मै तुझे मिल पाऊं !
आह, कि जो मैं तुझे मिल जाऊं !
रोता नहीं हू, न शिकायत है,
भाग्य के आगे वश ही क्या?
मालूम नही कि क्या वह प्रेम था
जिसमे तुमने मुझे इतना दु:ख दिया,
पर जो बस कि मै तुझे मिल पाऊं !

आह. कि जो तुझे मिल जाऊं !

रोविन्सकाया जैसी गुणी कलावन्तके वीणाविनिंदित-कंठसे निकलकर इस कोमल-करुण गीतने उन महिलाओंके भीतर वह जगा दिया जो उनके मर्ममें सोया था. उनके प्रथम प्रेमकी स्मृतिने छिड़कर उन्हें विह्वल विसुधकर छोडा. वे क्षण जिनमे पहली बार लुटकर उन्होंने सब कुछ पा लिया था, वे क्षण जब पहली बार किसीके अंकमें टूटकर वह बह गई थीं और धन्य हुई थीं, वे क्षण जब वे सब कुछ गंवाकर कृतार्थ भाव से पतित हो गई थी, वे ही क्षण-अब उनमें मचलकर हरे हो गए. बसंतकी ऊषामें, प्रभातकी गुलाबीमें, जब घास ओसमे भीगी थी और आकाश और बनस्पतिके छोर अरुणिमासे छू गए थे, उस समयकी विदा, वह आलिंगन जब वे दो एक थे और जो अन्तिम था, और अब छातीके भीतर कोई धुक-धुक करके कह रहा था, 'यह फिर न होगा, फिर न होगा, और सुबहका ठण्डा कोहरा जब सिरपर छाया था और बाल बिखरे थे... ओह !...

तिमिरा मौन थी. मनका निस्पन्द. और सब जैसे थम गया था. तभी जेनी, हठीली निरंकुश जेनी, दौडकर गायिकाके पास गई, घुटनोंके बल बैठी और उसके चरण पकडकर सुबक-सुबककर रोने लगी.

रोविन्सकाया का जी भी डूब गया. उसने उसके सिरको अपनी बाहों में लेकर कहा, "जेनी, मेरी बहन, मैं तुम्हारा मस्तक चूम सकती हूं ?"

जेनीने उत्तरमें कुछ धीमे उसके कानमें कहा.

रोविन्सकाया बोली. "एंह यह भी क्या छोटी-सी बात है. जरा इलाज किया कि सब दूर हो जाएगा."

"नहीं, नहीं, नहीं, मैं ठीक नहीं हूंगी...अरे क्यों, तो मैं और सबमें रोग प्रवेश करूंगी, कि वे सब सड़ते और गलते रहें."

"आह मेरी बहन," रोविन्सकायाने कहा, "तुम्हारी जगह मैं होती, मैं ऐसा न करती."

और तब जेनी, गर्वस्फीता वह जेनी रोविन्सकायाके हाथोंको, घुटनोंको सिसक-सिसककर आवेगपूर्वक चूमने लगी, बोली "सब लोगोंने मेरे साथ यह

क्यों कर डाला ? अरे, क्यों ऐसा किया ? क्यों ? मुझे बताओ, क्यो ?"

यह अतुल सामर्थ्य श्रीनियमकी है, हां, प्रतिभाकी ही यही सामर्थ्य है. अपने निर्मल हृदयके वक्ष खोलकर जब उसकी पुकार बाहर आती है, तब उसके स्पर्शसे मनुष्यकी आत्मापर आर्द्रता छा जाती है, वह अपने आमन्त्रण द्वारा जैसे सबको अपने भीतर के स्नेहमें खीच लेना चाहती है. उसके पास निम्न तर्क नही, अहंवादी बुद्धि नही, वह प्रतिभा है.

आत्मसम्मानसे भरी जेनी, रोविन्सकायाके दामनमें अपना चेहरा छिपाकर हुडक-हुडककर रो रही थी. छोटी मनका आर्द्र, विनीत, चेहरे को रूमालसे ढके कुर्सी पर बैठी थी. तिमिरा एक कोहनी घुटनोपर टिकाए झुके चेहरेको हथेलीमे लेकर बधी निगाहसे नीचे देख रही थी. दर्बान साइमन भी, जो सिर्फ इस ताकमे वहा खडा था कि कब उसकी जरूरत हो आये, उसकी भी आखे न जाने क्यो खुली ही रह गई थी.

रोविन्सकाया जनी के कानों में धीमे से कह रही थी, 'निराश मत होओ बहन. कभी नही कभी होनहार ऐसे हो जाता है कि आदमी का बस नही चलता और आदमीके लिए सिवा सिर झुका लेने के और चारा नही रहता. लेकिन देखो आज, आज हूं और कल होते-होते जीवनिया बदल गई हूं मेरी प्यारी, मेरी बहन, आज दुनिया में मेरा नाम ही नाम है लेकिन तुम अगर जानो कि कैसी गन्द, कैसे मैल, कैसे ग्लानिके सागरो मे से मुझे पार होना पडा है, ओह !···सो, मेरी बहन. ढाढस बाधो, खडी हो जाओ. अपने नक्षत्र में विश्वास रक्खो." वह जेनी की ओर झुकी, उसके माथे का चुम्बन लिया,

इस क्षणके बाद इस दृश्य को चैपलिस्की, जो अनिमेष बद्धदृष्टि और रुद्ध यातना के साथ सब देखता रहा था, कभी नही भूल सका नहीं, नही भूल सका उन आर्द्र, सुन्दर ज्योतिष्क किरणो को जो उस प्रतिभा शालिनीकी बड़ी हरी सी इजिप्शियन आखों से इस समय विकीर्ण हुई थी

दल कुछ अशान्त भारी भावसे विदा हुआ. लेकिन रेजेनाव अनजान भाव से कुछ क्षण पीछे रह गया.

वह जेनी के पास गया. आदर पूर्वक उसके हाथों को उठा कर चूमा, कहा "संभव हो तो हमारी यह मूर्खता भूल जाओ .. यह अब दुहराई नहीं जायगी. लेकिन, बहन, जब तुम्हें जरूरत हो, मुझे याद करना, मुझे सदा उद्यत पाओगी. यह मेरा कार्ड है. इसे सिर्फ रख मत लो. पर मान लो इस सन्ध्या से मैं तुम्हारा मित्र हूं. सेवा के लिए तुम्हारा हूँ". फिर जेनी का हाथ चूम कर सब के पीछे जीना उतर कर वह चला गया.

१८

बृहस्पतिवार. सबेरेसे धीमी वर्षा हो रही थी. बृक्षोंमें हरी कोंपलें निकल आई थी. झडी सवेरेसे अजस्र पड ही रही थी. तभी सहसा, कुछ अलस, तन्द्रिल, भाव-सा व्याप्त हो गया, मानो निस्पन्दता छा गई, सब सुन्न अचेत, आर्द्र, हो उठा.

ऐसे समय सदाकी भांति, सब जेनीके कमरेमें आ इकट्ठी हुई. पर जेनीके भीतर जाने क्या हो रहा था. वह इस टोलीकी हँसी, मजाकमें सदा अग्रणी रहती थी. पर आज न वह हँस रही थी, न छेड छाड़में भाग लेती थी न ही हमेशाकी तरह अपना वह पीली जिल्दका उपन्यास पढ रही थी. वह पुस्तक अब ठाली भावमें चित्त पडी हुई जेनीके पेट या छातीपर पडी थी. पर इस अलस विक्षिप्त भावमें भी एक तेजोमय दीप्तिकी छाया थी. उसकी आंखोंमें घृणाभरी एक पीली आग-सी जल रही थी. छोटी मनकाने जो जेनीपर लट्टू थी जेनीका ध्यान अपनी ओर खींचना चाहा. पर जैसे जेनीको उसकी उपस्थितिका बोध तक न होता था. सो, बातचीत उखड़ी-उखड़ी, ऊपरी रही. सब कुछ अनमना सा था, और सबके मनपर त्रास छा रहा था. हो सकता है, लगातार सात दिनसे अविराम बरसती रहनेवाली इस सावन-भादोकी फुहियोंका भी यह प्रभाव हो. तिमिरा जेनीके पलंगपर गई. कोमल प्रेमसे उसे आलिंगन

किया और उसके कानके पास मुह ले जाकर धीमेसे बोली, "जेनी, क्या बात है ? इधर दिनोमे देखती हू तुम्हारे भीतर कुछ हो गया है. तुम्हारी मनका भी हैरान है देखो न, तुम्हारे प्यार बिना बिचारी कैसी हो रही है. सूखकर पीली हो गई है. मझे बताओ जेनी शायद किसी तरह मै तुम्हारे काम आ सकू "

जेनीने आखें बन्द की और इकाग्म अपना सिर हिलाया तिमिरा जरा और ऊपर सरक गई, और थपकी देकर उसका कन्धा सहलाने लगी.

"अच्छी बात है जनिष्का, तुम जानो तुम्हारे मर्मको मै नही छेडगी. तुम्हारी आत्मामे घुमनेवाला मै कौन हू मैने इसीसे पूछा कि तुम्ही एक हो जो '

जनी निश्चयपर्वक अचानक बिस्तरममे उठ बैठी. साधिकार भावसे तिमिराका हाथ पकडा और कहा "आओ यहासे एक मिनट के लिए जरा बाहर चल मै तुम्हे सब कहूगी लडकिया, ठहरो, हम दोनो अभी आती है "

पिछले बरामदेम पहुचकर जनी अपनी सखीके कन्धेपर हाथ रखकर बोली. उसका चेहरा फक हो गया था, और उसपर जाने क्या वेदना अकित हो गई थी "तिमिरा, सुना किसीने मुझे सिफलिस दे दी है"

'आह '.. मेरी जनी क्या इसे सहन हो गई ?"

'हा कुछ समय हो गया. तुम्हे याद है जब वे लडके यहा आए थे. वही जो पवनजयम उलझ पड थ तब मुझे पहली बार पता लगा था अगले रोज ही दिनम मुझे यह मालूम हो गया "

'जानती हो," तिमिराने कहा, 'मुझे भी इसका गुमान था. खासकर जब तुम उस गायिकाके कदमोमे घटनाके बल बैठ गई थी और उसके कानमे कुछ कहा था, तब गुमान मेरा पक्का बन गया था लेकिन मेरी प्यारी, मेरी बहिन जनिष्का, तुम्हे अपना ध्यान रखना चाहिए."

जेनीने गुस्सेमे फर्शको ठोकर दी और जो रेशमी रुमाल अपनी कापती ऊंगलियोमे वह थामे थी उसे फाडकर दो कर दिया.

"नही बिल्कुल नही. कभी नही. हा, मै अपनेमेसे किसीको यह छूत

न लगने दूंगी. तुमने खुद देखा होगा. पिछले कई हफ्तोंसे मैं सबके साथ एक मेज़पर खाना तक नहीं खाती हूं और अपनी थाली अलग ही धो-पोंछ लेती हूं. तुम तो जानती हो, मनका मुझे कैसी प्यारी है. पर इसीसे मैं उसे अपनेसे तोड़कर दूर रखती हूं. मगर मैं इन दो टांगके जानवर मरदुओंसे, इन कम्बख्तोंसे जान-मानकर मिलती हूं. आई शाम मैं दस पन्द्रहको तो अपना यह ज़हर दे ही देती हूं. गलने दो, सड़ने दो उन्हें. उनसे उनकी बीवियों, उनकी प्रेमिकाओं, उनकी माओं बहनों बेटियोंके भीतर पहुंचे यह विष. हां--हां, माताएं और बहनें और उनके बाप और उनकी पढ़ानेवालियां, और उनकी बहुएं और उनकी दादियां और बेटियां सब. ये भलीमानस कहलानेवाली जातिकी जाति मेरी तरफसे कलकी मिटती आज मिट जाय और गल जाए."

तिमिरा और आग्रह और प्रेमपूर्वक सदय भावसे जेनीका सिर सहलाने लगी और बोली, "जेनिश्का, क्या सच, तुम अपने ऊपर दया नहीं करोगी ? तुम हदतक जाकर ही मानोगी ?"

"हां. मैं हृदयको मसलकर और ममता को कुचलकर रहूंगी. पर तुम सबको मुझसे डरनेकी जरूरत नहीं है. मैं अपने आदमीको आप छांट लेती हूं. सबसे सुन्दर, सबसे धनिक, सबसे गर्वीला और जो अपने को बड़ा मानता हो, वही मेरा है. वही मेरा शिकार है. लेकिन तुम निश्चिन्त रहो, ऐसा कभी न होगा कि मेरे बाद वह तुममेंसे किसीके पास जाय. ओह, मैं ऐसी कामातुर, मतवाली, बनकर उनसे मिलती हूं कि तुम देखो तो हंस पड़ो. मैं उन्हें काटती हूं, खरोंचती हूं, चिल्लाती हूं, सिसकी भरती हूं, रह-रहकर कांपती हूं, जैसे मदमत्ता ही होऊं. और वे गधे, सच समझते हैं,"

"तुम जानो, तुम जानो जेनिश्का", "विचारमग्न हो नीची निगाह रखकर तिमिराने कहा, "शायद तुम ठीक हो, शायद वही ठीक हो. कौन जानता है ? पर बताओ, तुम डाक्टर के हाथों कैसे बचीं ?"

जेनी इसपर परे जाकर खिड़कीके शीशेपर मुंह झुका, एकदम सुबक-सुबककर रो उठी. वेदनाके, क्रोधके, असहायताके, प्रतिहिंसाके आंसू

ही थे वे. कापती हाफती बोली, "कैसे बची ?.. क्यो ..मे ऐकि परमात्माने इस मामलेमें मुझे सौभाग्यवती बनाया है. मे बीमार वहा हू जहा कोई डाक्टर नही पहुच सकता, नही देख सकता. तिसपर हमारा डाक्टर तो एक बुड्ढा और जाहिल है ही .."

और तभी मनकी प्रबल मावेग शक्तिके माथ उसने एकदम वैसे ही अपने आसू रोक लिए जैसे कि वह रो पडी थी. कहा, "आओ तिमिरा चले. यह तो है न कि तुम कुछ कहो सुनोगी नही ?"

"कभी नही."

और दोनो शान्त, मयन, बन्द जनीके कमरे में लौट आई

सादमन कमरेमे आया वह औरोंके साथ जो था जेनीके माथ वह न था मानो ? ~ विपरीत होकर भी जेनीके प्रति, वह हठात् आदरशील था. उसने कहा, "बीबी जनिश्का, वह सरदार साहब वेन्डाको याद फर्माते हे दस मिनटके लिए जानेकी उस इजाजन दोगी ? '

नीलोत्पल लोचना सुन्दरी वेन्डा अपने बडेमे लाल मुहको लेकर निवेदन भावस जेनीकी ओर देखने लगी अगर जनिमा कह देती नही, तो वह उस कमरेम ी रहती. पर जनीने कुछ नही कहा बल्कि जानकर उल्टी अपनी आखे बन्द कर ली वेन्डा आज्ञा ममझकर कमरेसे चली गई

यह सरदार महाशय महीनेम बधे दो वार ठीक पन्द्रहवे रोज यहाँ आते हैं ठीक उसी तरह गमे एक दूसरी लडकी जोहराके लिए एक और सभ्रान्त महाशय, हर बधी शामको आ धमका करते है. उनका नाम इस आवासमे डाइरेक्टर पडा हुआ है.

जनीने अचानक वह पुरानी फटी किताब पीछे फेक दी. उसकी मटियाली आखे खरी सुनहरी आगमे जल उठी बोली, "तुम इस जनरलको नफरत नही कर सकती करती हो तो गलत है. मैने इससे बदतर लोग देखे है. एक मुलाकात ,क बार आया आदमी क्या गधा ही उसे कहो. वह मेरे साथ सिवाय उस...उस यानी. ..इसे मेरी छातियो-

मे खूब आलपिनें चुभानेमे मजा आता था. और विलनौमे एक पोलिश ईसाई पादरी आया करता था वह मुझे निर्वस्त्र करता, फिर सिरमे पांवतक सफेद कपडा उढाता, लाचार करता कि मै पाउडर लगाऊ, और विस्तर पर लिटा देता. फिर मेरे पास तीन मोमबत्तिया जलाता और जब इस तरह मै पूरी तौर पर उसके निकट बिल्कुल मुर्दा लाश हो जाती तब वह मुझपर टूटता."

छोटी भूरी मनका अब चिल्लाकर बोली, "सच कह रही हो, जेनी. मेरे पास भी एक बुड्ढा आता था. वह मुझे लाचार करता था कि मै मानू कि मै क्वारी हू और इसलिए मुझे सभोगके समय खूब चीखना, चिल्लाना पडता था. जेनिश्का, तुम हम सबसे होश्यार हो, लेकिन मै शर्त बदती हू कि तुम भी नही बता सकती कि वह कौन था ?

"जेलका जमादार !"

"नही, नही, वह आगवाला अफसर"

अचानक तभी किटी खिलखिलाकर बोली. "और मेरे पास भी एक अध्यापक आता था, वह किसी तरहकी गणित वणित पढाता था. मुझे याद नही क्या पढाता था वह कहता था, मै मान रखू कि मै तो पुरुष हू और वह स्त्री. और मै उसे- कस···जोरसे, बलात्कारसे, समझी न ?·· और देखो बवकूफको. जरा सोचो तो · वह तमाम वक्त हिचकी भर-भर कर सिसकी ले-लेकर रोता जाता था कहता था 'मै सब तुम्हारी हू, मै तुम्हारी प्यारी नन्ही-सी रानी हू आ, मुझे ले लो, कलेजे से लगा लो, ततानिया कही का !"

चुस्त चपल वर्काने भी एकदम कहा, "हिजडा, सनकी !"

धीर गभीर तिमिरा ने उत्तर दिया, "क्या ? इसमे सनकी होनेकी क्या बात है ? बाकी और सब आदमियोकी तरह बस वह भी विषयलोलुप था. जैसे जीभके चटोरे होते है वैसे ही वह चसका था. घर पर उसे कुछ मसालेदार मिलता न होगा, सो यहा पैसा देकर जो जी चाहे, वही पानेके लिए यहा आ जाता और पा लेता था."

जेनी जो अबतक चुप थी एकाएक मानो एक झटकेके साथ, मानो

बात छीनकर, बिस्तरपर उठ बैठी "बोली, तुम सब मूरख हो नम उन्हे यह सब चुपचाप माफ क्यो कर देती हो ? पहले मै भी मूरख थी पर अब मै उनको उल्लू बनाये बिना नही छोडती अब मै उन्हे चार हाथ टागो पर चलाती हू, मजबूरन अपने पैरोके तलुवे चटवाती हू. यो ही एकको भी नही जाने देती और वे···वे यह सब खुशीसे करते है ··तुम सब जानती हो, लडकियो, पैसा मै नही चाहती। पैसा कम्बख्त लेकिन आदमीको, जैसे होता है, नोचकर तोड डालूं, और यह मै करती हू नीच, नकेलबन्धे वे जानवर अपनी बीवियोंकी, अपनी माओंकी, बहिनोंकी, अपनी दुलहिनोकी, प्रेमिकाओंकी, फोटो उपहारमे दे जाते है···हा तुमने देखा न होगा, मेरी छातीके पास जो पडी रहती है, वही फोटो है लेकिन मेरी प्यारी लडकियो, जरा सोचो. स्त्री एकबार प्रेम करती है, पर सदा के लिए. और आदमी का प्रेम एक बनैले कुत्तेके जैसा प्रेम है, फसली और निरा कामुक वह बफादार नही होता, इतनी ही कुछ बात नही पर उसके पास तो, क्या पुरानी क्या नई, किसी अपनी प्रेम पात्रीके प्रति साधारण कृतज्ञता तकका तनिक भाव कभी नही रहता. सुनती हू अब नई सन्ततिके युवक भी होने लगे है जो प्रेमकी निष्ठा जानते है मै स्वीकार करू कि मुझे कोई ऐसा युवक अबतक नही मिला, पर मेरे मन मे है कि यह ठीक है. मैने जो भुगते है सब लफंगे, लुच्चे, कायर, जानवर थे. बहुत रोज नही हुए कि अपनी ऐसी बेहूदी जिन्दगीके बारेमे मैने एक उपन्यास पढा था. उसमे भी वही लिखा था, जो मेरे अनुभव है"

वेन्डा लौटी. धीरे-धीरे आकर आहिस्ता से जनी की खाट के वहाँ छोर पर बैठ गई जहाँ लेप की छाया पड रही थी. वक्त होते है. जब व्यक्ति के चारो ओर ऐसी अभेद्य घनी मूर्त वेदना का वलय छा जाता है कि उसे भेद कर प्रश्न करने का साहस किसी को नही होता. आदमी को फाँसी की सजा सुनाई जाती है तब; लम्बी सजा का कैदी अपनी सख्त मशक्कत से हाँफ कर बैठता है, तब; अपनी मर्म की पीडा को वेश्या अपनी सूखी आखों के आगे लेकर बैठती है, तब उन को निगल कर बैठे हुए, उनके चारों ओर जमे व्यथा मण्डल को जिज्ञासा

द्वारा भी भेद कर प्रवेश करने की प्रवृति सहसा नहीं होती. वैसे ही अब वेन्डा से कुछ पूछने का किसी को साहस न हुआ. वेन्डा ने पच्चीस पर्ये निकाल कर मेज पर पटके और कहा, "लो, मुझे शराब लादो और एक तरबूज !" कह कर मेज पर बाहें फैलाई, और उनमे अपना सिर ले कर वह चुप-चाप सुबकने लगी. उसके बाद फिर किसी को हिम्मत न हुई कि कुछ पूछे. बस जेनी क्रोध से पीली पड़ गई. उसने अपने निचले ओंठ को ऐसे जोर से काटा कि वहाँ सफेद दाग रह गए. बोली, "हाँ, अब में, तिमिरा की बात सुनूंगी, मानूंगी. सुनो तिमिरा, मैं तुमसे क्षमा मांगती हूँ. मैं उस चोर 'सेंका' के प्रेम में तुम्हारे पागल होने पर अक्सर हँसा करती थी. लेकिन अब में कहती हूँ की इस धरती पर आदमियों में अगर भले हैं तो वे, जो चोर हैं हत्यारे हैं. अगर वह किसो से प्रेम करते हैं, तो खुल कर प्रेम करते हैं. वे उस पर लजाते नहीं, छिपाते नही. और होता है तो अपने प्रेम के लिए आपदाएँ भी उठाते हैं, पाप भी करते हैं, चोरी भी करते हैं. प्रेम के लिए उनके लिए सब सम्भव है, उसके आगे सब तुच्छ है. लेकिन····· बाकी सब कमीने झूठे, टुच्चे, कायर, बदकार जानवर होते हैं. अब इस जानवर के तिहरा परिवार है. एक बीवी और पाँच बच्चे. दूसरे;·· दो बच्चे उसके साथ जो विदेश में गवर्नेस कहाती है. और, तीसरा, पहली शादी से एक लड़की है. जो सब मे बड़ी है पर जिसकी गोद में बच्चा है। वह कन्या है फिर माँ है. कैसे माँ है ? इस बात को शहर के सब लोग जानते हैं, बस बच्चे नहीं जानते और शायद है कि उनको भी कुछ गुमान हो और इस बारे में वे आपस में गुप-चुप, कुछ चर्चा भी करते हों. अब यही आदमी, कल्पना तो कीजिये, दुनियां में प्रतिष्ठित है, भला है······मेरी लडकियों, मेरी बच्चियों, मालूम होता है कभी आपस में हमें अब की तरह अपने मन की बाते कहने का मौका नही हुआ. फिर भी मैं तुमसे कहती हूं कि मैं दस वर्ष छः महीने की थी, कि मेरी अपनी पेट की माँ ने एक डाक्टर तार्विकिन के हाथ मुझे बेच दिया. मैंने उसके हाथ चूमे, रोई, मिन्नतें कीं कि मुझे रहने दो.

चिल्लाई कि मैं अभी बहुत छोटी हूँ, मैं कुछ नहीं जानती. लेकिन वह जवाब देता 'सो कुछ नहीं, सो कुछ नहीं. तुम बड़ी हो जाओगी'...... सो, क्या बताऊँ, कैसा मुझे दर्द हुआ, मिचलाहट हुई, मेरी तबियत जैसे फोड़े की तरह पक गई · · · और उसने पीछे से अपनी इस कारगुजारी का ढोल भी कम नहीं पीटा. मेरा आत्मा में से निराश यातना की चीख उठती. पर किसके लिये ?"

"बात शुरू हो गई है, तो हम सभी अपनी क्यों न कह डालें. कब के लिए बचाएँ" कुछ रुक कर संयत भाव से जोहरा ने कहा और अन अपेक्षित, उदास, उसने मानो मुस्कराने की चेष्टा की. "मैं, मैं स्कूल में थी. वहीं एक मास्टर ने मुझे बिगाड़ दिया. उसका नाम ईवान पेट्रोविश था उसने मुझे एक रोज अपने घर बुलाया. क्रिसमसके दिन थे. उसकी बीबी बाजार करने गई हुई थी. पहले तो मेरी खिला-पिला कर खातिर की फिर अपनी मशा जाहिरकी. बोला कि दो बातें हैं, या तो मैं ज्योंकी त्यों उसकी सब बातें मान लूँ. नही तो बिगड़े चाल चलनेके लिए स्कूलसे मुझे निकाल दिया जायगा. तब हम अपने मास्टरों-से कितनी डरती थी कि कहनेकी बात नही. अब वे यहाँ हमारे लिये डरावने नही रह गए हैं, यहाँ हम उनका जी जाहा जैसा उल्लू बना लेती हैं. पर तब हमारे लिये वही जार थे, वही परमात्मा थे."

"और मुझे कालिजके एक लड़केने पहले पहल बिगाड़ा. वह हमारे मालिकके लड़कों को पढ़ाने आता था और मैं वहां काम करती थी..."

बीचमें नूरी चिल्लाई, "और मैं..." लेकिन उसका मुंह एकदम खुलाका खुला ही रहा और भौचक्की-सी वह गुम हो रही. उसकी निगाह की सीधमें देखा तो जेनी भी हाथ मल उठी. देहलीजमें लुबी खड़ी थी. दुबली, आखोंके चारों तरफ काले छल्लेसे छाए थे. वह ऐसी खड़ी थी मानो आंखें खुली तो हैं, पर वह अब भी खड़ी-ही-खड़ी नींदमें खोई है. वह सहारेको पकड़नेके लिए मानो रास्ता खोज रही थी.

जेनीने जोरसे चिल्लाकर कहा, "लुबी, ओ पगली, क्या बात है ? तुझे क्या हो गया है ?"

"क्या बात है ! कुछ भी बात नही है. उसने मुझे लिया और अब निकालकर बाहर कर दिया है."

किसीके मुंहसे शब्द न निकला. जेनीने हथेलियोंसे अपनी आखे ढंक लीं. उसका सास जोरसे आने जाने लगा. दीख पड़ता था कि उसके जबड़ेकी नसें खिचकर तन गई हैं ..

विनीत शिथिल असहाय भावसे लुबीने कहा, "जेनिश्का, मेरा सारा भरोसा बस तुममे है सब तुम्हारा लिहाज करते है, तुम्हारी बात मानते हैं. तुम कहना, वह मुझे वापस ले ले."

जेनी बिस्तर पर सतर हो बैठी. अपनी सूखी प्रखर, जलती फिर भी मानो रोती हुई आखे लुबीपर गाड़कर टूटे स्वरमे उसने पूछा .

"तुमने सुबहसे आज कुछ खाया है, लुबी ?"

"नही, न कल, न आज. कुछ भी नही."

वेण्डाने चुपकेसे पूछा, "सुनो जेनेश्का, अगर हम उसे ताकतके लिए कुछ शराब दे तो ? और वर्का इधर भागकर रसोईसे कुछ खानेको ले आए ? क्यो ?"

"हां हां, जो ठीक करो, ठीक तो है, जरूर जाओ. और देखो, लड़कियो, देखो वह बिल्कुल भीगी हुई है कैसी पगली हो, देखती खड़ी हो ! पगलियो, झट उसके कपड़े उतारकर अलग फेंको और ओ री मनका, या तुम तिमिरा उसके लिए इतने नए कपड़े लाकर रक्खो."

'अच्छा, अब लुबीकी ओर मुखातिब होकर उसने कहा, "अब तू बता री पगली, तेरे साथ क्या हुआ, क्या बीता ?"

६

उस रोज जब सबेरे-ही-सबेरे लखनपाल उस अप्रत्याशित रूपमे, शायद स्वयं बिना भलीभाति जाने, अन्ना मरकानीके उस काम-कलुषित स्थानसे लुबीको ले चला था, गर्मीका सुहावना दिन था. वृक्षोपर पत्ते

लहलहा रहे थे और वायुके सतरणमे, पत्रोके कम्पनमे, घासकी कोंपलोमे व्याप्त सुरभि मे, आसपास हर जगह मानो कहीसे उतरकर एक अलस तद्रिल-भाव फैल गया था. धरतीके गर्भसे एक उष्मा निकलकर मानो वर्षाकी नीरव प्रतीक्षामे बाहे फैलाकर आकाशकी ओर उठ रही थी. उसने अचरजसे वृक्षोको देखा. कैसे स्वच्छ, भोले, शान्त. जैसे परमात्माने एक ही रातमे, आदमियोके अनदेखे, यहा उन्हे उगाकर अडिग खड़ाकर दिया है और वे भी मानो स्वय चारो ओरके चुपचाप सोते जलके नीले तलको, और आसमानकी नीली गोदको, अचरजसे सभ्रममे देख रहे थ. उस सद्य स्नात बड आसमानी चन्दोवेको, जिसमे मानो अभी जागरण की लहरे अगडाई लेती उठ रही थीं, जो आधा जगा और आधा सोया मानो उनीदी, गुलाबी तृप्त, अलस मुस्कराहटके साथ दैदीप्य सूरजका अभिवादन कर रहा था

उस विद्यार्थीके हृदयम सहसा उस असीमके प्रति तन्मयता भर आई. उसका जी अपनेको लाघकर विशद व्यापक हो गया. वह आनन्दसे कांपा. कुछ तो उस सुदर्शन प्रकृतिकी छविके स्वर्गीय सौदर्यके स्पर्श मात्रसे, कुछ मात्र जीवनके उल्लासके कारण, कुछ इस कारण कि वहा उस धुएं-भरे, घुट, घने वातावरणमेसे निकलकर वह अब यहा प्यारी स्वच्छ हवामे अपनेको पा रहा था उसका मन ऐसी विमल अवस्थामे था, पर सबसे अधिक अपने कामकी गरिमा और उत्सर्ग-सौदर्यके बोधके कारण ही उसका अन्तर उस भाति स्फूर्ति और आल्हादसे भरा था.

हा, उसने यह पुरुषोचित्त कर्म किया है सच्चे, उत्कृष्ट पुरुषकी नाई अपने कर्तव्यका पालन उसने किया है. हा, जो किया, अब भी उसके लिए उसे पछतावा नही है. वे (वे कहकर लखनपाल किसे सम्बोधित कर रहा है, यह वह खुद न जानता था) चाहे जिन शब्दोम उन स्त्रियोको याद करे; व्यभिचारिणी, रण्डी, या जो अकथनीय कहकर उन्हे कलकित करे; मेजपर चाय और हाथमे बिस्कुट लिए भली, शिष्ट, पवित्र कुलीन म्मन्य कन्याओंके सामने उन बिचारियोके नामपर जो गन्द उनसे फेंकते बने फेंके, उनके लिए सब ठीक है. लेकिन उनमेंसे किसी एकने भी उस

नरकसे किसी अभागिन नारीको निकालनेकी चेष्टा की है? और अब—हाँ, मैं जानता हूँ, अब ऐसे लोगोकी कमी नहीं जो इसी मोनिश्काके पास आएगे, तरह-तरहके आदर्शके उपदेश देगे; उसके भ्रष्ट जीवनकी लाछनाओंका वर्णन करेंगे; उसकी आत्मामे जैसे अपनी उगली कुचोएगे, यहा तक कि वह विचारी रो पडे, तब फिर खुद भी आँसू बहाने लगगे, उसे सान्त्वना देगे, पुचकारेंगे, सिरपर थपकेंगे, और उस सबके बाद करुणा करुणामे पहले गालोपर और, और फिर ओठोपर चुम्बन ले उठगे उसके बाद जो होगा सब जानते है छि . ! लेकिन लखनपाल ऐसा नहीं है. जो मुँहपर है वही उसके कर्मोमें होगा वह दोगला नहीं है

उसकी कमरमे बाह डालकर उसने लुबीको लिया मानो सदय, कहो सस्नेह, आखोसे उसे देखा. उस क्षण वह अपनेको बता रहा था कि वह उसे पिता या भाईकी आखोमें ही देख रहा है न.

नीद बुरी तरह लुबीकी आखोमे समाई थी. उसकी पलक बद हो-हो रहती थी, लेकिन वह यत्न पूर्वक आख फाड-फाडकर खोल लेती थी कि नीद न आए. उसके ओठो पर वही बाकी शिशुसम अबोध भोली थकीसी मुस्कराहट खेल रही थी. वही जो लखन पालने बडा चकलेके कमरेमे देखी थी, और उसके मुहके एक कोनेसे लारकी एक गाढी धारा बहनेको होरही थी.

'लुबी, ओ मेरी प्यारी भोली, लुबी तुमने बहुत दुख झेला है देखो, चारो ओर कैसा सुन्दर है. ओ राम, मैने पाच बरसमे अब सूर्योदय देखा है. ताश पीटने, खाने, पीने और फिर झपटकर यूनीवर्सिटी चल देनेमे मुझे फुर्सत न मिलती थी देखो मेरी प्यारी, उधर देखो प्रभात खिल-रहा है. सूरज अब उदय हुआ. यह तुम्हारा प्रभात है, लुबी यह तुम्हारे नए जीवनका प्रभात है, नए जन्मका आरभ, नवीन उदय. तुम निर्भय होकर मेरी बाहुओका अवलम्ब लो. आओ, मै तुम्हे यहासे निकालकर उस सच्चे जीवन पथपर लेचलू, जहा जीवनके साथ साहस पूर्ण युद्ध करना तुम सीखोगी. वह युद्ध जो सत्योन्मुख जीवनकी टेक है. जहा खरा परि-श्रम तुम्हारी साधना होगी. चलो, जीवनके उस अभ्युदय पथपर मै तुम्हे

ने चलूं "

लुबी ने आंखो के किनारो से उसे देखा, सोचा उसके सिर मे अभी उफान भरा है पर, खैर, कुछ नही आदमी नेक है और ईमानदार है. हां, जरा बाते बडी करता है तो क्या—और अर्द्ध सुप्त मुस्कराहटसे मुस्कातीसी और कुछ खीज म खिजी सी वह बोली थी, "हा, तुम मुझे बनाना चाहते हो अच्छी बात है, कोई डर नही. मै जानती हूं तुम सबके सब एक से होते हो पहले तो तुम लोग अपनी खुशीकी खातिर काम बने तब-तक खुशामद करते हो, फिर—फिर चाहे कुछ होता फिरे तुम्हे क्या परवा !"

"मै ? ओह मै, और ऐसा करूं !" लखनपालने जोर से छाती पर मुक्का मारकर कहा 'तुमने मुझे जाना नही मै इतना धूर्त नही कि तुमसी अरक्षिता को लेकर धोखा दूं. नही, मै अपनी तमाम शक्ति, तमाम आत्मा, तुम्हे शिक्षा देने, तुम्हारे मस्तिष्क को विकसित करने, दृष्टिकोण को विस्तृत करने और तुम्हारे टूटे त्रस्त दिल पर से उन सब घावो को धो डालने मे खर्च कर दूंगा जिन्हे उस अनिष्ट जीवनने तुम्हारे अन्तर को दारुण आघात देकर पहुंचाएं है मै तुम्हारे लिए पिता भी रहूंगा और भाई भी. पग-पग पर मै तुम्हारी रक्षा करूंगा और अगर तुम किसीको कभी उस सच्चे पवित्र भावसे प्रेम करोगी तब मै उस दिन को याद कर धन्य होऊंगा कि जब यहा इसके गढेमे निकाल कर मै तुम्हे ले आया था"

इस जाज्वल्य वक्तृता पर बुड्ढा गाडीवाला चुपचाप साभिप्राय हँसी हँसा इसी मे उसकी कमर दुहरी हो गई इन गाडीवाले बुड्ढोके कानो-म दुनियाकी बहुतेरी बात रहती है अपनी जगह बैठे-बैठे ये चुपचाप सब पीते रहते है जो भीतर होता रहता है सब इनके कानोमे पडता है भीतर वालोको इसका गुमान भी नही होता शहरमे भीतर-भीतर जो कुछ होता है पोने सोलह आना ये जानते है. और क्या मालुम इस बुड्ढे के कानोमे कब कब इससे भी नशीली और इससे भी आवेग भरी वक्तृताएं पड़ी होगी.

लुबीको लगा कि किसी वजहसे लखनपाल उससे नाराज हो गया है, या अभीसे ही किसी कल्पित प्रेमीकी ओरसे जैसे उसमें ईर्ष्या पैदा होने लगी है. वह खासे कोलाहल और पर्याप्त उत्तेजनाके साथ अपनेको खर्च कर रहा है. वह बिल्कुल जाग गई, जिज्ञासासे खुला मुंह और अनसमझ किन्तु नीकी और विनीत आखें लेकर लखनपाल की ओर मुड़ी, अपनी कमर पर लिपटे उसके हाथको अपनी उंगलियों से हलके-हलके छुआ, बोली, "गुस्सा मत होओ, मेरे वीर. मैं तुम्हें छोड़ कर नहीं जाउंगी. मैं कभी किसी और को नहीं चाहूँगी. मैं वचन देती हूं. परमात्मा मेरा गवाह है. देख लेना, मेरा वचन है, मैं निभाऊंगी. मत समझो, मैं यह समझती हूँ कि तुम मेरी रक्षा करना चाहते हो. क्या तुम समझते हो कि मैं नहीं समझती. देखो, तुम कैसे अच्छे बढ़िया खूबसूरत जवान हो. हाँ हाँ, तुम बुड्ढे होते या ....".

"ओह, तुम बिल्कुल ठीक नहीं समझती" लखनपालने जोर से कहा और फिर उसी उत्तेजित स्वर मे स्त्रियोंके समानाधिकार, श्रम की पवित्रता, मानवीय न्यायकी अपूर्णता, स्वतंत्रता, प्रचलित कुरीतियों, मूढताओं और मान्यताओंके साथ युद्धकी अनि-वार्यता.. आदि आदिके सम्बन्ध में वक्तृता देने लगा.

उसके तमाम शब्दोंमें से लुबीने ठीक-ठीक एक भी न समझा. सुनकर उसे यही अनुभव हुआ कि वह अपराधिनी है, कहीं, न कहीं वह दोषी है. इस अनुभूतिसे अपनेमें ही वह ग्लानिमे सकुचती गई, खिन्न हो रही, सिर झुका लिया और चुप हो बैठी. जरा और, और वह शायद गलीके बीचमें ही रो पड़ती. लेकिन सौभाग्यसे गाडी अब तक लखनपालके डेरे तक आ गई थी. वहां उस कालेजके विद्यार्थीने गाड़ी वाले से कहा, "अच्छा, यहां घर आ गया है, बस ठहराओ".

और जब वह गाड़ी वालेको पैसे दे चुका तब, कुछ-कुछ अभिनयके से भाव में, अपने दोनों हाथोंको सामने फेंककर भाव और आवेग भरे स्वर में गा कर उसने कहा :

आओ इस मेरे घर मे निस्सकोच निश्शक [ओ मेरी प्यारी]

आओ, इसकी रानी बन कर प्रवेश करो

और तब उस गाडी वालेके पके और लकीरो भरे चेहरे पर एक विषम, निरर्थक किन्तु सार्थक, एक गहरी मुस्कराहट फैल गई

१०

जिन कमरेमे लखन पाल रहता था वह साढे पाँचवी मजिलपर था साढे इसलिए कि पाच या छ या सात मजिलवाले मकानोके ऊपर फिर टीनकी चद्दरे डालकर कुछ और भी बरसातियासी छा दी जाती थी वो ज्यादातर कवाड कूडके काममे आती थी कभी वहा कोई रह भी लेता था सर्दियोम वहा बेहद सर्दी रहती थी और गर्मियामे बेहद गर्मी लुवी ज्यो त्यों ऊपर चढी उसे लगता था कि अब, नहीं तो अब, वह गिरी, गिरी ! दो सीढी और, और वह ऐसी नीदम गिर पडेगी कि पातालके तलमे ही गिर गई हो फिर क्या वह उठेगी ? लेकिन लखनपाल बराबर कहता जाता था, "मेरी प्यारी, मै देखता हू तुम थकी हो पर कुछ बात नही, प्यारी, यह लो मेरा सहारा लेलो. हम बराबर ऊपर जारहे है ऊपर ऊपर, उससे भी ऊपर देखो, मनुष्यकी उच्चाकाक्षाओ का ही क्या यह प्रतीक नही है ? मेरी बहन, मेरी सखा, मेरी बाहोका सहारा थामे रहो "

बेचारी लवीके लिए यह और भी मुश्किल हो गया. वैसेही उस अकेलीके लिए चढना भारी था अब, सहारा लेनेके बहाने यह तो लखन पालका बोझ भी उसपर पडने लगा और लखन पाल अब स्वय भारी हो रहा था. उसके वजनकी भी खैर ऐसी कोई बात न थी, पर उसकी लफ्फाजीसे धीरे-धीरे लुवीके जीमे खीज उठरही थी. कोई डाढके दर्दसे पासम बराबर कराह रहा हो, या बच्चा निरतर चिचिया रहाहो; या पासमे कोई बेसुरा गा ही रहाहो, रुकता न हो, या बाहर टप-टप देरसे

पानी ही टपक रहा हो, तब जैसे मनमें एक तरहकी असह्य ऊबका भाव हो आता है, वही अब लुवीमें हो आया था.

आखिरकार वे लखन पालके कमरे पर पहुंचे. दर्वाजेमें कोई ताला न था. और न वैसे कभी वह दरवाजा कुंजी तालेसे बन्द ही किया गया था. लखन पालने धक्का देकर दरवाजा खोला. वे अंदर घुसे. कमरा अन्धेरा था, क्योंकि खिड़कियोंके पर्दे गिरे थे. कमरेमें चूहोंकी तेलकी कलकी बची दालकी भाजीकी झूठनकी, पुराने लत्तोंकी बासी तम्बाकूकी बास आरही थी. इस मटमैले अंधियारेमें कोई सो रहा था जो दिखाई नहीं देता था. वह बंधे बिरामसे ठहरा-ठहरकर जोरसे खर्राटे ले रहा था.

लखन पालने पर्दे उठाए. एक मामूली निर्धन विद्यार्थीके कमरेकी तरह वह कमरा था. एक खटियापर कुछ विछावन और एक कम्बल ढेर हो रहा था. एक लम्बी मेज थी जिस पर बिना वत्तीके बत्तीदान रक्खा था. किताबें कुछ मेजपर, कुछ फर्शपर बिखरी थीं. जहां तहां सिगरेटके छोर बिछे थे और खटियाके साम्ने दीवारसे लगा एक पुराना तख्त पड़ा था. उसीपर सोता और खुर्राटे भरता मुंह फाड़े चित्त एक युवक लेटा था. काली मूंछें थी और काले लम्बे घने, घुंघराले सिरके बाल. कमीजके कालरके बटन खुले थे जिसमेंसे उसकी छातीके उलझे बाल दीख रहे थे जो कम घने और कम मोटे न थे.

"नेजरस, ओ नेजरसके बच्चे, उठ" लखन पालने जोरसे कहा और सोते व्यक्तिके कूलेमें कोंचा, "ओ प्रिन्सके बच्चे !"

"झ-प-प—"

"अरे उठ, भले आदमी. गाबदू, गधे, उठता है कि नहीं ? ओ भोन्दू, किन रोश्का."

लेकिन नितान्त अप्रत्याशित रुपसे यहां लुवीने लखन पालके बीचमें पड़कर और उसकी बांह पकड़कर डरते-डरते कहा "प्यारे, उसे सताते क्यों हो ? शायद उसे नींद लगी हो, वह थका हो. उसे जरा सो लेने दो. और मैं अपने वापस घर चली जाती हूं. मुझे बस गाड़ीके लिए कुछ दे दो और कल तुम फिर मेरे पास आजाना. है न, क्यों प्यारे ?"

लखनपाल हक्का-बक्का हृतबुद्धि-सा हो गया. इस चुप निंदासी-सी लड़कीका यह बीचमें पड़ना उसे ऐसा अनहोना, असंगत, अनधिकृत-सा जान पड़ा. सोते आदमीको जगानेमे जो एक प्रकारकी हृदयकी परुषता चाहिए, इस स्त्रीका हृदय उससे ही बचना चाहता है, लखनपाल सचमुच यह नही समझ सका. इस स्त्रीका हृदय इस अपरिचितकी नीदके प्रति सदय था, या यहभी हो कि दूसरेकी नींदके प्रति यह आदर उसके लिए व्यवसाय प्राप्त हो. पर लखनपालको लुबीकी इस आपत्ति पर अतर्क्य अचरज ही हुआ. जाने क्यों उसे यह बुरा लगा. उसे गुस्सा हो आया. सोते आदमी-का एक हाथ धरतीकी ओर लटका था. एक बुझी सिगरेटका सिरा उंग-लियोमे थमा था. इसने उस हाथको झकझोर कर जोरसे झिडक कर कहा, "सुनो नेजरस, मैं तुमसे सख्तीसे कहता हूं. सुनो, मै अकेला नही हूं, मेरे साथ एक औरत है सुना, सूअर ?"

जैसे कोई जादू हो गया! जैसे उसी क्षण उसकी पीठ के नीचेसे खाट में से कोई स्प्रिंग जोरसे खुल पडा हो. वह लेटा हुआ आदमी सहसा उछल पडा. उठकर तख्त पर बैठ गया, जल्दी जल्दी हथेलियो से अपनी आखें मली, माथा मला, मुंह मला, सामने स्त्री देखी और मूढ कर्तव्य हो रहा, और अपनी कमीज के बटन बन्द करते हुए जल्दी जल्दी बोला, "क्या तुम हो ? लखनपाल ! और यहां मैं तुम्हारा इन्तजार किये बैठा रहा. उसीमे मुझे नीद आ गई. जरा, इन मेरी अपरिचित महाशयासे कहो, एक मिनिटके लिए मुंह फेर ले."

उसने जल्दीसे रोज पहननेका कोट बाहोमे चढाया. दोनो हाथ फेर कर अपने लम्बे-लम्बे बाल ठीक किये लुबी स्त्री सुलभ प्रशंसापेक्षाके साथ [स्त्रिया चाहे जितनी अवस्थाकी हो जाएं और जिस परिस्थितिमें हों यह बोध कि वह सुन्दर लग रही है न, उनसे कब छूटता है ?] एक ओर बढकर दीवार मे लटके एक आइनेमें देखकर अपना केशविन्यास ठीक करने लग गई

नेजरसने आखके जरा इशारेसे लखनपालको यह दिखाया और निगाह-निगाह मे मानो कुछ प्रश्न पूछना चाहा.

"परवा न करो, कोई मुजायका नहीं" लखनपालने जोरसे कहा "लेकिन अब चलो, जरा बाहर चलो. मैं अभी तुम्हें सब कुछ बता देता हूं... लवी, माफ करना, बस एक मिनटके लिए माफी दो. अभी लौटकर आता हूं, तुम्हारा सब ठीक-ठाक कर दूंगा. और फिर तुम रहोगी और यह कमरा, और मैं गायब."

लुवीने कहा, "क्यों क्यों, तकलीफ न करो. मैं बिल्कुल ठीक हूं. यह तख्त मेरे लिए बहुत है, तुम पलंग पर अपनी जगह जमाओ."

"नहीं नहीं, मेरी बीबो यह बहुत अच्छा न लगेगा. मेरा यहां एक साथी है. मैं सोने वहीं चला जाऊंगा. खैर, मिनट भरमें मैं लौटता हूं."

दोनों विद्यार्थी बरामदे में बाहर निकल आए. आंखें फाड़कर नेजरसने पूछा, "यह क्या सपना है ? इस सबका क्या मतलब है ? पेटीकोटमें यह परी कहांसे उतर आई ?"

लखनपालने अर्थपूर्णत भावसे अपना सिर हिलाया. मुंह उसका जरा रूखा हो आया था. रातके सन्नाटेको तोड़कर हल्की धूप और नित्यनैमित्तिक कर्मोंसे भरा यह दिन खुलकर चढ़ रहा था, वैसे ही वैसे लखनपालका उत्साहभी मंद होता जाता था. उसे लग रहा था कि जो किया क्या वह बिल्कुल ठीक ही था, अनिवार्य ही था ? जैसे उसमें अपने मत्सासाहस और उत्सर्ग कर्मकी निरर्थकताका बोध उठने लगा था. उसने व्यर्थ अपनेको लोगोंकी निठल्ली और उत्सुक निगाहोंका पदार्थ बना डाला है. उसीके साथ अपने और उस स्त्रीके जिसको वही इस भांति यहां ले आया था, दोनोंके प्रति उसमें कुछ अनजानी-सी खिजलाहटका, बेचैनीका भाव भी उसमें उठ रहा था. उसे अभीसे लग रहा था कि दोनोंका साथ-साथ रहना क्या बेडौल-सी बात होगी. चिन्ताएं बढ़ेंगी, खर्च बढ़ेगा, और बदमजगियां भी बढ़ेंगी. लोग भेदकी हंसीसे हंसेंगे और जाने क्या-क्या सवाल करेंगे. वह खयाल कर रहा था कि किस भांति उसके इम्तहानमें इससे बाधा उपस्थित होगी. लेकिन नेजरससे जब एक बार एक बात हो ही ली तब फिर वह उस पर कमजोर बन रहा है, इस पर उसे खेद भी हुआ. और बातोंका सिलसिला जब बढ़ा तब अन्तमें वह अपने कृत्यके सत्साहसकी

डीगे ही मारता पाया गया

"देखते हो न प्रिन्स ?" उसने कहा हठात उसके हाथ साथीके कोटके बटनको मरोड रहे थे और साथीकी आखोकी ओर उसकी आखे नही उठती थी, नीचे फर्श पर गडी थी. कहा "तुमने गलती की यह हमारी माथिन नही है लेकिन......यही कि मै अभी कुछ दोस्तोंक साथ जरा... यानी, यही एक मिनटके लिये . यामकास अन्गा मर-कानी के यहाँ चला गया था"

"साथ और कौन-कौन थ ? ' नेजरम ने दिलचस्पीके साथ पूछा

"अब साथ कोई भी सही. सब एक बात है जह तनवर था; रामसरन, एक नए प्रोफेसर हे यारडकर, वह, सुवेश वर्णवाल, और, और औरोंके नाम याद नही हम शाम तक किश्तियोंकी सैर करते रहे, फिर तमस्सेमे चले गए जरा शराब उडी तब उसके बाद जानवरोंकी तरह यामाकी तरफ चल पड तुम जानते हो, मै पर-हेजगार आदमी हूं सो मै वहा स्पजकी तरह बैठा बैठा बस प्याले पर प्याले सोखता रहा साथ जान पहचान का एक पत्रकार भी वहाँ था. सो सबेरा होते-होते न जाने कैसे मेरी बुद्धि जैसे छिन्न-भिन्न हो गई सुन्न हो गई, मै उन अभागी नारियोको देखते-देखते दुख, अनुताप और करुणा म एसा भर गया मैने सोचा, हमारी बहने हमारे कैसे आदर और प्रेम और रक्षा की पात्र है, और हमारी माताए किस प्रकार हमसे सादर भक्ति पाती है कोई जरा उन्हे कुछ कहे, जरा छेडे, जरा आँख दिखाए, हम उसे कच्चा खानेका तेयार हो जाते है. क्या, यह सच नही है ?"

"हां-आँ" दूसरे ने कुछ कहने के लिए कहा. जैसे उसकी आख आधी प्रश्न करती और आधी स्वय उत्तर द रही थी . उनमे सन्देह भरा था .

"तब मैने सोचा, क्यो ? यह क्या अनर्थ है ! कोई शोहदा, लफगा, कब्र मे पैर लटकाए कोई बुड्ढा तबियत के मुताबिक, टन्न से पैसा पटक कर, चाहे तो रात भर के लिये चाहे मिनट भर के लिये, सर्वथा

निश्शंक और निर्भय भावसे इनमें से एक को या सब को ले डाल सकता है......फिर दूसरी बार, तीसरी, चौथी, लाखवीं बार उस स्त्री की कायाको लेकर उस वस्तु से खिलवाड़ कर सकता है जो मनुष्यके भीतर दैवी है, अमूल्य है. सुनते हो ? उसी को वह भ्रष्ट करता है, तिल-तिल नष्ट करता है, पैरोंसे कुचलता है. और मुलाकात की रकम चुका कर पतलूनकी जेबोंमें हाथ डाल तृप्त, छका शान्त, मुंहसे सीटी बजाता मजेमें चला आता है. सबसे भयावह बात तो यह है कि यह उनके साथ निरी टेव हो गई है, मात्र कृत्य. स्त्रीके लिये भी केवल व्यापार, पुरुषके लिए भी वही मात्र व्यवसाय. भावना दोनों ओर बुझ गई हैं, आत्मा मर गई है ! ऐसा ही है, क्यों है न ? फिरभी उनमेंसे प्रत्येकके भीतर आदरणीया बहन है, पूजनीया मां, है उनमेंकी उसी बहन और माँ को हम नष्ट कर देते है. ऐंह, क्या यह सच नही ?"

"हाँ-आँ..." नेजेरमके ओठों ने कुछ कहा.

"सो मैंने सोचा, शब्दोंसे क्या फायदा है ? चीख चिल्लाहटसे क्या बनना है? क्या होना है लेकचरोंमे जो लच्छेदार, सुन्दर, रंगीन, जगह बे जगह झाड़े जाते हैं ? और भाड़में जाए प्रस्ताव और रेग्युलेशन और नियम (यहां अनायास उसे पत्रकारवाला शब्द याद आगया) और मेग्ड-लीन आश्रम, और यह धार्मिक पुस्तकोंका निशुल्क वितरण. छिः, इन सबसे क्या बनता है ? नहीं, मैं खड़ा होऊंगा. वीर, सत्यव्रती पुरुषकी भांति हाथमें साहस लूंगा. उस कीचडमेंसे एक नारी जीवको तो खींचकर निकाल ही लूंगा. निकालकर फिर सत्यकी स्वच्छ और पक्की धरतीपर उसे जगाउंगा. उसे शान्ति दूंगा, प्रोत्साहन दूंगा. मुझसे आदरका व्यवहार उसे प्राप्त होगा और तब वह अपने पैरोंपर खड़ी अपना निजकी जीवन जिएंगी."

नेजरस इतना ही कह सका,"हूं...ऊ .." लखन पालने कहा,"ओ प्रिन्स तुम्हारे सिरमे जाने क्या रहता है. समझो मैं एक स्त्रीकी बात नहीं, एक मानव प्राणीकी बात कर रहा हूं. नारी देहकी नहीं, मानव आत्माकी."

"हां, ठीक है, ठीक है. आत्माकी, जरुर आत्माकी. आगे फिर..."

"और फिर—? फिर क्या ? सोचा, और किया. सत्प्रेरणा प्राप्त हुई और मैं तत्पर कटिबद्ध हुआ. मैं उसे अन्ना मरकानीके यहांसे निकाल लाया. अब, अभी तो वह मेरे साथ ही है आगे—आगे जो परमात्माकी दया हुई तो पहले मैं उसे पढ़ना सिखाउंगा, लिखना सिखाउंगा. फिर उसके लिए छोटा-सा उपहार ग्रह-सा खोल दूंगा, या छोटा मोटा स्टोर समझो मैं समझता हूं कि हमारे भाई लोग इसमें मेरी सहायतासे विमुख न होंगे. प्रिन्स, मेरे भाई, हृदय हृदयका भूखा होता है. एकको एककी सहानुभूति चाहिए. मानव हृदयको और हृदयोंका स्नेह चाहिए, और सहानुभूति. दो सालमें मैं समाजके लिए एक वह नवीव सदस्य प्रस्तुत कर दूंगा जो नेक होगा, उद्योगी, योग्य, सदाशय उसके विकासके लिए सब ओर मार्ग खुले होंगे. क्योंकि उसने अब तक केवल अपनी देह दी है, आत्मा उसकी पवित्र है और निर्मल."

प्रिन्सने जैसे अपनी जीभ चाटी और उस जीभसे ही आवाजकी, "त्सत्स त्स्स्स "

"इसका क्या मतलब ? यह क्या गधापन कर रहे हो ?"

"और तुम उसके लिए एक सीनेकी मशीन लेकर दोगे न ?"

"सीनेकी मशीन ? क्यों, वही क्यों ? मैं नहीं समझा"

"भाई साहब, उपन्यासोंमे तो सीनेकी मशीनही दी जाती है. जैसेही नायक एक बिचारी होना हीना, पतिताके उद्धारका बीड़ा उठाता है तो पहले सीनेकी मशीन उसे लेकर देता है"

"बकवास न करो," लखन पालने एक हाथसे उसे धकेलते हुए कहा, "पागल !"

ज्योर्जियन सहसा गभीर हो गया उसकी काली आंखें चमक आई, बोला, "नहीं साहब, यह बकबास नहीं है. यहां दोमें एक बात है. और दोनोंका परिणाम एक है. या तो तुम दोनो साथ इकट्ठे रहोगे और पांच महीने हुए नहीं कि अपने कमरेसे उसे गलीमें खदेड़ बाहर करोगे. और वह वापिस चकलेमें चली जायगी, या तो गली-गली फिरेगी. हां, यही होगा. दूसरी बात यह कि तुम इकट्ठे न रहोगे, पर उस पर शारी-

रिक और मानसिक परिश्रमका बेहद बोझ लाद दोगे और उसके अन्धेरे अजान दिमागको विकसित करनेका यत्न करोगे, और वह ऐसे उकताकर अपनेसे तुम्हे छोडकर भाग जायगी और वही, या तो वापिस चकलेमे नही तो गलीमे आवारा फिरती दीखेगी यह भी पक्की बात समझो हा, एक तीसरी बात यह है आर्थरकी किताबके नाइट लासलटकी भाँति तुम जब भाई बनकर उसके सम्बन्धमे कर्मशील और आदर्श सेवी रहोगे तब वह इधर छिपे-छिपे किसीके प्रेमके घूट पिया करेगी मेरे भैया, मेरी मानो, कि स्त्री, जब वह स्त्री है, तो सदाके लिए स्त्री है और वह दूसरे महाशय उसके यौवनसे भरपेट खा खेलकर उसे खदेडकर चकलेमे या उसी आवारगीम पहुचा देगे"

लखनपालने एक भरी गहरी साँस ली। कही गहरे मे, मस्तिष्क म नही चेतनाके कही गुप्त अन्धेरे कोने मे, लखनपाल को यह बोध घर करता जान पडता था कि नेजरमने जो कहा अयथार्थ नही है पर उसने झट अपनेको थाम भी लिया, सिर हिलाया, और प्रिन्सकी तरफ अपना हाथ बढा कर कहा, "मै कहता हूँ, शर्त बद कर मै कहता हूँ, आधे सालमे तुम अपने लफ्ज वापस लोगे, माफी मागोगे और शिकस्तके तौर पर, अजी, तुम ही उसे एक बढिया दावत दे रहे होगे."

"अच्छा, रही पक्की". प्रिन्सने पूरे जोर से अपनी हथेली मे लखनपालका बडा हाथ झकझोर कर कहा, "तेज खुशीके साथ, यह शर्त रही लेकिन अगर मेरी बात सही रही तो दावत तुम्हारे सिर रहेगी."

"जरूर-जरूर अच्छा प्रिन्स, अब चला. विदा अच्छा, तुम रात कहाँ रहोगे ?"

"यही, पास ही सोमदेव के यहाँ, और क्या. लेकिन क्यो ? क्या तुम सचमुच उस प्राचीन हीरो की तरह अपने और सुन्दरी के बीच म दुधारी तलवार रख कर सोने की सोचते हो? क्यो ?"

"क्या बेहूदा बकते हो ! मै खुद सोमदेवके यहाँ रात गुजारनेकी सोचता था. पर अब जरा बाहर इधर-उधर गलियोकी हवा खाऊँगा

और फिर जिसके यहाँ होगा पडने पहुँच जाऊँगा. जैद रावश था मीता-रामके यहाँ, या कही भी. अच्छा विदा."

वह कुछ कदम चला ही था कि नेजरम ने कहा, "ठहरो-ठहरो, एक बात तो कहना भूल ही गया था. अरे, परतसेन की कुछ बात सुनी ? वह आ गया लपेटे में !"

"हाँ ! लेकिन परतसेन" लखनपालने अचरजसे कहा, और तभी खुशी से एक लम्बी बडी जमुहाई ली.

"हाँ-हाँ. पर कोई ऐसी डरकी बात नही है यही जरा कुछ ऐसी-वैसी चीजे उसके यहाँसे बरामद की गई. यह—एक सालसे ज्यादाकी तो उसे सजा जरुर ठुकेगी".

"अह, एक साल उसके लिये क्या है, कुछ नही. तैयार, मजबूत लडका है, एक साल तो यो निकाल देगा" .

"तैयार तो है ही अच्छा," प्रिन्स ने कहा, "आदाब"

"तसलीम, हीरो ए आजम !"

"तसलीम बे चपर गट्टू !"

११

लखनपाल अकेला रह गया. इस अन्धियारे बरामदे में मट्टी के तेलके दीये में से तेल के धुएंकी बास आ रही थी. वहाँ पुराने बुसे तम्बाकूकी भी गन्ध कम न थी. दिनकी रोशनी छतके पासके रोशन-दानोके शीशोमेंसे लड झगड कर थोडी-थोडी आ ही थी. लखन-पालकी विचित्र अवस्था थी. उसमें स्फूर्ति थी और निरुत्साह भी. उसमे तब क्षुद्रप्राणता भी थी और आदर्श प्राणता का आवेश भी था. किसीको दिनों तक न सोना मिले, तो ऐसी हालत अक्सर हो जाती है कुछ ऐसा लगता था कि वह दैनिक व्यावहारिक जीवनकी परिधि के पार होकर कही और पहुँच गया है. और यह जीवन जैसे उसे कुछ

बहुत दूर, झिलमिला, अनजाना-सा दीखता है. लेकिन विचारों और भावनाओं में उसे एक विशेष प्रकार की शान्त स्पष्टता, एक अपूर्व विमलताका भी बोध उसे होता था. इस वायव्य, स्वच्छ स्वप्न की-सी अवस्था में एक नशा था, एक आमंत्रणीय मोह. वह अपने कमरे के पास दीवारका सहारा लिए खड़ा रहा. आस-पास, ऊपर, नीचे, उसे लगा बहुतसे लोग सो रहे हैं और जैसे वह उनकी नींदको देख रहा है, सुन रहा है, अनुभव कर रहा है. मुंह खुले है, निश्चित विरामसे गाढ़ा सांस आ जा रहा है, नीद में खोये, मग्न हैं. चेहरों पर एक विचित्र थकान, एक विचित्र आरामका भाव है, और वे सबेरे की शेष मीठी गाढ़ी नींद में बहोश हैं. तभी उसके सिरमे एक विचार कोंध कर पार हो गया. बचपनसे वह उसमें गड़ा था, फिर भी मानो अनन्त दूरसे आया हो, सर्वथा अपरिचित, अनन्य, विभीषिका मय. मानों उस क्षण उसे प्रगट हुआ कि ये सोते पडे लोग कैसे बेहूदा, कैसे मकोड़ेसे दीखते हैं, मुर्दोंसे भी मुर्दे, शवसे भी ग्लानिकर, असहाय. तब उसे लुवीकी याद आई. उसका अन्तरतर सोया, दबा, रहस्यमय अहम्, मानो उसके कानमे जल्दी-जल्दी कहने लगा, चल कर देख लेना चाहिये कि लड़की आरामसे तो सोई है न. और हां, सबेरे की चायके बारे में भी तो उससे पूछना है. पर अपने आपमें जैसे उसने मान लिया कि नहीं, वह इस तरह की कोई भी बात नहीं सोच रहा है और बढ़ कर गली में चला गया.

वह चला ही चला. जो चीज़ उसकी निगाह मे आती, बारीकी से, निठल्ली पर विशद जिज्ञासासे वह उसे देखता था. और जो दीखता उसका प्रत्येक अंग, दृश्यका प्रत्येक अंश ऐसा अति प्रधान ऐसा स्पष्ट उभरा सा उसे लगता, जैसे उन्हें उंगलियों से छू सकता हो . . . . एक देहाती स्त्री पास से गुजरी. उसके कन्धे पर एक बांस था जिसके दोनों तरफ दूध की बड़ी मटकियां लटकी थीं. वह नवयुवती न थी. कनपटी पर उसकी झुर्रियों का जाल-सा बना था, और दो गहरी लकीरें उसके नथनों से मुंह के किनारों तक खिचीं थीं. पर उसके गाल अभी लाल

थे· क्या अचरज, छूने में बहुत पके भी न हो. आखो में देहात सुलभ सादी प्रफुल्लता खेलती थी. चलते चलते, और कधे पर रक्खी बंहगीके झोके के साथ, उसके नितब द्वय मानो ताल देकर दाएँ और बाएं हिलते थे. उनके इस लहरदार आन्दोलनमे एक प्रकारका आकर्षक, उद्दीपक, वैषयिक, मनोरम सौन्दर्य था.

'ओह औरत चलती हुई मालूम होती है इसने जिन्दगी मे खासा खाया देखा जान पडता है, लखनपालने सोचा और तभी सहसा अप्रत्याशित रूपमे इस स्त्रीके प्रति जाने उसमे कैसी एक उत्कट चाह पैदा हो आई. इस सर्वथा अपरिचित, अधेड, शायद जगह-जगह की जूठी असुन्दर नारी देहको वह एक दम ऐसा चाह उठा कि अभी पा लूं. उसे लग रहा था कि जैसे एक बडासा बदनुमा सेब पेडसे गिरकर धरती पर पडा हो, बासी भी हो, कही से कुतरा खाया भी हो, यहां वहा दगीला भी हो . पर फिर भी उसमे काफी रसीला गूदा हो और निखरा रग भी—वैसेही यह है. पर . . . .

आगे देखा, जैसी जनाजेके काममे आती है वैसी खाली गाड़ी पाससे सर्रसे आगे निकली चली गई. दो घोडे आगे थे, दो पीछे. एक मशालची और कुदाली लिये कुछ खोदने वाले मजूर उसपर जमे बैठे थे. अपने यूनीफार्मके कपडे नीचे डाले, ऊपर इकट्ठे डटे, अपनी फटी बेडोल आवाज में कुछ गीत रेकते हुए चले जा रहे थे सोचा, जरूर किसी मुर्देको दफनाने यो आगे जा रहे है, या दफना कर लौट रहे होंगे. अलमस्त जीव हैं.

बाधपर आकर लखन पाल रुक गया और वहा पडी एक बेंचपर बैठ गया देखा, बेच हरी है और सामनेकी सडकके दोनों ओर उभरसीदा दरख्तोकी कतारें सीधी दूरतक चली जारही हैं. वहा दूर वे एक होकर तीरकी नोक बनी, मानो अस्पष्ट अनतके मर्ममे पहुचना चाह रही हैं. हरे फल उनपर लग हैं लखन पालको अनायास याद आया कि वसन्तके आगमनपर वह एकबार यहीं इसी जगह बैठा था. तब सन्ध्या, मन्थर अधिभारी लचीली सन्ध्या, एक श्रान्त श्रमित मन्दस्मितसे मुस्कराती वधूकी

भांति निद्रामें डूबीसी जारही थी. तब दरख्त हरे पत्ते ओढ़े थे और फूलोंसे छाए थे. उस समय उनकी नोकीली चोटियाँ सन्ध्याके अन्तिम प्रकाशसे श्वेत और अरुण होकर आकाशकी ओर मुंह उठाए खड़ी थीं. लगता था कि किसीने इन सब दरख्तोंके शीर्षपर क्रिस-मसकी मोम बत्तियां लगादीं हों. और तभी, सहसा आकस्मिक उद्योतकी भाति, उसके भीतर एक नवीन अनुभूतिका स्फुरण हो आया. (और ऐसे क्षण प्रत्येकके जीवनमें आते हैं) उसने जैसे अभी हाल जाना कि वृक्षोंमे इस समय फल लगे हैं और वे पकनेको हैं. पहले उन्हींकी जगह फूल थे. इसी भांति इससे पहले कितने न बसत आए होंगे, बाद कितने न आऐंगे फूल खिलेंगे, फल लगेंगे. लेकिन वही बसन्त जो बीत गया है, वही जो था, क्या इस दुनियांमें कोई भी, कुछ भी, उसे वापस ला सकेगा ? इस विचारके साथ निरुद्देश चली जाती हुई घनी वृक्षोंकी पांतकी ओर वह उदास निगाहसे देखता रह गया. महमा उसे पता चला कि उमकी आखोंके आगे धुंध-सा आगया है और उमे कम दीखने लगा है.

वह उठ खडा हुआ और आगे बढा. वह हर चीज अनिमेप और पैनी निगाहसे देखता था. मानो परमात्माकी इस सृष्टिको वह पहली बार देख रहा है. पत्थरका काम करने वालोंका एक दल सड़क परमे उसके पाससे निकला और वह सब अजीब रंग और विचित्र अतिरंजित रुपमे उसके अन्तस्तलपर खिच रहा. फोरमेन, जिसकी लाल डाढ़ी थी (एक तरफसे घनी) और नीली और कठिन आंखें; एक और पुष्ट युवक था, जिसकी बाईं आख किसी चोटसे सूज आई थी और जिसके माथेसे गाल तककी हड्डी तक और नाकसे कनपटी तक काली नीली रेखाऐं बनीं थी; एक नवयुवक जिसके देहाती उन्सुक चेहरेपर मुंह सदा खुला रहता था और पीछे वह बुड्ढा...जो पिछड़ जानेके कारण अजीब हुलिया बनाए भागा आ रहा था; इनके कपड़े जो चूने मिट्टीसे मैले होरहे थे; इनके कुदाली फावड़े; यह सब ज्योंका त्यों, रंगीन और व्यतिव्यस्त, फिर भी निर्जीव और अचेतन दृश्यकी भांति उसके चित्तपर अंकित हो गया.

उसका मार्ग नई मण्डीके रास्तेसे आता था. वहां सोंधी-सोंधी कुछ

भुनने-पकनेकी महक उसे आई. नथनोंकी राह चावसे उसने वह सुगन्ध जो अपने भीतर ली तो उसमें याद उठी कि उसने कल दुपहरसे कुछ खाया नहीं है और एकदम तेज भूख उसे लग आई. वह दाँई ओरको मुड़कर मण्डीमें चला गया.

अपने पहले दिनोंमें जब भूख उसकी आए दिनकी जानी पहचानी चीज थी वह यहीं आजाता था और मुश्किलसे पाए कुछ पैसोंकी एवज कुछ रोटी भाजी पा लेता था. अक्सर ऐसा जाड़ोंमें होता था. ढावेवाली कपड़ोंकी तहोंमें लिपटी बहुधा अंगीठी तापती उसे मिलती थी, उसी अंगीठी पर कुछ पकाती भी जाती थी. रोटीके यहां दो पैसे लगते थे, बाकी सामानके दस.

आज मण्डी में भीड़ थी. वह अपनी उसी पुरानी दूकान की ओर राह बनाता जा रहा था. तभी दूर से गाने की आवाज सुनाई दी. एक दूकान के आगे घिर कर लोगों की भीड़ एक वृत्त में खड़ी थी. उसने झांक कर देखा, बीच में दस पन्द्रह लड़कियां थीं. ये जो खाली रह कर गाली-गलीज और मैं-तू में मशगूल रहतीं थीं, अब सुन्दर और शिष्ट प्रतीत होती थीं. शाम से ही आज समारोह मन रहा था और रात भर इसी तरह जशनमें बीती थी. गाती बजाती अब वे यहां मण्डी में आ पहुँचीं थीं. किराये के तीन साजिन्दे भी उनके साथ थे. वे अपने बाजों से उनका साथ दे रहे थे. कुछ उनमें से अपने गिलास आपस में बजा बजा कर एक दूसरी पर ताड़ी उछालतीं और मग्न हो कर एक दूसरे का चुम्बन लेती थीं. कुछ यों ही शराब को गिलास में और मेज पर बिखरा रहीं थीं. कुछ ताली बजा-बजा कर हीं गाने में साथ दे रहीं थीं. वे नाचती, आहें भरतीं, चीखती, चिल्लातीं वहाँ होली-सी मचाये थीं. कुछ यों हीं पसरी बैठीं थीं. इन सब के बीच में एक पैंतालीस वर्षकी भरी काया की प्रमदा, जिसका सौन्दर्य अभी चला न गया था, ओठ जिसके भरे और लाल थे, आँखें उन्मत्त और सरस थीं और उनमें से मद विलास की विह्वलता छलक रही थी, फिरकिनी ले-ले कर नाच रहीं थीं. नृत्य की सम्पूर्ण कला और समस्त सौन्दर्य इस के करतब पर खत्म

कुर्बान समझिए, वह फिरकनी की तरह जोर से घूम जाती और कभी सिर झुका कर अनोखी चितवनसे लोगों को ऐसे देखती कि, आह ! और फिर एक दम से सिर पीछे फेंक कर पलकें मीच कर अदाके साथ दोनों बाहें दाएँ-बाएं फैला लेती. उसकी छीटदार वेस्ट के नीचे स्व-तंत्रता पूर्वक आन्दोलन करते हुए दोनों उसके प्रशस्त वक्ष भी हिल-हिल कर नृत्य पर ताल दे रहे थे. कभी एडियों और कभी पंजोंके बल उचक-उदक कर वह नाच रही थी और बीचमें गाती भी जाती थी.

बाहर बांसुरी बज रही है
कैसी मधुर उसकी लय सुन पड़ती है
मां मेरी गहरी नींदमें बंद है
पर प्यारी, राह तो देखती हो, म
मैं मिल न सकूंगा.

यही थी जिसे लखनपाल जानता था. यही वह थी जिसके यहां न सिर्फ वह खाना खाता था पर जहां उसे उधार भी खाना मिल जाया करता था. उसने एक दम लखनपाल को पहचाना, दौड़ी आई, उसे चिपटा लिया, और जोर से अपने अंकमें कस कर सीधे उसके ओठो का चुम्बन ले डाला. फिर उसने अपनी बाहें सामने फैलाईं, उंगलियोंको उलझाया, हथेलियों को मला और मिठास से कूंजना शुरू किया, "ओ, मेरे नन्हें मालिक, ओ मेरे सोने-चान्दी के बाबू, मेरे प्यारे, मैं तुम्हारी बीबी हूँ, हूँ न ? और तुम मुझे माफ कर देना. हमने खूब पी है और मैं मस्त हो रही हूँ. हो रही हूं तो क्या है, आज बहारका जो दिन है". और वह उसके हाथ चूमनेकी कोशिशमें उसकी तरफ तीरकी तरह छूटी.

"ओह, मैं जानती हूँ, तुम मगरूर नहीं हो, जैसे और बाबू लोग होते हैं. प्यारे, लाओ, हाथ बढ़ाओ. मैं इन तुम्हारे छोटेसे हाथोंको चूमना चाहती हूँ······नहीं, नहीं, नहीं, मैं कहती हूँ, मैं चाहती हूँ······".

"यह क्या कहती हो, गुलाबो चाची" लखनपालने टोक कर कहा, और अप्रत्याशित रूपमें उसकी तबियतमें रंग चढ़ आया. "ऐसे नहीं चाची, यहीं ठीक है. ओठों का बोसा ही ठीक है. तुम्हारे ओठ मिसरी

हो रहे हैं, चाची, मिसरी".

"ओह, मेरे जिगर, मेरे सूरज, मेरे चांद, मेरे फरिश्ते," गुलाबो अतिशय स्नेह सिक्त हो गई.

"लाओ मुझे अपने ओठ दो प्यारे, लाओ. आह, कैसे नन्हें-नन्हें ओठ...". उसने जोर से उसे अपनी छाती से कस लिया और उसके मुंह का भरपूर चुम्बन लिया. और उसके बाद वह उसे घेरे के बीचमें ले आई और बड़े गर्व के साथ धीमे-धीमे कदमों से अदाके साथ कमर झुका कर उसके चारों ओर परिक्रमा देती हुई गाने लगी :

आह, हरेककी अपनी-अपनी चाह है,
मुझे वही चाहिए, और यहां
पजामेके अंदर मेरे शैतान जगा है,
और उसके घाघरे में भी कुछ है.

और फिर एकाएक बाजेके स्वर से उतप्त होकर वह उल्लंग नृत्य नाचने लगी—

ओ दैय्या, यह तो ज्यादती है,
कपड़ा तुम्हारा सन गया है, बेहद सन गया है.
पर, बीरन, बिगड़ो नहीं
भीग गए हो तो साफ़ कर डालो
तिरालला, तिरालला···
सोई रह, छिमिया, हिलजुल मत
तू जानती है कोई तेरे संग सोया है,
सब जानती है, क्यों बनती है ?
अपने को ठंग मत, चल···
त-था, त-था, तिरालला.

लखनपाल की धमनियोंमें खून गर्माकर तेजीसे दौड़ने लगा था और वह खूब मदमस्त हो गया था. वह भी बकरेकी तरह उसके आसपास कूदने लगा. लम्बे हाथ, लम्बे पैर, कमर झुकी, उसका अजबसा हुलिया बन आया था. उसके प्रवेशपर चारों ओरसे स्वागतका हर्षनाद हुआ. उसे

एक मेज पर बिठाया गया, उसकी खातिर की गई. उसने अपनी तरफसे कसर नहीं की. एक पहचानवालेसे उसने भी शराब मंगा भेजी और भरा गिलास हाथमें ले वहीं तीन गरमा गरम भाषण दे डाले. पहला तो अखरैन प्रान्तके आत्म निर्णय की स्वाधीनता पर. दूसरा इस प्रान्तकी अंगनाओंके सौंदर्य और स्वास्थ्यकी अपेक्षा यहांके भोजनकी प्रशंसामें. और तीसरा जाने क्यों, दक्षिणी रूसके व्यवसाय और व्यापारके सन्बन्धमें. गुलाबोके बराबर बैठकर वह रह रहकर उसकी कमरमें हाथ डालकर उसे अपने अंकमें कसनेका यत्न कर रहा था. वह भी इसका विरोध नहीं कर रही थी. पर उसकी लम्बी बाहोंमें भी उस स्त्रीकी स्थूल देह समा नहीं रही थी. लेकिन तो भी मेजके नीचेसे स्त्रीने अपने बड़े मुलायम गर्मागरम हाथोंसे लखनपालका हाथ पकड़कर खूब जोरसे दबा दिया, ऐसे जोरसे कि···

इसी वक्त इन औरतोंमें, जो अबतक एक दूसरेको प्रेमालिंगन कर रही थीं, कुछ पुराने चले आए वैमनस्यकी बातें उठ आईं. उनमेंसे दो तो एक दूसरे की तरफ मुड़कर, जैसे पालेमें छुटी दो तीतरी हों, बाहें फैला एक दूसरेको बढ़ियासे बढ़िया, छटो-से-छटी गालियां देकर कोस रहीं थीं और बढ़ी चढ़ी चली आ रहीं थीं.

एक चिल्लाती, "बुढ़िया, बदकार, कुतिया ! तू यहां, यहां भी मुझे जबानसे चाटने लायक नहीं है, छिनाल!" अपने दुश्मनकी तरफ पीठ फेर कर अपना अधोभाग दिखाकर और वहा हाथ थपक-थपककर कहतीं, "यहां, यहां, यहां !"

दूसरी क्रोधमें तपी हुई जवाबमें चीखकर कहती, "तू झूठी है, झूठ बकती है, हरजाइन. मैं हूं लायक. मैं लायक हूं."

लखनपाल जाग गया और उसने इस मिनिटको गनीमत माना. जैसे उसे कोई बात याद आ गई हो, वह बेंचसे कूद पड़ा और बोला, "चाची गुलाबो, ठहरना, मैं अभी पांच मिनिटमें आता हूं, अभी." और खड़े लोगोंके दायरेमेंसे गोता लगा कर पार हो गया.

"बाबू, बाबू," उसकी पड़ोसिन उसके पीछे बोलती रही, "जल्दी

वापस आना जितनी भी जल्दी हो उतनी. मुझे तुमसे एक बात कहनी है."

मोडसे पार होकर वह जैसे सोचनेके यत्नमें लगा, 'इसी मिनिट क्या खास बात है जो उसे करनी है.' फिर भी कहीं अपने बहुत भीतर वह खूब जानता था कि उसे क्या करना है. किन्तु उसे अपने समक्ष स्वीकार कर भी मानो उसे वह टाल रहा था. अब दिन साफ चमकीला हो चला था. नौ दस बज गए होंगे, सडकें पानीसे साफ की जाने लगी थी. फूल वालियां अपने फूलोंकी डालियां ले बाहर निकल आई थीं शहरमें जान पड रही थी, सब कुछ हिलने और खिलने लगा था. सडक परसे धड-धडाती एक गाडी निकल कर चली गई. उसपर सींकचेदार एक बन्द पिंजडेमें हर उम्र, हर रंग, और हर नस्लके कुत्ते बन्द थे, और कोच-बक्स पर म्युनिसिपैलिटीके दो कुत्ते पकडने वाले जमादार रौब-दौबसे सतर बैठे थे. वे अपने आज सवेरेके मालके साथ इस तरह लौट रहे थे.

'अबतक वह जग गई होगी' लखनपालकी प्रच्छन्न इच्छा अब विचार बनकर स्वरूप धारण कर रही थी, 'और, अगर वह न जगी हो तो···तो मैं भी वहीं जरा तख्त पर लेटकर आराम करना चाहता हूं.'

बरामदेमें टिमटिमाता तेलका दीपक काली रोशनी देता पहलेकी तरह धुआं उगल रहा था, और उसमें दिनका भीगा-सा अंधियारा प्रकाश मुश्किल से रोशनदानोंसे आता जाता था कमरेका दरवाजा आखिर बे-ताले खुला ही रहा था लखनपालने, आहट न हो ऐसे, दरवाजा खोला और अंदर घुसा. हल्की, धीमी, नीली-सी रोशनी खिडकी और परदोंके दरवाजोंमेंसे छनकर आ रही थी. कमरेके बीच आकर लखनपाल ठहर गया. सोती लुबीके श्वसोच्छ्वासकी शांत आहट उसने ली. मानो कोई तीखी भूख उसे सता रही थी. उसके ओठ ऐसे खुश्क और गर्म हो आए थे कि वह उन्हें स्वयं बराबर चाट रहा था, और उसके घुटने कांप रहे थे. अकस्मात एक सूझ उसमें चमककर उठी, 'पूछूं, कि क्या उसे कुछ चाहिए ?'

शराबीकी तरह, मुंह खुला, जोर-जोरसे सांस लेता, कांपती टांगों

लड़खड़ाता हुआ लखनपाल उसके बिस्तरकी ओर बढ़ा.

लुबी चित्त सो रही थी. एक हाथ बराबर मे फैला था, दूसरा छाती पर रखा था. लखनपाल झुका, पास झुका, और पास झुका··· उसके ओठोंके किनारे तक ही उसका मुंह आगया. वह ठीक गहरे सांस लेती लेटी थी. उसके युवा स्वस्थ देहमेंसे आता हुआ यह श्वांस, नींद में थी तो क्या, मिठास और सुरभिसे भीना था. उसने धीमे-धीमे उसकी खुली बांह पर अपनी उंगलियां फेरीं. देहमें बिजली-सी दौड़ रही थी. उसने उस सोती हुईकी छाती पर, जरा नीचे, हलकेसे छूआ. 'यह मैं क्या कर रहा हूं ?' मानो उसके भीतरसे कुछ वस्तु, भयाक्रान्त, जैसे उत्तर मांगती हुई नीरव चीख सं चिल्लाई. लेकिन तत्क्षण ही न जाने किसने लखनपालकी जगह बैठकर जवाब दिया, 'अरे, तुम तो कुछभी नहीं कर रहे हो. तुम तो सिर्फ पूछना चाहते हो कि वह आरांमसे तो सो रही है न. उसे कुछ चाय-वाय तो नहीं चाहिये ?'

पर उसी समय लुबी ने अचानक आंख खोली. आखें खुलीं, फिर झंपीं, फिर खुल गई. इन्द्र धनुषकी भांति उसने अंगड़ाई ली. फिर अंगड़ाई ली, और अनजान, अनायास, तृप्त पीत मुस्कराहट से वह मुस्कराई और उसी प्रकार अनायास निंदासे स्नेहके झोंकमें अपनी दोनों बाहे लखनपाल के गले में डाल रही.

पुचकार कर कुछ निन्दासी आवाज में प्रेम पगी बोली में कूंज कर उसने कहा, "मेरे प्यारे, मेरे राजा, क्यों रूठे हो ? मैं तो तुम्हारी राह ही देखती रही. देखते-देखते मुझे तो गुस्सा भी आ गया था. तब फिर मुझे निंदिया आगई. नींदमे सारी रात तुम्हें ही देखती रही. मेरे पास आ जाओ, मेरे राजा, मेरे गुलाब" और उसने उसे खींच कर अपने छातीके निकट ले लिया.

लखनपाल ने विरोध किया ऐसा न जान पड़ा. उसकी देह सारी कांप रही थी, जैसे सर्दी लगी हो. और भिचे दांत और उखड़ी धीमी आवाज में दोहरा-दोहरा कर उसने कहा, "नहीं, नहीं, लुबी यह नहीं, ·····बस ल्युबा, यह न करो·········आह, छोड़ो ल्युबा, मुझे जाने दो

······देखो, लाचार नहीं किया करते······यों न करो ··देखो, फिर मैं नहीं जानता. रहने दो लुबा, परमात्मा के लिए······".

"मेरे भोले, मेरे पागल प्यारे," हंस कर कपोतीके से स्वरमे उसने कहा, "आओ, मेरे प्रान, आओ" और अन्तिम लगभग अनमने विरोध को जीत कर उसने लखनपालके मुंहको अपने से सटाकर लगा लिया और जोर मे एक जलता हुआ चुम्बन ले लिया. चुम्बन ! जैसा कि अपने इतने जीवन मे पहली बार उसने पाया. सच्चा, सम्पूर्ण, अंगारे-सा लाल.

'ओह, ढोंगी, तू क्या कर रहा है ? अरे, मै क्या कर रहा हूँ ?', किसी सच्ची, हित वादिनी, पर फिर भी पराई वाणीं ने लखनपालके भीतरसे कहा.

कुछ देर बाद, साभार, सस्नेह, लुबी ने लखनपाल के ओठों को उपसंहार भावसे चूम कर कहा "अब कुछ तुमको सच चैन पड़ा कि नहीं, 'क्यों, मेरे भोले बाबू, ओह, मेरे राजा··लो, अब जरा सो लो...".

१२

दारुण अन्तर्वेदनाके साथ अपने प्रति, लुबीके प्रति, मानो सारे जगतके पति घोर वितृष्णा और घृणाका भाव लिए लखन पाल वैसेही बे कपड़े उतारे उस तख्तपर पड गया. लज्जाकी चोटमे वह दांत भींच रहा था उसे नींद नही आती थी. विचार वही इस लुबीको ले आनेके मूर्ख कृत्यके चारों ओर आवर्त देकर घूम रहे थे. उस कृत्यमें यदि एक गम्भीर गहन तथ्य था तो साथही कैसा दुर्बोध माया-मोहका जाल भी उससे लिपटा था वह दृढ़ताके साथ बार-बार अपने भीतर दुहराता था "खैर हुआ. एक बार जो मंने वचन दिया उसे निभाना होगा. और जो अब हो गया है फिर न हो पायगा. मेरे परमात्मा, अवरुद्ध कामावेगमें कुछ क्षणोके लिए कौन स्खलित नहीं होगया है ? किसी विचारकने कैसा गम्भीर गहन सत्य प्रतिपादित किया जब उसने कहा, 'मानवीय आत्माकी महत्ताकी नाप

उसके पतनकी गहराई और उसके स्वप्नोंकी ऊंचाईके अंतरसे होती है.' लेकिन तो भी इस मूर्खताका मैं क्या बनाऊँ. उस विचित्र तार्किक पत्रकार पवनजयके जादू और अपने विजयके अनर्थ आवेशका मैं क्या बनाऊँ. जैसे कि यह सब कुछ वास्तविक नहीं है, घटनात्मक नहीं है. मानो यह सब किसी समस्यात्मक ('क्या किया जाय' नामक) उपन्यासमें वर्णित कोई कहानी है. और किस मुहसे, किन आखोंसे अब कलमें उस लडकीकी तरफ सिर उठाकर देखूंगा ?"

उसके सिरमे आग लग रही थी, धूआं भर रहा था. उसके पलक मानो जल रहे थे,ओठ सूख रहे थे. सिगरेटपर सिगरेट पीकर फूंक रहा था, बार-बार अपनी जगहसे उठकर गिलास मेजसे उठाकर वे तहाशा पानी पीरहा था. आखिरकार ज्यों-त्यों झटकेसे अपनेको बीते कृत्यके जालसे तोड़कर वह स्वयंको अलहदा कर सका. तब स्वप्नहीन, चिन्ताहीन, घनी, काली रुई-सी मुलायम नीदने उसे आ घेरा.

दोपहर बीते दो या तीन बजे वह उठा. पहले तो कुछ देरतक अपने आपेमे नही आ सका. उसे कुछ सुध न थी. उसने ओठ भिगोये और भारी चोंधियाई आखोंसे कमरेकी तरफ देखा. जो रातमें हो गुजरा था अब सब उसके सरमेंसे गायब होगया था. पर जब उसने लुवीको देखा, देखा, कि वह शान्त, निश्चल, घुटने पकड़े बिस्तरपर बैठी है,सिर झुका है और हाथसे उसे थामे है, तब वह भीतरही भीतर घबराहटमें विमूढहोकर गुर्राने-सा लगा. अब तक उसे सब कुछ याद आगया था. और उस क्षण उसने अपने भीतर अनुभव किया कि अपनीही आखोसे अपनेही रातके दुश्कर्मके परिणामको इस उजले होकर उगते हुए दिनके प्रकाशमे देखना कितना असहनीय होता है.

लुवीने स्नेहसे पूछा, "तुम जग गए, प्यारे."

वह बिस्तरसे उठ आई और तख्त तक आकर नखन पालके पांयते बैठ और कम्बलसे ढकी उसकी टांगोंको धीमे-धीमे थपकने लगी.

"क्यों, मै तो बहुत देरकी जगी हूं हां, तबसे बैठी थी. तुम्हे जगानेकी तबियत नहीं हुई. तुम गहरी नींद सोरहें थे."

वह उसके मुखकी ओर बढ़ी और उसका चुम्बन ले लिया. लखन पालने खट्टा मुंह बनकर धीरेसे उसे अपनेसे परे हटाया.

"ठहरो लुवी, ठहरो. यह जरूरी नही है. समझी ? इसकी कभी, बिल्कुल जरूरत नहीं है, बिल्कुल नहीं. जो कल होगया था न, वह संयोग समझो, एक दुर्घटना. मेरी कमजोरी थी. समझी न ? मेरी नीचता कह सकती हो. हां, मेरी ही नीचता थी. लेकिन परमात्मा साक्षी है, मेरा विश्वास करो, में·· मैं यह नहीं चाहता था. मैं तुम्हें अपनी···वह नहीं बनाना चाहता था. मै तुम्हें अपनी सुहृद, अपनी बहन, अपनी सखा··· खैर, जाने दो, हुआ हुआ. अब सब अपने आप ठीक हो जायगा. बस हमें हिम्मत नहीं हारनी होगी. और इस बीच प्रिय, क्या तुम जरा उस खिडकीकी तरफ जाकर बाहरकी बहार देखोगी, मे इतने अपने कपड़े-वपड़े ठीक पहन लूं."

लुवीने जरा ओठ निकाले और लखनपालकी तरफ पीठ मोड़कर खिड़की की तरफ चली गई. मित्रता, सख्य, सुहृदभाव और भ्रातृ-भाव की बातोंका एक भी शब्द वह अपने नन्हेमे सीधे-सादे दिमागके बल पर नही समझ सकी. यह कि एक कालेजमे पढनेवाला विद्यार्थी जो अभी तक कुछ नही है तो क्या, जो पढा लिखा है, एक रोज वकील, डाक्टर, जज, कुछ भी बन सकता है, उसीके साथ वह रह रही है. इतने भरसे उसकी कल्पना कही अधिक गौरवान्वित होती थी···पर अब उसे यह दीख रहा है कि यह महाशय उसे ले तो आए, और उससे अब अपना मन चाहा पा जो चुके सो अब छूटकर निकले जा रहे है ! ये सब ऐसे ही होते हैं, सब मर्द.

लखनपाल जल्दीमे उठा. जल्दी-जल्दी कुछ अंजुल पानी फेंककर मुंह धोया, एक पुराने तोलिएसे मुह पोंछा. और पर्दे उठाकर खिडकियां खोल दीं. सुनहरी धूप, नीला आसमान, शहरकी गडगडाहट, पेड़ोंकी हरियाली, घोड़ोंके गलोंमें बंधी घण्टीकी आवाज, धूपके स्पर्शसे धरतीमेंसे निकली मिट्टीकी सोन्धी गंध—ये सबकी सब खिड़की खुलते ही मानो एक साथ उसकी छोटी-सी कोठरीमे भागकर भर आई. लखनपाल लुवी

के पास गया, प्रेमसे उसके कंधे थपके. कहा, "कुछ परवाह नहीं, मेरी फूल...जो हुआ वह अनहुआ तो हो नहीं सकता. पर आगेके लिए उससे हम सीख ले सकते हैं. क्यो, तुमने अबतक अपने वास्ते चायके लिए नहीं कहा, लुवी ?"

"नहीं, मैं तुम्हारी बाट देखती थी. और जानती नहीं किससे कहतीं. अच्छा बताओ, तुम मुझसे नाराज हो ? क्यों, जब तुम अपने मित्रके साथ गए थे तब थोड़ी देर बाद लौटे भी थे. कहो, नही लौटे थे ? मैंने आहटसे जान लिया था, तुम लौटे हो. और तुम दरवाजेके पास ही कुछ देर खड़े रहे, फिर चले गए. क्यो, तुमने मुझे नमस्ते भी नहीं की ? यह ठीक है ?"

'लो, घरेलू झगडा नंबर एक !' लखनपालने सोचा हंसी-हंसीमें अपनेपनके साथ ही सोचा, पर मनमें मैल न था,

अभी जो हाथ मुंह धोकर ताजा हुआ था उसमे; आकाशके सुनहले नीले सौन्दर्यके कारए; कुछ-राज़ी-कुछ-नाराज़ लुबीके मनोहर चेहरेकी वजहसे; और इस चेतनाके परिणामस्वरूप भी कि वह मर्द है और यह जो कुछ यहां बना बिखरा है, वह उसकी ही करनी है,-लुबी उसकेलिए जिम्मेदार नहीं,—इनसब बातोंसे उसके चित्तमें ताजगी और क्षमता आई. हठात उसने अपनेको संभाला. दरवाजा खोल कर बरामदे में जाकर उस अन्धेरेमें से ही चिल्लाया, "सिकन्दरा, चाय, दो रोटी, मक्खन और सौसेज, सुना ? और एक बोतल भी".

चट्टियों की आवाज बरामदेमें से ही सुनाई दी और दूरसे ही किसी ने उमरपके स्वरमें कहा, "चिल्ला क्यों रहे हो जी, शोर क्यों मचा रहे हो ? हो-हो, जैसे अस्तबलमें घोड़ा हिनहिनाता हो. तुम अब बच्चे नहीं हो, खासे बड़े हो गए हो, फिरभी क्या उजड्ड से बने रहते हो ? बताओ, क्या चाहिए ?"

और कहते-कहते कमरेमें छोटीसी देहकी एक वृद्धा स्त्रीका प्रवेश हुआ. छोटी-छोटी लाल पलकोंके बीचमें आंखें ऐसी थीं जैसे दो तंग-दरार. मुंह सफेद कागज़-सा कोरा था, जिस पर बस नाक उठ कर

नुकीली, नीचे को लटकी जारही थी. इसका नाम एलक्जेन्दा था, विद्यार्थियोके रहनेके दरबोमे ही वह पल कर बढ़ी हुई थी. लड़को की सहायक भी यह थी और महाराजिन यही. बातून, झक्की, ऐसी यह पैसठ वर्ष की बुढ़िया थी

लखनपालने अपना आर्डर दुहराया और एक रुपए का नोट उसके हाथो थमाया पर हमारो वह बुढ़िया इसपर चली नही गई, खडी-खडी, नही तो इसी कमरेम इधर-उधर चल चला कर वह समय बहलाती रही और ओठ चबाती, बड-बडाती और दरवाजे की तरफ पीठ किये बैठी लुबीकी तरफ द्वेष पूर्वक देखती रही

लखन पालने हसकर पूछा, सिकन्दर, क्या हो गया है तुम्हे, जो ऐसी भूतसी बन रही हो? शामत आगई है! तो सुनो, यह मेरी · मेरी बहन है ल्यू ल्यबौब···" क्षणभर जैसे वह खोगया और फिर बोल चला, "ल्यबोब-वैसेलेबना, लेकिन, मेरेलिए बस लुबी मै उस तबसे जानता हू जब वह इतनीसी थी ' उसने हाथके इशारेम फुटभर ऊचा होनेका सकेत किया ' और मै उसके कान खीचा करता था बडी दगई थी और मै उसे चपतियाता था · आ' आर मै रगविरगी तितली पकडकर उसे देता था आर फूल और लेकिन तुम·· तुम अपनी बात तो कहो पत्थर-की मूरतसी जमी क्यो खडी हो ? चलती फिरती नजर आओ '

लेकिन बुढ़िया वही रही गई नही चारो तरफ पैरोसे मानो फर्श कुचलती हुई वही डोलती रही दरवाजेकी तरफ नही बढ़ी उसकी तिरछी पैनी विषैली निगाह बराबर लुबीपर गडी थी और अपने पोपले मुहमे बड-बडा रही थी, "बहन ! इन चचेरी ममेरी बहनोको हम खूब जानती है कस्टन बायाके आसपास ऐसी बहन बहुतेरी घूमती रहती है. पर इन मुई कुत्तियोका जी कभी भरता हो तब ना "

'ओह बुढ़िया, बदजात, चुप रह बक मत " लखन पालने डपटकर कहा, "नही तो मै भी उस ट्रसवकी तरह तुझे कोठरीमे मूंद दूंगा और चौबीस घन्टे तक तुझे मूदे रहना पडेगा."

सिकन्दरा चली गई और बहुत देरतक उसके पके धीमे कदम और

उसकी बड़बड़ानेकी आवाज बरामदेमेंसे सुनाई देती रही. अपने बुढ़ापेमें वह पढ़नेवाले लड़कोंको बहुत कुछ माफ कर देती थी. कम ज्यादह चालीस वर्षतक वह इन्हीं लड़कोंकी खिदमतमें रही है. वह शराब पीते, ताश खेलते, झगड़ते, चिल्लाते, कर्जकर आते—इस बुढ़ियाके निकट उन्हें सब माफ था. लड़कोंके लिए उसके दिलमें बडी जगह थी. पर, अफसोस, उसका विवाह न हुआ था. वह उम्रभर क्वारीही रही. और इसलिए एक बात थी जिसके लिए उसकी अनर्पित अछूती आत्मामें कोई जगह, कोई माफी न थी. और वह—यही चरित्रकी खराबी ?

१३

"वाह, भई वाह···क्या खूब" लखन पाल स्फूर्तिकी अतिशयतामें एक तीन टांगकी मेजके चारों तरफ उचक कर और फुदककर और बेजरुरत चायके सामानको इधर-उधर हटाता हुआ कह रहा था. "आह, कबसे, मुद्दतसे, मैंने चाय नहीं पी. यानि वह कि जिसे चाय पीना कहें. बाकायदा, आराममे, भले मानसकी तरह घर बैठकर जो चाय पी जाती है, वह चाय. बैठ जाओ, लुवी, बैठ जाओ. लो, यहां तख्त पर आ बैठो. देखो, अब सब काम तुम्हीं हाथमें लो. बाडका तो शायद तुम सबेरे-सबेरे पीती नहीं ! इजाजत हो तो मैं दो एक घूंट लेलूं इससे जी खिल जाता है. मेरी चाय, देखो, तेज बनाओ. मैं तेज पीता हू. वाह, गरमागरम चायके गिलाममें बढ़कर भी क्या कुछ चीज है ? और जब साकी तुम-सी हो, तब · बस."

लुवी उसकी सब चपर-चपर सुनती रही. उसकी बातें वाचाल मुखरता और वेगसे ऐसी भरी थी कि स्वाभाविक नहीं मालूम होती थी. लुवीकी मुस्कराहट जो पहले शंकाशील और जरा सन्दिग्ध थी अब कोमल हो कर खिल चली. पर वह ठीक तरह चायके साथ नहीं चल सकी. अपने देहातके घरमें यह चीज उसके लिए शौककी चीज थी. वहां संपन्न घरोंके लोग भी उसका शौकिया ही उपयोग करते थे. परिवारोंमें खास

महमानोके आनेपर तीज त्यौहारके दिन ही चाय तैयारकी जाती थी तब बाकायदा घरके सब जन जमा होते और कुटबका सबसे प्रधान व्यक्ति मेज पर बैठकर लोगोको, मानो साधिकार, चाय देता उसके बाद जब लुबी एक शहरमे पहले एक पादरीके यहाँ रही और फिर इन्श्योरेन्स एजेन्टके यहा (यही था जिसने उसे पहले पहल वेश्या वृतिके मार्ग पर डाला) तो वहा अक्सर मेजपर बची कुची ठण्डी चाय और मालकिनकी कुतरी कभी-कभी चीनीकी एकाध डली उसे मिल जाती थी. वह मालकिन पहले उस पादरीकी पीली दुबली डाह भरी औरत थी, फिर मोटी कजूस मैली और नीची जातिवाली एजेन्टकी पत्नी उसकी दूसरी मालकिन हुई. इसलिए जैसे बचपनमे हम सबके लिए दाऐ और बाऐ हाथको पहचानना जैसी सुगम बात असभव होती है, वैसेही यह चाय बनानेका सीधा-सा काम उसे दूभर हो रहा था तिसपर यह उत्कठिन चपलगति लखन पाल और भी उसकी मुसीबत और मुश्किल बढा रहा था

'प्यारी, चाय का बनाना भी एक कला है इसे तो कोई बस मास्कोमे सीखे. पहलेतो सूखे एक खाली चायके बर्तनको जारा गरम किया फिर उसमे कुछ चायकी पत्ती रक्खी और झट जरा उबलते पानीमे उसे धो लिया धो लिया.-समझी न ? यह धोवन अलहदा फेक देना चाहिए चाय इस तरह साफ हो जाती है और खुशबू देने लगती है और फिर अपना तरीका तरीका है सुनते है, चीनी आदमी यो ही अपनी चाय बना बनू लेते ह जगली जो ठहरे इसके बाद फिर नया पानी डालना चाहिए कोई चौथाई चायके बर्तनको उबलते पानीसे भर दिया और ऊपर तौलियासे ढक कर उसे तीन चार मिनटके लिए योही छोड दिया, छेड़ा नही फिर और उबलता पानी डाला यहाँ तक कि ऊपर तक भर दिया फिर उसे ढक देना चाहिए, और कुछ देर नही छूडना चाहिए. तब वह चाय तैयार होगी कि तुमभी कहो, हाँ ! खुशबूदार, लहलहाती, ताकत वर".

लुबीका सुन्दरसा देहाती चेहरा सुन-सुनकर लम्बा और तनिक पीला साही पड़ता दीखा. "परमात्माके लिए देखो, तुम···· 'क्या ? क्या···

लखनपाल ? यही न ? तो देखो मेरे प्यारे लाखन, मुझसे नाराज मत होओ. मै जल्दी सीख लूंगी. मैं सब झट सीख लेती हूँ. अब तुम मुझ सदा 'तुम' 'तुम' क्यों कहते हो ? हम आपस में अनजान तो नहीं रहे" कहकर उसने सकरुण दृष्टिसे उसे देखा. सचमुच, अपनी इस अभागी छोटी जिन्दगीमे आज पहली बार सबेरे उसने स्वेच्छासे अपनी देह किसी को दी थी, जब न पैसेका कोई ख्याल था, न बलात्कार, न लाचारी, न बरखास्त होनेका डर और न और कोई बाहरी कारण. यदि सचभी हो कि अबभी उस समर्पणमे आनन्द और कृतार्थ भावकी सपूर्णता न थी, फिरभी हार्दिकताके साथ अपने भीतरकी कृतज्ञता और स्नेहके आवेगके कारण ही उसने अपनको इस विद्यार्थीके अंकमे समर्पित किया था. उस-का स्त्रीहृदय प्यासा सपुटित, प्रेमके सूर्यके प्रति सदा सूरजमुखीकी भाँति उन्मुख हृदय इस क्षण पवित्र, स्नेहके उल्लाससे भर रहा था

किन्तु तभी एक दम इस नारीके प्रति, जो कल उसकेलिए कोई न थी और आज उसकी परिगृहीता है, इस स्त्रीके प्रति लखनपालम निरा-दर और द्वेषका भाव हो आया. एक विषम ग्लानि और तज्जनित सकोच मे वह घिर उठा, 'यह गृहस्थ सुख (?) का आरभ होना है' - उसने हठात सोचा. फिरभी वह कुर्सी से उठा, लूबीके पास गया और उसका हाथ लेकर अपनी ओर खीचा, उसे सिरपर थपथपाया और अत्यन्त स्नेह से (दम्भपूर्वक) कहा, "मेरी प्यारी बहन, सच, जो आज हो गया है अब कभी न होने पाएगा. कसूर सब मेरा है मेरा ही दोष है. कहो तो घुटनो गिर करमै तुमसे क्षमा मागनेको तयार हू. सुना लूबी, यह सब मेरी मर्जीके खिलाफ, मेरे बावजूद, जाने कैसे अचानक बेजाने हो गया. मै नही जानता था कि ऐसा हो जायगा. पर तुम समझ सकती हो, मुद्दतसे मै .... मैने किसी स्त्रीको पास मे नही पाया, नही जाना .... सो जाने क्या जालिम बेबस मेरे भीतर स उठ आया... और लेकिन हे राम, मेरा अपराध क्या इतना बड़ा है ? पवित्रजन. त्यागी, सन्त, सन्यासी गुहावासी--इनकी सयम साधनाके आगे मै क्या चीज हूँ. पर ये तक इस शरीरके दानवी प्रलोभन के सामने कब

कब ठहर सके हं ? पर जिसकी चाहो उसी की सौगध, मै कहता हू कि अब फिर यह नही होगा, नही होगा, ठीक है न ?"

लुवी बराबर अपने हाथ से उसका हाथ अलग दूर करने की चेष्टा कर रही थी उसके ओठ जरा निकल आए थे और झुकी पलके बार-बार मिच रहा थी "हाँ," उस रूठे बच्चे की तरह वह बोली जो मानने मे इकार करता है, "मै देखती हूँ, मुझसे कुछ नही होगा तो, अच्छा हो तुम मुझसे सीधे यह कह दो, मुझे गाडीका भाडा दे दो, और ऊपरसे जो तुम चाहो··· एक रात के दाम तुमने चुका हो दिये है, बस मै बैठ फिर वही पहुँच जाउगी···"

लखनपाल दोनो हाथोको अपने सिरके बडे-बड बालोम उलझाए कमरे म इधर-उधर उा ो लगा बोला, 'ओह नही, वह नही मुझे समझो लुवी जो आज सवेरे हो गया है, उसे उसे जारी रखना बेहयाई है गधापन है किसी आत्माभिमानी के लिए असभव है प्रेम ? प्रेम, यह दो भिन्न धाराओके दो हृदयोके आत्माओके, दो व्यक्तिओके मिलकर एक हो जानेका नाम है सिर्फ शरीरोका सयोग नही प्रेम एक जबर्दस्त प्रबल भावना है विश्व व्याप्त, वैसी ही शक्तिमान साथ बिस्तर पर पड रहना प्रम नहीं है, लुवी वैसा प्रम हम दोनोम नही है यदि वह आएगा तो मेरे तुम्हारे लिए परस्पर स्वर्ग उपस्थित हो जायगा लेकिन तब तक मै तुम्हारा मित्र हू, तुम्हारा स्नेही, सखा, जीवनके मार्गपर सदोद्यत तुम्हारा निश्छल सगी और बस उतना ही पर्याप्त है . और अगरचे मै मानवीय दुर्बलताओके प्रति अजेय नही हू, फिर भी मै अपनेको ईमानका और नीयतका साफ आदमी गिनना चाहता हू"

लुवी सोच मे पड गई वह समझता है मै चाहती हू कि वह मुझसे शादी करे और मै कहती हू, मुझे उसकी बिल्कुल जरूरत नही. खिन्न होकर उसने सोचा—क्यो जी, ऐसे ही रहे आना भी तो सभव है. और भी तो है जो इसी तरह रह रहे है. और वे कहते है, आगके चारो तरफ फेरे डालनेके बाद जैसे वे रहते शायद उससे और मजेमें ही रह रहे हैं. इसमे तब ऐसी क्या खराबी है, क्या पाप है ? कैसा भला, प्यारा, अच्छा

सुन्दर जीवन है. वह...मैं उसके लिए बेबी मोजे बुना करूंगी, घर साफ रखूंगी, खाना बनाया करूंगी .. पर, खाना सादा होगा. और ब्याहकी बात है, तो किसी भले मालदार घरकी लडकी उसे मिल जायगी और ब्याह हो जायगा. और ठीक है, हो जाय. तब, सच, वह मुझे कपडे-लत्ते छीनकर तो एकदम बाहर निकाल ही नही देगा. नही, वह बहुत भला भोला है. और जरा बातून है तो क्या, इसमे भूल नही हो सकती कि वह नेक आदमी है. वह जरूर मेरा ख्याल रखेगा. मेरा कुछ बन्दोबस्त जरूर कर देगा. और शायद है कि धीरे-धीरे वह मुझसे खिझ भी जाय और मुझे नापसन्द करना छोड दे. मैं सीधी सादी हूं, मेरे जी मे कोई साध, कोई अरमान भी नही है, और मै कभी उससे झूठी नही हो सकती. मैं कभी उससे छल नही करूंगी. क्योकि लोग कहते हैं, ऐसा होना है...लेकिन मैं कुछ नही कहूंगी, कुछ नही. वह रातमे फिर मेरे पास आयगा और आज ही रात आयगा, यह तो पक्की बात है. इसमे मुझे रत्ती भर भी शक नही है, जैसे परमात्मामे शक नही."

और लखनपाल भी विचारोमें डूबा था. चुप, विषण्ण, वह अपनेको उस बड़े दायित्वके भारी बोझके नीचे दबा अनुभव कर रहा था जो उसने हठात् उठा तो लिया है, पर जो उसके बूते के बाहर है इसलिए जब उसने सुना कि बाहर कोई थपथपा रहा है तो उसे आराम मिला और उसने अनायास उत्तरमे कहा "आओ भाई." दो विद्यार्थी अन्दर आए. एक सोमदेव और दूसरा वही नेजरस, जो उस रात यही सोया था.

बलिष्ठ देह और तनिक स्थूल आकृति, चौडा चेहरा, नीचे छोटीसी नुकीली डाढी—यह सोमदेव था हँसमुख, हार्दिक, नेक दिल विद्यार्थी था. हर एक यूनिवर्सिटीमे ऐसे कुछ लडके होते हैं. वह अपने खाली वक्तको—और दिनके चौबीस घंटे उसके लिए खाली ही थे—शराब खानोंमे चक्कर लगाने, घूमने-घामने, बिलियर्ड-ह्विस्ट खेलने, अखबार-उपन्यास पढ़ने या सरकस दंगल देखनेमे काटता था. इन्ही के बीचमें जो वक्त मिल गया, उसमें खाने, सोने, सुई-धागा लेकर अपने कपड़े सीने-संभालने और घरके और छोटे-मोटे धंधे समेटनेमें लगा देता था. और

कही राहमे या कमरेमे या रसोईमें कोई स्त्री मिल गई तो उससे नितान्त पार्थिव प्रेमका व्यापार चलानेका काम भी वह इसी वक्तमे कर लिया करता था. अपने सर्किलके और सब लडकोकी तरह वह भी अपनेको क्रातिवादी मानता था. अगरचे राजनैतिक झगडो और दलबन्दियों से और आपसी कहासुनी या टटे-बखेडो से वह दूर रहता था और उन्हें सख्त नापसन्द करता था. क्रान्ति वादियोके अखबारो और ट्रैक्टोको पढनेकी उसे फुर्सत न थी, इससे वह क्रातिके काम धाममे एक तरह निरा कोरा ही था इसीसे पार्टीकी पहली सीढी पर भी वह नही पहुच पाया, यद्यपि कई बार उसे कई भेदकी बाते भी बताई गई जो उसे स्पष्ट तो न समझ पडी, पर जो जोखिमकी थी लेकिन उन्हे याद रखनेकी जरा ऐतिहात वह न रख सका ... उसकी निश्चय दृढताका सबको भरोसा था. वह जो काम करता, झट, सही और सीधे बढकर करता. जो हाथ में लेता उसे पूरा करके छोडता साहसिक उद्यम और प्रस्तुत कार्यकी महत्त्व-पूर्णतासे निर्भीक, अटल विश्वाससे वह भरा रहता था सख्त-से-सख्त वक्तमे मुह पर उसके मुस्कराहट ही रहती. भय जानता न था आपत्ति की संभावना होती और उपेक्षा से वह हस देता. मफरूर साथियोको वह छिपाता था, जब्त लिटरेचर और गैर कानूनी छापेखानो को वह महफूज रखता था और पैसा और पासपोर्टको यहाँ वहाँ भेजनेका भी वह काम करता था देहमें खूब शक्ति थी, तबियतमे खुली हार्दिकता और आदतोमें स्वभाव सिद्ध सादगी अक्सर कभी दूर देहातसे उसके पास खर्चके लिए खासी अच्छी रकम आती रहती थी. एक विद्यार्थीके मामूली खर्चके लिहाजसे वह काफीसे कही ज्यादा होती थी. लेकिन सत्रहवी सदीके फ्रेंच रईसकी-सी लापर्वाहीसे वह दो दिनमे उसे यहाँ वहाँ बखेर देता और जाडोके दिन अपने उसी एक रोजमर्राके कोट मे और एक जोडी दकियानूसी जूतो मे काट देता जूतो को अपने हाथसे सीकर ठीक-ठाक हालत मे रक्खे रखता था. इन आदरणीय उपहास्य उच्च और अस्थिर विशेषताओंके आगे भी—जिन्हें हम नही जानते कि वे वांछनीय है, पर जो औसत रुसी विद्यार्थीकी इतिहाससिद्ध पुरानी विशेषताएँ है—उसमें

एक और आश्चर्यकारक गुण था वह पैसा पैदा कर लेनेमे एक ही था रेस्टरॉमे, भोजन शालाओमे, सब जगह जैसे उसका खाना चलता था नीलामकी दूकानोके सब नौकर, दलाल, कर्ज देनेवाली सब संस्थाएँ, सब महाजन, पुराने कपडेके दूकानदार, इन सब लोगोसे उसका गहरा मेल था.

लेकिन अगर किसी कारण इन सबके पास न भी जा सकता तो भी सोमदेवके लिए ठिकानो की कमी न थी और उसके कौशलका पार न था. निठल्ले और वेपैसे साथियोका अधिनायक बनकर, तरह तरहकी जिम्मेदारिया अपने सर लेकर जैसे इस आदमीमे अनुपम मेधाकी स्फूर्ति जाग जाती थी दूरसे कोई काबुली कमरपर गट्ठर रक्खे जाता दीखता तो यह सोमदेव जाने क्या इशारा करता कि वह बेचारा सडकके उस पार कन्धोपर मालका बकुचा सभाले रुक जाता. तब यह कुछ देरके लिए साथियोको यही छोड अदृश्य हो जाता और थोडी देर बाद फिर वही आकर आविर्भूत हो जाता उस समय साथी लोग देखते कि उसका या तो कोट नदारद हो गया है और पतलूनपर बस एक जाकट-सी पहने वह शानसे चला आ रहा है या दिन जाडेके हुए तो ऊपरका कोट ही गायब हो गया है और बस वह एक भीना-सा सूट बदनपर लटकाए आ गया है कभी-कभी नई ताजी टोपी पहनकर जाता और देखते कि टोपी के नामपर एक पुरानी-सी टुपिया चादके उपर ऐसी टिकी है कि जैसे जादूके बल वहां बैठी हो, और वह नई टोपी वहासे उड गई है और वह इस सबमे उसी तरह मस्त दीखता.

हर कोई उसे चाहता था क्या साथी, क्या नौकर, क्या स्त्रियाँ, क्या बच्चे और सब उससे हिले मिले थे. यह अफगान लोग तो उसे बेहद चाहते थे. समझते थे, बच्चा है, फरिश्ता. कभी गर्मियोमे बढ़िया शराबका उपहार वे उसके लिए लाते, कभी अपनी दावतोमे निमन्त्रित करते. अविश्वसनीय कितना ही मालूम हो पर सच यहा तक है कि बहुत आड़े वक्त महफूज रखनेके लिए अपनी कीमती किताब और जरूरी कागज तक उन्हें सोप आता था. ऐसे मौकों पर वह लापरवाह और गंभीर बनकर

उन्हे बताता, 'देखो, जो किताब मै दे रहा हू, बडी जबरदस्त है. इसमें लिखा है अल्लाहो अकबर और इसमे लिखा है मुहम्मद नबी था और लिखा है, दुनियाँ मे बहुत कुफ्रो गुनाह है, और इमानको एक दूसरेकी तरफ हमेशा रहमदिल होना चाहिए.'

उसमे दो खूबिया और थी. वह किताब पढकर तो खूब ही सुनाता था और गजबकी शतरज खेलता था शतरजमे अजब उसको महारत थी. मानो उसका खास भेद कोई उसके हाथ हो बडे-बडे खिलाडियोको वह हसी हसीमे हरा देता उसकी पहली चढाई बडी जबरदस्त और दुर्जय होती.बचाव सभला हुआ और सकुशल. वह तिरछे बाजू मे अपनी ताकत इकट्ठी करता था और सामनेके खिलाडीको छोटी मोटी रियायतका ऐसा प्रलोभन देता कि जैसे उस उसकी परवाह नही है, पर उन्हीमे फंसाकर खिलाडीको वह यमोन ले डालता अचूक उसकी चाले होती गुप्त उसका निशाना, निर्भय उसकी चाट वह एसे चाल चलता था मानो सब उसका पहलेसे जाना हो सोचनेकी उसे जरा जरूरत न होती. खेलके विज्ञानकी सदा अवज्ञा करके बढता, और मान्य तरीको कायदोकी अवहेला करके उन्हे तोडता ही हुआ चलता. उससे आसानीसे लोग नही खेलते थ. उसके खेलका लोग जगली कहते थे. लेकिन फिर भी खेलते ही थे और बडी बडी रकमकी शर्त रक्खी जाती थी सोमदेव जीतता और पैसा अपने हारे साथीके हकम ही खर्च कर देता लेकिन बडे-बडे टूर्नामेटोमे उसने कभी हिस्सा न लिया लता तो शतरजकी दुनियामे उसकी जगह बनी बनाई थी वह कहता कि इन फिजूलियातके लिए न मुझमे तबीयत है, न चाह, न इज्जत. वह तो एक तरहकी बनी-बनाई सूझ मेरे पास है, यही समझो एक तरहकी दिमागी खराबी ही उसे कहो जैसे ही जैसे कुछ लोग खब्बे हुआ करते है, बाए हाथसे ही काम कर सकते है इस लिए इस खेलमे जीतनेके बारेमे मेरे दिलमे कोई व्यावसायिक सफलता का भाव नही है. न जीतने पर मनमे फख्र, न न जीतने पर जी में रंज मुझे होता है.

ऐसा यह सोमदेव था उदार, लापरवाह, सक्षम और स्वच्छन्द,

और नेजरस था इसका सबसे घनिष्ट मित्र. मित्रता इन्हे सुबहसे रात तक आपसमे खूब लड़ने झगड़ने, नाम रखने, ताने कसने और गाली देनेमें बाधा नहीं बनती थी. परमात्मा जाने ये ज्योर्जियन प्रिन्स कहाँसे और कैसे रह लेता था. वह अपने बारेमें कहा करता था कि ऊँटकी तरह मै कई हफ्तोंके लिए एक बार ही खा सकता हूँ और फिर महीने भर तक मुझे खानेकी जरूरत नही रहती. अपने घर ज्योर्जिया से उसे नाम भरको ही कुछ आता था. वह भी जिन्स की शक्ल में क्रिसमसमे या ईस्टर की छुट्टियोमें या अगस्तमे उसके जन्मदिनके रोज उसे अपने गाँवके आदमियोंके हाथो तरह-तरहका खाने का सामान ढेर-का-ढेर मिल जाता था. तब यह प्रिन्स अपने किसी साथीके स्थान पर (क्योंकि उसके पास कभी अपना रहनेको कोई कमरा होता ही न था) अपने सब दोस्तो और अपने तरफके लोगोंको बुलाकर वह शाही दावत देता कि आया सामान रत्ती-रत्ती उसी रोज खर्च हो जाता. ज्योर्जियन गीत गाये जाते, नाच होता, महफिल जमती, खूब बहार रहती और इस सबमे खुद नेजरस ही प्रधानता से भाग लेता. बात करनेमे वह एक ही था. गर्म हो आय तो एक मिनिटमे तीन सौ शब्द फर्राटे मे बोल जाय उसकी शैलीमे भाव बिखरे होते, अनुप्रासो की भरमार होती और विद्वत्ता से ओतप्रोत उसकी भाषा होती. पर वह कुछ भी कहे, कही मे आरभ करे, अतमे वही आ पहुचता था अपनी ज्योर्जिया की प्रशसा पर सर्व-सुदर, वह शस्यदा, फलदा, वह अग्रणी, वही वीर प्रसूता, पर हाय, वह अभागिनी, दीना, हीना भूमि ज्योर्जिया! और अनिवार्य रूपमे ज्योर्जियन कवि इसाकेलाके एक गीतकी पक्तियो मे उसकी वक्तृताका उपसंहार होता. उसे निश्चय था कि तमाम शेक्सपीअर और तमाम होमरसे उसके ज्यार्जियन कविकी पक्तियाँ ऊँची ही नही, कही-कही ऊँची है.

वह जरा चिड़चिडा और तेज़ मिजाज तो था पर मनम उसके कीना न था और अपने व्यवहारमें वह रमणीकी भाँति कोमल, शिष्ट, सलज्ज और दिलचस्प था. हाँ, अपनी जन्मभूमिका गौरव हर जगह उसके साथ चलता था.. ...बस एक बात थी जो उसके साथियोंको नापसंद

थी. वह, वामांगियों मे उसकी लगन. स्त्रियोंकी ओर अवश, उत्कट, प्रवृति उसमे थी उसमे अचल श्रद्धान था— ऐसा अचल कि उसे निरी जड़ता कहो, या अनुपम महिमा––कि रूपमें वह अजेय सुंदर है, कि सब आदमी उससे डाह करते हे, कि संसारकी सब रमणियाँ उसके प्रेममें घुली पड़ती हे और उन सबके पति उससे बेहद ईर्ष्या करते हे. औरतों के सबंधमे उसका यह आत्मदंभ और स्वार्थवृत्ति उसे मिनट भरके लिए न छोडती थी. शायद नीदमे भी नही. सडक पर चलते-चलते मिनट-मिनट मे लखनपाल और मोमदेव को वह कोहनी मारता, और होठ चटका कर किसी पासमे निकली प्रमदाको दिखाकर गर्वसे उधर अपना सिर फक कर कहता, 'तिस्स · कहता', "वाह, बाकी औरत है. देखा, क्या निगाहसे मुझे ेखनी थी. चाहूँ, तो चुटकी बजातेमे वह मेरी है ..".

उमकी यह उपहास्य कमजोरी सब पर विदिन थी. सब खुल कर उसकी इस आदनका मजाक उडाते थे. लेकिन उसे इसके लिए क्षमा भी कर देने थे. किसीको दिय अपने वचनके निर्वाहमे वह पक्का था. कुछ हो, मित्रताका ऋण चुकाने और किसीके काम आनेने वह विमुख न होना था यह साहस और दृढ़ता की देन उसमे प्रकृतिदत्त थी. इससे उस वह चरित्र की त्रुटि माफ थी और कहना होगा कि औरतों के मामलेम, दरअमल, वह खामा कामयाब था भी. टेलीफोन गर्ल्स, कोरस गर्ल्स, स्टोर मे कामकरनेवालियाँ, सीनेवालियाँ, आदि-आदि, उसकी चमकीली नीली-नीली आँखोकी झपती-सी, गहरी मीठी स्निग्ध निगाह की टकटकी के तले कुछ खोई घुल-सी रहती थी.

'इस आश्रम के उन सब अधिवासियोको जो निष्पाप और साधु-जीवन व्यतीत करने हे .." "सोमदेव ने धर्माचार्य की भाँति बोलना आरम्भ किया और देखा बात बन नही रही है कुछ झेप और अचरजमे पड कर भी अपने असमाप्त परिहासको जारी रखनेकी कोशिशमें वह आगे भी बढ़ा, बोला, "उपस्थित महानुभावो—" पर सहसा उसके मुँहसे निकला,..."अरे···क्यों .. यह...यह तो सोनिया है...नहीं, मैं

भूला, मैंडिया.. अरे नही-नही, हाँ, अन्नामरकानीकी लुबी...".

लुबी मारे लज्जाके गड़नेको हो गई आँखोमे आँसू भर आए और हथेलियों से उसने अपना मुँह ढँक लिया. लखनपालने यह देखा, इस लडकीकी आत्माको मथने वाली क्रीड़ाको समझा और सहायता पर प्रस्तुत हुआ.

बिना लिहाज बीचमे ही सोमदेवको रोक कर बोला, "सही पहचाना, सोमदेव. ऐसे सही कि जैसे— किताब यामकासवाली लुबी ही तो है. हाँ, पहले वेश्या थी पहले क्यों, कल तक वेश्या थी—. लेकिन, आजसे मेरी साथिन है, मेरी बहना इसलिए जिसे मेरी इज्जत मजूर है उसे इन्हें भी मानना होगा, इनका भी लिहाज रखना होगा नही तो .".

भारी भरकम सोमदेवने झटपट खुले दिलसे लखनपालको कसकर आलिंगन मे बाँध लिया. "बहुत ठीक है मेरे दोस्त बिल्कुल सही, ऐन दुरुस्त. बस, बस. मुझमे जल्दीमे बेवकूफी हो गई अब ऐसा न होगा. स्वागत बहन, स्वागत." कहनेके साथ उसने मेजके आरपार अपना हाथ बढाया और कुतरे नन्हे नहोंवाली उसकी बारीक और छोटी अचेत-सी पडी लुबीकी उगलियोको पकड कर दबाया. "बडी खुशी है कि तुम हमारे इस बे सरोसामान और गरीब झोपडेमे आई हो इससे हममे जिदगी आएगी, और हम सलीका सीखेगे. हममे अदब, इखलाक और इन्सानियत पैदा होगी. सिकन्दरा !" उसने चिल्लाकर कहा. "सिकन्दरा शराब·· हम जगली हो गए हैं शराब मे और काहिलीमे और, बकवास मे, और तरह-तरह की खुराफात मे दल दलकी मानिद हम फसे हैं वजह ? वजह यह कि हम महरूम हैं उसकी सगतसे जो हमारे बीच देवी हो. औरतोंकी सोहबतमे जो ताजगी, जबानी जो तन्दुरुस्ती, और खुश-इखलाकी नीरोगता मिलती, हमे वह कहा मिली ! मै फिर तुम्हारा हाथ दबाता हूँ, यह तुम्हारा सलोना खूबसूरत हाथ. ···· ऐ, शराब !"

"आ तो रही हूँ." दर्वाजेके दूसरी ओरसे सिकन्दरा की झनझनाती आवाज सुनाई दी, "आती तो हूँ, चिल्ला क्यो रहे हो? कितनी चाहिए?"

कितनी चाहिए यह बताने सोमदेव बरामदे की तरफ बढ़ा, कि

लखनपाल उसके प्रति कृतज्ञता पूर्वक मुस्कराया. यह देख जाते-जाते ज्योर्जियनने उसे कन्धे पर थपका कर धन्यवाद दिया. दोनोंने सोमदेव की इस, यद्यपि तनिक विलम्बित और सामान्य फिर भी, हार्दिक शालीनता को समझा.

लौटकर सोमदेव आया और सावधानीके साथ एक पुरानी कुर्सी पर बैठकर बोला, "अच्छा, अच्छा, अब कामकी बात हो बताओ, मैं अभी तुम लोगोंकी क्या खिदमत कर सकता हूं. आध घण्टे का वक्त दो तो जरा एक मिनट के लिये काफी हाउस की दौड़ लगा आऊँ जो बढ़से बढ़ कर शतरंजका खिलाड़ी वहाँ होगा उन्हीं हजरतको दमभरमें खाली करके लौटता हूँ. यानी यों समझो कि सब तरह यह बंदा ताबेदार है और हाजिर है"

"आप तो खूब [illegible] आदमी हैं !" लुवी बोली. वह हंस रही थी और अपने आपमें विश्वस्त न थी. इस विद्यार्थीकी बातचीतकी शैलीको उसने पूरी तरह तो न समझा, पर कुछ था जिसने उसके अकृत्रिम हृदय को उसकी ओर सद्भावसे उन्मुख कर दिया

'नहीं नहीं, उसकी कुछ जरूरत नहीं," लखनपाल बीचमें बोला "पैसा तो अभी मेरे पास खाने का खजाना है. मैं सोचता हूँ चलो, हम सब कहीं आसपास-खाने पीनेकी जगह चलें. मुझे कुछ चीजों के बारेमें तुम लोगोंसे जरूरी मशवरा भी करना है तुम्हीं लोगों तक मेरी पहुंच है. और तुम लोग, ऊपरसे कुछ बनो और दीखो, मैं जानता हूँ ऐसे मूरख और नातजुर्बेकार भी नहीं हो. उसके बाद मैं फिर इनके इनके पास-पोर्टके बन्दोबस्त में लगूँगा तुम इतने यहाँ ठहरना. बहुत देर न लगेगी .. मुख्तसरन समझते तो हो कि इस सबके क्या मानी हैं ? और तुम अब फिजूल मजाकमें वक्त बरबाद न करना. मैं-मैं" उसकी आवाज भावातिरेक के कारण काँप गई, पर उसमें कहीं मिथ्याभावका सश्लेश भी न था. "मैं चाहता हूं मेरी चिन्ताका कुछ भाग तुम लोग भी बाट लो. बोलो, पक्की ठहरती है ?"

"पक्की, बिल्कुल पक्की," प्रिन्सने कहा और अकारण, पर सकारण,

उसने लुवीकी तरफ देखा और उसके हाथ मूछोके सिरे ऊपरी मरोडने लगे. लखनपालने आखोके किनारोसे उसे देखा. सोमदेवने साफदिलीसे कहा "सही बात है. तुमने कुछ भारी जिम्मेवरी उठा ली है प्रिन्सने रात मुझे उसके बारे मे बताया था. मै कहता हूँ, तारुण्य क्या है ? अगर हम कोई इस तरहकी पवित्र मूर्खता नही कर सकते तो हम तरुण क्यो है ? इधर लाओ बोतल, सिकन्दरा. नही मै खुद खोल लूंगा. तुम अपने कही मार न लो एक नवीन जीवनकी ओर–लुवी, क्षमा करना, क्या, ल्यूब··· ल्यूबोब ?···".

"निकोनवना पर जो कहते हो, वही ठीक है, काफी है · लुवी ही कहो."

"अच्छा, हाँ लुवी. प्रिन्स अल्लावर्दी".

"वाह बहादुर", नेजरसने उत्तर दिया और अपने भरे गिलासको उसके साथ बजाया.

"और मै यह भी कहूँगा, मित्र लखनपाल, कि तुम्हारे प्रति भी हम कृतज्ञ है, आभारी है, आनन्दित है". सोमदेवने गिलास मेज पर रखकर और मूछो पर जीभ फिराकर कहना जारी रक्खा "आनन्दित है और तुम्हारे सामने नतमस्तक है. तुम, तुम्ही अकेले हो जो इस सच्ची रशियन उत्सर्ग वृत्तिको, आदर्शवादको, इस तरह सीधे सादे ढग से, बिना शर्त, बिना दंभ, बिना प्रशसा, यो कार्यमे परिणत कर सकते हो—".

"छोडो, छोडो बलिदान उत्सर्ग की भला क्या बात है ?" लखनपालने खट्टा मुँह बना कर कहा.

"ठीक तो है" नेजरसने कहा,"तुम मुझे हमेशा कहते हो कि मै बहुत बोलता हूँ. अब देखो, तुम्ही कैसी बढ-चढ कर हाँक रहे हो".

"अँह, सो क्यो ? इससे कोई फर्क नही पडता", सोमदेवने उत्तर दिया."शब्द बहुत शानदार रहे भी तो उससे फर्क क्या पडता है अपने इस दरिद्रावासके सघके सबसे वयप्राप्त सदस्यकी हैसियतसे मै घोषित करता हूँ कि लुवी अबसे पूर्ण अधिकारोके साथ उसकी एक प्रतिष्ठित सदस्या है". वह खड़ा हो गया, हाथको दूरतक हवामे तैराया और भाव भरे

स्वरमें दुहराया—

ओर आओ सुंदरी,
मुक्त और निर्भय,
घर तुम्हारा है,
तुम्हारे स्वागत में प्रस्तुत.
आओ —अंदर आओ.

लिखोनिनने भली भाँति याद किया कि आज ही सबेरे इसी पद्यको एक अभिनेताकी भाँति उसने भी दोहराया था और उसकी आँखें शर्मसे झिप आई.

"बस-बस, तमाशा बहुत हुआ. हमें अब चलना चाहिए. कपड़े पहन लो, लुबी".

१४

रेस्ट्राँ 'स्पेरोज' वहाँसे दूर न था. यही कोई दो सौ कदम होगा. राहमें लुबाने औरोंके अनदेखे लखनपालके कोटकी आस्तीन पकड़कर अपनी तरफ खींचा. इस तरह जरा यह दोनों पीछे रह गए और सोमदेव और नेजरस आगे बढ गए उसने अपनी काली प्रश्नवाचक आखें लखनपाल की ओर उठाकर करुण और अविश्वस्त भावसे पूछा, "तो प्यारे, तुम्हारा क्या सचमुच यह मतलब है, और तुम सचमुच मेरे साथ मजाक नहीं कर रहे हो ?"

"मजाककी बात क्या करती हो, लुबी. अगर मैं ऐसी मजाक करूँ तो मुझसे नीच आदमी और कौन होगा ? मैं फिर कहता हूँ, अपने मित्र भाई और अभिभावक से भी अधिक मुझे मानो. और छोड़ो, इन बातों को अब मत उठाओ. और जो आज सबेरे हममे हो गया है, तुम विश्वास मानो, अब फिर कभी न होगा, और मैं आज ही तुम्हारे लिए एक दूसरा मकान किराए ले लूँगा."

लुबी आह भर कर रह गई. यह नहीं कि लखनपालके इस पवित्र

सकल्प पर उसे शंक था. और सच तो यह है कि उसकी इस बातमे उसे कुछ कच्चा-पक्का सा ही भरोसा था पर बात यह थी कि उसका अन्धेरा, संकीर्ण दिमाग किसी तरह भी पुरुष और स्त्रीके मध्य इन्द्रिय विषयके सम्बन्धके अतिरिक्त कोई और सम्बन्धकी कल्पना तक नही कर सकता था फिर, जिसका प्रेम स्वीकृति नही पा सका है वह, और जिसका प्रेम परिणय बद्ध हो गया है वह भी इन दोना प्रकारकी स्त्रियोमे जो सनातन भावमे एक असन्तोष विद्यमान रहता है वह भी इसमे था यही असन्तोष जो अन्नासरकानीके यहाँ प्रमदाआकी आपसकी चढा बढी और प्रति-स्पर्धा के रूपमे प्रगट होता था, अब जरा मद्धम पड गया था वही यहाँ अब छिडकर उत्तप्त हो गया किसी अज्ञात प्ररणासे लखनपालके शब्दोमे उसे पूरी तरह विश्वास नही जमता था उन शब्दोमे जो कही असत् मिथ्या दभका आभास था मानो अनायास वही उसके दुर्लक्ष्यकी पकडमे पडता था जो कही सोमदत्त होता तो उसके शब्दोका लुईको ज्यादा भरोसा हो सकता यो तो सभी लडके आपसमे, या स्त्रियोको पास पाकर, या होटल और रेस्ट्राके किसी कमरेमे इकट्ठे होकर एकसी ही अनर्गल सच-झूठ कहते, दूनकी हाकते और वैसाही व्यवहार करते थे. फिरभी सोमदत्तका विश्वास वह कही आसानी और रजामन्दीके साथ कर सकी थी. चेहरे पर दूर दूर लगी उसकी चमकीली भूरी आखोमे कुछ एक ऐसा ही निश्छल आनन्दका भाव खलता रहता था

'स्पेरोज' मे लखनपाल अपनी नेकनीयती, भलमनसाहत, और जिम्मेदारीके एहसासके लिए माना जाता था पैसेके मामलेमे उसकी बेदाग ईमानदारी का यहाँ सिक्का था इसलिए आते ही अलहदा एक खास कमरा उसे दे दिया गया. लडकोमे बहुत कम थे जिनका ऐसा लिहाज वहा रक्खा जाता हो. उस कमरेमे दिनभर बत्ती जलती रहती थी, क्योकि वहा रोशनी आनेका दूसरा मार्ग बस एक छोटी नीची खिडकी थी वहाँसे बाहर चलते लोगोके जूते, छतरिया या छडिया दीखा करती थी.

अपनेमे उन्हे एक और विद्यार्थी साम वाल्तोको भी शामिल करना पड़ा. बाहरके कमरे मे अचानक इन लोगोकी उससे मुठभेड हो गई थी

लुवीने सोचा, यह मुझे जैसे तमाशा-सा बनाकर लिए डोल रहे हैं. इसमें इनका मतलब क्या है ? मालूम होता है अपने को जरा दिखाना भी चाहते हैं. और अवकाश पाकर लखनपालके कानमें उसने कहा, "लेकिन प्यारे, यह इतने सारे और लोग यहाँ किस लिए हैं मुझे लाज आती है इतने लोगोंके सामने मैं कैसे बैठूं ?"

"ओह, यह कुछ नहीं, कोई बात नहीं. मेरी प्यारी लुवी" कमरेके दरवाजे पर ठिठक कर जल्दी-जल्दी लखनपालने उससे कहा, "कोई बात नहीं, मेरी प्यारी बहन. ये सब नेक आदमी हैं, मेरे अन्तरग साथी हैं वे तुम्हारी मदद करेंगे, हम दोनोंकी मदद करेंगे. कभी-कभी यह मजाक करें या कुछ अनकहनी कहें या डींगकी हांकें तो बुरा न मानना. दिल उनका खरा सोना है, सोना".

"लेकिन यह मुझे अजब लगता है. मुझे तो शर्म आती है. और ये सब जानते हैं कि तुम मुझे कहाँ से लाए हो".

"ओह सो क्या बात है. कोई बात नहीं जानते हैं तो जानने दो" लखनपालने स्निग्ध भावसे उत्तर दिया, "अपने अतीतसे घबराओ क्यों? उससे चुप-चाप बचकर चलना क्यों चाहो ? सात भरम तुम देखोगी कि हिम्मतके साथ हर एक आदमीकी आँखोंमें सीधे भरपूर देखकर तुम कह सकती हो, जो गिरता है वही उठता है. गिरा नहीं वह कब उठा है ? आओ, लुवी आओ".

जब छोटी-मोटी यों ही शुरूआतकी चीजें मेज पर परसी जा रहीं थीं और हर कोई कुछ-न-कुछ फरमायश पेश कर रहा था, तब सोम वास्ती को छोड़कर और सब अन्दर ही अन्दर कुछ संकोचमें थे, प्रकृतिस्थ न थे. और सोम वास्ती ही किसी कदर उसकी वजह था वह हमेशा क्लीन शेव्ड रहता था; बड़ी उठी लाल नाक पर पिंसनेज, सिर सतर और जरा पीछेको फिंका हुआ, और बन्द ओठोंके किनारे पर गभीर उपेक्षाकी छाप. अपने साथियोंमें उसका कोई बेतकल्लुफ, हार्दिक और अन्तरंग मित्र न था. उसकी बात का वजन था और राय का महत्त्व. उसकी एक धाक थी. इसमें सन्देह था कि उनमेंसे कोई बता सकता था कि इस

धाकका कारण क्या है. जो और लोग चाहते और मानते हैं पर स्पष्ट नहीं कर पाते, उसीको रूप और शब्द देकर सामने रख देनेकी क्षमताके कारण यह बात थी, या इस वजहसे कि वह अपनी बातोको ठीक उपयुक्त अवसरके लिए बचा छोड़ता था—यह कोई ठीक न जानता था. किसी भी सोसाइटीमें इस तरहके बहुत लोग मिलेंगे. कोई उनमें अपनी दोहरी, अहंपूर्ण आदतों से अपना असर पैदा कर लेते हैं, कुछ अपनी बात पर ज़िद करके; कुछ केवल ज़ोरसे डपट कर बोलनेकी वजहसे ही; चौथे औरोंको नीचे गिराकर और सबको बुरा भला कह कर; पाँचवें, सिर्फ मौनसे, जिसके पीछे लोग समझते हो, जाने कितना प्रौढ़ चिन्तन है; छठे वाचाल मुखर पांडित्य दिखा कर; कोई तीखी, विषैली जीभ से; और कुछ और अपने विरोधीकी बातों को उपेक्षापूर्ण क्लिष्ट मुस्कुराहट से टाल देनेकी आदतके कारण...कुछ लोग अपनी कार्यसिद्धि उस राह से करते हैं जिसमें घृणा ही अस्त्र है और उसकी व्यंजना ही भाषा है. कोई बात हो, वह अत्यन्त अनादर उपेक्षा पूर्वक उत्तर देंगे, 'अँह!' बात सच्ची हो, सही हो, सीधी हो, वह कहेंगे, 'ऊँह'. क्यों भई, यह 'अँह क्यों?' वह कन्धे उचका कर कहेंगे 'वह भी कुछ बात है? वाहियात, निकम्मी, अँह ! वाहियात निकम्मी शि:.'जैसे कि वह यह 'अँह' का गुम्मा पत्थर किसीके सिर पर देकर मारते हैं, तो उस पर बड़ा एहसान करते हैं. और भी इस तरहके बहुतसे लोग हैं जो विनयशील, संकोचशील निरभिमानी और कभी-कभी महान् विचारशील लोगों पर भी अपना बड़प्पन जमाये हुए समाजमें दिखाई देते हैं. इन्हीमेंसे एक सोम वास्ती था.

तो भी खाते-पीते संकोच कम हुआ और सबकी जबानें खुल गई.बस लुवी ही चुप थी. 'हां' और 'ना' से अधिक वह कुछ न बोलती थी. और उसके सामनेका खाना ज्योंका त्यो पड़ा था. लखनपाल, सोमदेव, नेजरस सबसे ज्यादा बोल रहे थे. लखनपाल'निर्णायक भावमें काम-काजी आदमी जैसी बात कर रहा था. भीतरमें क्लेश देता हुआ, नुकीला वास्तव कुछ और था,जिसे शिष्ट और लच्छेनुमा शब्दोसे वह मानो ढकनेकी चेष्टा कर रहा था. सोमदेव उत्सुक प्रसन्नतासे, पुष्कल अंग संचालनपूर्वक मेजको

मुक्कोमे मार मार कर प्रतिपादन कर रहा था, और नेजरम जरा दुविधासे, मानो जानता तो है पर कहता नही, कहनेका मौका नही समझता, इस तरह रुक-रुक कर थम-थम कर बात कर रहा था उस लडकीके अनोखे भाग्य और उसके भविष्यके चितनको लेकर ये सब लोग व्यस्त और विवादग्रस्त थे हर कोई अपनी बात कहते-कहते जाने किस कारण अनिवार्यरूपसे सहमति पानेकी आशासे सोम वास्तीकी तरफ मुखातिब होता था पर, अपनी नाक पर चढी पिसनेजमेसे उन्हे एक एकको देखकर वह अधिकतर मितभाषी ही बना रहता था, बोलता न था

"सो-सो, सो" मेजको अपनी उगलियो से बजाता हुआ, आखिरकार वह बोला, "लखनपालने जो किया उज्ज्वल है, आदरणीय, साहसपूर्ण. यह कि सोमदेव और प्रिस हाथ बढाकर उसमे मदद देग,यह भी धन्यवाद की बात है आप जो करे उसके लिए अपनी ओरसे भी मै अपना उद्यत सहयोग सहर्ष प्रस्तुत करता हू जितना बनेगा मै साथ हू लेकिन क्या यह अच्छा न होगा कि अपनी सखा, इस रमणीको अपने प्रकृतिदत्त झुकाव और अपनी क्षमताके अनुरूप मार्ग पर हम चलने देवे और चलावे." लुवीकी ओर मुडकर उसने कहा, "अच्छा, बताओ तो, तुम क्या-क्या जानती हो, क्या क्या कर सकती हो. कोई किसी तरहका काम. सीना, पिरोना, बुनना, कुछ काढना, या और कुछ ?"

"मै कहा कुछ जानती हू," लुवीने ओठो ओठो मे कहा उसकी आखें नीचे झुक गई तमाम देहमे वह लाल पड गई मेजके नाच अपनी उगलियोको एक दूसरेमे उलझाकर उन्हे मलती हुई बोली, 'मुझे आपकी बात समझ नही आ रही है."

"हाँ, ठीक तो है," लखनपालने बीचमे पडकर कहा,"हमने ही बात ठीक तरहसे नही उठाई. उसकी उपस्थितिमे उसके सम्बन्धमे चर्चा चला कर हम उसे सकोचमे डालते हे. देखो न, घबराहट मे उसकी जबान नही खुलती. आओ, लुवी, मै तुम्हें थोड़ी देरके लिए घर ले चलूं. वहांसे दस मिनटमे लौट आना. इधर हम तुम्हारे पीछे सोचे-साचेगे कि कैसे करना, क्या करना. ठीक है न ?"

बहुत धीमेसे लुवीने कहा, 'पूछते हो तो मैं अपने बारेमें कुछ नहीं जानती. जो तुम कहोगे, लखन, वही मैं करूंगी. पर मैं घर नहीं जाना चाहती."

"क्यों ? सो क्यों ?"

"अकेले वहां अच्छा नहीं लगता. अच्छा, इसमें तो कुछ हर्ज नहीं है कि मैं वहां बांधके पास दरवाजेमें पड़ी बेंचपर जाकर बैठ जाऊं. वहां मैं तुम्हारा इंतजार करूंगी."

"ओ हां, हां." लखनपालने सोचा, "सिकन्दराका, मालूम होता है, उसे डर बैठ गया है. चलकर मैं उस बुढ़ियाकी खबर लूंगा." कहा, "अच्छा, चलो लुवी."

कातर संकुचित लुवीने ज्यों त्यों अपना हाथ एक-एक करके सबकी ओर बढ़ाया और फिर लखनपालका हाथ थामकर चल पड़ी

कुछ मिनटों में वह लौटकर आ गया और अपनी जगह बैठ गया. उसे अनुभव हुआ कि उसके पीछे उसके बारेमें कुछ बातचीत हुई है और उसने संदिग्ध दृष्टिसे अपने साथियोंके चेहरे पर निगाह घुमाई. तब फिर मेजपर हाथ रखकर उसने कहना शुरू किया, "दोस्तो मैं जानता हूं आप सब मेरे भलेके और मेरे अंतरंगके मित्र हैं." उसने एक निगाह सोमवास्तीको देखा, "और कामके समय विमुख होनेवाले नहीं हैं. मैं दिलसे चाहता हूं कि आप इस वक्त मेरी मददको आएं. यह काम मैं कहूंगा, मुझसे जल्दीमें हो गया सही, लेकिन हृदयकी सत्य और पवित्र प्रेरणाके वशवर्ती होकर ही मैंने किया है."

"और यही मुख्य बात है," सोमदेवने बीचमें कहा.

"मेरे लिए सब एक जैसा है कि मेरे बारेमें अजनबी क्या कहते फिरते हैं, या परिचित लोग क्या चर्चा करते हैं. लेकिन, जो मेरा इरादा है, यह कि मैं एक पतित प्राणीको बचाऊं—ओह इस दंभके शब्दके लिए मुझे क्षमा कीजिए, जो यों ही निकल गया—नहीं बचाना नहीं, इस लड़कीको सान्त्वना दूं, उत्साह दूं, मौका दूं. इस अपने इरादेसे मैं इंकार नहीं कर सकता, उससे विमुख नहीं हो सकता. हां, उसके लिए,

एक छोटासा मदी लागतका कमरा अलग किराये ले दूं, शुरूमे खाने-पीनेके लिए उसका बन्दोबस्त कर दूं. यह मै कर सकता हूँ. लेकिन आगे क्या होगा ? यह सवाल है जहाँ दिक्कत आती है बात दर असल पैसेकी उतनी नही है. पैसा तो हमेशा मै उसके लिए कुछ न-कुछ जुटा ही सकता हूँ. लेकिन उसे लाचार करना कि वह खाए भी, पीए भी, रहे भी फिर भी कुछ न करे, यह तो उसे काहिल, सूने, निरानन्द और उपेक्षणीय हीन जीवनमे पटक देना होगा और आप लोग यह भी जानते है कि इसका अन्तमे परिणाम क्या होगा. इसलिए हमे उसके लिए कुछ-न-कुछ काम ढूंढ लेना चाहिए और यही बात है कि जिसपर हम सोचने की जरूरत है आप लोग कोशिश कीजिय, कुछ सोचिय, सलाह दीजिए "

सोम वास्तीने कहा, हमे पहले मालूम होना चाहिए कि वह किस कामके लायक है ! आखिर चकलेम जानसे पहले वह कुछ तो करती ही होगी '

निराश भावसे हाथ फैलाकर लखनपाल रह गया, कहा,"—यही समझिय कि कुछ भी नही एक देहाती अपढ लडकीकी तरह कपडोमे दो एक टाके बस लगा सकती है अजी, वह पन्द्रह बरसकी तो थी ही जब उसे सरकारी मुलाजिमने ले बिगाडा वह कमरा बुहार सकती है. कुछ धो मांज देगी बहुत कहो, कुछ रांध बांध लेगी ज्यादा तो कुछ नही जानती मै समझता हूं '

"इतना तो कुछ नही है...' सोम वास्तीने कहा और जीभ टिटकाई "और तिसपर वह एकदम अपढ"

सोमदेवने पक्ष लेकर कहा, 'लेकिन पढना लिखना कोई बिल्कुल जरूरी बात तो नही है अगर इसकी जगह कोई अच्छी पढी लिखी होती या परमात्मा न करे कोई आधी पढी होती, तब जो कुछ हम करनेकी सोच रहे हं उसका कुछ फल न निकलता, साबुनके बबूलेकी तरह सब फूट जाता और अब हमारे सामने अछूती बिन-बोई धरती की तरह क्वारी लड़की है".

"ही-ई-ई..." नेजरसने द्विविध भावसे हिनहिना दिया.

इस बार निरे मज़ाकमे नही, सत्संकल्पसे भरा हुआ सोमदेव यह बात कह रहा था. सच्चे गुस्सेमे झल्ला कर वह नेजरसपर टूट कर पड़ा, "सुनो प्रिन्स, हर चीज तुम बुरी बना सकते हो. हर पवित्र विचार, हर नए विचारका मजाक उड सकता है. उसे उपहास्य, उसे लांछनीय बनाया जा सकता है इसमें देर नही लगती. न यह कुछ बहुत चतुराईकी बात है न इसमे बडप्पन है. जो हम करने जा रहे है, अगर तुम उसे इसी गधेकी तरह समझ सकते हो तो जाओ, वह दरवाजा है खुदा तुम्हारी खैर करे, हमसे दूर हो, जाओ".

अप्रतिभ होकर प्रिन्स बोला,—"और—और अभी हाल तुमने जो उस कमरेमे......",

"हाँ, मैने भी' सोमदेव एकदम ठण्डा और मुलायम पड गया "मैने भी बेवकूफी की और मुझे अफसोस है. लेकिन अब, –मै सहर्ष यह मानता हूँ कि लखनवीर आदमी है; बहादुर आदमी है, नेक आदमी है और मै अपनी तरफसे जो बने उसकी सहायता करनेको तैयार हूँ और मैं फिर कहता हूँ, पढना-लिखना गौण बात है यह तो खेल खेलमे आ जाता है और इस लडकीके जैसे अविकृत मस्तिष्क व्यक्तिके लिए पढना-लिखना और गिनती सीखना, और खास कर ऐसी हालतमे जब स्कूलकी पाबन्दी नही अपनी निजकी प्रेरणा ही अवलब हो, ऐसा सहल है जैसा-जैसा कि एक चिकनी सुपारीको दाँतमे तोड कर दो कर देना और दस्तकारीकी जो बात है ऐसा कोई काम जिसमे आदमीका गुजारा चल जाए और जीवन सभव हो जाए सो क्या, सैकडो छोटे-मोटे ऐसे व्यवसाय है जो दो हफ्तेमे अच्छी तरह सीख लिये जा सकते है.

"जैसे – ?" प्रिन्सने पूछा.

"जैसे जैसे ...जैसे यही समझो, नकली फूल बनाना. या इससे आगे, फिर– जैसे कही फूलवालेके यहाँ क्लर्कीका काम. क्या खूब काम है. साफ और सुथरा".

"इसके लिए टेस्ट चाहिए", सोमदेवने लापरवाहीसे कहा.

"टेस्ट कोई पैदा होते ही नहीं ग्रा जाता. न कोई योग्यता जन्मसे हो जाती है. ऐसा हो, तो काबलीयत ग्रौर प्रतिभा बस कुलीन ग्रौर बड़े घरानोंमें ही हुग्रा करे. ग्रार्टिस्ट फिर ग्रार्टिस्ट कुटुम्ब-मेंसे ही हों, गायक गायकोंमेंसे. लेकिन ऐसा देखनेमें नहीं ग्राता. खैर, मैं विवाद नहीं करूंगा. न फूलका सही ग्रौर काम सही. जैसे ग्रभी कुछ दिन हुए, जाते-जाते एक स्टोरकी बाहर की खिड़कीमेंसे मैंने देखा—कि एक मिस बैठी सामने मशीन रक्खे उसे पैरोंसे चला रही है—".

"वाह, फिर वही तुम्हारी मशीन ग्रा गई" हंसकर लखनपालकी ग्रोर देखकर प्रिन्सने कहा.

"चुप करो, नेजरस" संयत किन्तु दृढ़ भावसे लखनपालने उत्तर दिया, "तुम्हें शर्म ग्रानी चाहिए".

'गधा !' सोमदत्तन उसकी तरफ मानो फेंककर यह कहा ग्रौर कहना जारी रखा "हाँ तो मशीन फिरती थी; ग्रागे पीछे होती थी. उसके नीचे एक चौखूटा फ्रेम बिछा था जिसमें कपडा तना हुग्रा फैला था. मालूम नहीं कैसे क्या हो जाता था, मैं उसे ठीक तरह नहीं समझ पाया वह ऊपर चुटकीमें लोहेकी जाने क्या चीज पकड़े, जाने किस-किस तरह घुमाती थी कि नीचे रेशमी कपडे पर वह रंग बिरंगी कढ़ाई खिंच ग्राती कि वाह ! सोचो तो जरा देरमें देखते-देखते उस कपडेपर एक नीली झील ऊपर तैर ग्राती है ! उस झीलमें फिर नीलोफरके फूल लहर रहे हैं ग्रौर लाल कमल. ग्रौर भी तरह-तरहके फूल खिले हैं. चारों तरफ पेड़ हैं, घास है, बनस्पति है. ग्रौर झीलकी छातीपर दो सफेद हंस एक दूसरेकी ग्रोर तैरते हुए बढ़ रहे हैं. ग्रौर झीलके पीछे वह एक हरियाली घनी पाँतकी सड़क भी दीख रही है. ग्रौर यह सब कुछ ऐसा-ऐसा बना है कि सच्ची जीती तस्वीर ही हो. मुझे उसमें ऐसी दिलचस्पी हुई कि मैंने भीतर जाकर पूछा, इसके दाम क्या हैं. ग्रौर दाम कुछ भी खास ज्यादा न निकले. मामूली सीनेकी मशीनसे बस कुछ ही ज्यादा ग्रौर वह किस्तों पर ग्रदा कर सकते हो. ग्रौर उसका सीखना भी कुछ नहीं, जो सीनेकी मशीन चलाना जाने, एक घण्टेमें इसे भी सीख सकता है. जनाब,

जितने चाहें एक-से-एक खुशनुमा डिजाइन आप उससे निकाल लीजिए. और सबसे बढ़ कर बात तो यह कि इस काम की माँग खूब है. परदों पर, रुमालोंपर, लेम्पके शेडोंपर. और इसी तरहकी चीजोंपर ये डिजाइन खूब ही फबते हैं और इस काममें उजरत भी खासी मिलती है."

"हाँ, वह भी है," लखनपालने सहमत होकर कह दिया और चिन्ता पूर्वक अपनी दाढ़ी खुजलाई. "लेकिन, अपनी कहूँ तो मैं कुछ और सोचता था. मैं उसके लिए एक · एक छोटी-सी दुकान खोलना चाहता था. एक उपहार गृह, काफे, एक ढाबा-सा. पहले पहल बहुत छोटा-सा हो. उसमें खाना सफाईसे मिले और सस्ता और बढ़िया, क्योंकि इससे लड़कोंको कुछ मतलब नहीं रहता कि वे कहां खाते हैं, क्या खाते हैं. और अक्सर लड़कोंके खानेकी जगह आजकल इतनी भरी मिलती हैं कि वहां चलना-फिरना तक दूभर होता है. इस लिए मैं समझता हूं अपने दोस्तों और साथियोंको सबको यहां खींचकर बुला लानेमें कोई मुश्किल हमें न होगी."

"है तो ठीक, पर," प्रिन्सने कहा, "अव्यवहारिक भी है. शुरूसे हमें उधार खाता खोलना पड़ेगा और जैसे भले कर्ज अदा करने वाले हम लोग हैं, तुम जानते ही हो. एक पक्का दुनियादार आदमी, अजी एक धूर्त ही ऐसे कामके लिए चाहिए. और अगर औरत हो तो ऐसी चाहिए कि जिसके दांत लोहेके हों. और फिर उसकी निगरानीके लिए एक आदमी ऊपरसे और भी चाहिए. सचमुच लखनपालके बसकी यह बात नहीं है कि वह काउन्टर पर खड़ा देखता रहे कि खूब छक-पीकर कोई आदमी बिना पैसा दिए तो कहीं नहीं खिसका जा रहा है ?"

लखनपालने रोषपूर्वक सीधे उसकी तरफ देखा, पर मुंह भींचकर और चुप थामकर रह गया.

सोम वास्तीने अपनी तुली और नपी आवाजमें उँगलियोंसे पिन्सनेज के शीशोंसे खेलते हुए कहा, "सज्जनों, आपका संकल्प शुभ है. निर्विवाद प्रशंसनीय है. लेकिन आपको प्रश्नके दूसरे, कहिये कि तनिक कम उजले पहलूपर भी ध्यान देना होगा. क्योंकि ढाबा, खोलना या और कोई काम

शुरू करना, "न सबम पहले पैसेकी जरूरत है. और मददकी यानी बाहरी मददकी भी जरूरत है पैसेपर हम लोग हाथ नही भीचते, यह ठीक है. मैं वहा लखनपालमे महमत हूं और उन्हे धन्यवाद दूंगा लेकिन इस प्रकारके व्यवमायिक जीवनके आरम्भमे कि जब हर पगपर सब कुछ करा-कराया मिल जाता है, ऐसे आरम्भसे अन्तमे एक प्रकारकी अनिवार्य शिथिलता, लापरवाही, और पीछे जाकर काम धन्धेके प्रति ही उपेक्षाका भाव तो व्यक्तिम नही आ जायगा ? पचासो बार गिरे बिना बच्चा भी चलना नही मीखता नही, अगर आप इम बेचारी लडकीकी सचमुच महायता करना चाहते हैं, तो आपको चाहिए कि उसे मौका दें कि वह अपने पैरा खडी हो अपने उद्यमके बल वह बढे यानी मधुमक्खीकी तरह रानीगिरी सिखानेमे उसका हित नही. मानता हूं, प्रलोभन यहा बहुत है, परिश्रमका बोझ है, पैसे जरूरत है और भी दस बात लेकिन अगर वह उन्हे पार कर जायगी तो बाकी सब भी पार है

'तो आपके लिहाजमे उस क्या बनना चाहिए ?—बरतन माँजने वाली नौकरनी ?" अविश्वस्त सोमदेवने पूछा

"हा, वह भी मुस्तकिल," मोम वास्तीने जवाब दिया "माजने वाली, धोनेवाली, खाना पकाने वाली, या और कुछ. सब श्रम मनुष्यको ऊँचा उठाता है"

लखनपालने अपना सिर उठाया,"सोनेके शब्द हैं तुम्हारे मोम वास्नी, सोनके स्वय बृहस्पति तुम्हारे मुहमे बोलते हैं कहारिन, रसोईदारिन, नोकरानी, जो कहो ··लेकिन पहली बात यह है कि इसीमे शक है कि क्या वह इस सबके लायक भी है ? दूसरे नौकरानी वह पहले भी रह चुकी है तब दरवाजोकी ओटमे और जीनोके कोनोम या अकेले सुनसान मे वह मालिकके कृपा-कटाक्ष और छेड-छाड भी चख चुकी है मुझे बताओ कि क्या यह मुमकिन है कि आपको नही मालूम कि नब्वे फी सदी वेश्याये इन्ही नोकरानियोम से बनती हैं ? इस तरह तो यह बेचारी ल्यूबा फिर पहलेके जैसे अन्याय और बलात्कारको भुगत कर, अगर कुछ उससे भी बदतर न बना तो आसानी और तैयारीके साथ वही पहुँच

जायगी, जहाँसे बाहर निकालकर उसे मैं अभी लाया हूँ. क्योंकि वह उसकी आदी हो गई है और वहाँका आतंक उसे नहीं है. और कौन जानता है मालिकके निपट दुर्व्यवहारके बाद चकला उसके लिए वांछनीय ही न होगा. इसके अलावा मैं पूछूं कि इसमें कुछ भलाई है ? मतलब है ? एक गुलामीमें से निकलनेके बाद अगर किसी दूसरीमें ही उसे पटक देना है, तो मैं पूछना चाहता हूँ कि मेरे और हम सबके तकलीफ उठानेमें मतलब ? यहां हमारे सोचने विचारने और चिंचित होनेका अर्थ ? क्यों न हम सबको धता बताएं, यही बात तो हुई न ?"

"ठीक कहा"

सोमदेवने समर्थन किया.

सोम वास्तीने उपेक्षाकी जमुहाई ली और कहा,"—तो जैसा आप लोग चाहें".

"तो जहाँ तक मेरी बात है", प्रिन्स बोला "मैं दोस्त हूँ. और मुझे नया सब कुछ अच्छा लगता है. इससे इस प्रयोगमें सहायताके लिए मुझे प्रस्तुत समझें. मैं जरूर शामिल होनेको तैयार हूँ. लेकिन जैसे आज सबेरे भी मैंने कहा, मैं कहता हूँ कि ऐसे तजुर्बे पहले भी हुए हैं और सब बुरी तरह नाकाम रहे हैं. कम-से-कम वे तो नाकाम रहे ही जिन्हें हम जानते हैं. और जिनके बारेमें सुन कर जानते हैं, उनकी सफलता भी सन्दिग्ध है और प्रामाणिकता भी सन्दिग्ध है. लेकिन जब तुमने काम उठाया है—तो जरूर चलो और आगे बढो. हम तुम्हारे साथ होंगे".

लखनपालने ज़ोरसे अपना खुला हाथ मेज़ पर पटका, "नहीं" उसने ज़िदसे कहा, "सोम वास्तीकी बातमें सचाई भी है. किसीकी गर्दनमें रस्सी डाल कर लिए चलनेमें बड़ा खतरा भी है. लेकिन मुझे और राह भी नहीं दीखती. शुरूमें मैं उसके लिए कमरे और खानेका बन्दोबस्त तो कर दूंगा और...और कोई आसानसा काम भी तलाश कर दूंगा. फिर हो जो होना हो. तब हमें धीरे-धीरे उसकी बुद्धिके विकासमें अपना हिस्सा लेना होगा. उसका हृदय सुन्दर है, आत्मा स्वच्छ. इसका मुझे निश्चय है. फतवा तो मैं इस बारेमें क्या दे सकता हूँ, लेकिन उस विषय

मे मनमे मेरे बिल्कुल शक नहीं है. कह लो, मैं यह जानता हूं. नेजरस भांड़पन न करो" एकाएक पीला पड कर उसने चिल्ला कर कहा, "मैं तुम्हारी बेहूदा हरकतोंपर कई बार तरह दे गया हूं. गुस्सा आया है, पर जब्त करके रह गया हूं मैंने अब तक तुम्हें एक वैसा आदमी समझा जिसमें एहसास है, दिल है, अब कुछ बेजा मजाक तुमने की, तो, तुम्हारे बारेमे मुझे अपनी राय बदलनी होगी. और समझ लो कि हमेशा के लिए मेरी राय बुरी हो जायगी".

"क्यों ? मैंने क्या किया ? मेरा मतलब यह नही था, सच...और मेरे यार, एकदम ऐसे चहकते क्यो हो ? तुम नहीं अगर पसन्द करते कि मैं हमेशा खुशदिल-परशाद बना रहूँ, तो लो मैं चुप हूं. लाओ लखन, इसी बातपर अपना हाथ. आओ पीएं'.

"अच्छा, अच्छा. अब ठीक है. नहीं-नहीं, तुम वहां दूर ठीक हो लो, यह तुम्हारी तन्दुरुस्तीके नामपर. बस, यह शरारती बच्चेकी सी आदत छोडो. सुना न, औंधे बैल ! अच्छा तो मैं क्या कह रहा था, सज्जनो ? अगर हम लोग कोई ऐसा काम पा सकें जिससे परिश्रमके सन्मानके बारेकी सोम वास्तीकी उपयुक्त सम्मतिकी भी रक्षा हो जाय और बाहरमे हमें कम-से-कम सहारा देनेकी जरूरत पड़े; तो मैं अपनी बातपर पक्का रहूँगा. ल्युबाको जितना हो सके सिखाऊंगा. थिएटरोंमें व्याख्यानोमे, पब्लिक जल्सोंमे, अजायब घरोंमें उसे ले जाया करूंगा. किताबें पढ कर सगीत सुनाऊंगा; सगीत, समझमे आने लायक संगीत बहुत ऊंचा शास्त्रीय नही, सुननेका उसे अवसर दूंगा. अलबत्ता मैं अकेला यह सब नही कर सकूंगा मैं चाहता हूं आप लोग मेरी मदद करें. उसके बाद परमात्मा शुभ संकल्पका रक्षक है ही."

"हां, हां," सोम वास्तीने कहा, "काम नया है और रेखा गणितकी शक्ल-सा नपा तुला साफ भी नहीं है. फिर भवितव्यको कौन जान सकता है. लेकिन मुझे अचरज न होगा लखनपाल जब मैं पाऊं कि, एक प्राणी तुम्हारे आध्यात्मिक स्पर्शसे उद्धार पा गया है और नेकीकी तरफ आ लगा है. मेरी खिदमत भी हाजिर है.

"ग्रौर मैं"

"ग्रौर मैं भी", शेष दोनोंने भी कहा ग्रौर ठीक वहीं मेजपर बिना उठे चारों विद्यार्थियोंने मिलकर लुबीकी शिक्षा ग्रौर-बुद्धि विकासके लिए एक विशद सम्पूर्ण ग्रद्भुत कार्यक्रम रचकर खड़ा कर लिया.

लड़कीको व्याकरण ग्रौर सुलेख सिखानेका काम सोमदेवने ग्रपने ऊपर लिया. कठिन पाठोंकी भरमारसे वह एकदम थक न जाय, सो उसकी प्राथमिक सफलताग्रोंके पुरस्कारस्वरूप वह रूसी ग्रौर विदेशी भाषाग्रोंके सुबोध सरल पर कलामय ग्रौर उच्च उपन्यास पढकर उसे सुनाया करेगा. गणित भूगोल ग्रौर इतिहासका ग्रध्यापन लखनपालने ग्रपने ऊपर रखा.

प्रिंसने इस बार सदाकी तरह मखौलमें नहीं प्रत्युत हार्दिक ग्रौर तत्पर भावसे कहा, "ग्रौर मैं, भाइयो, मैं तो ग्राप जानते हैं, कुछ जानता नहीं. ग्रौर जो जानता हूं वह बुरी तरह जानता हू. मैं ग्रपने ऊपर लेता हूं कि उसे महान ज्योर्जियन कवि इसाबेलाकी ग्रनुपम रचना 'दी पेन्थर स्किन' पढकर सुनाया करूंगा, उसकी पंक्ति-पंक्ति ग्रनुवाद करके समझाया करूंगा. मैं ग्राप लोगोंके सामने मानता हूं कि किसी भी तरह बडा विद्वान मैं नहीं हूं. मैंने शिक्षक होना चाहा, लेकिन शिक्षणके दूसरे दिनसे मुझे निकाल बाहर किया गया. तो भी सितार ग्रौर बांसुरी ग्रौर दिलरुबा मुझसे ग्रच्छा कोई नहीं सिखा सकता."

नेजरस पूरे मनसे ग्रौर सचाईके साथ बात कर रहा था. इसलिए लखनपाल ग्रौर सोमदेव दोनों तबियतके साथ हंसे. सबको ग्रचम्भेमें डालकर सोम वास्तीने नितान्त ग्रप्रत्याशित समर्थन किया, कहा, "प्रिंस का कहना ठीक है. संगीतसे व्यक्तिमें सौन्दर्य-बोधका भाव उन्नत होता है, शारीरिकता मंद होती है, रुचि परिष्कृत होती है. जीवनमें उससे सहायता भी मिलती है ग्रौर मैं, सज्जनो...मैं ग्रपने लिए सोचता हूं कि मैं उस लड़कीके साथ मार्क्सके केपीटल ग्रौर मानव सभ्यताके इतिहासका पारायण चलाऊंगा. साथ-साथ रसायनशास्त्र, पदार्थ विज्ञान, विश्वविज्ञान ग्रौर राजनीतिक ग्रर्थशास्त्रका भी मैं उसे शिक्षण दूंगा."

अगर सोम वास्तीके व्यक्तित्वके प्रति एक प्रामाणिकता और धाकका भाव उनमे न होता और स्वय उसने अपनी बातको इस गुरुता और महत्त्वपूर्णताके साथ अदा न किया होता तो दोनो उसके मुंहपर हंस ही पड़ते अब वे उसकी तरफ आखे फैलाकर ताकते ही रह गए.

"हा, हा," बिना अप्रतिभ हुए सोम वास्तीने कहना जारी रखा, "मे रसायनिक और वैज्ञानिक तरह-तरहके प्रयोग, उसके सामने उपस्थित करूगा वे जो घरपर सरलतासे किये जा सकते हे, और जिनसे तबियत भी बहलती है, मस्तिष्क पुष्ट होता है और भ्रान्त धारणाए नष्ट हो जाती हे. इसी तरह उसे मे सृष्टिकी प्रक्रिया और उसके सगठनका रूप और परमाणुका महत्व समझाऊगा और कार्ल मार्क्सकी जहा तक बात है आपको समझना चाहिए कि बडी-बडी किताबें भी, क्या विद्वान और क्या प्रारम्भ कर्ता, सबके लिए एक-सी सुलभ हे बशर्ते कि समझानेवाला हो और सुबोधरूपमे उन्हे पेश कर सके और क्या मे कहू कि महान विचार सदा सरल होते हे"

लखनपालने लुबीको उसी निश्चित जगह बाघके पास बेंच पर पाया. अनमनी उसके साथ साथ वह घर गई जैसा लखनपालने समझा था, सिकन्दराके सामने पडते उसे डर लगता था, और उस बेचारीको इस तरहकी नित्य नैमित्तिक अप्रियताओको अगीकृत करके चलनेकी आदत अब न रह गई थी और फिर यह बात कि लखनपाल उसके अतीत जीवनको ढका नही रहने देना चाहता, उघाड-उघाडकर चलता है, उसे त्रास और आशकासे घेरे रहती थी लेकिन वह जो अन्ना मरकानीके आवासमे कभीसे अपनी निजकी इच्छा और अपने निजके व्यक्तित्वसे वचित रक्खी जाती रही थी, और जो हर किसीकी माँगपर उसके पीछे चल देना ही सीखी थी, इस समय भी कोई प्रतिवाद या विरोधका शब्द मुंहसे निकाल न सकी और चुपचाप लखनपालके पीछे-पीछे चलती रही.

धूर्त सिकन्दरा इस बीच छात्रावासके सुपरिन्टेन्डेन्टके पास जाकर

खूब कह सुन आई थी कि लखनपाल एक लड़कीको ले आया है और रात भर उसीके साथ कमरेमें रहा है. और यह और वह. भला यह सिकन्दरा क्या जाने कि वह कौन है, कौन नहीं ? लखनपाल ही कहता था कि कोई बहन सहन है. लेकिन उसका पास-पोर्ट तो उसने दिया नहीं. इस सुपरिन्टेन्डेन्टको सब बातें इतने विस्तारसे कहना जरूरी यों भी था कि यह उद्धत, बदतमीज आदमी जो हवेलीके और रहने वालोंकी तरफ ऐसे पेश आता था जैसे विजयी सेनापति अपने पैरों तले पड़े विजित नगरवासियों के साथ पेश आए, इन विद्यार्थियोंसे जरा चौंक कर ही रहता था. क्योंकि ये लड़के उसे कभी कुछ दुरुस्त बनाते रहा करते थे.

लखनपाल उसके सामने हुआ तो उसे आखिर तभी शांत कर पाया कि, जब अलग एक छोटासा कमरा लुवीके लिए और लेनेका उसने वचन दे दिया.

"लेकिन मिस्टर लखनपाल, देखिये कल जरूर उसका पासपोर्ट आप मौजूद कर दीजिये," चलते वक्त सुपरिन्टेन्डेन्टने आग्रहपूर्वक कहा। "आप बाइज्जत आदमी हैं और मेहनती हैं और हम लोग आपसमें पुराने वाकिफ हैं। किराया वक्तपर दे दिया कीजिये। आपहीकी खातिर मैं यह कर रहा हूँ, नहीं तो आप जानते ही हैं कि क्या बुरा वक्त है आज-कल. किसीने मेरी शिकायत कर दी तो न सिर्फ मेरी खबर ही ली जा सकती है, मुझे शहरसे निकाल भी दिया जा सकता है. और आजकल बड़े अफसरोंकी कड़ी निगाह है".

शामको लखनपालने लुवीको प्रिन्स पार्कमे घुमाया, एक बड़े क्लबमें जाकर उसे बाजा सुनवाया और घर जल्दी लौटकर आ गया. लुवीको उसके घरके दरवाजे तक पहुँचाकर वहींसे उससे रुखसत ली. तो भी, मानो पिता ही हो, मस्तक पर सस्नेह चुम्बन लिए बिना वह न रह सका.

लेकिन दस मिनटके बाद जब वह कपड़े उतारकर विस्तरमें लेटा सरकारी कानूनकी किताब पढ़ रहा था, लुवी उसके दरवाजेपर बिल्ली

की तरह खसोट कर कुछ आहट करनेके बाद, अचानक उसके कमरेमे घुस आई.

"मेरे प्यारे, तकलीफके लिए मुझे माफ करना, तुम्हारे पास सुई धागा है ?...नहीं मेरे ऊपर गुस्सा मत होओ, मै अभी चली जाती हूं".

"ल्युबा, मै तुमसे प्रार्थना करता हूँ तुम अभी, नही इसी घडी चली जाओ. मै तुमसे माँगता हूं .."

"मेरे प्यारे राजा बाबू, मेरे देवता", करुण और कुछ परिहास भीनी वाणीमे वह बोली, "तुम मुझसे हमेशा यो चिल्ला कर क्यो बोलते हो ?" और क्षण भरमे मोमबत्ती को फूकसे बुझाकर अन्धेरेमे जोरसे हँसती और कूजती हुई वह उसके बिस्तरमे ही आ दुबकी.

"नही ल्युबा, यह नही होगा ऐसे नही चलेगा —" दस मिनट बाद कम्बलमे लिपटा दरवाजे पर खडा लखनपाल कह रहा था, "अब ज्यादा-से-ज्यादा कल मे तुम्हे कही दूसरे मकानमे कमरा ले दूंगा. अबसे कभी ऐसा नही होने देना होगा. परमात्मा तुम्हारा भला करे. जाओ. जाओ, खुश रहो लेकिन मुझे वचन दो कि हमारा सम्बन्ध...बस सखा भावका होगा".

"मै देती हूं, मेरे पीतम. मै, देती हूँ, मै वचन देती हूँ". वह हँसती हुई बोली और चट पहले उसके ओठोपर और फिर उसके हाथपर उसने चूम लिया यह उसका कृत्य बिल्कुल आन्तरिक, हार्दिक स्वय लुबी के लिए एक दम अप्रत्याशित था. अब तक जीवनमे एक पादरीको छोड उसने किसी पुरुषका हाथ नहीं चूमा था शायद इस प्रकार लखनपालके प्रति, जैसे किसी लोकोत्तर पुरुषके प्रति हो, वह अपनी कृतज्ञता, अपना कृतार्थ समर्पण निवेदन करना चाहती थी.

१५

जैसा बहुतोके अनुभवमे आया है एशियाके बुद्धिजीवी वर्गमे काफी संख्यामे ऐसे व्यक्ति मिलते है जो असाधारण होते है, बिल्कुल अद्भुत.

मातृभूमिके गौरवके खरे नमूने, उसकी संस्कृतिके पुंज. वे लोग माथे पर बल आए बिना साहसके साथ मौतके मुँहमें घुस जा सकते हैं. उनमें शक्ति है कि एक संकल्पके खातिर अकल्पनीय कष्ट और मुसीबतें झेल सकें, लेकिन ये ही एक दरबानकी त्यौरी देखकर दुबक रहेंगे, नौकरानी की झिडक और डपटपर कांपने लगेंगे, और पुलिस थानेमें पहुंचते ही उनके दम खुश्क हो जायेंगे. इसी तरहका व्यक्ति था लखनपाल.' अगले रोज (पहले रोज तो छुट्टी और देर हो जानेके सबब यह संभव न हो सका था) सबेरे उठकर और यह याद करके कि आज लुवीके पासपोर्टका बन्दोबस्त करना है, उसका वह हाल हुआ जो छुटपनके हाई स्कूलके दिनोमे इम्तहानके लिए जाते वक्त हो जाता था. उसके मनमें धुक-धुक होता रहता था कि वह फेल ही होगा. अब भी उसका सिर दुख आया. उसे लगा कि जैसे यह हाथ, यह पैर उसके नही किसी और के हैं. तिसपर बाहर सडकपर सबेरे से लगातार कम्बख्त पानी बरस रहा था. सो धीमे-धीमें हठात् अपने कपडे पहनते हुए लखनपालने मन में कहा कि देखो, मुसीबत हुई कि तभी ऊपरसे यह पानी बरसने लगता है ! क्या आफत है !

उसकी जगहमे याम्सकाया कोई खास दूर न था. यही पाँच छह फर्लांगसे ज्यादा न होगा. वह वहाँ बहुत ही कम जाता हो सो भी न था. लेकिन कभी खुले दिनमे वहा पहुंचनेका साबका न हुआ था. सो रास्तेमें जब कोई मिलता, कोई पुलिस वाला या गाडी वाला, तो उसे रह-रहकर यही ख्याल होता कि वह उसको बडे गौरसे देख रहा है. उसे लगता कि जैसे सब जानते हैं कि वह कहां जा रहा है. जैसा अक्सर किसी मनहूस दिन बन जाया करता है, जो चेहरे उसके आखों आगे आए सब भद्दे, बेडोल जान पड़े. बार-बार कल्पनामें वह भीतर दोहरा रहा था कि वहा पहुँचकर क्या-क्या कहेगा और फिर पुलिस थानेमें जाकर कैसे क्या करूंगा. पर इस तरहकी कोशिशका परिणाम लगता कि उल्टा हो रहा है. अँह, तो पहलेसे आखिर ऐसा में क्यों सतर्क होऊँ ? ऐसी क्या आफत है? बलात् यह सोचता और अपनेसे ही नाराज बनकर

वह रास्तेमे ठिठक रहता

ऐँह, तुम्हे पहलेसे सोचनेकी, पहलेसे मान रखने की, कि वहाँ यह कहोगे, यह न कहोगे जरूरत क्या है ? सब पहलेसे कुछ तैयारी नही की जाती, तब अक्सर जो बात निकलती है, ठीक निकलती है.·····

पर, फिर उसके सिरमे वही कल्पनाजन्य अनुमानित वार्तालाप घूमना और धुनना शुरू हो जाता

"तुम्हे उस लडकीको उसकी मर्जीके खिलाफ रखनेका कोई हक नही है."

'जनाब, तो उसे अपने जानेकी मर्जी खुद जतलानी चाहिए मै उसीके कहनेसे यह कर रहा हूँ."

"माना. लेकिन तुम यह कैसे साबित कर सकते हो ?

और मनही मन उलझकर मानो उत्तर सोचता हुआ वह फिर अटक जाता

इसी तरह शहरकी वीरान पडी जमीन आई. गाय वहाँ खडी जुगाली कर रही है. घेरेके पासका लकडीका वही रास्ता आया, जो उसे याद है नालियो और नालोपर छोटे-छोटे पुल बने है जो उसके पैरो तले कापसे उठते है यहासे वह याम्सकायाकी तरफ मुड गया अन्ना मरकानीके यहाँकी सब खिडकिया बन्द थी बाकी चकलोमे भी सन्नाटा था जैसे सब उजड गया है, सो गया है. सकम्प हृदयमे उसने बाहरसे घण्टीकी रस्सी खीची

नंगे पैर दामन हाथोमे उठाए हाथमे भीगा लत्ता थामे मुह वाले बाल पर धूल लपेटे जवाबमे एक स्त्री आ मौजूद हुई वह इस वक्त अन्दर फर्श साफ कर रही थी

डरते हुए विनम्र भावसे लखनपालने कहा, "मै जेनीसे मिलना चाहता हूँ".

"जी, मिस जनी खाली नही है उनके मुलाकाती अभी सोनेसे जगे नही है".

"अच्छा तो तिमिरा".

स्त्रीने तनिक अविश्वस्त दृष्टिसे उसकी ओर देखा, "मिस तिमिरा. मैं ठीक जानती नहीं ..मैं समझती हूँ, वह भी खाली नही है. लेकिन आपको क्या चाहिए ? मुलाकातके लिए आए है या ?"

"जो समझो । अच्छा कहो, मुलाकातके लिए आए हैं".

"मुझे मालूम नहीं मै जाकर देखती हूँ. जरा ठहरिये".

लखनपालको उस धुँधले प्रकाशसे मैले ड्राइंग रूममे छोडकर वह चली गई. रोशनदानोंके शीशोंमेंसे आती हुई रोशनीकी कुछ लकीरें इस भारी अन्धेरेको इधर-से-उधर भेद रही थीं. वहाँ रक्खा रंगा और चिकना फर्नीचर और जैसे पसीनेसे भीगी भारी तस्वीरें और अन्य सामान—सब मिलाकर मानो किसी व्यंतर लोकका आभास दे रहे थे. कोई जैसे भुतही जगह हो. वहाँ कलके तम्बाकूकी सीलनकी खट्टी बास सी भरी थी. और जाने कैसी एक मलिन अकथनीय अमानुषी गन्ध वहाँ से निकल रही थी. जैसे खाली नाटक घर, नाच घर आदि होते है न. वहाँ यो आदमी रहते नही, पर मौके-ब-मौके सैकडोंकी भीड जमा हो जाती है ! तो सवेरेके बंद दर्वाजोंको खोलते वक्त अंदर पहुँचकर हब्स से कैसा दम घुटता सा मालूम होता है. वैसा ही यहाँ था. शहरमे कहीं दूर, रह-रह कर किसी जाती गाडीकी खड़-खड आवाज आ रही थी. दीवारपर घडी सोती टिक-टिक कर रही थी. उद्विग्न और उत्तेजित अवस्थामें, लखनपाल इस ड्राइंग रूममें दोनो हाथोको रगडता और मलता हुआ टहलने लगा. जाने क्यो उसे वहाँ सर्दीसी लगी, और वह वहाँ सतर होकर नही चल सका

'मुझे सच, यह सब ज़हमत उठानी ही क्यो चाहिए थी' झल्लाहटके साथ मन-ही-मन उसने कहा. 'यह कहनेसे अब क्या बनता है कि सारी यूनीवर्सिटीमे जहाँ देखो मेरी ही चर्चा है, सब शैतानकी कारवाही है. और कल-दिन तक भी क्या विगडा था. वह कह ही रही थी मुझे वापस पहुँचा दो मैंने पहुँचा क्यो न दिया? मुझे करना ही क्या था. उसे गाड़ीके पैसे दे देता, दो-चार ऊपरसे और. वह चली जाती और सब ठीक-ठाक हो गया होता. बखेड़ा टलता और किस्सा खतम. मै इस वक्त

अपने आज़ाद होता, स्वच्छन्द होता. यह बबाल, यह आफत, यह परेशानी तो सिरपर सवार न होती. लेकिन अब मुड़नेका वक्त कहाँ है ? और कल और भी नही, और परसो और भी नही, और फिर - बिल्कुल नही. एक बेवकूफी कर गुजरे हो तो उसे फौरन रोक देना चाहिए। पर, अब वक्त निकल गया है. अब तो उधर ही बढ़े चलो, तब चले एक झूठ किया है तो दो और, और उनके बाद बीस और, और.... लेकिन क्यों ? अभी ऐसा सब क्या बिगड़ गया है. वह बेचारी अनजान है. कच्ची बुद्धि जैसे पगली ही न हो. जैसे उस जैसी और होती है, वह भी बिचारी जानवर है. बस खाकर पेट भर लिया और मर्दके साथ खाट पर लेट रही. पर ओह, मैं यह क्या सोचता हूँ ? मैं—'दोनों हाथोंके बीचमें लेकर जोरसे उसने अपनी कनपटी और माथेको दबाया और आँखे बन्द कर ली, मै अगर उस काम, पाप, भोग प्रलोभनसे बचता ? देखो', वह अपने आपमें कह रहा था "देखो, अभी यह दो बार हो चुका है और फिर होगा, और फिर और फिर···"

और साथ साथ उनके प्रतिकूल विचार भी उसके सिरमें दौड़ रहे थे.

"लेकिन क्यों ? मैं आदमी हूँ मैं अपने शब्दका स्रष्टा हूँ, भाग्यका विधाता हूँ. क्या वह प्रेरणा जिसने मुझे इस कृत्यकी ओर प्रेरित किया महान् न थी, प्रशस्त न थी, उज्वल न थी ? मैं जानता हूँ कैसा विमल आनन्द मुझे उस क्षण अनुभव हुआ जब यह सत्प्रेरणा कृत्यमें उतरी ? वह कैसी निर्मल, प्रबल, अनुभति थी या वह सिर्फ मदसे उत्तेजित मस्तिष्ककी एक अतिरंजित भ्रान्ति थी ? एक मरीचिका माया ? या रातभर की लम्बी तात्विक चर्चाका और निन्द्राहीन रात और थकित शिथिलावस्थाका यह परिणाम था ?"

और तभी उसके सामने अनन्त दूर, कालके अवगाहनके पारमेंसे मानो उठती हुई लुबीकी मूर्ति उसके सामने आ ठहरती. सकुचित, स्नेहाकांक्षासे कातर सलौनी और सुन्दर वह लुबी, जो अविलम्ब उससे घनिष्ट और सन्निकट हो गई. चिरपरिचित, चिरप्राप्त. किन्तु तभी अकारण

और अविहित भावसे वह उसे कुत्सित और जघान्य भी लगी.

"क्या ? क्या यह है, कि मैं कायर हूँ ? निकम्मा हूँ?" भीतर उसके चीख उठी और उसने जोरसे अपने हाथ मले. 'मुझे किसका भय है ? किससे संकोच किसकी आशंका ? क्या मैंने स्वयं अपने भाग्यका मालिक होने का सदा गर्व नही किया ? मान लो एक स्वप्न, एक कल्पना एक सूझ ही थी ? मानवीय आत्माके साथ, एक मनस्तत्व सबन्धी प्रयोग—वैसे आश्चर्य कर विरल प्रयोगोंमेसे एक प्रयोग जो सौमें निन्यानवे असफल होते है मान लो वैसे प्रयोगकी ही बात मेरे मनमे उठी, तो भी क्या ? क्या यह जरूरी है कि इसका हिसाब मुझे किसी को देना ही हो? किसीकी ओर मुझे देखना ही हो ? किसीकी सम्मतिका लिहाज या डर मुझे करना ही हो ? लखनपाल, ऊँचे रहो. उच्चासीन हो मनुष्य जातिको देखो".

जेनी कमरेमे आई. अस्त-व्यस्त, निदासी, रातके ही कपड़ोंमें वह आई और जमुहाई लेते हुए उसने अपना हाथ लखनपालकी तरफ बढ़ाया, "कहो बाबू क्या हाल है ? अपने नए घरमें हमारी ल्युबा कैसी है ? कभी हमको दावत नही दोगे ? या चुपचाप अपने सुहागके दिन लूटनेका इरादा है, कि कहीं कोई बाँट न ले."

"बकवास छोडो, जेनी. मै पासपोर्टके बारेमें आया हूँ".

"सो——पासपोर्टके बारे मे?"

जेनी विचारमे पड़ गई, "यहाँ तो पासपोर्ट है नहीं. तुम्हे यहाँसे एक खाली फार्म ले जाना होगा. समझे न? हमारा वेश्या वाला तिकोना. फिर शहर कोतवालीमे उसे दाखिल करना होगा. एवजमें वहीं से तुम्हें सही पासपोर्ट मिलेगा. पर देखो इस काममें मै तुम्हारी ज्यादा मदद नही कर सकती. क्या जाने वे मालिक लोग इस मामलेको सूंघ लें, और कुछ देखें, तो मारपीट बैठे. लेकिन मै बताती हूँ सो करो. अच्छा हो, नोकरानीको संरक्षिकाके पास भेजो. उससे कहना कि कहे, कोई कामसे तुमसे मिलने आए हैं, कहे कि एक गाहक है, बंधे थोक गाहक है. और यह कि मिलना बहुत जरूरी है. लेकिन मुझे इसमेसे दूर ही रहने दो. और

देखो, नाराज न हो. तुम खुद जानते हो भलाई घरसे शुरू होनी चाहिए. लेकिन यहाँ अकेले अन्धेरेमें क्यों खड़े हो, चलो, वहाँ कमरेमें चलो. कहो तो मैं तुम्हें वहाँ बीअर भेज दूँ. या शायद तुम काफी पसन्द करोगे ? और या"—उसकी आँखें व्यंग और शरारतमें चमक आई, "या कहो, किसी नई नवेलीको भेज दूँ ? तिमिरा तो खाली है नहीं. लेकिन शायद नूरी या बर्कासे काम चल जाय—".

"चुप करो, जेनी. मैं यहाँ कामकी जरूरतमें आया हूँ और···".

"अच्छा-अच्छा, तो मैं नहीं कहती, मैं नहीं कहती मैंने तो यूँ ही कह दिया था. देखती हूँ कि तुम पत निबाहोगे. यह बड़ी बात है. अच्छा, तो चलो—" वह उसे कमरेमें ले गई और भीतरसे खिड़कीको पूरा खोल दिया. दिनकी धूप जैसे खिन्न अलस चपचुपाते भावसे सुनहरी और गुलाबी दीवारों, फानूसोंपर मुलायम, लाल और मखमली फर्नीचर पर छलक कर बिखर गई

लखनपालने मनस्तापपूर्वक याद किया—कि यही, ठीक यहीं, उसकी शुरुआत हुई थी

"मैं जा रही हूँ,"—जेनीने कहा,

"और देखना, उसके सामने बहुत झुकना मत. और यही बात साइमनके लिए भी याद रखना उन्हें खूब खरी-खरी सुनाना. यह दिन का वक्त है और उन्हें हिम्मत न होगी कि तुमसे कुछ कहें या कुछ करें. अगर कुछ हो ही पड़े तो सीधे-सीधे उनसे कह देना कि मैं अभी गवर्नर के पास जाता हूँ, और सब रिपोर्ट करता हूँ कहना कि चौबीस घण्टेके अन्दर-अन्दर उन्हें बन्द न करवा दिया और शहरसे बाहर न निकलवा दिया तो मेरा नाम नहीं. वे ऐसे ही हैं उन्हें सेरको सवा सेर सुनाओ, और जोरसे डटकर, तो वह भीगी बिल्ली बन जाते हैं. अच्छा मैं जाती हूँ. परमात्मा तुम्हें सफल करे."

वह चली गई. दस-बारह मिनट गुजरनेपर वहाँ आई एमा-उडवानी नीले साटनसे ढकी स्थूलकाया, चौहरा चेहरा जो माथेसे नीचे उतारके साथ चौड़ेपर और चौड़ा ही होता गया था; विशाल ठोड़ी और

विशालतर वक्ष; छोटी, पैनी बन्नीहीन ग्रांखें ग्रौर पतले दबे दुर्वृत्त ग्रोठ;—यह थीं उडवानी. लखनपालने उठकर ग्रपने सामने फैले ग्रंगूठियोंसे लदे मोटे ग्रौर मूलायम हाथोंको दबाया ग्रौर ग्रकृत्रिम घृणाके साथ सोचा—ग्रगर इस मोटी भेम, इस फूली डायनमे कही दिल-जैमी चीज हो ग्रौर वह दिल किसी तरह टटोला जा सके, तो राम जाने कितनी हत्याए वहा छिपी हुई नही मिलेगी.

यह कह देना होगा कि यामकास चलने वक्त लखनपालने पैसेके साथ एक रिवाल्वर भी पास रख लिया था. सडकपर चलते चलते जेब में हाथ डालकर वह उसकी धातुकी ठंडी देहको छूकर जाच लिया करता था. सोचता था, जाने क्या मौका हो. आशका थी कि कुछ गडबडी कही न कहीं होगी. उसके पूरे मुकाबलेके लिए वह तैयार होकर चला था. पर ग्रपने भयमे जो उसने पहलेमे सोच-साच रखा ग्रौर गढ रखा था सब फिजूल निकला. उसे ग्रचरज हुग्रा कि बात इतनी सीधी-मादी ग्रति सामान्य ग्रौर नीरम जैसी निकली. हां, उसमे ग्रप्रियता ग्रौर बदमजगी कम न थी.

लापरवाही ग्रौर कुछ ग्रतिरिक्त शालीननाके माथ एक नीची ग्राराम कुर्सीमे बैठकर मिगरेट सुलगाते हुए उस प्रमदाने कहा, "कहिए महाशय, ग्राप एक रातकी कीमत देकर गए ग्रौर एवजम लडकीको उसके बाद भी ग्रौर एक रात ग्रौर एक दिन रक्खा. तिसपर ग्रभी ग्राप पर पच्चीम रुपया ग्रौर बकाया है हम एक रातके लिए लडकी उठाते हैं तो दम रुपए लेते हैं, ग्रौर चौबीम घण्टेके पच्चीम रुपए. चुंगीकी तरह यहा तो बधी दर है. लीजिए, सिगरेट लीजिएगा ?" उसने ग्रपना केस ग्रागे किया ग्रौर लखनपालने बिना कुछ ठीक तरहसे समझे एक सिगरेट उठा ली.

"मै कुछ बिल्कुल ग्रौर ही कामकी बात करना चाहता था."

"ग्रोह, ग्राप कहनेकी तकलीफ न कीजिए. मै सब खुद समझती हूं शायद ग्राप इस लडकीको, यानि ल्युबाको, बिल्कुल ग्रपने साथ लेकर —क्या कहते हैं उसे ग्राप लोग ?-बमाना ?—जी हा, उसे जिंदगीमें

घर गिरिस्तीमे जमा देना चाहते है. हा, ग्रा, वैसा होता है. मै बाईम साल इस धन्धेमे हू ग्रौर मै जानती हूँ. कुछ कच्चे,नातजुर्बेकार लडके ऐसा कर बैठते है लेकिन मै ग्रापको कहती हू कि इसका कुछ नतीजा नही होगा "

'नतीजा होगा, या नतीजा नही होगा—वह ग्रब मेरा काम है" लखनपालने काँपती टाँगोमे, उँगलियोके नहोकी तरफ देखते हुए, मन्द भावमे उत्तर दिया

"हाँ हा, वह तुम्हारा काम है, मेरे जवानो" ग्रौर एमा उडवानीके फूले गाल ग्रौर विशद ठोडिया नीरव हाम्यमे कूदने लगी. "मै दिलसे तुम्हारी कामयाबी चाहती हूँ ग्रौर तुम्हारा भला चाहती हूँ मुझे तुमसे मुहब्बत है लेकिन जरा तकलीफ करके मेरी तरफमे उस लड़की ल्यूबाको कह दीजिए कि जब वह ग्रापके घरसे खदेडकर निकाल बाहर की जायगी, तब खबरदार जो वह ग्रपनी मनहूस सूरत लेकर यहा पहुँचे वह चाहे ता कही पडी भूखी मर सकती है, या नही तो फौजी रगरूटोके लिए चवन्नी वाली जगह पहुँच मकती है "

'यकीन कीजिय, वह लौटेगी नही. मं ग्रापमे सिर्फ उमका सर्टी-फिकेट दे देनेके लिए कहता हूँ- देर न कीजिए".

'सर्टीफिकेट ग्रोह, लीजिए. जरूर लीजिए, इसी मिनट लीजिये. लेकिन जरा पहले ग्रापको यह तकलीफ देनी है कि जो यहाँ का उसकी तरफ वाजिब निकलता है, वह ग्रदा कर दिया जाय देखिये यह उसकी हिमाबकी किताब है मै ख्याल रख कर उसे साथ ले ग्राई. जानती थी कि हमारी बातके ग्राखीरम जरूरत किसकी पडेगी". कहकर उसने ग्रपने कुर्तीकी जेबमसे एक छोटी सी काली जिल्दकी कापी निकाली ग्रौर ग्रपने विशाल पीत वर्ण मासल वक्षकी निक झलक लखनपालको मिलने दी किताब पर मोटे शीर्षकम लिखा था—

ग्रन्ना मरकानी द्वारा सचालित वेश्यावासकी नम्बर' 'मिस ल्युबाके हिसाबकी कापी. नीचे लिखा था—याम्सकाया स्ट्रीट नम्बर...मेजके उस तरफसे लखनपालकी ग्रोर कापी बढ़ ग्राई. लखनपालने लेकर पहला

सफा पलटा और छपे नियमोके चार-पांच पैराग्राफ पढ गया. सक्षेपमे जरूरी शर्तोंमे दर्ज था कि इस हिसाबकी किताबकी दो प्रति होगी. एक मालकिनके पास रहेगी, दूसरी वेश्याके पास सब आमदनी और सब खर्च दोनो किताबोमे दर्ज होगा शर्तोंके मुनाबिक वेश्याको यहाँसे खाना, रहनेकी जगह, जाडोके लिए कोयले, रोशनी, बिस्तर, बाथ वगैरहका बन्दोबस्त होगा और एवजमे वेश्याको अपनी आमदनीका दो तिहाई तक, ज्यादह नही, मालकिनको देना होगा बाकी पैसेमसे जरूरी है कि वह साफ कपडोमे और ठीक तरीके पर रहे कम-से-कम बाहर जानेके लिए दो ड्रेस उसके पास होना लाजमी है आगे इसका भी जिक्र था कि पैसकी अदायगी स्टाम्पकी मददसे होगी, जो कि मालकिन पैसा लेकर उन्हे मुहय्या करेगी हिसाब हर महीनेकी आखिरी तारीखको सही किया जायगा अत मे यह भी था कि कोई वेश्या किसी वक्त चकला छोड सकती है, अगर उसकी तरफ कुछ बकाया लेना रहता है तो एम कर्जको कानूनके मुनाबिक अदालतसे वसूल या चुकती करानका जिम्मा उसे उठाना होगा

लखनपालन इस नुक्ते पर उगली रखकर गौरसे देखा और किताबको रक्षिकाकी तरफ घुमाकर विजयी भावमे कहा "जी, देखती है आप, उसे हक है कि वह यह जगह जब चाहे छोड सकती है चुनाचे वह किसी भी वक्त·तुम्हारी इस बदनसीब और कम्बख्त नरककी नालीका जिसम तुम ' लखनपाल इस तरह बढ बढ कर कहता रहा

लेकिन सरक्षिकाने शान्त भावसे उसे बीच ही मे रोक दिया। बोली, "ओह, इसमे मुझे शक नही है, वह चली जा सकती है लेकिन अपना कर्ज पहले अदा कर जाय"

"दस्तावेज़ हो तो ? कागज वह लिख दे सकती है'

"छि, उसका कागज ! पहले तो वह अनपढ है फिर उसके प्रामिजरी नोटकी कीमत क्या है, थूक जितनी भी नही हाँ, कोई उसका जामिन हो, जिसका ऐतबार मैं कर सकू तो मुझे कोई शिकायत न होगी".

"लेकिन कायदोमें तो कोई जमानतकी बात लिखी नही है".

"बहुतेरी बाते होती हैं जो लिखी नही जाती. कायदेमे तो यह भी नही लिखा कि लडकीको यहाँसे मालिकोको बिना खबर दिए ले जाया-जा सकता है"

"खैर, कुछ हो तुम्हे मुझे उसका ब्लेक देना ही होगा"

"तो जनाब मैं ऐसी बवकूफ नही हूँ कि यो ही दे दूँ. किसी मुअज्जिज शख्सको लाइय, हमराह पुलिस हो और पुलिस सिफारिश करे कि आप के दोस्त बाइज्जत हैं, और वह आदमी फिर आपकी जमानत दे और उसके अलावा पुलिस गवाह हो कि आप लडकीसे पेशा नही करायेंगे, या किसी और जगह न बच दगे, तब जो आप कहे मैं हुकमकी ताबेदार हूँगी"

"एसी तैसी तुम्हारी!" लखनपालने कहा, "अगर जामिन मैं होऊँ, मैं खुद? और तुम्हारे प्रोमेजरी नोटपर यही दस्तखत कर दूँ? ..."

"मेरे जवान दोस्त, मुझे नही मालूम तुम्हारी यूनिवर्सिटी मे क्या सिखाया जाता है? लेकिन क्या तुम सचमुच मुझे ऐसा बेवकूफ समझते हो? खुदा करे, जो पहने हो उसके अलावा भी तुम्हारे पास और कुछ कपड हो खुदा करे कलके बाद परसो भी तुम्हारा कुछ खानेका ठिकाना हो लेकिन प्रोमिजरी नोट! उसकी क्या बात करते हो जाओ, मेरा सिर और न खाओ"

लखनपाल बिल्कुल बिगड उठा उसने जबने मनीवैग निकाला और जोर-से मेजपर पटका

"तो मैं अभी हाल सब नकद देता हूँ"

"ओह, तो यह दूसरी बात है" सीठी पडकर, फिर भी तनिक अविश्वाससे सरंक्षिकाने कहा, "मैं आपको तकलीफ दूँगी कि जरा सफा बदलकर देखिए कि आपकी माशूकापर क्या बकाया आता है."

"बक मत, कुत्ती"

"मैं बक नही रही हूँ, जाहिल," स्थिर भावसे संरक्षिकाने उत्तर दिया.

लकीर खिचे किताबके पन्नेमे दाँई तरह ग्रामद दर्ज थी, बाईं तरफ खर्च.

"स्टाम्पमें वसूल. पन्द्रह अप्रेल," लखनपालने पढा, "दस रुपए. सोलह तारीख—चार रुपए. सत्रह—बारह रुपए अट्ठारह—बीमार. उन्नीस—बीमार बीस—छ रुपए. इक्कीस—चौबीस"

"हे राम! संताप और खीज और ग्लानि और अवश क्रोधके भावमे लखनपालने सोचा, "एक रातमे बारह आदमी!

महीनेके अंतमें लिखा था, "जोड—तीनसौ तीस रुपए!"

"ओ भगवान्! यह क्या मै कयामत देख रहा हू? या सपना? महीनेमे एकसौ पेंसठ आदमी." अनायास मनमे हिसाब मिलाकर लखनपालने सोचा और उसी भांति सफे पलटता रहा.

"लाल रेशमकी ड्रेस बनाई, गोटेदार, चौरासी रुपए. ड्रेसमेकर हेलेन, सबेरे पहननेके कपडे पैंतीस रु०. ड्रेसमेकर हेलेन, रेशमी मोजे छः जोडी, छत्तीस रुपए. गाडी भाडा, टायलेट, सेंट और इतर इत्यादि जोड दो सौ पाँच रुपए. उसके बाद तीन सौ तीस रुपएमेसे दो सौ बीस घटाये गए. ये दो सौ बीस रुपए, रहनेकी जगह और खाना देने वाली मालकिनके हिसाबके थे. इस तरह एक सौ दसकी रकम शेष रही. माहके आखिरमे हिसाबके गोशवारेमे लिखा था ड्रेसमेकरको और अन्य खर्चको चुकता करनेके बाद एक सौ दस रुपए बकाया बचे पिचानवे रुपए लुबीके उसकी तरफ वाजिब है और चारसौ अठारह रुपए पिछले सालके उसकी तरफ चले आ रहे है. कुल मिलाकर पाँच सौ तेरह रुपए".

लखनपालके दम खुश्क हो गए. पहले तो उसने कोशिश की कि बिलोके बेहद तूल-तवील होने और खर्चकी अन्धा धुन्धीपर आपत्ति करे. लेकिन रक्षिकाने साफ कह दिया, कि उससे हमारा कोई सरोकार नही है. हमारे यहाँकी तो इतनी भर माँग है कि हर लड़की साफ कपडे पहने और ऐसे रहे जैसे भले घरकी लडकियाँ रहती है. हम कसूरवार है तो इसके कि हमने उसके खर्चोंके लिए सिरपर कर्ज ओढ़ लिया है.

"लेकिन, यह तुम्हारी ड्रेसमेकर पूरी ठग है. आदमीकी शकलमें मक्खी फसाने वाली मकडी है". लखनपाल आपेसे बाहर होकर चिल्लाया, "और तुम सबकी सब एक थैलीकी चट्टी-बट्टी हो, एक कुनबेकी ठग. बेहया कपटिनो, तुम्हारे दिल भी है कि नही ?"

जितना-जितना वह गर्म होता था, एमा उडवानी उतनी ही ठण्डी पड कर कँटीले ताने कसती थी. "मै फिर कहती हूँ कि जनाब यह मेरा काम नही है. और देखो ऐ जवान दोस्त, इस तरीकेसे बकना शुरू न करो. नही तो चपरासी आयगा और तुम्हे इसी दम दरवाजेसे बाहर उठाकर फेक देगा"

लखनपालको लाचार इस हृदयहीन औरतसे सौदेमे पडना पडा बहुत देर तक झक-झक-चिक-चिक हुई, तब जाकर वह राजी हुई कि अच्छा, ढाइसौ रुपए नकद ले लेगी, बाकी ढाइसौका दस्तावेज और राजी भी तब हुई जब अपने टैस्टके सर्टीफिकेट दिखा कर लखनपालने उसके सामने यह प्रमाणित कर दिया कि इस साल वह अपना कोर्स खतम कर लेने वाला है और अगले साल वकील बन जायगा

रक्षिका टिकट लेने गई, इधर लखनपाल उठ कर कमरेमें टहलने लगा. वह दीवारो पर लगी सब तस्वीरें देख चुका था. हसके साथ क्रीडा करती रम्भा को; समद्र तटवर्ती स्नानके मनोरम दृश्यको; किसी एशियाई देशके हरमकी बहारको और उस दानव देवताको जो एक निर्वस्त्रा अप्सराको अपनी बाँहोमे भर कर उडाए जा रहा था—इन सब को वह देख चुका था • फिर भी उनपर एक निगाह घूम गई किन्तु तभी सहसा एक छोट छपे प्लेकार्डने उसकी निगाह खीची शीशके पीछे मढा हुआ वह लटका था. उसका कुछ हिस्सा ढका था पर काफी दीखता था पहली बार यह लखनपालकी नजर पडा और उसे जरा पढकर वह भौचक रह गया. पुलिस थानोकीसी कानूनी भाषामे लिखी छपी उन बेलाग, बेलाज, बेजान लकीरोको पढकर एक बुझी ग्लानिसी उसमे हुई. वहाँ व्यावसायिक सर्दरूही और बेहयाईके साथ वर्णन और हिदायत, लिखी थी कि किस विध और किन उपायोसे योनि रोगोंसे बचना चाहिए,

अपने शरीरको खूब आरास्ता रखनेके सब यत्न और तरीके भी दिए गए थे. और साप्ताहिक डाक्टरी निरीक्षणकी और आगाहीके लिए दीगर जरूरी हिदायतें भी थीं. लखनपालने यह भी पढ़ा कि कोई चकलाघर, गिरजा घरों, शिक्षालयों, और अदालतोंकी बिल्डिगोंसे सौ कदमसे पास नहीं बन सकेगा. स्त्रियाँ ही ऐसे चकला घरोंकी संचालिका होंगी' यह भी कि उसके रिश्तेदारोंमेंसे स्त्रियाँ ही, और वह भी सात वर्षसे अधिक की नहीं, उस संचालिकाके साथ ठहर और रह सकेगी. और यह कि मकान मालकिन और सँचालिका और उस चकलेमें रहने वालियां आपसमें और महमानोंके साथ हमेशा शिप्टता, नम्रता, शाति और अदब से पेश आएँगी, किसी तरहकी गाली गलोज, तू-तू-मैं-मैं, नशा और झगड़ा नहीं करेंगी. यह भी लिखा था कि वेश्या नशेकी हालतमें किसी पुरुषका आलिंगन स्वीकार न करेगी, न किसी मदमस्त पुरुषको स्वीकार करेगी. इसके बाद खास-खास पर्व त्योहारोंका उल्लेख था, जिन दिनों यह वृत्ति निषिद्ध बताई गई थी. गर्भपात अथवा भ्रूणघातके विरुद्ध कड़ी ताकीद की हुई थी. 'क्या पक्का, दुरुस्त, धार्मिक प्रबन्ध है, और नैतिकताकी रक्षाकी क्या गंभीर चिन्ता है ?' लखनपालने कटु व्यंगसे सोचा.

'आखिर एमा-ठ्वडानीके साथ मामला तय हुआ. रसीद लिखकर इधरसे उसने अपने हाथसे लखनपालकी ओर बढाई कि उधर लखनपाल-ने मुट्ठीमें पैसे लेकर उसकी ओर किये. इस व्यापार सम्पादनमे दोनों सशंक तत्पर एक दूसरेकी आँखों और हाथोंको घूर कर देख रहे थे. स्पष्ट था कि दोनोंमें परस्पर कोई बहुत श्रद्धा अथवा सद्भाव नहीं है लखनपालने रसीद लेकर अपनी मनीबेगमे रक्खी और चलनेको उधर हुआ. रक्षिका देहलीज तक उसके साथ गई और विद्यार्थी जब सड़कपर पहुँच गया वह जीनेपर से ही लपकके पुकार उठी "बाबू, ओ विद्यार्थी बाबू".

वह रुका और पीछे मुड़कर देखा "क्या है" ?

"सुनो एक बात और है. मुझे तुम्हें बतलाना था कि तुम्हारी सुखी निकम्मी है, चोर है, बेईमान है. उसे सिफलिस है. हमारे यहाँ कोई

भी बढ़िया मेहमान उसे नही लेते थे और अगर इस तरह तुम उसे न ले जाते तो कल हमे उसे वैसे ही निकाल बाहर करना था मै यह भी कहूँगी कि वह पल्लेदार, पुलिसके सिपाही, उचक्के, चोर, उठाई गीरे इन सबकी वह भोगी-भागी है और तुम दोनोके वैध विवाहपर मै तुम्हे बधाई देती हूँ"

"ओ पापिष्ठा, मायाचारिन" लखनपालने उसकी तरफ दहाडकर कहा

'जा जा, भोन्दू गधे !" रक्षिकाने कहा और जोरसे किवाड भड लिए

लखनपाल गाडीमे बैठकर पुलिस स्टेशन चला रास्तेमे उसने सोचा कि इस ब्लेकको, इस मशहूर पीले टिकट' को जिसके बारेमे उसने इतना सुन रक्खा है अभी ठीक तरह देख नही पाया है वह एक मामूली सफेद कागज एक डाकखानेके लिफाफे जितना बडा, एक तरफ बाकायदा नाम, बापका नाम और अल्ल लिखी थी और उसका पेशा – वेश्या' और सामने दूसरी तरफ जिस प्लेकार्डको वह पढ चुका था उसीमेसे कुछ जरुरी बात उद्धृत थी वही व्यवहार चलन अपने शरीरकी ऊपरी और भीतरी सफाईके बारेमेकी वीभत्स छल और दंभ भरी रीति-नीतिकी बाते 'हर एक मुलाकाती' उसने पढा चाहे तो पहले उस वेश्यासे पिछले डाक्टरी मुआयनेका सर्टीफिकेट तलब कर सकता है यह पढकर फिर लखनपालका हृदय भावुकतापूर्ण करुणासे भर आया

खउसने दके साथ सोचा, 'ओह वे बिचारी औरते ! उनके साथ कानून क्या कुछ नही करता ? उन्हे लाछित करनेमे उसने क्या उठा छोडा है ? यहाँ तक तुम्हे पामाल कर दिया गया है कि तुम पट्टी बधे कोल्हूके बैलकी तरह, सब कुछकी आदी हो गई हो' पुलिस स्टेशनपर जिला इस्पेक्टर-बर्केश सामने मिला वह रातभर ड्यूटीपर रहा था, पूरी तरह सो न सका था और गुस्सेम भरा था उसकी खूबसूरत पखा नुमा लाल-दाढी इतस्तत फहरा रही थी उसके तैयार युवा चेहरेका दाहिना आधा हिस्सा किसी सख्त सिराहनेके दबावसे अब भी लाल-लाल चमक

रहा था. लेकिन उसकी नीली भूरी आंखें, ठण्डी और चमकदार नीली चीनीकी तरह आबदार साफ और सख्त थीं. रातके घेरे हुए आदमियोंके उस कूड़े करकटके ढेरको जो बदमस्त हालतमे यहाँ ला पटका गया था, और अब जिनको होशमें सीधे हो आने और दिन निकल आने पर अपनी अपनी जगह रवाना किया जा रहा था, उनकी भीड़पर बक-झककर झल्लाकर बेहूदा गालियाँ बककर और जिरह करके अपना रिकार्ड और अपना फर्ज पूरा करनेके बाद बर्कोश जरा कमर पीछे फेंककर लेट गया. बाहे गर्दनके पीछेकी ओर, टाँगे सतर फैलाकर बुरी तरह अकड़ अपने सारे बदनको ऐसे ताना कि जोड चट-चट कर उठे.

लखनपालको देखा, जैसे किसी पदार्थको देखते हैं, पूछा, "आप भी कहिए मिस्टर स्टूडेन्ट, क्या चाहिए ?"

लखनपालने अपनी बात थोड़ेमे कह दी. "और इस तरह मैं चाहता हूँ," उसने उपसंहारमें कहा कि "उसे मैं वहांसे उठाकर साथ रखने की · यहाँ आप लोग उसे क्या कहते हैं···यानी काम करने वालीकी हैसियतसे या कहिये एक सम्बन्धी नातेदार या ··आप क्या कहेंगे ?"

"कहेंगे ? कहेंगे, रखेली या माशूका या औरतकी शकलमे," अनपेक्षा से बर्कोशने कह दिया, और हाथमें लगे एक सिलवर सिगार केसको, जिसपर छोटी छोटी मूरतें और मोनोग्राम बने थे, घुमाने लगा. "मैं आपके लिए कुछ नही कर सकता हूँ –यानी अभी बिल्कुल कुछ नही कर सकता हूं. अगर आप उससे निकाह करना चाहते है तो अपनी यूनिवर्सिटीकी तरफसे अफसरानका जरुरी इजाजतका खत पेश कीजिए. अगर आप यों ही उसे पालनेके लिए उठाते हैं—तो सोचिए उसमें मतलब कहाँ है—क्या है ? फायदा क्या है ? आप उसे एक दोजखके घरसे निकाल रहे है, इसलिए कि आप उसके साथ फिर वही शहवत-परस्ती—क्या विचार है ?—का ताल्लुक जोडकर बैठे."

लखनपालने कहा, "नहीं —नहीं. तो आप नौकर समझिए."

"अच्छा, तो नौकर सही, ऐसी हालतमें मैं आपको तकलीफ दूँगा कि आप अपने मकान मालिकका इस किस्मका इजाजतनामा पेश करें. क्यों

कि मुझे कामिल उम्मीद है आप खुद ही मालिक मकान नहीं है. तो बस जनाब, अपने मालिक मकानका सिफारिशनामा ले आइये कि आप एक नौकरनीको जगह दे भी सकते है. और उसके साथ वे कागजात भी लाना न भूलिएगा जिनमे साबित हो कि आप वही शख्स है जो कि आप कहते है, आप है. मसलन, अपने जिले और अपनी यूनिवर्सिटीके सर्टीफिकेट वगैरह. या कुछ उसी किस्मकी चीजे. क्योकि मुझे उम्मीद है आप रजिस्टर्ड है या शायद आप .....आपकी वल्दियत मशकूक है."

"जी नही, मै रजिस्टर्ड हूं," लखनपालने उत्तर दिया, पर उसका धीरज खो रहा था.

"तो बस यह बिल्कुल दुरुस्त है. लेकिन, वह मोहतरिमा खातून जिनके बारेमे आप इतनी तकलीफ गवारा कर रहे है"

"नही, वह अभी तक रजिस्टर्ड नही है. लेकिन उनका टिकट यह मेरे पास है उसके एवजमे मुझे उम्मीद है उसका असली पासपोर्ट मै आपसे पाऊँगा. तब मै फौरन उसे रजिस्टर्ड करा लूंगा "

वर्कोशके हाथ फिर उसी तरह सामने फैलकर सिगार केस से खेलने लगे "अफसोस है, मै कुछ आपके लिए नही कर सकता, मिस्टर स्टूडेन्ट बिल्कुल कुछ नही, तावक्त कि आप जरुरी कागजात पेश न करे. जहाँ तक लडकीका ताल्लुक है, क्यो, उसमे दिक्कत न होगी. चूंकि मकान लेकर बसनेका उसे अख्तयार नही है इससे यकीनन उसे पुलिसमे जगह देनी होगी. वहा वह तब तक रहेगी, जब तक कि अपनी मर्जीसे वापिस वही न जाना चाहे जहासे तुम उसे लाए हो. अच्छा, इजाजत दीजिए. आदाब अर्ज "

दोनो हाथोमे अपना हैट नीचे आखो तक खीच लखनपाल उठकर दरवाजेकी तरफ चला लेकिन तभी उसके सिरमे एक सूझ उठी. उससे खुद उसको शर्म मालूम हुई, पेटमे उसके सिचली सी होने लगी, हाथ ठण्डे होकर सुन्न पडने लगे; पैरोमे कपकपी-सी हुई. पर, वह फिर लौटकर मेजपर आया और मानो लापरवाहीके साथ, फिर भी आवाजमें झिझक थी, कहा, "माफ कीजिए थानेदार साहब. एक जरुरी बात मुझे

फरामोश हो गई,एक आपके दोस्त है, जो मुझे भी जानते है. आपकी उनपर कुछ रकम वाजिब है. उन्होने कहा था कि वह मै आपको पहुँचा दूं."

"हुऊं, दोस्त," अपनी बडी गुलाबी आखें फैलाकर बर्केशने पूछा, "वह कौन ?"

"बार .... बारबरीसाव"

"ओह, बारबगी ! हां, हां मुझे याद आ गया. ठीक है"

"तो क्या आप यह दस रुपए कबूल करेंगे ?"

बर्केशने सिर हिलाया, लेकिन उस कागजके नोटको लिया नही,

"लेकिन यह आपका दोस्त बारबरीसाव यानि हमारा दोस्त, बिल्कुल गधा ही है, जी नही, दस रुपए नही, उसे पूरे पच्चीस मुझे देने है. क्या बदकार आदमी है वह. जनाब, पच्चीस रुपए और ऊपरसे कुछ आने और. खैर, आनोकी बात छोडिये, क्या ओछीसी बात है उसका जिक्र मैं नही करुंगा. खुदा ऊपर महरबान हो. आपको मालूम है ?—यह एक बिलियर्डका कर्ज है लेकिन कहना होगा, वह अव्वल बेईमान आदमी है. खेलमे चालाकी करता है···ना जनाब पन्द्रह और निकालिए."

"अच्छा, लेकिन मिस्टर इन्सपेक्टर, तुम हो पूरे पाजी," लखनपाल ने रुपये निकालते हुए कहा

"अजी, क्या पूछिये," अब तक बर्केश बदल गया था हार्दिक सौजन्य से वह बोला, "अजी, बीवी है बच्चे है तुम जानो, हमारी तनख्वाह ही क्या है, यह लो दोस्त, पासपोर्ट लो. रसीद बना दो···अच्छा, तसलीम."

विचित्र रूपमे मात्र इस बोधमे कि पासपोर्ट आखिर उसकी जेबमे है, जाने किस विध उसमे चैतन्य और सदवृत्तिकी स्फूर्ति हो आई लखनपालकी रगोंमे फिर सदावेग भर गया. तेजीसे सडक पार करते हुए, उसने सोचा, 'बस अब क्या है. अनुष्ठान हो ही गया, नींव पड ही गई है. जो असल मुश्किल थी वह पार हुई. अब, लखनपाल. देखो मजबूत रहो. तबियत को झुकने न दो जो तुमने किया है, उज्वल है, महान् है, मै इस सदनुष्ठानमे आखेट ही सही, मात्र उपादान ही सही, फिर भी, अब बात एक सी है.—बात एक ही है? एक सत्कर्म करके सीधे उसके पुरस्कार

पानेका लाभ होना, लखनपाल, लज्जाकी बात है मै मर्कसका कुत्ता नही हूँ, सधा ऊँट नही हूँ, स्कूलसे निकला हुआ कच्चा बच्चा नही हूँ. मै जिम्मेदार हूँ, दायित्व लेकर टूटूगा नही. बस कल जो अकरणीय कर गया, जो अपनेपरसे मेरा वश खो गया, यही बात खोटी हुई. यही गलती, जल्दबाजी, बेवकूफी हो गई. लेकिन जिन्दगीमे बिगडा क्या सुधर नही सकता ? बडे-से-बडे पतन पर भी व्यक्ति सभले है. और भारी-से-भारी बुरे-से-बुरे कर्म आदमीसे बन जाय और आदमी उसे धैर्यसे सहार ले, तो वक्त टल जाता है, और समय गहरे-से-गहरे घावको भर देता है और घोर तर बात भी समय निकलने मात्र चिन्ह रूप छोटी हो जाती, और कहानी बनकर रह जाती है

पर जब घर आकर यह सवाद दिया तो उसे अचरज हुआ जब पाया कि लुवी इसमे कुछ बहुत प्रभावित नही हो गई, एक दम खुशीसे उछली नही, उसने विजय भावसे पासपोर्ट दिखाया, लेकिन लुवी पासपोर्टकी तरफ उपेक्षित ही दीखी पास तो नही, वह तो लखनपालको फिर पानेसे खुश थी. शायद यह आदिम अकृत्रिम स्त्री हृदय, अपने रक्षकको पाकर उसी पर समस्त अवलब डाल कर, शिथिल गात, सम्पूर्ण रूपसे उससे चिपट कर अपनेको छोड देनेको उत्कठित वाचित था. वह उसकी गर्दनसे लगकर चिपट गई लेकिन लखनपालने उसे रोका धीमेसे उसके कानमे पूछा --"लुवी, मुझे बताओ सच-सच कहनेमे मुझसे डरो नही, चाहे, कुछ हो मुझे अभी वहाँ बताया कि तुम्हे. . .तुम्हे कुछ रोग है तुम जानती हो उस गन्दे रोग को क्या कहते है अगर तुम, प्यारी, मुझमे जरा भी विश्वास रखती हो तो कह दो, यह सच है कि नही ?

वह लाल हो गई. हाथोसे मुह ढक लिया. वही पलगपर गिरकर फूट-फूट कर रो उठी "मेरे प्यारे, मेरे लखन ! ओ, लाखन परमात्मा की सोगन्ध मै खाती हूँ. परमात्मा मुझे देखता है. मै कहती हूँ कभी कोई ऐसी बात मुझे नही हुई. मै पहलेसे होशियार रहती थी. मै उसके नामसे डरती थी. मै तुम्हें इतना प्रेम करती हूँ, प्यारे, कि कुछ होता तो क्या किसी तरह तुमसे उसे बिना कहे मै रह सकती थी ?" उसने उसके

हाथोंको पकडकर धीमे-धीमे अपने गीले चेहरे पर फेरा, गालोंपर दबाया. अभियुक्तापर निर्दोष, निरपराधी बच्चेकी सी आर्द्र सच्चाई और उपहास्य भावुकताके साथ हिलकी बांधकर वह उसके हाथोंको अपने गालोंके नीचे दबाए रोती रही, रोती रही.

उस समय लखनपालको सम्पूर्ण रूपसे उसकी आत्माकी सत्यतामें विश्वास हो गया.

"मैं विश्वास करता हूँ, मेरी बच्ची, मेरी बेबी" उसने हल्के-हल्के उसके केशोंमें हाथ फेरते हुए कहा, "उद्विग्न न होओ, रोओ मत. बस हम फिर उस तरहकी कमजोरीमें न पड़ें, इतना ही चाहिए कुछ हो भी गया है तो खैर; हो ही गया सही. लेकिन अब हमको उसे फिर न होने देना होगा".

"जैसा कहो" लड़कीने अनायास कह दिया. "जो तुम कहो मेरे राजा" पहले लखनपालके हाथ और फिर उसके कोटका छोर लेकर उसे चूमा, और बोली, "अगर नहीं चाहते मुझे, या उतना नही चाहते. तो ठीक है जैसा कहते हो वैसा हो सही".

लेकिन उसी रात फिर वह लोभको रोक नहीं सका और गिरे बिना न रहा. फिर आये दिन ऐसा ही चला. यहाँ तक कि उन घड़ियोंमें अब उसे न शर्म सताती, न निन्दा व्यापती. फिर तो यह लगी बान बन गई, जिसमें पछतावेका सब भाव ऐसा डूब गया कि पता न लगा.

१६

लखनपालके हकमें यह कहना होगा कि उसने भरसक वह सब किया जिससे लुबीकी जिंदगी आराम और चैनसे बसर हो सके. उसने जान लिया था कि उसे यह ठिकाना छोड़ना होगा. जगह दूर शहरके ऊपर घोंसलेके मानिन्द थी; पर छोड़नेकी मजबूरी इस वजह से न थी कि जगह वह बेआराम और तंग थी. बल्कि वजह थी सिकन्दरा जो दिनपर दिन चिड़चिड़ी, बदमिजाज और खौफनाक होती जा रही थी. आखिर उसने छोटा-सा मकान किराये पर ले लिया. वह शहरके छोरपर था,

और उसमें दो कमरे थे और रसोईके लिये कोठरी थी जगह महंगी न थी. नौ रुपये महीने किराया था. जिसमें गर्मीके लिये लकडीका खर्च शामिल न था इसमें बेशक उसे दिक्कत थी. जगह-जगहकी ट्यूशनके लिये उसे लम्बी-लम्बी दूर जाना पडता था. पर उसे अपनी तन्दुरुस्तीका भरोसा था और अपने धीरज और अध्यवसायमें विश्वास था.

अकसर कहता, "मेरी टाँग मेरी अपनी है, उनके लिये मुझे किसीके पास जाकर जवाबदेही तो नही करनी है" और सच ही पैदल चलनेमें वह एक ही था. एक बार मजाकके तौरपर जेबमें वह एक चालघडी रखकर निकल पडा. शाम तक जो घडीमें हिसाब किया तो सोलह मील वह चला था इसमें यह ध्यान रक्खा जाय कि टाँगें उसकी मामूलसे लाबी थीं तो उसके सोलह मील असल बीस मीलसे कम नही बैठते थे. और उसे दौडना-धपना भी काफी पडता था कारण, लुवीके पासपोर्टके सिलसिले में और घरमें कुछ सामान असबाब मुहैया करनेकी जरूरतकी वजहसे ताशके खेलमें जब-तब जो उसने जीतकर जमा किया था सब स्वाहा हो चुका था उसने फिर ताशकी बाजी लगाना शुरू किया, जो शुरूमें मामूली तौरपर, पर जल्दी उसे यकीन हो गया कि ताशके खेलमें अब उसका सितारा नीचा हो गया है और नतीजा भयंकर हो सकता है

अब तक लुवीके साथ उसके सम्बन्धके बारेमें उसके दोस्तोंमें कोई दुराव-छिपाव नही रह गया था फिर भी उसके सामने वह यही जताता रहा और ऐसे ही बरतता रहा कि मानो लडकीके साथ उसका सम्बंध हमदर्दी और भाईचारेका है जाने वह यह न समझ पाता था, न समझना चाहता था कि उसके लिए कितना मगन और सही यह होता कि वह बहाना न भरता और झूठ न बरतता या शायद वह यह समझता तो था लेकिन एक बँधी आदत को कैसे बदले यह उसे न सूझता था .. लुवीके साथ अपने सम्बन्धोंमें वह दोयम हो रहता. मानो सिर्फ भुगत रहा हो पहल लुवीकी होती. स्नेह और प्रेमको लेकर वही उसके प्रदर्शन में आगे बढ़ती. वह लुवी ही बनी रही और लखनपाल मानो यह बिल्कुल भूल गया था कि पासपोर्टमें उसने उसका असली नाम इरीना देखा है.

यह लुवी जो अभी हालतक सैंकड़ोंको अपना शरीर एक उदासीन उपेक्षासे या हदसे हद दिखावेके चावसे देती थी, लखनपालके प्रति प्राण-पणसे आसक्त हो आई थी. उसमें अनुराग था और ईर्ष्या थी. वह अपने विचार, भाव और अपने शरीरसे सम्पूर्ण निर्भर भावसे लखनपाल से चिपटी थी. उसने उसके मित्रोंको सहज भावसे स्वीकार कर लिया. जौर्जियन प्रिंस मजेदार और दिलचस्प आदमी था. खुली तबियतका सोमदेव उसके और नजदीक था. वह ताजा था और खुशमिजाज. लेकिन सोमवास्तीके गुमानभरे बड़प्पनसे जाने कैसा एक डर लग आता. और लखनपाल उसके लिए स्वामी था, उसका देवता था. वह अनुभव करती थी, यद्यपि बात यह बुरी थी, कि वह उसका स्वत्त्व है, उसकी सम्पत्ति है. लखनपालको अपना स्वत्त्व बनाकर समझनेमें उसे रस मिलता था.

यह सदाकी देखी परखी बात है कि व्यक्ति जो भरपूरताके साथ प्रेममें रह चुका है उसकी वासना और आवेगके दाँतों तले आकर नोचा और कुचला जा चुका है, जो इस तरह निचुड़ गया है, वह फिर कभी तीव्र और उत्कट उस प्रेममें नहीं पड़ सकता जो एक साथ पवित्र प्राण-दायी और आत्मार्पणमें पूर्ण होता है. लेकिन इस विषयमें स्त्रीके लिये न नियम है न मर्यादा. लुवीके सम्बन्धमें तो यह खास तौरसे प्रमाणित हुआ वह लाखनके आगे खुशीसे उसकी बांदी बनकर चाकरीमें धरती पर रेंगनेको तैयार थी. लेकिन उसीके साथ चाहती थी कि वह लुवीका इससे ज्यादा बनकर रहे कि जैसे मेज है, नन्हा वह कुत्ता है या रातकी उसकी पोशाक है. लेकिन लाखन सदा इससे कम उतरता. वह उस आकस्मिक प्रेमकी मांग और प्रहारके समक्ष जो एक नन्ही धारसे इतनी तेजीके साथ बाढ़ भरी नदीके समान तटोंको तोड़ता हुआ भर निकला था, वह हमेशा अपनेको हेठा पाता. और अक्सर एकाधिक बार खीज और कड़वाहटके साथ वह मनमें कहता, हर शाम मुझे उस हसीन युसुफ का पार्ट अदा करना पड़ता है. लेकिन आखिर वह युसुफ तो विभोर प्रेयसीके हाथों अपना अधोवस्त्र देकर कम-से-कम बच तो निकला था. लेकिन मैं इस जूयेसे कब छुटकारा पा सकूंगा.

इसके अलावा लखनपालका मन इस बातसे भी दबता था कि उसके विद्यार्थी साथियोंके उसके और लुवीके तरफ रुखमें कुछ-कुछ दुविधा और फरक हो चला है. अभी हाल तक तो वे उसके घरकी तरफ ऐसे टूटकर पडते थे जैसे प्रकाशपर पतंग. घर वह शानदार तो न था, पर उसके दरवाजे सदा खुले रहते और वहां स्वागतका भाव रहता. अब उन साथियोंमें, लुवीके प्रति उनके शब्दोंमें, लहजेमें हावभावमें किसी तरह उस स्वीकृत आदर और मानका भाव नहीं चीन्ह पडता था जो उन युवक मित्रोंके अपने साथीकी पत्नी या प्रेयसी या बहन या मित्रके प्रति बर्तावमें ना चाहिये. अपने दोस्तोंके मामलेमें ऊपरी तौरपर लुवीके प्रति उनका लिहाज भरी बर्ताव देखकर लखनपाल अनुभव करता कि वे सोच रहे हैं :

"तुम वहीं न हो जो चकलेमसे उठा लाई गई हो कि कम खर्च या बिन खर्च भोगी जा सको। तुम पैसेके खातिर बीसियों सैकड़ों आदमियों-को अपनेको देती रही हो अब भी सबके बावजूद तुम आखिर हो वहीकी वही पेशेवर. तुम्हारे पहले पेशेका दाग किसी तरह धुला नहीं है. तुम्हे कोई रातके लिए बिना पसोपेश मांग सकता है और तुम बिना सोच-विचारके उसकी मांगपर पेश हो जाओगी, हुए बिना रह न सकोगी."'

और एक अवसाद और वितृष्णाके भावसे, जिसको वह पकड़ न पाता था, लखनपाल सोचता कि अपने साथियोंके ऐसे विचारमें उसका अपमान गर्भित है यानी, वे इस तरह उसे भी लुवीके धरातलपर ही ले आते हैं!

लखनपालके भावमें एक उदासी आ रही थी, एक उतार लुवीके प्रति एक प्रकारकी प्रच्छन्न शत्रुताने उसके मनके किनारोंको कुतरना शुरू कर दिया था. उससे छुटकारा पानेकी टेढी मेढ़ी तरकीबें अकसर उसके मनमें उठती. इनमें कुछ तो इतनी भद्दी और बदनीयत होतीं कि वह अन्दर ही अन्दर जब भी उनके बारेमें पीछे सोचता, तो घबरा उठता.

"मैं मनसे और नीतिसे दोनों तरह गहरा डूबता जा रहा हूं." वह कभी सोच उठता और अपनी ही दहशतमें हो आता. "वह जो मैंने किसीसे सुना या कहीं पढ़ा है सच ही है. कि एक पढ़े लिखे मोहज्जब

आदमी और एक अपढ़ औरतमें वास्ता हो जाए तो औरत मर्दके दिमागी सतह तक तो लाई ही नहीं जा सकती. हमेशा मर्द ही औरतकी नीचाई पर आ जाता है."

दो हफ़्तोंके अन्दर लुवीका आकर्षण उससे हटने लगा. उसके प्रेमके निवेदनपर उसे अरुचि होती. बहुत दबावपर मानो वह मानता और ऐसे जैसे कि तरस खा रहा हो!

इधर लुवीके जीवनमें मानो पहली बार पांव तले थिर धरती आई थी और उसको चैनसे बैठना मिला था. इससे बहुत जल्दी ही मानो भरकर वह खिल आई. रूप उसका निखर आया. मानो कली हो जो कलतक मुरझाई थी, लेकिन झुलसती गर्मीके बाद बारिशकी बूंदे जो पड़ी कि पंखुड़ियां खोलकर वह खिल आई. मुलायम चेहरेपर से झुर्रियोंकी झाईं गायब हो गई. खोया बेगाना-सा भाव वहांसे उड़ गया. अब वह सशंक और चकित न दीखती थी. दृष्टि अब उसकी साफ थी और आंखोंमें चमक आ गई थी. देह उसकी अब भर आई और ताजा हो उठी. ओठ सुर्ख लगने लगे. लखनपाल जो हर रोज उसे देखता था इधर ध्यान न दे सका. अगर्चे अन्तर उसे भी अनुभव होता था, पर उसके मित्र जो सराहनामें लुवीको जाने क्या क्या कहते तो लखनपाल सोचता कि कुछ नहीं, यूंही मजाक है. नाराज होता कि लड़के नाहक उसे सताने छेड़नेको कहते हैं.

गृहरक्षिकाके तौरपर लुवी सन्तोषप्रद न साबित हुई. यह सही है कि वह बढ़िया मसालेदार सब्जी बना सकती थी गोश्त छौंकना भी उसे आ गया था, रोटी भी बना लेती थी और लखनपालकी देखरेखमें चाय बनाने और परोसनेका ढंग भी उसे आ गया था. मगर इससे आगे वह नहीं जा सकी. वजह शायद यह कि हर हुनरमें हर आदमीके लिए कुछ मियाद है कि उससे आगे नहीं जा सकता. पर फर्शको धोनेका उसे शौक़ था और वह उसे बहुत साफ रखती. यह वह इस कदर इतनी बार करती कि कमरेमें सील रहने लगी और एकाध बार दीमक लगनेके आसार दीख आए.

एक बार अखबारमे लखनपालने इश्तहार देखा. उससे मालूम होता था कि तीन रुपये रोज घर बैठे बखूबी उससे कमाया जा सकता है. किश्तोपर मोजा बुननेकी मशीन झट खरीद ली गई. उसके चलानेमे ज्यादा होशियारी दरकार न थी. लखनपाल,सोमदेव, नेजरसने आसानी से उसपर काबू पा लिया. बस लुवी रह गई जो उसकी जुगत न साथ पाई वह कही अटकती, या धागा कहीं हिलगा रह जाता, या कुछ भी खराबी होती तो उसे मर्दोंकी मददके लिये देखना होता लेकिन दूसरी तरफ नकली फूल और गुलदस्ते बनानेका काम वह चुटकियोमे सीख गई. उन्हे वह एसा सुघड और खूबसूरत बनाती कि महीने भरके अन्दर वहांके जनरल और कोअोपरेटिव स्टोर और दूसरी दूकानोसे उसके कामकी माग होने लगी. अचरजकी बात यह कि सीखनेको उसने एक सिखानेवालेसे सिर्फ दो सबक लिए थे, बाकी अपने आप एक किताबके सहारे-सहारे सीख गई थी. उसमे नमूने बने होते और वैसे ही वह बना चलती. यो हफ्तेमें एक डेढ़ रुपयेसे ज्यादेके फूल वह न बना पाती, पर इस पैसेसे उसका मन मानसे भर आता और वह बडी खुश होती. पहली कमाईके रुपयेसे उसने जाकर लखनपालके लिए एक सिगरेट-होल्डर खरीदा.

कई बरस बाद लखनपालने अपने मनमे यह स्वीकार किया कि उसके जीवनका यह समय शायद सबसे शान्त, सुन्दर और सुखका रहा. था. वह याद करता, और उसे सच्चा पछतावा होता एक उदास अभिलाषा करवट ले उठती रहता तब वह विद्यार्थी था, फिर वकील हुआ, लेकिन वे दिन फिर न आये. लुवी अनघड थी, शाइस्ता नही थी. शायद गवार थी और मूरख भी. लेकिन गिरिस्तनका भाव उसमे सहज समा चला था. आस-पास सेवामे चैन और शान्तिका वातावरण उसे बनाना आता था. यह गुण उसमे जन्मजात था. इसीके कारण था कि लखनपालका घर जल्दी मित्रोके लिए केन्द्र बन गया. वहाँ पहुचकर मानो तनाव उनसे उतर आता, वे चैन पाते और खुल आते. जीवनके कठोर यथार्थ और दुर्द्धर्ष संघर्षमें,जिसमेंसे कि वे गुजर रहे थे, उसके अभावों, परेशानियों और

परीक्षाओंमेंसे, यहाँ तक कि भूखको झेलते हुए वे हारे थके आते और यहाँ ठंडक पाते. लखनपाल कृतज्ञ, उदास, सम्मरणोमेंसे याद करता कि कैसे लुवी सहानुभूतिलीन सेवामें दत्तचित्त हो रहती जब सब समोवारके चारो तरफ बैठकर बात करते, बहस करते, एक दूसरेके सपनोंमे भाग बँटानेकी कोशिश करते, तो वह चुप बनी रहती और सबकी आवश्यकताओ पर उसका ध्यान रहता

अक्षर-शिक्षाकी गति मगर धीमी थी. ये अपने आप बने हुए अध्यापक लोग अलग अलग और साथ-साथ विवाद करते कि मानव मस्तिष्कका शिक्षण और उसकी आत्माका विकास आतरिक प्रेरणाओंमे से प्राप्त होना चाहिए लेकिन वे ही लुवीके दिमागम उन तत्वोंको भरने की कोशिश करते जिन्हे वे आवश्यक और अपरिहार्य समझते थे. वे उसके साथ उन वैज्ञानिक प्रश्नोकी चर्चाका प्रयत्न करते और उन्हे समाधान तक ले जानेका आग्रह रखते जिनको किनारे ही रहने दिया जाता तो हर्ज न था

मसलन गणित सिखाते समय लखनपालको लुवीकी अपनी आदिम देहाती जगली, बल्कि कहो अचकीली, गिनतीकी पद्धतिसे चिपटा रहना सह्य न था. वह एक दो तीन और पाँचको जानती और उन्हीकी उलट पलटसे अपना काम चलाती जैसे कि बारह उसके लिये थे, दो तिय दो बार. ग्यारह उसके लिए तीन तिये और दो हुए यह तो लखनपालको भी मानना होता था कि इस अपने तरीकेसे वह आन-फाननमे मजेमे सौ तक गिन ले जाती थी मगर इससे आगे बढ़नेको वह तैयार न थी और सच पूछिये तो उसकी कोई खास जरूरत भी न थी लखनपालने दहाईकी पद्धतिसे गिनती गिनना उसे सिखाना चाहा पर सब कोशिश बेकार रही. वह किसी तरह भी यह सीख ही न रखी इस पर वह अपना धीरज खो रहता और उसपर चिल्ला आता तो वह चुपचुपाती उसके चेहरेको देख उठती आँखे फटी-सी होती और उनमे अचरज भरा होता. फिर उनमे अपराध लिख आता. और पलक भरते आसुओंसे भारी हो आती और मिलकर वे फिर बड़े काले तीरके मानिन्द

बन्द हो आती

साथ ही जाने दिमागकी किस अजब लहरके अधीन हिसाबमे जोड गुणाको तो उसने अपेक्षाकृत आसानीमें सीखकर काबू कर लिया, लेकिन घटा और भाग उसके लिये दीवारकी ऐसी अड बन गये कि खुलते न थे लेकिन हैरतकी तेजी और सूझ-बूझमे वह हर तरहकी टेढ़ी मेढी दिमागको चकरानेवाली पहेलिया जबानी सुलझा डालती. देहातोमे हजारो वर्षोंसे चलनमे चलती हुई बहुतेरी पहेलिया उनमेसे उसे स्वय याद थी. जुगराफियाकी तरफ वह बिलकुल अनबूझ थी. यह सच है कि उसे मुहल्लेके, बागके, घरके बारेमे पूरी सुध और जानकारी थी. कहना चाहिये कि लाखनसे सैकडो गुनी ज्यादे. यो कहिये कि उसमे धरतीके किसानकी सहजबुद्धि और उसका चमत्कार था. लेकिन धरतीके गोल होनेकी बात उसे कतई मजूर न थी. न वह क्षितिजको समझनेको तैयार थी जब बताया जाता कि पृथ्वीका ग्रह गेदकी तरह आकाशमें घूमता है तो सुनकर वह हसीमे फूट पडती जुगराफियाके नक्शे उसे तरह तरहके रगोमे रगी कोई ऐसी चीज जान पडते कि जिसमे सूरत है पर मतलब नही है. लेकिन अलग-अलग चीजोको वह जल्दी और सही सही ध्यानमे ले लेती और उन्हे याद रखती लखनपाल उससे पूछता कि इटली कहा है ? लुबी फौरन बताती "यह तो है जो बूटकी तरह है" स्वीडन और नोरवे कहा है ? विजयके भावसे फौरन हाथ रखकर कहती—"यह रहा, छतसे कूदता हुआ कुत्ता बना तो है." बाल्टिक सागर ? "घुटनोके बल बैठी बुढिया यह रही." काला सागर ? "यह जूता." स्पेन ? "टोपीदार मोटूमल ये है" इत्यादि इतिहासमे हालत कुछ बेहतर न थी. लखनपालने ध्यानमे यह तथ्य नही लिया कि लुबीका मन शिशुकी तरह कल्पना-जगतमे रमता है, इतिहासके सारको रस और साहससे भरी नाना कथाएं सुनाकर बडी आसानीसे अवगत कराया जा सकता है. लेकिन वह तो इम्तहानोके तरीकेको जानता था और चौथी पाचवी क्लासोमे होनेवाली पढ़ाईके ढंगसे परिचित था. इससे नामों और तारीखोंपर वह लुबीका और अपना मगज फोड़ता रहता. इसके

अलावा वह बहुत बेसब्र था. बेकाबू हो जाता और झुंझला पड़ता. जल्दी थक जाता. और सच यह कि चाहे दबी कितनी हो लेकिन उसमें उगती और बढ़ती एक गुप्त घृणा उस लड़कीके लिये जिसने अचानक और अतर्क्य ढंगसे उसके जीवनको इस तरह उलझनमें घेर डाला था, सबक देनेके इन घंटोंमें रह-रहकर और वेगके साथ फूटे बिना न रहती.

नेजरस उनमें गुरु शिक्षकके तौरपर ज्यादे सफल था. उसका सितार और मेंडोलिन खानेके कमरेमें रिबनके सहारे खूँटियोंसे टंगे रहते. सितारके तारोंकी कोमल गूंज लुवीको ज्यादे खींचती. मेंडोलिनकी धाक की आवाज उसे चोट देती सी लगती और उसे मानो चिढ़ा देती थी. ज्यों ही नेजरस आया—और हफ्तेमें तीन या चार बार शामके समय वह आता था—झट बढ़कर दीवारसे वह सितार उतारती, अपने रुमालसे झाड़कर वह उसे पोंछती, और उसके हाथोंमें थमा देती. उसके तारोंको कुछ मिनटोंमें एक सुरमें मिलाकर वह खखारकर गला साफ करता और आरामसे पीछे कमर टेककर बैठ जाता. तब वह टांगपर टांग रखे अपने भरे गलेसे गाना शुरू करता. उसका गला खुशगवार था और आवाज किसी कदर भारी और भरपूर थी.

चुंबन की यह लुभावनी आवाज़
रात की सुभ्र हवा में थिरकी आ रही है
मनों को छीने ले जा रही है।
प्रेमियों को संदेसा है—
रात है और प्यार है
प्यार है और रात है।
... ...
मिलन की एक घड़ी के लिये
जिया मेरा अकुला रहा है
अरे, धड़-धड़ धड़क रहा है
आओ ना, आओ ना, आओ ना।

लगता कि वह अपने गानेसे छा गया है. आँखें उसकी बन्द होतीं.

गानेमें भावपूर्ण जगहोंपर गर्दन हिल आती थी, आरोह अवरोहके बीच समपर वह तारोंसे एकाएक अपना दायाँ हाथ अलग खींच लेता, पल भर सुन्न और शान्त बैठा रहता जैसे कि मर्मरकी मूरत हो. तब वह आँखें खोलता और अपनी अस्पष्ट सी निगाहसे लुबीको मानो भेदता हुआ देखता. उसे जाने कितने लोकगीत याद थे, और भजन और तरह-तरहके हलके गीत.

लेकिन सबसे अधिक जो लुबीको लुभाते पद थे आर्मिनिया प्रदेशके प्रसिद्ध लोकगीतके ये छन्द:—

वह शकल है भोली भाली
पर गालों पर गोलाबी
श्रो अधरों पै गुल्लाली
वाहे वाह, वाहे वाह !

इस तरहके बेशुमार छन्द प्रिसको याद थे. लेकिन अंतकी टेक करीब सबकी एक ढंगकी होती थी.

वाह वा री श्रो शरबतिया
तो से कहूँ री यह कनबतिया
काहे गाल पै मोहे चूमे
चूमे तो चूम मेरा मन रसिया।

हल्की विनोदकी चीज जब वह गाता तो चेहरा उसका खुला और सीधा रहता और लुबी इतनी हँसती, इतनी हँसती कि दर्द होने लगता, यहां तक कि आँसू आ जाते और दोहरी हो हो रहती. एक बार गानेके सुरमें बहनेके बाद वह रुक न पाती और खुद भी उसमें शामिल हो जाती. और दोनों जने एक सुर एक तानमें गाते रहते. हलके-हलके लुबी नेजसरकी आदी हो गई और किसी तरहका असमंजस बीच न रहा और अकसर वे साथ मिल कर गाते. लुबी की आवाजमें घेर ज्यादे न था पर वह कोमल थी और मीठी. जाने किस प्रकार संभव हुआ पर उसके पेशेकी पिछली ज्यादतियोंका प्रभावोंका और शराबोंका उसके गलेपर असर न पड़ा था.

और खासकर भगवानकी यह एक देन ही कहिये कि उसमें एक जन्मजात सहज क्षमता थी कि वह बेहद सही तौरपर खूबसूरतीके साथ मानो अपना ही हो वह किसी रागकी संगत अदा कर देती. फिर तो उनकी संगतमें वह वक्त भी आ गया कि जब प्रिसको कहनेके बजाय खुद प्रिस ही लुवीसे गानेकी फरमाइश करता. लुवीको ऐसे लोक-गीत जो हर किसीको मन भा सकते थे अनेकानेक याद थे और वह कोहनी मेजपर टिकाये हथेलियोंमें सिर लेकर देहातकी किसान स्त्रीकी तरह संगतमें गा उठती. आवाज मद्धम होती, सावधान और कोमल.

ओह. रातें मुझे भारी हो गई हैं
काटे कटती नहीं
साजन से बिरहा, प्रीतम से बिछोह
ओ री नारि, मूरख तूने क्या किया
अपने प्यारे को क्यों कहा सुना ?
ले, वह रूठ गया और आता नहीं !

"...आता नहीं" प्रिस इन आखिरी शब्दोंको लुवीके साथ दोहराता और अपने घुंघराले बालों वाले एक तरफ झुके सिरको डुला उठता. तब दोनों कोशिश करते कि गीतको ऐसे समाप्त करें कि सितारके कांपते तारोंकी क्रमसे क्षीण होती हुई ध्वनिके साथ ही उनकी वाणी भी शनैः-शनैः गिरती हुई शांत होती जाय. यहाँ तक कि मालूम न हो पाय कि ध्वनि कहाँ समाप्त हुई और निःशब्दता कहाँ शुरू हुई.

लेकिन जोर्जियाके प्रसिद्ध कवि रुस्तावेलीकी पदावलीके संबंधमें प्रिसको बुरी तरह मुंहकी खानी पड़ी. सच ही उन कविताओंका सौंदर्य मूल भाषाकी ध्वनि और नादका था. लेकिन वह अपने सधे गलेसे तरन्नुमके साथ उन पदोंको तनिक गाना शुरु करता कि लुवी शुरुमें तो आती हुई हँसीको बहुत देरतक दाबनेकी कोशिशमें कांपती रहती, फिर खिलखिलाहटमें फूट कर ऐसी पड़ती कि सारा कमरा उसकी लहरोंसे देरतक गूंजा करता. तब नेजरस गुस्सेमें उन श्रद्धेय कवि गुरुकी पदा-

वलीकी पुस्तकको जोरसे बद करता और लुवीको खूब मस्त सुस्त कहता. कहता कि वह गधी है गधी, खच्चर ! लेकिन उसके बाद जल्दी दोनोंकी बन भी जाती.

नेजरसकी तबीयतमें कभी-कभी शरारतके भी दौर आया करते थे. तबीयत मचल उठती और खेल आना चाहती. तब वह ऐसे देखता मानो उसे अपने आगोशमें ले लेना चाहता है. उस दृष्टिमें अतिशयता होती, इशारे होते और मानो लबालब भरा प्रेम होता और वह मानो नाटकीय ढंगमें दिल थामकर कहता, "ओ मेरे जहानकी मल्लिका ! अल्लाहके बहिश्त ! ए रोशन गुलाब ! तेरे लबोंकी शराबो शहदसे मीठा जहानमें कुछ नहीं. तेरी साँसके साथ जहान उठता और गिरता है! ला, अपने इन लबेलालीसे मुझ मस्तीका एक घूट दे तू कि जिसका सानी कायनातमें कोई नहीं"

लुवी हँस पडती झिटकती और उसके हाथोंकी थपकसे अलग करती और कहती कि लखनपालसे कह दूँगी !

"हा " प्रिस अपने हाथ फैलाकर कहता, "लखनपाल क्या है, वह मेरा दोस्त है, वह मेरा भाई है, जिगरी यार है. लेकिन क्या उसे मालूम है कि 'लाफ' क्या चीज है क्या यह मुमकिन भी है कि तुम उत्तरके लोग 'लाफ' को समझ तक सको. यह तो हम हैं जोर्जियाके वागी जो 'लाफ' के लिए सिरज गए है. ला देखो लुवी मैं अभी दिखाता हू कि 'लाफ' क्या है ' कहकर वह एकाएक अपनी मुट्ठिया भीच लेता, सारे बदनका आग भरा लाता और आखोंको भयावनी बनाकर उसकी पुतलियोंको घुमाना शुरू कर देता, दातोंको मिसमिसाता. शेरकी तरह दहाडना शुरू कर देता लुवी यह जानते हुए भी कि यह आखिर मजाक ही है डरसे कापे बिना न रहती और बचनेके लिए ताबडतोड कमरेसे बाहर भाग जाती तो भी यह कहना होगा कि इस युवकमें जो यो छोटेमोटे मामलोंमे खुला और निर्बन्ध था कुछ विशेष नैतिक निषेध बद्धमूल थे जो कि जोर्जियन माताके दूधके साथ ही उसने प्राप्त किए थे.

जैसे यह कि मित्रकी पत्नी सदा वर्जनीय और आदरणीय है. और शायद वह जानता था कि लुवीके साथ एक बार एक क्षणके लिए भी वह अवैध संबंधमे आया तो फिर हमेशाके लिए वह एक तरह इस घरेलू शांत और प्रसन्न संध्याओंसे निर्वासित हो जाएगा जिनका वह आदी होता जा रहा है. यह इस तरहकी सहजबुद्धि चाहे आप कुछ कहिए पूरबके आदमियों-में बहुधा पाई जाती है. देखनेमें चाहे वे सीधे-भोले लगें तो भी, पर शायद उसी कारण, उन्हें यह अंतस्थ प्रज्ञा मानो सिद्ध होती है, और नेजरसकी जहांतक बात है वह बिश्वविद्यालय भरमे अगरचे सभीके साथ तूसे बात करनेतक वास्ता बनाए हुए था पर वास्तवमे इस अजनबी शहर और अबतक अजनबी बने हुए देशमें वह अपनेको भीतर बहुत अकेला अनुभव करता था.

लुवीको पढ़ानेके काममे सबसे ज्यादा आनन्द सोमदेव लेता. यह तगड़ा खासा जवान तबियतका लापरवाह था. उसे खुद मालूम न था, पर किसी तरह अनजाने वह स्त्रीत्वके असरमे खिचा आ रहा था यह आकर्षण अलग ही होता है. उसे बांधना मुश्किल है, रोकना मुश्किल है. स्त्रीत्व वह बाह्य अनाकर्षकता और अकोमलतामेंसे भी काम कर जाता. शिष्या अग्रणी थी, अध्यापक अनुगामी. लुवीकी प्रकृतिके सहज गुण—आदिम पर अविकृत, गहन और मौलिक उसे अपनी ही निराली राहकी खोजपर लिए जाते थे. बताई रीति वह न ले पाती थी. इस तरह जैसा कि अकसर बच्चोंके मामलेमें होता है, उसने पहले लिखना सीखा फिर पढ़ना. स्वभावसे वह आज्ञानुवर्त्ती थी और नम्र, पर मस्तिष्क में कुछ उसके ऐसा निरालापन भी था कि जब पढती तो व्यंजनके साथ स्वरको या स्वरके साथ व्यंजनको रखनेसे वह एकदम इंकार कर देती. हां लिखनेमें वह यह आसानीसे कर लेती थी आरम्भिक विद्यार्थियों की आदतके प्रतिकूल उसे लिखना पसन्द था, और लिखने बैठती तो वह कागजपर दुहरी होकर झुक आती. सांस जोरसे चला करता, मालूम होता जैसे आयासके श्रमसे हांफकर मानो कागजपर पड़ी किसी कल्पित

धूलको उड़ा रही हो. रह रहकर जीभ होठोंपर फेरती और फिर उसे अन्दर लेकर कभी इस गाल तो कभी उस गालको ठेलकर फुला रहती. सोमदेवने भी इसमें विघ्न नहीं डाला. जिधर उसकी वृत्ति गई उसी ओर चलनेको वह राजी हुआ. कहना होगा कि सवा डेढ़ महीनेके अर्से में वह इस निरीह प्राणीके प्रति अनुराग रखने लगा था जो संयोगसे उसकी राह आ गया है और फिर जिसे मिलना नहीं होगा. सबके लिए बन्धुभावसे भरा उसका विशाल हृदय एक कोमल भावसे भर आया. एक विशाल हाथीमें नन्ही-सी एक आहत चिड़ियाके प्रति सहानुभूति हो तो क्या हो ? कुछ वैसी ही करुणा और विस्मयसे भरा भाव उसमें दर्द दे आया था.

यह पढ़ाई दोनोंको ही छुट्टी देती. यहां भी विषय और ग्रंथका चुनाव लुवीकी रुचिके अनुसार निश्चित होता. सोमदेव उसकी तरंग और उसके रूझानपर ही चलता. मिमालके लिए जैसे लुवी 'डान क्विकजोट' पर काबू नहीं पा सकी, जल्दी थक आई और आखिर उससे मुंह मोड़कर वह 'रोबिन्सन क्रूसो' की तरफ झुकी. वहां उसका बहुत मन लगा और खासकर जहां रोबिन्सन अपने रिश्तेदारोंसे मिलता है उस दृश्यपर वह आंसू बहाए बिना न रहती और खुलकर रो उठती. डिकन्स उसे पसन्द आता और उसके सूक्ष्म सुन्दर व्यंग वह बडी आसानीसे समझ लेती. लेकिन अंग्रेजी तौर तरीकोंके बहुतसे नियम उसके लिए विदेशी रहते और खाक समझ न आते. उन दोनोंने एकसे ज्यादा बार चेखबको पढ़ा और लुवी बिना किसी कठिनाईके स्वतन्त्र भावसे उसके शिल्पकी मुघरता उसकी उपमाएँ उसकी भाव-व्यंजनाकी सुन्दरता गह लेती. बच्चोंकी कहानियां उसको हिला देतीं. वे उसे इस हदतक छूतीं कि उसे उस समय देखनेसे ही अच्छा लगता और खुशीसे हंसे बिना न रहा जाता. एक बार सोमदेव ने उसे चेखबकी कहानी 'दौरा' पढ़कर सुनाई. उस कहानीमें, जैसा कि मालूम ही है कि, एक विद्यार्थी पहले पहल अपनेको वेश्यालयमें पाता है. अगले दिन फिर उसको पछतावेका एक ऐसा गहरा दौरा पड़ता है कि मानो रेशे-रेशे उसे धुन डाला गया हो. पापकी चेतनाकी तीव्र मनोवेदना

मनका चैन खा जाती है सोमदेवको स्वयं आशा न थी कि इस कथानकका उसपर इतना जबरदस्त असर होगा. वह रोई, अपने उसने हाथ मले, हा हा करके सौगन्ध खाई और बराबर कहती जाती थी कि हे भगवान! लिखनेवालेने यह सब लिया कहासे और लिखा किस तरहसे, अरे यह तो हूबहू सच है यही तो है, जो हम सबके माथका सच है. एक बार वह अपने साथ ऐबे प्रीवास्टका प्रसिद्ध उपन्यास लेकर आया. कहना होगा कि सोमदेव खुद उस असाधारण पुस्तकको पहली बार पढ रहा था. लेकिन तो भी लुवीने उसे कही ज्यादा सराहा और समझा. उस पुस्तक मे प्लाटका अभाव था, वर्णनमे अनोखापन न था, भावनाका अतिरेक था, शैली पुरानी थी. इस सबमे सोमदेवका उत्साह कुछ मिलाकर मद होता था. लेकिन लुवी उस अनोख अमर उपन्यासकी सुख दुखकी गाथाओ को उसके मार्मिक अथवा कि अनावश्यक ब्योरोको मानो कानोमे ही ग्रहण नही करती थी बल्कि जैसे अपनी आखोमे और पूरी तरह खुले अपने अकृत्रिम हृदयमे उन्हे उपलब्ध करती जाती थी

"मट डेनिमपर हमारी स्वीकृतिका विचार हमे भूल गया." सोमदेव सुनहरे बेतरतीब बालोके सिरको जिसपर लैपके शेडका प्रकाश था किताब पर झुकाये पढ रहा था. "हमने धर्मके नियमोका उल्लघन किया और उसका बिना विचार किए आपसमे विवाहित हो गए"

"वे कर क्या रहे है ? यानी सिर्फ अपनी मर्जीसे ? बिना पादरी पुरोहितके ? यही ना ?" लुवीने अपन कृत्रिम फूलोको झपटकर अपनेसे अलग करके बेचैनीके साथ पूछा "यह सब क्या है ?"

"क्यो, क्याकी क्या बात है ? मुक्त प्रेम है बस इतनी सी बात है और ठीक बात है. जैसे कि समझो तुम और लखनपाल."

"ओ दैया, यह तो बिल्कुल दूसरी बात है. तुम जानते हो कि मुझे कहाँसे लाए है लेकिन यह तो मासूम, इज्जतदार कुनबेकी युवती कन्या है यह तो उसके लिए जरूर ही नीच और हीन काम हुआ. और मै कहती हू सोमदेव, पीछे जाकर वह उसे छोड़े बिना न रहेगा. ओह, बेचारी लडकी ! अच्छा, अच्छा, अच्छा आगे पढ़ो."

लेकिन कुछ पृष्ठोके बाद लुवीकी सब सहानुभूति और करुणा पुरुष की तरफ हो गई थी जिसे छला गया था.

"तो भी महाशय—का गुप्त आना जाना मुझे हैरतमे डालता था, मुझे उन खरीदी गई छोटी मोटी चीजो और उपहारोकी याद आई जिनका खरीदना हमारे बिनसे बाहरकी बात थी इस सबमे एक नये प्रेमीकी उदारताकी झलक मिलती थी. लेकिन मै अपनेको दोहरा दोहरा कर कहती—नही नही यह असम्भव है कि मैनन मुझस छल करेगी. उसे मालूम है कि मै उसीके लिए जीती हू. खूब जानती है कि मै उसकी पूजा करती हू"

"आह, नन्ही मूरख बेचारी" लुवीने ममतामे कहा—"क्यो क्या तुम सीधे ही नही देख सकते कि उमे यह रईस साहब रक्खे हुए है. आह, बदजात ही जो न हो"

और उपन्यास जैसे-जैसे आगे बढकर खुलता जाता लुवीका रस भी उसम उतना ही गहरा और उत्कट होता मैनन अपने आगे होनेवाले मेहरबानो और चाहने वालोको अपने प्रमी और भाईकी मददसे जो चूसती और लूटती है मा उसके खिलाफ लुवीम कोई भावना नही है लेकिन हर नय छल और विश्वासघातकी घटना उसमे क्रोध उत्पन्न करती है जब कि पति महाशयके दुख और वेदनाके प्रति जिसे भूलनेके लिए वह क्लबमे ताशमे जमे रहते ह लुवीम आसू उठते और गिरते है एक बार उसने पूछा—

"सोमदेव यह था कौन लिखनेवाला ?"

"वह कोई फ्रासीसी पादरी था'

"तो रूसी नही था वह !"

"नही, कह तो रहा हू, फ्रासीसी था. देखो सब उसी तरह है. शहर फ्रांसीसी है और लोगोके नाप फ्रच नाम है"

"और तुम कहते हो वह साधु पादरी था. तो यह सब उसने जाना कैसे ?"

"बस यह समझो कि जानता था, और क्या ! और यह भी बात है

कि वह हम सबकी तरह दुनियादार था. एक रईस सरदार, और साधु तो पीछे जाकर बादमें हुआ. उसने जीवनमें बहुत कुछ देखा भोगा था. बादमें फिर उसने साधुपन भी छोड़ दिया. लेकिन छोड़ो, किताबके इस पन्ने पर उसके बारेमें खुलासा सब लिखा तो है."

ऐब प्रीवास्टके चरितके बारेमें लिखा उसने लुवीको पढ़ सुनाया. लुवी ध्यानसे सब सुनती गई. बीचमें साभिप्राय सिर हिलाती जाती. कहीं कुछ ठीक समझमें न आता तो पूछ पूछकर साफ कर लेती. आखिर वह पूरा हुआ कि कुछ सोचते हुए लुवी बोली—"तो यह है जो वह थे. लेकिन सच बहुत ही अच्छा लिखा है. लेकिन वह इतनी नीच और हीन क्यों बन गई. आदमी तो उसे इतना जी और जानसे प्यार करता था. लेकिन वह है कि हमेशा उसको धोखा ही दिये जाती है."

"लुवी मेरी, तुम्हीं सोचो क्या हो सकता है. प्यार तो पतिको वह भी करती है. लेकिन मानिनी स्त्री है और बहिर्मुख. उसे जो चाहिए वे हैं कपड़े और घोड़े और हीरे और—."

लुवी भड़क पडी और हथेलीपर दूसरे हाथकी मुट्ठी मारकर बोली—"मैं उसको चूर-चूर कर दूंगी, बदजात फ़ाहिशा. सो इसको कहते हो तुम कि प्यार करती थी. अगर पुरुषको प्यार किया जाता है तो जो उससे आता है वह सब भी तुम्हें प्यारा हो जाता है. वह जेलखाने जाता है तो तुम उसके साथ जेल जाना चाहती हो. वह चोर बनता है. तो हां तुम उसे मदद करती हो. वह भिखारी है तो भी तुम उसका साथ देती हो. क्या इसमें आता जाता है कि तुम्हारे पास रोटीका बस एक बासी टुकड़ा है बशर्ते कि जब तक प्यार है. वह नीच है, निकम्मी है, बदकार है और क्या. लेकिन मैं पतिकी जगह होती तो उसे छोड देती और आह भरने और रोनेकी जगह उसकी ऐसी खबर लेती कि महीनेभर दाग उसके बदनपरसे न हटते. बदकार कहींकी"

उपन्यासका अन्त वह किसी तरह बहुत समयतक समाप्तितक नहीं सुन सकी. कारण, वह सदा ही सुनते सुनते टूट जाती. सच्ची समवेदनाके आंसू आंखोंमेंसे बहने लगते और पढना रोकना पड़ता. इस तरह अभी

वही अध्याय चार बारमे करके कही पूरा किया जा सका,

जेलखानेमे उन प्रेमियोपर आई विपदाओ और आपदाओंकी कथा और मैननके जबरदस्ती अमरीका भेजे जाने और साथ स्वेच्छासे और त्यागपूर्वक पति महाशयके भी सकट उठाकर उसके पीछे पीछे जानेके इतिवृत्तने लुवीकी कल्पनाको इस तरह छा लिया और मनको ऐसा भकभोर डाला कि वह अन्तमे कुछ भी कहना भूल गई. मैननकी मृत्युके विवरणपर वह विभोर हो आई कैसी सुन्दर और शान्त वह मृत्यु थी. विस्तृत एकान्त मरुप्रदेश है और वह है. हिलडुल नही रही है. छाती पर दोनो हाथ जुड़े रक्खे है और निगाह एकटक दूर प्रकाशपर स्थित है. यह वर्णन सुनती है कि लुवीकी फैली आखोमे आसू बरबस भर आते और तार-तार झडीके मानिन्द मेजपर गिरने लगते. लेकिन जब उसके पति महाशय गिर्दे-गिर्द अपनी प्रिय पत्नीके शवके साथ दो दिन रात पड रहनेके बाद अतमे अपनी तलवारकी मूठमे उस मृत देहके लिए कब्र खोदना शरू करते है तब तो लुवी इस तरह बिसूरकर रो उठी कि सोमदेव घबरा गया और पानीके लिए दौडा लेकिन कुछ स्वस्थ और शात होनेपर भी वह रह रहकर अपने सूजे और कापते होठोसे सुबकती ही रही और बडबडाती जाती.

"ओह, कैसा उनका अभागा जीवन रहा कैसा कठिन और दुखभरा. प्यारे सोमदेव, क्या यह मुमकिन है कि विधाताका यही विधान हो कि जैसे ही स्त्री और पुरुष एक दूसरेके प्यारम पडे, कि जैसे वे पडे थे, तो भगवान इसकी सजा देता ही देता है. लेकिन प्रिय, ऐसा क्यो है ? क्यो, क्यो ?

१७

इस प्रकार लुवीकी शिक्षा चल रही थी. आशा थी कि उसका मस्तिष्क और उसकी आत्माका इससे विकास होगा. पद्धति उसकी बीहड़ थी पर

दुनियाबी समझदारीके काटोके खिलाफ मानो जौर्जियन प्रिस और सहृदय सोमदेव बचाव थे. मानो वे हर दबावको अपनेमे जज्ब कर लेते थ. उधर वह लखनपालकी गुरुआईसे भी अप्रसन्न न थी. कारण कि जीवन मे पहली बार उसके प्रति उसने अमित, असीम सच्चा प्यार अनुभव किया था उसके विद्वत्ताके दम्भको उसने एसे माफ कर दिया जैसे कि वह उसकी गालियोको, उसकी मारको, यहातक कि घोर अपराध तक को क्षमा कर देती. पर सोम वास्तीके हाथो जैसे उसको पढाया जाना वह उसके लिए शुद्ध त्रास था. दिमागपर हर वक्त वह बोझके मानिंद सवार रहता. इन आत्मनियोजित शिक्षकोमेसे एक वह था जो गोया कमदन सबसे ज्यादे वक्तका पाबन्द था. तनख्वाहदार ट्यूटर भी जितना नियमित होता उससे ज्यादे ही नियमित वह था.

अपने मतमे दृढ और अडिग, विश्वासमे कठिन, भाषामे स्पष्ट और वक्तव्यमे उपदेशात्मक. वह एसे चलता कि लुवीकी गति मति हर रहती. उसकी सुध-बुध खो जाती. नये आए विद्यार्थियोकी सभामे वह अक्सर इसी तरह उनके कच्चे और सकोची दिमागोपर छा रहता. वह अक्सर विद्यार्थी-सभाओमे बोला करता. भाषणोके छापने बाटनेमे वह अक्सर हिस्सा लेता, अक्सर वह मानीटर चुना जाता और छात्र-फड आदिके मामलोमे बहुधा वह सक्रिय दिखाई देता

वह उन लोगोकी गिनतीमे था जो विद्यार्थी अवस्थासे निकलकर पर्टियोके नेता बना करते है वे स्वार्थ त्यागी और पवित्र अत करणके निर्बाध विधाता होकर. कही किसी छोट-मोट प्रदेशमे अपने राजनीतिक मचका निर्माण करते और देशभर का ध्यान अपनी पराक्रमपूर्ण पर दयनीय दशापर खीचना चाहा करते है तब फिर अपनी व्यतीत सेवाओकी दुहाई देते हुए किसी बडे नेताका सहारा थामे, या डेपुटेशनके बलपर, या किसी सुभीतेकी शादीके सहारे छोटी-मोटी प्रभुता और सम्पत्ति आसपास खडी कर लेते और उसमे रम रहते है उन्हे जैसे स्वय नही मालूम होता, और ऊपरसे देखनेवाली निगाहोको भी मालूम नही होने पाता और वे ढलकर किनारे खड़े हो जाते है. या ज्यादे सही यह कहना

चाहियें कि श्लथ और शिथिल वे अपना पेट बढ़ा चलते हैं और फिर बीमारियां उन्हे अजीर्णकी और जिगरकी हुआ करती हे. तब वे सारी दुनियापर खीजते और खिजलाते हैं. कहते हैं कि उन्हें सही समझा नहीं गया और समय उनका था कि जब आदर्शोका मूल्य और महत्व था. दूसरी ओर वे ही लोग परिवारोमें हाकिम बनकर रहते और अक्सर सूद-बट्टेपर रुपया चढ़ाया करते हे.

लुवीकी शिक्षा विधिका ढग उसके मस्तिष्कमे साफ था यो जो भी योजना वह बनाता उसकी हर चीज उसके सामने साफ होती और निश्चित और अनिवार्य. उसका निर्णय था कि पहले लुवीको पदार्थ-विज्ञान और रसायन शास्त्रके प्रयोगोंका ज्ञान मिलना चाहिए.

उसने सोचा एक किशोर स्त्री-मस्तिष्क उन विज्ञानोंके समक्ष चकित हुए बिना रह न सकेगा और इस प्रकार मे उसका ध्यान एक ओर खींच सकूगा. छोटे-छोटे प्रयोगो और युक्तियोमे मैं उसे जगतके ज्ञानके एकदम केन्द्रमें ले जाऊंगा कि जहा कोई मिथ्या विश्वास नही है. न दृढ़ मान्यतायें. बल्कि जहा प्रकृतिको सीधे समझने का विस्तृत क्षेत्र फैला है.

कहना होगा कि वह अपने शिक्षाक्रममे नियमित न था लुवीमे अचरज पैदा करनेको उसे जो हाथ लगता वही साथ खीच लाता. एक बार खुद-का बनाया हुआ एक बड़ासा साप ही ले आया और एक गत्तेकी बनी हुई लंबी नलकी जिसमे बारूद ठूंमकर भर रक्खी थी और उसे मोड़तोडकर बाजेकी शकल दी हुई थी, चारो ओरस उसपर पट्टी बधी थी. आकर इस बाजेमे उसने बत्ती दिखाई और साप बहुत देर तक हिसहिसाता हुआ खानेके कमरेमे, सोनेके कमरेमे, उछल कूद मचाया किया. सारेमें पटाखेकी सी आवाजें छूटती रही और गंध और धुआ भर गया. लुवीको इसमे कोई खास अचरज नहीं हुआ. बल्कि उसने कहा कि यह तो सीधी-सादी आतिशबाजीकी चीजे हैं . यह सब उसका देखा हुआ है और तुम इस तरह उसे अचम्भेमे नहीं ला सकते. आखिर उसने कहा कि अच्छा खिड़की तो खोल दू. उसके बाद वह एकबड़ी सी शीशी लाया, कुछ और

इधर उधरकी चीजें जमा कीं और एक शिगूफा तैयार किया. उससे कोई बहुत जोरका तो नही ताहम कुछ न कुछ धमाका हुआ.

लुवीकी कन्नी उंगलीमे वहांसे छुटी एक चिंगारी छू गई और लुवी चिल्लाई—'ओह दैया, तुझे मौत ले जाय'.

तदनतर रेतीमे मिलाकर मेंगनीज पेरोक्साइडको गरम किया गया. दवाखाने जैसी एक कांचकी नली ली, पिचकारीमेंसे गटापार्चा वाला सिरा निकाला, एक चिलमचीमे पानी भरा और अचार मुरब्बे वाला कांचका अमृतबान खाली किया. ऐसे आक्सीजन खींची गई. अमृतबानके अन्दर वह लाल सुर्ख डाट और कोयला और फोस्फोरस इस कदर रोशनी देकर जल आये कि आंखें चोंधिया पडी. लुवी ताली बजा उठी और खुशीके मारे चिल्लाई. "प्रोफेसर साहब जरा और, थोडा और प्रोफेसर साहब".

लेकिन जब एक खाली बोतलमें आक्सीजन और हाइड्रोजनको मिलाकर एहतियातके तौरपर उसे फिर तौलियेमे लपेटकर लुवीके हाथमें दिया और सोम वास्तीने कहा कि इसके मुंहको जलती मोमबत्तीकी लौके पास लाकर खोलो तो वह झिझकी. खोलना था कि जोरका धमाका हुआ. ऐसा कि तीन चार तोप एक साथ छूटी हो. उस धमाकेसे ऊपर छतका प्लास्तर उपडकर नीचे गिरा तब लुवी मारे डरके कॉप गई और फिर जैसे तैसे पूरी सुध पाकर कांपते होठोंसे, मगर रोब रखते हुए बोली

"माफ कीजिए, लेकिन चूंकि अब मेरा अपना घर है, मैं यूंही एक लडकी नही हूं, बल्कि इज्जतदार स्त्री हूं. इससे मैं कहूंगी कि मेहरबानी करके आप मेरी जगह इस किस्मकी कार्रवाई न करें. मुझे ख्याल था कि पढे लिखे और सलीकादार आदमी होकर आप जो कीजियेगा मुनासिब और मुबारक होगा लेकिन आप बेवकूफीकी बातें करने लग गये. उसके लिये किसीको जेल तकमें बिठाया जा सकता है".

पीछे हां बहुत बार उसीने बताया कि पहले एक तालिब इल्म दोस्त था जिसने उसके सामने डायनेमाइट तैयार करके दिखाया था. निश्चय

ही यह मोम वास्ती आखिरकार कुछ मोटी अकलका आदमी रहा होगा. वही कि जो अपनी तरुण मडलीमे इतना प्रभावशाली था जहां ज्यादेतर सिद्धान्त और तत्वकी बातोसे काम पडता था. इसे पहेली ही कहना चाहिये कि जब उसीके हाथो व्यावहारिक प्रयोगके लिये एक जीता जागता जीव पडा तो वही तीन तेरह हो रहा फिर भी इस अकृतार्थताको उसने प्रगट नही होने दिया इसको खूबी ही कहना होगा

विज्ञानके इन वस्तुगत प्रयोगोकी असफलताके बाद वह तुरत मनोविज्ञान और आत्मविज्ञानकी तरफ बढा

एक दिन उसने ऐसी निश्चयात्मक वाणीमे कि जिसका प्रतिशोध सम्भव ही नही है कहा, कि कही कोई ईश्वर नही है, और देखो यह मै पाँच मिनटके अन्दर साबित कर दे सकता हूँ लुवी यह सुनकर अपनी जगहसे उछल आ. और मजबूतीसे बोली कि पहले वेश्या रही है तो क्या. ईश्वरमे उसका विश्वास है और अपनी मोजूदगीमे किसीको उनका अपमान नही करने देगी आग कहा कि अगर तुम ऐसी ही बेहूदा बात करते रहे तो वह लखनपालसे शिकायत कर देगी

"मै यह भी उनसे कहूँगी," आंसू भरे लहजम वह कहती गई, "कि पढाने और सबर सिखानेके बजाय तुम वाहियात बातोके सिवाय कुछ नही करते और एसी गन्दी बकवास करते हो और हर वक्त अपना हाथ मेरे घुटनोपर रख रहते हो और यह सही और मुनासिब बात नही है" और यह कहकर लवी जो आम तौर पर बहद डरी सी रहती थी, उसके साथकी जान पहचानके कालम पहली बार तेजीसे उससे परे हट गई.

इन कुछ अकृतार्थताओके बावजूद मोम वास्तीका प्रयास जारी ही रहा. लुवीके मन और मस्तिष्कपर प्रभाव लानेका प्रयत्न उसने तोडा नही. उसने प्राणीकी उत्पत्ति और विकासका सिद्धान्त समझानेकी चेष्टा की कैसे आरम्भ अमीबासे हुआ और नेपोलियन तक विकासका चरम पहुँचा. लुवी ध्यानसे उसे सुनती गई. इस सार काल उसकी

आंखोमें जैसे कि याचना थी. मानो वह मूक भावसे जानना चाहती है कि आखिर यह सब तुम खत्म कब करोगे. उसने रूमाल मुहके आगे लेकर जमुहाई ली और अपराध भावसे कहा—माफ़ करना जरा थकावट हो गई है. मार्क्सको भी उसी तरह सफलता नही मिली. माल, मूल्य, मूल्यका रहस्य, मालिक, मजदूर जो कि सिर्फ अक बन गये है—यह सब शब्द थे जो हवामें बनते और गूंजते रह जाते थे और लुवी बेचारी सीधी और भोली सुनती सुनती एकाएक खुशीसे उछल पडती- जब पता पाती कि दाल अगीठीपर उबलकर छलक पडी है या लगता कि दरवाजेपर कोई आकर खटखटा रहा है।

यह तो नही कहा जा सकता था कि स्त्रियाँ सोम वास्तीको पसद नही करती थी. उसका अमित् आत्म-विश्वास उसकी सशक्त निश्चयात्मक वाणी साधारण नारियोपर सदा प्रबल प्रभाव उत्पन्न करती. खासकर वे जो कोमल वयकी होती और सरल भावसे विश्वासी स्वभाव की. वह लम्बी देर तक चलनेवाले प्रेम-व्यवहारोसे बाहर निकल आने मे कुशल था या तो वह जतलाता कि उसके ऊपर बडे महत्त्वके काम का दायित्व डाल दिया गया है जिसके कारण प्रेम वग़ैरहकी फुरसत उसे नही है. या दिखलाता कि वह तो पुरुषोत्तम है कि जिसपर बन्धन नही और जिसे सब जायज है. लुवीका प्रतिरोध यों प्रत्यक्ष न था और कुछ निष्क्रिय भी था, पर था वह निश्चित और निरन्तर पर यह रुख उसको उभारता और चहकाता था खास तौरसे जो उसे क्षुब्ध और उद्दीप्त करती यह बात थी, कि लुवी जो हर किसीके लिय ऐसी सुगम और सुलभ थी जो हर दो रुपय फी कस देने वाले कई कई आदमियोको अपना शरीर हठात् सौपती रही है, वही उसे यह दिखानेकी कोशिश करे कि लखनपालके लिए उसका प्यार स्वार्थहीन और पवित्र है, नही नही।

आत्मापरसे पतन और पापकी लकीर पूरी तरह कभी भरती नही है और यौन व्यवहारकी वीभत्सताये स्मृतिसे पूरी तरह धुलकर कभी साफ़ नही हो पाती.

'झूठ, बेकार !' वह सोचता, 'यह सच हो ही नही सकता वह तो बस नाटक रच रही है . . . . . .और मालूम होता है कि मै अभी उसके मनके सही सुरपर हाथ नही रख सका हूँ.'

दिन गुजरनेके साथ उसकी माँगका दबाव बढता गया. उसकी सख्ती बढती गई. वह अधिकाधिक दोष निकालने लगा. शायद यह वह जान-बूझकर नही, आदतवश करता था उसे जैसे अपने प्रभुताके प्रभाव की टेव थी जिससे सामनेवालेका विचार दब रहता और इच्छा-शक्ति अधीन हो रहती उसे इस स्वभावमें पराजय शायद ही कभी मिली थी

एक दिन लुवीने लखनपालसे उसकी शिकायत की. "लखनपाल, वह मेरे साथ सख्ती बरतते है, और जो वह कहते रहते है उसका एक शब्द मेरी समझमें नही आता अब और पाठ मैं उनसे नही लेना चाहती."

लखनपालने उसे समझाकर शान्त किया और फिर सोम बास्तीसे बात की. उसने कुछ अतिरिक्त स्थिर भावसे कहा, "जैसी तुम्हारी इच्छा हो बन्धु ! अगर तुम और लुवी मेरी शिक्षा पद्धतिसे सहमत नहीं हो, तुम्हे वह रुचिकर नही है, तो मैं उसे स्थगित करनेको उद्यत हूँ. मेरा कर्त्तव्य बस यह था कि उसकी शिक्षामे मैं शिस्त और सयमका प्रवेश करूँ. अगर मेरी भाषा वह नही समझती है तो मेरा प्रयत्न होगा कि वह उसे ज्योका त्यों याद रख ले आगे यह आवश्यक न होगा. पर अभी तो अनिवार्य है तुम्ही याद करो बन्धु लखनपाल कि हमें अंक-गणितसे बीजगणितपर आना हुआ, सीधे-सादे अकोकी जगह अक्षरोंका हमे स्वीकारना पडा, तो हम कितनी कठिनाई हुई थी. तब हम क्या उसका कारण समझ पाते थे. या क्यों हमको व्याकरण सिखाया जाता है, सीधे क्यो नही कह दिया जाता कि कहानियाँ लिखो और कविता लिखो. क्यो, है न बन्धु ?"

और अगले ही रोज लुवीके ऊपर काफी झुककर उसके वक्ष भागसे लगभग समतल बैठा वह उसके शरीर सौरभका अस्वाद लेता हुआ कह

रहा था, "एक त्रिभुज खींचो हाँ, यह ठीक है. अब मैं इसके उत्तर कोण पर अक्षर लिखता हूं—'प'. 'प' यानी 'प्रेम'. दूसरे दो कोणोंपर अक्षर हैं, म और स. यानी मनुष्य और स्त्री. कुलका मतलब हुआ मनुष्य और स्त्रीका प्रेम."

फिर एक परम गुरुके भावसे निश्चल और अतर्क्य वह जाने मिथुन प्रेमकी कितनी ही और क्या क्या बातें कहता चला गया. और अन्तमें अकस्मात् मानो परिणाम निकालता हुआ बोला, "अब सुनो लुवी, प्रेमकी कामना ऐसी ही है जैसे भोजनकी, जलकी कामना. सांस लेना आवश्यक है वैसे ही आवश्यक यह भी है. और कहकर उसने घुटनेके ऊपर उसकी जाँघको दबाया. लुवी अचकचा आई, पर वह चोट नहीं देना चाहती थी इससे उसने हल्केसे और धीरे-धीरे अपनी टाँगको अलग हटा लिया.

"अब यह देखो," उसने कहना जारी रखा, "क्या सोचती हो कि अगर एक रोज संयोगसे तुम घरपर न खा सको तो क्या तुम्हारी बहिन या तुम्हारी मां, या तुम्हारे पति इस बातपर बिगड़ेंगे कि तुम उस रोज किसी रेस्टोरांमें या दूसरी जगह खाना खाकर अपनी भूख शान्त कर लेती हो. यही प्रेमके बारेमें सच है. वह भी शरीरके एक रसका आस्वाद है, एक आवश्यकता है, न कम न ज्यादा. शायद दूसरे रसोंमें यह प्रबल है, आवश्यकता वेगवान है. बस, हो तो यही फर्क है. उदाहरणके लिए मैं—यह—तुम्हें स्त्रीके रूपमें चाहता हूं जब कि तुम..."

"ऐ मिस्टर", बीचमें ही लुवी छिड़ी हुई-सी बोली, "यह सब छोड़िए. आप उसी सुरमें गाए जा रहे हैं, जैसे और बात न हो कितनी दफे मैं मने कर चुकी हूं. फिर कहती हूं. आप समझते हैं. मैं नहीं जानती आप किधर लिए जा रहे हैं. मैं हरगिज बेवफा न हूंगी. क्योंकि लखनपालने मुझे सहारा दिया है, मेरा उपकार किया है, मैं सारे दिलसे उन्हें प्यार करती हूं...पूजा करती हू, और आप—आपकी बात-चीत सबसे मुझे नफरत, हिकारत होती है."

एक रोज सोम वास्तीने लुवीको गहरी चोट पहुंचाई और उसे बेहद

मुसीबतमें डाल दिया. और सब यह अपनी असूली धारणाओंकी वजहसे. जबसे लखनपाल लुवीको घर लाया तभीसे यूनिवर्सिटीमें उसके चकलेसे एक लडकीको बचाने और उसका नैतिक उद्धार करनेकी चर्चा थी. स्वाभाविक ही था कि स्त्री विद्यार्थी भी इस चर्चाको सुनें और यह सब सोम वास्तीके हाथो बढा था कि वह चार लडकियोको लेकर लुवीसे मिलाने जा पहुचा. दो उनमें मेडिकलकी छात्रा थी, एक इतिहासकी विद्यार्थिनी थी और चौथी उदीयमान कवियित्री थी जो आलोचनात्मक निबन्ध भी लिखा करती थी उसने अति-गम्भीर और बेहद वाहियात तरीकेसे उनका परस्पर परिचय कराया

"लीजिए", सकेतसे पहले अभ्यागतो और फिर लुवीकी ओर संकेत करके उसने कहा, "आइए, परस्पर परिचय हो जाए. लुवी, इन लोगोमें तुम्हे सच्ची सखिया मिलगी य तुम्हे जीवनके इस नए और प्रशस्त मार्गपर बढते जानेमे बडी सहायक होगी. और आप लोग,—जी, आपसे ही कह रहा हू—लीजिए, नादिया, साशा और ऐशा ! इस प्राणीको आप अपनी बडी बहिनकी तरह मानें. क्योंकि अभी वह उस भयावने अंधियारेमें से निकलकर आई है जहा कि सामाजिक व्यवस्थाके दोषने आधुनिक स्त्रीको बिठा रखा है."

शब्द शायद उसके यही न थे, लेकिन आशय यही था. लुवी सुनकर चुकन्दरकी तरह लाल हो गई उसने असमजसमे मिलानेके लिए हाथ आगे बढाया. उगलिया उसकी आपसमे उलझी-सी रह गई थी, खुल न पाई थी ये शहरी लडकिया तरह तरहके छपे ब्लाउज पहने थी और चमडेकी पेटिया कसे थी उसने उन्हे चाय पेश की और साथके लिए कुछ दूसरी चीजें भी रखी जल्दी जल्दी उनकी सिगरेटके लिए जलाकर दियासलाई सामने की और उनके कितने ही कहनेपर भी बैठी नही. उसकी बोलती बन्द हो आई थी, और बस 'हा' या 'ना', या 'जी अच्छा' मे ही जवाब देकर रह जाती थी और जब आगन्तुकोमेंसे एकका रुमाल नीचे गिर पड़ा तो लुवीने दौड़कर झट उठाया और उसे दे दिया.

एक उनमें स्थूलकाया थी. उसकी आवाज भारी, गहरी और चेहरा सुर्ख था. गाल बाहरको फैले हुए थे जिनपर दबी-सी नाक उभरकर अजब दृश्य उपस्थित करती थी. और उसकी छोटी काली आंखें अपनी गहरी वादियोंमेंसे बटन की भाति चमकती थी. वह लुवीको सिरसे पाँव, पाँवसे सिरतक देखती रही. मानो दूरबीनसे मुआयना कर रही हो. उसकी दृष्टिमे अवहेलना थी. उस निगाहके नीचे लुवी अपराधिन अनुभव कर आई. 'ऐसे यह मुझे क्या ताक रही है. मैंने कोई उसका प्रियतम तो उससे छीन नही लिया है.' दूसरी लड़कीने सवाल पूछना शुरू करके बड़ी अभद्रताका परिचय दिया. उसके लिए यह पहला अवसर हो सकता था. पर लुवीके लिए तो यह सवाल असंख्य बार आ चुके थे. पूछा कि तुम वेश्या बनी कैसे. पूछनेवाली लडकी सुन्दर थी, पीत वर्ण, तनिक चंचल और चेहरेपर सूक्ष्म-अस्थिरताका भाव था. बाल उसके हलके थे, और कुल मिलाकर बिगड़ी बिल्लीकी बच्ची-सी जान पडती थी. यहां तक कि गर्दनके चारों ओर पड़ गुलाबी रिबन तक से यह भाव फूटता था.

"मगर यह बताओ कि वह बदमाश था कौन. यानी वह पहलेवाला —समझती हो न ?"

लुवीकी आंखोंके सामनेसे उसकी पुरानी सखी जेनी और तिमिराके चेहरे घूम गये. कितनी निर्भीक, कितनी मानिनी और कितनी व्युत्पन्न. ओह ! इन लडकियोंसे वे कितनी न चतुर थी. और इतने अकस्मात् कि खुद उसको अचरज हो आया. वह काटती सी बोली.

"कितने तो थे······मैं भूल गई··· कौल्का, मिशका, वौलोटका सेरेश्का, जोजेफ, कोश्का, पेट्का और उनके बाद मुन्का और बुश्का और उनके कई दोस्त—क्यों, आपको उनमे दिलचस्पी है ?"

"ऐं, नहीं······मैं चाहती थी····· एक तुम्हारे, समझो हमदर्दकी तरह·····.

"तुम्हारा कोई आशिक है ?"

"माफ कीजिये ? मे समझी नहीं—तुम यह किस तरहकी बात कर रही हो ? लडकियो, आओ अब चलना चाहिए."

"क्या मतलब तुम्हारा, यानी मे नही जानती कि मे क्या बात कर रही हूं ? पूछती हू, कभी तुम मर्दको लेकर सोई हो ?"

"सोम वास्ती महोदय, मे नही समझती थी कि आप हमको कभी इस तरहकी औरतसे भी मिलाने ला सकते है, बहुत धन्यवाद है आपका. बडी कृपाकी आपने."

लुवीके लिये अपने भय और कातरताको जीतना और बातचीतमें आगे बढना मुश्किल होता था. वह उन स्वभाववालियोमे थी जो धीरज और सन्तोषसे देर तक सहती जा सकती थी लेकिन जो फिर कभी एकाएक फट भी पडी कि फिर जो हो थोडा है !

"लेकिन मे जानती हू" वह घृणा और द्वेषसे चीखती सी बोली, "जानती हू कि तुम मुझस कोई घटकर नही हो तुम्हारे बाप है, मा है, तम्हारे लिये घर-बारका इन्तजाम है, और जरुरत हो तो गर्भ गिरानेका प्रबन्ध हो जाता है तुम बहुतेरी ये करती हो, पर अगर तुम मेरी जगह होती जहां खानेको कुछ हो नही, बच्ची, नासमझ और अपढ —क्योंकि मे अपढ हू —और चारो तरफ तुम्हारे आदमी ऐसे घिरे होते जैसे मौसम मे कुत्ते—तो क्यो, क्या तुम भी चकलेमें ही न बैठी होती ? क्यों, तुम्हें एक गरीब लडकीकी पत उतारते शर्म नही आई ?"

यह झगेला देखकर, जो उसीके कारण पैदा हुआ था, मानो झंझटसे निकलते हुए सोम वास्तीने उसे निरर्थकसे मीठे उपदेश भरे शब्द कहे जैसे कि पुराने नाटकोमे परम मान्य गुरुजन आदि कहा करते है, और वह महिलाओको साथ ले गया.

लुवीकी आजाद जिन्दगीमें इस सोम वास्तीको और भी भाग लेना बदा था. वह कमीना और बेहयाईका भाग था. लुवीने लखनपालमे कई बार शिकायतकी थी कि सोम वास्तीके आनेपर वह घबरा-सी आती है. लेकिन उसने इस तरहके स्त्रियोचित वहमो पर ध्यान देनेकी जरूरत

न समझी. वह सोम वास्तीकी दूनकी बातोंके जादूमें था. यह आदमी सोम वास्ती गुमानसे भरा था और बोलता तो बढ़ चढ़कर प्रभावशाली तरीकेसे बोलता था. लखनपाल उसके रोबमें था. कुछ प्रभाव ऐसे होते हैं कि उनसे छूट पाना मुश्किल होता है, यहां तक कि असम्भव ही कहिए. दूसरी तरफ़ हर दिन और हर रात लुवीके साथ रहने सोनेसे वह तंग था और थक गया था. अकसर सोचता, 'वह मेरी जिन्दगीको बरबाद कर देगी. मैं नीच निकम्मा और कुन्द बनता जा रहा हूँ. मैं एक बेवकूफ़ीकी परोपकारितामें डूबा जा रहा हूं . और अन्तमें दीखता है, होगा यह कि मुझे उससे ब्याह करना होगा. फिर या तो महकमा आबकारीमें या किसी अदालती दफ्तरमें जाकर मुलाज़मत करूंगा, या मुदर्रिस बन जाऊँगा. रिश्वत लेना शुरू कर दूंगा और यहाँ वहाँकी हाँका करूंगा. एक मामूली कस्बेके सड़ियल चक्कंफिरनेकी तरह जुएमें जुता घूमा करूंगा. और ..ब मेरे सपने.. मस्तिष्ककी शक्तिके, जीवनके, सौंदर्यके, मानव-प्रेम और विश्व-प्रेमके, क्रान्तिके और पराक्रमके . तब ये सपने मेरे क्या होंगे, कहाँ रहेंगे ?'

कभी वह अपने आपसे ही जोर जोरसे बोल आता और बालोंमें उंगली डालकर सिरको झिझोड़ता इस तरह लुवीकी शिकायतोंपर ध्यान देनेकी जगह .वह उसकी बातपर उलटे झुंझला पड़ता, चीख चिल्लाने लगता, और पैर पीट आता. ऐसे समय विचारी लुवी सहमी और डरी चुप हो रहती और जाकर अपने रसोई घरके एकान्तमें अकेली आंसू बहा लेती.

ऐसे आपसी झगडोंके बाद तनिक मेल होनेपर वह और भी निरन्तरता से कहता, "प्यारी ल्यूबा ! तुम देख ही रही हो कि हम दोनों एक दूसरेके अनुकूल नहीं पड़ते. देखो ये सौ रुपये हैं, लेकर तुम अपने गाँव चली जाओ. तुम्हारे रिश्तेदार तुम्हें वापिस देखकर खुश होंगे. वहाँ अपने कुछ रोज़ रहो, और दुनिया देखो भालो. दो महीनेमें मैं तुम्हें लेने पहुंच जाऊँगा. इस बीच तुम आरामसे रहोगी और जो कुछ गन्दा

गलीज शहरने तुम्हारे अन्दर डाल दिया है झर जायेगा और गायब हो जायेगा तब तुम नई जिन्दगी शुरू कर सकोगी. तब तुम अपने अवलम्ब पर रहोगी, सहारेकी जरूरतसे दूर अपने स्वाभिमानमे स्वाधीन और स्वतन्त्र"

लेकिन उस स्त्रीके साथ क्या किया जा सकता है जो पहली बार प्रेम मे पडी हो और जैसा कि वह समझती थी, आखिरी बार. उसे क्या कभी मनाया जा सकता है कि बिछुडना जरूरी है? वह कभी तर्ककी सुन भी सकेगी? .. और लुवी रह गई

लखनपाल यो सोम वास्तीके रोबमे था. उसके पुष्ट आश्वासनोका आदर करता था उसके निर्णय और वक्तव्योका मान करता. तो भी मन ही मन असलियतका उसे अनुमान था वह अन्दरमे अनजाने ही अनुभव करने लगा था कि उसके मित्रका लुवीके प्रति क्या भाव और झुकाव है. फिर वह स्वय लुवीसे छुटकारा चाहता था. उस सम्बन्धका बोझ उसे भारी लगने लगा था ऐसी अवस्थामे उसने पाया कि उसमें दुष्टता उठ रही है और वह सोच रहा है 'सोम वास्ती उसे चाहता है ल्यूबाके लिए इस म क्या अन्तर है कि मै हूँ, या वह है, या कोई दूसरा है. मै उससे खुलकर बात क्यो न कर लूं जैसे दोस्तसे दोस्त करता है और उसे ल्यूबाको ले लेने दूं पर वह मूरख, कम्बख्त मानेगी जो नही वह तो आसमान उठाने लग जायगी"

"अगर कही मै दोनोको साथ पकड पाऊँ?" उसके ख्याल आगे बढते गये, "किसी खास सबूतकी हालतमे.. .. तो मै बस ढकना उघाड दूं... तब मै एक दृश्य खडा कर सकता हूँ और फिर आरामसे, कृपाके भावसे. हाथमे लेकर कुछ रुपया सामने करू— और छोडकर चल दूं"

वह कई कई दिन घरसे बाहर रहने लगा लौटकर घर पहुंचता तो जिरह पर जिरह होती. दृश्य बनते, आँसू ढरते और कभी हिस्टीरियाके दौरे भी पड जाते वह घरसे बाहर निकलता तो लुवी पीछे-पीछे जाती जिस मकानके दरवाजेमे घुसता वह सडक पार उसके सामने ही खडी

रहती. मुद्दत देर तब तक खड़ी रहती जब तक कि उस दरवाजेसे वह वापिस न आ जाता. और तब खुली सड़कपर ही जोर जोरसे सुबककर रो-रोकर वह उसे प्रेमके उलहनोंकी बौछारसे छा देती. उसके खतोंको वह बीचमें रोक लेती पर वह खुद ठीक तरह पढ़ना अभी जानती न थी. न मददके लिए सोमदेव या नेजरमके पास जानेकी हिम्मत कर सकती थी. वह उन पत्रोंकोअ लमारीमें ही जहाँ तहाँ कभी चीनीके साथ, तो कभी चायके डिब्बेके पीछे या नींबुओंमें छुपा देती. आखिर वह इस हालत तक पहुंच गई कि अपनेपर वह तेजाब छिडकनेकी धमकी दे बैठी.

लखनपाल जब बचावकी कोई शैतानी भरी तदबीर सोच पानेकी जुगतमें उलझा था, तभी विचार आया कि मरे कम्बख्त ! सोम वास्ती और उसके दोनोंके बीच कुछ न भी हो तो भी क्या फर्क पडता है. बखेड़ा ही जो करना हुआ. मैं वह सीन खड़ा करूंगा, वह हैवतनाक......और इल्ज़ाम दोनोपर डालूंगा.

और वह ध्यानपूर्वक दोहराता और मानो सिद्ध करता कि ऐसे समय वह क्या क्या कहेगा. विस्मयसे कहेगा, 'आह! तो यह बात है. मैंने तुम्हें अपने दिलसे लगाया और मुझे ही यह देखना बदा था. नीच बेवफा !.. और तुम, तुम मेरे नजदीकी दोस्त! तुमने यह मेरी खुशीपर डाका डाला. पर नही, नही...मैं तुम्हे जुदा न करूंगा. अपनी आंखोंमें आंसू लेकर मैं चला जाऊंगा. मेरी यहा जरूरत नही है. मैं तुम्हारे प्रेममें विघ्न न बनूंगा . " इत्यादि, इत्यादि, इसी तर्जमे.

और होनहारकी बात, उसकी यह आशाए, यह गुप्त योजनाएं पूरी उतरीं. मनके अन्दर उठनेवाली ये चीजे बिखरी-सी थी, सूत्रहीन, आकृतिहीन और सिद्धान्तसे हीन. ये होती है, पर ऐसे कि आदमी पीछे मान सकता है—नहीं भी थी. लखनपालके साथ वह पूरी हो आई. उस दुर्भाग्यके दिन सोम वास्ती जब पहुंचा तो ल्यूबाका दिल निराशासे छलनी हुआ पड़ा था. उसने मुंह बिचकाकर स्वागत किया. यह विद्याके गर्वसे प्रमत्त अध्यापक और गर्वोन्मत्त नर-पुरुष इधर उसे बहुत अरुचि-

कर हो गया था.

इस बार उसने आकर अपने सिद्धान्तका प्रतिपादन शुरू किया, सिद्धान्त यह कि नियम नही होते, न अधिकार, न कर्त्तव्य, न धर्म न पाप. कारण कि मनुष्य एक पूर्ण इकाई है वह स्वयं है हर किसी और हर कुछमे स्वाधीन और स्वतन्त्र! मनुष्य देव है, वह ईश्वर हो सकता है. शप सब दशाएं है. उनमे अन्तर नही पडता.

आगे वह प्रेम भावनाओके तत्त्वविज्ञानके विवेचनमे जाता पर दुर्भाग्यसे वह इतना अधीर हो आया था कि उसके बजाय उसने अपनी बाहोको लबीके परिवेष्ठनमे डाल लिया और उसके शरीरको जहा तहाँ पर हथियाने लगा. उसकी हिसाबदा आत्माने सोचा कि उसमे हल्के हल्के उद्दीपन आ जाएगा और वह आत्म समर्पण कर देगी वह उसके अधरोओष्ठको लेना चाहता था, पर वह गुस्सेमे हाफ रही थी और चीख चिल्ला रही थी. शिष्टताका सब आवरण उससे दूर हो गया था "दूर हो, चडाल, सुअर, कुत्त, ! मै तेरी यह गदी थूथ ो फाड दूगी."

चकला घरोका शब्दकोष उसे फिर प्रस्तुत हो गया था. सोम बास्ती का फैन्सी चश्मा गायब हो चुका था. उसका मुँह बिगड आया था और मदमे लाल आखोमे ल्यूबाको देखकर जो मुहम आया बके जा रहा था.

"मेरी प्यारी क्या बात है . खुशीका एक जाम, एक पल...हम उसमे एक हो जाए किसीको पता न हो मेरी रानी, मेरी —"

इसी समय लखनपालने कमरेमे प्रवेश किया निश्चय है कि उसने मनमे नही माना कि वह भारी नीचता करने जा रहा है. एक तटस्थ दूरगत रूपमे केवल यह सोचा कि उसका चेहरा पीला होना चाहिए और शब्द दुखम, व्यगसे और व्यथासे भारी होने चाहिए.

नाटकके चौथ अकमे उपस्थित अवस्थामे हो इस तरह हाथोको दोनों ओर निराशामे गिराकर अपनी छाती तक झुके सिरको धीमेसे हिलाकर उसने जडीभूत आवाजसे कहा, "हा, मै सोचता तो था. डर भी था, पर यह...तुम्हें मै कुछ न कहूगा ल्यूबा. तुम अभी आदिम हो, अबोध

हो लेकिन तुम सोम वास्ती, हमेशा मैं तुम्हें समझता था और अब भी समझता हूं कि तुम ईमानदार वफा जानते हो पर अब समझा .. उन्माद, विवेकके सब तर्कोंसे जबर्दस्त होता है ये पचास रुपए है. इन्हें ल्यूबाके लिए छोड़े जा रहा हूं. चाहो तो पीछे लौटाते रहना. उस बारेमें मुझे शक नहीं है. इस बिचारीके लिए तुम कुछ करना चाहते हो? तुम समझदार हो, होशियार हो, सहृदय हो, और ईमानदार हो. और मैं ? ('एक दुष्ट—'कहीं अपने अन्दरसे किसीके बोलनेकी स्पष्ट शब्दों मे उसने आवाज सुनी.) मैं जा रहा हूं, क्योंकि यह दृश्य, यह छल, यह वेदना और मुझसे सही नही जाती. खुश रहो..."

यह कहकर उसने जेबसे बटुआ खींचा और एक अदाके साथ सामने मेजपर फेंक दिया. फिर उसने बाल हाथोमें लिए और कमरेके बाहर झपट गया. दरवाजेमेंसे फिर भी वह कहता गया, "पासपोर्ट तुम्हारा, मेरे डेस्कमें है"

छुटकारेका यह उपाय उसके लिए सर्वोत्तम हुआ और पात्रका जो दृश्य उसने अभी खेला था हूबहू उसी तरह घटा जैसा उसने सपनेमें देखा था.

तीसरा भाग

लुवी ने यह सारी कहानी जेनी के कन्धे से लगकर ब्योरेवार सुना दी. भाषा उखडी-पुखडी थी और कहते समय वह रोती जाती थी, कहने की आवश्यकता नही कि इस सुख-दुख भरी कथा का रूप उसके मन मे और मुह मे ठीक वही न रहा होगा जैसा घटनात्मक इतिवृत था.

उसके शब्दो के हिसाब से लखनपाल उसे सिर्फ फुसलाकर और ललचाकर ले गया था. और जब तक हो उसकी मूर्खता का लाभ उठाकर अन्त मे उसे छोड देना चाहता था और वह खुद मूरख और नासमझ उसके प्रेम मे पड़ गई थी. प्रेम मे से कुछ ईर्ष्यालु भी बन गई थी और उसके साथ किसी लडकी को देखना उससे सहा न जाता था. इससे उसने लुवी के साथ नीच मे नीच व्यवहार किया. अपने एक दोस्त को जान बूझकर भेज दिया कि वह उसका जो चाहे करे और जब यह उसका दोस्त उसे आलिगन मे ले ही रहा था कि लखनपाल आ गया. फिर उसने वहाँ खासा हौलनाक सीन खडा कर दिया और लुवी को दरवाजा दिखा कर अकेले सड़क पर फेंक दिया.

उसकी राम कहानी म सच और झूठ बराबर-बराबर मिले हुए थे पर वह सारी घटना को देखती इस तरह थी.

फिर उसने आगे एक-एक ब्योरा देकर बताया कि ऐसे जब वह बिलकुल अकेली रह गई, किसी का सहारा न रहा, न कोई मजबूत वसीला या आसरा तो उसने कस्बे के किनारे एक सस्ती सी सराय मे छोटी कोठरी किराये ली. फिर बताया कि कैसे उसी रोज वहाँ के महतर ने जो एक सजायाफ्ता बदमाश था उसे बेच देने की कोशिश की. उससे पूछा न ताछा

और कीमत करीब वसूल कर ली. उससे वह उठ कर वहाँ से एक दूसरी जगह गई. वह कमरा बड़ा था. पर यहाँ पर भी एक पुराने ग्राहक की निगाह चढ़ गई. ऐसे लोग ऐसी जगहों पर घने बसे हुए रहते ही हैं.

इससे यह प्रगट था कि लुबी कितनी भी सादगी और शांति और एकाकीपने से क्यों न रहती, उसके चेहरे में, बातचीत में, उसके सारे व्यवहार में ही कुछ ऐसी खास चीज थी कि एकाएक वह मामूली निगाह से बच भी जाए पर जाने-बूझे और खेले खाए आदमी की निगाह से वह न चूकती थी.

फिर भी लखनपाल के प्रति उसके प्रेम की सच्चाई ने चाहे वह संयोग से हुआ हो और थोड़ी देर ही टिका हो, उसे एक बल दिया था: उसके कारण फिर पतन की अनिवार्यता से वह बच रह सकती थी. उसे कल्पना न थी कि उसमे ऐसी शक्ति आ सकेगी पर इससे उस में सूझबूझ आई और उसने अखबार में काम की तालाश के लिए इश्तिहार दिए, चौके बासन का कार्य ही तो वह क्या कर लेगी. पर उसकी जमानत देने वाला कौन था, जिम्मा लेने वाला कौन था ? एक दिक्कत यह थी कि मुलाकात में ज्यादातर स्त्रियों के सामने ही होना पड़ता, और वह पहचाने बिने न रहती कि यह तो उस जात की है जो सदा सनातन से उनकी घरबार की शत्रु रही है जो उनके पतियों को, पिताओं को, भाईयों और बेटों को घर में से बाहर की ओर बहकाती रही है.

वापस गाँव जाने में उसके लिए न अर्थ रह गया था, न कोई लाभ ! यों वह शहर से कोई पन्द्रह मील ही दूर था. पर उसके चकला घर में रहने की खबर मुद्दत पहले ही गाँव पहुँच चुकी थी उसके गाँव के पुराने पड़ोसी जो अब शहर में दरबान थे या हल्के किस्म के होटल या रेस्टोराँ में वेटर थे या कोचवान या इसी तरह का कोई काम करते थे, लिख बोलकर खबर खूब फैला चुके थे कि वह उन्हें उस गली में मिली थी या उन्होंने उस घर में उसे देखा था. जानती थी कि गाँव के घर वापस गई तो उसे क्या भुगतना होगा. इससे तो मौत सौ दर्जा बेहतर है.

पैसे और खर्च के मामले में लुबी पाँच बरस की बच्ची की तरह

अबोध थी. वह यों ही उसके हाथ से सरककर इधर-उधर बिखर जाता था. चुनाचे जल्दी ही उसने पाया कि उसका हाथ एकदम खाली है. पाई भी नही बची है चकलाघर में लौट जाने का खयाल उसे डर और शर्म से भर देता था। दूसरी तरफ गलिहारी बनाने का लालच क़दम-क़दम पर उसे रिझाता था. शाम के समय वहाँ पर उसे चलती देखते ही पेशेवर पुराने पक्के आवारा लोग भाँप जाते थे कि वह क्या रही है. जबतक उनमें से कोई बढ़ कर लुवी के अगल-बगल होकर आ चलता और मीठी ठकुरसुहाती मे कहता, "ऐ नाजनीन अकेली क्यों चल रही हो ! मेरी दोस्ती लो और आओ हम साथ चले. क्या यह ज्यादा सुभीते का न होगा जब भी लोग आनन्द-चैन से वक्त बिताना चाहते हैं तो संग साथ ढूंढ़ते हैं ना ? और पुरुष के अलावा तुम्हारे लिए भी मेरे साथ दीखना फायदे का रहेगा. मैं सब इन्सपेक्टर लोगों की शक्लें पहचानता हू."

"कौन इन्सपेक्टर," लुवी ने पूछा

"अरे इन्सपेक्टर कौन ! वे ही जो बिना सनद घूमनेवालियों को पकड़ कर हिरासत मे भेज देते है. यानि सनद सार्टीफिकेट जिनके पास नही है, लिया और उन्हे घसीट कर पुलिस हवालात में डाल दिया. वहाँ का हाल तो तुम जानती ही हो बेचारी लड़की अगर वह घर बार वाली है तो उनको जाने कैसे खासकर जब वे मामूली लिबास मे हों और यह इन्सपैक्टर सनद वालियां सबको पहचानते भी हो और पुलिस थाने मे पहुच कर तुम्हारे नाम का कागज छिन जाएगा और चकले वाला टिकट दे दिया जाएगा. फिर हर हफ्ते डाक्टरी मुआयनों के लिए तुम्हारे आने अहाते में पहुँचना होगा—और सनद का पीला कागज भी तुम्हारे पास हो तो भी इन्सपेक्टर गली मे चलते हुए तुम्हे घर ले जा सकता है और हवालात में भेज सकता है. वहा नंगा कमरा होगा और लकड़ी की बेंच रात मे पड़ने के लिए और वह रिपोर्ट देगा कि तुम नशे में थी या नही तो आने जाने वालों के साथ छेड़खानी कर रही थीं और उसके बाद मजिस्ट्रेट चाहे तुम कित्ती ही बेकसूर बेगुनाह हो तीन हफ्ते की सजा ठोक देंगे. अब सोचो इस सारे काल में कमाई धेले की नही और परेशानी दुनिया भर की. यह सच है कि इंसपेक्टर से तुम कुछ दे दिला कर शायद पिंड छुड़ा सको

या नही तो एक रात अपने बिस्तर तुम्हे साथ रख के वह मान जाए पर एक तो रुपया सदा पास नही होना, फिर जाने वह बिस्तर तुम' कैसा लगे · इससे सुनती हो रानी, अच्छा यही है कि हम साथ चले मैं सब कुछ जानता हू और तुम्हारे बचाव का खयाल रखूगा या बेहतर है कि हम अपनी मकान मालकिन के यहा चले बस कुल जमा वहाँ हम तीन लोग हैं, लेकिन चौथी के लिए भी जगह हो सकती है, खासकर जबकि तुम जैसी खूबसूरत चीज हो.

और ठीक इस जगह वह अनुभवी उस्ताद दलाल पहले यो ही चलते ढग मे और फिर धीरे-धीरे भावभीने तरीके से सजा कर बताना शुरु करता है कि एक ठिये पर मकान मालकिन के साझे मे रहने के कितने फायदे है. तैयार बढिया खाना और बाहर जाने की पूरी आजादी और सुनो तनखा जब मुकर्रर हो उसके ऊपर चुपके, चोरी बाहर से जो तुम झटक लाओ वह तुम्हारा अपना आखिर तनखा तो उनकी है जो कमरे मे आते है, बाहर जो मिला उस पर मकान मालिक का क्या हक है ? यहाँ फिर वह कहने-अनकहने विशेषण खानगियो के लिए प्रयोग मे लाता जो सीने और निजी पेशा करती है. कहना कि व सरकारी माल है और फसली और शौकिया. लुवी इन गृहगी के विशेषणो को खूब जानती थी क्योंकि चकलो मे रहने वालियाँ भी इन गली कूचे वालियो की तरफ बडी हिकारत से देखती और उनके प्रति स्वय बडप्पन के भाव से पेश आती उन्हे छिनाल और आवारा पतित मानती थी।

और निश्चय अन्त मे वही हुआ जो कि होना लाजमी था आगे भूख के भयावने दिनो का दे अन्त सिलसिला देखकर अधेरे और अनिश्चित भविष्य के गह्वरो के नाल मे रहते हुए एक दिन लुवी न एक निमत्रण स्वीकार कर लिया — कोई एक प्रौढ वय के नाटे मझोले कद के बाइज्जत महाशय थे रोबीले, पके, सही कपडो म चुस्त दुरुस्त रहने वाले लेकिन अधम और भयकर प्रयोगवादी इस निरीह अपमान के लिए उसको एक रुपया मिला। वह विरोध मे कुछ नही कह सकी चकले मे बीता हुआ उसका पुराना जीवन, उसके व्यक्तित्व, उसके मान और उसकी अहंभावना

को एकदम चाट गया. उसकी मति, गति जैसे हर गई अगली बार उन वृद्ध महानुभाव ने एक पैसा नही दिया. बोले,—"बड़ा नोट है मैं अभी भुनाकर लाता हूं. कहा और पिछवाड़े की तरफ गये. गये कि फिर वापस कभी न आये.

एक जवान महाशय भी लुवी को होटल के कमरे में ले गये. खुली तबीयत के फार्वर्ड और खुशनुमा जवान थे. लापरवाही की अदा के साथ सिल्क की कमीज़ पहने थे और सर पर हैट दबाकर ऐसे कोने पै टिका रखा था मानो चुनौती हो कि आ जाय जो बला हो, उन्होंने शराब का आर्डर दिया और कुछ चटपटो का और फिर जो अपने बारे मे बघारना शुरू किया तो उसका अन्त न था. कहा कि वह एक नवाब का लड़का है सारे शहर में विलियर्ड का उसमे बढकर खिलाडी न मिलेगा, कि लडकिया उस पर जान देती है और कि लुबी को वह राजसी ठाठ पर पहुँचा देगा. वगैरह-वगैरह. आखिर वह कमरे से बाहर गया जैसे बराबर से जरा निपट कर अभी आता है और फिर ऐसा गायब हुआ कि निशान नही. फिर तो दरवान ने, जो सख्त आदमी था और आँखें जिसकी खिची थी लुवी की खामी खबर ली. मुंह दबाकर चुपचाप लुवी को वह देर तक पीटे गया. आखिर जाहिरा वह मान गया कि कसूर उसका नहीं गाहक मेहमान का था. तब उसने उसे छोड़ा लेकिन पर्स अपने पास रख लिया. उसमे एक रुपया और कुछ रेज़गारी थी. सस्ता, हलका एक हैट था और लुवी की एक जाकेट भी थी. यह सब मानो वहां अमानत के तौर पर रहा.

एक दूसरे साहब भी थे. क़रीब पैंतालीस बरस की उम्र और खासा लिबास. दो घण्टे तक उन्होने लुवी को सताया. बाद कमरे का किराया चुकाकर उन्होने लुवी के हाथ चवन्नी रख दी. उसने शिकायत की तो वह खूंखार बन आये और लाल बालों से भरे हाथों की जबर्दस्त मुट्ठी की मार उसके चेहरे पर देकर जोर से धमकाते बोले, "जरा और मिन्नत शिकायत कर बताता हूँ तुझे शिकायत करना. ज्यादा किया तो अभी पुलिस को बुलाता हू, कहूंगा कि सोते हुए इसने मेरी चोरी की है. कैसा रहेगा ? बता, पुलिस थाने इससे पहले तू कब थी, बता ! आई मुझे चलाने." और वह

चला गया.

इस तरह की अनेक कहानियाँ हैं. अन्त में जहाँ रहती थी उस मकान के मालिक और मालकिन ने कह दिया कि यह कमरा अब और आगे उसे नहीं मिल सकता. मालिक एक मल्लाह था और बीवी उससे बढ़ चढ़कर थी. कहा ही नहीं बल्कि उसका सामान उठाकर बाहर दालान में फेंक दिया. तब वह रात-भर मेह पानी में चौकीदारों को बचाती गली-गली और सड़क-सड़क घूमती रही.···उस दिन शर्म और ग्लानि से भरकर हारकर उसने लखनपाल की मदद लेने की बात सोची पर वह शहर में न था. असल में जिस रोज उसने लुवी का घोर अन्यायपूर्वक तिरस्कार किया था, उसी दिन वह कायर मकान छोड़ शहर से भाग गया था. इससे सवेरा होने और सूरज चढने पर एकाकी और हताश, निरीह और निराधार लुवी ने देखा कि कुछ शेष नहीं है और कहीं राह नहीं है. यही है कि वापस वह उसी घर में जाए, माफी माँगे, और वहीं जगह पाने की प्रार्थना करे.

२

पहुँचकर लुवी ने जेनी के कन्धों को चूमा और वहाँ लगकर वह तार-तार आँसू बहा उठी. प्रार्थना करती हुई बोली, जेनी, "तुम तो इतनी होशियार हो, हौसले वाली हो, नेक हो, कृपा कर एमा से कहो कि वह मुझे वापिस ले. तुम्हारी वह अनसुनी नहीं करेगी."

जेनी ने भी समेटकर उत्तर दिया, "वह किसी की नहीं सुनेगी." फिर बोली, "उस निकम्मे, बेकार, उचक्के में तैंने देखा क्या था कि उसके साथ रहने चली गई."

धीमी कातर बनी लुवी बोली, "जेनी तुम्हीं ने तो मुझे सलाह दी थी··"

"मैंने···मैंने तुझे सलाह दी थी ? मैंने कभी तुझे सलाह नहीं दी. झूठ तू क्यों बोल रही है, री ! तोहमत लगाती है···खैर, अच्छा, आ चलें."

एमा उडवानी को लुवी की वापसी की खबर अब तक मिल गई थी.

जब वह डरती-सी, इधर-उधर देखती दालान पार करके घुसी थी, तब उसने लड़की को देख लिया था. असल में लुवी को वापस लेने के खिलाफ़ कोई उसके पास वजह भी न थी. उसने उसे जाने ही रुपये के लालच की वजह से दिया था. मिली रक़म का आधा वह अपने लिये हथिया भी सकती थी. उसे उम्मीद थी कि मौसम के वक्त नई भरती में से लुवी की जगह भरने को बढ़िया से बढ़िया चीज़ छाँटने का उसे मौक़ा होगा. पर उसकी भूल निकली, क्योंकि मौसम मन्दा गया और वह एकाएक खत्म भी हो गया. हर हालत में उसने तय कर लिया था-कि लड़की को वापस ज़रूर रखना है. लेकिन लुवी पर रौब भी रखना होगा। झिड़कियों से ख़बर लेनी होगी ताकि आइन्दा सीधी रहे. यह ज़रूरी है, क्योंकि अपने रुतबे और यहाँ के मान को बनाये रखना है.

"क्या-आ !" लुवी की तरफ चीखकर उसने कहा, लुवी जो कुछ उखड़ी-पुखड़ी बुदबुदाकर कह रही थी वह उसने मानो सुना तक नहीं, "चाहती हो तुम्हे वापस ले लिया जाय ? राम जाने गलियों में, और यहाँ-वहाँ, तुम किस-किस के साथ छिनाला करती रही हो और गलीज़ और नापाक़ ! अब तुम यहाँ इज्जतदार भले मानस घर में घुस चले आने की कोशिश करती हो. छि है ! तुम-सी देशी कुतियों पर···बाहर निकल जा."

लुवी ने उसके हाथो को लेकर चूमना चाहा पर संरक्षिका उन्हे बराबर झटके से खीचकर अलग छुटाने की कोशिश करती रही. इसके बाद एकाएक उसके चेहरे पर खून आया और अपने काँपते-से नीचे के होठ को चाबकर मॅह टेढ़ा करके एमा उडवानी ने लुवी के गालों पर सही, साफ और जोर का तमाचा दिया. लुवी घुटनो के बल आ गिरी लेकिन वह फिर एकदम खड़ी हो आई. रोने से और हकलाहट से गला उसका घुटा आ रहा था, बोली, "मुझे मारो मत, दया करो—तुम मालिक हो—मारो मत."

ये नियमित पिटाई क़रीब दो मिनट तक चलती रही. उसमें द्वेष रहा हो पर सर्द तबीयत थी. जेनी अलग से चुपचाप यह देख रही थी. उसमें एक गहरी अवहेलना का भाव था. पर उसमें क्रोध उठा और उस दृश्य को अधिक सह न सकी. एक चीख देकर वह संरक्षिका पर टूट पड़ी. बालों से

पकड़कर उसे अलग खींच हटाया. उसके ब्लाउज को पकड़कर चथेड़ दिया. और मानो उन्माद का दौरा चढ़ा हो ऐसी बेबस होकर चीखी, "डायन,··· हत्यारिन,···टकियाई चोर···।"

तीनों जनी एक साथ चीखी और मानो उसकी गूंज में और जवाब में हर कमरे और दालान तिदरियों से उसी तरह की चीख-पुकार समवेत होकर गूंज उठी. मानो घर भर को हिस्टीरिया का दौरा आ पड़ा हो. ऐसे दौरे कभी जेलखाने के कैदियों पर भी इकट्ठे छाते देखे गये है वह एक बुनियादी पागलपन के तरह की ही हवा है. जो तूफानी रोग की तरह अचानक जैसे सारे एक पागलखाने को भड़का देती है उसके सामने अनुभवी से अनुभवी मनोविज्ञानी चिकित्सक—हक्का-बक्का रह जाता है खुद उनके चेहरे डर से सूने हो जाते हैं.

इस उपद्रव को काबू लाने मे पूरा घण्टा भर लगा. साइमन लाठी लेकर पहुँचा और उसके साथी मदद को पहुंचे, तब हलचल दबी तेरह की तेरह लड़कियों का सख्त सजा दी गई, लेकिन जेनी को सबसे ज्यादा भुगतना पड़ा, क्योंकि वह सचमुच ही तपकर गुस्से से मानो शोला बन आई थी. पिटीपिटाई लुवी सरक्षिका के आगे झुक-झुककर निहोरे खाती रही कि जब तक उसे वापस ले जाया गया. जानती थी कि जेनी के विद्रोह के लिये देर-सवेर उससे गहरी कीमत वसूल की जायेगी. और जेनी का यह था कि वह जाकर बिस्तर पर बैठी कि शाम तक बैठी ही रही. टाँगे लटकी नही थी, बैठक के नीचे मुडी थी. उसने खाने से इनकार कर दिया. कोई जो पास आया उसी को झिड़की दे भगा दिया. उसकी एक आँख चोट के मारे काली पड़ गई थी और वह बार-बार तांबे के पैसे से दबा रही थी. उसकी फटी कमीज के नीचे पूरी गर्दन के आरपार लम्बा गहरा सुर्ख निशान था जैसे रस्सी की सख्त चोट का हो साइमन ने यह मार उसे दी थी जबकि वह बेकाबू दीखती थी. वह अकेली बैठी थी और बैठी रही. आँखे उसकी अँधेरे मे ऐसी चमकती जैसे जंगली जानवर की हो, उसका मुँह बार-बार तुड़-मुड़ आता. नथुने उसके फूले थे. गुस्से में और चुनोती के साथ अपने से फुसफुसाकर वह कह रही थी, "जरा ठहरो, थोड़ी राह देखो···कम्बख्त,

कमीनों···मैं भी तुम्हें बताऊँगी···तुम भी देखोगे···(दर्द के मारे उसने कराह ली, 'आह' !) कमीने आदमखोर !"

लेकिन जब शाम को मेहमान आने लगे और उनके स्वागत का बड़ा कमरा रोशनियों से रोशन हो गया और छोटी संरक्षिका जकिया ने आकर दरवाजे को खटखटाया और कहा, "वक्त हो गया है और आइये, कपडे पहनकर आप लोग बाहर आइये." "तब जेनी ने जल्दी से अपना मुह धोया, लिबास पहना. काली हुई आँख को पाउडर छुआकर सँवारा. गले के चोट के निशान को सफेद और गुलाबी पाउडर से ढका और स्वागत-हॉल में आई. दयनीय, पर उतनी ही उन्नत और सगर्व ! पराजित पर उतनी ही विजय के लिये तत्पर ! उसकी आँखो मे जलते क्रोध की लहक थी और उससे उसका सौन्दर्य मानो अपार्थिव हो आया था.

बहुत से लोग जिन्होंने अपघात करने वालों को अपनी भयंकर मृत्यु से कुछ घण्टे पहले देखा था कहते हैं कि मृत्यु से पूर्व की उन भारी घडियों में उनके चेहरों पर कुछ ऐसा रहस्यमय अतर्क्य मर्मभेदी और अनिर्वचनीय आकर्षण दिखाई पड़ता था. और उस रात उसके अगले दिन भी कई घण्टों तक जिन्होंने भी देर तक जरा ध्यान से जेनी को देखा तो वे भी उसके चेहरे को विस्मय और भय के भाव से उसको देखते ही रह गये.

और सबसे बडे आश्चर्य की बात तो यह है (और भाग्य की क्रूर विडम्बना इसे कहें) कि उसकी मृत्यु मे जिसका हाथ रहा जिसने कि मानो अन्तिम कण बनकर तुला के भार को निर्णीत रूप से एक ओर कर दिया वह कोई और नही कोल्या ग्लेडिशेव था. वह प्रिय, सहृदय, सदय फौजी नवयुवक कोल्या !

३

कोल्या ग्लेडिशेव हँसमुख शर्मीला, भला लड़का था. सर उसका गोल और गाल भरे और सुर्ख थे. ऊपर के ओठ के ऊपर एक हल्की-सी काली रेख की झाईं थी; मसे भीगीं थीं और मूछें आई न थीं. आंखें दूर-दूर थीं

और उनकी दृष्टि नीली और निर्मल थी. बाल सर पर बारीक-बारीक कटे थे और सीधे खड़े थे. वे इतने नन्हे थे कि नीचे की ताजा गुलाबी खाल नजर आती थी. जेनी इस ग्लेडिशेव के साथ पिछली सर्दियों में अपना मनोरंजन करती रही थी. वह उससे ऐसे खेलती जैसे लड़की गुड़िया से खेलती या कि ये उसके मातृत्व की भावना थी कि जब वह ऐसी बदनाम जगह से झेंपता सकुचाता बाहर निकलता तो वह उसके हाथों में सेब, नाशपाती थमा देती या कुछ लाइमजूस वगैरह उसकी जेब मे ठूस देती

इस बार जब वह छावड़ियो के सदर मुकाम पर कई महीने रहने के बाद वापस आया तो उसमें परिवर्तन आ गया था. वह परिवर्तन साफ दीखता था, मानो एकाएक अलक्ष्य मे ही वह किशोरावस्था को लांघकर युवा बन गया था. उसने फौजी स्कूल से कोर्स पूरा करके सनद ले ली थी. और गर्व के साथ अपने को अफसर समझता था. पोशाक अब भी उसकी कैडिट की थी और उस पर मन ही मन वह झुझलाता था. कद मे अब वह लम्बा हो गया था. और बदन में एक लोच और चापल्य आ गया था. कैम्प का जीवन उसे अनुकूल पड़ा था. वह अब भरी जबान मे बोलता. और बड़े गर्व और प्रसन्न भाव से वह यह देखता कि इन पिछले कुछ महीनों में उसकी छाती की घुण्डियां कड़ी पड़ आई थीं. वह जानता था कि ये पौरुष का सबसे पक्का असन्दिग्ध और महत्त्व का प्रमाण है. इस समय तब तक के लिये कि जब तक सैनिक एकेडमी में वह दाखिल हो कि जहां सख्त अदब क़ायदे हों, वह अपेक्षाकृत हँसी स्वतन्त्रता का उपभोग कर रहा था. घर पर अब वह अपने बड़ो के सामने भी सिगरेट पी सकता था और कोई टोकता न था, बल्कि खुद उसके पिता ने एक खूबसूरत चमड़े का केस सिगरेट रखने के लिए उसे दिया था, जिस पर उसका मोनोग्राम बना था. यही नहीं जब परिवार के सब लोग जमा थे तो सम्मिलित खुशी के आवेग में उसका पच्चीस रुपया मासिक अलग हाथ खर्च बांध दिया था.

और ठीक यही अन्ना के ठिकाने पर इस ग्लेडिशेव ने जीवन मे पहली बार स्त्री को जाना था और वह यह अपनी जेनी थी.

सीधे-सादे बहुतेरे लड़कों का पतन ऐसे ठिकानों पर या खानगियों

के साथ इस बहुतायत से होता है इसका लोगों को अनुमान नहीं था. अगर इस नाजुक विषय पर पूछकर मालूम किया जाये तो नई उमर के जवान ही नहीं बल्कि पचास बरस के बुजुर्ग. नाना, दादा भी निरपवाद वही पुरानी कहानी कहने लगेगे कि कैसे पहले इन्हें घर की नौकरी या पास पड़ोसिन ने उन्हे फुसलाया. यह जाने कब से, पीढ़ियों पहले से चले आते हुए झूठों में से एक ऐसा झूठ है जिसको पेशेवर विवचक शायद ही कभी पकड़ पाते हैं. और कभी जिक्र में नही लाते.

अगर हममें से हर कोई अपने दिल पर हाथ रखकर सलाह की साक्षी से बता सके तो हरेक भी पायेगा कि छुटपन में कभी एक बार उसने इन की डीग की बात अपने बारे मे कह डाली थी और वह चल गई. फिर उस कारण दो या पाँच या दस या अधिक बार उसे फिर दोहरा दिया गया. यहाँ तक कि वह लगी बात की तरह जिन्दगी भर नही छूट सकी। और अब वह बात ऐसे सहज भाव से फिसलकर निकल जाती है कि मानो यथार्थ घटना ही हो. वह जो हुआ नही पुख्ता सच बन जाता है और यहाँ तक कि आदमी खुद अन्त मे उसे विश्वास के साथ आया-बीता यथार्थ मान लेता है. इसी तरह समय बीतते कोल्या भी अपने सगी-साथियों को किस्सा सुना देता कि कैसी उसकी एक चाची थी. जरा दूर की थी और जवान और दुनिया उसने देखी-भाली थी. उसी से कोल्या को पहला चस्का और अनुभव मिला. कहना होगा कि सच ही ऐसी महिला के पास रहने का उसे अवसर आया था. वह पुष्ट देह की, काली आँखों वाली गोरी, और सुरभित देह की रमणी थी. पर अस्तित्व उसका था कोल्या की कल्पना की इन सुलभ घड़ियो मे जब एकान्त भोग की भावनाये पीड़ा देकर कसक उठतीं तो वह मूर्ति प्रत्यक्ष हो आती. और क्या हममे से सौ-मे-सौ के साथ नहीं तो कम-से-कम निन्यानवे के साथ यही नहीं होता है.

अगरचे कोल्या ने यों लौकिक उत्तेजना का भोग और अनुभव काफी छुटपन में ही किया था, तब वह नौ या साढ़े नौ बरस का होगा, पर सच पूछो तो उसे जरा भी पता न था कि प्रेम और आकर्षण का असल चरम क्या होता है. वह चीज क्या है जिसके आमने-सामने होकर ऐसा डर लग

आता है; या कि जिसे देखते देखा नहीं जाता. क्या है जिसे विज्ञान बताते हैं और न ही बता पाते. उसका दुर्भाग्य कि उसके जमाने में प्रगतिशील नारियाँ न थीं जो कि आज हैं. इन नारियों की तो बात ही और है. ये तो किसी लाग-लपेट को जानती ही नहीं. किसी को रहस्य रखने में इन्हें विश्वास नहीं. ये तो ढकना उघाड़ देंगी और जिस झाड़ी तले बच्चे हुआ करते हैं उसे जड़ों से ऊपर खींच लाएँगी. ये तब न थीं जो सिफारिश करती कि प्रेम के भेदों को और गर्भाधान के अचरज को, बच्चों को पूरी तरह खोलकर समझाया जाये. व्याख्यानों से तुलना और प्रयोग परीक्षा से खोलकर पूरे ब्योरों नकशों के साथ उन्हें सब बताया जाये.

कहना होगा कि जब कि हम बात कर रहे हैं, उस पुरातन काल में निजी संस्थायें—जैसे कि पुरुषों के आवास या आश्रय या विद्यार्थियों के बोर्डिंग या अकादमी—कुछ सुरक्षित तौर पर रखे जाते थे. जैसे कि खास तौर पर नाजुक फूल-पौधों के लिये ठण्डा, ढका सावन-भादो का आवरण. वहाँ वालों की मानसिकता और नैतिकता का दायित्व भरसक शिक्षितों पर निर्भर रहता जो व्यवस्था और विधान के विश्वासी और निष्णात होते. साथ ही वे अपनी सहानुभूतियों में अविश्वस्त. वे मर्यादाओं के सम्बन्ध में भावुक और उनकी त्रुटियों पर असहिष्णु होते. वे इसमें दारुण हो जाते. अब और बात है, लेकिन उस वक्त किशोर बालक अपने घिरते रहते. माँ के दूध से मानो अभी हाल बिछुड़कर आये हुये; धायों और परिचारिकाओं की सेवा से सबेरे शाम के माताओं के लाड़ और दुलार से अलग होकर यहां अगरचे वे ऐसे प्यार के प्रगट होने पर वे लज्जित हो आते और उसे भावुक और स्त्रियोचित कहते. फिर भी इस तरह के सम्पर्कों और कान में कही हुई दुलार-प्यार की बातों की तरफ और गोद के लाड़ की तरफ उनका मन खिंचता ही था.

यह भी यहाँ कहना होगा कि अपनी उम्र के अधिकांश लड़कों की तरह कोल्या को ऐसी चीजों के समागम में आना हुआ जिन्हें वह समझता नहीं था. एक बार वह अचानक अपने पिता के पढ़ने के कमरे में गया; घर में फहरत नाम की एक काम करने वाली लड़की थी. हमेशा खुश

रहती, खुले रग की और टागे ऐसी मजबूत कि स्टील, देखता क्या है कि फरहत झटपट निकलकर बाहर भागी जा रही है मुँह उसका चुन्नी के पल्ले से ढका है. यह भी देखें बिना वह न रह न सका कि बाप का चेहरा लाल है और नाक नीली-सी और लम्बी सी दिखाई देती है. उसने सोचा था कि बापू तो सुग्गे से बने दीखते है, एक बार की बात है कि उसने पिता के खुले रह गये दराज को खोल लिया। या तो वह बेकाम, ठाली था इससे या आमतौर पर लडको मे जो ताक झांक की उत्सुकता रहती है सिर्फ उसके कारण वह ऐसा कर बैठा दराज खोलने पर उसने क्या देखा वहा ऐसी तस्वीरे थी कि क्या कहा जाये.

उसने यह भी देखा था कि जब कभी घर म पाल साहब आते है तो मा बदली दीखती है. यह महाशय किसी दूतावास के काई मुलाजिम थे और मा उसके साथ नदी तट पर सूर्यास्त का दृश्य देखने जाया करती थी. पाल साहब का लिबास स्टार्च से सतर रहता और इत्र से महकता हुआ. मा का जी धडकता दीखता और पाउडर के नीचे से उनके गाल लाल हो आते आवाज पास से बात करते वक्त उनकी मखमल-सी मुलायम हो आती घर मे जिस सख्त और कर्कश बोली मे हमसे बोलती या नौकरो से वह मानो किसी और की हो थी—ओह ! काश कि हम जानते, यानि हम अनुभवी लोग, कि हमारे बाल-बच्चे कितना समझते है, कितना अधिक समझते है ! वे ही जिनके बारे मे कह छोडा करते थे अह, छोडो वह ना बच्चा है, फिकर न करो वह क्या समझेगा.

अपने बडे भाई की कहानी का भी कोल्या ग्लेडिशेव पर बडा असर पडा था उसने सैनिक एकेडमी से डिग्री ले ली थी और एक सर्वश्रेष्ठ रेजिमेण्ट मे यह प्रवेश पाने वाला था पोस्ट पर जाने से पहले उसे एक लम्बी छुट्टी मिली परिवार के मकान मे दो अलग कमरो मे वह रहता था. उस समय उसके यहा एक काम मे हाथ बंटाने वाली नौकरानी थी. उसको वे विनोद मे कभी-कभी मार्शा अनीता कहा करते. काले बाल, सुन्दर चेहरा ! अगर सही लिबास मे हो तो उसे नाटक की तारिका कहना पड़े या राजकुमारी. सलीका भी उसमे था. उसके भाई का उस पर मन आ गया.

मां ने इसमें बढ़ावा दिया. शायद इसमें मातृत्व भाव की प्रेरणा रही हो. अगर बोरेनका को अपनी पवित्रता, अपना शील देना ही है तो कहीं अच्छा यह है कि एक अछूती नेक कन्या से उसका सम्बन्ध हो. नहीं तो किसी खेली—खाई खानगी के हाथ में जाकर पड़ेगा. कोल्या उस समय जंगल की कहानियों और जीवन के कारनामों के किस्से पढ़ने में लगा था. हिन्दुस्तान के एक बहादुर की कहानी थी जो 'काला चीता' के नाम से मशहूर था. इस सब पढ़ने के बीच में भी अपने भाई के रोमांस को वह बड़े ध्यान और चाल से देख रहा था. वह उससे अपने ही नतीजे निकालता जो कभी बड़े अजब और बेतुके होते. अर्से छः एक महीने बाद उसने एक और ही देखा. दृश्य देखा क्या, पर्दे के पीछे से उसकी निगाह में आ गया. उसे बड़ी ग्लानि हुई. देखता क्या है कि मां जो यों कम बोलती और गर्वशालिनी बनी रहती थी. वह दरवाजे के पीछे अपने कमरे में पैर पटक रही है और ट्रक ड्राइवर की तरह कोसे और बके जा रही है. कमरे मे अनिता थी और गालियां उस ही पर पड़ रही थी. बात यह थी कि उसको पांच महीने चढ़े थे. अगर वह रोती बोलती नहीं तो उसको शायद चुप-चुपाने की खासी एक रकम मिल जाती और आहिस्ता से उसे अलग भेज दिया जाता. लेकिन वह तो छोटे मालिक के प्यार में पड़ गई थी. वह कुछ न चाहती थी, कुछ न मांगती थी बस खुलकर रोने लगती. इसलिए पुलिस को बुलाया गया कि वह उसे ले जाये.

पाँचवी-छठी क्लास से ही स्कूल के उसके साथी पाप के वृक्ष के फल का स्वाद चखने लगे थे. उस वक्त उसकी सैनिक शालाओं मे जिनका सभ्य समाज में नाम नहीं लिया जाता है उनकी खुलकर डींग हांकने में अपनी खूबी समझने लगे थे. वे साहस और प्रगति की निशानी समझी जाती थी. असगर को इस तरह की कोई बीमारी हो गई थी. ज्यादा भयकर वह न थी और उन तीन महीनों तक उससे बड़ी क्लासों के लडकों तक के लिये वह सराहना और ईर्ष्या का पात्र हो गया था. बहुत से लड़के कोठों पर चढ़ जाते और जाकर बढ़-बढ़कर खूब रंग चढ़ाकर बखान करते. इस तरह की करतूतें बहादुरी और मरदमी का प्रमाण समझी जातीं और

दूसरे उन्हें मन मसोसकर और अचरज मे सुनते.

ऐसे ही एक दिन ग्लेडिशेव अन्ना वाले ठिकाने पर जा पहुंचा. उसे ज्यादा ललचाने फुसलाने की जरूरत नही पड़ी. लालच का प्रतिरोध उसमें इतना मन्द था मानों वह स्वयं खिचने का प्रार्थी हो उस सन्ध्या को वह सदा ग्लानि और वितृष्ण से याद करता लेकिन कुछ ऐसे-जैसे नशे में देखा और भोगा सपना हो जिसमें स्वाद हो. वह कोशिश से याद करता कि हौसला पाने के लिए गाड़ी में ही उसने कुछ रम पी ली. उसकी गंध उसे बेहद बुरी लगी थी और स्वाद बदतर थे उसने याद किया कि फिर कैसे वह बड़े से स्वागत वाले कमर में पहुँचा था. वहाँ फानूसों में जड़ी कन्डीले घूमती और नाचती उसे मालूम हुई थी. सब कुछ मानो जगमगाता-सा चक्र की तरह उसके चारों तरफ घूम रहा था. स्त्रियाँ नाना रंगों के अदलते-बदलते खण्डो की तरह नाना व्यूहों में घूम रही थी कही उसकी गर्दनों की सफेदी, कहीं रंगीन सजावट मे वक्षों का उभार और उन कामिनियों की हिलती डोलती लम्बी लम्बी बाहे सब एक चकाचौध की चमक मे उसकी आंखों में समा जाना चाहती थी. ऐसे ही समय उसके एक क्लास के साथी ने बढ़कर उन तरलायित अप्सराओ में से एक के कान में कुछ कहा, और वह उसके पास आकर बोली, 'सुनो, प्यारे. वीरन·· तुम्हारे दोस्त ने कहा कि तुम अनजान हो · आओ आओ, मैं तुम्हे सिखाऊँगी."

शब्द ये सदय थे लेकिन अन्ना के ठिकाने की दीवारों ने इन्ही शब्दों को हजार-हजार बार सुना था. उसके बाद क्या हुआ उसे याद करना इतना कठिन और दर्द भरा था कि इस अपने सस्मरणों के बीच मे मथ कर वह इतना थक जाता कि हठात् दूसरा ही कुछ सोचने की कोशिश करता. बस हलक -हलका उसे इतना ही याद आता कि रोशनियाँ उसके चारों तरफ चकराये जा रही थी और चुम्बनो की मानो इधर-उधर सब तरफ बौछारे जारी थी देह के सम्पर्क जो एक में एक को मानो खो देना चाहते थे और जिनसे वह घबरा रहा था. और फिर·· फिर, एक तीखी तीर सी वेदना कि जिसके डर से उसने चिल्ला उठना चाहा, और आनन्द से··· और फिर अपने ही आप में से उसने अपने कांपते हाथों को देखा जो जैसे-तैसे उसके कपड़े

सँभाल रहे थे… सन्देह नही कि सभी लोगों ने इस अनुभव को झेला है. भोग के पीछे होने वाली एक तीव्र आशंका और मूर्च्छा ! लेकिन यह इतनी सांघातिक आत्मिक व्यथा, इतनी गहन और गम्भीर, शायद जल्दी ही बीत जाती है, फिर भी अधिकाश के साथ वह लम्बे काल तक, कभी तो जीवन भर बनी रहती है उसका रूप शायद कुछ क्षणों के बाद एक असगत, अनर्थक, जड़ीभूत भाव के मानिन्द है. कोल्य अपेक्षाकृत जल्दी ही इसका आदी हो गया. उसकी हिम्मत बढ़ी. अब स्त्रियों के सग साथ उसे दुविधा नही सताती. लड़कियों का सुनना उसे खूब पसन्द है. खासकर जब उसके आते ही वर्का खुशी से चिल्ला कर सुनाती है,

'जेनी, तुम्हारे आशिक आये है."

यह सब-कुछ जाकर अपने क्लास के साथियो को सुनाना उसे अच्छा लगता है, गर्व अनुभव होता है. उंगलियां अपने आप अनागत मूंछो के सिरों को पैनाने के लिये ऊपर आ जाती है

अभी देर न हुई थी जल्दी ही थी. बरसाती अगस्त की सध्या थी और कोई नौ ही बजे होगे. अन्ना मरकानी के ठिकाने का स्वागत भवन रौशन था और खाली था. सिर्फ दरवाजो के पास एक बिल्कुल नई उमग का तार बाबू बैठा था. टॉगे उसकी कुर्सी के नीचे इकट्ठी होकर मुड़ी हुई थी वह मोटी किटी के साथ शिष्टाचार की बात-चीत कर रहा था कारण समाज में ऐसे समय शिष्टाचार को ठीक समझा जाता है और वह लम्बी लम्बी टांगों का बुड्ढा गबरू हाल में घूम रहा था कभी इसके पास आकर रुकता तो कभी उस दूसरी लड़की के पास. इसी तरह अपनी चपर-चपर से वह उनका मनोरंजन कर रहा था

कोल्या ग्लाडिशेव ने द्वार में से जब वहां प्रवेश किया तो गोलमटोल आंखों वाली मान्का ने उसे दूर से ही पहले देख लिया वह अपने कपड़ों से वहां ऐंठी खड़ी हुई थी देखते ही ताली बजाकर नाच उठी, 'जेनी, जल्दी आओ! देखो तुम्हारे नौजवान फौजी आशिक आए है मानती हूँ, क्या बांकी खूबसूरत सूरत है."

लेकिन जेनी कमरे में न थी. एक भारी भरकम रेलवाई के कण्डक्टर

ने उम पर कब्ज़ा कर रखा था.

यह अधेड उम्र का गम्भीर प्यास आदमी चुपचुपाता-सा था. वह रेलवाई के स्लीपर और लालटेने बेच दिया करता था. यह इस घर के लिये बड़े सुभीते का अभ्यागत था. गाड़ी का वक्त चुक नही सकता था. इससे सधे-बंधे चालीस मिनट वह यहा ठहरता था. चालीस से ऊपर मिनट उसे कभी नही हुए इसके लिए सदा उसकी घड़ी पर निगाह रहती. उसी तरह नियम से हा पीन शराब की वह चार बोतले खर्च करता और चलते वक्त लड़की को चवन्नी और साइमन को छै पैसे देकर जाता.

कोल्या ग्लाडिशेव अपने स्कूल के साथी के साथ आया था इसका नाम पैट्रव था और यह पहले कभी ऐसे ठिकाने नही आया था. पर कोल्या की लुभावनी कहानियो ने उसे मोह लिया था. शायद आने के पहले कुछ घड़ियों मे वह वैसा ही कुछ उद्दाम उत्तेजन और बुखार की-सी घबराहट अनुभव कर रहा था जो पहले-पहल कोल्या ने अनुभव की थी. उसकी टागे नीचे लरज रही थी, मुह सूखा था और कमरे की रोशनिये ऊपर से नीचे झलकती सी मालूम होती थी.

साइमन ने उतरते ही उनके कोट हाथ मे लिये और उन्हे फेर कर खूटी मे टाँग दिया. ऐसे कि फाजी बटन या निशान तमगे दिखाई न दे. कहना कि यह सख्त किस्म का गुम सुम आदमी नही पसन्द करता था कि ये छोकरे, वर्दीवाले, ऐसे ठिकानो पर आकर मरे. फिर ये अदब आदाब जानते नही है. बात ऐसे करते है कि ऊंच-नीच ही कोई न हो और क्या कहते है सो समझ मे नही आता।

वह अपने साथी दरबानो से कहा करता, "सोचो क्या हो, अगर इन कल के छोकरो का यहा आमना सामना हो जाये उनके किसी बड़े अफसर से, बस, धड़ाम मे य सारा कारखाना बन्द हो जाये। तीन साल हुए, लौलीन के साथ यही तो गुजरा था. अलबत्ता इसमे ज्यादा फर्क नही पड़ा. क्योंकि एक बन्द हुआ तो दूसरे नाम से उस शैतान ने दूसरी सराय खोल ली। लेकिन उसे डेढ़ महीने की जेल की सजा मिली और उसमे बचने के लिये उसे खासा असासा चुकाना पड़ गया. अकेले वर्कश को ही चार सौ

नक़द देने पड गये और दूसरी बात भी हो सकती है. इन बचकानों में से किसी को राम न करे कही से कोई बीमारी लग गई तो रोते फिरेंगे, 'हाय बापू ! हाय अम्मा, मै मर रहा हूँ.' वह पूछेंगे, 'नास गये कहाँ से यह रोग ले आया ?' वह कहेगा, 'वहाँ से.' सो ऐसे फिर हम पर बीतेगी."

"जाओ अन्दर जाओ," कोट लेकर उसने उन नये छोकरों से कहा.

दोनो लडके चमकती रोशनियो से बचाकर आँख ऊपर उठाये स्वागत भवन मे दाखिल हुए पैंट्रव ने हौसला बनाये रखने को थोडी कुछ पी भी थी. वह इससे पीला था और अभी से पूरे सही कदम उसके न पडते थे. वहां लगी बडी तस्वीर के नीचे आकर वे बैठ गये. बैठना था कि तभी वर्का और तिमिरा दोनो साथ आ लगी

"सिगरेट एक नही पिलवाओगे ? सरदार !" वर्का ने पैंट्रव से लगते हुए यह कहा पैंट्रव को लगा कि यह सयोग ही है कि सफेद जर्सी मे कसी उसकी गर्म मुलायम मजबूत जाघ का स्पर्श दबाव देकर उसकी टाँग को अनुभव हुआ अनुभव हुआ. "तुम कैसे अच्छे कितने प्यारे हो."

"जेनी कहाँ है ?" ग्लेडिशव ने पूछा. "किसी के साथ है क्या ?"

तिमिरा ने उसकी आँखो मे देखा उसकी दृष्टि इतनी एकाग्र थी कि ग्लेडिशेव को असमजस हुआ और उसके आखे गिराकर मुँह हटा लिया.

"किसी दूसरे के साथ ! नही, दूसरे के साथ क्यों होगी. असल में उसे सख्त सर दर्द है दिन भर रहा है. बात यह कि वह बरामदे मे से होकर जा रही थी सरक्षिका ने अचानक जो दरवाजा खोला तो खडाक से वह दरवाजा आकर उसकी आँख के पास लगा उससे फिर पीछे सर दर्द हो गया बेचारी माथे पर गीला कपड़ा लिये दिन-भर बिस्तर पर पड़ी रही है. जरा तसल्ली रखो थोडी देर मे वह बाहर आजायगी जरूर तुम उसे पसन्द करोगे ?"

वर्का पैंट्रव के पीछे पड़कर उसे छेड़े ही जा रही थी. "प्यारे तुम कैसे अच्छे हो ! सच कहती हू. फरिश्ते दीखते हो. तुम्हारे से बाल और जर्दी मायल चेहरा—ऐसे आदमियों को तो राम जाने, मैं पूजा करती हू बडे शक्की होते हैं, पर प्यार में उतने ही तेज और बेबस !"

फिर उसने गाना शुरू किया—

तपे तावे सा रग है उसका
उस मेरे छोने का, मेरे प्यारे का
नहीं वह मुझे बेचेगा नहीं, छलेगा नहीं
दर्द मे वह पागल है, बेहोश है
दे डालेगा वह उतार के सब कुछ,
प्रीत के लिए, मीत के लिए मेरे

और पूछा, "नाम तुम्हारा क्या है, प्यारे?"

"ज्यार्ज!" एक शब्द मे उत्तर देकर वह रह गया और आवाज उसकी बदली हुई और भारी थी

"ओह! ज्यार्ज, जौर्जिक, जोरेश्का! क्या बढ़िया नाम है!" एकाएक वह अपना चेहरा उसके कान के पास ले गई और आंखो मे कटाक्ष डालकर फुसफुसाहट मे कहा, "जोरश्की, मेरे साथ आओ"

पैट्रुव ने आंखे नीची की और मानो बेरुखी मे बोला, "मै नही जानता यह मेरा दोस्त जो कहेगा"

वर्का सुनकर जोर से हस उठी. "यह खूब? ओह, यह मजेदार बात है. देखो आप कैसे दूध पीते बच्चे बन रहे है! हमारे गांव मे जोरेश्का, तुम्हारी उमर वाले के तो कुनबा हो जाता है कुनबा, और आप फर्मा रहे है जो मेरा दोस्त कहेगा, सुना तुमने तिमिरा? मै कह रही हूं कि आओ मेरे साथ सोना और जनाब जवाब देते है, 'जो मेरा दोस्त कहेगा' क्यों दोस्त ग हुव' उसने कोल्या की तरफ पूछा, 'आप कौन है? आप इसके ट्यूटर है गार्जियन कि"

"मुझे मत छेड़ो, हटो परे!" पैट्रुव ने यह ऐसे त्योरी चढ़ाकर कहा, मानो लड़का हो जो लड़ने पर आमदा हो

कि उसी समय वह लम्बा सीठी सी टांगे लेकर गवर्ड् वहां आ पहुंचा. इस बीच वह और धौला गया था. वह उन दोनो के पास पहुंचा उसका लम्बा तिकोन-सा चेहरा एक तरफ झुका, उस अलौकिक-सा बनाकर वह बड़बड़ाने लगा, "ऐ! देश के सुकुमारो, तुम जो देश की आशा हो, हमारे सम्पन्न और बुद्धि वर्ग के वरदान हो और भविष्य के स्तम्भ! तुम जो होने

वाले सेनानी और नेता हो. ऐसे विद्यार्थियों, एक वृद्ध की बात सुनो जो यहां के प्रवासी है, जो ऐसे ही स्थानों के वासी है, महान बनो उदार बनो और उसको एक सिगरेट का दान करो. मैं दरिद्र हूं, दीन हू पर मानव हू और सिगरेट पसन्द करता हू"

सिगरेट लेकर वह अदा से खड़ा हो गया और कांपती सी आवाज मे गा उठा.

जमाना था मै दावते देता था.
बहती थीं मदिरा और सुरा कि नदियाँ
जमाना यह भी है कि नही है छदाम,
नही है टुकडा रे भाई नहीं है कुछ भी
कहाँ की बात है, हाँ, दिल बरगा की,
मन्तरी दौड के दरवाजे खोलता, क्या खूब था वो,
मगर अब—अब कहीं नही है, वीरानी है,
अरे भाई मेरे ला, इसी खाक पर कुछ दे.

एकाएक अपने सीने पर मुक्का मारकर गाने की तान को तोड गबदू दर्द भरी आवाज में कहता—

"सज्जनो, यहाँ मैं आपके क्या, भावी जरनलों के दर्शन पा रहा हू आप में से स्कोब्लव और गुरको जैसे सेनापति निकलेगें, लेकिन मैं भी किसी न किसी लिहाज से एक फौजी कुत्ता हू. अपने जमाने में जब मैं जगल की रेजर की शिक्षा पा रहा था, हमारा सारा महकमा जगलों का और वनो का, आप जानते है, उस वक्त फौजी ही हुआ करता था. इसलिए ऐ महानुभावो आपके हृदय के हीरो से जड़े सुनहरी द्वारो पर मै ठकठका रहा हू निवेदन है, करबद्ध प्रार्थना है कि चाहे अल्प ही हो स्वल्प तनिक सी मात्रा में लेकिन उदार और प्रसन्न हृदय से कुछ दिजिए कि उद्धार हो एक मानव का, मानवता का •"

गबदू के दूसरे सिरे से मोटी ताजी किटी चिल्लाव—इन जवान अफसरों को वह तो दिखाओ, वह बिजली नही तो देखना यह पैसा जो तुम ले रहे हो हजरत, बुढ्ढू वह सब छिन जायेगे.

यह लीजिए पेश करता हूं. खुशी के साथ गबदू ने जवाब दिया—परम उदार, कृपालू उपकारी महानुभावो, तनिक इधर ध्यान दो जीती जागती तसवीरें देखिएगा. तूफान का तमाशा देखिये. जून महीने की गरमी का तूफान. एक उस अज्ञात नाम प्रतिभाशाली नाटककार की रचना जो अपने को गबदू नाम देकर गुप्त रखे रहा था. तो पहली तसवीर—

जून का जगमगाता दिन था. सूर्य की प्रखर ताप तप्त किरणों से फूलों से भरी वाटिकाएं और मैदान झकाझक दीख रहा था ··

गबदू के ओठ फैलकर मीठी-सी मुस्कराहट में खिंच आए और आंखें सिमटकर अर्धवृत्तों में सिकुड़ गई.

लेकिन तभी दूर क्षितिज के पास मुट्ठी भर के बादल ने मुंह दिखाया देखते-देखते बादल घटा बन गया. घटाएं एक-एक कर तह देती हुई नीले आसमान के चन्दा के पक-एक कर हर कोने को छाकर घनघोर हो उठी •

धीरे-धीरे गबदू के चेहरे की मुस्कराहट उड़ती गई और चेहरा उत्तरोत्तर अधिक गम्भीर, कठोर और क्लान्त दीखने लगा.

···आखिरकार हलके-हलके सूरज की छनती धूप भी ढक गई··· साया घना होने लगा···एक गहरा अंधेरा उतरा और चादर की तरह तन गया···

गबदू की आकृति एकदम भयानक बन आई.

वर्षा की पहली बूंदे पड़नी शुरू हुई, टप, टप.

गबदू ने कुर्सी की पीठ पर अपनी उंगलियां ठोक कर बताया - टप टप.

···वह दूर, देखिये-देखिये तड़क से वह बिजली चमकी···

गबदू की आँख ने तेजी से चमक दिखाई और उसके मुंह का बाया किनारा अदा से मुड़-तुड़ गया.

···और फिर राम बचाये वर्षा पनालों में टूट पड़ी और मैंने काले अंधेरे को कौंध से दरकती हुई. आंखों को अंधियाती यह चकाचौध बिजली टूटी, वह-वह···.

और असाधारण तेजी और कलाबाजी से गबदू ने अपनी भंवों, आंखों

नाक, ऊपर नीचे के ओठ इन सबों को तरह-तरह से चला-चलाकर आंकी बांकी लकीरों में तड़पती बिजली का चित्र उतारा··· एक कनफोड़ गड़गड़ाहट बादलों की हुई, गड़ड़धम धप जमानों से खड़ा बढ़ का पेड़ उसके मारे ऐसे धरती पर आ रहा कि टूटा बांस ही न हो.

और गबदू इस आसानी और हौमले से कि जिसकी आशा उसकी सी उमर वाले से हो नहीं सकती थी. न बिना घुटने झकाये, न कमर पूरे सतर सिर्फ सर की तरफ से झुककर मानिन्द मूरत के फौरन धरती पर गिर रहा. पीठ सीधी फर्श पर बिछ गई जैसे जान भाग गई हो और पड़ा यह सिर्फ़ मुर्दा, लेकिन आंखे झपकने से पहले वह पलभर में फिर सीधा पैरों पर सतर हो गया.

लेकिन अब बादली तूफान कम होता जा रहा है. बिजली चमकती है, पर कम और देर-देर में. गड़गड़ाहट गरजती नहीं जैसे अब सिसक रही है, कभी रभांती है जैसे भैंस—अ-अ-अ-ओ···बाद बिखर रहे हैं, सूर्य भगवान की किरणें एक-एक कर झांकने लगी हैं···

गबदू ने एक फीकी सी मुस्कराहट में फिर मुंह फैलाया.

···और अब दिन के अंशुमाली नहाई हुई धरती पर फिर से अपनी उजली धूप से दिपाकर चमका रहे हैं···

और गबदू के मूरख चेहरे पर, उमसे भी मूरख, लेकिन आनन्द मनन हंसी ऐसे खिल आती है जैसे अमरूद के.

सैनिक युवकों में से हरेक ने एक दुअन्नी उसे दी. उसने उन्हे हथेली पर रखकर आगे किया. उसने हाथ को हवा में चक्कर देकर उसे घुमाया. कहा, 'देखिये, साहबान, मैं कहता हूँ., एक, दो, तीन ! हो तो जा छू मन्तर !" कहकर फिर हाथ की मुट्ठी को खोला सिक्के वहाँ से गायब थे.

"तिमिरा रानी ! यह ठीक नहीं है." उसने तिमिरा की ओर देखकर भर्त्सना से कहा, "एक बूढ़े अपाहिज, खारिज मुलाजिम पास से उसका बचा-खुचा पैसा लेते तुम्हें शर्म नहीं आई. यह यहाँ तुमने उन्हें छिपा क्यों रखा है ?" और हाथ को तिमिरा के कानों के पीछे ले जाकर तान के मुट्ठी की उँगलियों को जो खोला तो दुअन्नी वहाँ साफ मौजूद थी.

"मैं अभी जल्दी ही लौटूंगा," मानो आश्वासन देते हुए उसने सैनिक युवाओं को कहा, "आशा है इस बीच आपको मेरी जरूरत न होगी। आप मेरी वापसी का इन्तजार न भी करेंगे तो भी मुझे खयाल न होगा. लीजिये मेरी ओर से सुखद संध्या के लिये अभिवादन लीजिये और मुझे इजाजत दीजिये.

वह चलकर द्वार के पास पहुंचा ही था कि गोरी मनका ने पुकारकर कहा, "ग़बदू गबदू ! देखना यह तीन आने की मेरे लिये कैन्डी खरीद लाना और कुछ पेपरमेण्ट की गोलियें. लो, ये पकड़ो."

कहकर उसने पैसे फेंके जिसे गबदू ने सफाई के साथ लपक लिया. फिर उसने झुककर आदाब बजाया. अपनी वर्दी की टोपी को कान के पास सरकाया और चलकर गायब हो गया.

पकी लम्बी देहयष्टि की हरीता भी सेना के उन युवाओं के पास आई और सिगरेट की मांग की. साथ जम्हाई-सी लेती बोली, "कैसे जवान है आप लोग? नृत्य गान ही कुछ करवाते. देखो, लड़कियां कैसी अलसाई-सी बेकार बैठी है."

"बात तो ठीक है" कोल्या सहमत हुआ और उसने गाने वालों से कहा, "पहले एक वाल्स बजाइये. बाद उसी तरह की कोई दूसरी गत दीजियेगा."

साजवालो ने बजाना शुरू किया. लड़कियां उठकर एक-दूसरे को लेकर चक्कफेरे देकर नाचने लगी. नृत्य मे शालीनता की उन्होने रक्षा की. भगिमा उनकी सीधी रहे और आखे लज्जाभास से विनत.

ग्लेडिशेव को नाच का चाव था. वह रुक न सका और वाल्स में साथ देने के लिए उसने तिमिरा को साथ के लिये कहा. उसको पहले साल की याद आई कि वह औरों से बेहतर नाचती है और कदम उसके हलके पड़ने हैं. यह लोग भवन के आंगन में नाच ही रहे थे कि रेलवाई का कण्डक्टर निकला और नाचते हुए युग्मों के बीच से चुपचाप होशयारी से अपना रास्ता बनाते हुए बाहर सरक गया. कोल्या के ध्यान में वह नहीं आया.

उधर वर्का ने पैट्रव के साथ कितनी ही छेड़खानी क्यों न की हो पर वह काबू न आया. हलका सा जो उसे नशा न था, कभी का गायब हो चुका था और यहां ऐसी जगह आने का हेतु उसके आगे रह-रहकर और अवास्तव, हेय और डरावना होता जाता था. वह निश्चय ही सिरदर्द का बहाना कर सकता था या कह सकता था कि इनमें से मुझे कोई पसन्द नही हो. लेकिन यह जानता था कि ग्लेडिशेव उसे हरगिज न छोड़ेगा. सिर्फ वह बाहर निकल जाना चाहे तो भी वह न मानेगा. पर सच सीधी वजह यह कि वह अपने-आपसे बड़ा होकर एक कदम भी न जा सकता था. फिर उसे लगता था कि इस बात को सुनकर कोल्या से कहने के लिये हिम्मत छुड़ाना भी उसके वस का नही है.

नाच पूरा होने पर ग्लेडिशेव व तिमिरा आकर बराबर आस पास बैठ गये. कोल्या ने अधीरता से पूछा, "क्या हो गया है जेनी को कि अब तक बाहर ही नहीं आई ?"

तिमिरा ने झट वर्का की तरफ देखा. उस आँख में इशारा था. बे मालूम वर्का ने उस प्रश्न को पढ़ा और उसकी आँखों की पलकें झुकी. मतलब था कि ग्राहक जा चुका है. तिमिरा ने कहा, "मैं जाकर उसे बुलाये लाती हूँ." हरीता बोली, हरहमेश तुम्हें जेनी की ही क्या पड़ी रहती है, मुझे क्यों नहीं लेते."

"अच्छा अच्छा, तुम फिर कभी सही." कोल्या ने जवाब में कहा, और जल्दी से उसने सिगरेट सुलगाई.

जेनी ने अभी संभालकर कपडे पहनना भी शुरू नही किया था. आइने के सामने बैठी वह मुंह पर पाउडर ठीक कर रही थी.

"तिमिरा, क्यों क्या चाहती हो ?"

'तुम्हारा वह सैनिक आदमी वहां तुम्हारी इन्तजार कर रहा है."

"ओह ! पारसाल का वह बालक? मरने दो उसे."

"जेनी, मैं ठीक हूँ, लेकिन वह तो बढ़ गया, तन्दुरुस्त है और खूबसूरत. देखने ही उसे आनन्द होता है. तो और तुम नहीं चाहती तो मैं तैयार हूँ."

"शीशे में तिमिरा ने देखा कि सुनकर जेनी के माथे में बल पड़े.

"नहीं, ठहरो. नही तिमिरा यह न होगा, उसे यहाँ मेरे पास भेज दो. कहना मेरी तबियत जरा नासाज है. सिर मे दर्द है आ जायेगा."

"यह तो मैंने उन्हें कहा ही है. कहा कि जकिया ने अचानक जो दरवाजा खोला तो आकर वह तुम्हारे मुंह पर बैठा और कि तुम सिर पर गीला कपडा रखे इस वक्त पलग पर लेटी हुई हो. मगर जेनी क्या यह जरूरी है, कीमत चुकाना ?"

"जेनी ने झिडकी से कहा, "जरूरी है कि नहीं इससे तुम्हे क्या सरो-कार है तिमिरा ?"

"तुम्हे क्या खेद नही ? जरा थोडा भी खेद नहीं ?"

"और क्या तुम्हे मेरे लिये खेद नही है ?"

जेनी ने पलटकर जवाब दिया. उसका हाथ गले पर यहां से वहां तक खुदी लम्बी लाल लकीर पर फिर आया. "तुम्हें क्या उस बदनसीब लुवी के लिये दुख नही, या पाशा के लिये ? तू तो सर्द पानी की मछली ही है इन्सान का दिल तुझमें थोड़े ही है

तिमिरा जरा शरारत से हँसी, मगर उसमें गुमान भी था. "नहीं, प्यारी जेनी. असल काम के वक्त मैं सर्द मछली नही हूँ. इसका जेनी तुम्हें जल्दी सबूत मिल जायेगा. लेकिन आओ हम झगड़े नहीं. जीवन सचमुच कोई मेरा तमाशा नही है अच्छी बात है जाती हूँ और यहाँ ही तुम्हारे पास भेजे देती हूँ."

उसके जाने पर जेनी ने उठकर छत से लटकती नीली लालटेन की बत्ती मध्यम की और दोपहर सोने के समय की एक जाकेट लेकर बिस्तर मे आ लेटी मिनट-भर बाद ग्लेडिशेव अन्दर आया. जिसके पीछे-पीछे तिमिरा हाथ की उँगली मे पकड़कर पेट्रव को खीचे ला रही थी. उसका सिर झुका था और वह प्रतिरोध कर रहा था. उसके पीछे संरक्षिका जकिया का लोमड़ी का-सा गुलाबी-सा तीखा मुह झांक रहा था. और उसकी भेंगी आँखे देख रही थी.

वह हाथ फैलाकर कह रही थी, "क्या खूब ! दो बांके जवान और साथ ही दो मस्त छोकरियाँ देखकर मन बाग-बाग हो उठा. जैसे गुलदस्ता !

क्या हुक्म है बांके जवानों ? क्या पेश करूँ—बियर या वाइन ?"

ग्लेडिशेव की जेब मे काफी से ज्यादा पैसा था इतना कि अब जीवन मे कभी नही रहा. पूरे पच्चीस रुपये थे. इधर वह खुल खेलना चाहता था. उसने बियर पी तो बहादुरी के दिखावे में क्योकि उसका कड ुवा स्वाद उसे भाता न था. उसे अचरज होता कि और लोग इसे कैसे पीते हैं. इसी-लिए नीचे का होठ निकालकर उसने अफसराना ढग से कहा, "तुम्हारी चीज यहाँ किसी कदर बद जायका थी.

"यह आप कैसे कहते है. हमारे बढिया से बढिया मेहमान हमारी शराबों की तारीफ करते है हमारे यहाँ एक-से-एक बढकर नमूने है. मीठी लीजिये, तेज चाहिये वह लीजिये. पुरानी महकदार चाहिये तो वह लीजिये. पुरानी महकदार चाहिये तो वह लीजिये. फ्रास की, ब्रिटेन की, जहाँ की फरमायश हो हाजिर है छोकरियों के लिए खासकर लेमन के साथ लफीत मुनासिब बैठती है. वे उस पर जान देती है

"कीमत क्या है ?"

"कीमत क्या होगी, कीमत पैसे से बडी तो होती नही. सब बढिया ठिकानों पर कोमत और कायदा एक है. लफीत की बोतल पाच रुपये और लैमन आठ आना. इस तरह लैमन की चार बोतले कुल दो रुपये की और पाँच वह लफीत के कुल हुए सात रुपये."

"ठहरो, ज़किया," जेनी ने बीच मे ही सामान्य भाव से कहा, "इन बालकों को लूटते तुम्हे शर्म नहीं आती. पांच रुपया इस सब के लिये बहुत हैं. देखती नही हो ये भलेमानस लोग है यो ही ऐरे-गैरे नही है."

लेकिन कोल्या लाल पड़ आया था. उसने दस रुपये का नोट लेकर लापरवाही से मेज पर फेंका और कहा, बोलने की ज्यादा जरूरत नही. ले आओ."

"मैं इसमे से आने की कोमत का रुपया भी ले लूगी. आप साहेबान सिर्फ एक मुलाकात के लिये ठहर रहे है या रात भर के लिये. कीमत आप जानते ही है. एक मुलाकात दो रुपया और रात-भर के पाँच रुपया."

"अच्छा-अच्छा." जेनी फिर बीच मे पड़कर बोली, "एक मुलाकात के

लिये वे ठहरेंगे. कम-से-कम इसमे तो हमारा यकीन रखो."

"शराब आ गई. तिमिरा ने तरकीब के साथ कुछ पेस्ट्री का इन्तजाम कर लिया था और जेनी ने गोरी मनका को भी बुलाने की इजाजत ले ली थी जेनी ने खुद तो पी नही न वह बिस्तर से ही उठकर आई. वह बार-बार ऊनी शाल खीचकर कन्धे पर लेती थी. अगरचे कमरा खासा गर्म था. वह कोल्या के चेहरे को एकाग्र भाव से देखती रही. देखती और वहां से आँख न उठा पाती धूप से रगा, यौवन से पौरुष से दीप्त और आरक्त उसके चेहरे का आकर्षण विचित्र था

कोल्या ने उसके बराबर बिस्तर पर आ बैठकर उसके हाथो को धीमे से थपथपाते हुए पूछा, "क्या बात है प्रिये !"

"कुछ नहीं, सिर जरा दुखता है चोट आ गई है "

"उधर ध्यान न दो, कोशिश करो कि उसकी सोचो ही नही."

"हाँ, तुम यहाँ हो तो महसूस होता है कि मैं बहुत अच्छी हूँ इतनी मुद्दत तक तुम आये ही नही क्यो नही आये, कहां रहे ?"

"मै आ ही न सका वहा कैम्प पर था दिन मे हमे पन्द्रह से बीस मील तक रोज मार्च करना पडता हर दिन ड्रिल--कवायद, ड्रिल-कवायद. कभी मैदानी काम कभी लाउन फर्निशिंग, कभी गैरिसन की चौकसी और कन्धे पर सारा-का-सारा बोझ लदा हुआ मै तो थककर इतना चूर हो जाता कि रात को सोता तो मुर्दे के मानिद फिर हमे मनूवर मे भी हिस्सा लेना होता और वह तुम जानो कोई खेल तमाशा नही होता "

"ओह ! आप लोग बेचारे !" गोरी मनका एकाएक उदास होकर बोली, "और तुमको इतना वे सताते क्यो थे मुझे अगर तुम-सा भाई होता या बेटा तो मेरा दिल तो उसके लिये खून के आँसू रोता रहता. लो यह तुम्हारे लिये है मेरे बहादुर !

कह कर उन्होने गिलास बजाये जेनी उसी एकाग्रता से कोल्या को देखती रही, देखती रही.

उसने उसके आगे गिलास करते हुए कहा, "और तुम जेनी, तुम न लोगी ?"

"नही. मुझे नहीं चाहिये." जेनी अलस भाव से बोली, "अच्छा, साथिनो अब तुम पी चुकीं और गप-शप भी काफ़ी हो गई. समय हुआ अब तुम जाओ."

जब और सब जा चुके थे तो उसने ग्लेडिशेव से पूछा, "शायद तुम रात भर के लिये रहना चाहो. नही-नही राजा मेरे ! परवा न करो, अगर पास पैसा काफ़ी नही है तो बाकी मैं भुगता दूंगी. जानते हो तुम कैसे प्यारे, लुभावने हो आये हो. मुझ-सी तो तुम पर कितना ही पैसा वार दे." कहकर वह कुछ हँसी.

कोल्या ने झट से गर्दन मोडकर उसकी ओर देखा. जेनी के स्वर मे एक विचित्र-सी ध्वनि थी. उसके असावधान कान भी उसको पकड गये. उस स्वर मे भावनाओं का विलक्षण मिश्रण था, दुख था, दया थी और व्यग्य भी था.

"नही, मेरे दिल की रानी ! चाहता हूं, मैं तुम्हारे साथ ठहर सकू. लेकिन ठहर नही सकता. दस बजे घर वापस पहुचने का वायदा कर आया हूँ."

"तो क्या हुआ घर पर लोग जरा इन्तजार ही कर लेंगे. आखिर तुम अब बढकर जवान, हो गए हो. पर खैर, जैसा तुम चाहो क्या चाहो हो कि मैं रोशनी बुझाऊँ, या ऐसे ही रहने दू. और बताओ किधर, दीवार की तरफ ?"

"किधर भी सही," उसने काँपती-सी आवाज मे कहा, और उसके मुलायम, गर्म शरीर को बाँहो मे भरकर चाहा कि उसका चेहरा चूम ले. पर हल्के-से जेनी ने हटाकर उसे परे कर दिया

"ठहरो, प्यारे राजा ! तसल्ली रखो. बहुत तो समय है इन बातो के लिये लो जरा के लिये लेट जाओ. हा ऐसे हिलो नही, चुपचाप लेटे रहो."

उसके शब्दों में कुछ था. आदेश था और आवेश भी था. युवक मानो जादू मे हो. उसने चुपचाप स्वीकार किया और सर के नीचे हथेली देकर कमर के बल सीधा लेट गया. जेनी जरा ऊँची हुई. कोहनियों के बल वह उभरी. उठी बाँहों की हथेलियों पर उसने अपना चेहरा लिया और कमरे

की मध्यम-सी ज्योति मे उस युवा शरीर का मूक होकर दर्शन और अनुमान लेने लगी. वह श्वेत काया, बलिष्ठ और मासल. ऊँची और चौडी छाती, कोमल पसलियाँ, तग नितम्ब और पुष्ट उभारदार जघाएं. चेहरे का और वृक्ष के ऊपर के भाग का तम्बियाया रग कधो की ओर छाती की सफेदी से कटकर अलग नजर आता था.

घडी भर के लिये ग्लेडिशेन न अपनी आँखे बन्द कर ली. वह जेनी की स्थिर ओर तीव्र दृष्टि को अपने चेहरे और अपने शरीर पर गडी ही अनुभव कर रहा था कि वह उसकी त्वचा को छ रही थी.

"तब उसने अपनी आँखे खोली. देखा कि देखने वाली आँखे उसके ऊपर और बहुत पास है उन लम्बी काली घनी आखों मे क्या था उसे लगा कि यह आँखों वाली नारी जैसे अज्ञात है एकदम अपरिचित ! धीमे स्वर से उसने पूछा, 'ऐसे तुम मुझे क्यो देख रही हो जेनी. क्या सोच रही हो ?'

'मेरे सलाने मुन्ने राजा, तुम्हारा नाम कोल्या है न ?"

"हाँ '

"तुम मुझसे नाराज मत होना बस इस बार मेरी रख लो और मान लो और आखे जरा फिर बन्द कर लो ना जोर से बन्द कर लो, और, बिल्कुल न र म भ रोशनी भरपूर किये देती हूँ, और तुम्हे समूचे को भर आँख देख लेना चाहती हूँ हाँ यह ठीक है ओह ! काश कि तुम जानते कि ठीक अब इस समय. इस पल तुम कितने सुन्दर हो, कितने सुन्दर ! पीछे तुम बढोगे और यह न रह जाओगे हो सकता है कि तब यह काया गन्ध दे आय पर इस घडी उसमें सोन्धी-सी महक है और परस फूल-सा स्निग्ध, परों-सा कोमल ! ओह तुम दूध के बने हो ओह ! आँखे जरा बन्द रखो. तुम्हारे हाथ जोड'

उसने लैम्प को ऊँचा किया फिर अपनी जगह आ बैठी टाग अपने नीचे मोड़कर सर पीछे टेककर वह आराम के आसन से हो बैठी और देखती रही दोनो नीरव थे, दृश्य और दृष्टा, दूर कई कमरो पार से टूटे से प्यानो का सुर और किसी के हँसने की तरगित आवाज सुन पडती

थी. उससे दूसरी ओर से गान का सुर आ रहा था और मदभरी बातचीत की गूज; यद्यपि शब्द चिह्न न पड़ते थे. कही दूर मानो अनन्त मे गड़गड़ाती जाती एक बग्घी की आहट सुन पड़ी.

जेनी की उन्मुख एकाग्र दृष्टि उसकी देहयष्टि पर से उसके सलोने अवयवों पर होकर फिसलती इधर से उधर जा रही थी. जैसे भावी विजेता का हो. उस शरीर की सुघड जघाओं पर से होकर शीर्णकटि, फिर पुष्ट वक्ष और स्कन्ध प्रदेश से उसकी दृष्टि खिले चन्द्रानन पर जा रमकी. आजानु बाहुओं में उभरी मछलिया वह देखती जैसे तनी कमान हो देखने-देखते ही उसने सोचा, "अभी हाल इसको, इस देवोपम काया को भी औरों की तरह विष से दूषित कर देने वाली है. क्यों, क्या हुआ ? उसके लिए दुखी मैं क्यों होती हूं. इसलिये कि वह सुन्दर है ? नहीं, अब तो चिरकाल काल से उस भाव को ही मैं नहीं जानती हू. या कि इसलिए कि वह किशोर है, अभी बालक है. पिछले साल ही मैं उसकी जेबों में सेब रख दिया करती थी या रात को जाता तो पिपरमेंट दे देती थी क्यो नही तब मैंने उसे वह कहा जो जुरंत के साथ अब कह देने वाली हू क्या इसलिए कि वह किसी तरह मेरा विश्वास न करता या नाराज हो जाता या किसी दूसरी के पास चला जाता. आगे पीछे यह तो हर किसी मर्द के साथ होना ही है. क्या यह कि उसने मुझे पैसे से खरीदा उसे कभी माफ किया जा सकता है. या कि वह भी औरो की तरह अन्धे होकर, बिन सोच विचारे, अपने को झोंक उठा

"कोल्या" उसने धीमे से कहा, "आख खोलो"

आज्ञा पर उसने आँख खोली. और उसकी ओर मुड़ा. बढ़कर अपने गर्दन मे डाले और उसके चेहरे को अपनी ओर नीचे खीचा उसकी जाकेट की काट मे से खुले भाग को, उसके वक्ष पर चूमना चाहता था. उसने फिर हल्के से पर दृढ़ता से फिर उसे परे हटा दिया.

"नही-नहीं, जरा ठहरो, मेरी तो जरा सुनो. बस एक मिनट ! मुझे यह बताओ मेरे राजकिशोर की तुम हम सी औरतों के पास क्यों आते हो ?

कोल्या जरा हंसा, उसमें कुछ असमंजस भी था कैसी पगली हो !

भला हर कोई यहां क्यों आता है और मैं क्या मर्द नहीं हूं. मेरी भी उम्र हो गई है. मैं समझता हूं कि जब-जब आदमी को···जरूरत होती है औरत की···यह तो नही तुम चाहतीं कि में हर तरह की गन्दी आदतों मे पड़ता ?"

"जरूरत सिर्फ जरूरत ! मतलब की जरूरत जैसे वहां कामोड की है !"

"नही, वह नही," कोल्या ने सदय होकर धीमे से हंसकर कहा, "मैं शुरू से पहले-पहल देखकर ही तुम्हें चाहने लगा था · असल कहू तो तुम्हारे साथ कुछ-कुछ प्रेम मे पड गया था. पर जो हो किसी और से मैं नहीं मिला."

"खैर ठीक है, लेकिन उस पहली बार·· क्या सिर्फ जरूरत थी."

"नही यह ना नही मानूगा लेकिन तो भी···" कहते वह झिझका, "मुझे अन्दर लगता कि मैं स्त्री चाहता हू. साथियों ने मुझे राह बताई. तुम तो जानते ही हो बहुतेरे यहां पहले हो गए थे. सो मैं भी चला आया."

"तुम्हें क्या पहली बार लाज नहीं लगी ?"

कोल्या अस्थिर हो चला था. जिरह उसे अरुचिकर हो रही थी. कुछ त्रास भी देने लगी थी उसने अनुभव किया कि यह बस निरर्थक-सी बात नही है जो अक्सर दो जनों के प्रेमालाप में सोते समय हो जाती है. उसका भी इस छोटी उम्र में वह अनुभव पा चुका था. लेकिन उसने जान लिया कि यह कुछ और चीज है. यह वजनी है, गहरी है.

वह बोला, "अब छोड़ो भी · नहीं, ठीक-ठीक शर्म तो नहीं···हां मगर एक उलझन-सी थी. उस बार मन उभारे रखने को शराब जो पीनी पडी थी. जेनी फिर बगल में लेट गई. कोहनियों के बल हथेली पर चेहरा लेकर, पास से एकटक रह-रहकर उसको देखती रही.

"एक बात और बताओ. राजा ?" ऐसी धीमी वाणी में उसने पूछा कि मुश्किल से वह शब्दों को पकड़ सका, "यह जो तुम्हारा दो रुपया देना है यह दो चांदी के ठीकरे, समझते हो ना, यह इनसे एवज चुकाना कि मैं तुम्हें प्यार करूं, तुम्हें चूमूं, अपने कुल-के-कुल को तुम्हें दे रहूं, यह इसका एवज कीमत चुकाते तुम्हें कभी झिझक और लाज नहीं हुई कभी नहीं."

"भगवान मेरे आज तुम यह क्या ऊलजलूल सवाल कर रही हो. सभी तो पैसा देते हैं. मैं नहीं तो मेरी जगह किसी दूसरे ने तुम्हें पैसा दिया होता—तुम्हारे लिये सब क्या एक ही बात नही है ?"

"अच्छा कोल्या" जेनी बोली,"सच कहना, तुम्हारा किसी से कभी प्यार हुआ है. प्यार, सचमुच का, दिल का···वह जो अन्दर तकलीफ देता है···किसी की तुमने निगाह जोही है लला के उसके चरणो मे फूल रखे हैं···चाद की चादनी मे बॉह मे बॉह लेकर कभी घूमे हो ? हुआ है, न कभी ऐसा ?"

"हाँ," कोल्या ने मध्यम स्वर में कहा, "बचपन में क्या मुरखपना नही हो जाता। यह तो हर कोई जानता है होता ही है · ?"

"कोई तुम्हारी दूर की रिश्तेदार है ? या बहन की सहेली, या भाभी की कोई ?·· कोई ऐसी तुम्हारी अपनी रही है ?"

"हाँ, सो तो– हर किसी के होती है।"

"तो कहो तुम उसे छूने, छेडने, सच कहो ? क्या तुम उसे बचाये न रखते ? ···और सोचो कहो वह तुमसे कहती कि लो मुझे ले लो, मगर सिर्फ़ दो रुपये मुझे देने होगे तो तुम उसको क्या कहते ?"

"क्या हो गया है तुम्हे जेनी ?" ग्लेडिशेव ने एकाएक नाराज होकर कहा, "यह बात ·किसलिये कह रही हो ? यह नाटक किस तरह का रचा जा रहा है भगवान् कसम मैं अभी अपने कपडे पहनता और यहाँ से चला जाता हू."

"जरा ठहरो, जरा ठहरो कोल्या एक, बस एक, आखिरी, बिल्कुल आखिरी सवाल और ?"

"अँह ! क्या-आ ?" कोल्या ने अनमने भाव से कहा, "है भी कुछ ?"

"और कभी तुमने सोचा है सोचा, क्या कल्पना तक मे लिया है या अभी इसी घडी ख्याल में लाओ कि·· तुम्हारा घर एकाएक बरबाद हो गया है, समझो तुम्हारे बाप दीवालिया हो गये है और तुम्हे नकल कर-करके अपनी रोटी जुटानी पडती है, या समझो कि फेरी करते हो या खोमचा लगाते हो. और तुम्हारी बहन मदद के लिए इधर-उधर जाती है

और हमारी सबकी तरह हां, तुम्हारी अपनी बहन कोई ''उसे फुसला लेता है और जूठन की तरह फिर वह इस हाथ से उस हाथ चलाई जाती है'' तब तुम क्या कहोगे ?"

"बन्द कर'' यह नहीं हो सकता." कोल्या बीच में ही झपटकर बोला, "बहुत हुआ – अब मैं चला."

"जाओ, जाओ तुम्हारी कृपा हो." वह आईने के पास मिठाई वाले छोटे-से बक्स मे दस का नोट पड़ा है. वह तुम्हारे लिये है, ले लो. मुझे यों भी उन रुपयों की जरूरत नहीं है. जाके उनसे अपनी अम्मी के लिए खूबसूरत सा एक पानदान लेना. या कोई छोटी बहन हो तो एक सुन्दर सी गुडिया उसके लिये लेना. लेकर देना और कहना कि एक दुखियारी ने दिये है, अपनी यादगार के बतौर, और वह मर गई है. जाओ मेरे भोले राजा !"

कोल्या की भवे सिमट आई. बदन उसका गठा हुआ कसरती था. नाराजी मे एक साथ पलंग से वह उछलकर उठा. ऐसे कि स्प्रिंग हो और पलग उसे छू तक न गया हो. अब वह पलग के पास पड़ी तिपाई पर सीधा खड़ा था. नग्न और प्रफुल्ल ! यौवन से दीप्त गठीले उसके शरीर का ऐश्वर्य उसकी आँखों में कौंध गया. जेनी धीमे से, प्यार से मनुहार से बोली, "कोल्या कोलेश्का."

पुकार पर वह मुड़ा. मानों हवा हो. उसने खींचकर एक भरी सांस ली. जीवन में इससे पहले उसने कभी वह न देखा था जो अब देखा. यहां तक कि तस्वीरों में भी नहीं. देखा कि जेनी की आँखो में स्नेह का, करुणा का, विषाद का एक ऐसा भाव है कि कह नही सकता. मूक भाव से मानो मीठी झिड़की वे आँखे उसे दे रही हैं. उनमें मानों पानी डबडबा आया है. वह पलग के किनारे आ बैठा और एक आवेग में उसने उसको नंगी बांहों को आलिंगन में भर लिया.

प्यार से भीगा-सा वह बोला, "जेनी, तो आओ झगड़ा न करो."

और जेनी उससे लिपट गई. बाहुओं को उसने उसके गले में डाला और अपना सिर उसके सीने में झुका लिया कई सेकेण्ड वह ऐसे ही थिर

और चुपचाप बने रहे.

"कोल्या !" जेनी ने एकाएक जड़वत् पूछा, "कभी तुम्हे ऐसे छूत लगने का डर नहीं है.

कोल्या को सुनकर सिहरन-सी हुई. एक सर्द बीभत्स भय उसके अन्दर कांपता-सा उठा और उसके सारे गात में व्याप गया. एकाएक उसने कोई उत्तर नहीं दिया. फिर बोला, "हाँ, यह तो भयंकर बात है. भगवान् न करे, बड़ी भयंकर ! लेकिन मैं तो एक तुम्हारे पास आता हूँ, सिर्फ़ तुम्हारे. और तुम जरूर पहले से कह देती."

"हां, मैं तुमको कह देती." वह ऐसे बोली जैसे सोच रही हो और फिर तेजी के साथ मानो कि अपने शब्दों के भाव को उसने तोल और जांच लिया है, निश्चय के से स्वर में उसने कहा, "हां जरूर, मैं तुम्हे पहले बता देती. पर क्या तुमने कभी पहले सुना नहीं कि आतशक बीमारी क्या चीज होती है ?"

"हां, आं, सुना तो है चेहरे से नाक गल कर··"

' नही, कोल्या नाक ही नहीं. आदमी सारा-का-सारा गलने लगता है. 'उसकी हड्डियां, पुट्ठे, सब अवयव और उसका दिमाग सब सड़ने लगने हैं. कुछ डॉक्टर बेकार डींग हांकते हैं कि बीमारी यह अच्छी हो सकती है फिजूल की बात है: पाकर तुम अच्छे कभी हो नहीं सकते. फिर तो दस बीस तीस बरस तक सड़ते ही जाना होता है. और किसी क्षण फालिज आकर गिर सकना है. ऐसे कि कुल-का-कुल दाया भाग चेहरा, बांह और दाइं टांग सब बेकाम लटके रह जा सकते हैं. तब क्या उसको कोई जीता आदमी कहेगा. वह आदमी होता है न कुछ. ऊपर से आदमी अन्दर मे लाश. ज्यादातर का ऐसे में सिर फिर जाता है और वे पागल सिड़ी हो जाते हैं और हर कोई जानता है— कि हर आदमी कि जिसे मर्ज छू जाए···कि वह जब खाता है, पीता है, प्यार में चूमता है यहां तक कि सिर्फ सीधी तरह सांस लेता है, तो भी वह कह नहीं सकते कि वह अपने आस-पास लोगों को रोग नहीं देता. अपने सगों को, बहन को, बीवी को, बेटे को···आतशक वालों के बच्चे पूरे नहीं होते खोष होते हैं वे जाहिल,

अपंग, क्षयी और बेकार ? सुना कोल्या उस मर्ज का मतलब यह है और अब…"

जेनी कहते-कहते एक साथ अलग होकर सीधी हो आई. उसने उसके नंगे कंधे अपने हाथों में जोर से लेकर कोल्या का मुह अपनी ओर फेरा. जेनी की विलक्षण आँखों में भरे गम्भीर विषाद की झलक से कोल्या अन्धा-सा हो आया. उसने सुना जेनी कह रही है, "अब सुनो कोल्या, मैं तुम्हें कहती हूँ कि इधर एक महीने के ऊपर से मैं इस गन्द से गन्दी हूँ. यही वजह है कि तुम्हें अपना बोसा भी नहीं लेने दिया…"

ग्लेडिशेव सुनकर कुछ बिगड़ा. वह कुछ समझ न सका. डरा और नाराज-सा वह बोला, "तुम तो मज़ाक कर रही हो · जान-बूझकर मुझे तंग करने के लिये यह सब कर रही हो."

"मजाक, तंग यह देखो, इधर आओ." उसने उसे मज़बूरन पलंग से उठाकर सीधा खड़ा किया. फिर दियासलाई सुलगाई और बोली, "अब जो दिखा रही हूँ जरा गौर से देखना…"

कसकर अपना मुह उसने भरपूर खोला और दियासलाई उसके सामने ले ली कि भीतर कण तक दिखाई दे. कोल्या ने देखा और देखकर सहमा-सा रह गया. पीछे ठिठक आया.

"देखना वह सफ़ेद दाग. यह आतशक है, कोल्या तुम समझते हो ? आतशक अपनी पूरी तेजी और खतरनाक स्टेज पर है लो अब कपड़े पहन लो और भगवान् की दुआ करो."

उसने सुना. मुड़कर वह जेनी को नहीं देख सका. चुपचाप और जल्दी के साथ उठकर कपड़े पहनने लगा. कभी इसमें सही टांग डालना भूल जाता और एकाध बार कमीज में गलत बाँह फंस जाती. उसके हाथ काँप रहे थे और जबड़े ऐसे हिल रहे थे कि नीचे के दाँत ऊपर से बजकर आवाज़ दे आते और उस समय सिर झुकाये जेनी कह रही थी. "कोल्या सुनो, तुम्हारी किस्मत अच्छी है कि तुम्हारे लिये मैं ही थी. दूसरी कोई तुम्हें छोड़ती नहीं. सुनते हो, हम जिनकी पहले तुम लोग लाज हरते हो, फिर जिन्हें घर से निकाल बाहर करते हो पीछे दो-दो रुपये रात के देकर जिन्हें

तुम इस्तेमाल करते हो, हम हमेशा कहते-कहते एक साथ उसने अपना सिर ऊँचा किया, "याद रखो हम हमेशा बातें नफ़रत करते है और तुम लोगों के लिये जरा भी तरस नहीं लाते."

कोल्या अभी कपड़े पूरे पहन न पाया था. सुनकर वे उसके हाथ से छूट गये. वह जेनी के पास पलंग पर आ बैठा. और मुंह को हाथों मे ढक कर रो उठा. यह रोना सच्चा था, जैसे बालक रोया करते हैं.

फुसफुसाकर उसने कहा, 'भगवान् यह सच है, एकदम सच है···सचमुच क्या खराब वाहियात बात है···हम, हमारे यहाँ भी यह हुआ था एक काम करने वाली थी न्यूशा·· उसे नीता भी हम कहने लगे थे, श्रीमती नीता·· सुन्दर जवान-सी लड़की थी—मेरे बड़े भाई उससे हो गये और साथ रहने लगे·· अफसर थे·· बाहर फ़ौज की ड्यूटी पर ग्ये तो पीछे पता चला कि उसे महीने चढे हैं और माँ ने उसे दरवाजा दिखाया·· बिल्कुल एकदम निकाल बाहर किया·· जैसे झाड़ने का लीतड़ा या पुरानी घिसी कोई बुहारी हो·· जाने अब वह कहाँ है और नीता·· वह भी · एक काम वाली थी कि · "

उस समय,जेनी, यह जेनी जो पूरी तरह कपड़े भी पहने न थी, कलहन, कर्कशा, नास्तिक जेनी बिस्तर से उठी. ग्लेडिशेव के सामने खड़ी और सौम्य स्थिर होकर उसने आहिस्ता से उसके ऊपर क्रूस का चिन्ह अंकित किया और गहरे कृतज्ञ प्रेम के भाव से कहा, "भगवान तुम्हें जिलाएँ और बड़ी आयु दे, मेरे भाई ! ' कहने के साथ वह झपटकर दरवाजे पर गई. आधा खोला और पुकारकर कहा, "अजी सुनना."

संरक्षिका आई और जेनी ने उसे कहा, "अजी देखती क्या हो. जरा एक काम करो. देखो निमिरा और मनका में से कोई खाली है, देखना कौन खाली है और जो खाली हो उसे यहाँ भेज दो."

कोल्या पीछे से उसकी पीठ पर कुछ बुदबुदाया. लेकिन जेनी ने जानबूझकर उसको नहीं सुना.

"और देखना बीवीजी, कैसी तुम मेहरबान हो. जरा जल्दी करके उसे भेज देना."

"अभी लो, अभी चुटकी भर मे."

"जेनी, क्यों, वह क्यों करती हो ?" ग्लेडिशेव ने गहरी पीड़ा के भाव मे कहा, "भला किसलिये ? क्या यह मुमकिन है कि तुम उस बारे में कुछ कहना चाहती हो ?·· "

"तुमसे मतलब, जरा ठहरो तो·· थोडे रुको मैं कोई ऐसा काम नहीं करूंगी जो तुम्हे नागवार हो "

मिनट भर बाद नन्ही-सी गोरी मनका वहाँ आ पहुंची. सादा जान बूझकर मामूली-सा लिबास था जैसे हाई स्कूल मे पढती लड़की हो.

"तुमने मुझे बुलाया था जेनी, क्या बात है ? आप लोग झगड़ तो नहीं पड़े."

"नहीं मनका हम झगड़े नहीं लेकिन मेरा सिर बहुत दुखता है. शान्त भाव मे उत्तर देती हुई जेनी ने कहा, 'और उस कारण ये हमारे दोस्त मुझसे ठीक राजी नहीं है और मै इनका मन नही रख पा रही हूँ. जरा मदद करो मनका कैसी बहन हो ! मेरी जगह जरा तुम इनके पास रहो. और इन्हे खुश करो."

"बस-बस जेनी, हद न करो प्रिय !" सच्ची पीड़ा के स्वर से कोल्या ने वर्जन करते हुए कहा, "मै सब समझ गया सब. अभी जरूरी नही है··· मुझे देखो एकदम खत्म न करो···"

"मै नही समझी कि आखिर माजरा क्या है, हुआ क्या ?" खुशदिल मनका ने हथेलियां फैलाकर कहा, "अजी और नही तो इस गरीबिनी की कुछ खातिरदारी भी न कीजियेगा."

"अच्छा-अच्छा, चल तू चल." जेनी ने आहिस्ता से उसे हटाते हुए कहा, "चल मैं अभी आती हूं. कुछ नही यह एक मजाक था."

अब दोनों कपड़े पहन चुके थे. वे कमरे और बाहर के बरामदे के बीच खुले दरवाजे मे आमने-सामने देर तक खडे रहे. कोई उनमे बोला नहीं, आंखे गहरे विषाद और गहरी सहानुभूति से एक दूसरे को देखती रही. इस क्षण कोल्या ने समझा तो नहीं पर अनुभव किया कि उसके अभ्यन्तर मे वह गहरा विप्लव मचा है और कुछ वह उपजा है जो उसके तमाम जीवन पर

छाये रहे और उसे प्रभावित रखे.

उस समय उसने जोर से जेनी का हाथ दबाया और कहा, "क्षमा, क्या तुम मुझे क्षमा करोगी जेनी.…"

"हाँ, मेरे प्रिय !…हाँ, मेरे प्यारे !… हाँ, मेरे राजा, हाँ,"

कहते-कहते जैसे माँ हो. उसने धीमे से प्यार से उसके सर को नीचे लिया जिसमें बारीक कटे नन्हे बाल थे और धीमी-धीमी थपकियों से दुलराया फिर हलके से उसे बरामदे की ओर धकेल दिया. पीछे से दरवाजे को अधखुला रखकर बोली, "अब तुम कहाँ जाओगे ?"

"बस साथी को लेकर बाहर हुआ कि सीधा घर जाऊँगा."

"अच्छा, जैसा तुम ठीक समझो…ईश्वर, भगवान् की असीस तुम्हें रहेगी."

"माफ करना…मुझे माफ करना. "कोल्या ने उसकी ओर हाथ फैलाकर फिर अपनी यह प्रार्थना दुहराई.

"कह चुकी हूँ, मेरे राजा कि मैंने माफ किया… पर तुम भी मुझे माफ करना.…क्योंकि अब फिर हमारा मिलना नहीं होगा."

और दरवाजा बन्द करने पर वह अकेली उनके पीछे वहाँ रह गई, एक और अकेली.

बरामदे में आकर ग्लेडिशेव ठिठक रहा. उसे मालूम न था कि पेट्रव तिमिरा के साथ किस कमरे में गया है और कैसे उसका पता चले. लेकिन उस समय वहाँ की संरक्षिका जकिया बराबर से निकली जा रही थी. पूछने पर मदद दी. वह चिन्तित घबराई झपटी-सी जाती थी कि चिढ़ी-सी बोली, "ओह ! मेरी जाने बला. वह बाँये तीसरा दरवाजा उसका…"

कोल्या बताये दरवाजे तक बढ़ कर गया और ठकठकाया. अन्दर कमरे में कुछ फुसफुसाहट और हड़बड़ाहट की आवाज आई. फिर उसने ठकठकाया कहा, "केकीराम खोलो. यह मैं हूँ समरगेन."

विद्यार्थी अकसर ऐसे ठिकानों पर आते वक्त अपने नाम अदल-बदल लिया करते थे—और उन्हीं से एक-दूसरे को पुकारते थे. यह बात नहीं कि ये अधिकारियों की चौकसी से बचने का कोई षडयन्त्र हो या कि परिवार

के किसी जान पहचान वाले के आकस्मिक संयोग से बचने की तदबीर हो. बल्कि यह एक तरह का खेल था जिसका अपना हिसाब था. इसमें भेद रहता था मानो दूसरे को ओढ़कर हम अपने में खुद रह ही न जाते. आगे से ऐसा चला आता था और कथाएँ हैं जहाँ लोग बड़े-बड़े और ऊँचे ऊँचे नाम रूप बदलकर कहीं पहुँचते और कुछ कह जाते हैं.

"नहीं, अभी अन्दर नहीं आ सकते." द्वार के पीछे से तिमिरा की आवाज सुनाई दी. हम खाली नहीं हैं. अन्दर आने के लिये अभी ठहरो."

लेकिन तभी पैंद्रव की भारी-भारी आवाज़ बीच में काटकर बोली, 'क्या बेहूदगी है. यह झूठ बोल रही है. आ जाओ सब ठीक है."

कोल्या ने दरवाजा खोला, पैंद्रव कपड़े पहने कुर्सी पर बैठा था. लेकिन सारा उसका चेहरा लाल था मानो सोच में हो. ओंठ बच्चे की मानिन्द आगे निकले हुए आँखे धरती से लगी.

"अजी, मैं कहती हूँ कि आप खासे अपने दोस्त को साथ लाये. वाह, खूब ! तिमिरा ने ताने और तन्ज से कहा, "मैं तो समझती थी कि मर्द होंगे और कुछ इरादा लेकर आये होंगे पर अन्दर से ये निकले जैसे एक नन्ही छोकरी हो. जनाब को, सुनिये, अपनी इज्ज़त, अपनी पवित्रता जाने का खयाल है. सच कहूँ, क्या नायाब कमाल दोस्त आपके हैं कि— लो रुपये दो रुपये मेज पर खनकाकर फेंक दिये, "यह जाकर देना किसी ग़रीब नौकरानी को या लूली लंगड़ी को या बचा कर रख लेना कि लेके इनकी कुछ मिठाई चूस सको. सड़ी. गावदी."

'तो तुम गाली क्यों दे रही हो ?" पैंद्रव ने बिना आँख उठाये अपनी जगह से बडबड़ाते हुए कहा, "मैं तो तुम्हें कोई कोस नहीं रहा तो तुम्हीं क्यों पहले आगे आकर यह मुझे पूरा हक़ है कि अपनी मर्ज़ी पर रहूँ और जो न चाहूँ न करूँ. लेकिन कुछ वक्त तो तुम्हारा लिया है और साथ रही हो इससे ये ले लो. लेकिन दबाव में नहीं सह सकता. और तुम देखो ग्लेडिशेव—यानि हाँ, समरसेन यह मुनासिब बात तो नहीं है. मैं समझता था कि इन्हें सलीका होगा, हया होगी. लेकिन सारे वक्त चूमने चामने की कोशिश में ही रही और खुदा जाने क्या छेड़छाड़..."

तिमिरा तैश के बावजूद ठहाके के साथ हँस पड़ी, "हो तुम असल पूरे गावदी. खैर लो नाराज़ न हो— पैसा मैं रखे लेती हूँ. लेकिन ख्याल रखना कि रात होने दो और पीछे तुम पछताओगे. फिर खुद ही रोओगे. अच्छा-अच्छा, नाराज़ न हो, तने न रहो. लो, दोस्ती का हाथ बढ़ाओ. यह लो मेरा हाथ भी. लाओ इस पर अपना हाथ रखो."

"आओ चलें, केकीराम." ग्लेडिशेव ने कहा "खुदा हाफज, तिमिरा."

तिमिरा ने रुपये अपने मोजों के अंदर डाल लिये जैसे कि इन बाज़ार वालियों की अकसर आदत होती है. और फिर उन दोनों को छोडने राह तक साथ चली आई.

बरामदे से गुजरते वक्त ग्लेडिशेव को मालूम हुआ कि हवा में कुछ है. हॉल में एक अजब तरह का तनाव और खामोशी थी. कदमों की आवाज आ रही थी और वे तेजी से इधर-उधर जाते मालूम होते थे. दबी, धीमी, जल्दी में की जाती फुसफुसाहटों की आवाज़ भी आई.

अभी जहाँ उस बड़ी-सी तस्वीर के नीचे वे बैठे थे. वहाँ अन्ना मरकानी के ठिकाने की सब रहने वालियां और कुछ दूसरे लोग भी वहां इकट्ठे जमा थे. और घने होकर एक गाँठ की मानिन्द किसी बिन्दु पर झुके खड़े थे. उत्सुकता में कोल्या बढ़कर गया और जैसे-तैसे राह बनाता हुआ बीच मे पहुचकर उसने जो देखा तो देखता क्या है कि फर्श पर मानो करवट में गबदू पड़ा हुआ है. देह जैसे अकड़ी और तनी है. चेहरा सारा नीला बल्कि काला है. वह अचल और थिर! वहाँ पड़ा वह अजब, भयीत्स लग रहा था. सिमटी दुबली छोटी-सी टांगे. नीचे अजब ढंग से मुड़ी थी. एक बांह सीने के के नीचे दबी थी. दूसरी अलग-सी फिकी पड़ी थी.

घुर्राये हुये ग्लेडिशेव ने पूछा, "क्या बात है. क्या हुआ है उसे ?"

जवाब उसे नूरी ने दिया, जल्दी-जल्दी झटके देकर. फुसफुाहट में उसने बताया, "गबदू हाल ही यहा पहुचा था·· आके उसने मनका को मिठाई दी और फिर हम से पहेलियाँ बुझानी शुरू कर दी..."एक नार तरुवर से उतरी, सर पर वाके पांव" हम अते हते के लिये उसको देखने

लगे···उसने कहा, "ऐसी नार कुनार को मैं ना देखन जाऊँ"···हम बूझने में लगी पर न कुछ न सूझा. हमें हारा देख उसने कहा, "कहा तो,—मैना फिर एकाएक वह जोर से हस उठा. हंसते-हंसते खांसी आई और देखते क्या हैं कि यह तो गिरने को हो रहा है फिर—देखते-देखते वह धड़ाम धरती पर आ रहा·· अचल कि पत्थर·· पुलिस को बुलाया·· राम न जाने क्या हो? मुझे तो लाशो से डर लगता है.

'ठहरो,' ग्लेडिव ने इसे रोककर कहा, माथे मैं उसे देखना चाहिये. शायद अभी जीता हो?" कहकर साथ धकेलकर उसने आगे बढ़ने की कोशिश की. लेकिन तभी साइमन की उगलियों ने उसे कोहनी के ऊपर वहाँ से ··· ·· पजों की तरह से जकड़ा और पीछे खींच लिया.

"कुछ नहीं, कोई मुआयना है कि बढे आ रहे हो." साइमन ने हुक-मताना ढग से कहा, 'जाओ, नौजवानो, यहाँ से निकल जाओ. तुम लोगों के लिये यह जगह नही है पुलिस आयेगी और गवाही में तुम्हे खींच लेगी. तब पता चलेगा जब खिचे फिरोगे, आटे दाल का भाव पता लग जायेग.. आप जनाव, चले है फौजी हाईस्कूल से. लिहाज आता नही होता कि यहाँ आकर मरने है अच्छा है मही सलामत हो तब तक यहां से निकल जाओ'

वह उन्हें वाहर के दरवाजे तक अपने साथ ले गया. ओवरकोट उनके उन्हे हाथो थमाये और भी झिडकी से कहा, "लीजिये, सब जाइये भाग जाइए·· खूब रही! आप ऐसे कि अब किसी को पता भी न हो कि आये थे और देखो अब फिर इधर का रुख किया तो मैं हूँ कि तुम्हे घुसने नही दूगा तुम समझदार लोग ही हो ना? तुम्ही ने इस बूढे खूसट को निकाल कर शराव के लिये रुपये दिये- उधर पीके अब वह धुत्-चित् खड़ा है कि नही"

ग्लेडिशेव बिगड़कर मानो झपटता सा बोला, "एंह! वड़े हाकिम बन रहे हो तुम?"

शुरू करके साइमन अब एकाएक चीखने लगा. उसकी काली आंखें जिनपर न पलकें थी न भवे, ऐसी खूखार हो आई कि नौजवान देखकर

सहमे से पीछे ठिठक रहे, "तुम्हें नाक पर एक दूंगा कि याद करना भूल जाओगे. होश न रहेगा फिर बच्चू ! निकल जाओ इसलिये. नहीं तो भेजा तुम्हारा खिल जायेगा."

दोनों सीढ़ियां उतरते हुए चले गये.

इसी वक्त दो आदमी उन्ही सीढ़ियों से मकान में दाखिल हो रहे थे. सिर पर दोनों के रूएंदार टोपियां थीं. एक नीला कमीज पहने था और दूसरा लाल. सलवार बाहर को निकली हुई. जाकेट के दोनों पट खुले हुए साफ था कि साईमन के इस काम में वे हमपेशा साथी होंगे.

"क्या-आ" एक ने नीचे से ही साइमन को मुखातिब करके ठट्ठे में कहा, "तो क्यों मियां गबदू गोल हो गये ?"

"वहां खात्मा ही समझो." साइमन ने जबाब दिया, "हमें इस बीच यारो उसे बाहर गली-वली में पटक देना चाहिए. नहीं तो घर में प्रेत आना शुरू हो जाएगे मरे कम्बख्त ! और वे भी समझें कि पी-पा के गाफिल रहा होगा कि बीच सड़क में दम तोड़ बैठा."

"कहीं तुमने तो···हां, मैंने कहा कि तुमने ही तो उसका काम तमाम नहीं किया ?"

"अंह ! छोड़ो., तुम भी कहां की हांकते हो. जरा कही कुछ सबब भी होता. वह तो एक मासूम, बेचारा आदमी था. जैसे भेड़ का मेमना हो. मालूम होता है उसका वक्त ही आ गया था."

"तो मरने के लिए उसे कहीं कोई ठहर ठांव नही मिला. इससे भी बदतर दूसरी भला क्या जगह होगी." लाल कमीजवाले ने कहा.

इस पर नीली कमीज ने कहा, "सही कहते हो दोस्त ! हंमता जिया और रिस्ता मरा. अंह आओ चलो यार क्यों ?"

दोनों नवजवान वहां से सरपट भागे. क्योंकि उस अंधेरे में फर्श पर पड़े मियां गबदू की अकड़ी काया जिसका चेहरा नीला पड़ा था बेहद डरावनी उन्हें लगी. मौत की ऐसी नंगी मूरत, खासकर रात के उस वक्त के धुंधले अंधेरे में पहली बार देखकर, किस उगती उमर के जवान में होल पैदा न कर देगी.

ग्लेडिशेव जब तुम बड़े हो जाओगे. कुनवा होगा और तुम्हारे बाल बच्चे होंगे तब क्या तुम इस स्थान को याद करोगे और इस रात को कि जब तुमने मौत को देखा था और क्या अपने बेटों से इसका जिक्र करोगे ?

४

सबेरे अंधेरे से नन्ही बूंदों की झड़ी सी लगी. न ये थमती थी न खुल कर बरसती ही थी. पवनजय नदी के किनारे नाव से तरबूट उतारने में लगा था. कारखाने में जहाँ उसने इसी गरमी के शुरू से काम किया और ठिकाना जमाना चाहा था. वहाँ भाग्य ने उसका साथ न दिया. हफ्ता भर हुआ होगा कि उसका झगड़ा हो गया. वहाँ का फोरमैन मजदूरों के साथ बेहद सख्ती से बर्ताव करता था. मानों आदमी क्या वे जानवर है और उसके साथ इनकी करीब हाथापाई की ही नौबत आ गई. कुल महीने भर पवनजय ने ज्यों त्यों दिन बिताये और पेट चलाये गया. रहता जहाँ था गली कूँचों के पिछवाड़े में और गूज नाम के अखबार के सम्पादकीय दफ्तर में जाकर इधर-उधर की वारदातों की खबरे समय-समय पर दिया करता था या अदालत के जहाँ इंसाफ़ बँटता है चुटकुले और किस्से चटपटे बनाकर ले जाया करता. लेकिन ये सख्त अखबारी काम देर तक उसे रुची नहीं. यों तमाशा सा था लेकिन बड़ा थका देता था. वह खुली हवा में काम करना चाहने लगा जिसमें बदन को कसरत मिले और लगे कि कुछ किया है. लगा कि कुछ ऐसा करना चाहिये कि जिसमें हौसला काम आये और कुछ खतरा हो. जिसमें आराम तो हो ही नहीं. उल्टे जिसमें कस लगे, उसे चाह हो आई कुछ ऐसी जिन्दगी की जिसमें लापरवाही हो. चाहे वह आवारागर्दी ही हो लेकिन जहाँ आदमी पर बाहरी कोई स्थिति जमकर न बैठ सके. जहाँ उसे खुद कल का पता न हो कि कल उसके साथ क्या होगा या क्या नहीं हो जाएगा इसलिये मौसम आने पर जब नदी से नावों पर लदकर खरबूजे और तरबूज की पहली किश्ती किनारे आकर लगी तो वह बढ़कर उन्हें उतारने वाली मजूरों की एक टोली में नाम लिखाकर शामिल हो गया

इन मजूरों से उसका पारसाल से ही कुछ मेलजोल हो गया था. वे भी उसके स्वभाव से खुश थे. उसकी खुली तबीयत और गिनती हिसाब की होशियारी और काबलियत की उन पर धाक थी. वे मजूर उसे खूब चाहने लगे थे.

यह काम बड़ी तरतीब और तरीके से चलता था. एक-एक बजने पर पाँच-पाँच आदमियों की चार टोलियाँ काम करती थी. पहली नम्बर वाली तरबूजों को लेकर पानी में खडी दूसरी टोली के आदमियो को देती. दूसरी सूखे किनारे पर खड़े आदमियो के हाथ उन्हे थमाती. तीसरी पाँत चौथी वालों को एक-एक कर लपका देती और अन्त में पाँचवी टोली गाड़ी पर सवार आदमियो की थी. वे तरबूज़ लपकते और गाड़ियो मे चिनचिनकर रखते जाते. वे तरबूज़ गहरे हरे या कुछ सफ़ेद या धारीवाले कतारो मे खूबसूरत तरतीब से सज जाते. काम मजे का और साफ़ था और तेज़ी से चल रहा था. अगर टोलियाँ सधी हो तो देखकर खुशी होती थी इस हाथ से से उस हाथ वे फिकते और लपके जाते तरबूज़ ऐसी सफ़ाई और अचूकपन के साथ कि मानो वे सरकस के सधे खिलाड़ी हों. तरबूज बँधी कतार में ऐसे सिलसिले से तैरते से चले जाते कि हाथों की फुरती देखते ही बनती थी. आखिर काम था और जल्दी ही होना था. और देर की गुंजायश नहीं थी. यह हर किसी का काम न था. नये सिखतड़ उसकी ताल और लय को सँभाल न सकते थे. काम मानो सिर्फ प्रयोजन का न था कला का था. तरबूज़ को हाथों झेल लेना और फेंक देना और बात थी पर यह चीज़ कुछ और थी. तरबूज़ मानो उन्हें पदार्थ न था जीता जागता जीव था.

पवनंजय को पिछले साल का अपना अनुभव याद आया. याद आया कि जब आदमियों की कड़ी में अपनी जगह पर वह धीमा पड़ गया और ज़रा देखता रह गया था कि कैसी बेभाव की तब उसे पड़ी थी, उस वक्त पर सही लपक न सकने से एक-पर-एक दो तरबूज़ ज़मीन पर गिर कर टूटकर खिल गये थे और इस हड़बड़ी में हाथ का तीसरा भी उससे छूटकर गिर पड़ा था. तब कैसी उसकी गत बनी थी, तब का मज़ाक और गालियाँ सौगन्ध उसे याद आई. पहली बार तो उसके साथ ज़रा नरमी बरती गई थी लेकिन दूसरा दिन होने पर हर उसकी चूक के लिये उसके उजरत में से

हर तरबूज चार पैसे काट लिये जाते. जब यह घटना घटी और एक-पर-एक लगातार तीन तरबूज़ पानी हो रहे तो उसको बिना कुछ सुने पाँत से निकालने की ही नौबत आ गई. उसे अब तक याद था कि कैसे एकाएक उसमें गुस्सा चढ़ आया था. उसने मन-ही-मन सोचा था कि अच्छा. यह बात है, तो लो तुम भी देखो कम्बख्तो ! आये बडे तुम तरबूज़वाले. ऐसा है तो यही सही···लो देखो·· इस तैश से उल्टे उसे मदद मिली. वह लापरवाही से आधे तरबूजों को इधर से लपकता और फिर उधर फेंक देता. मानो कि जाने उसकी बला. उसे देखकर बडा अचरज हुआ कि ठीक यही लापरवाही चाहिए थी. देखा कि वह काम के सुर-ताल की लय से एक हो गया है. वह अपने-आप होता जाता है. फुर्ती आ गई है. पुट्ठे आप ही आप चलते और उसकी निगाह और बुद्धि और हाथ में एकतानता आ गई है. उसने समझ लिया कि महत्व की बात यह सोचना नही है कि तरबूज कीमती हैं. उधर से बेध्यान होते ही सब मजे और तरतीब से चलने लगा. यह हुनर उसे पूरी तरह सध गया तो एक अरसे तक इस काम में उसका बड़ा जी लगा. खासी मजे की कसरत हो जाती थी और तबीयत खुश रहती थी. पर वह चीज भी बीत गई. आख़िर वह वक्त आ गया जब वह मानो एक मशीन में बेजान पुरजा हो यहाँ से वहाँ तक खड़े आदमियों की जंजीर में वह एक कडी हो उसमें कुछ हिर्स न हो, अपनापन न हो, और उनके यन्त्र से हाथों में से अनगिनत तरबूज़ यहाँ से वहाँ फिकते जाते.

अब वह नम्बर दो था. कमर झुकाये, ऊपर बिना देखे वह भारी सही लोचदार तरबूज़ों को अपने दोनों हाथों में रोकता फिर उसे बाई ओर लेता और उसी विध बिना देखे आगे की तरफ़ फेंक बढ़ आता. इसमें कमर ज़रा ऊपर को सतर होती कि तभी आने दूसरे तरबूज़ के लिये वह कमरा फिर झुक जाती. इस बीच वह ज़रा कनखियों से ही आस-पास के सीमित अवकाश को देख पाता. उसके कानों में लपके, और फेंके जाते तरबूज़ों की आदमियों के हाथों से टकराने की छप-छप ध्वनि भरती रहती छप-छप—छप-छप ! और रह-रहकर उनके कमर झुकाकर फिर साँस रोककर तरबूज़ थामने और फिर तुरंत कमर सीधी करने तक रुकी साँस जोर से बाहर फेंकने

की आवाज होती, ही-ही !

यह हाथ का काम खासे नफे का था. उनकी टोली में कोई चालीस जन थे. काम बहुत था और फसल इफरात की हुई थी जिससे रोजनदारी पर नहीं बल्कि ठेके पर भुगतान हो रहा था. जितना कर दे उतना पायें. फी गाड़ी भाव ठहरा था. दल के मुखिया का नाम था जबरैलसिंह. भारीडोल-डोल और रोबदाब का आदमी था और मालिक था. एक जवान जो अभी नया और नातजुर्बेकार मालूम होता था. जबरैलसिंह ने चालाकी से फाँस कर उससे कसकर भाव ठहरा लिये थे. मालिक को पीछे खयाल हुआ कि दरें तो ज्यादा हैं और इक़रार की शर्तों को उसने बदलना चाहा. लेकिन तजुर्बेकार किसानों ने बीच में पड़कर वक्त पर उसे समझा लिया. सीधे तौर पर कहा कि तुम्हें मरना है क्या. ज़िद न करो, नहीं तो यह मजूरे तुम्हें मार डालेंगे. सो भाग्य की इस जुगत से दल के हर आदमी को रोज की मजूरी के दिन मे चार रुपये तक पड जाते थे. सब अतिरिक्त लगन से काम करते बल्कि कस के और फुर्ती के साथ अगर कोई औजार होता जिससे उनमें से हरेक की मेहनत को नाप सकना मुमकिन होता तो जो शक्ति वहां पैदा हुई निश्चय ही बहुत बडे इंजिन की ताक़त से इकाई दहाई के नाते बढ़ गई होती.

मगर जबरैलसिंह को इतने से भी तसल्ली न थी वह और तेजी चाहता और तरह-तरह से मजूरों को जी तोड़ मेहनत के लिये उकसाता. अन्दर से उसके व्यवसाय की महत्त्वाकांक्षा बोल रही थी. वह दल मे से हर एक की मजूरी को फी कस पांच रुपया तक पहुँचाना चाहता था. और बजरे के तट से खुश्की पर खड़ी गाड़ियों तक पहुँचाना चाहता था. और बजरे के तट से खुश्की पर खडी गाड़ियों तक वे तरबूज खुशी मे फुदकते से एक आँख की झपक में पहुँच जाते. लड़ी-सी मे पिरोये घूमते चकराते उन थिरकते तरबूजों का रूप दीखता. कभी सफेद, कभी गीला हरा और अभ्यस्त हथेलियों पर उनके लोके जाने की छप-छप आहट सुनाई देती.

कि तभी स्टीमर ने एक सीटी दी, फिर दूसरी, तीसरी. मानो यहाँ-वहाँ उस सीटी की गूँज-गूँज गई. सैंकड़ों कण्ठों की आवाजें मिलकर एक

पुकार बन आई. समवेत, जैसे वह एक जोर की दहाड़ हो.

उसमे व्यंजन न था. मानो सिर्फ स्वर था. अनेक स्वर फिर भी एक गूज जबरैलसिह के कण्ठ से निकले सुर को ही सहस्रों ने उठाकर एक रव दे दिया था.

बस अब यह उठा फेंक आखिरी थी. काम उसी दम बन्द हो गया. पवनंजय ने राहत की सांस ली कमर सीधी करके उसे पीछे की ओर मोड़ा. सूज आई बाहो को आगे फैलाया. उसे अपने से खुशी थी. उसे अच्छा लग रहा था कि अब पुट्ठो मे उसे वैसा दर्द नही होता जैसा कि पहले-पहल हुआ था। बल्कि जो दर्द है वह प्यारा है कुछ मुद्दत काम छोड रखकर फिर उसमे हाथ लगाने से देह पीर दे आती है। कल तक जब वह सवेरे ही सीटी बजने पर अपने डेरे से उठकर काम पर पहुँचता और उसमे कन्धा देता तो थोडी ही देर बाद उसके सब अवयव कैसे दुखने लगते थे तब तो लगता था कि अब तो कोई करिश्मा ही उठाकर उससे काम करा सकता है नही तो वह गया, गया.

"जाओ जरा खा पीकर आराम करो" मुखिया ने मानो धमकाते हुए यह कहा, लोग काम मे इतने लीन हो गये थे. आखिर काम छोड़कर एक नदी किनारे गये घुटनों के बल या पूरे पट लेटकर, झुक कर नदी के पानी से उछाल-उछालकर उन्होने हाथ धोये, मुँह धोया, ऐसे जरा ठंडे हुए फिर बरावर जो हरी घास का टुकड़ा था वहाँ सब जने फैलकर बैठे, और अपना-अपना खाना निकाल मिल बाँटकर खाने लगे. बीच मे सबके दस एक काले पके तरबूज थे. शुरू होने की बात थी कि गियासी ने जिसे लोग गोलन्दाज कहते थे बोतल निकाली और देखते-देखते आधी चढ़ा गया! गाता जाता था,

निकालो, निकालो, हो जो हो.
रोटी है रूखी ? तो रूखी रहो.

एक लड़का नंगे पांव, मैला कुचैला, कपडे इतने जो ढकने की जगह उसे उलटे दिखाते थे, दौड़ता-दौड़ता उस मण्डली के पास आया. "तुम में, तुम लोगों में से यहां कोई पवनंजय है ?" उसने पूछा और जल्दी-

जल्दी आंख चुराकर मानो सबके चेहरों पर से उसने अपने आदमी को भांपना चाहा.

"मैं हूं पवनंजय, क्यों ? कहिए, जनाब का क्या नाम है ?"

"वह उस नुक्कड़ के पास शिवालय के पीछे कोई जेनी तुम्हें पूछ रही है—यह खत दिया है."

मण्डली के सब लोगों ने गहरी सांस ली जिसकी आवाज सुन पड़ी, "तुम लोग क्यों थूथनियां अपनी खोले पड़े हो. मूरख ही जोना हों सब के सब. पवनंजय ने शांत भाव से कहा. "लाओ, यहां लाओ खत."

खत जेनी का था. गोल, सुघर, बचकाने से उसके अक्षर थे. भाषा बहुत शुद्ध न थी.

"कुमार पवनंजय, मुआफ करना, मैं तुम्हे कसट देती हू. एव व्होत-व्होत जरूरी बात मुझे तुमसे करनी है : व्होत जरूरी है. मैं तुम्हे तकलीफ न देती अगर कोई और जगह होती तो. कुल बस दस मिनट के लिये. मैं जेनी हूं, अन्ना के ठिकाने की और तुम मुझे जानते हो.

पवनंजय खड़ा हो गया मुखिया से बोला, मुझे थोड़ी देर के लिए जाना होगा. काम फिर शुरु होगा तो लोटकर वक्त पर शामिल हो जाऊंगा.

"नहीं जी नहीं शामिल हुए तो क्या बात है ! काम जो है'" मुखिया ने ताने और लापरवाही से कहा, "सुनिये, ऐसे कामों के लिए रात का वक्त होता है दिन · तो जाइये जाइये···आपको रोकता कौन है ? लेकिन अगर मदद लगते वक्त शुरू में ही तुम यहां नही हुए तो यह दिन तुम्हारा गिना नहीं जाएगा. और मैं एवज में जिसको चाहे ले लूंगा. सिखतड़ हो या कोई और, उससे जो तरबूज खराब होंगे वे सब भी तुम्हारे हिस्से से कटेंगे··· मैं यह न समझता था पवनंजय कि तुम ऐसे—छुपे रुस्तम निकलोगे."

जेनी शिवालय के पीछे वाली जरा सी खुली जगह में उसकी राह देखती खड़ी थी. वहाँ पाँच सात भीख माँगते से पेड़ खड़े थे जिसे कुञ्ज नहीं कह सकते. वह इकहरी धोती पहने थी. और बदन पर जाकेट. सादा वेष था. लेकिन पवनंजय ने दूर से ही एक उड़ती सी निगाह देखकर मन में सोचा कि पोशाक बिलकुल सादी है फिर भी कुछ है, जाने क्या, कि बनक

से आता हुआ आदमी पीछे फिर कर देखे बिना रहेगा नहीं और बार-बार देखेगा. यकदम महसुह करेगा कि सब सामान्य नहीं है कुछ खास है.

"कहो जेनो, क्या बात है? मिलकर बड़ी खुशी हुई." हल्का सा नमस्कार करते हुए उसने सहृदयता से कहा,"सच मानो, तुम्हारी मैं आशा न करता था."

जेनी उदास सकुचाई-सी रही. वह तकलीफ में मालूम होती थी. कुछ उसे सता रहा था. पवनंजय ने देखते ही समझ लिया और अनुभव भी किया.

"जेनी, मुझे माफ कर दो, मुझे अभी जाकर कुछ पेट में डालना है." उसने कहा, "इससे, आओ चलो और बताओ कि क्या बात है. सुनता भी जाऊंगा ओर खाता भी जाऊंगा. है ना? यहां से वह थोड़ी ही दूर है. एक सराय हो है जगह मामूली है. लेकिन इस वक्त वहां लोग लगभग न होंगे और एक अलग को छोटा-सा कमरा भी वहां है. हम दोनों के लिए वह जगह बहुत ठीक रहेगी आओ, चलो. और शायद तुम भी कुछ तो खाने में साथ दोगी ही."

"नहीं, नहीं, मैं नही खाऊंगी." जेनी ने भरे गले से कहा, "और मैं तुम्हें देर तक रोकूंगी भी नहीं. बस, थोड़े से कुछ मिनट, मुझे कुछ कह सुन लेना है सलाह लेनी है—और कोई तो है नही मेरे पास!"

"अच्छा ठीक है ··· तो आओ चलें. जिस काम के मैं लायक हूं. जिसमें चाहो मैं खिदमत के लिए हाजिर हूं जेनी, मैं तुम्हें बहुत प्यार करता हूं."

जेनी ने कृतज्ञ और उदास आंखों से उसे देखा, बोली, "मैं जानती हूं कुमार. तभी तो मैं आई हूं."

"पैसे की जरूरत हो शायद, तो क्या बात है. दुविधा न करो मेरे पास भी ज्यादा तो है, नहीं लेकिन हमारी मण्डली के आदमियों से जरूर मैं ले सकता हूं. और जरूर वे मुझे दे देंगे."

"नहीं, कुमार, तुम्हारी दया है···पर वह बात नहीं है. मैं तुम्हें सब बताती हूं, जहां चल रहे हैं ना, वहां बैठकर सब कहूंगी."

सराय की छत नीची थी और अन्दर अँधेरा-सा था. अजब-सी वह जगह थी. छोटे-मोटे चोर रात को यहां जमा होते और अपने धन्धों की बातें यहीं निपटाते और सामान और माल का आपस में बँटवारा किया करते. यहाँ धन्धा शाम को चलता और गई रात तक यहाँ का बाज़ार गर्म रहता था. वहीं एक अँधियारे से तिकोने नुक्कड़ में पवनंजय ने अपनी जगह इख्तियार की. कहा, "देखो खाना ले आओ जो हो और ककड़ी खरबूज़ा जो हो सो भी ले आओ हाँ, अद्धा बोतल भी ला दो."

लाने वाला बैरा एक तिकोनी शक्ल का मनहूस-सा लड़का था. नाक बहती हुई और मारे मे चीकट लगता था जैसे अभी किसी चौबच्चे में से खींचकर बाहर निकाला हो. आस्तीन से मुँह पूंछा और कहा, "रोटी कितने पैसे की?"

"जितने की होती हो उतने की, जाओ." फिर उसे खड़ा देख पवनजय ने हँसकर कहा, "अरे जितना बने ले आ. हिसाब पीछे जोडते रहेंगे. और सालन के साथ चटनी भी लाना."

"तो हाँ, जेनी," उसने मुड़कर कहा, "अब अपने दु.ख की कहो··· तुम्हारे चेहरे से दीखता है कि कुछ माजरा है, कुछ बात कही गड़बड हुई है·· चलो, बस रुको नही कह डालो."

जेनी बहुत देर तक रुमाल के छोर को अपनी उंगली में लपेटे गई. या अपनी चप्पल के सिरों को देखे गई. जैसे बल बटोर रही हो. एक दुविधा और कातरता ने उसे छा दिया था. सही और सार्थक शब्द उसके पास आ नहीं रहे थे. अन्दर की बात वाक्य बनकर देती ही न थी. पवनजय ने उसकी मदद की, "नही, झिझको नही, मेरी जेनी! एक दम सब कह डालो तुम तो जानती हो कि मै तो तुम्हे कुनबे के जैसा हूँ और मुझसे बात कभी बाहर न जायगी और हो सकता है कि कोई काम की सलाह भी मै दे सकूं, बस, सुनती हो एक छलांग, बस कूद पड़ो. किनारे ठिठकी न रहो. तो हाँ, करो शुरू.'

'यही तो है, कैसे करूं शुरू?" जेनी अनिश्चय में टटोलती-सी बोली, "बात यह है कुमार कि मैं···मैं बीमार औरत हूं. गलीज···समझे?

बुरी बीमारी···गन्दी, फोरा···समझे क्या ?

पवनंजय ने सर हिलाया, कहा, "कहे जाओ."

"और अर्से से मेरा यह हाल है·· महीना ऊपर से···कोई डेढ़ महीने से हाँ महीने से ज्यादा से. क्योंकि जन्माष्टमी के रोज मुझे पता लगा··"

"पवनंजय ने जल्दी-जल्दी अपने हाथ से सर खुजलाया, बोला, "जरा, ठहरो मुझे याद आया···वही दिन था ना जब मैं कुछ विद्यार्थियों के साथ तहाँ था···वही है ना ?"

"हाँ, कुमार पवनंजय, ठीक वही दिन."

"आह ! जेनी पवनंजय से पछतावे और उलहने के भाव से कहा, "क्योंकि तुम्हें मालूम है कि उस दिन के बाद उन विद्यार्थियों में से दो को यह रोग लग गया···क्या तुम से यह उन्हें मिला था."

जेनी उपेक्षा और क्रोध से चमक आई. "हाँ, शायद मुझ से ही···पक्का कैसे कह सकती हूं. इतने तो जने थे,·· हाँ, अब एक की याद आती है··· वह जो तुमसे बराबरी, हर बात मे वहस करता रहा था···किसी क़दर वह लम्बा गेहुँए रंग का चश्मे वाला "

"हां-हां,···वही बर्थवाल·· खबर उन्होंने मुझे भेजी. यानी वह···वह तो कुछ नहीं दिखावेबाज था. लेकिन वह दूसरा···उसका मुझे अफ़सोस है. यों जानता उसे मैं अर्से से था पर उसके नाम के बारे में ठीक-ठीक कभी पता लगाया न था. इतना याद है कि किसी शहर, आगरा, कानपुर या जाने किस शहर का था साथी उसे रामसरन कहते थे. उसने कई डाक्टरो को दिखाया डाक्टरों ने पक्का कर दिया कि मर्ज यह है तो वह घर गया और अपने गोली मार कर मर गया·· और जो पुर्जा लिखकर पीछे छोड़ गया, उसमें अजब बातें लिखी थी, जैसे लिखा था—मैं जीवन के अर्थ को सत्य, शिव और सुन्दर देखता था. चेतन की जड़ पर विजय. विजय में मेरी आस्था थी. इस रोग के बाद अब मैं आदमी नहीं हूं, गन्द हूं, कूड़ा हूं, लाश हूं, क्षत का शिकार हूं. मैं दोनों को जोड़ नहीं सकता, मेरा मानवता का अभिमान यह सह नहीं सकता. लेकिन जो हुआ उसमें और इसलिये अपनी मौत में दोष मेरा है. इस दोष में मैं अकेला हूँ क्योंकि क्षणिक पशुता के वश होकर मैंने स्त्री को प्रेम में नहीं,

खरीद में लिया है. इसलिये अपने द्रव्य का मैंने स्वयं अर्जन किया है और उसका भोग मैं स्वयं अपने को देता हूँ···"कुछ देर चुप रहकर पवनंजय ने आहिस्ता से कहा, "मुझे उसका शोक है···"

जेनी के नथुने फूल आये, बोली, "पर मुझे अब शोक जरा भी नहीं है."

"यह गलत है,···ऐ छोकरे, तुम जाओ. जरूरत होगी हम बुला लेंगे." पवनंजय ने फिर मुड़कर कहा, "गलत है, यह बिलकुल भूल है तुम्हारी जेनी ! वह बहुत ही होनहार और तेजस्वी पुरुष था. ऐसा कि जैसे हजारों लाखों में कोई होता है. अपना अपघात करने वालों का आदर मैं नहीं करता. अक्सर वे कच्ची बुद्धि के लोग होते हैं, जो जरा बात पर अपने को फांसी लगा देतें हैं या गोली मार लेते हैं. यह तो बच्चे की-सी बात हुई कि जिसे मिठाई नहीं मिली तो मानो आस-पास वालों से बदला लेने को वह दीवार से ही टकराकर सर पीटने लगा. लेकिन इस आदमी की मौत के आगे मेरा सर श्रद्धा और शोक से झुक जाता है. वह खुद उदाराशय था, सहृदय, सब के प्रति आदरशील और मेधावी ! और सबसे बढ़कर प्रमाण तुम देखती ही हो, अपने को क्षमा न करनेवाला कठोर साधक !

"लेकिन मेरे लिये वह सब एक दम एक है." जिद्द बांधकर जेनी काटती हुई बोली, "विज्ञ या मूर्ख, धार्मिक का दुष्ट, वृद्ध कि युवा—मुझे सबसे एकसी नफरत हो गई है, क्योंकि—मुझे देखो, मैं क्या बच्ची हूँ, क्या हूँ. सबके लिये मानो एक उगालदान, आये और मुझ मे उगलें. खुला चौडे में रखा चहबच्चा हूँ, संडास हूँ, सोचकर देखो पवनंजय, हजारों-हजारों ने मुझे दिया, दबोचा, मद के उन्माद में मुझ पर गुर्राया और मुझे लथेड़ा. वे अनगिन जो खाट पर मेरे साथ हुए या अनगिन जो साथ होंगे ओह ! उन सबको मैं नफरत करती हूँ. मेरा जो बस होता तो मैं ऐसी घोर सजा उन्हे देती. आग में झुलसाती, लाल सलाखों से दागती · हुक्म देती कि · "

पवनंजय ने धीरे से कहा, "तुममें तुम्हारा मान बोल रहा है जेनी और द्वेष."

"नहीं, न मुझमें पहले मान था, न द्वेष···यह तो अब ही है·· दस बरस

की नहीं थी जब मुझे माँ ने बेच दिया. तब से इस हाथ से उस हाथ घूमती रही·· अगर जो कहीं कोई झाँककर देख पाता कि मुझ में इन्सान भी है. पर नहीं···मैं तो कीड़ा हूँ, कूड़ा हूँ, भिखारी से, चोर से, कातिल से बदतर ?··· डोम तक··· और ऐसे लोग भी पैसा हाथ में लेकर हमारे ठिकाने तक आते हैं. वह भी हमें ऐसे लेते हैं कि वह ऊँच हों और हम नीच घिन के लायक हों. मैं—कुछ नहीं एक पंचायती मादा हूँ. समझते हो कुमार पवनंजय, इस शब्द का मतलब क्या होता है, पंचायती, आम, सब की—इसका मतलब है कोई नहीं किसी की नहीं, बाप की नहीं माँ की नहीं, राजस्थान की नहीं, महाराष्ट्र की नही, बस सिर्फ पंचायती हाट की. और कभी किसी के मन में यह नहीं हुआ कि मेरे पास आए और सोचे, यह भी इन्सान हो सकती है कि जिसके भी दिल है और दिमाग है. वह भी सोचती है और एहसास रखती है, क्योंकि वह कोई लकड़ी की नहीं बनी है. न उसमें अंदर भुस भरा है कि ऊपर से गुड़िया बना दी गई हो. लेकिन शायद मैं ही यह सोचती हूँ, शायद अपनी सब जनियों में मैं ही एक हूँ जो अपनी स्थिति की भयंकरता का अनुभव करती हूँ, इस भिट, इस गढ़े की दुर्गन्ध का, सँडास का और अँधियारे का अनुभव करती हूँ. लेकिन दूसरी लड़कियाँ जिनसे मैं मिली हूँ या जिन सबके साथ इस वक्त मैं रहती हूँ—समझे पवनंजय तुम्हें कैसे बताऊँ कि—वे तो मगन हैं कुछ भी अनुभव नहीं करतीं, जैसे, माँस की काया उनमें हो और हिस न हो, इससे द्वेष पैदा न हो, द्वेष से भी ज्यादा ·"

"ठीक कहती हो," पवनंजय आहिस्ता से बोला, "और यह उन सवालों में एक है कि उससे टकराना मानो अंधी दीवार से जा टकराना है, कोई कुछ कर नहीं सकता,'

"कोई एक भी नहीं ?"—आवेश से भरी जेनी बोली. "तुम्हें याद है, तुम उस वक्त वहाँ थे. एक विद्यार्थी हमारी लुबी को ले गया था ?"

"हाँ-आँ, क्यों नहीं, मुझे खूब याद है—अच्छा तो क्या मतलब ?"

"मतलब ? यह कि कल वह फिर लौट आई है. सूखी, दुबली, बेहाल रोती बिलखती···दुष्ट ने उसे निराधार छोड़ दिया···पहले तो

दया भाव दिखाता रहा फिर वही जो होता है. आप कहते हैं, तुम तो बहन हो और मै ?" देखा दुष्ट को, मैं तुम्हारी रक्षा करूँगा, तुम्हे इन्सान बनाऊँगा, तुम्हे···"

"नही, गलत कहती हो."

"गलत कहती हूँ·· हाँ, आखिर एक आदमी मैंने पाया जो कुत्ता न था उसमे दया थी और हमदर्दी थी. कोई और इरादा उसके पास न फटकता था···और वह तुम हो. लेकिन तुम तो हो ही और. तुम तो कुछ अजब आदमी हो. सदा घूमते ही रहते हो. जाने क्या खोजते हो. तुम ·· कुमार पवनजय, मुझे मुआफ करना, तुम तो जाने कैसे, मासूम कल के शिशु हो जैसे फरिश्ता हो · और इसीलिये मै तुम्हारे पास आई हूँ · एक सिर्फ तुम्हारे पास—"

"रुको नही जेनी कहे जाओ"

"तो जब मुझे मालूम हुआ कि रोग की मुझे छून लग गई है तो गुस्से के मारे मेरा माथा फटने लगा मै अन्दर से सारी जल आई·· सोचा, यह मेरा बस अन्त ही है इसलिये अब न दया की जरूरत है, न आस की, शोक की, न सोच-विचार की·· बस, ढकना उघड गया·· सोचा जो भुगता है उस सबको क्या वापस दुगना चुकाया नही जा सकता क्या यह मुमकिन है कि दुनिया मे न्याय न हो क्या यह हो सकता है कि मै बदले तक का आनन्द न ले सकूँ ?—क्योंकि मैंने कभी प्रेम जाना नही कुनबा होता है, परिवार होता है, वह भी जीवन होता है पर मैंने उसके बारे मे दूर से सुना ही, जाना नही मैंने क्या जाना कि लोग कुत्ते के मानिंद लार से ललकते मुझे पास लेते है, दुलारते है और बस, लात मार कर फेंक देते है जैसे पछताते हों कि मुझको अपने बराबर लिया ही क्यो इससे दुगने जोर से लतियाके अलग करते है कि मै जैसे आगन की बुहारी हूं, भोगी हूं. उनके मनोरंजन का निकृष्ट साधन हूँ, बाहर का नीच से नीच आया, लिया, दाम चुकाये और जूतियो की तरह निकाल फेंका—ऊँह, क्या यह मुमकिन है कि इस सबके लिये मै इस भयानक छूत के रोग को भी उनका एहसान मान कर लूं ?—मैं गुलाम हूँ ?—गूंगी हूं, ?—जानवर हूं ?—लट्टू टट्टू हूँ—और

कुमार मन की इस हालत में मैंने तय किया कि मैं भी एक-एक को अपनी छूत दूंगी- जवान हो कि बूढ़ा, अमीर हो कि ग़रीब, खूबसूरत कि बदशक़ल.— सबको यह परशाद दूंगी —"

पवनंजय ने अपने सामने की थाली खत्म करके दूर हटा दी थी और वह अचरज से जेनी के चेहरे को देख रहा था. अचरज था पर वहीं भय भी था. वह जिसने कि जीवन में इतना कुछ दु:ख देखा था, उतना गन्द. यहाँ तक कि इतना खून खराब—वह भी घुटी घृणा के इस तीखे गहरे विस्फोट के सामने एक अज्ञात, अनिर्दिष्ट आशका से डर आया. अपने को संभाल कर बोला, "एक बड़े लेखक ने ऐसे ही मामले का जिक्र किया है—प्रशिया वालों ने फ्रांसीसी सेना को हरा दिया और उन्हें हर तरह ज़ेर कर दिया था. आदमियों को गोलियों से उड़ा डाला था. औरतों की इज्जत ली, मकान लूट लिये; साज-सामान लूट लिया और खेत-खलिहान जला दिये थे·· एक फ्रांसीसी औरत को जो बड़ी खूबसूरत थी इस नृशंस दौर से छूत का यह मर्ज मिल गया. बस फिर बदले की भावना से भर कर वह हर जर्मन की जो उसके आलिंगन तक आता वह मौत का यह जहर दे देती. इस तरह उसने सैकड़ों बल्कि शायद हजारों को बेकाम कर दिया.—अन्त में जब वह अस्पताल में मौत के पास थी तो इस सब की उसे खुशी थी और गर्व था —लेकिन वे तो दुश्मन थे और उनकी मातृभूमि को रौंदते और उसके देश भाइयों का गला काटते चले आ रहे थे मगर तुम·· तुम जेनी···"

"मैं ?·· मेरे लिये क्या सब एक नहीं हैं ? देश या विदेश ! कुमार पवनंजय, मैं पूछती हूँ. सच-सच, दिल को टटोलकर बताना कि मान लो गली में तुम्हें एक मासूम पड़ी मिले कि जिसकी किसी ने लाज लूट ली हो. बलात्कार के बाद वहां अधमरी छोड़ दिया हो···या कहो आँखें निकाल ली हों, या नाक कान काट फेंके हों···और समझो कि वही आदमी तुम्हारे सामने आ जाये और तुम्हारे पास से गुज़रता हो और तुम्हें देखने या रोकने वाला कोई न हो सिवाय परमात्मा के जो पता नहीं कि है भी कि नहीं— तो तुम क्या करो."

"कह नहीं सकता." पवनंजय ने कहा तो पर कहने में ज़ोर न था और

आँखें नीची थीं. लेकिन उसका चेहरा जर्द पड़ आया था. मेज क नीचे उसकी उँगलियाँ सिमटकर मुट्ठी में बँध आई थीं, धीमे से बोला "शायद मैं उसे मार देता."

"नहीं, शायद नहीं. निश्चय तुम उसे मार देते. मैं तुम्हें जानती हूँ, मैं तुम्हें समझती हूँ. तो अब तुम्हीं सोचो हममें से हरेक के साथ जब उम्र हमारी नासमझ थी ठीक यही हुआ···हम बच्ची थीं···" जेनी आवेग से भर आई और हथेलियों से उस घड़ी उसने आँखों को ढक लिया, बोली, "ओह ! मुझे याद है तुम भी उस दिन कुछ ऐसा ही कहते थे. उस दिन, जन्माष्टमी से पहले वाली शाम. हमारी जगह···तुम्हे याद तो होगा. सचमुच बच्चियाँ, अबोध, अनजान ! सहज विश्वासी, बन्धी, लालची और तमाशा पसन्द करने वाली—और हम इस जुए से अलग अपने को निकाल नहीं सकती थीं, जायें कहाँ, करें क्या···और कुमार पवनंजय. हाथ जोड़ती हूँ, कहीं यह न सोचना कि जिन्होंने मुझे बिगाड़ा है उनके, उन्हीं के लिये मुझमें डाह है···नहीं उसमें मैं नहीं हूँ, सवाल मेरा नहीं है···उन सबके लिये जो ऐसी जगह जाते हैं मुझमें एक-सा द्वेष है. छोटे से बड़े, सबके लिये, जो जेब में पैसा डालकर छैला बने कोठों पर पहुँचते हैं. इससे मैंने तय किया कि अपनी दूसरी बहनों का भी मुझे बदला लेना है. बताओ, यह अच्छा, क्यों है कि नहीं ?"

"जेनी, सच मैं कह नहीं सकता·· क्या कहूँ···कहने की हिम्मत नहीं है. कुछ ठीक समझ नहीं आता."

"लेकिन असल बात वह नहीं है·· क्योंकि असल बात यह है कि जब मैं उन्हें छूत देती थी तो मुझे कुछ एहसास नही होता था. न रहम, न अफसोस, न किसी परमात्मा के आगे पाप, न समाज के अपराध का. मेरे अन्दरे एक खुशी का उबाल मालूम होता था. जैसे भूखे भेड़िये के मुँह को शिकार का लहू मिल गया हो. लेकिन कल कुछ हो गया जिसे मैं खुद नहीं समझ सकी. एक नई उम्र का सैनिक विद्यार्थी आया. अबोध बालक-सा था. मसें अभी भीगी न थीं ··पारसाल सर्दियों के दिनों से वह पास आया करता था ··कि एकाएक मुझे उस पर दया होने लगी···इसलिये नहीं कि उम्र कच्ची थी,

या सुन्दर बहुत था. न इसलिये कि वह बहुत विनम्र था, यहाँ तक कि उसमें भक्ति थी. नहीं, इस तरह के और उस तरह के दोनों तरह के लोग मुझे मिले. लेकिन मैंने उन्हें बख्शा नहीं है, जैसे जानवरों को लाल सलाख से दाग़ देते हैं, वैसे उन्मत्त हर्ष के साथ मैंने भी उन्हें दाग़ी कर छोड़ा है. लेकिन उसपर मुझे एकाएक दया हो आई···नहीं कह सकती; क्यों ? पता नहीं और मुझे उसका भेद नहीं मिलता. ऐसा लगा कि यह जैसे किसी दुधमुंहे की जेब से, किसी बेचारे पागल के पास से पैसा चुरा लेने जैसा था. जैसे किसी ने अन्धे को मारा हो, या सोते का गला काटा हो···जो कहीं वह सुखा चचका आदमी होता या पिलपिला, बदसूरत या फीका बूढ़ा किस्म का मर्द होता तो मैं बचती और बचाती नहीं, पर वह तन्दुरुस्त था और मजबूत, सीना ऐसा कि चट्टान और बाहे मूरत की मानिन्द · नहीं मुझसे न हुआ ··उसका पैसा मैंने वापस कर दिया. उसे अपना मर्ज दिखाकर यकीन दिला दिया, यों कहो कि बड़े-से-बड़े मूरख जैसा काम किया. वह मुझसे अलग होकर चला···तो फूट कर रो पड़ा···और अब कल शाम से मैं एक पल सोई नहीं, ऐसे चल रही हूँ जैसे कोहरे में हूँ. इसलिये ठीक इस समय मैं सोच रही हूँ कि जो मैंने सोचा था, फैसला किया था, यह अरमान कि उनके बापों को, माँओं को, बहनो को, सबको, सारी दुनिया को मैं यह मौत का दाग़ देकर रहूँगी ·· यह फैसला मूरखता ही थी. कोरी खामख़याली थी क्योंकि मुझसे हो नही सका और मैं हार गई. लेकिन कुमार पवनंजय कुछ समझ नहीं पाती··· तुम इतने बुद्धिमान हो, इतना कुछ जीवन में तुमने देखा है. मेरी मदद करो. मुझे अपने को समझने दो. बताओ कि मैं यह क्या हूँ."

"मैं जानता नहीं हूँ जेनी," धीमे शान्त स्वर से पवनंजय ने कहा, "यह नही जेनी कि मैं कहने से या तुम्हें सलाह देने से डरता हूं, लेकिन सच मैं कुछ भी जानता नही हूँ, यह तर्क से परे है·· अपने जाने मन के भेदों से परे हैं..."

जेनी ने उँगलियों को आपस में लिया और एक-एक को चटकाया, "और मैं भी जानती नहीं हूँ, इससे जो मैंने सोचा था सच न था. इसलिये अब मेरे लिये एक ही मार्ग बच जाता है·· यह खयाल मेरे मन में आज सवेरे

ही आया · "

पवनंजय ने झपट कर बीच में ही उसे टोका, कहा, "नहीं-नहीं, जेनी यह न करना."

"एक ही चीज बची है कि — अपने फांसी लगा लूं···"

"नहीं-नहीं, जेनी ! वैसा हरगिज न सोचो हालात और होते और राह और न होती तो यकीन मानो जेनी मैं हिम्मत बांधकर तुम्हें सलाह देता, ठीक है कोई फायदा नहीं, जीवन का पट बन्द करने का समय आ गया है. पर···जिसकी तुम्हे जरूरत है, वह यह नहीं है,·· नहीं, बिल्कुल यह नही हैं. अगर तुम चाहो तो मैं काम का एक उपाय सुझा सकता है. वह कम निर्भय नहीं है, कम द्वेष की भी उसमें जरूरत न होगी. और शायद उससे तुम्हारा गुस्सा सौ गुना तृप्ति पायेगा · "

"वह क्या ?" जेनी ने ऐसे पूछा जैसे थक आई हो. जैसे भड़क के बाद एकाएक बुझने को हो.

"वह यह कि तुम अभी जवान हो. सच कहता हूँ, तुम बहुत खूबसूरत हो—यानि कि अगर चाहो तो ऐसी हो सकती हो कि एकदम गजब ! ऐसा समझो कि सौन्दर्य से ज्यादा. एकदम मारक. सौन्दर्य तुम्हें अपने रूप की हद और ताकत का पता नहीं है. खासकर तुम्हें इस चीज का पता नहीं है कि तुम्हारे स्वभाव में क्या है, कैसा जादू है. आदमियों को इस बेबसी से तुम खींच के बांध सकती हो और उन्हें गुलाम और पालतू बनाकर रख सकती हो·· तुम मानिनी हो, तुम बहादुर हो, स्वाधीन हो और चतुर हो. जानता हूँ तुमने बहुत पढ़ा है. हो सकता है कि उनमें इधर-उधर की हलकी किताबे भी बहुतेरी हो, तो भी तुमने पढ़ा है. औरों से तुम्हारी जबान अलग है, तरीका अलग है. एक मोड़ लो कि तुम इस बीमारी से, इस सड़ांध से, इस जेलखाने से बाहर और आजाद ! फिर तुम्हारे एक उँगली उठाने की देर है कि देखोगी कि सैकड़ों तुम्हारे क़दमों में पड़े हैं. बस बाट जोहते हैं, तुम कहो और वे करें. जो कहो तुम्हारे लिये करने को तैयार हैं. चोरी, जालसाजी, या कोई भी इससे नीच काम उन पर राज करो और उन्हें कसकर लगाम दिये रहो. वह देखें कि ऊपर हाथ में तुम्हारे कोड़ा है जो तैयार है. उन्हें

बक्शो नहीं. उनके मनों को मुट्ठी में रखो और जब तक तुममें दम रहे उन्हें टस से मस ना होने दो देखो, प्यारी जेनी, तुम स्त्रियाँ ही नहीं तो जीवन को कौन चलाता है. कल को नौकरानी, धोबन या राह की लड़की लाखों के माल जायदाद को ऐसे बखेरती है जैसे गाँव में कोई पीढ़े पर बैठी कुटक-कुटकर फेंकती जाती हो. एक औरत अपढ़ ऐसी कि अपना नाम तक नहीं लिख सके. किसी आदमी की मार्फ़त ऐसा हुआ हो कि सारे राज की मलका बन गई हो और लाखों के भाग्य उसकी मुट्ठी में आ गये हों, कुलीन युवराज रखेलों पै आशिक हुए हैं और उनसे शादी कर बैठे हैं · जेनी, यहाँ तुम्हारी बदले की भावना के लिये खुला क्षेत्र है. चलो, बढ़ो और दूर से देखकर मैं भी तुम्हारी तारीफ करूंगा. क्योंकि तुम—तुम उसी मसाले की बनी हो तुम—शिकार की भूखी हो. तुम्हे क़ाबू में कोई चाहिये जिसे बेक़ाबू कर दो !···शायद ख़्यात तुम्हारी इतनी बड़ी दुर्द्धर्ष न हो ··तो भी कहता हूँ, तुम में है वह जो लोगों को तुम्हारे पाँव मे डाल जाए."—

जेनी फीकी मुस्कराहट से मुस्कराई, बोली, "नहीं मैंने पहले यह सोचा था···लेकिन वह खास हिस्स अन्दर से बुझ गई, वाह बुझ गई है. न संकल्प, न इच्छा. · मैं अन्दर रीती हो गई हूँ, कहीं भीतर सड़ चली हूँ · जैसे तुम जानते हो राह का वह कुकुरमुत्ता होता है ना सफेद, गोल, छत्तानुमा. लेके उसे दबोचा तो सब सत उसका निकलकर रिस जाता है. वही मेरे साथ हुआ समझो इस जीवन में जो मैंने भुगता, उसने भीतर का सब-कुछ खा चुका डाला है. बस, एक जलन अन्दर छोड़ दी है, और मैं खाली पोली हूँ. यहाँ तक कि मेरी जलन पोली है फिर कोई अबोध बालक-सा मुझे मिल जायगा. फिर मुझे उस पर तरस आ जायेगा. और फिर मैं अपने साथ कठोर हो रहूँगी ···नहीं,-नहीं, यह अच्छा है, जैसा है वही ठीक है···"

कहकर वह चुप हो आई. पवनंजय को कुछ न सूझा कि वह क्या कहे. यह नीरवता दोनों को भारी हो आई. दोनों असगत, असमंजस में अनुभव कर आये, आखिर जेनी उठी और बिना उसकी ओर देखे अपने ठंडे निश्चेतन से हाथ को उसकी ओर मानो बिदा में बढ़ाते हुए बोली, "अच्छा कुमार पवनंजय ! मैं अब बिदा लूं. माफ करना, मैंने तुम्हारा वक्त लिया···मैं

देखती हूँ, जानती हूँ कि अगर तुम कर सकते तो मेरी जरूर मदद करते, हर तरह मदद करते···लेकिन दीखता है कुछ हो नहीं सकता. कुछ भी किया नहीं जा सकता···बिदा कुमार !"

"देखना मेरी एक प्रार्थना है जेनी, कहीं कुछ ऐसा वैसा न करना."

"ओह ! वह ठीक है. छोड़ो." और कहने के साथ उसने हाथ से थका संकेत-सा किया.

वहां से बाहर आकर दोनों ने दो राहें लीं और वे अलग हुए. लेकिन कुछ पग चल पाई थी कि अकस्मात जेनी ने मुड़कर उसे पुकारा, "कुमार पवनंजय ! ओ, कुमार पवनंजय !"

सुनकर वह रुका, और लौटकर उस तक गया.

"मियाँ गबदू कल शाम उस हमारे हाल में दम तोड़कर चल बसा-कुछ फुदक रहा था कि तभी छत में धड़ाम से नीचे गिरा और खतम· खासी मजे की मौत है यह तो, है ? और एक बात मैं तुमसे पूछना भूल गई कुमार पवनंजय···आखिरी सवाल बताओ परमात्मा है या नही ?"

पवनंजय ने अपनी भवें समेटीं, "उत्तर क्या दूं, मैं जानता नहीं हूं. सोचता हूं कि वह है मगर वैसा नही जैसा हम सोचते हैं. वह ज्यादा न्यायी है, ज्यादा द्रष्टा है···"

"और दूर परलोक ? मृत्यु के बाद, जैसा कहते है मौत के बाद क्या नरक होता है, सुरग होता है ? क्या सच ये होते हैं ? या एकदम बस कुछ नहीं है सब सूना है, रीता है ? जैसे नींद कि जिसमें सपना न हो ? जगे कि जहां दीखने को कुछ नही ?"

पवनंजय गुम रह गया. कोशिश कर रहा था कि वह जेनी की तरफ न देखे. उसे डर लग रहा था और जाने क्या उसे भारी त्रास दे रहा था. "मुझे मालूम नहीं." उसने कोशिश से संक्षिप्त भाव से कहा, "तुमसे मैं झूठ कहना नहीं चाहता."

जेनी भरी सांस ली. फिर एक करुण मुस्कान उस पर खेल आई. क्या मुस्कान में व्यंग था ? "अच्छा, मैं तुम्हारी कृतज्ञ हूं इतने तक के लिये कृतज्ञ हूं···तुम खुश रहो मन यही कहता है कि तुम सदा खुश रहो. अच्छा

विदा !"

कह कर उसने मुंह फेरा और धीमी कुछ उगती-सी चाल से पग रखती हुई वह सामने पहाड़ी तक चढ़ती चली गई.

ऐन वक्त पर पवनंजय अपने काम पर आ पहूँचा. मण्डली काम पर लगने को ही थी. कोई बदन अकड़ा रहा था, कोई जम्हाइ ले रहा था. कोई बदन के जोड़ों को चटका कर ठीक कर रहा था. खासी पचमेल जमात थी, जबरैल सिंह ने अपनी पैनी निगाह से दूर ही देख पवनंजय को ताड़ लिया और जोर से दहाड़ता-सा वहीं से बोला,' आखिर आ गए तुम वक्त पर, चलो खैर मनाओ···मैं सोचता था कि अभी हजरत को दुम पकड़कर बाहर फेंक दूं और किसी और साले को एवज में लूं खैर, अपनी जगह पर पहूंचो.

लेकिन पास आने पर मुलायम आवाज में उसने पवनंजय को थपक कर कहा "मगर कुमार, आदमी तुम भी खूब हो!·· रात होती तो एक बात भी थी—पर चलो जी, दिन ही मजे के लिए क्या गलत चीज है······ खुले दिन दहाड़े—मानता हूं दोस्त. चलो काम पर चलो."

५

शनिवार डाक्टरी मुआयने का दिन हुआ करता था. उस रोज सारे घर सरगर्मी हो आती और सब जनी बड़े एतिहात से अपने को तैयार और दुरुस्त करने में लग जाती, ठीक वैसे ही जैसे कुल शील वाली नारियाँ डाक्टर स्पेशलिस्ट के यहां जाते समय जरा ठीक दुरुस्त होकर जाती हैं. उन्होंने अपनी भली प्रकार अपनी सफाई की और अन्दर कपड़े ऐसे पहने कि साफ मगर जरा दिखाऊ भी. गली की तरफ खुलने वाली खिड़कियों को बन्द कर दिया था. और सायबान की तरफ खुलने वाली खिड़कियों में से एक के पीछे मेज रख दी गई थी. जिसमें रोकने के लिए पुस्त पर एक पत्थर लगा दिया.

लड़कियां सब घबराई हुइ थीं···और जो मुझ रोग हुआ जिसका मुझे ही पता न हो·· इसका मतलब होगा कि चलो बंधकर अस्पताल पहुंचो,

बेइज्जती भुगतो, वहां के सूनेपन और परेशानी को झेलो. खराब खाना, बुरा व्यवहार और सिर्फ तीन जनी थी, मनका, जिसे मनका कबुतरी कहते थे, जोहरा और हरिता ये तीनों कोई तीस बरस की हो आई थी और इस धन्धे मे रहते-रहते बेअसर हो गयी थी. सरकस के सधे लाल सफेद घोडे होते है वैसे ही मानों ये एकदम शांत और स्वस्थचित्त थी. इन्हे किसी तरह की व्यग्रता न थी. मनका कबुतरी तो अक्सर अपने बारे मे कहती, "मेरा क्या है. मै तो आग पानी मे से निकली हू छड हो लोहे की या पीतल की···असर हो मेरे दुश्मन को मै तो बरी हू."

जेनी सवेरे से ही उदास थी और आर्द्र. उसने छोटी गोरी मनका को दो सोने की चूडिया भेट की थी अपनी तस्वीर के साथ लाकेट लगी एक बारीक-सी चेन और गले का एक चादी का क्रास! बडी मनुहार करके तिमिरा को उसने राजी किया और अपनी याददाश्त के तौर पर रखने को अगुंठिया दो. एक चादी की जिसमे तीन कडियाँ थी जो अलग हो सकती थी, बीच मे दिल का आकार बना था. जिसके दोनो ओर दो नन्हे-नन्हे हाथ बने थे. जब तीनो कड़िया आपस मे जुड़ती तो ये तीनो हाथ परस्पर गुंथ जाते. दूसरी अगूंठी बारीक से सोने के तार की थी जिसके बीच मे गहरा नीलम जडा था.

"और तिमिरा यह जो मेरा अन्डरवीयर है ना यह उस काम वाली अन्नी को दे देना. इसे धोधा के शुद्ध और साफ कर लेगी और मेरी याद मे पहन लिया करेगी."

दोनों वे तिमिरा के कमरे में बैठी थी. जेनी ने सवेरे से ही कुछ शराव मंगा भेजी थी और अब धीमे मानों लापरवाही मे गिलास-पर-गिलास ढाले जा रही थी. बीच-बीच में नीबू चूसती जाती या मिसरी का डला लेकर कुतरती जाती. तिमिरा ने यह पहली बार देखा था और अचरज मे थी. क्योंकि जेनी शराब पसन्द न करती थी और मजबूरी में ही उसे जरा मुँह तक आने देती थी. सिर्फ मेहमानों का आग्रह रखने के लिए.

तिमिरा ने पूछा,"यह आज सब कुछ अपना ये दिए क्यों डाल रही हो यह तो वैसे मरने को तैयार हो रही हो या किसी मठ-बठ में आकर सदा

बन्द हो जाने को."

"हाँ, मुझे जाना ही होगा ' जेनी ने मुझे से भाव से कहा, "मै थक गई हू तिमिरा—"

"अच्छा, तो हम मे से मौज मे ही भला कान है"

"नही," इतना यह नहीं कि मे थक गई ह पर जाने क्यो अब सब—सब कुछ मेरे लिए एक जैसा हो गया है · तुम्हे देख रही हू, मेज देख रही रही हू, बोतल देख रही ह, अपने हाथ आर पैर देख रही हू सोचती हू सब एक जैसा है किसी का कोई मतलब नही है ··· जैसे की जीर्ण शीर्ण. कभी कि कोई तस्वीर हो, धुंधली, बेमतलब ! पहले दिन मे जिसे देखते-देखते जी अघा गया हो और ऊबने लगा हो देखा वह– वह बाहर सड़क पर सैनिक जा रहा है लेकिन मेरे लिए सब एक सा है लेकिन मरे लिए सब एक सा है जैसे लपेट लपाट कर गुड्डा खड़ा कर दिया हो और वह चल रहा हो और·· वह बरसाती रुखा मे भीगता चला जा रहा है यह भी वह ही है·· और वह मर जाएगा और तुम तिमिरा तुम भी मर जाओगी. इस सब म कुछ अनहोना कुछ डरावना नही मालूम होता है·· सब अब मुझे एक सीधा सपाट बेजान बेअर्थ हो गया है कि···"

जेनी कहते-कहते चुप हो आई शराब का गिलास डाला मिसरी कुतरी और अब भी बाहर सडक की तरफ देखती हुई एकाएक पूछ उठी, "तिमिरा, एक बात बताओ मैंने कभी तुमसे पूछा नही है, लेकिन अब बताओ, तुम यहा इस कबूतरखाने मे आई तो क्यो, कहाँ से आई ? तुम हममे से नही हो हम से जरा भी मिलती नही हो. तुम सब कुछ जानती हो क्योंकि जब कभी कुछ होता है तुम हैरान नही दीखती. तुम्हारे औसान कायम रहते है और वक्त पर नेक सही सलाह देती हो. यहाँ तक कि अंग्रेजी- उस वक्त कितनी बढ़िया अंग्रेजी फर्राटे से तुम बोलती गई थी. पर हममे से कोई तुम्हारे बारे मे कुछ नही जानता है·· तुम कौन हो ? "

"प्यारी जेनी, छोड़ो सच इसमे क्या धरा है·· जिन्दगी जैसी एक वैसी और·· मैं एक बोर्डिंग स्कूल मे दाखिल हुई थी फिर एक बड़े कुनबे में आकर शिक्षिका हुई. स्टेज पर खिल कर गाया भी, फिर जंगल मे एक

शिकारगाह चलाया. उसके बाद एक ऐसा ही आदमी मिल गया और उस झमेले में वैन्चैस्टर उठाकर गोली दागना भी सीख गई. सरकस वालों के साथ में घूमी. वहां मुझे बड़ी सितमगर समझा जाता था. फिर मैं एक से एक वढ़कर निशाना लेने लगी···फिर मैने पाया कि मै एक मठ मे भर्ती हूँ. वहां दो साल बिताए·· जाने जिन्दगी मे किस-किस में से गुजरी हूँ, सब याद भी नही कर सकती·· मैं चोरी भी किया करती···।"

"तुमने बहुत ऊँच नीच देखा दीखता है·· अजब जिन्दगी रही दीखती है तुम्हारी."

"लेकिन मेरी उमर भी तो कम नहीं है. अच्छा बताओ तुम क्या सोचती हो—कितनी है ?'

"होगी, बाईस—चौबीस ?"

"नही, बिन्नी. हफ्ता भर हुआ ठीक बत्तीस बरस पूरे हुए. तुम न मानो मगर यहां इस अन्ना के ठिकाने मे तुम जितनी जनी हो मैं सबसे बड़ी हूँ. बस यही है कि मैं किसी पर बोखलाई नही, कही किसी पर चित्त अपना तोडा नही और तुम देखती हो मै कभी पीती नही—अपने तन का मैं बराबर और बहुत ध्यान रखती हूं और खास असल बात तो यह है कि मैं कभी मर्दों के फेर में नही पड़ी.···"

"हां, तो वह तुम्हारे उस सैनका का क्या मामला है, "

"सैनका,—उसकी तो बात दूसरी है. वह जात और है. तुम जानो स्त्री का हृदय मूरख होता है, चचल होता है···भला वह प्यार के बिना कभी रह सकता है. तो भी सच मे मै प्यार उसे नही करती मगर यही एक···आत्मछलना समझो···पर जो हो जल्दी ही मुझे सैनका की बड़ी जरूरत पड़ सकती है."

जेनी को एकाएक बात में उत्साह हुआ और उसने उत्सुकता से अपनी इस सहेली की ओर देखा. "पर तुम इस गढ़े में आकर कैसे पडी. इतनी चतुर, सुन्दर, कुशल, हंसमुख···"

"सब कहने में तो बहुत देर लगेगी···और फिर मैं आलसन ठहरी, —असल में मैं यहां प्यार में पड़कर आ गई. एक युवा व्यक्ति से मेल

जोल हुआ और उसके साथ क्रान्ति-भ्रान्ति भी कुछ की. तुम जानो हम स्त्रियों की यही प्रकृति होती है. अपने प्यारे का काम, हमारा काम; उसका धरम हमारा धरम; उसकी दिलचस्पी हमारी दिलचस्पी—मन से उसकी क्रान्ति में मुझे कुछ लगन न थी फिर भी मैं उधर बढ़ गई. खासा लुभावना आदमी था. स'ौक़ेदार, बातों में खुशगँवार और देखने में खूबसूरत···

वह फिर पीछे धोखेबाज़ निकला और मुखबिर बन गया इधर वह क्रान्ति करता रहा उधर अपने साथियो की खबर पुलिस को भेजता रहा. आवारा, बदमाश ! जब उसका भेद खुल गया और साथियों ने उसे खत्म कर दिया तब जाकर मेरी बेवकूफी मुझे पता चली और मैं आपे में आई · मगर फिर भी ा कि मै अपने को छिपाये रहूँ·· मैंने अपना पासपोर्ट बदल लिया. फिर साथियों से सलाह ली कि सबसे पक्का और आसान तरीका यह होगा कि पीला लाइसेंस टिकट लेकर मैं किसी ऐसी ही जगह बैठू ओट रहेगी और ध्यान न जाएगा. बस, त¯ से इस तमाशे मे हूँ पर यहाँ भी ऐसे ही हूँ जैसे छुट्टी पर. वक्त आयगा और जाने की घड़ी सामने दीखेगी—तभी मैं फुर्र-र्र से भाग जाऊँगी."

"कहाँ जाओगी?" जेनी ने अधीरता से पूछा.

"कहाँ क्या, दुनिया बड़ी है—और मैं जिन्दगी से प्यार करती हूँ. मठ में थी तब भी मैं ऐसी ही थी. वहाँ रहती चली, रहती गई. भजन गाती थी और प्रार्थना में शामिल होती थी. यहाँ तक कि जी भर गया और उस तरह के जीवन मे थकान होने लगी. तो हुआ यह कि एक छलाँग ली और सीधी नाटक के स्टेज पर आ पहुँची···कहोगी, खासी लम्बी छलाँग' है ना?···वैसे ही कुछ समझो कि अब एक कूद लगा लूँगी·····जाकर हो जाऊँगी किसी सरकस में या स्वांग वालों के संग या नौटंकी में लेकिन जेनी एक कारबार मुझे पसन्द नहीं और बार-बार मन उधर जाता है वह है चोरी का कारबार···हिम्मत उसमें चाहिये, होशियारी और बडी सावधानी. उसमें काम सख्त होता है और सारा जी चौकन्ना बना रहता है. उसका अलग मजा है. उसकी कोशिश मुझे छोड़ती नहीं है. मैं जो ऊपर से बड़ी भली, सजीली दीखती हूँ और ऐसी कि बड़ी शिक्षित होऊँ इससे

तुम कुछ और न समझना. मैं उससे एकदम और हूं. बिल्कुल दूसरी हूं."

कहते कहते एकाएक उसकी आंखों मे चमक आ गई एक शरारत उनमें खेल आई. 'असल में मेरे अन्दर शैतान वास करता है. कोई शैतान.''

"तुम्हारे साथ तो भी ठीक है." शिथिलता से जेनी बोली. उसकी वाणी में थकान थी और उदासी थी."तुम आखिर कुछ चाहती तो हो पर मेरा मन तो अन्दर मर गया है, सब सूख गया है ठठरी बन गया है · मै अब पच्चीस बरस की हूं. लेकिन मन ऐसा है जैसे एक गई बीती बुढ़िया का हो. सारे में वहां सिमटन है, सिकुड़न है और मात की गन्ध आती है ···जो मैं जरा समझ मे रहती···ॲह, चारो तरफ सब गन्द ही गन्द था"

"छोड़ो जेनी, क्या फिजूल बके जा रही हो. तुम मे ताजगी है. तुम होशियार हो. तुममे व्यक्तित्त्व है मौलिकता है. तुममे वह एक खास ताकत और कोशिश है जिससे लोग खिचते और कृतार्थ होते है, तुम्हारे आगे रेंगने को तैयार हो सकते है. तुम भी यहां से भाग निकलो. नही, मेरे साथ नही, मैं तो सदा एक इकली रहती हूं. लेकिन अपने से खुद तुम यहां से लापता हो जाओ.'

जेनी ने सिर हिलाया और आहिस्ता से बिना आंसू लाए अपना मुंह दोनो हथेलियों में छुपा लिया.

"नही," लम्बी देर तक चुप रहने के बाद आखिर मन्द भाव से वह बोली,"नहीं वह मेरे साथ नही चलेगा. भाग्य ने मुझे चबाकर छोड़ दिया है. अब मैं "इन्सान नहीं रह गई हूं बल्कि मुंह से उगली जुगाली के मानिंद हूं··· ॲह, "अकस्मात् निराशा के भाव से उसने हाथ फेंका, अपने स ही बोली, "आओ जेनी, जरा चखकर देख लो, और यह नीबू है लो जरा-सा लेकर देखो तो " अरर्र ! क्या मनहूस ठर्रा है कहां से मेरी अनिका ये सब गन्द उठाकर ले आती है. कही कुत्ते के मल दो तो बेचारे के सारे बाल झड़ जायें···चीज हमेशा देगी सड़ी बुरी, और दाम लगायेगी बढ़-चढ़ के. मैंने यूं ही एक बार पूछा, "तू यह सब पैसा किस लिए जोड़ रही है." बोली, "मैं यह शादी के बखत के लिए जोड़ रही हूँ. कहने लगी, "मेरा बन्ना कैसा खुश होगा कि मैं बिल्कुल क्वारी हूँ और एकदम अछूती उसे मिल गई हूँ. तिस

पर कुछ रुपये भी कमाकर साथ उसके पास ले जा सकूंगी तो—" वह खुश है तिमिरा यहाँ इस बकस मे वह जो आईने के नीचे रखा है, उसमे कुछ रुपये रखे है ये देखना, उसे दे देना."

"तुझे हो क्या रहा है ? क्या ठानी है मन मे मरख-मरना चाहती है या क्या " दपट के साथ तेज होकर तिमिरा बोली

"नहीं, यो ही कह रही हूँ कि अगर कहीं कुछ हो जाए यह ले लो. कहती हूँ पैसा पास रख लो हो सकता है कि वे मुझे अस्पताल ही भेज दे और तुम क्या जानो वहाँ फिर क्या होगा जरूरत के लिए मैंने कुछ रेजगारी अपने पास रख ही ली है और मान लो कि मैंने अपने साथ कुछ ऐसा वैसा करने की ठानी भी हो तो तिमिरा—तुम क्या मुझे उससे रोकोगी ?

तिमिरा ने निगाह गाडकर उसे देखा गहरे भाव से और शान्त जेनी की आखें उदास और सूनी थी जीनी आग उनमे बुझ गई थी. लगता था कि उनका सफेद भाग चाक-सा धौला हो आया है और आस-पास फीकापन जमा दीखता है

"नहीं," तिमिरा अन्त मे आहिस्ता से पर अडिग भाव से बोली, "प्यार की वजह से होता म जरूर बाधा देती. पैसे वगैरह की वजह से होता तो समझाती बुझाती, लेकिन कभी होता है कि तब किसी को अड़चन डालने का हक नही रहता मे मदद तो अलबत्ता कभी नहीं करूँगी लेकिन पकड कर तुम्हें रोकूगी भी नहीं नही, मे दखल नहीं दूंगी."

उसी समय चपलता से शरीर को हिलाती जकिया सिदगी ने मे नमूदार हुई चीखती-सी आ रही थी "छोकरियो, पहन पहान के कपडे तैयार हो जाओ डाक्टर आ गये है सुनो सब जेनी, तैयार हो जाओ सुनिये, आप लोग तैयार हो जाइये "

"अच्छा तिमिरा, तुम चलो." जैनी ने उठते हुए बडे स्निग्ध भाव से कहा, "मै जरा एक मिनट के लिये अपने कमरे मे हो आऊँ. मैंने अभी कपड़ा नही बदला अगर्चे सच कहूँ तो यह वह सब कपड़ा एक-सा है. वे जब मेरा नाम ले और मैं अगर वक्त पर न पहुँचूं तो जोर से कह देना या दौड़कर

मुझे बता जाना."

और तिमिरा ने कमरे के बाहर जाते-जाते, मानो संयोग से हो, कन्धे लगकर उसने आलिंगन लिया और धीमे से उसे थपका.

शहर के मैडिकल अफसर डॉक्टर क्लीमैनको मुआयने की सब चीजें अपने कमरे में तैयार कर रहे थे. वैसलीन थी. और कुछ पीले से घोल और छोटा-सा शीशा और इस ही तरह की दूसरी मुतफर्रिक चीजें, उठा-उठाकर सफाई से उन्हें दूसरी मेज पर रख रहे थे. यहीं उनके सामने उन सबके नामों की फहरिस्त थी और सफ़ेद कोरे टिकट थे, कि जिनको फिर भरा जाना था. लड़कियां ऊपर से सिर्फ कमीजें डाले और पैरों में स्लीपर डाले उनसे जरा दूर पर बैठी थीं. मेज के पास खुद मालकिन अन्ना मरकानी खड़ी थी. और जरा उसके पीछे होकर एमा उडवानी और जकिया अपनी जगह लिये हुए थी.

डाक्टर उमर रसीदे आदमी थे. इस क़दर बेढ़गे, मन्दे और पस्त वह मानों जग से उदासीन थे और सबसे. उन्होंने अपना किसी क़दर लाल-सी नीली होती हुई नाक पर टेढ़ा करके बिना कमानी का चश्मा रखा, फहरिस्त को नीचे से ऊपर देखा और फिर ऊपर की तरफ से पुकारना शुरू किया,"

"सिकन्दरा."

बैठी-सी नाक वाली नाटे क़द की नीना भौयें समेटती- सी कदम रख-कर आगे आई. चेहरे पै परेशानी लिये, शर्म से हांफती-सी अपनी झिझक से झिझकती और बिगड़ती फिर भी अपने साथ झगड़ती-सी वह बेढ़गपने से चढ़कर सामने मेज के पास पहुँची. डाक्टर ने अपने बेकमानी के चश्मे में से झांककर जो हर मिनट उतर-उतर जाता था, अपना मुआयना पूरा किया.

"चलो, जाओ,···तुम ठीक हो."

और सफेद कार्ड की पुश्त पर उसने घसीट दिया, २८ अगस्त शिकायत नहीं, सालिम, दुरुस्त !" लिखना पूरा न हुआ था कि आगे पुकारा,

"वाशंकोवा, इर्रील ..."

अब लुवी का नम्बर था. पिछले महीने डेढ़ महीने की अपेक्षाकृत आजादी के बाद यह कुछ इन हफ़्तेवार मुआयनों की आदी न रह गई थी. इसलिये जब डाक्टर ने कमीज को लुवी की छातियों पर से उठाया तो वह ऐसे लाल पड़ आई जैसे बड़ी लजीली कुलवधुएँ जरा छाती या कमर उभरते ही लाज में मर-सी आती हैं.

उसके बाद नम्बर था जोहरा का. उसके बाद नन्हीं गोरी मनका का, फिर तिमिरा फिर न्यूस्का, इस आखिर वाली नूरी को डॉक्टर ने देखा कि सूजाक है. फौरन हुक्म लिखा कि अस्पताल भेजा जाये.

मुआयना डॉक्टर इतने सपाटे से करते जाते थे कि अचरज होता था. कोई पिछले बीस बरस से आये हफ़्ते, हर शनीचर को वह कई सैकड़ा लड़कियों का इस तरह मुआयना! करते आये थे. उन्हें यह कला सिद्ध हो गई थी. हाथों में वह मफाई और चाल ढाल, वह लापरवाही आ गई थी कि जो मरकस के मधे खिलाड़ियों में आ जाती है. हाथ तेजी से चलता और निगाह अचूक काम करती. दूसरे पेशेवर लोगों में जो सफाई आ जाती है. खास कर पत्तेबाज किस्म के हुनर बन्दों में जो चीज पैदा ह जाती है कुछ वही सफाई और अदा इन्हे रवा थी. उमी शान्त, तटस्थ, अनासक्त भाव से लड़कियो को गिनते और देखते जाते थे जैसे दिन में सैकड़ों के हिमाब से पशुओं का डॉक्टर ढ़ोर डँगरों का मुआयना कर जाता है.

क्या उस डॉक्टर को खयाल होता था कि सामने उसके जीते जागते इन्सान हैं या कि सिर्फ वह उस संगीन जंजीर की महज एक कड़ी था जिसको कि व्यभिचार का वैध व्यवसाय कहा जाय.

नहीं, और अगर उसे यह खयाल हुआ भी होगा तो शुरू में जबकि उसने अपने पेशे में क़दम रखा ही होगा. अब तो उसके सामने थे नंगे, उघड़े पेट, नंगी पीठ और खुले मुँह. हर शनीचर को वह उन सैकड़ों में से जिनका इस तरह मुआयना करता था किसी एक को भी पीछे पहचान न सकता. क्योंकि वे सिर्फ धड़ थे चेहरा किसी पर न था. उम वक्त उसे एक ध्यान था कि कब एक ठिकाने का मुआयना ख़त्म हो कि दूसरे पर

पहुँचे, दूसरे से तीसरे और ऐसे दसवे, पचीसवे

"सुमाना रैक्ज़ीना !"

डॉक्टर ने अन्त में नाम पुकारा. उस पुकार पर कोई लड़की चल कर मेज तक नहीं आई.

इस पर ठिकाने पर रहने वाली सब जनी एक दूसरे को देख उठी और कानाफूसी कर निकली.

"जेनी जेनी कहाँ है !'

पर वह उनके बीच न थी. आस-पास भी न थी.

इस पर तिमिरा जो अभी हाल डॉक्टर के मुआयने से फारिग हो चुकी थी बढ़ कर आगे आई और बोली, "वह यहा नही है अभी तैयार होने का उसे अवसर नहीं मिला माफ कीजियेगा डॉक्टर साहब इजाजत हो तो मैं जाकर उसे बुला लाऊँ ?'

बरामदे मे से होती वह तेजी से चल दी लेकिन कुछ जल्दी वापिस नहीं लौटी. पीछे-पीछे फिर उसके पहले तो गई एमा उडवानी, फिर जकिया, फिर दूसरी कई लडकियाँ और अन्त मे खुद अन्ना मरकानी उठ कर देखने चली.

'शिः क्या वाहियात बेहूदा बात है " बरामदे को अपने चौड़े शरीर से घेर गुस्से मे बड़बडाती एमा उडवानी कह रही थी, 'और हमेशा जब देखो यह मरी जेनी·· हर हमेशा जेनी · मेरा तो सबर खत्म हो गया सच कहती हूँ···"

मगर जेनी कहीं थी नहीं. अपने कमरे मे नहीं थी तिमिरा वाले मे भी नहीं थी. दूसरे सब कमरो, कोठियों मे उसे देखा, कोने छाने, तिदरियाँ देखी ···पर एक दम कहीं उसका पता न था.

जोहरा बोली, "गुसलखाना तो देखा ही नहीं शायद वहाँ हो "

पर यह जगह अन्दर से बन्द थी. भीतर से चटखनी बन्द की मालूम होती थी. एमा ने मुक्के से किवाड़ पीटना शुरू किया.

"जेनी, यह क्या बेवकूफी है ! आखिर बाहर आओ ना."

फिर उसने अपनी आवाज़ और ऊँची की और बेहद बेसब्री के साथ

धमकाते हुए कहा, "कुतिया की बच्ची, सुनती नही हैं··· निकल के आ फौरन डॉक्टर इन्तजार मे बैठे है."

पर कहो मे किसी तरह का जवाब नही आया.

तब सब की निगाहें एक दूसरे की ओर उठी, उनमे दहशत थी सब के कलेजो मे एक ही ख्याल एक साथ कौंध गया.

रमा उडवानी ने दरवाजों के पीतल के मुट्ठे पकड़कर जोर से दरवाजों को खड़काया पर दरवाजों ने चूं न की.

अन्ना मरवानी ने कहा, "साइमन को बुलाओ. वह खोलेगा."

साइमन को बुलाया गया · जैसा हमेशा रहता था झक मे और ऊँघ में बुदबुदाता-सा वह आया. सब जनियों के ओर आया के बदहवास चेहरो से वह समझ गया कि कही कुछ बात गडबड की हुई है. कुछ मामला है कि जिसमें उसके बल की और कुशलता की जरूरत हुई है. जब उसे बताया गया कि क्या माजरा है तो उसने दोनो मुट्ठों को अपनी मुट्ठियो में थामा और बिना कुछ बोले दीवार से कमर टेक एक जोर का झटका दिया

मुट्ठे उसके हाथो मे रहे और वह पीछे धक्के के मारे फर्श पर गिरते-गिरते बचा।

"ऊंह ! कम्बख्त ! ' नशे मे बुदबुदाता-सा वह बोला, ' एक चाकू तो लाना."

दरवाजे की दर्ज मे चाकू देकर काटते-काटते वह चटखनी तक पहुँचा. आखिर छेद इस कदर बड़ा हुआ था कि उंगली जा सके. जैसे-तैसे चाकू और उंगली के सहारे चटखनी को धकेला गया सब, धात की आपस की रगड़ की आवाज आती रही और कुछ नही आखिरकार साइमन कामयाब हुआ और दरवाजा खुला जेनी वहा गुसलखाने के बीचोबीच लटकी हुई थी. अपने ही इजारबन्द मे फंसा उसका गला टेढ़ा हो गया था. इजार बन्द छत में लगे लालटेन के कुंडे से बंधा था. देह उसकी कडी हो आई थी. मालूम होता था जान निकले तो हो गई है. यातना ज्यादा देर न भुगतनी पड़ी होगी. वह देह हवा मे झूल रही थी बस जरा दायें-बायें हलका-सा आभास देकर हिलती होगी अन्यथा अपने समलम्ब पर वह अधर में मानो जम आई थी.

चेहरा नीला लाल था और जीभ भिचे और खुले दांतों के बीच से बाहर निकली हुई थो. कुंडे में रहने वाला लैम्प भी वहीं फर्श पर लेटा पड़ा था.

किसी ने देखते ही जोर की चीख दी और फिर सारी जनी लथपथ एक दूसरे पर टूटती सी तंग बरामदे मे से अन्दर घुम आने लगी. रो रही थीं और बिलख रही थीं और उनका बुरा हाल था.

रोने बिलखने की आवाज सुनकर डॉक्टर वहाँ आन पहुँचा···आया ही. यानी बाक़ायदा क़दम-क़दम चलकर. कोई झपट कर भाग कर नहीं आया. देखा कि मामला क्या है तब भी उसे अचरज नहीं हुआ न उसमें उत्साह आया. पुराने डॉक्टर की हैसियत से अपने काम में उसे ऐसी वारदात जाने कितनी ही देखने को मिली होंगी. वह उनसे अघा आया था. आदमी का दुख त्रास देखते-देखते वह अपने में उस तरफ बेहिस और कड़ा पड़ गया था. उसने साइमन को कहा, कि लाश को उठाकर जरा ऊँचा करे. और खुद किसी चीज के सहारे ऊपर चढ़कर इजारबन्द को उसने काटा. फिर बाक़ायदा हुक्म दिया कि जेनी की काया को उसके अपने कमरे में ले जाया जाये. वहाँ साइमन की मदद से कोशिश की गई कि हो सके तो बाहरी उपाय से साँस फिर जारी की जाये पर कोशिश क़ायदे की थी और ज्यादा नतीजा निकलता न देख पाँचेक मिनट में छोड़ दी गई. उसके बाद बेकमानी के अपने चश्मे को उसने नाक पर रखा, कहा, "पुलिस को खबर दी जाये कि वह मामला इंदराज करे."

फिर वर्केश आये और मालकिन के अपने छोटे से कमरे में बैठकर उससे देर तक घुसफुस बातें हुई. फिर उसी तरह जेब में मरोड़कर सौ रुपये का नोट रखा.

दस्तावेज पाँच मिनट में तैयार हो गया और जेनी उसी अर्द्धनग्न वेष में जैसे वह लटकी थी किराये के एक ठेले में लादकर और दो चटाइयों के ओढ़ने बिछाने में लिपटकर पोस्टमार्टम वाले घर रवाना कर दी गई.

जेनी लिखकर अलमारी के ऊपर जो एक पुर्जा छोड़ गई थी वह पहले-पहल एमा उडवानी को मिला. वह उस कापी का फटा हुआ पन्ना था जिसपर हर जेनी को अपने खर्च वग़ैरह का हिसाब-किताब रखना जरूरी

होता है. बबकाने से गोल-गोल अक्षर बने थे. इबारत पैन्सिल से लिखी थी और साफ था कि अपनी अन्तिम घड़ियों में लिखने वाली के हाथ काँप नहीं रहे थे. लिखा था :

"मैं हाथ जोड़कर कहती हूं कि मेरी मौत के लिये कोई जिम्मेदार नहीं है. मैं मर रही हूं क्योंकि घिनौना रोग लग गया है. और लोग सब यहां कुत्ते हैं और जीना बेकार है, उससे ऊब होती है. मेरी चीजें — तिमिरा जानती है वह कहे जैसे बांट दी जायें. मैंने खुलासा बता दिया है."

ऐमा उडवानी ने मुड़कर तिमिरा को देखा. वह दूसरी ओर लड़कियों के साथ वहीं खड़ी थी. देखकर उसकी निगाह में कैमी एक ठंडी तीखी नफरत सी ज़ल आई और सिसकारी भरती बोली,"तो सुअर की बच्ची तू जानती थी पहले से कि यह तैयारी हो रही है क्यों री ? चुड़ैल ? ·· जानती थी और कहा नहीं."

वह आगे बढ़ने को जरा पीछे हटी जैसा कि उसकी आदत थी ऐसे ही वेग लेकर वह किसी पर टूटती थी. ख़याल था कि मार-मार कर मैं इसे अधमरी कर दूंगी लेकिन हटी कि वह पीछे हटी-की-हटी रह गई. एकाएक वह अपनी जगह पर ठिठक आई. ज्यों-का-त्यों बाया-का-बाया रह गया. और आँखें वैसी ही फटी-की फटी रह गईं. जैसे कि इस तिमिरा को वह पहली ही बार देख रही हो. तिमिरा कुछ ऐसी सख्त, थिर दीप्त दृष्टि से देख रही थी कि सहना मुश्किल था. फिर धीरे-धीरे उसने निगाह ऊँची की. ऐसे कि वह एमा के ऐन सामने हो आई और एमा ने देखा कि कुछ सफेद धात की तरह ज्वाला देकर वहां कुछ जल रहा था देखा और वह सहमी रह गई.

६

उसी शाम अन्ना मरकानी के ठिकाने के इतिहास में एक बड़े महत्त्व की घटना घटित हुई. वहां का सारा कारोबार मय जायदाद, चल-अचल,

जड़ चेतन, अन्ना से एमा के हाथ में पहुंच गया. अब रालकिन एमा उड-वानी थीं.

अर्से से इस सम्बन्ध की बातचीत उनमें थोड़ी बहुत होती रही थी. ठिकाने मे इसकी अफवाहे सुनी ही जाती थीं मबर जेनी को मौत के एकाएक बाद यह अफवाहे एक बार ही वास्तविकताए बनकर सामने आयी, तो वहां कि लड़कियाँ बहुत देर तक तो मारे अचरज और डर के कुछ ठीक तरह समझ ही न सकी. वे अपने अनुभव से खूब जानती थी कि एमा के मालकिन होने का मतलब क्या है. दया का उसमें नाम नही था. और ऐसे बरतती थी जैसे एकदम उस्तादनी हो. उसमे गुमान था, लालच था, और जो भी उसकी चहेती बनती उसके लिए एमा का अनुराग अजब-अजब तरह के रूप लेता था. यह अनुराग अप्राकृतिक हो जाता और उसका चाव बदलता रहता था. इसके अलावा यह बात किसी से छिपी न थी कि उन पन्द्रह हजार रुपयों मे जो चलता कारोबार पाने के एवज मे पहली मालकिन को दिये गये थे कोई तिहाई रकम वर्कंश की थी. वर्कंश मे और उस मोटी एमा में मुद्दत से किसी तरह का सम्बन्ध चलता था, कहना मुश्किल है. दोस्ती भी थी, व्यवसाय भी था. इस तरह के लोभी, बेहया और निर्दय दो आदमियों के संयोग मे से क्या कुछ नही फल सकता था. और लड़किया हर तरह के सकट का अपने लिये अनुमान करती सशक हो आई थी

अन्ना मरकानी ने भी मरने पर सारे कारोबार का सौदा उठाकर चैन की सांस ली. वजह सिर्फ यही न थी कि वर्कंश कभी भी किसी तरह का बहाना खोज कर मामला उठा सकता और सारे काम धाम को और उसको एकदम हड़प जा सकता था. हो सकता है कुछ दबी ढकी गुप चुप बातों का वर्कंश को पता न हो फिर भी बातों और बहानों कि कमी न थी. साल में सैकड़ों ही ऐसी वारदातें मिल सकती थीं कि और कई उनमें ऐसा संगीन रूप ले सकती थीं कि उनकी बिना पर न सिर्फ यहचकला ही खत्म हो जाता बल्कि उसके अलावा अदालत में घिसटने की नौबत आ जाती.

यों अन्ना मरकानी झीकती-बिलखती कम न थी. अपनी किस्मत को कोसती और अपने अनाथपने का रोना रोती थी. कहती मैं गरीबिनी

बेचारी लुट गई पर अन्दर से वह सौदे पर नाखुश न थी. सच यह कि इधर काफी समय से उसे लगने लगा था कि मरा बुढ़ापा उस पर बढ़ा चला आ रहा है और जाने क्या-क्या रोग वह साथ न लायेगा. इससे चाहती थी कि आखिरी वक्त कुछ एकान्त विसराम उसे मिल जाये और सिर पर खड़ी कोई उलझन न रहे. सच यह कि अपनी शुरू जवानी में जब खानगी रखैल की हैसियत से उसने जिन्दगी शुरू की थी तो उसे इस सब का सपना भी न था. मगर आप-ही आप एक-एक चीज चली गई. जड़े नग सा एक मकान खड़ा हो गया जो शहर के करीब बीचो-बीच खासे इज्जतदार मोहल्ले में बना था. इन्टरनैशनल बैंक में नकद सवा लाख रुपया जमा था. सुन्दर, प्यारी बिटिया बड़ी थी जिसे आज नहीं तो कल अच्छा खासा कुलीन वर मिल जाने वाला था. क्योंकि भरे पूरे दहेज का इन्तजाम था और जेवर भी कई नग चढ़ाने की तैयारी थी. ऐसे कोई इन्जीनियर या बड़ा अफसर या साहबे जायदाद या कमेटी कौंसल का मेम्बर मिलने में शक न था. ऐसे बुढ़ापा शान्ति और सम्पन्नता से भरा पूरा था.…अब सम्भव था कि अपने आराम के साथ बिना किसी उतावल या तनाव के संभ्रम और शालीनता के साथ नाना व्यंजनों का उपभोग करती, उसके स्वभाव में इन सुस्वादु पदार्थों के लिये आग्रह की कमी न थी. उसी प्रकार नाना पत्र आ सकते थे जिनका उसे चाव था. शाम होने पर नगर की सम्भ्रान्त महिलाओं के साथ आना प्वाइण्ट की बाजी पर ब्रिज खेलती. यह भद्र और अभिजात महिलायें मानो अन्ना के व्यवसाय का अता-पता न जानती थी. न जानकर उनकी अभ्यर्थना सविशेष हो जाती थी कारण कि व्यवसाय कोई हो उससे होने वाली आमदनी की रकम तो थोड़ी थी नहीं. उस आमदनी के मुताबिक ही उनका आदर बढ़ता था और अन्ना को वे पूरा मान देती थी. और इन अभिजात वर्ग की सम्मान्य महिलाओं में जो उसके बुढ़ापे के सुख चैन की साथिन और सहयोगिनी थी, क्रमश: सम्मिलित थी—चीजों पर रुपया उधार देने वाली एक बड़ी दुकान की मालकिन; दूसरी थी रेल लाइन के पास बने बड़े होटल की मालकिन; तीसरी की थी एक जौहरी की दुकान जो यों बड़ी न हो पर जिसमें

बड़ी चोरियों का सब माल आके पहुँचता था, आदि-आदि. इधर अन्ना मरकानी भी इनके बारे में जानने लायक काफी जानती थी अगर्चे वह सब कहने की जरूरत न थी. इस समाज में यह जरूरी न था कि घरबार की आमदनी या उसके पिछवाड़े की बात की जाए. वहाँ तो कुशलता को मान मिलता था. और साहस को, सफलता को, और सबसे अधिक व्यवहार की सभ्य शालीनता को सम्माननीय समझा जाता था.

इसके अलावा एक और बात थी, अन्ना का मस्तिष्क चाहे कितना ही सीमित और विशेष विकसित न हो मगर उसमे कुछ प्रत्युत्पन्न बुद्धि थी. कुछ अन्दर की सूझ थी जिसका सहारा लेकन जीवन-भर वह झगड़ों झमेलों से किनारा लिये चली गई और समय पर राह की उसे कमी न रही. इससे गबदू की आज आकस्मिक मृत्यु और कल जेनी के अपघात के बाद वह अन्दर-ही-अन्दर सीधे समझ गई कि भाग्य अब विमुख होने वाला है, अब तक उसने उसका साथ दिया. आपदाये टलती गई बल्कि विपत्तियों मे से उसके लिये विभव निकलता चला गया. पर हवा को उसने रुख से ही पहचान लिया. और समय पर उसने चाल बदली.

कहते हैं जब किसी मकान में आग लगने को होती है या जहाज डूबने को होता है तो वहाँ भिट बनाकर रहने वाले चूहे आपदा की टोह पा जाते हैं और अपनी जगह बदलने लग जाते है. कुछ ऐसी ही घ्राण शक्ति मानो अन्ना मरकानी मे थी. वह जैसे अनागत को सूँघ गई, मानो वह भी चूहा हो. कुछ अन्दर उसके उठता और आगे की कह जाता. और वह अपने अनुमान मे सही निकली. जेनी की मौत के फौरन बाद यानी अन्ना के हाथ से जाने और एमा के हाथ में आने के साथ ही वेश्याओं के उस ठिकाने पर मानो एक साथ काले बादल घिर आये. मौतें हुई, मुसीबतें घटी और एक-पर-एक वारदातों का सिलसिला ऊपर से फट पड़ा. शेक्स-पियर के दुखान्त नाटकों में जैसे एक दुख आता है तो पीछे उमड़ते दूसरे दुखों की धारायें भी टकरातीं सी चली आतीं हैं. कुछ वही हाल इस ठिकाने का बना. यही क्यों आस-पास के दूसरे चकलों के साथ भी कुछ ऐसा ही अघटनीय घट उठा.

धन्धे के हाथ में के हफ्ते भर बाद पहले मरने वाली खुद अन्ना मरकानी ही थी. ऐसा अकसर होता है जो लम्बे वक्त तक, कहो तीस-चालीस वर्षों तक एक ही पटड़ी पर चले आते है. उससे अलग हटने पर फिर वे जी नही पाते. जग में गये नामी बहादुरों का यही हाल होता है. तन्दरुस्ती ऐसी कि रश्क हो और तबियत फौलाद सी सख्त पर मोर्चे से हटकर घर से आराम से बैठे कि लुढ़क गए. ऐसे ही बड़े स्टोरिये आज बाजार को ऊपर से नीचे रखते है पर उस भागे खतरे के ऊंच-नीच, उथल-पुथल की दुनिया से हटकर चैन मे बैठे नही कि आँख मूंद सिधार रहे. इसी भांति बड़े कलाकार संहर्ष और प्रकाश से बाहर हुए नही कि कमर से झुक आये सिमट गए और चलने बने उसकी मृत्यु ऐसी हुई कि अनुकूल. ताश खेल रही थी कि उसे अपना जी कुछ गड़बड़ मालूम हुआ. साथनों से कहा कि जरा ठहरे, एक मिनट मे जरा कमर सोधी करके मैं आती हूं. गई पलंग पर लेटी गहरा एक सांस लिया और लिजिये— परलोक चल बसी. चेहरा शांत ओठों पर थकी सी एक तुष्ट मुस्कराहट. हसिया सविश जो जीवन के राह भर उसके साथी रहा और वफा निबाही— वह भी इसके बाद महीने भर से ज्यादा न रहा और साथ देने चल दिया. दोयम रहा जरा पीछे और जरा नीचे. मृत्यु के बाद भी उसने अपनी वह दोयम जगह निबाहे हो रखी.

बर्टी एक अकेली उत्तराधिकारिणी बची. उसने जड़े नग जैसे अपने मकान को बड़ी सफलता के साथ बेचकर नक़द कर लिया. शहर के बाहर लगी अपनी जमीन को भी बेच डाला. आशा के मुताबिक बड़ी अच्छी जगह विवाह किया और अब आज दिन तक उसे विश्वास है कि उसके पिता लायलपुर से गेहूँ को दूर दिसावर भेजने का जो लम्बा-चौड़ा व्यवसाय करते थे वही उद्यम उसकी सम्पन्न कुलीनता के मूल में है.

जेनी के शव को जब गाड़ी मे रखकर मुआयने के लिए भेज दिया गया तब उसी शाम एमा के आग्रह पर सब जनी ड्राईंग रूम में आकर इकट्ठी हुई. वह ऐसा समय था जब शायद ही कोई बाहरी मेहमान इस तरफ आता. इकट्ठी हुई पर कोई उनमें विरोध का एक शब्द न कह सकीं जेनी की हैरतनाक मृत्यु का असर उन पर ताजा था और अभी वह सब उससे तनिक न

उभर सकी थी. पर इस दिन भी हमेशा की माफिक अपना साज सजाना होगा रोशनी से जगमगाते हाल मे पहुच कर गाना नाचना होगा और वस्त्रों मे ढ़की से ज्यादा उघडी अपनी देहो का प्रदर्शन और प्रलोभन देकर काम-तप्त लोगो को रिझाना होगा

और अन्त मे हॉल मे खुद श्रीमती एमा उडवानी का पदार्पण हुआ. इतनी प्रभावशाली वह पहले कभी न दीखी थी सिर से पैर तक काली साडी थी उसम से विशाल वृक्ष किले म से दो बुर्ज की तरह सन्नद्ध मे बाहर निकले थे उन पर ऊपर से दोहरी डोरियाँ रक्षा कर रही थी लहरी होकर एक मोत की चेन ग्रीवा का वलय देकर वहाँ लटकी हुई थी उसके सिरे पर एक लाकेट झूलता-झूलता पेट तक नीचे आ गया था

"सुनिये, आप लोग ··" गाढी से स्वर म उसने शुरू किया, "म कहती हूँ···सब खडी हो जाए" एकाएक उसके स्वर म हुक्म बज आया, जब मै बोलू तो आप लोगो को खडे होकर सुनना चाहिए

सब जनी हैरत मे एक-दूसरे को देखने लगी. यह हुकुम तो ठिकाने म एक नई चीज ही थी. ताहम लडकिया आखों मे अचरज भर, मह बाए-सी, झिझकती-ठिठकती एक के बाद एक खडी होती गइ.

"यह ठीक है···इस रोज मे तुम लोगो को मेरा वैसा ही आदर करना चाहिये जो मालकिन का होता है" बडी महत्वशीलता और गम्भीरता से एमा उडवानी ने कहना शुरू किया, "आज इस तारीख मे यह चीज बाकायदा श्रीमती अन्ना सरकारी के हाथो मे मेरे एमा उडवानी के हाथो मे आ गई है लिखा पढी हो गई है, दस्तावेज हो चुका है. आशा है हम लोग सदभाव से रहेंगे और कोई अनमनापन नही आयगा. आप सब लोग ऐसे व्यवहार करेगी जैसे आज्ञाकारी, कुलीन, शील स्वभाव की लडकियो को करना चाहिए जैसे माँ होती है वैसे आप मुझे समझे लेकिन ध्यान रहे कोई बेहूदगी मै बर्दाश्त नही करूँगी. काम मे सुस्ती, या नशा, या और किसी तरह की बहक को नजरन्दाज न किया जायेगा. कोई अव्यवस्था या हुक्म अदूली सही न जायगी शायद मैडम शैप्स ज्यादा सख्त थी और उन्होंने कडी ताक़ीद में रखा. और शिस्त का सवाल है, वहाँ मैं कम

सख्त न रहूंगी शिस्त पहली चीज है सबसे पहली बडी शर्म की बात है कि हम भी काहिल होते हैं और गन्दे और बे-वकूफ ! और इस शिस्त के नियम नही जानती पर तुम लोग घबराओ नही. तुम्हारे भले के लिये मैं वह सब तुम्हे सिखा दूगी कहती हू तुम्हारे अपने भले के लिये. क्योकि मेरा आम खयाल है कि मुकाबले मे टैंपल को नीचे दिखाकर रहना है मैं चाहती हू कि हमारे यहाँ का गाहक ऊँचे किस्म का हो, इज्जतदार हो, सत्‌दार हो, कुछ हो उसकी जेब मे यह नही कि कोई ऐरा-गैरा या कोई पढने वाला या एक्टर या इसी तरीके का कोई उठा, चार पैसे जेब मे लिये और यहाँ आ धमका मै चाहती हूँ कि हमारे यहाँ की नाजनीन ऐसी हो कि शहर मे सबसे सुन्दर ! नजीली और नमाकनी खुश और तन्दुरुस्त उसी मुताबिक यहाँ का सामान होगा और उसके लिये मै खर्च का मुह नही देखने वाली हूं कमरों मे तुम्हारे कालीन होंगे और खूबसूरत आला किस्म की तोशके और सब फर्नीचर नंबर एक गाहक . . गान फिर ठर्रा या देसी न मॉगेगे बल्कि विलायती स्काच चाहेगे और वही उन्हे पेश होगा याद रखो एक रईस, तबियतदार, बुजुर्गाना तबियत का आदमी महज मामूली किस्म का प्यार पसन्द नही करता वह उसमे मसाला चाहता है, तेज मिर्च ! कोरा काम काज नही बल्कि उसे कला चाहिए और जल्दी ये सब तुम सीख लोगी टैंपल मे जो एक मुलाकात के तीन रुपये लेते है और रात भर के दस मैं ऐसा करूंगी कि तुम मुलाकात के पाँच और रात भर के पच्चीस रुपये पाओ तब तोफो मे तुम्हे सोने की चीजे मिला करेंगी या हीरो की ऐसा इन्तजाम करूँगी कि उतर के तुम्हे नीचे ठिकानो का मुँह न देखना पडे कि जहाँ .. गिरहकट आते हैं और रगरूट और जगह टकियाई होती है नही तुम्हारी बचत हरेक की महीने के महीने मेरे पास अलग जमा हुआ करेगी वह तुम्हारे सबके अलग-अलग नाम से बैंक मे जमा होगी वहाँ उस पर सूद बढेगा और सूद पर फिर सूद आवेगा और तब अगर कोई जनी समझे कि मै थक गई हूँ या किसी से ब्याह करके इज्जत के साथ घर बसाकर बैठना चाहती हूँ तो उसके पास बहुत लम्बा-चौड़ा नही तो कुछ असासा तो पक्का पास मे मौजूद रहेगा ही. बड़े-बड़े चकलों मे, मसलन विलायत मे या दुनिया मे सभी अच्छी

जगह यही इन्तजाम रहता है. कोई यह न कहे कि एमा उडवानी जोंक थी, मक्खीचूस थी या किसी का खयाल नहीं करती थी. मगर जो किसी ने आज्ञा भंग की या आलसीपना किया या अमानत में ख़यानत की यानी कि गाहकी के अलावा किसी को मन का प्यार दिया तो मैं फिर वह सजा दूँगी कि याद रहे. सरकंडे की तरह निकालकर बाहर फेंक दूंगी गली में. या उससे बढ़कर भी कुछ हो सकता है. तो अब तुम लोगों ने सुन लिया, सब. जो मैं कहना चाहती थी नीना, यहाँ आओ पास आओ. और बाद तुम सब लोग भी बारी-बारी से पास आती जाओ."

नीना अनिश्चय से गे पड़ती हुई एमा उडवानी के पास आई और एक अचम्भे से मैं चिहुँककर पीछे हो पड़ी. एमा उडवानी ने अपना दाँया हाथ बढ़ाकर उसकी तरफ किया हुआ था. उँगलियाँ उसकी नीचे की ओर थी और वह धीमे-धीमे नीना के होंठों के पास आ रहा था कि उसे चूमा जाये.

"चूम सकती हो इसे ··" कहते समय एमा उडवानी की आँखों की पलकें लगभग मिल आई थी. सिर पीछे को था. स्वर प्रभावशाली और दृढ़ था मानो सिंहासन पर बैठी राजरानी हो.

नीना अचरज से ऐसी बौखला आई कि कुछ देर उसे सुध न रही. उसका हाथ एकाएक पीछे हटकर अपने ही वक्ष पर आ लगा. फिर उसने अपने को सँभाला. सामने बढ़े हुए हाथ का आवाज देकर चुम्बन किया और एक ओर हट गई. उसके बाद जोहरा, हरीजा, बण्डा और दूसरी क्रमश: बढ़ती आती गई. सिर्फ तिमिरा ही दीवार के पास आइने की तरफ पीठ किये सब देखती अचल खड़ी रह गई. यही आईना था जिसमें बीते दिनों जेनी इस हॉल में आते-जाते अपने को अकसर देखा करती और देखकर खुश हुआ करती थी. वह तब अपनी ही छवि पर रीझ-रीझ जाया करती थी.

एमा उडवानी की निगाह अन्त में उस पर आकर टिकीं. निगाह में अमित् मान था, और अमित् रोष, जैसे फैले फनों में से कोई नाग देखता हो. लेकिन निगाह का कोई जादू चलता न दीखा. तिमिरा उसे ऐसे झेल गई जैसे कुछ हुआ न हो, निगाह ने उसे छुआ न हो. उसके चेहरे पर कोई प्रभाव न था, कोई भाव न था. तब नई मालकिन ने हाथ अपना नीचे कर

लिया. चेहरे पर कुछ मुस्कराहट-सी ले आई और भरे गले से बोली,"और तुमसे तिमिरा मुझे अलग में कुछ बातें करनी है. जहाँ हम दो ही हों. आओ चलो."

"मैंने सुन लिया, एमा उडवानी !" अविचल भाव से तिमिरा ने उत्तर दिया.

दोनों उस छोटी-सी कोठरी में आये जहाँ पहली वाली मालकिन अन्ना मरकानी क्रीम डालकर काफी पीना पसंद किया करती थी. वहाँ एमा दीवार पर आ बैठी और सामने जगह दिखाकर तिमिरा को बैठते को कहा कुछ देर दोनो स्त्रियां चुप बनी रहीं. दोनों एक-दूसरे के चेहरे पर मानों टटोल रही थीं. दोनों मे परस्पर शंका थी.

"तुमने ठीक किया तिमिरा." अन्त में एमा उडवानी बोली,"ठीक किया कि तुम उन भेड़ो की तरह मेरा हाथ चूमने को नहीं बढ़ी चली आई. मै खुद अपनी तरफ से तुम्हें वैसी हालत में डालने वाली न थी. मेरी तबीयत थी कि उन सब के सामने जब तुम चलती हुई मेरे पास पहुँचोगी तो मै तुम्हारे हाथ-में-हाथ लेकर दबाऊंगी और कहूगी कि अब से तुम यहाँ कि पहली संरक्षिका हो और मेरे बाद जगह तुम्हारी है. तुम्हारी तनख्वाह वग़ैरह···"

"धन्यवाद है · "

"नही, टोको मत, मुझे कहने दो, अपनी बात पूरो कर लूँ. तब तुम उस पर रायजनी करना. लेकिन क्या कृपा कर बतलाओगी कि तुम जो हाथ तमंचा लियें, उसका मुंह मेरी तरफ खोले थीं उसका क्या मतलब था. क्या यह हो सकता है कि मुझे मारना चाहती थी ?"

"उल्टा, एमा उडवानी" आदर के साथ तिमिरा ने उत्तर दिया,"उल्टे मुझे मालूम होता है कि आप मुझे मारने पर उतारू थीं."

"शिव, शिव ! तिमिरा तुम ऐसा सोचती हो.···क्या तुमने ध्यान नही दिया कि जब से मैं तुम्हे जानती हूँ तब से हाथ से छूने की तो बात ही दूर कभी सख्त शब्द से भी तुम्हें नही पुकारा···तुम कहती क्या हो ? समझती क्या हो ?···भला, इन देसी देहातिनों के साथ में कभी तुम्हें एक समझ

सकती हूं.…राम दुहाई ! मैंने दुनिया देखी है और लोगों को पहचानना जानती हू. पहली निगाह ही में समझ गई कि तुम अच्छे खानदान की हो, सभ्य हो और यही ले लो कि मुझसे कहीं ज्यादा पढ़ी-लिखी हो, तुम होशियार हो शाइस्ता और तमीजदार ! मुझे पक्का यकीन है कि तुम संगीत भी खासा जानती हो सच कहू तो मै पहले से ही तुमसे कुछ-कुछ अब कहू कैसे … कुछ-कुछ…प्यार करने लगी थी. और तुम—तुम ही मुझे तमचा दिखाती हो. मुझे कि जो तुम्हें चाहती है. कि जो तुम्हारी दोस्त और मित्र बनने की ख्वाहिश रखती है. और तुम्हारे बड़े काम आ सकती हो हाँ, तो क्या ख्याल है तुम्हारा ?"

' खयाल, कुछ भी तो नही, एमा उडवानी !" तिमिरा धीमे से विनम्र संयत भाव से बोली,"बात सीधी-सीधी थी. रिवाल्वर तकिये के नीचे से मुझे मिला था मैं लाई थी कि तुमको सौप दूगी. तुम जब यह खत पढ़ रही थी तो मैंने दखल देना पसद न किया, पर जब तुम मेरी तरफ मुड़ी तो मैंने रिवाल्वर बढ़ा कर तुम्हारी तरफ किया. कहना चाहती थी कि एमा उडवानी, देखो यह क्या चीज मिली है. क्योंकि इस पर मुझे खुद बेहद अचम्भा था. जेनी के पास बराबर यह रिवाल्वर था तो भी उसने लटक कर मरने जैसा दर्दनाक तरीका क्यों अपनाया. बस और तो कोई बात नही."

एमा उडवानी की आखो पर की भौयें घनी, झबरोली, डरावनी-सी थीं. भौंवें ऊपर उठीं, आखे खुशी से फैली रह गई, और एक सच्ची अकृत्रिम मुस्कराहट मुह मे शुरू होकर उसके गालों तक फैल गई. जल्दी से उसने दोनों हाथ तिमिरा कि ओर बढ़ाये. "बस, यही बात थी ! ओह, मेरे भगवान और मैंने …ना… राम जाने कि मैं क्या सोच गई लाओ अपने छोटे-छोटे मुलायम से हाथ लाओ. लाओ, उन्हें दबाऊँ. आओ कि तुम्हे कलेजे से लगा लूं और चूम लूं."

वह चुम्बन छोटा न था. काफी दीर्घकालीन था और तिमिरा को उससे छूटने में दिक्क़त हुई. उसे यह आलिंगन कुछ बहुत रुचिकर न हुआ था. किन्तु अपने आलिंगन से मुक्त करते ही एमा उडवानी ने कहा, "तो, आओ, व्यवहार की भी एक-दो बात कर लें. मेरी शर्तें ये हैं. तुम यहां की

सरक्षिका होगी नफे मे, यानी बचत मे सीधा पन्द्रह फी सदी तुम्हारा होगा, पन्द्रह फी सदी उसके अलावा ऊपर से कुछ तनख्वाह तीस, चालीस या तुम चाहो तो चलो पचास रुपये माहवार सही एक चीज हुई ना क्यो सच-सच कहो मुझे गहरा निश्चय है कि तुम्हारे सिवाय कोई दूसरी नही हो सकती कि जिसकी मदद से इस जगह को ऊँचा रुतबा दिया जा सकता है. ऐसी इस सारे शहर म बल्कि सारे उत्तरी भाग मे मुकाबले की कोई जगह न रह जाए तुम्हे तमीज है, पहचान है, चीजो की समझ है अलावा इसके तुम सख्त से-सख्त अनमने और नाकदार मेहमान को उभार कर बस मे कर सकती हो रिझा सकती हो कभी अगर कोई बहुत ही खास अमीर नवाबजादा –रायबहादुर या राजजादा कुंवर साहब कोई—मान लो देखे और तुम्ही पर फिदा हो जाए—क्योकि तिमिरा तुम्हे पता नही, तुम किस कदर खूबसूरत हो (मालकिन ने यहाँ आँखो को आधी मूद कर तिरछी नजर से देखा) तो मुझे कतई शिकायत न होगी अगर तुम उसके साथ कुछ वक्त मजे मे गुजारना पसन्द करो सिर्फ यह खयाल रहना तुम्हे काफी है कि यह तुम्हारे हक की चीज नही, न फर्ज मे है तुम्हारी हैसियत रुतबा, काबलियत, वगैरह-वगैरह ··तुम समझती हो ना ? ·क्या कहती हो. उर्दू मजे मे समझ लेती हो ना ?"

उर्दू उतनी तो नही जितनी बगाली उम्र रही हूँ ना तो भी काम चलाने तक जानती हूँ"

'तो खूब ' ·तुम तो कमल बोलती हो कोई कह नही सकता कि जुबान मे कोई कमी है आओ उर्दू म बात करें हिन्दी से उर्दू मीठी लगती हैं मादरी जबान ठहरी क्यो ठीक है ? '

ठीक है

"समझी ना ' आखिर ऐसा मालूम हो कि तुम अपने बावजूद बड़ी मजबूरी मे झिझकती-सी राजी हुई है जैसे निगाह से चोट खा गई है और जरा बेबस हो गई है. समझी ना ? यह चीज उन्हे बडी प्यारी लगती है गोया कि मेरे इशारे के तले बेबस हो इस बनावट के लिए बेवकूफ थैलियों तक उँडेल देते है ताहम मालूम होता है तुम्हे सिखाना मुझे अब कुछ बाकी

नहीं है."

"हाँ मोतरिमा, तुम मुनासिब ही कह रही हो. गहरी बातें, माकूल बातें. मगर कोई एक राज की चीज नहीं है या छोटी चीज नहीं है. संजीदा और वजनी क़िस्म की बातचीत है तो ऐसा क्यों न करें कि सीधी अपनी देशी बोली में बातचीत करें ···मैं तुम्हारी आज्ञा मानने को तैयार हूँ."

"हाँ तो · मैं तुमसे आशिक की बात कर रही थी. मैं इस शौक से तुम्हे मना नहीं करती लेकिन होशियारी से काम लेने की जरूरत है अच्छा यह होगा कि वह साहब यहाँ आए नही या हत्तुलइमकान कम आए. मैं तुम्हें कुछ दिन दूँगी और वे खाली होंगे और तुम बाहर जा सकोगी. हालाँकि बेहतर होगा कि अगर तुम उसके बग़ैर निभा सको. इसमें तुम्हे ही नफा है. आखिर में यह चीज गर्दन का एक जूआ हो जाती है और एक बोझ. और अपने तजुर्बे से मैं तुम्हें यह कह रही हूँ. जरा देर सब्र करो. तीन या चार साल में कारोबार फैल जायगा. इतना कि खासी जमा पूँजी तुम्हारे नाम हो जायेगी. और तब मै तुम्हें पूरे कारबार में बाक़ायदा शरीक के तौर पर ले लूंगी. जिसमें पूरे और बराबर हक होंगे. दस बरस बाद तक अभी तुम जवान और ख़ूबसूरत रहने वाली हो. और तब तुम जिस क़दर और जिस हैसियत के चाहे मर्दों को खरीद सकोगी. उस वक्त तक तुम्हारे दिमाग में जो खामखयालियाँ है और खुराफात है सब साफ हो जायेंगी. तब जरूरत यह न होगी कि तुम्हें कोई पसन्द करे और तुम्हारा इन्तखाब करे बल्कि तुम होगी जो छाँट और चुनाव करोगी. जैसे कि व्यापारी मोतियों-हीरों मे से चुन-चुनकर अपने लिये एक-एक छाँट लेता है. बोलो, रजामन्द हो ?"

तिमिरा ने आँखें नीची कर लीं. उसके ओंठ जरा मुस्कराये, बोली, "एमा ! तुम सुनहरी और सच बात कहती हो मैं अपने आशिक़ को छोड़ दूँगी. लेकिन फौरन नही. उसके लिये मुझे दो हफ्ते चाहिये. कोशिश करूँगी कि वह इस बीच यहाँ न दिखाई दे. मुझे तुम्हारी बात मंजूर है."

"शाबाश ! तुम तिमिरा, एक गौहर हो." हँसते हुए एमा उडवानी ने कहा, "आओ, इस राजीनामे को अपने बोसे की मोहर देकर एकदम

पक्का कर दें."

कहकर उसने तिमिरा को कसकर अपने आलिंगन में लिया और उसे चूमना शुरू किया. तिमिरा आँखें झुकाये उस आलिंगन में बंधी लजीली शर्मीली, कोमल किशोरिका-सी हो आई. अन्त में मालकिन के भुजबन्द से छूटकर उसने कहा, "एमा उडवानी, तुम देखती हो कि तुम्हारी हर बात मुझे मंजूर है लेकिन उसके एवज एक विनय है मेरी, जो तुम्हें पूरी करनी होगी. उसमे खर्च कुछ न होगा. वह यह है कि मुझे उम्मीद है कि अपनी स्वर्गीय जेनी को तुम मुझे यहाँ की और सब साथिनों के साथ शवघाट ले जाने दोगी."

सुनकर एमा उडवानी का चेहरा खट्टा पड़ आया, "ओह ! प्यारी तिमिरा, अगर तुम यह चाहती हो तो इस तुम्हारी सनक के खिलाफ मुझे कुछ कहना नही है. मगर आखिर क्यों ? इससे उसकी तो कुछ मदद होगी नहीं जो मर चुकी है. कोई वह जिन्दा तो हो नहीं जायगी. एक खामखाह की जजबाती चीज है, जिसका नतीजा कुछ नहीं…मगर खैर, तुम्हारी मर्जी लेकिन क़ानून ज्यादा तो मैं जानती नही और मुझे पक्का भी नहीं है. लेकिन खुदकशी करने वाले को बाकायदा दफ़नाया नहीं जाता. बाहर कही गढ़े-वढे में फेंक देते हैं."

"नही, मेहरबानी करके यह मुझपर रहने दीजिये और मुझे मन की करने दीजिये. मेरी सनक सही, मगर हाथ जोड़ती हूँ यह मान लीजिये. मेहरबान हो एमा, परवरिश करती हो, तुम मलका हो और मैं वायदा करती हूँ कि आखिरी बार है इसके बाद और कुछ न मांगूंगी. जैसे अपने अफसर जनरल के आधीन सिपाही रहता है, गुलाम और फरमाबरदार मैं वैसे ही रहूँगी."

"अच्छा," एमा उडवानी ने गहरी सांस लेकर कहा, "मैं अपनी बच्ची को भला क्या इन्कार कर सकती हूँ. लाओ अपना मुलायम हाथ दो. आओ आइन्दा हम दोनों अपने मुश्तर्क नफे के लिये शाना बशाना काम करेंगी और तरक्की करेगी."

इसके बाद दरवाजा खोलकर ड्रॉइंग रूम से आर-पार ड्योढ़ी की

तरफ उसने पुकारा, "साइमन !" और जब कमरे में साइमन दाखिल हुआ तो उसने विजय और गौरव के भाव से कहा, "जाओ, एक बोतल शैम्पेन की लाओ. असली चीज, सही मार्के की वह जो वहाँ बर्फ में दबी रहती है और फौरन, जाओ." साइमन फटी-सी आँखो से उसे देखता रहा और हुकुम सुनता रह गया. आखिर वह अपने काम पर लौटा.

"तुम्हारी सेहत के लिये पी जायगी तिमरा. अपने नये कारोबार उसके शानदार रौशन मुश्तकबिल के लिये."

"बखुशी, मेरी मालकिन, मेरी मालिका." तिमिरा ने जवाब में कहा, "तुमने मेरी राह को रोशनी डालकर साफ कर दिया है. सच कहती हूँ, हमे किसी को पता न था कि तुम असल मे इतनी उदार हो, इतनी दूरन्देश हो. अब मै समझी कि क्यो मुझे सब चीजों मे पहले कहा कि शिष्टता होनी चाहिये कि बिना चूँ चरा के पहले आज्ञा का पालन होना चाहिये क्यो कहा, यह पहली चीज है और सबसे बढ़कर है. क्यों, यही है ना?"

"ओह ! हाँ." खुशामद से रीझ कर एमा उडवानी ने कहा, "यही बात है"

शैम्पेन आई और जब पी ली गई तो तिमिरा ने कहा, "और, ऐ मेरी प्यारी आका और मालिका. मुझे तुमसे कुछ इल्तिजा करनी है—"

"जरूर, बखुशी, मैं खुश हूँ कि तुम्हें कुछ कहना है. जानती हूँ कि तुम कोई बेवकूफाना माँग न करोगी. जाओ, तुम्हारी इल्तिजा पहले से कुबूल हो गई."

"आप जानती है," तिमिरा कहती गई. "और मै बखूबी समझती हूँ कि मेरी हैसियत बहुत कुछ एक खादिम की…"

"नही," बीच में एमा ने सदय भाव से नहीं करते हुए कहा, "हैसियत मेरी एसिस्टेंट की—"

"दुहाई है !" तिमिरा ने गर्दन नीची करके कहा, "आपने खुद कहा कि कभी बाज और खास मौको पर मै सबसे नायाब और बेशक़ीमती तौफ़े के तौर पर…"

"यकीनन नायाब और वेशकीमती !"

"इसी मे मुझे हौसला होता है कि मै आपसे कुछ नगद पेशगी पाने की उम्मीद करूं आप मुझसे इत्तिफाक रखेगी अगर मैं कहूँ कि मुझे अब से एसे लिबास मे रहना चाहिये कि मै किसी अमीराना टिकाने से ताल्लुक रखती हूँ और किसी कदर ड्रेस मे वह भी कुछ हो कि तबियत देखने वालो की फरहत पाएं, और उमंग उभार आए और···फीते, छिक, इत्र और खुशबुए "

एमा सुनकर बाग-बाग हो आई "ओह ! मेरी प्यारी तिमिरा तुम तो मन नही मेरे ख्याल ही चुरा लेती हो"

"मै खुश हूँ कि मै आपकी हूं मगर ताहम जरूरी है कि मै जरा अपने कपडे वगैरह देखूं, सभाल और वह जितना जल्द हो सके अच्छा, मगर अफसोस है कि मेरे पास···"

"नह ! क्या कहती हो इन चीजो के लिये मैं पैसे का मुँह देखूंगी बता कितना चाहिये ?"

'मै समझती हूं·· यही कोई दो सौ रुपये" तिमिरा ने झिझकते हुए कहा

"नहीं, तीन सौ"

तिमिरा ने झपट बिनय से बढकर एमा के हाथ को चूमा.

एमा के पास से जब वह लौटकर गई तो कडुवी मुस्कराहट के साथ उसने सोचा, "तो आखिर उस स्त्री को जो हम सब को प्रिय थी हम एक इन्सान की तरह दफना सके"

कहते है कि मृतात्माये भाग्य लाती है इस कहावत मे कुछ भी सच है तो वह इस शनिवार को प्रत्यक्ष हो गया उस दिन अभ्यागतो की सख्या सामान्य से ज्यादा थी बल्कि किसी शनिवार की शाम को जिसे सुनहरी शाम कहते है कभी इतनी भीड न होती थी सही कि लडकियाँ जो बरामदे से इधर से-उधर गुजरती और टहलकर जेनी के कमरे की तरफ झांके बिना न रहती—उनके आते-जाते कदमो से भी सख्या बढ़ी-सी लगती थी. वे कनखियो से अन्दर देखती और सिहर जाती. कुछ

छातियों पर हाथ रखकर सोच में सहमी रह जातीं. पर रात गहराती गई और जाने कैसे मौत का डर मानो भीतर बसकर सहने लायक होता चला गया. सब कमरे मेहमानों से आबाद थे. स्वागत भवन में एक नया वायलिन वाला लगातार उसमें धुन फूंके जा रहा था. एक साफ चेहरे और खुली तबियत का, नई उमंग का जवान था जिसको चुन्धी आँखों का प्यानो वाला कहीं से ढूंढ कर ले आया था. तिमिरा के संरक्षिका बनने की खबर पर कोई तहलका न हुआ. एक सर्द हैरानी और खुश्क बन्द मंजूरी से उसे सुन लिया गया लेकिन वक्त पर आकर तिमिरा ने छोटी गोरी मनका के कान में फुसफुसाकर कहने का मौक़ा निकाल लिया, "सुन मनिमा, तू सबसे कह दे कि मेरे संरक्षिका बनने का कोई जरा ध्यान न करे. यह तो जरूरी था. सुना, सब जनी जैसे चाहे करें सिर्फ मेरा खयाल न करें और ऊपर शिकायत करने न दौड़ें. मैं वही हूँ जो पहले थी. सबकी साथिन और दोस्त और·· और आगे देखनी चल क्या होता है."

७

अगले दिन इतवार को तिमिरा के सिर चिन्ताओं पर चिन्ताएँ आ लगीं. उस पर एक धुन सवार थी, अचल और अडिग कि अपनी प्यारी सखी को कुछ क्यों न हो वह उसी तरीक़े से और उसी जगह बाकायदा दफन करायेगी जहाँ दुनिया के दूसरे इज्जतदार लोगों को दफनाया जाता है.

वह उन अजब क़िस्म के लोगों में मे थी जो ऊपर से यों शान्त, निष्क्रिय और आत्म-ग्रस्त दीखते हों पर अन्दर जिनके असाधारण शक्ति छिपी रहती हो. यह शक्ति मानो आँख मींचकर सोई पड़ी रहती है और अनावश्यक अपव्यय से सदा अपने को बचाती है. पर रहती चौकन्नी है कि छन में सजग होकर उठ पड़े और विघ्न-बाधाओं की तनिक़ परवा न कर आगे बढ़ दौड़े.

कोई बारह बजे के लगभग वह पुराने शहर में एक गाड़ी में सवार हुई और एक नन्हीं-सी लम्बी गली में से होती हुई खुले चौक में पहुँची

जहाँ पैंठ लगा करती थी. पास ही किसी क़दर सड़ा-सा चाय घर था. वहाँ उसने गाड़ी को ठहरने को कहा. अन्दर पहुँचकर उसने एक लड़के से जिसके बाल सुर्खी मायल थे और जिसकी माँग से तेल बह-सा रहा था, पूछ-ताछ की कि सैनका तो वहाँ नहीं आया. लड़के की तत्परता और तौर-तरीक़े से जान पड़ा कि वह तिमिरा को अर्से से जानता है. उसने जवाब में कहा, "नहीं मेमसाहब, वह सामन्त कुमार तो अभी आये नहीं हैं. और शायद जल्दी आयेंगे भी नही क्योंकि वह कल लखनऊ के तमाशे में गये थे और सवेरे छः बजे तक वहाँ अड्डे पर जमकर खेलते रहे. ज्यादा मुमकिन यही है कि वह इस वक्त अपने घर पर हों. वहाँ जो चौक में, गली में कमरा ले रखा है ना ? मेमसाहब चाहें तो वह इसी घड़ी भागकर उन्हें जाकर खबर दे सकता है.

तिमिरा ने कागज़ और पैंसिल माँगा और वहीं पुर्जे पर कुछ शब्द लिखे. लिखकर पुर्जा उसने लड़के को थमाया. साथ टिप के बतौर अठन्नी दी और वापिस गाड़ी में बैठकर चल दी.

अब यात्रा कलाकार रोबिन्सकाया के घर की ओर मुड़ी. तिमिरा जानती थी कि वह शहर के सबसे शानदार जगह पर ठाठ से बने हुए योरोप्पा नाम के होटल में लगातार कई कमरे घेर कर रहती है. इस विख्यात गायिका से मुलाक़ात पा सकना आसान खेल न था. नीचे चौकीदार ने कहा कि वह तो इस वक्त कमरे में मालूम नहीं होती, और खट-खटाने पर नौकरानी जो बाहर आई तो वह बोली कि मेमसाहब के सिर में दर्द है और किसी मुलाक़ाती के लिये इस वक्त इजाजत नहीं है. तिमिरा को फिर कागज लेकर उस पर लिखना पड़ा :

"मैं उसकी तरफ से आपके पास आई हूँ जो एक वार आपके गाने को सुनकर घुटनों बैठकर रो आई थी. कहाँ की यह बात है, उस जगह की याद दिलाने की शायद इजाजत नहीं हो. उसका नाम न लेना ही भला. आपका तब का सदय व्यवहार उसे कभी न भूला. क्या आपको याद है ? मगर डरने की बात नहीं—अब उसे किसी तरह की सहायता नहीं चाहिये. कल वह यहाँ से सिधार चुकी है. लेकिन आप उसकी याद में एक बहुत ही

जरूरी काम को अन्जाम दे सकती हैं जिसको करने में आपको जरा भी तक़लीफ न होगी. और मैं—मैं वही हूँ जिसने उस वक्त कुछ कटी-कड़ुवी मगर सच बातें रानी साहब के हक़ में कह दी थी जो आपके साथ तशरीफ़ लाई थीं. उन जली कटी बातों के लिये मुझे अफसोस है और मैं उसके लिये फिर माफ़ी माँगती हूँ."

लिखकर उसने नौकरानी से कहा, "लो यह जाकर मालकिन को देना."

दो मिनट बाद वह वापिस लौटी, बोली, "मेमसाहब आपको बुलाती है. उन्होंने माफ़ी माँगने को बोला है कि वे इस वक्त पूरे लिबास में नहीं हैं और इसका आप ख़याल न करें." आगे होकर उसने तिमिरा के सामने का दरवाज़ा खोला और उसके अन्दर होने पर धीमे से उसे बन्द कर दिया.

वह मशहूर गायिका एक बड़ी-सी मसनद पर फैली पड़ी थी. नीचे क़ीमती खूबसूरत कालीन था. ढेर-के-ढेर रेशमी तकिये इधर-उधर पड़े थे. और काम किये कमख्वाब की तोशकें बिखरी पड़ी थी. उसके पाँव चाँदी के रंग के मुलायम परों से ढके थे. उसकी ऊँगलियाँ बडे-बड़े पत्तों से जड़ी अनेक अगूठियों से सजी थी जिनका गहरा, मुलायम हरा रंग आँखों को बरबस खींचता था.

गायिका की तबियत आज बिगडी हुई थी. यह दिन उसे खट्टा और मनहूस मालूम होता था. कल सवेरे उसकी व्यवस्थापकों से कुछ अनबन हो गई थी और शाम को पब्लिक ने उसे इस क़दर फतेहयाबी से नही लिया था कि जिसपर वह खुश होती. या शायद यह सिर्फ उसका खयाल था. आज सवेरे के अख़बार मे उसने क्या देखा कि किसी एक बेवकूफ आलोचक ने जिसे चीज की इतनी समझ न थी, जितनी भैंस को मोहन भोग की, लम्बे से लेख में उसके मुक़ाबले उसकी रकीब टीटानोवा के तारीफ के पुल बाँध रखे थे. चुनाँचे ऐलीन विक्टोरिया ने अपने को समझा लिया कि उसका सिर दर्द से दुःख रहा है, कि कनपटी की नसें जोर से कड़कने लगी हैं, कि दिल रह-रह कर रश्क से गिरा-सा आता है.

'आओ, आओ कैसी तबियत है तुम्हारी ?" उसने तनिक सानुनासिक

स्वर से कहा. आवाज मध्यम थी, पतली और हलकी. शब्दों के बीच में हलके-हलके वह रुकती थी जैसे कि स्टेज पर खेल की नायिकाओं को प्रेम मे या क्षय से मरते वक्त रुक-रुककर बोलना पड़ता है, "आओ बैठो ··यहाँ तुमसे मिलकर बड़ी प्रसन्न हूं · नाराज न होना. दर्द के मारे जी बेहाल है और यह मेरा कम्बख्त दिल ' माफ करना, कि मुश्किल से बोला जा रहा है. शायद ज्यादा गाये चली गई और आवाज थक गई···"

रालिन्स-कायां को अनायास ही उस दिन शाम का पागलपन याद हो आया था कि जिसमें जाने वह कहाँ जा पहुंची थी. साथ ही तिमिरा का चेहरा भी उसे याद था जिसमें जाने क्या था कि भूला न जा सकता था. मगर अब तबियत के इस हाल मे पतझड़ के इस वीरान मे दिन के ढलते पहर में मानो वह उस दिन का पागलपन एक व्यर्थ अनावश्यक-सी चीज उसे जान पड़ी. जैसे वह कृत्रिम, काल्पनिक, बेहद बेहयाई की बात हो. लेकिन वह उस अजब उन्मत्त सन्ध्या को भी अपने साथ उतनी ही सच्ची थी जब कि अपनी प्रतिभा के बल से उसने अभागिनी जेनी को अपने पैरों पर ला गिराया था. वैसे ही इस वक्त वह अपने प्रति सच्ची थी जब स्कीटर कलागर्व से उपेक्षित ध्यान और थकान से उसकी ओर देख रही थी. और अनेक नामी कलाकारों की तरह वह सदा अपने साथ एक पार्ट खेलती रहती थी. वह कभी खुद न होती थी. वह अपने शब्द, हाव-भाव, क्रिया-विक्रिया को ऐसे देखती जैसे कुछ दूर हो. और दर्शक की भांति उसी भाव और दृष्टि से अपने को जांच रही हो.

उसने आहिस्ता से तकिए पर से अपना नन्हा, मुलायम, खूबसूरत हाथ उठाया और उसे माथे तक ले गई. उंगलियों की अंगूठियों के पन्नों की रहस्यमयी गहरी हरियाली चेतनता से कांप-सी आई और एक चमक दे उठी.

"अभी मैंने तुम्हारे खत में पढ़ा कि वह बेचारी···माफ करना नाम उसका—आते-आते ध्यान से उतर गया."

"जेनी."

"हां-हां, धन्यवाद, याद आ गया. तो वह मर गई, कैसे ?"

"आप फांसी लगा कर मर गई···कल सवेरे···डॉक्टरी मुआयने के वक्त···"

गायिका की आंखें कुछ अधमुंदी फीकी-सी थीं. सहसा मानो चमत्कार देखा हो, खुल आईं. उनमें जीवन लहक आया. नीचे के पत्रों की भांति उनकी जीती हरियाली चमक आई. और उन आंखों में प्रतिबिम्बित हो आई. एक उत्सुकता, एक भीति, एक अवसन्नता ! "ओह, मेरे भगवान ! कैसी प्यारी थी वह ! कैसी आला थी ! और अद्वितीय ! और कैसी आग-सी लहक थी उसमें. ओह बेचारी, मेरी प्यारी बेचारी···और वजह क्या थी ··"

"तुम जानो · वही बीमारी. उसने कहा तो था."

'हां-हां···याद आया, मुझे याद आया···लेकिन उसमें फांसी लगा लेना···कैसा भीषण···क्यों ? मैंने कहा था उससे तब कि इलाज कराओ. दवा आजकल बड़े-बड़े चमत्कार कर देती है. मैं खुद कइयों को जानती हूं जो बिलकुल ··जिन्हें पूरा आराम हो गया. समाज में हर कोई यह जानता है और फिर भी···आह बच्ची बेचारी दुखिया···"

"इसी से ऐलीन विक्टोरिया, मैं तुम्हारे पास आई हूं. मैं कभी तुम्हें तकलीफ न देती. मगर मैं जैसे जंगल में हूं. कोई नहो है कि जिसके पास जाऊं तुम उस वक्त कितनो दयावान थीं हमारे लिये. कितना तुम्हे दर्द था और हमदर्दी थी मुझे सिर्फ तुम्हारी सलाह चाहिए और तुम्हारी शरण और जरा-सा तुम्हारा असर "

"ओ मेरी बिन्नो मैं जो कर सकूंगी करूंगी···ओह ! यह मेरा कम्बखत सिर तिसपर यह भयानक खबर. बताओ मैं किस तरह तुम्हारी सहायता कर सकती हूं ?"

"सच कहूं तो वह मैं साफ खुद नहीं जानती." तिमिरा ने उत्तर दिया, 'आप जानती हैं कि वे उसे चीर-फाड़ के घर ले गये हैं···लेकिन जब तक यह कागज नहीं तैयार हो और हुक्म ना आ जाए और फिर काम का वक्त भी बीत गया है, यानी मैं समझती हूं, अभी चीर-फाड़ का ही मौका आया न होगा. मैं चाहती हूं कि अगर मुमकिन हो सके तो वे उसके

शरीर को छुएँ नहीं. आज इतवार का दिन है. शायद वे इसे कल के लिए मुल्तवी रखें. और इस बीच उसके लिये कुछ करना मुमकिन हो सके…"

"मै कुछ कह नही सकती अजीजमन. तुम्हीं बताओ…मगर हां, ठहरो डाक्टरों मे, प्रोफेसरों में देखें कोई अपना दोस्त है क्या ?… फिर मै याददाश्त की किताब में से देख लूंगी शायद कुछ किया जा सके."

"इसके अलावा," तिमिरा कहती गई "मैं उसे दफन करना चाहती हूँ अपने खर्च पर उसके जीवन काल में मैं पूरे जी से उसकी थी, उसे चाहती थी."

"मै इसमे तुम्हे खुशी से मदद करूँगी. पैसे से या…"

"नही-नही, बहुत-बहुत धन्यवाद है आपका·· वह सब मैं अपनी तरफ से कर लूंगी. आपके सदय हृदय की शरण लेते मुझे झिझक नहीं है पर यह आप मुझे समझेंगे ··कि यह प्रण की तरह है. एक अपने साथ एक मित्र की स्मृति में प्रतिज्ञा बांध लेता है. मुश्किल असल यह है कि बाक़ायदा दफनाने का इन्तजाम कैसे किया जाए. मालूम होता है वह आस्तिक तो थी नही. या विश्वास करती थी तो यों ही और मैं भी भाग्य से ही कभी भगवान का नाम ले लेती हूँ. लेकिन मैं यह नही चाहती कि उसे कुत्ते की तरह, या कब्रगाह के घेरे से कही बाहर फेंक दें. न कुछ उस पै कहा जाए या फ़ातिहा पढ़ा जाए…कह नहीं सकती कि वह उसे बाक़ायदा मजहबी ढग से गाड़ने देंगे कि नही. इसलिये चाहती हूँ कि आप अपने मशविरे से मेरी मदद करें. या शायद किसी के पास सलाह के लिए भेजना चाहें तो बताएं.

अब गायिका धीरे-धीरे मामले में दिलचस्पी लेने लगी थी. वह थकान अपनी भूल चली थी. अपना सिर दर्द नाटक के चौथे एक्ट में क्षयग्रस्त नायिका के मरने के तरीके पर उसका ध्यान रहा. बल्कि उसकी आत्मा में एक इधर नया पार्ट उतर चला. एक प्रतिभाशाली देवी मूर्ति जो पतिता के प्रति दया से द्रवित होकर नीचे उतरती है. यह मौलिक चरित्र था. सम्भावनाओं से भरपूर और नाटकीय तत्व भी इसमें विद्यमान थे. रोबिन्स-

काया अपनी तरह या दूसरे महिमामय व्यक्तित्वों की तरह एक भी दिन, हो सके तो एक भी घड़ी ऐसी नहीं जाने दे सकती थी कि जिसमें भीड़ से अलग खड़ी न दिखाई दे. ऐसे कि लोग उसकी ओर हठात् देखें और उसकी चर्चा करें. आज वह किसी देश भक्ति के प्रदर्शन में जोर शोर से भाग ले रही होगी तो कल फाँसी चढ़ने वाले और काले पानी भेजे गये क्रान्तिकारियों के बचाव में प्लेटफार्म के ऊपर से आग और हुँकार से भरे गीत गा रही होगी. कारनिवालों में आगे बढ़कर फूल बेचना उसे प्यारा लगता या शिक्षालयों और विश्वविद्यालयों में मनोविनोद के बड़े-बड़े जलसों में वह मेज पर चाय पेश करती नज़र आती. वह अपने पार्ट की अदायगी को पहले से सोच रखती जो कि फिर कल शहर भर के लिए चर्चा का विषय हो जाता. उसे चाव था और चाह रहती कि हर कहीं भीड़ उसे घेर आए और देखती रहे उसके नाम का जय-जयकार हो. लोग उसकी हरी-सी मिस्री आँखों और भरे से विलासोन्मुख उसके मुँह को और नरम-नरम मुलायम हाथों की उंगलियों पर झलमलाते उसके नगों को सराहें और प्यार करें.

"सब यह एक साथ मेरी समझ में नहीं आता." जरा चुप रहकर उसने कहा, "लेकिन जहाँ चाह है वहाँ राह है. लगन से क्या नहीं हो सकता और मैं पूरे जी से तुम्हारी बात पूरा करना चाहती हूँ ऐ हाँ, जरा ठहरो···एक सुनहरी ख्याल दिमाग में आ रहा है. क्यों ? उस शाम अगर मैं भूलती नहीं हूँ, हमारे साथ, यानी मेरे और रानी साहब के अलावा ···"

"मैं उन्हें जानती नहीं हूं···एक उनमें से आप लोगों में सबसे पीछे कमरे से बाहर गये थे. उन्होंने जेनी का हाथ चूमा था और कहा था कि कभी उनकी जरुरत हो तो उन्हें याद करना न भूले. वह सेवा के लिये तत्पर रहेंगे. उन्होंने उसे अपना कार्ड भी दिया था. मगर कहा था कि उसे किसी और को वह न दिखावे. लेकिन फिर वह बात बीत गई और भुला दी गई. मुझे भी फिर जाने क्यों वक्त न मिला कि पूछती कि वह कौन थे. फिर कल मैंने उसके कागजों को टटोला मगर पता मिला नहीं ···"

"जरा ठहरना, ऐ ऐं, ··हाँ, मुझे याद आ गया." गायिका साहस स्फूर्ति से भर आई,"आहा !" वह कालीन पर मे कूदती सी, खुशी से बोली "वह रेजेनॉव था ! हाँ-हाँ-हाँ, वही था.·· एडवोकेट रेजेनॉव ! बस, अब सब काम सीधा हो जायेगा. भई ठीक वक्त पर खूब ख्याल आया."

मुड़कर वह पास रखी मेज की ओर झुकी जिस पर टेलीफोन रखा हुआ था, "और बोली, सैन्ट्रल १८३५, प्लीज ! शुक्रिया ·· हैल्लो··· अर्न्स्ट एन्ट्रीविश को टेलीफोन पर जरा बुला दीजियेगा···मै रोबिन्सकाया ···जी, बुलबुले हिन्द शुक्रिया ··हैल्लो ! यह तुम हो रेजेनॉव ! अच्छा अच्छा, मेहरबानी है मगर यह मेरे हाथों का, हाँ, मुलायम हाथो का सवाल नही है कहो जरा फुरसत है नही, बकवास इस वक्त छोडो ··मामला जरूरी है ··· देर को, दस मिनट, पाच मिनट क्या तुम आ नही सकते ?··· नही, नही, हा, ··जी एक काबिल और हमदर्द इनसान की हैसियत से तुम अपनी निन्दा न करो · ओह ! यह ठीक है सचमुच ··जी मै खास लिबास मे तो इस वक्त नही हू मगर वजह है—मख्त सिर दर्द है ··नही, एक ख्वातून है नाम · एक लडकी आओ भी. आके खुद देख लेना ··जितनी जल्दी हो सके धन्यवाद, अच्छा नमस्कार !"

"अभी, बस वह आते होगे ' रिसीवर जगह पर रखते हुए रोबिन्स-काया ने कहा."गजब का होशियार और वजनदार आदमी है हर कुछ उसके लिए मुमकिन है यहाँ तक कि जो दो इन्सान के लिए नामुमकिन है··· लेकिन इस दौरान मे माफ करना तुम्हारा नाम !"

तिमिरा शर्मा आई लेकिन फिर अपने ऊपर मुस्कराती हुई बोली, "ओह ' यह कोई ऐसी जरूरी चीज नही है. एलीना विक्टोरिया कि आप परेशान हो आमतौर पर कही जाती हू तिमिरा, बस तिमिरा. नाम यों है एनेश्टैश्ना निकोलैव्ना वह सब एक बात है मुझे सीधे तिमिरा ही कहिये··· उसी की मै आदी हू ··"

"तिमिरा बडा प्यारा नाम है और सुन्दर ! तो श्रीमती तिमिरा, तो शायद आपको मेरे साथ नास्ता लेने में एतराज न होगा और हो सकता है, अभी पहुंच कर रेजेनॉव भी शामिल हो आए "

मुझे वक्त नहीं है, माफी चाहती हूं."

"यह तो बड़े दुख की बात है तो आशा है फिर कभी···लेकिन शायद आप सिगरेट पीती होंगी ?" और झुककर उसने अपने सुनहरी सिगरेट केस की ओर बांह बढ़ाई. उसपर उसी प्यारे पन्ने के नग से जड़ा हुआ बड़ा-सा 'ई' अक्षर बना हुआ था. जल्दी ही रेजेनॉव आ पहुंचे.

तिमिरा ने उस संध्या को इन्हें ठीक और पर देख न पाया था. अब सहसा सामने पाकर वह चकित सी रह गई. खिलाड़ी की-सी देह, ऊँचा डील, भारी और झूलती भवें, उठा माथा जिस पर सहज सुन्दर हाथ से लहराते अव्यवस्थित से काले बाल. भरा मुंह जिस पर वक्तृत्व-कला का स्फूर्त प्रसाद खेलता-सा दीखता था. और आंखें व्यञ्चना से भरी, निर्मल तीक्ष्ण और विनोदपूर्ण ! सब मिलाकर रूप कुछ ऐसा था कि हजारों में निगाह खींच ले. दिल जिस पर निछावर हो जाए और मनों को जीतना जिसे सहज स्वभाव हो जाये. गहरी महत्वाकांक्षा से भरपूर और जीवन से तृप्त होकर भी अतृप्त, प्रेम में सवेग और विवेक से अपराजित. बुद्धि जिसके साहस को कुतर न सके.

'भाग्य ने अगर मुझे इस तरह तोड़ न दिया होता' रेजेनॉव के रूप को और व्यवहार को, लोभ और आनन्द से देखती हुई तिमिरा सोचने लगी कि यह पुरुष है कि जिस पर मैं अपना जीवन वार देती, सब निछावर कर देती, खुशी से मुस्कराती हुई कि जैसे गुलाब का फूल डाली पर से प्रियतम पर निछावर कर दिया जाता है.

रेजेनॉव ने रोबिन्सकाया का हाथ चूमा फिर सब्ज सरलता के साथ तिमिरा का अभिवादन किया और बोला "हम एक-दूसरे को उस बीती संध्या से ही शायद जानते हैं. संध्या वह अलग थी और हो सकता है कि बहुत खूबसूरत न समझी जाये. पर तुमने अपने बंगला भाषा के ज्ञान से तो हम सबको चकित कर दिया था. और जो तुमने कहा, शायद ज्यादा था. मुबालिगा था. लेकिन याद तो मुझे है तुम्हारे कहने का ढंग. आज तक मैं उसे भूल न सका. तुम्हारा सुर कैसा व्यंजक था और कितनी उसमें हृदय की गर्माहट थी.···तो कहो ऐलिन विक्टोरिया," फिर रोबिन्सकाया की

ओर मुड़कर बिना पीठ की एक नीची सी कुर्सी नीचे लेकर उस पर बैठते हुए उसने कहा, "मै तुम्हारी किस सेवा के योग्य हो सकता हू. हुक्म पर हाजिर हू."

रोबिन्सकाया ने अलसभाव से अपनी उँगलियो के सिरो को फिर कनपटियो पर लगाया, "ओह ! मेरे प्यारे रेजेनॉव, सचमुच मुझे कुछ सूझ नही रहा है." उसने कहा और उसकी आँखो की झलझलाती चमक को उसने जान-बूझकर तनिक छिप जाने दिया, "और फिर मेरा यह कमबख्त दुखता सिर ··क्या मैं तकलीफ दे सकती हू कि जरा मेज से वह शीशी तो उठा देना·· यह तिमिरा—श्रीमती तिमिरा सब कुछ कहेगी···मै कह सकूंगी नही इतनी सामर्थ्य नही है···ऐसी भीषण बात है ··"

तिमिरा ने सक्षेप मे स्पष्टता के साथ जेनी की मृत्यु के इतिहास की सारी शोक गाथा रेजेनाव को सुना दी. कहना न भूली कि वह जेनी के पास अपना कार्ड छोड आया था यह भी कि मृतात्मा ने कैसे आदर के साथ उस कार्ड को सुरक्षित रखा था और सरसरी तौर पर जिक्र कर दिया कि जरूरत के वक्त उन्होने सहायता का वचन दिया था.

जरूर-जरूर," तिमिरा के समाप्त करने पर रेजेनॉव ने आश्वासन के साथ कहा और अपने बड़े-बड़े कदमो से वह कमरे के इस छोर से उस छोर और उसमे इस तक सोचता-सा घूमने लगा. रह-रह कर स्वभाववश हाथो की उँगलियो से लहराने बालो को कभी वह पीछे फेकता और सुलझाता-सा जाता "तुम एक सच्ची मित्रता के निबाह में एक शानदार काम करने आई हो. यह नेक बात है·· बहुत अच्छी बात है···मै तुम्हारा हूँ···हाजिर हूँ · तुमने कहा, "दफनाने की इजाजत—परमिट'···हू-ऊं···भगवान मेरी स्मृति की मदद करे," उसने हाथ की उँगलियो से और हथेली से अपना माथा दबाया और रगडा.

"हू···हू···अगर मै भूलता नही हू तो···रूम न० एक सौ सत्तर···· एक सौ सात-आठ-अठत्तर···माफ करना, मै सोचता हू मुझे वह हरफ-ब-हरफ याद है ··हां तो, अगर कोई आदमी अपना घात करता है तो उस

पर कलमा न पढ़ा जायेगा. न फतिहा होगा बशर्ते कि यह साबित न हो कि उसका दिमाग सही न था,… हू, तो मेरी बहिन, यह पहली चीज है… तुम कहती हो कि उसको फन्दे से तुम्हारे डॉक्टर ने नीचे लिया था. यानि शहर के सरकारी डॉक्टर ने उसका नाम !…"

"क्लिमैनको."

"जान पड़ता है कही उससे मिलना हुआ है…ठीक…हाँ, तुम्हारे इलाके के थाने का इसपैक्टर कौन है ?"

"वर्कोश"

"आह ! मुझे ख्याल आया वह मजबूत कद्दावर जवान जिसे नीचे पत्ते की मानिन्द सुर्ख दाढी है"

"जी वही'

"मै उसे खूब जानता हूं. उसके सिर पर समझो एक साल की सख्त कैद की सजा लगनी है कोई दस बार वह मेरे हाथो मे पडा है, पर हर बार दुष्ट किसी न किसी तरह साफ निकल गया. चिकना और चालाक है ऐसा कि क्या कहू…उसे कुछ शायद देना दिलाना होगा वह बात हुई फिर उसके बाद पोस्ट मार्टम का किस्सा है…उसे दफनाना तुम कब चाहती हो ?"

"आप ही सोचिए मै कैसे कह सकती हू…अपनी तरफ से तो मै जल्दी से जल्दी चाहती हू हो सके तो आज ही"

"हू आज उसका तो जिम्मा नही ले सकता —यह तो मुश्किल होगा लेकिन यह मेरी याददाश्त की किताब है. लो पन्ना खोलो जिस पर 'त' ही लिखा है. 'त' से शुरू होने वाले नामो के सब दोस्तो का जैसे पता है वैसे ही नीचे तुम अपना लिख दो. नाम और पता. दो घण्टे मे मैं तुम्हे जवाब दे सकूगा ठीक है न ? लेकिन मै फिर कहता हूँ कि दफन के काम को शायद कल के लिये मुल्तवी करना हो…और बेअदबी माफ करना, हो सकता है कुछ पैसे वैसे की जरूरत हो शायद ?"

"जी नही, धन्यवाद." तिमिरा ने इन्कार करते हुए कहा, "पैसा है. कृपा के लिये कृतज्ञ हूं और इस चिन्ता के लिये…समय हुआ और अब मैं

चली. ऐनीन विक्टोरिया मै तुम्हारा समस्त हृदय से धन्यवाद करती हूं."·

"तो जवाब की दो घण्टे के अन्दर-अन्दर आशा कर सकती हो." रेजेनॉव ने दरवाजे तक उसके साथ जाते हुए दोहराकर कहा.

तिमिरा वहां से एक साथ घर नही चली गई. वह एक गली के अन्दर के छोटे से कॉफी हाउस की तरफ मुडी. वहां सैनका उसकी राह देख रहा था. खुश तबियत का एक स्वस्थ युवक जान पड़ता था. बाल काले से ज्यादे नीले, आंखो की पुतलियां काली जिनके पास की सफेदी पर जरा जर्द छाया थी. काम मे निर्भीक और दृढ, आस-पास के चोरो का सरदार. इस दुनिया मे अनुभव और पराक्रम के लिये उसकी बडी ख्याति थी और वह अनुभवी नेता था, सबका अग्रणी हर वक्त मुस्तैद और रात-रात भर काम के लिये तैयार

नि·· ग्ते उसने बढाकर तिमिरा को अपना हाथ दिया. पर जिस चिन्ता क साथ मानो हाथ के दबाव से खीचकर उसने तिमिरा को कुर्सी पर बिठाया उससे देखा जा सकता था कि तिमिरा के लिये उसमे कितना भाव कितनी पीडा है ?

'क्या हाल चाल है तिम्मी ? एक मुद्दत से तुम दीखी नही—मैं तो थक गया कॉफी लोगी ?"

"नही, पहले काम···कल हमे जेनी को दफनाना है—उसने फांसी लगा ली है."

"हां, मैने एक अखबार मे पढ़ा था." सैनका ने दांतो के बीच से दबा कर ऐसे कहा जैसे उसे परवा न हो, "माजरा क्या था ?"

"मुझे पचास रुपये लाकर इसी वक्त दो."

'तिमिरा ! मेरी जान ! मेरे पास तो अधेला नही है."

कह रही हूं फौरन लाकर दो." तिमिरा ने हकूमताना ढग से कहा मगर सुर मे गुस्सा न था

"ओह ! बाबा रे · तुम्हारा तो मैने छुआ नही, जैसा कि मैंने कह दिया था लेकिन आज है इतवार · सेविंग बैंक बन्द होगे "

"हो बन्द और मारो गोली सेविंग बैंक को···रुपये चाहिये पचास. कहीं

से, सो तुम जानो, सुनते हो."

"किस लिये इतनी जरूरत है, जानेमन ?"

"तुझे इससे क्या उल्लू, तुझे तो सब एक हैं.···आखिरी रस्म के लिये चाहिये."

"ओह ! ठीक है, अच्छा." सैनका ने सांस भर कर कहा, "तो शाम को रक़म लेकर खुद तुम्हारे पास पहुँचूंगा. वही अच्छा रहेगा. क्यों, ठीक तिमिरा ?···तुम्हारे बिना मेरे लिये किस कदर मुश्किल होता है ठहरना. मेरी प्यारी ! जी करता है तुम्हें चूम लूं और चूमता रहूँ. तुम्हें मैं आँख न बन्द करने दूंगा···क्या मै नही आ सकता···"

"नही-नही···कहा वैसा करो सैनेश्का. मेरी कही मानो, तुम हरगिज न आना— मैं अब संरक्षिका हूं."

"हां-आं. वह तुम सब क्या जानो." विस्मित से सैनका ने यह कहा और मुंह से सीटी-सी बजायी.

"सच. और इस बीच तुम मेरे पास मत आना. फिर पीछे बाद में मेरे प्यारे ! जो तुम चाहो ··जल्दी ही सब कुछ खतम हो जाने वाला है."

"ओह ! मगर तुम मुझे और ज्यादा न सताओ. जितनी जल्दी हो काम समेट समाट चली आओ."

"और मै भी तो सब उठा देने की जल्दी मे हूँ, नन्हे मे एक हफ्ते और ठहरो, प्यारे ! पाउडर लाए ?"

"ऐसी तैसी पाउडर की." सैनका ने झीककर कहा. "और पाउडर नहीं गोलियां."

"पक्का है जो तुम कहते हो कि वह एक साथ पानी में घुल के हल हो जाती है ?"

"बिलकुल, मैंने खुद जो देखा है."

"और आदमी मरेगा नही. ! सुनो सैनश्का वह मरेगा तो नहीं?··· निश्चय है नही मरेगा !"

"नहीं, कम्बख्त मरेगा ही तो नहीं · थोड़ी देर के लिए लुढ़ककर बस ऐसा हो जायेगा कि मुन्न· ओह! तिमिरा," उसके स्वर में जैसे मन

का आवेश आ गया हो; स्वर कुछ फुसफुसाहट का हो आया. एक असह्य भावोन्माद में मानो उसका बदन अँगड़ाई ले उठा ऐसे कि उसके जोड़ों के चटखने की आवाज आई. "भगवान् के लिये सब जितनी जल्दी हो खत्म कर करा कर निकलो···और चलो यहां से. जहां चाहो वहाँ चलो प्यारी! मैं तुम्हारा हूँ; तुम्हारे हुक्म का ताबेदार. चाहो तो बम्बई चलो—कहो तो देश छोड़ कहीं विदेश चले चलें पर यहाँ का किस्सा जल्दी-से-जल्दी समेट समाट कर निबटा डालो."

"जल्दी, लो, बहुत जल्दी···"

तुम्हारे आँख के इशारे की देर है. और मैं तैयार हूँ···क्या पाउडर, क्या ओजार, क्या पासपोर्ट वगैरह के कागज···और तब यह छू मन्तर, हम वह गये, वह गये. तिम्मी, मेरी हीरा, मेरी ताज, मेरी रानी!" और वह जो सदा सावधान और सतर्क रहता था, भूल गया कि अजनबी उसे देख सकते हैं और वहीं तिमिरा को आलिंगन में बाँध लेने को उद्यत हुआ.

"देखो देखो,··" बिल्ली की-सी तेजी और होशियारी से तिमिरा कुर्सी से उतर कर दूर हो गई. "पीछे ··पीछे फिर सैनेश्का, मेरे राजा··· मैं तो कुल तुम्हारी हूगी. न इन्कार होगा, न मनाई होगी. मैं तब तुम्हें खुद अपने से अघा दूंगी ··विदा, मेरे नन्हे प्यारे मेमने."

और तेजी से हाथ बढ़ाकर तिमिरा ने सैनका के सिर के बालों के घूंघरुओं को अपने हाथों की चपल उँगलियों से छितरा दिया और झपट कर वह काफी हाउस से बाहर निकल गई.

८

अगले रोज सोमबार के दिन सवेरे कोई दस बजे ठिकाने की सब जनी गाड़ियों में बैठकर शहर के बीच उस जगह के लिये रवाना हुईं जहाँ पोस्टमार्टम हाउस था. सब थीं सिर्फ न थी तो हगीता जो दूरन्देश थी और बड़ी तजुर्बेकार या डरपोक और अर्धविक्षिप्त निनका या तीसरी

दुर्बल मस्तिष्क पाशा, जो दो रोज से बिस्तर से ही न उठी थी गुमसुम रहती थी और सवाल जो उससे पूछे जाते तो जवाब में बुद्धू की तरह एक बेमान-सी मुस्कराहट से मुस्करा कर रह जाती. शब्द कुछ न कहती. गले से कुछ निकलता जिसमें कुछ ध्वनि होती और बस. खाने को उसे दिया न जाता तो वह माँगती भी नहीं और खाना सामने आ जाता तो जैसे दोनों हाथों से नदीदी-सी उस पर टूट पड़ती. वह ऐसी बदहवास और बेमान हो गई कि उसे कुछ जरूरी बातों के लिये भी टोक-टोक कर याद कराना पड़ता कि जिससे बिस्तर और कमरा ही कहीं गन्दा न हो जाए. एमा उडवानी अपने खास गाहकों के आगे पाशा को पेश न करती, जो हर रोज उसकी माँग करते थे. पहले भी उसे ऐसी बेसुधी के दौर आये थे मगर वे अर्से तक नहीं टिके थे और एमा उडवानी को खयाल था कि बहरहाल यह दौरा पार हो जायगा. पाशा इस अड्डे की बेशकीमती गौहर थी और वही पूरे मायनों में यहाँ की बदनसीब शिकार थी

पोस्टमार्टम वाला मकान एक लम्बा, एक मंजिला, मटमैला-सा भवन था, जहाँ दरवाजों और खिड़कियों के गिर्द सफेद चौखटे जड़े थे. उसके बाहरी रूप में ही कुछ था जो नीचा लगता था. दमित संकुचित और मानो धरती में खोया हुआ. कुछ अनबूझ का-सा बोध होता था. लड़कियाँ एक-एक कर दरवाजे के पास रुकी और ठिठकी डरी-सी सहन में से हो लीं, दूसरी ओर बने हॉल के किनारे दीवार से जा सट खड़ी हो गई. यहाँ भी दरवाजे, खिड़कियों पर सफेद चौखटें थीं.

देखा दरवाजे पर ताला लगा है. जरूरी हुआ कि चौकीदार की तलाश की जाए. मुश्किल से तिमिरा ने उसे ढूंढ़कर निकाला. जीर्ण, पुरातन, खल्वाट खोपड़ी का आदमी का एक नमूना था. जिसके चारों तरफ मानों झाड़-झखाड़ उग आये थे. नन्ही चुन्धी-आँखे और बड़ी-सी सूर्ख दानेदार नाक.

उसने उस लटकते भारी ताले को चाबी देकर खोला. चटखनी हटाई और रोते गाते जंगदार दरवाज़े को खोला. एक सर्द गीली हवा उनके चेहरों पर आकर लगी. उसमें नाना गन्ध मिली थी. पसीजते पत्थर की तरह धूप

सामग्री की गन्ध और मृतकायाओं की गन्ध. इस स्वागत पर लड़कियाँ एकाएक पीछे को एक पर एक गिरती-सी हटीं. एक तिमिरा अकेली अडिग भाव से चौकीदार के पीछे-पीछे बढ़ती गई.

हॉल मे अंधेरा था. मशियो की मध्यम रोशनी लोहे की सलाखो से घिरी जेल की-सी तंग खिड़कियों के पटों मे से छनकर थोड़ी-ही-थोड़ी आती थी. दो या तीन आकृतियां दीवारो पर टंगी दिखाई दी. कई लकड़ी के कफन के बक्स फर्श पर रखे दिखाई दिये जिनके नीचे पकड़ने के लिये हत्थे निकले हुए थे. बीच मे का बक्स उनमे खाली था और उसका ढकना उसके बराबर में अलग रखा हुआ था.

"तुम्हारे वाला किस किस्म का है ?" चौकीदार ने पूछा और नाक के अन्दर सुंघनी पहुंचाई, "चेहरा तुम पहचानती हो कि नही ?"

"मैं जानती हूं."

"तो देखो, सब तुम्हे दिखाये देता हूं. देखो, यह तो नहीं है··· " कह कर उसने एक काफिन का ढकना अलग किया. अभी वह कीलो से पक्का ठोका नहीं गया था. बक्स के अन्दर एक बुढ़िया लेटी हुई थी कपड़े से ज्यादा मानो वह झुर्रियाँ पहने हुए थी और मुंह सूजा और नीला था. बाईं आख उसकी बन्द थी मगर दाईं खुली थी. भयकर चिन्ता से वह वहाँ जड़ी थी. उसे देख डर लगता था. चमक और पहचान उस आँख में से मिट चुकी थी. और जैसे वहा पुराने बेकार अभ्रक की तह-सी चिपकी रह गई थी

"ओह ! तो यह नही, तुम कहती हो. तो देखो···यह दूसरे और हैं." चौकीदार ने कहा और एक-एक ढकना उघाड़कर वह प्रदर्शनी दिखाता गया. यह शरीर अधिकाश दीन, दरिद्र, असहाय पुरुषो के थे. इन्हे सड़कों गलियो से उठा लिया गया था. कोई नशे मे गिर गये थे, कुछ कुचल गये थे कुछ अपाहिज, विकलांग थे. उन शवों की कायाएँ दुर्गन्ध दे चली थीं. कुछ के हाथों और चेहरों पर अभी नीले-हरे से निशान उभर आये थे जो सड़ांध की पहचान थे. एक आदमी की नाक नदारद थी और ऊपर का ओठ कटकर दो हो गया था. उसमें कीड़े पड आये थे और वे कीड़े उसे

सफेद बिन्दियों की मानिन्द रेंगते हुए खाये जा रहे थे. एक औरत की जलोदर से मौत हुई थी और उसका पेट बक्स मे टीले की मानिन्द ढकने को ढकेलता-सा मालूम होता था.

सब लाशों को चीर फाड़ के बाद सी कर, सँभाल कर, धो कर बक्सो में लिटाया गया था. यह काम इस काई पुते चौकीदार और उसके साथियों ने किया था. अगर किसी का सिर इस प्रक्रिया में उसके पेट में पहुंच जाए या कि खोपड़ी में गुर्दा घुस जाए या कि अनमिल अवयव आपस में घुलमिल जाएँ तो इससे इन लोगों को क्या सरोकार. शवों पर चौकीदारी करने वाले ये लोग अपनी अनहोनो-सी जिन्दगी में सबके आदी हो गये थे. और यह भी देखा जाता था कि जो विचारे मुर्दे गूंगे बने उनके सामने आते थे उनके कोई नाते-रिश्तेदार नहीं हुआ करते थे.

मृतक शरीरों से निकली भारी बोझल गन्ध उस सारी जगह भरी हुई थी. तिमिरा को ऐसा लगा कि जैसे कोई चिपकनी लेही-सी आकर उसके शरीर के रोम-रोम को लिसकर बन्द किये देती है.

"सुनो चौकीदार—" तिमिरा ने पूछा, "यह हर वक्त पैरों के नीचे रेंगता-सा क्या हो रहा है."

"रेंगता-सा ?" चौकीदार ने शब्द को दोहरा करें मानो खुद उस ही से पूछा. और सिर खुजलाता-सा बोला, "होगा क्या, कीड़े होंगे." उसने उपेक्षा-भाव से कहा. "जाने ये कीडे लाशों पर ढेर-के-ढेर इतनी तेजी से कैसे होते जाते है···पर तुम देख जिसे रही हो वह मर्द है या औरत ?"

"एक औरत है." तिमिरा ने जवाब दिया.

"तो मतलब हुआ कि ये सब तुम्हारे नहीं हैं."

"नहीं, सब अजनबी है."

"लो बोलो···इसका तो मतलब हुआ कि दूसरे घर जाना होगा. तो वह आई कब यह बताओ ?"

"शनिश्चर को, बाबा." तिमिरा ने कहा और निकाल कर अपना बटुआ खोला, "शनिश्चर को दिन के वक्त···कुछ नहीं बाबा, यह तो जरा तुम्हारे तम्बाक के लिए था."

'हाँ-आँ,···तो शनीचर तुमने कहा, दिन मे और यह पहने क्या थी ?"

"क्या पहने थी, कहो कुछ नही. रात वाला एक छोटा-सा ब्लाउज था और नीचे बस एक बनिया दोनो सफेद कपडे के थे."

"तब तो-ओ, जरूर, नम्बर दो सौ सत्रह वाली है · नाम क्या था ?"

"सुसाना रैवजीना,"

"जाकर देखता हू शायद वह वही होगी अच्छा, तो बीरबानियो, उसने मुडकर सब लडकियों की तरफ कहा, जो दरवाजे मे एक-दूसरे में घुसी-सी इकट्ठी हो आई और रोशनी रोक रही थी ' तुममे सबसे हिम्मत-वर कौन है ? अगर तुम्हारी सहेली परसो यहा आई है तो इसका मतलब यह है कि इस वक्त वह उस हालत मे होगी जिसमे भगवान सबको पैदा करता है—यानी एक कत्तर उस पर न होगी ··अच्छा तो कौन तुम मे हौंसले वाली है ? कौन दो आगे आती है ? उसे कुछ पहनाना—वह लाना होगा ··"

"तो अच्छा तुम जाओ मनका " तिमिरा ने अपनी साथिन को हुक्म दिया जो घिन से और डर से सर्द और जर्द पड आई थी और फटी-सी हैरत भरी आंखो मे मृतक शरीरो को देख रही थी. 'डरती क्यो है मूरख—मैं तो साथ चल रही हू तू न जायगी तो कौन जायगा "

"मे भला मे···" हकलाती-सी मानो बिना होठ खोले नन्ही गोरी मनका बोली, "चलू ? तो चलो, सब मुझे समान है "

शवघर उस जगह के बिलकुल पीछे ही था वह एक नीचा एक दम अंधेरा तहखाना-जैसा था और छै-सात सीढी उतर कर ही वहाँ पहुँचना होता था

चौकीदार भागकर गया और एक मोमबत्ती का टुकडा और टूटी-फटी-सी एक किताब साथ लेकर लौटा. मोमबत्ती जलने पर लडकियों ने देखा कि कोई बीसेक लाशे तरतीब के साथ कतारों मे सीधे फर्श पर रखी हुई हैं, अकड गई हैं, नीली हैं, पीली हैं. चेहरे मौत से पहले के डर और दर्द के मारे तुड़-मुड़ गए हैं. किन्ही की खोपड़ियाँ खुली हैं, चेहरो के गाढ़े खून के लौंदे

कुछ पर जमा है, दाँतों की पाँतें खुली है.

"अभी लो ··अभी लो," चौकीदार कहता जाता और हरेक की लिखी निशानी को टटोलता जाता. "परसों ··यानी सनीचर को ··सनीचर ·· नाम क्या बताया था तुमने ?"

"रैंट्जीना मुसाना." तिमिरा ने बताया.

"रैंट्जीना मुसाना ··" चौकीदार ने दोहराया, मानो कोई गाने की गत दोहराता हो, "रैंट्जीना मुसाना, वही जो मैंने कहा. नम्बर दो सौ सत्रह हो है."

लाशों पर झुकता और टपकती छोटी-सी जली मोमबत्ती के सहारे उन्हे चमकाता एक से दूसरे को वह पार करता गया आखिर वह एक लाश के सामने रुका जिसके पैरों पर काली स्याही से बड़े से अंकों में लिखा था, २१७. यही है वह, जरा ठहरो. मैं उसे बाहर सिदरी तक पहले ले लूं फिर भाग कर कपड़ा लत्ता ले आऊँ ··थोड़ा रुक जाओ " कुछ बुदबुदाते हुए मगर उसके बुढ़ापे को देखते हुए अजब आसानी के साथ उसने जेनी के शरीर को पाँव से पकड़कर उठाया और फेंक कर कन्धे पर लटका लिया. सिर जेनी का उसकी पिंडलियो के पास लटका झूलता था जैसे काया मरें माँस की लोथ हो या आलू का कोई बोरा हो.

सिदरी में अँधेरा कुछ कम था और चौकीदार ने जब अपने बोझ को उतार कर फर्श पर रखा तो तिमिरा एकाएक अपने हाथों से अपना मुह मूद उठी. जबकि मनका मुंह मोड़ कर सीधी रोने लग गई.

'तुम्हे किसी चीज की जरूरत हो तो वैसा कहो." चौकीदार ने उन्हे समझाया. "अगर मुर्दे को किसी खास तौर के कपडे-बपडे पहनाना चाहो तो जो कहो वह चीज मिल सकती है. सोने के काम का कपड़ा मिल सकता है, माला चाहो माला मिल सकती है. सिर पर लेने को चुन्नी मिल सकती है, जाली आ सकती है—सब हमारे यहाँ तैयार रहता है···एकाध कपड़ा तुम खरीद सकती हो···जैसी जूतियाँ चाहो ले सकती हो···"

तिमिरा ने उसके हाथों में पैसा रखा और वह बाहर खुली हवा में आई. मनका को आगे-आगे वह ढकेलती गई थी.

कुछ देर बाद दो मालाये आ गई एक तिमिरा की थी जिसके ऊपर सफेद रिबन से एक कार्ड लगा था. "जैनी के लिए ! एक अभिन्न सहेली की ओर से" दूसरी रेजेनॉव की तरफ से थी. उसमे सारे फूल लाल थे और लाल ही रिबन पर सुनहरी अक्षरो मे लिखा था, "व्यथा मे से जलकर ही उजले होने की राह है," रेजेनाव ने उसके साथ एक पुर्जे पर लिखकर शोक प्रकट किया था और न आ सकने के लिए क्षमा चाही थी क्योंकि वह जरूरी काम की मीटिंग मे व्यस्त था और बैठक को टाला नहीं जा सकता था.

फिर गायक लोग आए जिनका तिमिरा ने इन्तजाम किया था शहर के सबसे बडे गिरजे की वाद्य-मण्डली के चुने हुए पन्द्रह आदमी थे मौलवी जो इस वक्त आया, वह एक बुजुर्ग आदमी था जिस पर लम्बा चोगा था और लम्बी दाढी, उसने वर्का को पहचाना ताज्जुब मे उसकी आखे खुली रह गई वह हलके मुस्कराया और आख मारकर उसे इशारा किया इस वक्त वह अपने सही साज मे था, गोया विशिष्ट हो महीने मे दो या तीन बार और कभी इसके अलावा भी अपनी जान-पहचान के साथियो या दूसरे मजलिसो के साथ दूसरे और ठिकानो का मुआइना करता हुआ आखिर अन्ना के अड्डे पर पहुचता यहा बिला नागा वह वर्का को पसन्द करता.

वह एक बेहद खुशगवार आदमी था और तबियत का मजेदार नाच मे मजे से नाचता बल्कि जोशोखरोश के साथ और नाचते वक्त ऐसी फिर-कनिया लेता और ऐसी आकृतिया बनाता था कि जो उपस्थित होते हसी के मारे दोहरे हो-हो जाते थे

वाद्यकारो के बाद डा घोडा की रथी आई यह भी तिमिरा की व्यवस्था थी काली चादर मे ढकी थी सफेद उस पर ध्वज थी और साथ सात ढुलने वाले शव कफन का बक्स आया जो सफेद लहरदार रलस के कपडे से मढा था नीचे उसके तख्त की बैठक थी जो गहरे काले कपडो से ढकी थी. सधे हाथो से बिना किसी हडबडी के उन्होने शव को लिया और उसे काफिन मे उतार लिया उसके चेहरे पर पारदर्शक बारीक गौज दिया और सुनहरी शाल से शरीर को ढक दिया फिर एक मोमबत्ती सिर की तरफ

और दो पाँव की तरफ जला कर रख दी गई.

बत्तियों की इस काँपती धीमी रोशनी में जेनी का चेहरा कुछ अधिक साफ दीख आया. आरक्तता अब वहाँ से जा चुकी थी. सिर्फ कनपटी के आसपास नासा के अग्रभाग पर और आँखों के बीच कुछ रक्त का आभास था. हलके से अलग से दीखते काले पड़े होठों के बीच से दाँतों की सफेदी झलक रही थी. और उन दाँतों से कटा जीभ का अगला हिस्सा नजर आ रहा था. खुले गले पर जिसका रंग पुराने कागज-सा हो आया था दो लकीरों के निशान उभरे थे. एक नीला, फाँसी की रस्सी का दूसरा सुर्ख जो साइमन के प्रहार का स्मृति चिन्ह था. जैसे दो गलहार हों. तिमिरा ने आगे बढ़कर गले के आसपास के कपड़े को समेटा और पास से सेफ्टी पिन खोलकर उसे ठोड़ी तक बन्द कर दिया.

पादरी लोग आए एक अधेड़ वय के सुनहरी चश्मा लगाये और सिर पर ऊँची-सी टोपी. दूसरे बीमार से दीखते लम्बी इकहरी काया के अधेड़ से एक पुरुष थे. जिनका चेहरा ऐसा जर्द था जैसे मोम का हो. तीसरा था एक भजनीक, वह दिलचस्प आदमी था और राह भर अपनी टोली के संगी साथियों से तरह-तरह की हलकी-फुलकी बातें और भिन्न-भिन्न इशारे करता आ रहा था.

तिमिरा बढ़कर पादरी के पास गई और बोली, "आप किस तरह प्रार्थना करेंगे पिता सब के लिए एक साथ या अलग-अलग."

"हम तो सब के लिए एक साथ ही प्रार्थना पढ़ा करते हैं" पादरी ने अपनी दाढ़ी पर हाथ फेरते, बालों को सुलझाते, अपना क्रूस चूमकर कहा, "यानी आम तौर पर तो ऐसा ही करते हैं पर खास निवेदन पर अलग की भी व्यवस्था की जा सकती है. मृतक की मृत्यु किस प्रकार हुई ?"

"आत्मघात से पिता,"

"एँ आत्मघात !···लेकिन लड़की तुमको मालूम है कि चर्च के नियमों के अनुसार कोई प्रार्थना का विधान ऐसी अवस्था में···क्या कोई है ? निस्सन्देह अपवाद है. खास ऊपर से हिदायत हो तो···"

"आप ठीक कहते हैं, पिता. लीजिए यह पुलिस के और डाक्टर के सर्टीफिकेट हैं···वह होश हवास में नहीं थी—एक विक्षिप्तता का दौरा—"

तिमिरा ने पादरी के आगे वे दोनों दस्तावेज किये जो शाम ही रेजेनॉव ने भेज दिये थे. ऊपर से दस-दस रुपये के तीन नये नोट भी आगे बढ़ाए.

"मेरा निवेदन है पिता कि आप ईसाई धर्म-विधि के अनुसार जो विधि हो पूरी तरह सम्पन्न करें. मृतक आत्मा एक बड़ी गुणी स्त्री थी. उसने बहुत सहा, बहुत झेला. और क्या आप कृपा कर सकेंगे कि शवयात्रा के साथ कब्रिस्तान तक चल सकें और वहाँ उस आत्मा की शान्ति के लिए एक और अन्तिम प्रार्थना कर सकें··"

"साथ वहाँ तक चल तो सकता हूं पर उस जगह प्रार्थना करने का अधिकार मेरा नहीं है. वहाँ के अपने पादरी होते हैं—और सुनो बेटो, मुझे यहाँ से जाकर जरा देर बाद फिर जो लौटना होगा तो इसके लिए क्या तुम और गाड़ी के लिए भी·· दस का एक और नोट न देना चाहोगी ?"

तिमिरा के हाथ से उन्होंने सहज भाव से नोट ले लिया. लेकर धूपदान को प्रणाम किया जो भजनीक महोदय उनके समक्ष ले आये थे. फिर उस धूपदान को हाथ में लेकर उन्होंने मृतक शरीर की परिक्रमा आरम्भ की. अन्त मे उसके सिरहाने रुककर अपने व्यवसाय के अनुरूप नम्र और शोकाकुल वाणी में कहा, "ओ परम पिता परमेश्वर ! तू परम दयालु है. तू जैसा आदि मे था अब है, और वही सदा रहने वाला है. अनन्त यह जगत् तेरी ही अपार माया है."

भजनीकों ने भजन गाए. मानो उन भजनों के द्वारा कोई परम गुह्य सन्देश वह दे रहे हों. ऐसी शान्त गम्भीर अवसादपूर्ण उनकी वाणी थी. मधुर भाव से किन्तु तनिक शीघ्र स्वर से उन्होंने गाया, 'ऐ पिता, ऐ पिता! तेरा वर पाकर सन्त जन परमैश्वर्य मे जैसे तेरे निकट स्थान पाए है उसी तरह इस अपने दास की आत्मा को तू अपनी शरण और शान्ति दे. जीव मात्र के लिए जो तुझमें अपार करुणा है उसी की वरद्छाया में तू इसे भी

स्वीकार कर."

भजनीक ने धूपदान घुमाया और सबको धूम का प्रसाद दिया. सबको बत्तियाँ बांटी गई. उन जीती जागती नन्हीं कोमल ज्योत के एक पर एक जगने पर वहाँ के भारी बोझल अंधकार में क्रमशः उन स्त्रियों के चेहरे आर्द्र और पारदर्शी से प्रकाशित होते दिखाई दिए.

संगीत का स्वर शोक विह्वल-सा समवेत स्वर से गूंज गया. और संगीत के इन बोलों में दुखी देवताओं का मानो व्यथित उच्छ्वास ध्वनित हुआ.

"ऐ पिता, गोद मे स्वीकार कर इस अपनी दास आत्मा को अपनी कृपा के स्वर्ग में जगह दे, जहाँ कि तेरे भक्त और अनन्य सेवकों के मुखों का प्रकाश सबको प्रकाशित रखता है. इस अपनी दास आत्मा को शान्ति दे. जो अपने सब दोष, सब पापों को पीछे छोड़कर अब चिरनिद्रा में सो गई है."

तिमिरा ध्यान मे सुन रही थी. शब्द परिचित थे लेकिन जाने कब से उसने उन्हें सुना नही. सुनकर एक कड़ुवी स्मृति उसमे जागी और उसी कड़ुवाहट मे वह मुस्करा आई. स्वर्गीय जेनी के शब्द उसे याद आए जिनमें पागलपन था पर कितना उन्माद था, कितनी गहरी अनास्था और अनिवार्य निराशा. क्या परम दयालु, परम क्षमाशील परमेश्वर क्षमा कर देंगे या वह क्षमा नही कर सकेंगे ! उस जीवन को जो तिक्त था. कटु था, अपावन था और ऐसा तूफानी और विक्षिप्त था. तू तो सब जानता है, क्या तू भी उसे दुतकारेगा ? वह जो कि विद्रोही थी पर दयनीय थी. व्यभिचारिणी थी पर विवश थी. तेरा नाम न लेती थी, उसे स्वीकार न करती, पर बच्ची थी. ओ, तू यह जो परम कल्याणमय है, ओ अशरण-शरण !

इतने मे उस भवन मे एक दबी-सी सिसकी की आवाज उठी और देखते-देखते चीख बनकर वह भवन को गुंजार गई. वह पुकार रही थी, "ओ जेनी !" यह पुकार नन्हीं गोरी मनका के कलेजे में से निकल कर आई थी. वह घुटनों के बल बैठी रूमाल को मुँह मे दे-देकर सुबकी रोक

रही थी और आंसुओं में नहा रही थी. पर सब कलेजे में रुक न सका. चीख फूटी और दूसरी उसकी साथिनें भी उसी तरह घुटनों बैठकर उसमें शामिल हो गईं. भवन सारा उनके विलाप से हुंकार से, उच्छ्वास से भर गया…

"एक तू ही अमर है ! तू कि जिसने मर्त्य को सिरजा और बनाया है. इस धरती की धूल से हम बने हैं और धरती की उसी धूल में हमें आ मिलना है. यह तेरा विधान है और सृष्टि के आदि में ही तूने मुझे कह दिया था कि तू धूल में से है और फिर धूल में ही तेरा वास होना है."

तिमिरा अचल खड़ी थी. चेहरा उसका थिर और कठोर, जैसे पत्थर बन गया था. मोमबत्ती से उठता प्रकाश उसके घुंघियाले बालों में से काले सुनहरी वलयपुञ्ज-सा प्रतिबिम्बित दीखता. उसकी आंखें जेनी के चेहरे पर बँधी थीं और हटती न थीं. वहाँ से उसे जेनी का माथा दीख रहा था और नाक का सिरा जो पीला दीखता और कुछ भीगा-सा.

"धूल तू है और धूल में तुझे जा मिलना है…" वह मन-ही-मन भजन के इन शब्दों को दोहराती, सोचती, "क्या सबका बस यही अन्त है ? सिर्फ धूल, कुछ भी और नहीं. तो बेहतर क्या है ? कुछ-न होना या कुछ-तो भी होना ? नकार, सर्वथा न होना—या तुच्छ कीट ही सही पर तो भी कुछ-न-कुछ होना."

और समवेत संगीत वहाँ उसकी शंकाओं को ताल देता हुआ मानो अन्तिम आश्वासन को उसके पास से छीन लेता निरीहता के साथ गा रहा था :

"यह अनित्य ससार, यहाँ से जाना है…"

अन्तिम भजन समाप्त हुआ. मोमबत्तियाँ बुझा दी गईं. धुए की नीली-सी लकीरें धूपदानी में से उठकर हवा में लपेटे ले रही थीं. पादरी ने गाई, प्रार्थना पढ़ी और फिर उस व्याप्त नीरवता में भजनीक द्वारा थमाये गये अपने हाथ के खोंचे से धरती मे से मट्टी उठाई और शव पर क्रास बनाते हुए उसे शव पर डाल दिया. ऊपर के सफेद महीन कपड़े पर मट्टी की लकीरों का यह क्रूस सांकेतिक बन आया. फिर गम्भीर और अवसन्न अनिवार्यता के साथ शब्द कहे. जिनमें संसार के तत्व का मानो

रहस्य भरा था. जगत् कि जो भगवान् का है, जिसका होना और सबके जिसमें होना उसी के ऐश्वर्य का प्रसाद है.

लड़कियाँ अपनी मृत सहेली के साथ वहाँ तक गईं कि जहाँ उस काया को भूमिस्थ होना है. उस ओर जाने वाली राह उनकी गली के मुहाने को छूती हुई जाती थी. गली में से निकलते तो फासला शायद आधा हो सकता था. लेकिन उस गली मे से तो शव ले जाने की प्रथा न थी, अनुमति न थी.

तो भी उस गली के सब ठिकानों में से, सब घरों के सभी दरवाजों में से जैसी थी उसी हालत में सब जनीं बाहर चौराहे पर आ गई. नंगे पाँवों, रात की पोशाक या सिर पर रूमाल लपेटे बाहर आई, गहरा साँस लिया 'स्वस्ति' कहा और आँखों में बरबस आये आँसुओं को रुमालों से या धोती के छोरों से पूंछा.

मौसम साफ हो आया...गहरे नीले सर्द आसमान में से सूरज चमक आया. घास जो सूखी थी अपने में से हरे किल्ले दिखा उठी. वृक्षों पर जीर्ण पात की जगह सुनहरी और गुलाबी कोंपलें खिल आई· ·और निर्मल आकाश में, ठण्डी वायु में गम्भीर विषाद के से स्वर में गूँजता रव पुकार उठा. पावन पिता, पावन परमेश्वर, वह कि जो सनातन है, सर्वेश्वर है, हम पर दया करो. जीवन के प्रति वह अदम्य प्यास जो बुझना नही जानती, आनन्द के और होने के सौन्दर्य के प्रति—चाहे वह होना क्षणिक हो, स्वप्नवत हो, किन्तु उस क्षण और स्वप्न के प्रति कैसी लालसा और आकुलता मृत्यु की अनन्त नीरवता के समक्ष कैसा अगाध विस्मय और भय—गति की प्राचीन लय में यह सब किस वेग से ध्वनित और प्रतिध्वनित हो रहे थे.

अन्त में कब्र के ऊपर एक अन्तिम मंगलाचरण हुआ और कफ़न के ढकने पर मिट्टी के गिरने की आवाज सुन पड़ने लगी. गढ़ा था वहाँ धरती में उभार आया...

"और अब यह अन्त है." तिमिरा ने, अकेली रह गई अपनी साथिनों से कहा, "सखियों, बहनों—घण्टा भर पहले और अब घण्टे-भर बाद तो सबको ही चलना है·· मुझे जेनी के लिये शोक है···गहरा सन्ताप है.

ऐसी दूसरी कोई हमें मिलने वाली नहीं है. तो भी मेरी बच्चियों क्यों वह अपने उस गढ़े में उससे अच्छी नहीं जितनी हम अपने गढ़े में हैं·· अस्तु आओ, अब हम अन्तिम बार यहाँ 'स्वस्ति' कहें—और घर चलें ·"

सबने 'स्वस्ति' कहा, 'स्वस्तिक' का चिह्न किया उसके बाद एकाएक तिमिरा ने भेद भरे से गम्भीर भाव से ये शब्द कहे, "उसके बिना अब हम यहाँ ज्यादा साथ रहने वाली नहीं हैं. हवा आयेगी और जल्दी ही सब इधर-उधर बिखर जायेंगी. जीवन आनन्दमय है, यह देखो, सूरज है, नीला आसमान है, हवा है, कैसी साफ और स्वच्छ. ओस के जाले से तैर रहे हैं. जगत् में कितना सुख है. कितना मंगल है···सिर्फ हम ही, हम लड़कियाँ राह से छिटके गन्द की मानिन्द ··पर आओ, चलें."

सब जनी राह पर आगे हो लीं. एकाएक बराबर से एक बड़े मकान के पीछे से लम्बे क़द और पुष्ट शरीर का विद्यार्थी निकल कर बढ़ा. वह लुवी तक पहुँचा और धीमे से उसे बाँह पर छुआ. लुवी पीछे मुड़ी और सामने सोमदेव को देखकर चहक-सी गई. उसका चेहरा एक साथ ही पीला हो आया. आँखें फटी रह गईं और उसके होंठ काँप आये. "चले जाओ," उसने अपार घृणा फिर भी धीमे स्वर से कहा

"लुवी!···लुवी" सोमदेव बुदबुदाकर बोला. "मैंने ढूंढ़ा···सारे में ढूंढ़ता फिरा · मैं, भगवान् जानता है, वैसा उस लखनपाल जैसा नहीं हू सच कहता हूँ. यकीन करो, आओ इसी वक्त आज ही···"

"चले जाओ." और भी संयत बनकर लुवी ने कहा.

"मैं ईमान से कहता हूँ ··मजाक नहीं है, गम्भीरता से कहता हूँ ·· मेरा मतलब है विवाह."

"ओह! जानवर कहीं का." लुवी एक बार ही गुस्से से चिल्लाई और अपने कड़े देहाती हाथों से तेजी से उसके गालों पर चाँटा जड़ती हुई बोली, "ले, यह ले. और चाहिये ?"

सोमदेव पल के लिये अपनी जगह पर डगमगाता-सा खड़ा रह गया. आँखें उसकी ऐसी बन आईं जैसे शहीद की हों···मुंह आधा खुला रह गया और उसके आस-पास विस्मय और विषाद की रेखाएँ घिर आईं.

"निकल, चला जा यहां से. मैं तुम लोगो की शक्ल नहीं देखना चाहती." लुवी क्रोध से चीखती जा रही थी, "सुअर, बदमाश, हत्यारे !"

सोमदेव ने आशा के विपरीत हथेलियों से अपना मुंह ढका और वापिस मुड़ लिया. उसे अब राह पता न था. पग डगमगाते थे जैसे पिये हो और होश में न हो.

९

तिमिरा के शब्द सचमुच ही सच निकले. जेनी के दफ़ न के बाद दो हफ्ते से ज्यादा न गुजरे होंगे कि इस थोड़े से वक्त में एमा उडवानी के ठिकाने पर वह सितम टूटे और घटनायें घटीं जो बरसों के दौर में अक्सर नहीं हुआ करती.

ठीक अगले ही दिन बदनसीब पाशा को एक अनाथों के लिये बने पागलखाने भेजना पड़ा. उसका मस्तिष्क दुर्बल होते-होते बेकार हो गया था और सुध-बुध सब खो गई थी. डाक्टर का ख़याल था कि सुधार की कोई आशा नहीं है. और सचमुच ही मानसिक चिकित्सालय में ले जाकर फर्श पर पुआल की गद्दी पर उसे जिस हालत में लिटाया गया मौत के क्षण तक वहां वह ठीक वैसा ही पड़ी रही. न हिली, न उठी, मानो नीचे पाताल का गर्त्त खुल आया हो और उसकी चेतना गहरे-से-गहरे उसमें डूबती और लुप्त होती जाती हो. मगर मरने में उसने पूरा आधा बरस लिया, लेटे-लेटे उसका बदन छिल गया और उसके खून में तरह-तरह के रोग बन आये.

दूसरा नम्बर तिमिरा का था. कोई आधे महीने उसने संरक्षिका के कर्त्तव्य निबाहे. इस काल में अपना काम उसने बड़ी मुस्तैदी से किया और असाधारण कुशलता के साथ. मगर उसके अन्दर बराबर कुछ घुनता रहता था, वह वेग पकड़ता जा रहा था. उसके वश उसने सब ख़त्म कर दिया. एक शाम वह गायब थी, फिर वापिस उस ठिकाने लौटी नहीं "

असल बात यह थी कि शहर में भी एक इज्जतदार रिटायर्ड अफसर

के साथ उसका प्रेम. व्यापार आरम्भ हो गया था. अधेड़ उसकी उम्र थी. काफी सम्पन्न था पर था बेहद कंजूस. कोई सालभर पहले उनमें जरा जान-पहचान हुई. संयोग ऐसा हुआ कि एक ही स्टीमर में दोनों जा रहे थे. दोनों में किसी तरह बात भी हो निकली. चतुर, सुन्दर तिमिरा, उसकी भेदीली आमन्त्रण-सा देती मुस्कान, उसकी खुशगवार मजेदार बातचीत. शील के साथ उसका चलन, रहन-सहन इस सबने अफसर का मन जीत लिया. तिमिरा ने उसी क्षण भाँप लिया था कि इस भले आदमी को अपना शिकार बनाना होगा. देखने में भव्य, व्यवहार मे भद्र और निश्चय ही परिवार और प्रतिष्ठा से सम्पन्न. तिमिरा ने अपने व्यवसाय के बारे में उसे कुछ नहीं बताया. उसे उत्सुक और रहस्य मे भरमाये रखा. तिमिरा को यह रुचिकर होता था. एक चलने से सकेत के तौर पर अस्पष्ट से शब्दों में उसने जताया कि वह मध्यम श्रेणी की एक विवाहिता महिला है, गृहस्थ जीवन, कलह और क्लेश का है क्योकि पति जुआरी है और बेरहम है, कि भाग्य ने और तो क्या उसे सन्तति का सन्तोष भी तो नही दिया है कि उसी पर तस्कीन करती. अलग होते समय उसने इन्कार किया और क्षमा मांगी कि वह सध्या उन्हे न दे सकेगी क्योकि ऐसा उचित नही है, न उसकी ऐसी इच्छा है. मगर हाँ वह चाहे तो उसे खत लिख सकते हैं. डाकखाने की मार्फत अमुक बनावटी नाम से. उनमें इस तरह चिट्ठी-पत्री शुरू हुई और पनप आई. अपने पत्रों में अफसर महोदय अपना दिल कलेजे पै निकाल रखते और ऐसी वह लिखते जो नाविलों के नायकों को मात करती है. तिमिरा ने अपनी ओर से तटस्थ और अनिश्चित भाव ही पत्रों में बनाये रखा. आखिर अन्त में महोदय की प्रार्थनाओं से पिघलकर उसने प्रिंस पार्क में मिलने की एक तिथि को स्वीकार किया. वहाँ वह बड़ी मोहक बन आई. दिलचस्प और ऐसी कि स्वय रीझी हो. पर उनके साथ कहीं भी जाने से उसने इन्कार कर दिया.

ऐसे वह अपने भक्त को सताये गई और उनकी ज्वाला को होशियारी से उकसाये गई और चेताये चली गई. कामना की यह ज्वाला प्रेम की आग से अकसर ज्यादा तेज और तीखी थी और उतनी ही खतरनाक.

आखिरकार इस गर्मी में जब कि उन राय साहब का परिवार बाहर कहीं गया था उसने तय किया कि वह उनसे मुलाक़ात के लिये जा सकती है. तब पहली बार उसने अपने को उन पर वार दिया. इस आत्मसमर्पण मे मानो उसके अन्दर अन्त:करण का बडा संघर्ष था और उतनी ही उत्कट कामना और विवशता थी. उसमें से रायसाहब को इतना उच्छ्वास मिला और उत्साह, सक्रियता और निष्क्रियता, इतनी उमड़ और इतना आवेग कि बेचारे रायसाहब का सिर फिर गया. वह एक बार के लिये पागल हो आये. बुढ़भस उन पर सवार हुई और वह उसमे ऐसे बहे कि आगे-पीछे की उन्हें सुध न रही. मद उन पर चढ आया और उनके रुकने का आखिरी सहारा, बेहया और बेवकूफ दीखने का डर, वह भी उनमे दूर हो गया.

तिमिरा बडी बचकर मिलती थी और कम मिलती थी. इसमे बेसब्र रायसाहब की आग भी और भडकी रहती वह मानो मजबूरी मे आखिर उनमे कभी फूलो के उपहार स्वीकार कर लेती. मध्यम से किसी रैस्टॉ में निमन्त्रण स्वीकार कर लेती मगर कीमती तोफे कभी उसने कबूल न किये बल्कि गुस्से से इन्कार कर दिया. यानी कि कुल मिलाकर वह ऐसी चतुराई मे व्यवहार किये गई कि रायसाहब को सामने लेकर उसे पैसा देने की हिम्मत ही कभी न हो सकी. एक बार उन्होंने हकलाते कुछ ऐसा कहा, कि अगर एक अलग मकान उसे ले दिया जाये जहाँ दूसरे सब सुभीते हों—तो बीच में ही तिमिरा ने उनकी आँखों में ऐसे स्वाभिमान, ऐसी कड़ाई और ऐसी तीव्रता मे देखा कि वह एक बालक की तरह, खिचड़ी बालो की तरह अपने चेहरे पर मुख हो आया और आदर से उसके हाथ उठाकर चूमते हुए लाख-लाख क्षमा मांगने लगा

इस तरह तिमिरा उनके साथ खेल रचती रही थी. देखती जाती थी कि जमीन नीचे खूब पुख्ता होती जाती है अब वह बखूबी जानती थी कि रायसाहब किन दिनो मे अपनी लोहे की फायरप्रूफ सेफ मे बडी रकमें लाकर रखा करते हैं. ताहम उसे जल्दी नही थी कि कहीं हड़बड़ी मे और बेताबी मे सब खेल ही कही चौपट न हो जाए.

कि आखिर सही दिन आकर पहुँचा जिसका कबसे इन्तजार था. एक बड़ी नुमायश का ठेका हाल ही में खत्म हुआ. रायसाहब के आधीन सभी अफसर थे. हर रोज बड़ी-बड़ी रक़मों का मामला तय कर रहे थे. तिमिरा जानती थी कि रायसाहब अकसर शनिवार के दिन सब पैसा बैंक ले जाया करते हैं कि जिससे इतवार को पूरे आजाद हों. चुनांचे शुक्र के दिन रायसाहब को एक आदमी के जरिये नीचे लिखा खत मिला.

"मेरे प्रीतम ! मेरे चाँद ! मेरे राजा सूरज ! तेरी बाँदी तेरी चमन चहेती, तेरी चेरी अपने अतृप्त चुम्बनों से तुझे याद करती है, तेरा स्वागत करती है. प्यारे ! आज मेरी छुट्टी का दिन है और मैं बेहद खुश हूँ. आज मैं आजाद हूँ और तुम भी आजाद हो. वह पूरे एक दिन के लिये काम-काज के सिलसिले से कानपुर चला गया है और मैं चाहती हूँ कि मैं सारी शाम और सारी रात घर में तुम्हारे साथ बिताऊँ. आह, मेरे प्यारे ! मैं तेरे सामने दोजान होकर सारी जिन्दगी बिताने को तैयार हूँ. मैं कहीं नही जाना चाहती. इधर-उधर के रेस्त्राँ और होटलों मे मैं तंग आ गई हूँ. मैं तुम्हे चाहती हूँ···तुमको···तुमको···सिर्फ तुमको इसमे, मेरे राजा ! शाम को, रात होते मेरी राह देखना, कोई दस या ग्यारह बजे. शराब की खूब-सी बोतलें निकाल रखना जो बर्फ में जमाई हों. और मेवा, और नमकीन और मैं कामना से जल रही हूं. तेरी प्यास से मरी जा रही हूँ. लगता है तुम साथ न दे सकोगे. मैं तुम्हें थका मारूँगी मैं ठहर नहीं सकती. मेरा सिर घूम रहा है, चेहरा जल रहा है और हाथ दोनों ऐसे ठण्डे हैं जैसे बर्फ. आओ, मुझे आलिंगन दो. और मेरा आलिंगन लो.

उसी शाम कोई ग्यारह बजे तक वह रायसाहब के साथ काफी दूर तक बढ़ गई. ऐसी बातें कीं, सम्पन्नता के उनके अभिमान को ऐसा दुलराया, चतुराई से ऐसा बहलाया कि उन्होंने उठकर खुद उसके सामने अपनी फायरप्रूफ सेफ खोली. तिमिरा ने होशियारी से देखकर पकड़ लिया कि किन-किन अक्षरों को घुमाकर साथ बिठाने से ताला खुल जाता है. फिर उडती-सी नजर से सेफ के खाने और अन्दर रखे बक्सों को देखकर उसने मुँह मोड़ा थकान की-सी एक जमुहाई ली, बोली, "एँह, आओ क्या बेकार

की बातों में पड़ गये हो ?"

और देखते-देखते रायसाहब के गले में बाँहें डालकर उन्हें अपने में बांध लिया. और कानों के पास मुंह ले आकर अपने गर्म सांसों से उनके उछलते मन को उकसाते हुए कहा, "बन्द भी करो कम्बख्त को. ताला लगाकर आओ और चलो मेरे राजा !·· आओ-आओ."

और उस कमरे से बाहर निकलकर जाने में पहले और आगे-आगे खुद वह थी.

"यहाँ आओ प्यारे !" वहाँ से पुकारती हुई वह बोली, "जल्दी आओ. कही यह खोने का वक्त है ? मैं पीना चाहती हूँ कि बस फिर एक ही चीज रह जाये—प्यार, प्यार, अनन्त प्यार !···नही, पी भी डालो, है कितनी. छोड़ना गुनाह है. तली तक पी डालो प्यारे ! जैसे कि आज हमने अपने प्यार को तली तक पी के चुका डालना है."

रायसाहब ने अपना ग्लास उसके ग्लास के साथ बजाया और एक घूट में गटक कर सारा पी गये. तब फिर उन्होने होठ बिचकाए और बोले, "ताज्जुब है, शराब आज किसी कदर कड़ुवी मालूम हुई."

"हाँ, "तिमिरा ने कहा, और अपने प्रेमी को टक बांधकर देखती रही, "यह शराब कद्रेतल्ख होती है. पहाड़ की शराबें तुम जानते हो· "

'मगर आज तेजी रोज से ज्यादा थी !" रायसाहब ने कहा, "नही, शुक्रिया तुम्हारा मेरी जान ! - और मुझे नही चाहिए."

पांच मिनट बाद कुर्सी पर बैठे-बैठे वह सो गये, सिर पीछे कुर्सी की पुश्त पर टिका था और जबडा लटक आया था. तिमिरा ने कुछ देर इन्तजार किया और फिर उन्हें जगाकर देखने की कोशिश की. रायसाहब अचल थे और जाने कहाँ पहुँच गये थे, तब उसने जलती मोमबत्ती ली. गली पर खुलने वाली खिडकी की चौखट पर उसे चमकाया, बाहर मुख्य द्वार के पास पहुँची और कुछ आहट लेने की चेष्टा की. कुछ ही देर में जीने पर किसी के कदमों की आवाज आई. बिना शब्द किये उसने चुपचाप दरवाजा खोला और अन्दर सैनका दाखिल हुआ. असल जैन्टिलमैन का वेष था और हाथ में नया चमड़े का आला हैण्डबैग था.

"तैयार ?" चोर सरदार ने फुसफुसाकर पूछा.

"नींद में एकदम चित है." उसी आहिस्ता आवाज में तिमिरा ने जवाब दिया, "देखो यह चाबी है.

दोनों साथ उस फायरप्रूफ वाली सेफ के कमरे में गये. टॉर्च फेंककर सैनका ने ताले पर जो निगाह डाली तो हौली आवाज में कसम खा कर कोसता-सा बोला, "कम्बख्त बूढा, बड़ा काइयाँ निकला, शैतान का बच्चा ·· जानता था कि ताला बदमाश ने नम्बरों वाला बनाकर रखा हुआ है, अब नम्बर पहले पता चलें तो जाकर···नही तो सारे को बिजली से गलाना होगा और इसमें जाने ससुरी कितनी देर लगे"

"नही, वह सब फसीहत जरूरी नहीं है." तिमिरा ने जल्दी से कहा, "मुझे नम्बरों का जोड़ मालूम है·· दो, चार, नौ, पाँच, छै. बस यह चुन कर लगा दो."

दस मिनट बाद दोनों साथ-साथ जीना उतर कर मकान से बाहर आए जान बूझकर अलग-अलग होकर कई फालतू मोड और गली पार करते हुए अन्त मे पुराने शहर में पहुँच कर डिपो के लिये उन्होंने गाडी की और बकाया नागरिक पासपोर्ट दिखाते हुए शहर से बाहर हुए. पासपोर्ट मे वे ऊँचे जागीरदार पति-पत्नी थे. नाम था सतवन्त.

मुद्दत तक फिर उनके बारे में कुछ नहीं सुना गया. आखिर डेढ़ेक साल बाद दिल्ली मे एक बड़ी चोरी के सिलसिले में सैनका पकड़ा गया। हवालात की तकलीफ उसे दी गई. आखिर उससे तंग आकर उसने तिमिरा का सुराग दे दिया. दोनों पर मुकदमा चला और दोनों को अदालत से सजायें मिलीं.

तिमिरा के बाद नम्बर आया वर्का का, स्वभाव से वह भोली थी, विश्वास करने वाली और प्रीत पालने वाली. इधर अरसे से वह एक अध-फौजी आदमी के प्रेम में थी जो फौजी विभाग के दफ्तर में अपने को क्लर्क बताता था. नाम था दलजीत. दोनों के सम्बन्धों में वर्का थी जो इश्क में थी और यह हजरत अपने को मूरत गिनते थे जिसकी भक्ति की जा सकती हो, आरती उतारी जा सकती हो. जिनका खुद काम पूजा और चढ़ावा

स्वीकार करने की कृपा करना ही हो. पिछली गर्मियों के अन्त से वर्का देखने लगी थी कि उसका आराध्य ठंडा पड रहा था और उसमें उपेक्षा आ चली थी. उससे बात करता है तो मालूम होता है कि मन उसका कहीं दूर बहुत दूर है, वह बार-बार पूछती, झुंझलाती और त्रास के मारे मरी जाती एक अनजानी ईर्ष्या उसे कुतरती रहती पर जवाब मे वह साफ कुछ न कहता जाने क्या कुछ सांकेतिक से शब्द कहता जिनसे लगता कि कोई भारी बिपत और घोर सकट उस पर आने वाला है. न हो कही अकाल मौत ही आ जाये·· सितम्बर के शुरू मे जाकर आखिर उसने वर्का से कुबूल किया कि उसने सरकारी रुपये मे खयानत की है ओर तीन हजार से कुछ ऊपर रकम चुरा ली है. अब पाँच दिन में भेद खुल जायगा क्योकि चैक-अप होने वाला है और दलजीत की बदनामी और बेइज्जती होगी मो होगी, आखिर में अदालत से सख्त मुशक्कत की सजा भी उसे जरूर होगी कहते-कहते फौजी विभाग के क्लर्क महाशय सिर को दोनो अपने हाथो मे थामे रहते, सुबकी ले लेकर रो उठते और पुकारते "ओ मेरी माँ बेचारी उसका क्या होगा ? वह इस बेइज्जती को झेल नही सकेगी···नही, इस बेगुनाह जिल्लत या दोजख की तकलीफ से मरना हजार दफा अच्छा होगा"

अगर्चे हमेशा की तरह वह सस्ने उपन्यासों की भाषा मे अपने दुख की तस्वीर खीचता था (और इसी किस्म की लच्छेदार बातो से भोली वर्का का मन उसने काबू किया था) तो भी अपघात की बात नाटकीय होकर एक बार मन मे होकर सहमा वह वहाँ से दूर नही होती थी और मन में गहरी ही बसती जाती थी

एक दिन किसी तरह वह प्रिंस पार्क मे वर्का के साथ काफी देर तक घूमता रहा पार्क मे पतझड के बाद अब दरख्त नये-नये चिकने पत्ते ओढ़ कर अजब बहार मे लहलहा आये थे कोपले फोडते हुए नये निकलते थे कि मलय धूप की ज्योत से तरह-तरह खेलते और नये-नये रगो का आभास देते. गुलाबी, सुर्ख, ऊदे, किशमिशी मे हरे नीले, बैंजनी रंग का मद्य आपस में खेलने से जान पड़ते. लगता कि वायु सौरभ बखेर रही है और समझ के साथ भीतर उतर कर वह उन्माद की हिलोर मे जगा जाती है इस आनन्द

और उन्माद के साथ लगता कि बिछी घास से, लताओं से, वृक्षों से, एक अवसाद भी फूट रहा है, मानो शान्त मृत्यु का कोमल स्पर्श हो."

दलजीत अपने ही आवेग में विह्वल और आर्द्र हो आया. भावावेग में वह बह कर अपने ही प्रति सदय बना-सा वह आँसू बहा उठा वर्का भी उसके साथ रो आई.

"आज मैं अपनी हत्या कर लूंगा." दलजीत ने संकल्प-सा प्रकट किया, "सब खत्म हो चुका है···"

"नही, प्यारे ! यह न करना·· मेरे मोती, मेरे हीरा ! यह न करना · "

"नहीं, अब और कुछ नही है." दलजीत ने अनिवार्य बनकर कहा, "कम्बख्त पैसा क्या प्यारा है—जिन्दगी, कि इज्जत ?"

"मेरे प्राण·· "

"बोलो नहीं, नहीं बोलो मत, नीता ! (जाने कैसे वह सीधे सादे वर्का की जगह ऊँचे और अच्छे इस नीता नाम से उसे पुकारता था.) नाम यह काफी सोचकर उसने रखा था बोलो नही, यह तय है."

"ओह ! जो मैं कुछ मदद कर सकती !" वर्का दुःख भरे स्वर में बोली, "तो मैं प्राण देकर करती—अपने खून की एक-एक बूंद दे देती—"

"जिन्दगी क्या है ?" ऐक्टर की-सी निराशा मे दलजीत ने सिर हिलाया. कहा, "बिदा नीता—सदा के लिए विदा—"

लडकी ने जोर से सिर हिलाकर कहा, "नहीं-नहीं, मैं विदा नहीं लूंगी—नहीं लूंगी—कभी भी विदा नहीं लूंगी. मुझे लो—मैं भी साथ चलूंगी—"

रात ढले दलजीत ने एक कीमती होटल में एक कमरा लिया. वह जानता था कि कुछ ही घण्टों में शायद मिन्टों मे वह और वर्का शव मात्र रह जायेंगे और इसलिए अगर्चे उसकी जेब में कुल जमा सिर्फ पाँच पैसे पड़े थे, उसने शान से, मानो नवाब का बेटा हो और हाथ बेहद खर्च का आदी हो, उसने बढ़बढ़ कर आर्डर किया. एक से एक खाने मँगाये और फल और मेवे और व्यंजन और पेय और शरावें और सब कुछ. अमल में

उसे यकीन था कि वह अपने गोली मार लेगा. यह ख्याल उसे खूबसूरत लगता, उसे पसन्द आता और अलग से वह उसे ऐसे देखता जैसे शानदार ट्रैजडी सामने देखता हो. और अपने रिश्तेदारों की घोर निराशा और साथी बाबुओं की उत्सुकता और अचरज का पूर्वाभास उसे आनन्द और हर्ष देता. उधर वर्का ने जब यह कहा कि अपने प्यारे के साथ वह भी जान दिए बिना न रहेगी तो यह खयाल उसमें और मजबूत हो गया था। वर्का के लिए इस मौत में कोई डर न था. कहती, "तुम्ही कहो, इस जिल्लत और मुसीबत के नीचे झींकते हुए जीने में क्या रखा है. यहाँ मैं अपने प्यारे के साथ तो हूं और मौत साथ होकर क्या प्यारी न होगी—" कह कर वह क्लर्क बाबू के गले से चिपट कर उसे चूमती, हँसती और खुश होती. इस समय की वर्का अपने बिखरे फैले घुंघराले बालों के बीच उसका चेहरा जिसमें आँखें आस्था से दमकी दीखती इससे ज्यादा सुन्दर कभी न दीखा था.

आखिर अन्तिम क्षण जिसमें विजय थी और समाप्ति थी, आ पहुचा.

"तुमने और मैंने, हम दोनों ने नीता अपने को छककर भोगा—प्याले को उसके तल तक ढाल कर हम पी गए हैं. अब वह खाली है कि उस जाम को हम फेककर तोड दें." "दलजीत ने कहा, "तुम पछता तो नहीं रही हो? मेरी प्राण···"

"नही-नही···"

"तैयार हो ?"

"हाँ।" आहिस्ता से उसने कहा और होठो पर उसके मुस्कान खेल आई.

"तो मुड़कर दीवार की तरफ हो जाओ और आंखे ढक लो."

"नही-नही, राजा मेरे ऐसे. नही ··यह मै नही चाहती. पास आओ, हाँ, ऐसे. और पास, और पास—लाओ, आँखें मुझे दो उनमें मुझे देखने दो. लाओ अपने होंठ दो—मैं चूमती रहूँगी जब कि तुम···जबकि तुम···मुझे डर नहीं है—हारो नही, मेरे बहादुर, कस के और कस कर चूमो—"

उसने उसे मार दिया. हत्या के बाद अपने हाथों हुए काम को देखकर

उसे सहसा डर-सा लग रहा था. कमीना, गन्दा घिनौना डर. वर्का की अधनंगी काया बिस्तर पर अब भी गरम थी और मरोड़ ले रही थी. दलजीत की टांगें मारे डर के नीचे से मानो जवाब दे आईं. लेकिन कायर कुटिल कपटी एक तर्क अब भी चौकन्ना था. मगर उसमें काफी चेतनता और साहस शेष था कि वह बराबर फ़ैलकर लेट रहा और अपनी पसलियों के बीच गोली दाग सका. उसने तमचे का घोड़ा खींचा. उसकी आहट गूंज गई और गोली उसे चीरती चली गई. मारे डर और दर्द के वह चीखा उमी क्षण वर्का की काया उसके आगे आखिरी मरोड़ लेकर शांत हो गई.

वर्का की मृत्यु के दो सप्ताह बाद नेक नम्र जिद्दी कलहन नन्ही गोरी मनका भी चल बसी. बखेड़े झगड़े तो इन अड्डों में कोई नई बात थी नही. ऐसे ही एक बखेड़े में बढ़ते-बढ़ते किसी ने एक भारी खाली बोतल लेकर उसके सिर पर देकर मारी कि मनका फिर न उठी. और हत्यारे का अन्त तक पता न चला.

उस सारी गली मे जैसे कि एमा के ठिकाने मे घटनाओं पर घटनायें तेजी से घटी. शायद ही कोई ऐसी बची होगी जिसका अन्त ऐसे ही भीषण, विकट और खतरनाक तरीके से नही हुआ.

आखिरी और सबसे बढ चढ़ कर जो नृशंस काण्ड हुआ. वह था जो फौज के सिपाहियों ने आकर ढाया उसकी नर्बरता और बरबादी का अन्त न था.

बात यह थी कि दो दस्ते फौजी रंगरूटो के एक अठन्नी वाले चकले में पहुचे. बेहूदा हरकतों पर उन्हें पीट-पाटकर रात में वहाँ से गली मे निकाल बाहर किया गया. लहू-लुहान, बुरी तरह पिटी घायल हालत में वे लोग लौटकर अपनी बैरको मे वापिस आए. उनके साथी सवेरे की कवायद से निबटकर चुके ही थे. उन्होने जो देखा तो नतीजा यह हुआ कि आधा घटा न बीता होगा कि कोई एक सैकड़ा सिपाही गली पर आ टूटे और एक के बाद दूसरे के हर ठिकाने को उन्होंने तहस-नहस करना शुरू किया. साथ ही राह चलते उचक्कों की भीड़ उनमें आ मिली. हर किस्म के अवारा, चोर, उठाईगीरे, गुन्डे, बदमाश, लूटमार में शामिल हो गये खिड़कियों के

सब कांच तोड़ डाले गये और झाड़-फानूस, प्यानो वगैरा चकनाचूर कर दिए गये. कीमती घरों के पलगों को फोड़ फाड़ कर बाहर फेंक दिया गया. उसके बाद कोई दो दिन तक उनसे निकले पर सारी गली में उड़ते फिरते दिखाई देते कि जैसे बरफ के गाले हों. लड़कियां खुले सिर, मादरजात नंगी बाहर सड़कों पर खदेड़ दी गईं. तीन चौकीदारों को कुचल कर मार डाला गया. भगदड़ ने सारे फर्नीचर को, गद्दों को, तोश्कों को, रेशमी चादर और पर्दों को गंद से लथेड़ कर धज्जियां करके फाड़ फेंका. इस हल्ले में आस-पास की ताड़ी कि दुकानों या सरायों को भी उन्होंने न छोड़ा और सब उजाड़ कर दिया.

यह लूटमार, बलात्कार और हत्या का लहूसना उन्मत्त व्यापार कोई सात घण्टे तक चलता रहा. आखिर बाकायदा फौजी पुलिस आई और आग बुझाने का दस्ता साथ आया तब कहीं उत्पातियों की भीड़ को खदेड़ कर तितर-बितर किया गया. दो चवन्नी वाले अड्डों में आग लगा दी गई मगर आग पर जल्दी काबू पा लिया गया. ताहम अगले रोज उपद्रव खूब उठा. इस बार वह सारे शहर और आसपास तक फैल गया. बढ़कर उसने अकस्मात विकराल रूप धारण कर लिया जैसे गदर ही मचा हो, पूरे तीन दिन यह गदर जारी रहा. उसकी खुरेजी और गारतगर्दी का बयान मुश्किल है.

हफ्ते भर बाद गवर्नर जनरल की तरफ से हुक्म जारी हो गया कि इस गली के या कि शहर के और मोहल्ले के सब चकले, ठिकाने फौरन बंद कर दिये जाएं. उनको चलाने वाली मालकिन नायिकाओं को एक हफ्ते का वक्त दिया गया कि व मकान जायदाद के सिलसिले के सारे मामले निपटा दें नहीं तो सब जब्त हो जाएगा.

यह नायिकायें अक्सर मोटी और दोहरी काया की अधेड़ औरतें थीं. उनका जाहोजलाल सब उड़ गया. लुट कर, मिट कर, कुचल कर वे ऐसी बन आई कि हँसी आती थी और दया भी होती थी. सब सदर-पदर अपना इन्तजाम बैठाने में लगी थीं. आखिर महीने भर के अन्दर काठ बाजार का सिर्फ नाम रह गया कि कभी वहां जिन्दगी रंगरेलियां लेती और सितम

ढावा करती थी. फिर याद भी लुप्त हो गई.

और आखिर जगह का नाम भी बदल डाला गया कि पुरानी याद का बहाना तक न बाकी बचे. वह जमाना जड से ही खत्म हो गया. बदल कर एक अच्छा-सा नया नाम उसे दे दिया गया.

और वहां की नन्हीजान और मुन्नीजान, कल्लो, सिल्लो और बिल्लो और दूसरी सब जनी निकल कर बडे शहर में फैल गईं और जज्ब हो गई. वे सीधी थीं और मूरख थी अक्सर वे ठगी गई थी और बचपन मे बिगाड दी गईं थी सबका इतिहास था और सबके पास सबब था. खैर उनमे से फिर समाज मे एक नए स्तर से जन्म लिया. फिर खानगियां जन्मी जो अलग-अलग अपना धधा चलाती और बॅधने के बजाय इधर-उधर डोलती. इनका जीवन वैसा ही बिछुडा-सा होता और वे जन दयनीय और द्रवित। फिर भी वह [illegible] था और रीतनीत उसकी भिन्न थी. लेकिन यह लेखक इस उपन्यास मे जो—जो उसकी ओर से युवको को समर्पित है और माताओं को वह सब न कह सकेगा, वह फिर कभी कहा जायगा.

